॥ ओ३म् ॥

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

वार्षिक मूल्य ६) | विदेश से वार्षिक ८) या १२ शि

वर्ष ३७ | सृष्टि संवत् १६७२६४६०६० | १६६१ नवम्बर कार्तिक २०१८ अक ६ ।

विषय-सूची

---

* सम्पादक

काली चरण आर्य सभा मन्त्री

* सहायकसम्पादक

रघुनाथप्रसाद पाठक

* प्रकाशक व मुद्रक

रघुनाथप्रसाद पाठक

* कार्यालय

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
दयानन्द भवन, नई दिल्ली

फोन : २२४७७१

* मुद्रक

सम्राट् प्रेस, पहाड़ी धीरज देहली ।

फोन : २२२५६३

वेद-व्याख्या

॥ ओ३म् ॥

ऋचो अक्षरे परमे व्योमन् यस्मिन्देवा अधिविश्वे निषेदुः ।
यस्तन्न वेद किमृचा करिष्यति य इत्तद्विदुस्त इमे समासते ॥
ऋक्० १-१६४-३९; अथर्व ९-१०-१८

ऋचायें परमोत्कृष्ट आकाशवत् सर्व व्यापक अविनाशी सत्ता में स्थित हैं। जिस अविनाशी सत्ता में समस्त दिव्य गुण विशिष्ट सत्ताएं आश्रित होकर ठहरे हुए हैं, जो कोई उस अविनाशी सत्ता को नहीं जान पाता, वह ऋचाओं के अध्ययन मात्र से क्या उपलब्ध करेगा ? जो व्यक्ति उस परमोत्कृष्ट अविनाशी सत्ता को जानते हैं, अथवा जानने का यत्न करते हैं, वे लोग वही हैं जो सम्यक् प्रकार से उसमें आश्रय लेते हैं।

संसार में परमपिता परमात्मा आकाश के समान सर्वत्र व्यापक हैं। वह परमात्मा अविनाशी है, और इसलिए उस परमात्मा को अक्षर-ब्रह्म कहा गया है। वह समस्त विश्व-ब्रह्माण्ड के जितने भी दिव्यगुण विशिष्ट सत्ताएँ हैं, उन सब को धारण किये हुए हैं। समस्त ब्रह्माण्ड उसी में स्थित है। और समस्त ज्ञान उसी एक अक्षर ब्रह्म में वैदिक ऋचाओं के रूप में अनुस्थित हैं।

वैदिक ऋचायें सृष्टि के प्रारम्भ में मनुष्य मात्र के कल्याण के लिए उस परमपिता परमात्मा से ही ऋषियों द्वारा हमें प्राप्त हुए हैं। वैदिक ऋचा में ही प्रत्येक पदार्थ का तत्वज्ञान उपस्थित है। जिन मनुष्यों ने संसार में आकर उन ऋचाओं द्वारा तत्वज्ञान को जानने का यत्न किया है, उन्होंने संसार में अपने परोपयोगी जीवन को सफल बनाया है, और अपने उस उद्देश्य की पूर्ति की है, और प्राप्ति की है जिसकी प्राप्ति की मनुष्य के हृदय में नैसर्गिक रूप में इच्छा उपस्थित है। मनुष्य संसार में आकर अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिए सतत प्रयत्नशील रहता है। परन्तु अनेक बार विफल होता है। इसके अनेक कारण हैं, और विशेष कारण यह है कि वह प्रभु के बतलाये हुए आदेश के अनुसार ठीक कार्यान्वित नहीं होता। वह जानते हुए भी कि समस्त ज्ञान का भण्डार एक मात्र प्रभु है, फिर भी वह इधर-उधर अपने प्रभु को छोड़कर भटकता फिरता है। यह भी किसी से छिपा नहीं है, ज्ञान का एक मात्र स्रोत या खजाना उस ब्रह्म के अतिरिक्त और कहीं नहीं है। फिर भी मनुष्य की प्रवृत्ति अन्यत्र घूमती-फिरती दृष्टिगोचर होती है। दूसरा कारण उद्देश्य की प्राप्ति के न होने का यह भी है, कि हम यह जान लेने के पश्चात् भी ऋचाओं में हमारे उद्देश्य की पूर्ति के साधन उपस्थित हैं- हम केवल, उनके पाठ-मात्र को ही अपने कल्याण का पूर्ण साधन मान बैठे हैं। जिस प्रकार मिश्री हथेली पर रखी हुई, हमारे मुख को मीठा नहीं कर सकती जब तक कि हम उसका पान न कर लें वह हमारे लिये लाभान्वित नहीं हो सकती, जब तक हम उसको अपने शरीर का भाग न बना लें। इसी तरह वेद की ऋचायें हमें वह लाभ नहीं पहुँचा सकती, जब तक हम उनमें बताये हुए मार्गों पर चलकर उस अक्षर ब्रह्म को पूर्ण-रूपेण जानकर उसके गुणों को अपने अन्दर धारण नहीं कर लेते। संसार में केवल वही पुरुष जिसने अविनाशी ब्रह्म को उसके द्वारा दिये हुए तत्व ज्ञान देने वाली ऋचाओं से जान लिया है, वही उस अविनाशी ब्रह्म के समीप है अर्थात् उपासना प्राप्त कर सकता है। उस अक्षर ब्रह्म के तत्व-ज्ञान के अभाव में केवल मात्र वैदिक ऋचाओं के पाठ-मात्र से प्रभु की उपासना प्राप्त नहीं होती अत: ऋचाओं का अध्ययन तदनुकूल आचरण हमें उद्देश्य तक ले जाने में समर्थ बनायगा।

कालीचरण आर्य

सार्वदेशिक

सम्पादकीय

दिव्य प्रकाश के वाहक महर्षि

दीपावली का पावन पर्व सदा की भांति इस वर्ष भी उल्लास तथा आमोद का सन्देश लेकर भारतीय जन-मानस के क्षितिज पर उदित हो रहा है। यह पर्व उन गिने-चुने गौरवमय पर्वों मे से एक है जो भाषा, रग-रूप तथा प्रादेशिक दृष्टि से विभिन्न प्रतीत होने वाले इस विस्तृत भूभाग मे एकता की भावना के प्रतिष्ठापक है। भारतीय इतिहास तथा संस्कृति की पुण्य सम्पदाओ को अपने आंचल मे बटोरकर आने वाली दीपावलि जहा आर्यजाति के उद्दाम गौरव की साक्षिणी है वहाँ साथ ही हमारे इतिहास की अनेक घटनाओ को भी इसने अपने साथ जोड लिया है। ऐसी ही एक महत्त्वपूर्ण घटना आज से ७८ वर्ष पूर्व घटी थी जब कि इसी महत्त्वपूर्ण पर्व को महर्षि दयानन्द का निर्वाण हुआ था। विधिका कैसा विलक्षण विधान है ! दीपावलि और महर्षि का निर्वाण !

सुषमामयी शारदीय पूर्णिमा के पश्चात् पहली अमावस्या को यह पर्व मनाया जाता है। घोर तमिस्रा में छोटे-छोटे असख्य दीपक जलाकर प्रकाश का पुञ्ज प्रसारित किया जाता है। अन्धकार पर प्रकाश निराशा पर आशा तथा स्वार्थ पर परार्थ की विजय पता का फहरायी जाती है। महर्षि दयानन्द रूपी दीपक के जीवन की भीतो मानो यही गाथा है। वैदिक संस्कृति तथा आलोक की पूर्णिमा के पश्चात् अज्ञान, आडम्बर तथा अन्ध विश्वास की घोर तमिस्रा ने मानव-जाति को मानो सर्वथा संज्ञाहीन बना दिया था। धर्म और ईश्वर के नाम पर असख्य अनर्थों तथा रूढियों का बोलबाला था। मुक्ति का सस्ता मन्त्र देने वाले धार्मिक नेता ही मानव को भयावह बन्धनो में जकड रहे थे। इस प्रकार अज्ञान तथा अविद्या से उत्पीडित मानव को सत्पथ का प्रदर्शन करने के लिये महर्षि दयानन्द वैदिक ज्योति हाथ मे लेकर कार्यक्षेत्र मे उतरे।

सचमुच इस वैदिक ज्योति ने अनुपम चमत्कार दिखाया। प्रकाश के प्रति द्वन्द्वी सभी तत्त्व एकदम हतप्रभ हो गये। अज्ञान की तमिस्रा मे पनपने वाले अनर्गल मतमतान्तर आतंकित होकर भाग खडे हुए। ऋषि ने घोषणा की कि प्रकाशस्वरूप परमेश्वर ने प्रलय की रात्रि की समाप्ति पर सृष्टि की पहली सुभग सन्ध्या को मनीषी ऋषियों के माध्यम से जो वेद रूपी ज्योति मानव-जाति को दी, वही ससार मे व्यापक अन्धकार को विलीन करने का सामर्थ्य रखती है उसी के सहारे मानव श्रेयोमार्गका पथिक बन सकता है।

दयानन्द रूपी दीपक ने अपनी इह लीला इसी अमावस्या को अनन्त भौतिक दीपको के साथ समाप्त की, परन्तु वह एक विलक्षण आध्यात्मिक दीपक थे। वह मानवजाति के हाथ मे वैदिक-ज्ञान-ज्योति का अमर आलोक देगये। उनका सारा जीवन दीपक के समान ही त्याग, बलिदान तथा प्रकाश का अनुपम आदर्श प्रस्तुत करता है। वे अपनी ज्योति से असंख्य दीपकों को प्रज्ज्वलित कर गये। उन्ही असंख्य दीपकों का पुञ्ज ऋषि द्वारा प्रवर्त्तित आर्यसमाज है। यही आर्यसमाज की गरिमा है, सन्देश है और उद्देश्य है। ऋषि के निर्वाण दिवस पर प्रत्येक आर्य का कर्तव्य है कि वह अपने महान् आचार्य के अमर सन्देश को सुने, उसकी दिव्य ज्योति को देखे। आज की दीपावलि का पावन पर्व हमे अपना कर्तव्य स्मरण करा रहा है, दिव्य सन्देश सुना रहा है। अन्धकार से प्रकाश की ओर अज्ञान से ज्ञान की ओर, निराशा से आशा की ओर तथा बन्धन से मुक्ति की ओर प्रयाण किया जाय, यही इस निर्वाण दिवस का मानव-जाति के लिये अमर सन्देश है।

रघुवीरसिंह शास्त्री

सम्पादकीय टिप्पणियाँ

उपवास और राजनीति
Fasts and Politics

श्रीयुत पं० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय ४ अक्तूबर के 'लीडर' (प्रयाग) मे उपर्युक्त शीर्षक से लिखते हैं—

Everybody is happy at the termination of the Punjab fasts. So am I. only the enemies of the country could have been otherwise. But the termination of the individual fasts is not of any permanent value unless people at large are persuaded to believe that fasts as political weapons are not only impolitic but sinful. When the sages of old invented, advised or practised fasts, they were either preparatory to spiritual training, or purificatory to undesirable impressions left on one's soul by some aberrations from the right path. Nowhere in our shastras have fasts been prescribed for attaining political ends or forcing one's opinions or wishes upon the Government or any party. Mahatma Gandhi is sometimes given as an example. But he was so spiritually advanced that it is not easy for us to analyse his inner self and separate the spiritual trends from the political ones. It will be a mistake to copy him in those matters, which he alone was qualified to adjudge In the past few years, fasts have been so frequently used as a means of gaining nonspiritual ends that they have become a sort of epidemic and no efforts have been made to mitigate the evil. To risk one's life, for any cause proper or improper evokes public admiration and this in turn encourages others to follow those whom they find eulogized. It is the duty of the spiritual leaders of different sections of society to impress seriously and sincerely upon the people the dark sides of such practices. Unfortunately, it is only from religious centres that such baits are thrown and emotionally weak people jump at them. Is it not spiritual muddling ? I feel a sort of apprehension that though the evil has passed its potentiality remains and demands a well-considered solution.

प्रत्येक व्यक्ति पंजाब के उपवासो की समाप्ति पर प्रसन्न है। मैं भी प्रसन्न हूँ। देश के शत्रुओं की ही इससे भिन्न भावना हो सकती थी। जब तक जन-साधारण की यह मान्यता न हो जाय कि राजनैतिक अस्त्र के रूप मे अनशन करना पाप है तब तक वैयक्तिक अनशनो की

परिसमाप्ति का कोई स्थिर महत्त्व नहीं होता। जब प्राचीन काल के ऋषियों ने अनशन का आविष्कार, प्रचार वा प्रयोग किया था तो उनके लक्ष्य में उनका उद्देश्य आध्यात्मिक प्रशिक्षण या धर्म-मार्ग से च्युत हो जाने के फल स्वरूप आत्मा पर पड़े कुसंस्कारों का उन्मूलन था। हमारे शास्त्रों मे कहीं पर भी राजनैतिक उद्देश्यो की प्राप्ति वा सरकार अथवा किसी दल पर अपनी इच्छा वा सम्मति बलात् लादने के लिए अनशनो का विधान नही किया गया है। कभी-कभी महात्मा गांधी का उदाहरण प्रस्तुत किया जाता है। परन्तु वे आध्यात्मिक दृष्टि से इतने उच्च थे कि उनके आभ्यन्तरिक का विश्लेषण करना और राजनैतिक एवं आध्यात्मिक रुचियो मे भेद करना हमारे लिए सरल नही है। इस प्रकार के मामलो मे उनका अनुकरण करना भूल होगी क्योंकि इन मामलो मे निर्णय करने के वे ही सर्वथा योग्य थे। गत कुछ वर्षों मे अनाध्यात्म उद्देश्यों की सिद्धि के लिए इन उपवासो का इतना अधिक प्रयोग हुआ है कि उन्होने एक संक्रामक रोग का रूप ग्रहण कर लिया है और इस रोग के शमन का कोई उपाय नही किया गया है। आध्यात्मिक नेताओं का कर्त्तव्य है कि वे इस प्रकार की क्रियाओं के काले पक्ष को लोगो के हृदयों पर अंकित करें।" आमरण अनशन चाहे वह महात्मा गांधी के द्वारा किया गया वा अन्य किसी के द्वारा किया गया वा किया जाय, प्रशस्त नही है। महात्मा गांधी अपने अनशनों का उद्देश्य आत्म-शुद्धि वा आत्मिक उन्नति बताया करते थे, दबाव डालना नहीं। कवीन्द्र टैगोर, महामना मालवीय जी प्रभृति देशरत्नो ने महात्मा जी के अनशनों को उचित नही बताया था। टैगोर महोदय ने महात्मा जी को निम्न प्रकार लिखा था:—

"जब भगवान् बुद्ध को संसार के असंख्य लोगों के क्लेशों का ज्ञान हुआ तो वह अपने जीवन की अन्तिम घड़ी तक निर्वाण के मार्ग का उपदेश द्वारा प्रचार करते रहे। मृत्यु जब शारीरिक वा मानसिक निर्बलता से अपने आप आये तो उसका धीरता पूर्वक सामना करना चाहिए। किन्तु मृत्यु को अपने लिए बुलाने का हमें कोई अधिकार नहीं है।

महर्षि दयानन्द राज योगी थे। ईश्वर प्राप्ति वा आत्मोन्नति के लिए वे कभी ऐसे अनशन को न मानते थे और न स्वयं करते थे जिसका अन्तिम परिणाम आत्म-हत्या हो।"

सफेद झूठ

आर्य समाज मेहसी (चम्पारन, बिहार) के मन्त्री श्री भरत प्रसाद जी चौधरी ने हमारा ध्यान दयाल बाग आगरा से अंग्रेजी में प्रकाशित राधा स्वामी सत्संग शताब्दी स्मृति-ग्रन्थ के निम्नलिखित अवतरण की ओर आकृष्ट किया है:—

Swamiji Maharaj (Swami Daya Nand Saraswati) came to stay at Dayal bagh Satsang. He put certain questions and held discussion with the Guruji Maharaj. He requested for initiation. He was satisfied. He got it and he was then initiated. He however, desired that he may he permitted to fight against the idolatory and the evils of the Hindu Society. He promised that he would come back to the satsang. He had not criticised this satsang but he had criticised all the faiths.

(Souvinir of the Radha Swami Satsang centenary, Dayal Bagh Agra, Jan. 1961 P.-16.)

अर्थात् स्वामी जी महाराज (स्वामी दयानन्द सरस्वती जी) दयाल बाग सत्संग में ठहरने के लिए आए। उन्होंने गुरुजी महाराज से कुछ प्रश्न किए और वाद-विवाद

किया। उन्होने (दयानन्द जी ने) दीक्षा की प्रार्थना की। वह सन्तुष्ट हुए और तब उन्हें दीक्षित कर लिया गया। फिर भी उन्होने मूर्तिपूजा और हिन्दू-समाज की कुरीतियों के विरुद्ध प्रचार करने की अनुमति प्राप्त करने की इच्छा व्यक्त की। उन्होने सत्संग मे वापस आने का वचन दिया। उन्होने राधा स्वामी सत्संग की आलोचना नहीं की परन्तु अन्य सब मतो की आलोचना की है :—"

सम्प्रदायवादी लोग बुद्धि और सत्य के कितने बड़े शत्रु होते हैं यह बात इस अवतरण से सुस्पष्ट है। स्वामी दयानन्द सरस्वती प्रारम्भ से ही गुरुडम के कट्टर शत्रु थे अतः यह कहना कि उन्होने राधा स्वामी मत के गुरु जी से दीक्षा ली नितान्त असत्य है। लोगों की आंखो मे इस प्रकार धूल झोकने से राधा स्वामी मत की प्रतिष्ठा नहीं बढती है। इस प्रकार अनर्गल बात लिखने वाला जहां सभ्य और शिक्षित वर्ग मे अपने को उपहास का पात्र बनाता है वहां वह यह भी दिखाता है कि सत्य और तथ्य के प्रति उसके नेत्र बद हैं। राधा स्वामी मत की स्थापना स्वामी जी के जीवन काल मे न होने के कारण वह मत स्वामी जी की आलोचना से बचगया। यतः स्वामी जी ने गुरुजी महाराज से दीक्षा ली थी, अतः उन्होने राधास्वामी मत की आलोचना न की यह सफेद झूठ बोलने से उस मत की वरिष्ठता प्रतिपादित नही होती। स्वामी जी महाराज की आड़ मे उक्त मत की वरिष्ठता स्थापित करने का यत्न करना उसके खोखलेपन को छुपाने का यत्न ही समझा जा सकता है।

श्री सेठ प्रतापसिंह जी पर वज्रपात

हृदय की गति बद हो जाने से हुई सार्वदेशिक सभा के उपप्रधान श्री सेठ प्रतापसिंह शूर जी वल्लभदास के छोटे भाई विक्रमसिंह की मृत्यु बड़ी दुःखद घटना है। उनके निधन से श्री सेठ प्रतापसिंह जी के परिवार की ही नहीं अपितु आर्य समाज की भी महती क्षति हुई है। वे आर्य समाज के बड़े प्रेमी थे। उन्होने जलयानो आदि का कारबार अपने हाथ मे सभाला हुआ था जिसे वह बड़ी योग्यता और कुशलता से चला रहे थे। निश्चय ही उनकी मृत्यु से भाई प्रतापसिंह जी की चिन्ता और कठिनाई बढ़ जायगी। इस महान् वियोग में हमारा हृदय उनके साथ है। प्रभु के विधान के समक्ष नत-मस्तक होने केसिवाय और कोई चारा भी नहीं है। भाई विक्रमसिंह ने अभी जीवन के थोड़े से ही वसन्त देखे थे। युवावस्था मे उनकी मृत्यु से एक बार फिर यह सचाई स्पष्ट हो गई है कि बूढे लोग स्वयं मृत्यु के पास जाते हैं और मृत्यु स्वयं युवको के पास जाती है। भाई प्रतापसिंह और उनके परिवार को यह सोचकर धैर्य धारण करना चाहिए कि मृत्यु अवश्यम्भावी घटना है। विक्रमसिंह भले व्यक्ति थे। वे चारपाई पर पड़कर नही मरे है। वे एक छोटे से प्रकाशयुक्त घर से निकलकर महान् प्रकाश युक्त स्थान पर गए हैं जिन्हें वायु ने आदर और प्यार के साथ अन्तिम विदाई दी है।

तथाकथित सांस्कृतिक कार्य-क्रम

इस समय हमारे स्कूलो और कालेजो मे एक बहुत बडी बुराई व्याप्त है और हो रही है। सामाजिक और राष्ट्रीय समारोहो तथा अत्यन्त महत्वपूर्ण व्यक्तियों के अभिनन्दन आदि के अवसरो पर तथा कथित सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये जाते हैं जिनसे न केवल विद्यार्थियों तथा अध्यापको के समय की बर्बादी ही होती है अपितु जो अत्यन्त आपत्तिजनक भी होते हैं। समझदार और सुरुचि रखने वाले व्यक्ति उनको देखने के पश्चात् दुःखी और निराश होते हैं। जिन कार्य-क्रमो को लडकियाँ प्रस्तुत करती हैं उनकी बडी प्रशसा होती है और जिन्हे लड़के प्रस्तुत करते हैं उनमे कोलाहल और व्यग व्याप्त रहते है। यह सब कुछ अध्यापको की उपस्थिति मे होता है जो अपने ही विद्यार्थियो की इन कुचेष्टाओ को नियंत्रित करने मे असमर्थ रहते हैं। वस्तुतः नृत्य, ग्राम्य गीत आदि २ मुख्यतया नव युवको से परिपूर्ण समारोहो के लिए अभिप्रेत नही होते हैं ये तो एक मात्र स्त्रियो के समारोहों के लिए अभिप्रेत होते हैं। हमारी जवान लड़कियो को पुरुष वर्ग के समक्ष स्टेज पर लाने की प्रथा एक दम बन्द होनी चाहिए। इस प्रकार के कार्य-क्रम हमारी सामाजिक व्यवस्था और सदाचार की भावना के सर्वथा विपरीत है। कार्य-क्रमों के बाद के दिन लड़कियों के अभिभावको और प्रिंसिपलो के लिए बड़े सिर दर्द और लड़कियो के लिए कष्टदायक सिद्ध होते हैं।

उत्तर-प्रदेश की सरकार ने इस दिशा में प्रशसनीय पग उठाया है। उसने इन कार्य-क्रमो पर कुछ प्रतिबन्ध लगाए हैं। राज्य का कर्त्तव्य है कि समस्त देश मे इन कार्य-क्रमों को बन्द करने के लिए तत्काल ठोस कार्यवाही करे। प्रजा को भी इन कार्य-क्रमो को प्रत्येक प्रकार से निरुत्साहित करने मे अग्रसर होना चाहिए। लडकियो के माता-पिताओ का भी इस दिशा मे बहुत बड़ा कर्त्तव्य है। वे अपनी लडकियों को पुरुष वर्ग के समक्ष स्टेज पर लाए जाने से रोक सकते हैं।

दो प्रशंसनीय कार्य

आर्य मार्तण्ड (१५-१०-६१) में प्रकाशित समाचार के अनुसार जोधपुर-पाली मार्ग का नाम जो एक प्रमुख राज-मार्ग है महर्षि दयानन्द मार्ग रखा जा रहा है। इसके अतिरिक्त जोधपुर मे उस स्थान पर जहाँ महर्षि को विष दिया गया था श्री स्वामी जी के उपदेशो तथा उनके जीवन की स्मरणीय घटनाओ के उल्लेख सहित शिलालेख लगाया जा रहा है। ये दोनो कार्य नगर-पालिका जोधपुर द्वारा किये जा रहे हैं जो प्रशसनीय हैं।

जघन्यकृत्य

समाचार मिला है कि ग्राम पिलखना परगना डिवाई में वहाँ के कुछ मुस्लिम गुडो ने श्री ठा० हुक्म सिंह आर्य पर जिन्हे २ वर्ष हुए शुद्ध किया गया था आक्रमण करके खेत में बहुत मारा पीटा और उनकी नाक भी काट डाली। गुंडो के इस कायरतापूर्ण जघन्य कृत्य की जितनी निन्दा की जाय थोडी है।

डराने, धमकाने वा इस प्रकार के कुकृत्यों से शुद्धि का कार्य न रुका है और न रुक सकेगा। विदित हुआ है इस दिशा मे पुलिस का रवैया सराहनीय है। आशा है कि अपराधियो को समुचित दण्ड दिया जायगा और इस प्रकार की बर्बरता पूर्ण कार्य वाहियों को रोकने के लिए कोई प्रयत्न उठा न रखा जायगा।

अल्प संख्यकों का कर्त्तव्य

श्रीयुत अजीजुल हसन (हैदराबाद) श्रीयुत आचार्य कृपलानी जी के लेख के सन्दर्भ में जो अन्यत्र प्रकाशित हुआ है २६-१०-६१ के हिन्दुस्तान टाइम्स में लिखते हैं :—

"आचार्य कृपलानी ने अपने लेख (साम्प्रदायिक दगे हि० टा० अक्तूबर १३-१४) मे इस बात पर ठीक ही बल दिया है कि 'मुस्लिम समाज के नेताओ को अपने सहधर्मियो से यह कहना चाहिए कि वे बहुसख्यक वर्ग से व्यवहार करते समय बहुत सावधान रहा करें और उन्हे अपने अहंकार को पी जाना चाहिए।' मैं तो यह कहूंगा कि उन्हें न केवल बहुसंख्यक वर्ग के साथ व्यवहार मे सावधान ही रहना चाहिए अपितु उन्हे उस देश मे रहने का ढंग भी सीखना चाहिये जो विभाजित हो चुका है। साथ ही उन्हें अल्पसख्यक होने की अपनी स्थिति का ऐसा दोहन भी न करना चाहिए जिससे देश का अहित हो।

इस प्रकार का संस्कार पाया जाता है कि एक मात्र हमारा धर्म (मत) ही अच्छा है अत. अन्य लोग काफिर हैं। यह संस्कार मिथ्या है जो हमें प्राय: पथ-भ्रष्ट कर देता है जिसके फलस्वरूप दूसरो की तथा उनके धर्म की निन्दा की जाती है, और अधार्मिककृत्य किए जाते हैं जिनके कारण साम्प्रदायिक उपद्रवो की भूमि तय्यार हो जाती है। हमें यह शोभा नही देता। इसके स्थान मे इस देश में मिलजुलकर रहने की दिशा मे हमारा प्रयत्न होना चाहिए। यह वह देश है जिसमें बहुसंख्या मे वे लोग बसे हुए हैं जिनकी धार्मिक परम्पराएं समृद्ध और गम्भीर हैं जो हिंसा से घृणा करती अहिंसा का प्रचार करती हैं और जिनमे क्रूरता और अत्याचार के लिए कोई स्थान नहीं है। यह वह देश है जहां विवेक का सर्वोपरि साम्राज्य है और जहाँ की प्रजा अपनी धार्मिक और सांस्कृतिक परम्पराओं का अनुसरण करने में स्वतन्त्र है। यदि हम इस देश मे अपने को ठीक प्रकार से रक्खें तो देश में शान्ति और सौहार्द व्याप्त रहे जो शब्द के ठीक-ठीक अर्थ में सम्प्रदाय-निरपेक्ष है।

रघुनाथप्रसाद पाठक

महाकवि सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

और

उनके आर्यसमाज के प्रति विचार

फतहचन्द शर्मा 'आराधक'

महाकवि सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' हिन्दी के उन मूर्धन्य साहित्यकारो मे एक थे, जो कुशल कवि, सत्य-द्रष्टा साहित्य स्रष्टा और अपने निश्चय पर अडिग रहने वाले व्यक्ति थे। उन्होने कभी जाने-अनजाने खुशहाली और तगी दोनो मे अपने विचारो का अनुचित उपयोग न किया। उनके व्यक्तित्व की सबसे बडी विशेषता यह थी कि वे उन सब लोगो के साथ थे, जो समाज में उपेक्षित थे। बडे खेद की बात है कि कुछ गुटबन्द साहित्यकारों ने उनके प्रति सहयोग और श्रद्धा के बदले में सदैव यह प्रयत्न किया कि वे समाज के सामने विस्मृत हो जाएँ। आज आकाश वाणी के पास उनके कोई भी ऐसे गीत नही है, और न उनके ऐसे भाषण है, जिन्हे आकाशवाणी सुनाकर अपने श्रोताओं के हृदय मे उनके प्रति अपनी कृतज्ञ भावना प्रदर्शित कर सके। कभी भी आकाशवाणी ने यह प्रयत्न किया ही नहीं, क्योकि आकाशवाणी के अपने अलग कवि, साहित्यकार और वक्ता है। वे अच्छे हैं या बुरे, इसका निर्णय किये बिना उन्हे बराबर बढ़ावा मिलता रहता है। लगभग ६५ वर्ष होने को आए, इस अवस्था मे महाकवि 'निराला' अपने जीवन से संघर्ष करके बहुत कुछ हिन्दी साहित्य को दे गये। एक बेताज बादशाह की तरह से निराला की छवि हिन्दी के पाठकों पर सदैव प्रभाव और प्रेरणा प्रदान करती रहेगी जो उनके व्यक्तित्व एव कृतित्व से प्राप्त हो सकी है। हिन्दी के काव्य-क्षेत्र मे निराला की देन कभी भी विस्मृत नही की जा सकेगी।

आर्य समाज के प्रतीक

महाकवि 'निराला' आर्यसमाज के आन्दोलन के विशेष समर्थक रहे। उन्होने स्वामी दयानन्द के सम्बन्ध मे लिखा है कि "१९ वीं शती का प्रारम्भ भारत के इतिहास का अमर एव स्वर्ण प्रभात है। कई पावन-चरित्र महापुरुष अलग-अलग उत्तरदायित्व लेकर, इस समय, इस पुण्य भूमि में मे अवतीर्ण होते हैं। महर्षि दयानन्द सरस्वती भी इन्ही एक महाप्रतिभा-मडित महापुरुष है।"

महाकवि ने स्वामी दयानन्द के सम्बद्ध में लिखा है कि जिस समय पौराणिक रूपको से जनता को मायाजाल मे फसाया जा रहा था, उस समय एक तेजस्वी आत्मा की आवश्यकता थी। उस समय महर्षि दयानन्द का कार्य अपराजित प्रकाश है। उस अपार वैदिक ज्ञान-राशि के आधार-स्तम्भ स्वरूप अकेले बडे-बडे पडितों का उन्होने सामना किया। एक ही आधार से इतनी बडी शक्ति का स्मरण होना है कि आज भारत के युगान्तर साहित्य मे उसी की सत्ता प्रथम है।"

स्वामी जी के सम्बन्ध में बडी श्रद्धा-भावना से आगे लिखा है—"चरित्र स्वास्थ्य, त्याग, ज्ञान और शिष्टता आदि मे जो आदर्श महर्षि दयानन्द जी महाराज से प्राप्त होते हैं, उनका लेशमात्र भी अभारतीय पश्चिमी शिक्षा में संभूत नही, पुन: ऐसे आर्य मे ज्ञान तथा कर्म का कितना प्रसार रह सकता है, वह स्वयं इसके उदाहरण है, मतलब यह है कि जो लोग कहते हैं कि वैदिक अथवा

प्राचीन शिक्षा द्वारा मनुष्य उतना उन्नतमना नहीं हो सकता, जितना अंग्रेजी-शिक्षा द्वारा होता है, महर्षि दयानन्द सरस्वती इसके प्रत्यक्ष खण्डन हैं। महर्षि दयानन्द जी से बढ़कर भी मनुष्य हो सकता है, इसका प्रमाण प्राप्त नहीं हो सकता, यहीं वैदिक ज्ञान की मनुष्य के उत्कर्ष में प्रत्यक्ष उपलब्धि होती है, यहीं आदर्श आर्य हमें देखने को मिलता है।"

धार्मिक इतिहास

"यहाँ से भारत के धार्मिक इतिहास का एक नया अध्याय शुरू होता है, यद्यपि वह बहुत ही प्राचीन है। हमें अपने सुधार के लिये क्या-क्या करना चाहिये, हमारे सामाजिक उन्नयन में कहाँ-कहाँ और क्या-क्या रुकावटें हैं, हमें मुक्ति के लिये कौन-सा मार्ग ग्रहण करना चाहिये महर्षि दयानन्द जी सरस्वती ने बहुत अच्छी तरह समझाया हैं। आर्य-समाज की प्रतिष्ठा भारतीयों में एक नये जीवन की प्रतिष्ठा है, उसकी प्रगति एक दिव्य शक्ति की स्फूर्ति है। देश में महिलाओं, पतितों तथा ब्राह्मणेत्तर जातियों के अधिकार के लिये महर्षि दयानन्द तथा आर्य-समाज से बढ़कर इस नवीन विचारों के युग में किसी भी समाज ने कार्य नहीं किया। आज जो जागरण उत्तर भारत में देख पड़ता है, इसका प्रायः सम्पूर्ण श्रेय आर्य-समाज को है। स्वधर्म में दीक्षित करने का यहाँ इसी समाज से श्रीगणेश हुआ है। भिन्न जाति वाले बन्धुओं को उठाने तथा ब्राह्मण क्षत्रियों के प्रहारों से बचाने का उद्यम आर्य-समाज ही करता रहा है। शहर-शहर, जिले-जिले कस्बे-कस्बे में इसी उदारता के कारण, आर्य-समाज की स्थापना हो गई। राष्ट्र-भाषा हिन्दी के भी स्वामी जी एक प्रवर्तक हैं, और आर्य-समाज के प्रचार की तो यह भाषा ही रही है। अनेक गीत खिचड़ी शैली के तैयार किए और गाए गये शिक्षण के लिए गुरुकुल जैसी संस्थाएँ निर्मित हो गई। एक नया ही जीवन देश में लहराने लगा।"

प्रतिभाशाली पुरुष

किसी दूसरे प्रतिभाशाली पुरुष से और जो कुछ भी उपकार देश तथा जाति का हुआ हो, सबसे पहले वेदों को स्वामी दयानन्द जी सरस्वती ने ही हमारे सामने रक्खा। हम आर्य हों, हिंदू हों, ब्रह्मसमाज वाले हों, यदि हमें ऋषियों की संतान होने का सौभाग्य प्राप्त है और इसके लिए गर्व करते हैं, तो कहना होगा कि ऋषि दयानन्द से बढ़कर हमारा उपकार इधर किसी भी दूसरे महा-पुरुष ने नहीं किया, जिन्होंने स्वयं कुछ भी न लेकर हमें अपार ज्ञान-राशि वेदों से परिचित कर दिया।"

व्यंग्य बड़े उपदेश-पूर्ण

"स्वामी जी के व्यंग्य बड़े उपदेश-पूर्ण हैं। आर्य-संस्कृति के लिए आपने निःसहाय होकर भी दिग्विजय किया, और उसकी समुचित प्रतिष्ठा की। स्वामी जी का सबसे बड़ा महत्त्व यह है कि उन्होंने अपनी प्रतिष्ठा की ओर नहीं देखा, वेदों की प्रतिष्ठा की है। ब्रह्म समाज और प्रार्थनासमाज के सम्बन्ध में आपका कहना है—"ब्रह्म-समाज और प्रार्थनासमाज के नियम सर्वांश में अच्छे नहीं, क्योंकि वेद-विद्या-हीन लोगों की कल्पना सर्वथा सत्य क्योंकर हो सकती है? जो कुछ ब्रह्मसमाज और प्रार्थनासमाजियों ने ईसाई मत में मिलने से थोड़े मनुष्यों को बचाए और कुछ-कुछ पाषाण आदि मूर्ति-पूजा हटाई, अन्य जाल-ग्रन्थों के फंदे से भी कुछ बचाए इत्यादि अच्छी बातें हैं। परन्तु इन लोगों में स्वदेश-भक्ति न्यून है, ईसाइयों के आचरण बहुत-से लिए हैं, खान-पान विवाहादि के नियम भी बदल दिए हैं। अपने देश की प्रशंसा व पूर्वजों की बड़ाई करनी तो दूर रही, उसके स्थान में पेट-भर निन्दा करते हैं, व्याख्यानों में ईसाई आदि अंग्रेजों की प्रशंसा भर-पेट करते हैं। ब्रह्मादि, महर्षियों का नाम भी नहीं लेते। प्रत्युत ऐसा कहते हैं कि बिना अंग्रेजों के सृष्टि में आज पर्यन्त कोई भी विद्वान् नहीं हुआ, आर्या-

(शेष पृ० ४२० पर)

ऋषि दयानन्द की कसक

श्री रामेश्वरदयाल जी गुप्त
बी० एस सी० विशारद

गोरखपुर जिला में कलसिया एक स्थान है। कनिङ्घम ने वहाँ के टीलो की खुदाई करके दो स्तम्भो का पता लगाया था। एक स्तूप मे गौतम बुद्ध के दाँत एक डिबिया मे सुरक्षित निकले थे। एक टीले के नीचे से आयताकार कमरा निकला जिसमे गौतम बुद्ध की मनुष्य कद मूर्ति लेटी हुई मुद्रा मे है। यह उनके महापरिनिर्वाण का दृश्य है। साथ ही उनके मुख्य शिष्य आनन्द रोने की मुद्रा मे है। जातको में कथा आई है कि गौतम बुद्ध ने आनन्द से कहा.—"आनन्द दुख न करो। मैने जिन आदि सत्यो का उपदेश दिया है उन्हे लेकर चारो दिशाओ मे फैलाओ। मैं सदा तुम्हारे साथ हूँ।" यह भगवान् गौतम बुद्ध का स्वप्न था। गौतम बुद्ध ने कोई पुस्तक न लिखी थी। उनके स्वर्गारोहण के बाद ५० वर्ष महास्थविर मौग्दालायन आदि बौद्ध दर्शन की स्थापना करने और साहित्य प्रस्तुत करने मे लगे। यह सब हो सकने मे बौद्धो की ४ विशाल सभाएँ कालान्तर में हुई। पहली बृहत्सभा तो राजगिरि मे हुई जिसका प्रधान नालन्दा का कुलपति था। राजगिरि की गुफाओ में वे स्थान अब भी सुरक्षित हैं। दूसरी सभा (Syrod) वैशाली मे महास्थविर यश के सभापतित्व मे हुई जबकि स्थविरवादी तथा महासांघिक विभेद परिपक्व हुए। यह बुद्ध के स्वर्गवास के लगभग १०० वर्ष बाद हुई थी। अशोक के समय तक १८ निकाय बौद्धों के बन चुके थे। अशोक ने अपने गुरु तिष्य (उपगुप्त) के प्रधानत्व मे तीसरी बृहत्सभा बुलाई। उसमे ८ हजार बौद्ध निष्कासित किये गये थे। अशोक के राज्य काल का वह १७ वाँ वर्ष था और उसे बौद्ध हुए तब केवल ८ वर्ष हुए थे। उस सभा मे बौद्ध धर्म के द्वीप द्वीपान्तर तथा देश-देशान्तर प्रचार की योजना बनाई गई थी और विद्वानो को निम्नप्रकार विदेश भेजा गया था:—

महारक्षित—यौन लोक (यवन देश)।

महादेव—महिस मडल (मैसूर)।

थेररक्षित—वनवास (उत्तरी कनारा)।

योनक धर्मरक्षित—अपरान्तक (कोकण)।

महाधम्म रक्षित—महाराष्ट्र।

थेर मज्झिम्म और कश्यप—हिमवन्त (हिमालय प्रदेश)।

थेर सोणव उत्तर सुवर्ण भूमि (जावा आदि)।

महामहिन्द (महेन्द्र)—लका (सिंहल)—महावंश)।

इनमे से प्रत्येक विद्वान् के साथ ४ और सहायक विद्वान् भेजे गये थे। महारक्षित के ५ शिष्य ईस्नो तथा थेराथून फिलिस्तीन तथा मिश्र मे जाकर बसे थे। ईसामसीह इन्ही के सम्पर्क मे आये थे।

अपने धर्म को फैलाने की आदत हिन्दुओ मे नहीं

रही है । परन्तु इसे भारतीय प्रादन नहीं कहा जा सकता है क्योंकि बौद्धों ने योजनाबद्ध प्रचार द्वारा समूचे यूरेशिया—यूनान – मिश्र—चीन व जापान को बौद्ध बना लिया था। बौद्धों के सम्पर्क और प्रभाव से स्थापित ईसाई धर्म में ईसा के जन्म व चमत्कार की सब कथाएँ बुद्ध जन्म की कथाओं से ली हैं और मिशनरी धर्म होने की सारी परम्परायें बौद्धों से ली है। अत घर छोड़ लगनशील पादरियों ने उसे सम्पूर्ण योरुप, अमेरिका व एशिया में फैला दिया और भारत के धर्मनिष्ठ तोरण को भेद दिया जहाँ का उदघोष था:—

स्वधर्मे निधनं श्रेयः, परधर्मो भयावहः ।

आज देश में एक करोड़ ईसाई हैं और यही कथा इस्लाम की है 'उम्मी निरक्षर। पैगम्बर साहब ने भी अपने धर्म को फैलाने वाला बनाया। उन्होंने तो कोई साहित्य भी नहीं सूजा। उनकी मृत्यु के १३ वर्ष बाद खलीफा उस्र ने जैद नामक विद्वान् से कुरान शरीफ़ संकलित करवाई। परन्तु वे धर्म के लिए युद्ध व जिहाद करने वालों का एक दस्ता छोड़ गये थे। इन जिहादियों ने इस्लाम को भी विश्व धर्म बना दिया। आज परिस्थिति यह है कि विश्व में सब से अधिक ईसाई—फिर बौद्ध फिर मुस्लिम तथा अंत में हिन्दू—फिर एनिमिस्ट (प्रकृति पूजक है) ।

हमारे फैलाने की शृंखला टूट गई। अपने त्रैत वाद के महान् सिद्धान्तों के फैलाव की बात दिल में ही रह गई। स्वामी जी महाराज ने पं० गुरुदत्त तथा मूलराज प्रभृति सज्जनों को मरते समय अपने पास बुला भेजा था। बड़े कष्ट से उन्होंने कहा था कि 'ईश्वर तेरी इच्छा पूर्ण हो। तूने अच्छी लीला की।" उनका मानस पुत्र आर्य समाज शैशव में था और उस पौधे को सींचने का काम वे हम सब पर छोड़ गये। उस समय के वे मनीषी धम्मपाल—कश्यप और आनन्द की कोटि के हैं। उनकी अपनाई हुई पद्धति से हमारी संख्या भारतवर्ष में लगभग ४० लाख हो गई है परन्तु अब काम अवरुद्ध सा हो गया जान पड़ता है। हमारे मनीषी चले गये। देश-देशान्तर और द्वीप-द्वीपान्तर में लगनशील प्रचारक गये भी। परन्तु विदेशों में हमारा सारा कार्य-क्षेत्र प्रवासी हिन्दुओं तक ही सीमित है। स्थानीय (नैटिव लोगों) में तो हमने कार्य का विधिवत सूत्रपात ही नहीं किया है। इधर भारतवर्ष के महाराष्ट्र-आंध्र-मैसूर-केरल-मद्रास-उड़ीसा-त्रिपुरा में भी बहुत कुछ करने को शेष है। इस प्रकार तो स्वामी जी महाराज की कसक पूरी नहीं होगी। समय आ गया है कि बौद्धों की तरह विश्वव्यापी फैलाव की योजना बनाई जावे।

निश्चय है कि हमारे पास २-४ दर्जन व्यक्ति अवश्य हैं जिन को दुनिया में बाँटा जा सकता है। इधर देश में प्रचार-प्रसार के लिए अनिवार्य भर्ती होनी चाहिये अर्थात् प्रत्येक आर्य समाजी के लिये एक वर्ष प्रचारार्थ भिक्षा-अटन द्वारा देना लाजिमी करार दे दिया जावे। प्रतिनिधि सभाएँ ऐसे व्यक्तियों को भारत के मानचित्र से एक २ गाँव सौंपते जावें। हजारों युवक और वृद्ध छटपटा रहे हैं कि उन्हें कुछ काम दिया जावे। हमारे पदाधिकारी ऊंचे उठे और युग की माँग पूरी करें क्योंकि छान्दोग्य उपनिषद में कहा है:—

उक्थ प्राणो वै उक्थ ।
क्षत्रं प्राणों वै क्षत्र ।
यत्तुः प्राणो वै यत्तु ।
साम प्राणो वै साम ।

प्राणवान या जीवित व्यक्ति या समाज की यही पहिचान है कि वह बढ़े। विजातीय द्रव्य को अपने में आत्मसात करें। संगठित होकर एक भाग के दुःखे को सब का दुख समझें और बाहरी आक्रमण से अपनी रक्षा करे। हम जीवित समुदाय हैं और हमें जीवित रहना है। दुनिया को देने को हमारे पास कुछ है और इसीलिए कुछ वर्षों तक हमारा नारा होना चाहिए।

प्रसिवध्वंमे-फैल जाओ।

महर्षि दयानन्द

के प्रति

श्रद्धाञ्जलि

कुछ वास्तव मे अत्यन्त-उच्च कोटि के प्रतिभाशाली मनुष्य हो चुके है परन्तु उनके अन्दर वह दैवी ज्वाला नही है जो दूसरो मे अग्नि प्रवेश कर सकती है और ईश्वर प्रेरित शिष्य-परम्परा स्थापित कर सकती है । यह गुण दोषनिरूपण का एक सर्वोच्च परीक्षण है और इसमे कोई सन्देह नही कि स्वामी दयानन्द इस परीक्षा मे सफल होते है । दूसरो मे प्रकाश डालने के लिए यह महान् आत्मा विशेषता दिखाती है । मैने स्वय अपने नेत्रो से स्वा० दयानन्द की महत्ता की सीमा को देखा है । ससार के भिन्न-भिन्न भागो मे यात्रा के पश्चात् वापस आने पर मैने यह अकसर कहा है कि किस प्रकार मैंने आर्य समाज को एक जीवित धार्मिक शक्ति के रूप मे आर्य-आचार-व्यवहार की रक्षा करते हुए देखा है जब कि हिन्दू धर्म की दूसरी शाखाये विजातीय शासन की विनाशकारी आचारभ्रष्टता के समक्ष न ठहर सकी किन्तु आर्यसमाज ने विदेशी मिट्टी में और विजातीय परिस्थिति में फूलना-फलना सीखा है । उदाहरण के लिए मैं चाहता हूं कि मैं अपने पाठको को दक्षिणी अफ्रीका मे ले चलूं और वहां आर्यसमाज का उन दूसरी संस्थाओं के मुकाबिले में जो भारत के सच्चे धार्मिक जीवन को स्थापित करने के लिए पूर्ण प्रकार से उद्योग करती रही है, अत्यन्त प्रबल जीवन दिखलाऊँ । इन दूसरी संस्थाओं को भी अपना अपना काम करना था और जो कुछ कर सकती थीं किया । किन्तु आर्यसमाज न केवल जीवित ही है, वरन वह उन्नति कर रहा है । यह एक जीवनशील छोटे वृक्ष के समान है जो अपने जड के रेशों को प्रत्येक वर्ष पृथ्वीतल में भेजता रहता है और नए चमत्कार दिखलाता रहता है । इसका प्रभाव दक्षिणी अफ्रिका के भारतीयो पर अपूर्व है ।

एक दूसरा परीक्षण समीकरण अथवा अपनाने का (assimilation) है । उसका एक रूप मिलाना, अथवा हजम कर लेना है । मेरा तात्पर्य इससे नही । दक्षिणी अफ्रीका और दूसरे देशो मे आर्यसमाज आचार-विचार मे इतना परिवर्तित नही होता कि वह स्वय ही हजम हो जावे । बल्कि उसका अपना आचार-विचार वैसा ही है, किन्तु वह चारो ओर से सत्य के नवीन रूपो को धारण करता जाता है । आर्यसमाज के प्रवर्त्तक स्वामी दयानन्द का भक्त रहते हुए भी आर्यसमाज उनकी आज्ञाओ को ठीक उस ही प्रकार मानता है जैसे वह स्वय इच्छा करते अर्थात् उनके भाव को न कि शब्दों को ग्रहण करता है । नवीन उत्साह और आन्दोलन नवीन विकास और उन्नति और नवीन आदर्श नित्यप्रति निकलते है किन्तु आर्यसमाज का वास्तविक लक्षण और विशेषता वहीं रहती है ।

मैं ऊपर आर्यसमाज के एक विशेष लक्षण का उल्लेख कर चुका हूँ जिस के कारण गत शताब्दी मे हिन्दू धर्म मे सुधार के लिए जितनी सस्थाएँ स्थापित हुईं उन सब की अपेक्षा आर्यसमाज का सबसे अधिक महत्त्व है । यह लक्षण आर्यसमाज के विस्तरण और समीकरण की शक्ति का है । जो प्रोत्साहन देश को आर्यसमाज के नेता से मिला वह एक पीढी से दूसरी पीढी तक क्रमश बढता जा रहा है । इस कार्य मे ऋषि दयानन्द की महान् आत्मिक शक्ति से बहुत सहायता मिली और उसके प्रभाव का अभी तक अन्त नहीं ।

एक और भी बात मेरे ध्यान में आई है, विशेषकर भाई परमानन्द के उन पत्रों को पढ़ कर जो उन्होंने एण्डमान कारावास से लिखे हैं और जिन्हे मैंने स्वयं उन ही के हस्त लेख मे पढ़ा है। इन पत्रो मे उन्होंने दिखलाया है कि ऋषि दयानन्द की आत्मा के परदे मे प्राचीन भारत के पुनरुत्थान की शक्ति भी काम कर रही है। जिस समय पुनरुत्थान आन्दोलन (Renaissance) के समय प्राचीन योरोप की आत्मा सजीव हो उठी थी उस ही प्रकार भारतवर्ष मे आर्यसामाजिक आन्दोलन का उद्देश्य प्राचीन भारत की आत्मा को सजीव बनाना था। ऋषि दयानन्द के आगमन से पहले यह आदर्श केवल पुस्तकों मे पाया जाता था। उसका रूप अत्यन्त साहित्यिक हो गया था और उसका प्रचार हमारे विद्यालयो तक ही परिमित था जनसाधारण मे व्यावहारिक रूप से इसका प्रचार नही हुआ था। परन्तु अब स्वयं एक ऋषि हमारी दृष्टि के सम्मुख आ गया जिसने उस प्राचीन आदर्श को ऐसा प्रत्यक्ष कर दिया कि समस्त संसार ने देख लिया। स्वामी दयानन्द के विषय मे यह विचार वास्तव मे सत्य है और मैं इस ही पर अधिक प्रकाश डालने का प्रयत्न करूँगा।

सम्भव है किसी जाति के अतीत मे संग्रह किये हुए आध्यात्मिक विचार कुछ समय के लिए प्रत्यक्ष जीवन से विलुप्त हो जावें परन्तु इसका अर्थ यह नही है कि हम उन्हे सदा के लिए खो बैठे। वह केवल जातीय आत्मा की अगम्य गहराईयो मे डूब जाते हैं और वहीं सैकडों वर्ष तक सुप्त पड़े रहते हैं। जब जागृति का समय आता है तो इसके साथ-साथ एक अपूर्व उत्तेजना शक्ति का विकास भी होने लगता है जैसे किसी अप्रत्यक्ष शक्ति को जिसकी प्रगति कुछ समय के लिए रोक दी गई हो, अकस्मात् मुक्त कर दिया जावे।

आज हमें ज्ञात है कि भारत का वह प्राचीन समय जिस मे संस्कृत साहित्य, दर्शन-शास्त्र और अन्य विद्याओ की उत्पत्ति हुई कम से कम योरोप के उस प्राचीन समय से कम महत्त्व का न था जिसमे यूनानी सभ्यता और विद्या का डंका बज रहा था और जिसे योरोप कुछ समय के लिए बिल्कुल भूल गया था। विगत तीन शताब्दियो में इतिहास ने भली भाँति प्रमाणित कर दिया है कि योरोप की प्राचीन आत्मा की जागृति का पाश्चात्य ससार पर क्या प्रभाव पडा। वास्तव मे आज जिस वस्तु को हम उन्नति कहते हैं, उसका आरम्भ ही उस समय से हुआ है। भारतवर्ष का पुनरुत्थान मानवीय इतिहास मे और भी महत्त्व की घटना समझी जावेगी और प्रत्यक्ष रूप से इसका अनुभव करने के लिए कम से कम तीन या चार शताब्दियो की आवश्यकता होगी। ऋषि दयानन्द ने अपनी दिव्य शक्ति के बल से प्राचीन भारत के अदृष्ट महत्त्व का स्वयं अपनी आत्मा के अन्दर अनुभव कर लिया। उन्होने अपने समस्त जीवन-कार्य की नींव केवल इसी अनुभव पर रक्खी। उनकी संस्था का नाम आर्यसमाज रक्खा गया क्योंकि उनका उद्देश्य आर्य आदर्श को सजीव करना था। उनकी इच्छा थी कि आर्यसमाज का प्रत्येक सदस्य प्राचीन आर्य आदर्श का जीवित दृष्टान्त बन सके।

कभी-कभी यह भी सम्भव होता है कि अतीत को कृत्रिम साधनो से जीवित कर दिया जावे जैसे कि मृतक देह मे बिजली के जोर से कुछ समय के लिए जीवन डाल दिया जाता है। परन्तु स्वा० दयानन्द का उद्देश्य यह नही था। उनके आत्मबल ने भारत के प्राचीन समय को केवल जागृत ही नही कर दिया बल्कि अर्वाचीन भारतीय जीवन की आवश्यकतानुसार उसकी नई और सजीव रूप मे रचना कर डाली। इसलिए यह न समझना चाहिए कि आर्यसमाज का उद्देश्य केवल पुरानी सभ्यता का अध्ययन करना है। आर्यसमाज ने वर्तमान भारत में विशेषकर पञ्जाब और संयुक्त प्रान्त मे नवीन जीवन का सञ्चार किया है और अपनी शक्ति से हिन्दुधर्म मे एक ऐसी शक्ति की रचना की है जो अपने व्यक्तित्व की भली भाँति रक्षा कर सकेगी और जिसे आधुनिक जीवन को यद्यपि वह प्राचीन जीवन से विभिन्न है, अपनाने मे अधिक कठिनता होगी।

अब मैं कुछ विशेष कारण दे चुका हूं जो मुझे

आर्यसमाज संस्था और ऋषि दयानन्द जैसी महानात्मा को अर्वाचीन समय के इतिहास मे उच्च स्थान देने के लिए प्रेरित करते हैं। यह अच्छे प्रकार स्पष्ट है कि ऋषि की महानात्मा मे वह आकर्षण शक्ति और दिव्य गुण थे जिन के कारण उनके अनुयायी उत्साह के ज्वलन्त उदाहरण हैं। मैं यह भी दिखला चुका हूं कि उन्होने अपनी दिव्य प्रतिभा से प्राचीन समय के दिये हुए ज्ञान का द्वार खोल दिया है और भारत की सचित आत्मा को ज्ञान और अनुभव की बहुमूल्य पैतृक सम्पत्ति सहित जागृत करके जन-साधारण मे नवीन जीवन का सञ्चार कर दिया है।

परन्तु इस नवीन जीवन के फूलने फलने के लिए एक और बात की अत्यन्त आवश्यकता थी। इस भय से कि कही अच्छे बीज की उपज न हो क्षेत्र मे से हानि कर कण्टको को साफ करना आवश्यक था। यदि हम योरोप का ध्यान करे तो हमे इस बात का महत्त्व एक अर्वाचीन उदाहरण से अच्छे प्रकार प्रकट हो जावेगा। योरोप मैं जागृति के समय अनेक स्थान कण्टको से ऐसे भरे थे कि उनमे नये बीजों का उगना फूलना और फलना नितान्त असम्भव था। योरोप के उत्तरीय देशो मे पुनरुत्थान आन्दोलन (Renasisance movement) को इस लिए विशेष सफलता हुई कि वहाँ रीतिरिवाज और जातिपाँति का अधिक बंधन न था।

इस ही कारण से आर्यसमाज को उत्तरीय भारत मे विशेष सफलता प्राप्त हुई। यहाँ कण्टको का निराकरण सुगमता से हो सका और नवीन बीज को उगने का अच्छा अवसर मिल गया। यह विचारणीय है कि दक्षिण भारत मे बाधाओं का निवारण करना अब तक सामर्थ्य से बाहर रहा है। किन्तु उत्तरीय प्रान्तो मे आर्यसमाज के आन्दोलन की उन्नति और विकास बहुत आसान हो गया है।

आर्यसमाज और उसके प्रवर्त्तक के विषय मे यही बात अत्यन्त महत्त्वपूर्ण और विचारणीय है। इस मे सन्देह नही कि आर्यसमाज का आदर्श प्राचीन आदर्श है परन्तु इसकी दृष्टि सदैव धार्मिक और सामाजिक सुधार की ओर रही है। उसका विश्वास है कि मध्यवर्ती समय मे अनेक कण्टको ने उत्पन्न होकर अच्छे बीजो को उत्पन्न होने और बढने से रोक दिया है। योरोपीय पुनरुत्थान के समय लूथर और एरमसने भी इस ही युक्ति के अवलम्बन से सफलता प्राप्त की थी। उन्होने पुनरुत्थान के आन्दोलन को सुधार आन्दोलन के रूपमे परिणत कर दिया और ऋषि दयानन्द ने भी भारत मे बिल्कुल यही किया है। उनका मूर्तिपूजन को वेदोक्त न मानना, असख्य अछूतादि वर्णों मे जाति को विछिन्न करने वाली जात-पाँत का अस्वीकार करना। उनका पौराणिक साहित्य को ईश्वरीय और प्रमाण न मानना इन सब बातो ने आर्यसमाज आन्दोलन को वास्तविक सुधार आन्दोलन बना दिया। उन्होने इसे स्वामी विवेकानन्द के नवीन वेदान्त के आन्दोलन से कई महत्वपूर्ण बातो मे भिन्न कर दिया। यद्यपि नवीन वैदान्तिक आन्दोलन ने भी अपनी रीति से औदार्य और सुधार का काम किया है परतु यदि इन दोनो आन्दोलनो की तुलना की जावे तो यह कहना उचित होगा कि बगाल आन्दोलन उदारता पर आश्रित है और पश्चिमीय भारत का अर्वाचीन धार्मिक आन्दोलन के सुधार पर ठीक उसी प्रकार जैसे भारत के नेताओ मे से रवीन्द्रनाथ टैगोर अधिक उदार हैं और महात्मा गांधी (जो उस ही प्रान्त मे उत्पन्न हुए हैं जिसमे कि स्वामी दयानन्द) भाव और आदर्श मे अधिक सुधारक है।

अन्त मे मेरी इच्छा और कामना है कि आर्यसमाज उन्नति के समय मे कण्टकों का निराकरण अपनी सीमान्तर्गत भी करे और वीरता से इस बीसवी शताब्दी मे उस ही प्रकार से सत्य का अन्वेषण करे जैसे ऋषि दयानन्द ने गत शताब्दी मे किया था।

(स्व०) सी-ऐफ-ऐन्ड्रयूज

धर्म द्वारा शान्ति की उपलब्धि

श्री ज्ञानचन्द
बी० ए०
आर्य सेवक

धर्म के इतिहास में अनेक काले धब्बे विद्यमान् हैं - मतान्धता और मत-मतान्तरो की असहिष्णुता, बर्बरता पूर्ण अमानुषिक अत्याचार, जघन्य यातनाएँ, जिहाद और लम्बे युद्ध जिनके परिणाम स्वरूप बडी खून खराबी हुई, धन और जन की अपार क्षति हुई, प्रजा को अनेक कष्ट और यातनाएँ सहन करनी पडी। प्राचीनकला और साहित्य का विनाश हुआ, वैज्ञानिको को सताया गया और ज्ञान एवं आविष्कारो का मार्ग अवरुद्ध किया गया। इसी कारण यदि कुछ व्यक्ति यह कहे कि धर्म के द्वारा शान्ति स्थापित नही की जा सकती तो इस कथन मे अतिशयोक्ति नही है।

परन्तु चित्र का उज्ज्वल पक्ष भी है। धार्मिक संस्थानो के द्वारा ज्ञान और संस्कृति का विकास, अन्ध-विश्वासो और सामाजिक बुराइयो के विरुद्ध युद्ध, आत्म-त्याग धर्म-प्रचारको की सेवा-भावना, त्याग एव बलिदान, मानवीय कष्टो का शमन, सद्गुणो एव सदाचार की वृद्धि मनुष्य की स्वाभाविक जिज्ञासाओ की संतुष्टि, परलोक की सिद्धि ध्यान एवं परमात्मा की स्तुति, प्रार्थना एवं उपासना के द्वारा आत्मा की उच्चता, शिक्षा और उदाहरण के माध्यम से मानव-समाज की एकता और विश्वबन्धुत्व का प्रचार आदि आदि धर्म के उज्ज्वल पक्ष के परिचायक हैं।

इस प्रकार धर्म-शक्ति का रूप लिए होता है और यदि दुर्भावना की प्रवृत्ति की सन्तुष्टि के लिए इसका प्रयोग हो तो यह अभिशाप बन जाता है।

परन्तु धर्म के बिना मनुष्य का काम नहीं चल सकता। पृथ्वी तल पर मानवके प्रादुर्भाव के समय से ही विश्व की पहेली उसके समक्ष रही है। प्रकृति के विविध चमत्कार, मानसिक, और नैतिक सम-स्याएँ, सामाजिक जटिलताएँ और आध्यात्मिक लालसाएँ ये सब उसके समक्ष उपस्थित रहती है। इन सब से वह बच नही सकता।

बुद्धियुक्त पशु होने के कारण ज्ञान विश्वास और आचार धर्म के इन तीन आधार भूत तत्वो का विकास हुआ है।

सम्यक धर्म वा ज्ञान, सत्य विश्वास और सत्य व्यवहार इन तीन पर समस्त समस्याओ का समाधान निर्भर करता है जिनमे विश्व-शान्ति भी सम्मिलित है जो आज की सर्वोपरि समस्या है और जिसने मानव के अस्तित्व तक के लिए खतरा उपस्थित कर रखा है।

वेद की शिक्षा है कि समस्त मनुष्य समाज का एक ही धर्म होता है अर्थात् मनुष्य बनना (मनुर्भव) मनुष्य बनने का अभिप्राय है मानवता का चरम विकास—शारीरिक, मानसिक, नैतिक, आध्यात्मिक और सामाजिक दृष्टि से आदर्श मनुष्य बनना। आर्य समाज के छठे नियम मे संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्यो-द्देश्य बताया है। महर्षि कणाद की परिभाषा के अनुसार धर्म का अर्थ है वे नियम जिनके अनुसार आचरण करने से लोक और परलोक की सिद्धि होती है—यतोऽभ्युदय निःश्रेयस सिद्धिः स धर्मः।

मनुष्य की लौकिक उन्नति के मार्ग मे तीन वस्तुएं बाधक होती है—अभाव, अन्याय और अज्ञान । वेद बताते हैं कि मनुष्य का यह धर्म है कि वह कम से कम इन बाधाओ मे से एक के साथ युद्ध करके उसका विनाश कर दे । जो इस दायित्व से बचता है उसे धर्मपरायण व्यक्ति नही कह सकते । जो समाज की धन-सम्पदा मे वृद्धि करके अभाव से लोहा लेता है वह वैश्य कहलाता है। जो अन्याय और अत्याचार को मिटाता और सुव्यवस्था करता है वह क्षत्रिय और जो अज्ञान को मिटाकर प्रकाश का प्रसार करता है वह ब्राह्मण कहलाता है।

आत्मा और परमात्मा का साक्षात्कार करने से आध्यात्मिक आनंद की उपलब्धि होती है।

यस्तु सर्वाणि भूतानि आत्मन्नेवानुपश्यति सर्वभूतेषु चात्मानं ततो न विजुगुप्सते ॥ यजु ४० । ६ ॥

जो सब मे अपने को और सब को अपने मे देखता है वह सदाचरण से च्युत नही होता ।

यस्मिन सर्वाणि भूतानि आत्मैवाभूद्विजानत.
तत्र को मोहः कः शोकऽएकत्वमनुपश्यतः ।।यजु ४०।।७।।

जिसने सम्यक् ज्ञान से समस्त प्राणी आत्मवत् हो जाते हैं वह शोक और मोह से ऊपर उठ जाता है।

ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत ।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथाः मा गृध. कस्यस्विद्धनम् ।।यजु ४०।।१

हम यह अनुभव करे कि संसार का शासक परमात्मा विश्व मे ओत प्रोत है। हम उसके दिए हुए प्रसादों का उपभोग करे । हम दूसरों की वस्तु पर मन न ललचाएं । इस प्रकार जो आत्मा एकत्व को अनुभव करता और विश्व-नियन्ता परमात्मा की आज्ञा का पालन करता है उसे आध्यात्मिक शान्ति प्राप्त होती है।

लौकिक और पारलौकिक उन्नति किस प्रकार हो सकती है ? आओ इस प्रश्न पर विचार करे। वेद की आज्ञा है कि यज्ञमय जीवन बनाओ (आयुर्यज्ञेन कल्पताम्) यज्ञ का अर्थ है आत्म-त्याग के माध्यम से सब के कल्याण के उच्चतम आदर्श की सिद्धि के लिए समस्त मनुष्यो द्वारा संयुक्त प्रयत्न । यदि समस्त मनुष्य वैदिक आदर्श का अनुसरण करे तो रग, मत, नस्ल और जातीयता के भेद-भाव मिट जाँय। व्यक्ति के स्वार्थ और व्यष्टि के हित के साथ होने वाले सघर्ष तिरोहित हो जायें भौतिक एवं अभौतिक जगत मे शान्ति का साम्राज्य स्थापित हो जाय । तब समस्त विश्व निम्न सुप्रसिद्ध गीत की ध्वनि से प्रतिध्वनित हो उठेगा—

ओ३म् द्यौ शान्तिरन्तरिक्ष ँ शान्ति पृथ्वी शान्ति रापः शान्ति रोषधय शान्ति वनस्पतयः शान्ति विश्वेदेवा शान्तिः ब्रह्म शान्ति सर्व ँ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सामा शान्ति रेधि ।। यजु० ३६ ।। १ ।।

आकाश मे शान्ति हो, पृथ्वी पर शान्ति हो, इन दोनो के मध्य के भाग मे शान्ति हो, जलो मे शान्ति हो, औषधियो मे शान्ति हो, वनस्पतियो मे शान्ति हो, समस्त देव हमे शान्ति प्रदान करे । परमात्मा हमे शान्ति देवे । हमारे चहु और शान्ति व्याप्त हो। हम शान्ति प्राप्त करें।

अनमोल मोती

हम एक दूसरे की रक्षा करें। एक साथ मिलकर ससार भोगें । एक साथ मिलकर शक्ति बढावे । हमारे अध्ययन हमे तेजस्वी बनाए । हम आपस मे द्वेष न करे । तैति ८-१

आर्यो ! दीपावली पर दीक्षा लो

श्री भगवानदेव गुरुकुलीय,

जैनियों का कोई पवित्र दिन था। नगर मे एक बडा भारी जलूस निकाला गया। जैन सम्प्रदाय के स्त्री पुरुषों का उत्साह उस जलूस में देखने लायक था। तरह-तरह के रंगीन कीमती वस्त्र धारण किये हुए वे लोग सडक पर आगे बढते जा रहे थे। उनके आगे उस सम्प्रदाय के साधु-स्त्री-पुरुष थे। उन साधुओं के त्यागी लिबास को तथा अनुयायियो के रग-बिरंगी विलासी लबास को देख कर मैं आश्चर्य मे अवश्य पडा, परन्तु ज्यो ही जलूस आगे बढा त्यो ही मैंने एक सुन्दर सजी हुई विकटोरिया मे एक नव-जवान, खूबसूरत कन्या को देखा। जिसका मुखडा कवि के शब्दो मे लिखो तो चान्द को भी शर्माता था। पूछने पर मुझे बताया गया कि "यह एक करोडपति की एक मात्र कन्या है; जो दीक्षा ले रही है। दीक्षा लेने के पश्चात् यह साधु जीवन बिताएगी और ग्रन्थो का अध्ययन करके उसका प्रचार करेगी।"

इसी प्रकार जैन नवयुवक आदि भी दीक्षा लेते हैं जिन को दीक्षा देते समय असंख्य स्त्री पुरुष बडे उत्साह के साथ इकट्ठे होते है और उनका शानदार जलूस निकाला जाता है।

दयानन्द के वीर सैनिक बनने तथा दयानन्द का काम पूरा करने वालों ! दीपावली के पुण्य पवित्र अवसर पर जिस दिन हमारे ऋषि ने मोक्ष पद प्राप्त किया; आप अपने हृदय, घर और समाजो को टटोलो कि आपने अथवा आपके बच्चो ने या आप की समाज में कितनी संख्या मे लोगों ने दीक्षा लेकर दयानन्द का काम पूरा करने की कोशिश की ?

वास्तव मे आर्यसमाज की वर्तमान स्थिति को देखते हुए आत्मा यही कहता है कि—'आजकल के स्वार्थी आर्य समाजी दयानन्द का काम पूरा—अर्थात् 'समाप्त' या 'खतम' करने बैठे हैं। मैंने कई ऐसे अपने आपको 'आर्य' कहलाने वाले देखे हैं, जो स्वय तो कुछ कर पाते नही; अन्य कोई आर्यसमाज की सेवा करता होगा तो उसकी टीका करने को तैयार हो जाते है - कि—महर्षि जी ने ऐसा लिखा वैसा लिखा है और यह ऐसा चला रहा है या

कर रहा है आदि ऐसी मनोवृत्ति रखने वालो से मैं सिर्फ इतनी प्रार्थना करूंगा कि यदि आप ऋषि के सिद्धान्तो के इतने हामी है और आपकी उम्र ५० वर्ष से ऊपर की है तो, आपको अन्य बाते कहने से पूर्व वानप्रस्थ ले लेना चाहिये। क्योंकि ऋषि ने यह भी तो लिखा है कि "५० वर्ष पूरे होने पर वानप्रस्थ और फिर संन्यास लेकर धर्माचरण करते हुए, धर्म प्रचार तथा प्रभु भक्ति मे अपना मन लगा कर मोक्ष प्राप्ति के लिए प्रयत्न शील रहना चाहिये।"

क्या आप ऋषि के इस सिद्धान्त का पालन करते हैं ? क्या आपने २५ वर्ष पर्यन्त ब्रह्मचर्य पालन करके विद्या अध्ययन किया ? या अपने बच्चो को २५ वर्ष तक ब्रह्मचर्य का पालन कराकर विद्या अध्ययन कराया ? यदि नही, तो ऋषि के सिद्धान्तो के ठेकेदार बनकर अन्यो की टीका करना बन्द करें।

कुछ समय पूर्व मथुरा मे "दीक्षा शताब्दी" मनाई गई। लाखो व्यक्ति आप को ऋषि 'अनुयायी' और 'आर्य' कहलाने वाले वहाँ इकट्ठे हुए। लाखो रुपये खर्च किये गए। इन पंक्तियो के लेखक को भी उस अवसर को देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। दीक्षा शताब्दी प्रोग्राम की समाप्ति पर जब मैं वापिस अपने निवास स्थान पर लौटा तब मुझ से एक प्रतिष्ठित जैन भाई ने पूछा—'पंडित जी ! आप इतने दिन कहाँ गए थे ?' मैंने उत्तर दिया —"मथुरा मे दीक्षा शताब्दी थी, वहाँ गया था।' तब उस जैनी महाशय ने जिज्ञासु भावना से पूछा—'कितने लोगों ने दीक्षा ली ?' यह शब्द सुनकर मेरा मस्तिष्क चकराने लगा कि यह पूछ क्या रहा है—और मैं उसे जवाब क्या दूं !' आखिर मैंने उसे कहा—'मेरे देखने में एक ने भी नही।' तब उस जैनी महाशय को बड़ा आश्चर्य हुआ कि यह कैसे ? दीक्षा शताब्दी में एक ने भी दीक्षा नही ली !' मैंने उन्हे कहा—हमारे गुरुवर ऋषि दयानन्द सरस्वती ने अपने गुरु के चरणो मे रहकर जब ज्ञान प्राप्त करके दीक्षा ली थी—उसको सौ वर्ष पूरे होने आए थे, इस लिए यह प्रोग्राम रखा गया था।'

मैंने जैनी महाशय को उत्तर तो दे दिया, परन्तु मेरा मन विचार सागर मे डूब गया। आंखो के चारो ओर मुझे—दीक्षा ! दीक्षा !! दीक्षा !!! शब्द दिखाई देने लगा। आत्मा ने कहा—हम लकीर पीटते चले जा रहे हैं—धीरे-धीरे हमारे अन्दर भी पौराणिको के अनुसार अन्धविश्वास घर करता जा रहा है, हम लकीर के फकीर बनते जा रहे है। जैसे पौराणिक, महापुरुषो की मूर्तियां सामने रख कर अन्धश्रद्धा से उन्हे भगवान् मान कर पूजते है तथा जयन्तियाँ मनाते है उनका सा जीवन अपना बनाने की कोशिश नही करते; यही हालत हमारी बनती जा रही है।

आर्यसमाज की ढोल पीटने वालो ! वैदिक धर्म की जय बोलने वालो ! जब तक आप बोद्ध, जैन तथा नारायण स्वामी सम्प्रदाय के अनुसार सही दीक्षा" लेकर विश्व की विभिन्न भाषाओं को सीखकर ससार के कोने-कोने मे फैल न जाओगे, तब तक न समस्त विश्व आर्य बन सकेगा और न आप दयानन्द का काम पूरा कर सकेंगे न वैदिक धर्म की जय होगी। नारे भले ही लगाते रहो। गीत भले ही गाते रहो। परन्तु होने का कुछ नही।

एक दिन एक आर्यसमाजी घर पर भोजन कर रहा था। बच्चा बीमार था। अचानक उन्हे पता लगा कि पास वाले गाँव में एक हिन्दू यवन-मत स्वीकार कर रहा है। भोजन को तथा बीमार बच्चे को छोड कर वह चूडीदार पाजामा तथा सर पर पगडी बाँधे हुए व्यक्ति उस गाँव की ओर जाने के लिए ट्रेन मे सवार हुए। ट्रेन उस गांव के छोटे स्टेशन होने के कारण नही रुकी। चलती गाडी मे से वह कूद पडा। दौड कर उस व्यक्ति के घर पर पहुचे जो यवनमत स्वीकार करने के लिए तैयार बैठा था। आते ही उस पगडी पहने हुए व्यक्ति ने उस सज्जन से पूछा—"आपको आर्य (हिन्दू) धर्म मे ऐसी कौन सी कमी अथवा त्रुटि दिखाई दी जो आप यवनमत स्वीकार कर रहे हो? यवनमत स्वीकार करने वाले व्यक्ति ने कहा—यह मैं फिर बताऊंगा, पहले आप यह बताइए कि आपके यह बुरे हाल क्यो है ? कपड़े फटे हुए—सारा शरीर घायल—यह सब कुछ क्यो ? मुस्कराकर उसी पगडी वाले ने कहा सुना

था आप यवनमत स्वीकार कर रहे हो तब ट्रेन मे बैठ कर आपको समझाने के लिये आ रहा था। ट्रेन स्टेशन छोटा होने के कारण रुकी नही। समय हो चला था। इस लिये चलती ट्रेन मे से कूद पडा। जिसका यह परिणाम है। यह बात सुनकर यवनमत स्वीकार करने वाले हिन्दू का हृदय पलटा उसने कहा जिस धर्म मे आप जैसे जान पर खेलने वाले महान व्यक्ति है उस धर्म को मैं कभी नही छोड़ूगा।"

पाठको ! यह और कोई नही पगडी पहने हुए धर्म वीर पडित लेखराम था जिस का एक यवन (मुसलमान) ने विश्वास घात करके खन्जर से खून किया था। इस घटना के पश्चात् सारे शहर पर आर्यसमाज का ऐसा प्रभाव पडा कि वहा थोडे ही दिनो मे एक सुन्दर आर्यसमाज मन्दिर बन गया और वह शहर आर्य समाज का एक गढ बन गया

चाँदनी चौक के चारों ओर संगीनें थी। जन समूह आगे बढने की कोशिश मे था। गोरा पल्टन गोलियाँ छोड ने की तैयारी मे थी। जलूस रुक गया। इतने मे एक विशाल काय, तेजस्वी आखो वाला भगवे-वस्त्र धारण किये हुए-एक संन्यासी आगे बढे, छाती के बटन खोलते हुए उस विशाल-काय सन्यासी ने गोरा पल्टन को ललकारा—'चलाओ गोली।' सन्यासी की गर्जना क्या थी मानो शेर की गर्जना हुई। जैसे जगल मे शेर गर्जना करता है तो छोटे-छोटे जानवर—इधर-उधर जान बचा कर भागते है यही हाल सन्यासी की गर्जना से हुआ। चारो ओर सन्नाटा छा गया। गोरा पलटन की संगीनें झुक गई। रास्ता साफ हो गया। जलूस शान के साथ आगे बढ़ा। यही क्रान्तिवीर सन्यासी श्रद्धानन्द था, जिसने गुरुकुल काँगडी की स्थापना करके देश को असख्य देशभक्त नौजवान पैदा करके दिये है, और दे रहा है जिसको एक मतान्ध मुसलमान ने गोली मार कर खून किया था। उस संन्यासी की कर्मवीरता तथा तप के प्रताप के कारण ही आज भारत की राजधानी दिल्ली मे सवासौ से भी अधिक आर्यसमाजें हैं।

जब तक आर्यसमाज मे स्वामी श्रद्धानन्द, पंडित लेखराम, महात्मा हंसराज, लाला लाजपतराय, पं० गुरुदत्त, भाई परमानन्द, नारायण स्वामी, स्वामी दर्शनानन्द, महात्मा आत्मारात, अमृतसरी आदि जैसे त्यागी-वीर, जान पर खेलने वाले, महारथी थे, तब तक आर्यसमाज का बोलबाला रहा। परन्तु आजकल हमारा दिन प्रतिदिन पतन होता जा रहा है। हम अकर्मण्य होते जा रहे हैं। इसका कारण सिर्फ एक है और वह है "पूर्वजों के अनुसार अपना जीवन समाज को समर्पित न करना।" जब से हमने समाज से अपना स्वार्थ साधने की मनोवृत्ति अपनाई है; तब से हमारा तथा समाज का पतन शुरू हुआ है। मैंने ऐसे कई व्यक्ति देखे है जो नेता बनने के लिए अपने आप को आर्यसमाजी कहते है, परन्तु समाज पर मुसीबत आने पर वही व्यक्ति कह देते है,—आर्यसमाज से हमारा कोई सम्बन्ध नही है।' ऐसे ढोंगी तथा स्वार्थी आर्यो से मैं इतना ही कहूंगा, याद रखो ! यह मनोवृत्ति न आप को ऊँचा उठा सकेगी और न आपकी समाज को। आप यदि ऊँचा उठना चाहते हो तो अपना जीवन आज ही निर्भय होकर निःस्वार्थ भाव से समाज को अर्पण कर दो और अपने गुरु तथा अन्य पूर्वजो के समान पाखण्ड खण्डनी पताका लेकर धर्मयुद्ध के क्षेत्र मे उतर आओ। अवश्य आप अपने पूर्वजों के समान ऊँचा उठोगे और आप की कीर्ति बढेगी। आप ऊँचा उठोगे तो आपकी समाज अपने आप ऊँचा उठेगी।

तो आर्यो ! आओ आज ऋषि निर्वाण दिवस पर अपना जीवन समाज को अर्पण करने के लिए 'दीक्षा" ले। वह दीक्षा जिससे हम अपना तथा जग का कल्याण कर सकें। जब हम दीक्षा लेकर बौद्ध, भिक्षुओं के अनुसार भूमण्डल पर वैदिक धर्म का प्रचार करने के लिए निकल पड़ेंगे "भी हम वास्तव मे सच्चे दयानन्द के वीर सैनिक कहला सकेंगे। दयानन्द का काम पूरा कर सकेंगे !! विश्व को आर्य बना सकेंगे !!! अन्यथा नही।

इसलिए दीपावली पर ऋषि की आत्मा तुम से पुकार पुकार करके कहती है—"आर्यो ! दीक्षा लो ! दीक्षा लो !! दीक्षा लो !!! वैदिक (मानव) धर्म का प्रचार करने के लिए दीक्षा लो।

———

उप नियमानुशासनम्

(श्री कविराज अमरनाथ वैद्य शास्त्री देहरादून)

आर्यसमाज के १० नियम तो अपरिवर्तनीय हैं परन्तु देखना यह है कि आर्यसमाज के कार्यनिर्वाह निमित्त व्यावहारिक व्यवस्था साधक जो उपनियम सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने प्रान्तीय प्र० नि० सभाओं के सहयोग से निर्धारित किए हुए हैं, उन अत्यावश्यक उपनियमों का पालन आर्य समाजों मे हो रहा है वा नहीं और यथा समय उनके परिवर्तन, परिवर्द्धन की आवश्यकता प्रतीत हो रही है वा नहीं। अतः सार्वदेशिक सभा का कर्त्तव्य है, इसकी उचित व्यवस्था करे जिससे कि उपनियमो का अनुशासन शिथिल न होने पावे।

इस समय मेरे हाथ मे जो उपनियमावली है, यह वि० सं० २००६ की प्रकाशित (तृतीय संस्करण) है। अर्थात् ६ वर्ष हो गये, इसके प्राक्कथन, में मुद्रित है कि आर्यसमाज के उपनियम ५० वर्ष हुए जब बने थे। यद्यपि उनमें एक उपनियम यह भी था कि वर्ष-वर्ष पीछे विज्ञापन देकर उन्हें संशोधित किया जा सकता है परन्तु इस ओर आर्यसमाजों का ध्यान ही नहीं गया। अब जब आवश्यकताओं ने विवश किया तब इनके संशोधन की ओर सार्वदेशिक सभा का ध्यान गया। उपनियमो के संशोधन के सम्बन्ध में प्रत्येक समाज और प्रान्तीय सभाओं से दो-दो बार सम्मतियाँ मंगाई गयी।..............प्रथम अन्तरंग सभा और नैमित्तिक साधारण सभा ने जोसंशो धन स्वीकृत किए'''जो कि समस्त आर्य समाजो की सम्मिलित थी वे संशोधित, परिवर्तित हुए उपनियम दि० २६-१-१६३५ को स्वीकृत उपनियम यही है।

ह० नारायण स्वामी, प्रधान

सार्वदेशिक आ० प्र० सभा, देहली।

इससे स्पष्ट है कि समय-समय पर यथावश्यकता उप-नियमों का संशोधन, परिवर्त्तन, परिवर्द्धन अवश्य होना चाहिए। अब आवश्यकता प्रतीत हो रही है कि सार्वदेशिक सभा इस ओर अविलम्ब ध्यान देवे क्योंकि वर्तमान समय में अधिकाश आर्यसमाजो मे उप-नियमों का पालन नही हो रहा। वार्षिक निर्वाचन के लिए तो सर्वथा अवहेलना ही की जाती है। जीवन के अन्तिम चरण में यह खेद अवश्य है कि अब आर्यसमाज की

आभ्यन्तरीय परिस्थिति उपनियमो, मन्तव्यो एवं सिद्धान्तो के विपरीत होती जा रही है। जब प्रमुख समाजो की दशा खराब हो तो जिले की छोटी समाजो की परिस्थिति और भी विकृत होनी स्वाभाविक ही है मैं। समझता हूँ कि इस प्रकार की उपनियमानुशासन अवहेलना प्राय: आर्यसमाजो मे चल रही है। सौभाग्य से किसी आर्यसमाज के अधिकारी उपनियमो के पालन मे पूरा ध्यान देते होंगे। इसके विशेष कारण अपने पक्ष के सदस्यो की सख्या बढाना, किसी विशेष व्यक्ति को सन्तुष्ट करना और अपने अधिकार को सर्वोपरि समझ कर उपनियमो के महत्त्व पर ध्यान न देना, इत्यादि। ऐसी दशा मे अधिकारी तो अपने विधि-विधान हीन कार्य मे सफल हो जाते है, परन्तु शनै २ आर्य समाज की आन्तरिक स्थिति एवं सगठन बिगडता जा रहा है। प्रतिनिधि सभा के जो महोपदेशक समय-समय पर अथवा वार्षिकोत्सवो पर विशेष रूप से पधारते है वे केवल अपना प्रभावशाली भाषण देकर ही विदा हो जाते हैं। उनके पास आर्य समाजो की वैधानिक सगठन स्थिति समझने पूछने निरीक्षण करने का अवसर ही नही होता। इस प्रकार समाजों की परिस्थिति निरन्तर उपनियमानुशासन से विमुख होती जा रही है, तब व्यवस्था कैसे सुधरे, यही विचारणीय है, चिन्तनीय है।

सदाचार और मिथ्याचार

(ख) उपधारा (क) में जो सदाचार की परिभाषा की गई है, उसका पालन न करने वाले सदस्य बढ रहे हैं। उनके विरुद्ध न कुछ कहा जाता है और न वे अपने विकृत आचरण मे सुधार करने को उद्यत होते हैं। अपितु उनके प्रभाव से अधिकारियो को दबना पडता है। ऐसी दशा मे सदाचार की परिभाषा कुण्ठित हो रही है।

उ० नि० ४ (क) के अनुसार आर्य सदस्यों को शतांश शुल्क देने का निर्देश है। इसका पालन ९९ प्रतिशत सदस्य नही कर रहे, किसी समाज का कोई विरला सदस्य ही अपनी आय का शताश भाग देकर इस उपनियम का पालन करने का श्रेय प्राप्त करता हो। प्राय. अधिकाश सदाचरण शील सदस्य भी साधारणतया अथवा विशेषतया मिथ्याचार का अवलम्बन कर रहे हैं। प्रत्येक व्यक्ति अपनी आय की स्थिति को समझता हुआ भी शताश शुल्क नही देता, कभी किसी कारण से दे भी नही पाता। ऐसी दशा में अनायास ही असत्य का व्यवहार दैनिक रूप धारण कर रहा है। अत. इस उपनियम का संशोधन कर यथाशक्ति शुल्क देय कर देना चाहिये जिससे कि मिथ्याचार से उपनियमानुशासन हीनता न होने पावे।

सार्वदेशिक सभा के प्रस्ताव

श्री प्रधान मत्री जी सार्वदेशिक सभा के आदेश को सार्वदेशिक पत्र मे प्रकाशित कर उपनियम स० ४ का पालन करने का निर्देश किया है। यदि समस्त समाजों में इसको मानने पालन करने की प्रवृत्ति हो जावे तो उपनियमानुशासन भली प्रकार हो सकेगा।

यद्यपि अब ऐसी स्थिति है कि उपनियमो की व्यवस्था पर पुनः सार्वदेशिक सभा अवश्य ध्यान देवे।

(श्री वैद्य जी की भावना प्रशसनीय है। उपनियमों का अक्षरश: पालन होना चाहिए। आर्य समाज के उपनियमों का सार्वदेशिक सभा द्वारा सशोधन हो रहा है।)

—सम्पादक

—:०:—

आवागमन और हजरत इमाम जमाते अहमदिया

श्री बाबू कालीचरण आर्य

(१)

हजरत इमाम साहब ने एक ट्रैक्ट "आवागमन का सिद्धान्त बुद्धि की तुला पर" नाम का लिखा है। उसमे आपने पृष्ठ ३, ४, ५ तथा ६, के आधे तक आवागमन मानने वालों की बात कही। पृष्ठ ७ पर आप ट्रैक्ट मे वैदिक धर्म की धारणाओं के लिये लिखते है, "कि मानव जाति की अवस्था मे जो भेद और अन्तर पाया जाता है, उसका कोई कारण होना चाहिए।" तत्पश्चात् उसका यह कारण बना लेते है कि सब कुछ पिछले कर्मों का परिणाम है, पिछली योनि मे जिसने जैसा कर्म किया है, इस योनि मे उन कर्मों का फल मिलता है।" हजरत साहब कहते हैं कि "यह तो ठीक है मनुष्य जाति की अवस्थाओं में जो भेद और अन्तर पाया जाता है, उसका कोई कारण होना चाहिये। परन्तु यह किस प्रकार ज्ञात हुआ कि उसका यही कारण है अर्थात् आवागमन के फलस्वरूप ही ऐसा होता है। आवागमन की सिद्धि के लिए कोई युक्ति होनी चाहिये। केवल यह सिद्ध कर देना पर्याप्त नही है कि मानव जाति की अवस्थाओं के भेदों का कोई कारण होना चाहिए अपितु यह भी आवश्यक है कि यह सिद्ध किया जाय कि इन भेदो का कारण आवागमन ही है"—

समाधान—मौलाना साहब को यह तो स्वीकार है कि मानव जाति की अवस्थाओं मे भेद है, और अन्तर है और उसका कारण अवश्य होना चाहिए। जो कारण वैदिक धर्म बतलाता है वह आपको स्वीकार नही, परन्तु मौलाना साहब अपना कोई कारण स्पष्ट रीति से उपस्थित नही करते। आपने पृष्ठ ४ पर तीन कारण अनुमान किए हैं और शायद पहले दो कारणों को मौलाना साहब अपने सिद्धान्त के अनुकूल मानते है। उन्ही दो विचारों के सम्बन्ध मे स्वयं आपत्ति उठाकर अपना समाधान भी दिया है, जो निम्न प्रकार है:—

पहला कारण जो मौलाना साहब मानते हैं।

"मनुष्य परमेश्वर की ओर से इस भेद-भाव की अवस्था मे पैदा किया जाता है और यही इसका कारण है"

दूसरा कारण—"अथवा यह कि यह भेद-भाव पैतृक सम्पत्ति के रूप मे मिलते हैं" इन दोनों कारणों के विरुद्ध आपने जो आपत्ति लिखी है, और उसका समाधान किया है, वह समस्त मनुष्यों के भावी कर्म पर लागू होता है, मौजूदा जन्म के साथ उसका कोई सम्बन्ध नहीं। आपने एतराज उठाया है कि "यदि परमेश्वर की ओर

से भेद-भाव की अवस्था मे पैदा होना मानेंगे या पैतृक सम्पत्ति के रूप मे भेद-भाव का मिलना मानेंगे तो मनुष्य की अपने कर्मों पर जिम्मेवारी नही रहेगी। अर्थात् अपने कर्मों पर अधिकार प्राप्त नहीं रहता क्योंकि परमेश्वर की क्रिया अथवा उसके माता पिता की अवस्था उसे अमुक विशेष अवस्था मे चलने के लिए विवश करती है और ऐसी दशा मे वह जो कुछ करता है उसे दण्ड क्यों मिलेगा। जब परमात्मा ने मनुष्य को भला या बुरा बनाया तो उस पर अनुग्रह और दण्ड कैसा।

२. यदि यह मान लिया जाय कि परमात्मा ने ही भेद-भाव की अवस्था मे पैदा किया अथवा पैतृक-सम्पत्ति के रूप मे भेद-भाव मिला तो परमेश्वर के न्याय पर यह आरोप लगता है कि उसने मनुष्यों मे ऐसा क्यो अन्तर और भेद रखा? आत्मा और परमात्मा का सम्बन्ध यह चाहता था कि वह समस्त जनसमाज से साम्य भाव रखते हुए समान व्यवहार करतो।

३—यह कह देना कि भेद वा अन्तर परमेश्वर ने यों ही अकारण रखा है, उचित नही, जबकि सृष्टि में प्रत्येक कार्य विधान सार्थक सकारण है, उसका औचित्य सर्वाङ्गपूर्ण है। अतः किसी बौद्धिक कारण का होना आवश्यक है जो, आवागमन के अतिरिक्त हो

४. जब संसार मे कोई कार्य या कोई बात रहस्य विशेष और परिणाम से खाली नही तब परमात्मा ने जनसमूह को यू ही जैसा चाहा वैसा बना दिया और उस व्यक्ति का जीवन-निष्फल और परिणाम-शून्य रहा जो प्राकृतिक विधान के विरुद्ध है

मौलाना साहब ने इन चारों आपत्तियों का उत्तर लिखा है, वह बहुत ही विचित्र है —

आपने उपरोक्त चारों आपत्तियों का जो उत्तर लिखा, उसमे आप लिखते हैं "कि यदि किसी मनुष्य के पास कार्य करने के कम साधन हैं, या किसी की परिस्थिति दूसरे की अपेक्षा से कमजोर है, तो परमात्मा कमजोर और कम साधन रखने वाले के कर्मों को उस के साधन और दी हुई शक्ति को ध्यान मे रखते हुए तोलेगा। अर्थात् यदि किसी अमीर आदमी ने एक हजार रुपया दान दिया है, और किसी गरीब ने एक रुपया दिया है, और यदि एक हजार दान करने वाला मुक्ति का अधिकारी है, तो एक रुपया वाला भी समान-रूप से मुक्ति का अधिकारी होगा। इसलिए परमात्मा के न्याय पर कोई एतराज नहीं आता। परमात्मा पर एतराज हो सकता था यदि परमात्मा यह निर्णय करता कि अधिक सत्-कर्म करने वाले को अधिक सफलता मिलेगी और न्यून वाले को न्यून। परन्तु आपने पृष्ठ ८ पर जो कुरान-शरीफ से सूरते-ए-एफ की आयत पेश की है, उस ही में स्पष्ट लिखा है कि "जिस व्यक्ति के सुकृत्यो का पलड़ा अधिक भारी होगा, वह सफल हो जायगा" जिसके अर्थ स्पष्ट हैं, जिसका पलडा हल्का होगा वह सफल नहीं होगा। और इस तरह बहुसुकृत्य—कम सुकृत्य वाले से अच्छा है और कर्मों के आधार पर ही प्रभु अपना फैसला या न्याय करते हैं। जैसा कि अक्सी कुरान मजीद अज-हजरत शयखुल-हिन्द मौलाना-महमूद हसन व हजरत मौलाना शबीर अहमद साहब, उस्मानी, मतबूआ, मदीना प्रेस, बिजनौर से सुफह १६५ पर इस ही आयत का तरजुमा बहुत साफ शब्दों मे फरमाया है। "कयामत के दिन सब लोगों के ऐमाल का वजन देखा जायगा, जिनके ऐमाल कल्बिया वह ऐमाल, ज्यादह-वजनी होगे, वह कामयाब हैं, और जिनका वजन हल्का रहा वह खिसारा मे रहे।" हजरत शेख साहब फरमाते हैं कि "हर शख्स के अमल वजन के मुआफिक लिखे जाते हैं। आखरत मे वह कागज तुलेंगे जिसके नेक काम भारी हुए तो बुराइयों से दर-गुजर हुआ और हल्के हुए तो पकडा गया। आयत का तरजुमा—फिर हम उनको अहवाल सुनायेंगे हम अपने इल्म से और हम कहीं गायब न थे और तोल उस दिन ठीक होगी, फिर जिसकी तोलें भारी हुई सो वही हैं निजात पाने वाले और जिसकी तोलें हल्की हुई वही हैं, जिन्होंने अपना नुकसान किया।"

जिस आयत को मौलाना साहब ने अपने सबूत में पेश किया वही उनके खिलाफ पड़ती है। इसमें साफ लिखा है कि निजात पाने के लिए सत्कर्म अधिक होंगे और जिनके सत्कर्म न होंगे या कम होंगे उनको निजात् नहीं मिलेगी। परमात्मा कर्मों के आधार पर ही मनुष्य को

सजा और जज़ा देता है बिना कर्मों के नहीं। इसलिए आपका फर्माना परमात्मा ने बिला किसी कर्म के मनुष्य को दुनिया में इतने भेद-भाव के साथ किसी को लूला-लंगडा-अन्धा और किसी को स्वस्थ और किसी को अस्वस्थ और किसी को गरीब और मालदार पैदा किया युक्ति युक्त नहीं है।

इसके अतिरिक्त आपका फरमाना कि मनुष्य को दुनिया मे विभिन्न अवस्थाओं मे पैदा करने से परमात्मा पर कोई आक्षेप नही या सिद्धान्त पर कोई आक्षेप नही। क्योंकि परमात्मा अवस्था और भेदों को ध्यान मे रखते हुए कर्म फल देता है:—

समाधानः—यह आपका समाधान मनुष्य दुनिया में जब कर्म करने योग्य होता है तब, आगामी कर्मों पर लागू हो सकता है। उनका समाधान आप कर सकते हैं, यद्यपि यह आपके भी अकीदे के खिलाफ है। परन्तु इसका क्या समाधान है, कि कर्म करने से पहले बच्चा माँ के गर्भ से अन्धा, लूला, लंगड़ा कमजोर कुरूप पैदा हो और दूसरा बच्चा, स्वस्थ, सुन्दर सुडौल पैदा हो और इसका क्या समाधान है, कि एक गरीब के घर मे पैदा हो जहाँ पेट भर रोटी मिलना भी कठिन है और दूसरा राजा के घर पैदा हो जहाँ सारी व्यवस्थाएँ उत्तम से उत्तम रीति में उपस्थित हो। इस जन्म के कर्म तो कयामत के दिन तोले जायेंगे और उस दिन सज़ा-जज़ा मिलेगी। परन्तु जन्म के अन्धे, लूले, लगड़े और कंगालों को यहाँ जो कष्ट होता है, यह क्यो? इसका समाधान आपने अपने ट्रैक्ट में अन्त तक कही नही किया। मैं पूछता हूँ जब आप के एतकाद में कयामत के दिन इन्सान के ऐमालो का फैसला होता है तो कयामत से पहिले दुनिया में इन्सान को सुख अथवा दुःख क्यों अभी तो मनुष्य के कर्मों का फैसला ही नही हुआ है फिर खुदा के बन्दों मे कोई बहुत बडा अमीर इस ही दुनिया मे गरीब क्यों बन जाता है? कोई राजा रंक कोई रंक राजा कैसे बन जाता है? कयामत तो अभी दूर है क्या कारण है कि एक कराह रहा है और उसी समय दूसरा मौज उडा रहा है एक के घर मे शादी की खुशियाँ मनाई जा रही हैं दूसरे के घर में उसी समय मौत का रंज मनाया जा रहा है। बफर्ज मोहालमान मीलें कि निर्धन का एक पैसा धनवान की बहुत बड़ी सम्पत्ति के समान समझा जायगा जैसा कि आपने पृष्ठ १० पर लिखा है परन्तु यह तो तब समझी जायगी जब कयामत आयेगी परन्तु १ पैसे वाले निर्धन को जो कष्ट धन के अभाव मे है जो आराम धनी को धन से है यह क्यो? क्या यह परमात्मा के न्याय पर जबर्दस्त चोट नही है? मौलाना फरमाते हैं कि ठीक है यह एतराज हो सकता है परन्तु इसका आवागमन से कोई सम्बन्ध नही। उत्तर—तब सुख दुःख का सम्बन्ध किससे है मौलाना साहब ने स्वयं लिखा है कि दुनिया मे अवस्था भेद एक बुद्धिमान दूसरा दुर्बुद्धि एक मालदार दूसरा गरीब यही तो सुख दुःख के कारण हैं। आवागमन से इसका सीधा सम्बन्ध है इसका समाधान कुछ नही सिवाय इसके कि पूर्व जन्म माना जाय जहाँ से आत्मा कर्म कर के आता है अस्तु मौलाना साहब फरमाते हैं कि यह "सुख-दुःख प्राकृतिक विधानानुसार अवतरित होता है न कि धार्मिक विधानानुसार।" मैं मौलाना साहब से पूछता हूँ कि प्राकृतिक विधान किसका है और धार्मिक विधान किसका है? दोनों का विधाता क्या परमात्मा के अतिरिक्त कोई दूसरा है? यदि नही तो वही एतराज कि एक को प्राकृतिक विधान मे कष्ट दूसरे को आराम क्यों?

पुन: मौलाना साहब फरमाते हैं कि यदि किसी गरीब मुसीबत जदा पर आपत्ति आती है तो परमात्मा पर विश्वास रखने से मुसीबत के बदले जब वह परमात्मा से मिलता है तो पाप क्षमा हो जाते हैं। मौलाना साहब जब तकपरमात्मा से नही मिला तब तक तो कष्ट भोगता रहेगा और कैसा अच्छा न्याय है कि पहले तो उसको अधा, लंगड़ा पैदा किया, कंगाल पैदा किया वह दुःख भोगता रहे पश्चात् परमात्मा को वह याद करे उस पर विश्वास करे तब कयामत मे जाकर परमात्मा से मिले उस वक्त उसके गुनाह क्षमा हो। क्यो मौलना साहब जितने दिन दुनिया मे दुःख उठाए यह क्यो ? इसका कुछ जवाब है ? अच्छा एक बात और अगर कोई परमात्मा को याद नहीं करता, परमात्मा पर विश्वास नही करता, तो दोजख उसी के लिए तो बनी है। अब फरमाइये कि एक इन्सान दोजख मे क्यो गया ? बिना कर्मो के या कर्म फल से, यदि कर्म फल से तो किन कर्मो के फल से? वह कर्म कहाँ किए गए जिनसे प्रभावित होकर पुन उसने ऐसे कर्म किये जिनके कारण दोजख मिली बतलाना चाहिए। क्यो परमात्मा ने ऐसा इन्सान कमजोर निर्बुद्धि पैदा किया जिनसे प्रभावित होकर गुनाहगार बना फिर भी दोष परमात्मा पर ही आता है। आप भी मानते है कि कारण जरूर है "क्या है ? आपके पास उत्तर नहीं ? क्यो मनुष्य दोजख में जाता है ? एक और विचित्र विचार एक सचाई को न मानकर अनेक गलतियाँ होती हैं। मौलाना साहब पृष्ठ ११ पर तहरीर फरमाते है कि "यदि आत्मा को परमात्मा कहीं से पकड़ कर मनुष्य के शरीर मे डाल देता तो निस्सदेह उसके न्याय पर आक्षेप आता परन्तु आत्मा तो मानवीय शरीर से ही उत्पन्न होती है और पुत्र की आत्मा उसी वीर्य से जन्म लेती है जो पिता से उत्पन्न होता है तो उसमे इन शक्तियो का उद्भूत होना जो पिता मे थी और उसका उद्भूत होकर इन अवस्थाओं का स्वामी होना जो पिता को प्राप्त थी एक प्राकृतिक क्रिया है इसमे कोई अत्याचार नही।" मौलाना साहब कृपा होती यदि आप यह भी लिख देते कि आत्मा का पिता कौन है तो अच्छा था। आपने लिखा है कि "पुत्र पिता के वीर्य से उत्पन्न हुआ अतः पुत्र मे उन शक्तियो का प्रादुर्भाव हुआ जिनसे पुत्र मे पाप करने की शक्ति आई तो वह अपने पिता खुद बंद करीम से आई क्योंकि सिवाय खुदा के आत्मा का पिता कौन हो सकता है जबकि आप एक खुदा के सिवाय किसी को मानते ही नही इसके अतिरिक्त जिन भिन्न अवस्थाओ मे मनुष्य पिता द्वारा जन्म दिया जाता है क्या वह सब भिन्न अवस्थाएँ भी खुदा मे थी और हैं क्योंकि खुदा तो अब भी नित्य भिन्न परिस्थियों मे आत्मा को पैदा कर रहा है?

(क्रमशः)

अनमोल मोती

हम दिव्य गुणो से युक्त हो। कानो से अच्छा सुने आँखो से अच्छा देखें। दृढ अगों और शरीर से निरन्तर भगवान् की स्तुति करते हुए भगवान् की दी हुई आयु प्राप्त करें। —वेद

भाई भाई से द्वेष न करे। बहिन बहिन से द्वेष न करे। हम सब एक चाल वाले हों और एक व्रत होकर भले प्रकार अच्छी वाणी बोलें।

—यजु० अ० ३-३०-३

बच्चों की समस्याएँ

—श्री शरच्चन्द्र पाठक एम० ए० बी० टी०

इस बीसवी शताब्दी में विज्ञान की अनेक शाखाओं प्रशाखाओं ने प्रत्येक क्षेत्र में अपनी उपयोगिता प्रमाणित कर दी है। इसी सम्बन्ध मे हमारा ध्यान मनोविज्ञान की ओर खिच जाता है। यद्यपि मनोविज्ञान का क्षेत्र बहुत विस्तृत है फिर भी बच्चो के व्यवहार शिक्षा और उनकी समस्याओं की दिशा मे इसका कार्य बहुत ही सराहनीय है। साधारण तौर पर एक स्वस्थ व्यक्ति को डाक्टरी सहायता अथवा परामर्श की आवश्यकता नही होती किन्तु विकार-ग्रस्त अवस्था मे स्वास्थ्य विशेषज्ञ की सेवाएँ लाभकारी ही होती है, ठीक यही अवस्था हमारे मस्तिष्क की है विशेषतौर पर बच्चों की मनोगुत्थियां सुलझाना, उनके व्यवहार का अध्ययन कर उन्हे वाँछित मार्ग पर डालना बहुत आवश्यक हो जाता है। इस दिशा मे ससार के विभिन्न मनोविश्लेषकों ने बच्चो के बिगड़े हुए मस्तिष्क-सन्तुलन को स्थिर रखने मे सहायता की है तथा और अधिक की आशा है। मोटे तौर पर हमारे सामने यही उद्देश्य होता है कि जो बच्चे दुर्भाग्य से किन्ही विशेष परिस्थितियो के कारण अनुशासन हीनता या समाज विरोधी भावो का प्रदर्शन करत है उन्हे मनोवैज्ञानिक उपचार के द्वारा सही मार्ग पर लगा दे। बच्चों की उन दूषित परिस्थितियो एव वातावरण का बारीकी से अध्ययन कर, जिस मे कि उनकी गलत आदतें जन्म लेती हैं, पनपती हैं, उसे स्वस्थ वातावरण में बदलना है इस प्रकार बच्चा अपनी उन परिस्थितियों का अवश्यभावी कुपरिणाम न ग्रहण करे वरन् ग्राह्य को अपना कर अपने व्यक्तित्व का स्वस्थ और सर्वतोमुखी विकास करने में सफल हो। सौभाग्य से गेस्टाल्टवादी मनोविश्लेषकों ने इस दिशा मे महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है।

बच्चों की बुरी आदतों, अपराध प्रवृत्तियो का यदि बारीकी से अध्ययन किया जाय तो समस्या और समाधान सब कुछ स्पष्ट हो जाता है। श्रीमती Mary buell Sayles ने बच्चो के व्यवहार का सूक्ष्म मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन किया और उनके कोमल शिशुमन की भावात्मक आवश्यकताओं को समझा और कुछ निष्कर्ष निकाले। हीन भावनाओ से पोषित दुखी और निरश बच्चों की, कोमल जीवन वल्ली को प्यार सहानुभूति और ममतारूपी संजीवनी की उतनी ही आवश्यकता है जितनी कि उन्हें अपने शारीरिक स्वास्थ्य के लिए पौष्टिक भोजन की। ठीक इसके विपरीत यदि इन कोमल हृदयी शिशुओं को निरंतर झिड़की लताड़ एव कटु उपदेशों की कड़ी बौछार सहन करनी पड़े या दैव प्रकोपो से अमसमय में ही माँ बाप का साया इनके ऊपर से उठ जाय तो अधिकांशत: ये बच्चे दुखद बाल अपराध वृत्ति के शिकार हो जाते हैं। अत: यह स्पष्ट है कि शुभ-अशुभ सब कुछ वातावरण पर अवलम्बित है।

इस समस्या का समाधान है बच्चो के व्यवहार और उनकी समस्याओं का गहन अध्ययन।

सन् १९३६ में श्रीमती मौन्टेसरी ने बच्चों के स्वभाव का अध्ययन करके एक पुस्तक प्रकाशित की थी उसका

नाम है "शैशवावस्था के रहस्य (The Secrets of Childhood.) उसके अन्दर उन्होंने बच्चों के उस भावुक समय के अध्ययन पर जोर दिया है जब कि बच्चों का मस्तिष्क बडी तीव्र गति से विकास की सीढ़ियों की ओर उन्मुख रहता है। उस भावात्मक विकास की अवस्था में बच्चे को प्रेम की तीव्र आवश्यकता रहती है। बड़ो के प्यार, दुलार और अविश्वास की छाया में इन नन्हें बिरवों का विकास बडी अच्छी तरह होता है। किन्तु जब इस नाजुक समय मे उन्हे प्यार और स्नेह युक्त वाणी का सहारा नहीं मिलता तो परिणामत: उनके मस्तिष्क का विकास अपना वाछित मार्ग बदल कर भयंकर दुरावस्था का रूप ग्रहण कर लेता है। ऐसी परिस्थिति में बच्चा हट्ठी, जिद्दी, चिड चिडा हो जाता है। उसका अंतरमन परिस्थितियो के प्रति विद्रोहात्मक रूप अपना लेता है और व्यवहार की विकृति के सहारे ही चीख चीख कर समाज से अपनी स्वाभाविक आवश्यकता की पूर्ति की मांग करता है और गलत उपायों से अपने आप को सन्तुष्ट करने की विफल चेष्टा करता है किन्तु विश्लेषण वेत्ता इन सब समस्यात्मक व्यवहारो का हल बच्चे की मनोदशा परख कर ढूढ निकालते हैं।

इसके अतिरिक्त मनोविज्ञान ने एक और रहस्योद्घाटन यह किया है कि हमें कभी भी बच्चे पर अपने जीवन के नैतिक उच्चादर्शों को थोपना नहीं चाहिये। कुछ व्यक्ति यह चाहते हैं कि हमारा बच्चा अपने शैशव काल मे ही सभ्यता संस्कृति और सदाचार के गुणों से सम्पन्न हो जाय तथा सब प्रकार के आदर्श उसके प्रारम्भिक जीवन मे ही प्रतिफलित हो उठें! इस प्रकार के विचार बहुत ही घातक होते हैं। इसका अर्थ तो यह हुआ कि बच्चा अपना बचपन त्याग कर आयु से पहले ही प्रौढ मनुष्य हो जाय। इस प्रकार के प्रयोग बच्चों को बर्बाद कर देते हैं, वे कठोर आदेश एवं अनुशासन की चक्की मे पिस कर व्यक्तित्व विहीन हो जाते हैं, पग पग पर माँ बाप का सहारा तकते हैं, वे आश्रित हो जाते हैं, तथा उन में हीन भावना उत्पन्न हो जाती है! ऐसी भयावह परिस्थिति से बचने का उपाय है कि जरा धैर्य से काम लें तथा बच्चों के शैशव को ध्यान में रख कर उनकी स्वाभाविक आवश्यकताओं की अपने आदर्शों के सम्मिश्रण से यथाशक्ति पूर्ति करते रहें।

यदि एक ओर बच्चों के प्रति असावधानी और उनकी स्वाभाविक भूख की अतृप्ति घातक है तो दूसरी ओर माँ बाप का अत्यधिक लाड प्यार अनावश्यक प्रशसा एवं आवश्यकता से अधिक देख रेख भी उतनी ही हानिकारक है। ऐसी अवस्था में ये लाड प्यार से पले बच्चे कभी या तो अपने नवजात भाई बहिनों के प्रति प्रेम और सौहार्द की भावना नहीं रख पाते या स्वयं मां बाप का तिरस्कार करने मे नहीं चूकते। बच्चे अनुकरणशील होते हैं जैसा वे अपने चारों ओर देखते हैं वैसा ही स्वयं भी करने का प्रयास करते हैं। घर में बच्चा पिताजी को धूम्रपान का शौक फरमाते देखता है और चोरी छुपे स्वयं भी उसी इच्छा की पूर्ति करता है। इससे भी एक कदम आगे और खराब अवस्था जब आती है जबकि बूढे बाबा बच्चो से चिलम भरवाते हैं और जरा दम लगाकर सुलगाने की प्रेरणा देते हैं। परिणामत: बच्चा अल्पायु मे ही इस दुर्गुण का शिकार हो जाता है। इन सब परिस्थितियो से बच्चों को बचाने में बड़ों पर भारी उत्तरदायित्व आ जाता है। उन्हें चाहिए कि वे बच्चो के दैनिक जीवन मे अनुकरणीय आदर्श पेश करें। कभी कभी अपने वैवाहिक जीवन में असफल दम्पति अपना समस्त क्रोध अन्धाधुंध रूप से बच्चों पर उंडेल देते हैं और उन्हें तबाही के मार्ग पर ले चलने मे सहायता देते हैं।

कभी-कभी ऐसा होता है कि किसी परिवार में बहुत दिनों के पश्चात् बच्चा जन्म लेता है अतएव उसके मांबाप के हृदय में चिर पोषित वात्सल्य की अजस्र धारा बच्चे को अनेक दुर्गुणों एवं कुप्रवृत्तियों के गड्ढों में बहाकर ले जाती हैं। कहीं पर किसी परिवार मे कोई बच्चा एक मात्र सन्तान होने के नाते अनावश्यक लाडप्यार पाकर अनेक बुरी आदतों का शिकार हो जाता है। बहुधा परिवार के सदस्यों के आपसी झगडे दिन-रात का क्लेश वाली गुफ्तार तथा मार पीट बच्चों के मन मे अनेक कुसंस्कारों की छाप छोड़ उनके आचरण को विकृत कर

(शेष पृष्ठ २२ पर)

प्राप्ति स्वीकार

पुस्तक नामः—	लेखक नाम	प्रकाशक	पृष्ठ	मूल्य
१—ब्रह्मचर्य के साधन	आचार्य भगवान् देव जी	वैदिक साहित्य सदन २।३१ रूपनगर दिल्ली	५४	।=)
२—वैदिक धर्म परिचय	जगदेवसिंह शास्त्री "सिद्धान्ती"	वैदिक साहित्य सदन	८२	।।=)
३—सुखी जीवन	स्वा० गिरजानन्द सरस्वती "वैदिक पथिक"	संन्यास आश्रम, गाजियाबाद	३२	।-)
४—'तन्मय' कवितावली प्रथम खण्ड	कुं० रणजित् "तन्मय"	कुं० रणजित् एम० ए० एल-एल० बी० जयपुर	६२	।।)
५—शास्त्रीय-धर्म दिवाकर वा यथार्थ प्रकाश	दण्डी स्वा० रामतीर्थ जी महाराज	प० अमोलकराम ज्योतिषी, मन्दिर सोनिया पुराना बाजार लुधियाना ।	२००	१।)
६—महर्षि विरजानन्द जी का जीवन-चरित	स्वा० वेदानन्द सरस्वती	वैदिक साहित्य सदन-दिल्ली	१७६	१।।)
७—स्वर्ण सिद्धान्त	ब्र० जगदीशचन्द्र विद्यार्थी विद्यावाचस्पति	आर्य कुमार सभा, किंगजवे-दिल्ली	२२	२५N.P.
८—वीर शिवाजी	श्री पाद जोशी	वि० वैदिक शोध सस्थान होशियारपुर	२१६२	७५N.P.
९—वैदिक भारत में यज्ञ और उसका आध्यात्मिक स्वरूप	मुनि देवराज विद्यावाचस्पति	हरयाणा साहित्य संस्थान गुरुकुल झज्जर (पजाब)	२०८	२)
१०—वैदिक पंच महायज्ञ पद्धति	पं० सत्यपाल शास्त्री, वेद वाचस्पति,	म० प्यारेलाल वेदप्रचारनिधि हापुड (मेरठ)	१३६	७५N P.
११—जीवन सन्देश (प्राण-चिकित्सा)	भरतसिंह वैद्य प्राकृतिक चिकित्सक	भरतसिंह वैद्य, प्राकृतिक चिकित्सक सी ३४१ सरोजनी नगर, नई दिल्ली	२५६	३)
१२—अष्टादश पुराण परिशीलन	आचार्य शिव पूजनसिंह कुशवाहा	जयदेव ब्रदर्स, बड़ौदा	६६	७५N.P.
१५—सत्यार्थ प्रकाश		वैदिक साहित्य सदन २/३१ रूपनगर, दिल्ली–६	४२८	२)

महुआ डांड जिला पलामू छोटा नागपुर में हमारी भावी प्रचार योजनाएँ

लेखक—
श्री सुखदेव जी शास्त्री

महुआ डांड का स्वरूप और परिचय

महुआ डांड ५२ मील वर्ग क्षेत्र में बसा हुआ एक सुन्दर और सुरम्य वन्य प्रदेश है। कुछ लोगों का कहना है कि इसे आबाद हुए एक हजार वर्ष के लगभग हो गया है। यह क्षत्र रांची से १७० मील की ओर डालटन गंज से ६४ मील की दूरी पर बहुत से वन पर्वत और भयंकर जगल पार करने के उपरान्त देखने को मिलता है। यहाँ पहुंचने के लिए एक मार्ग नेत्र हाट होकर भी जाता है। रांची से नेत्र हाट लगभग ६८ मील की दूरी पर है और वहाँ से २६ मील पैदल चल कर महुआ डांड पहुंचा जा सकता है। नेत्रहाट रांची और छोटा नागपुर में जलवायु और प्राकृतिक दृश्यों की दृष्टि से आकर्षक स्थान है। कहा जाता है कि सूर्य देव जी का निकलने और अस्त होने का जितना स्पष्ट और सुन्दर दृश्य नेत्रहाट को देखने को मिलता है उतना कहीं अन्यत्र नहीं मिलता। कवि रवीन्द्र नाथ ठाकुर ने अपनी सुप्रसिद्ध रचना गीताञ्जली का निर्माण इसी सुन्दर स्थान पर किया था।

महुआ डांड की शोभा और आकृति भी कम आकर्षक नहीं है। ओरसा पाठ पर खड़े होकर यदि इस का दृश्य देखा जाय तो इस का स्वरूप एक ऊंचे किनारे वाले गोल कटोरे जैसा बड़ा सुन्दर और प्रिय लगता है। यह ठीक है कि इस के आस-पास मे बड़े नगर या छोटे उपनगर नहीं है किन्तु यहाँ के वन वासी प्रतिदिन किसी न किसी स्थान पर लगने वाले पीठ (बाजारों) से अपनी दैनिक आवश्यकता की वस्तुएँ खरीद कर लाते हैं। बड़ा नगर महुआ डांड से डालटन गंज निकट पड़ता है जो ६४ मील की दूरी पर स्थित है। ५२ मील वर्ग क्षेत्र का यह मैदान जिसमें ४० हजार के लगभग आदि वासी जन निवास करते हैं बीच मे कुछ ऊंचा चारों ओर समतल अन्तिम किनारों पर ऊँचे ऊँचे गगन चुम्बी पर्वत जो गोलाई में खड़े आसमान से बातें करते हुए अपनी अतीत की कहानी सुना रहे हैं। यहाँ के आदि वासी जो बहु संख्यक ईसाई बना लिये गये हैं मुख्य रूप से कृषि पर जीवन-निर्वाह करते हैं।

यहाँ लगभग सभी वन्य जातियाँ रहती है विशेष रूप से मुन्डा, हो, उरांव नगेसिया, बड़ईक, तुजिया असुर बंगा आदि। इस प्रदेश के नाम करण की भी एक मनोरम कहानी है। कहा जाता है आदि समय यह प्रदेश एक विशाल झील के रूप मे था। पहाड़ों की ऊंची-ऊँची चोटियों तक पानी भरा रहता था। इस प्रदेश के पूर्व की ओर एक ऊँचा पर्वत है जिसके विषय मे आदि वासी कहते हैं वहाँ कभी शिव (मारंग बोंगा) पार्वती (इतरी बोंगा) ने बहुत दिनों तक तप किया था। उसके निकट वाले पहाड़ पर कोई सुग्गा पक्षी अपना नीड बनाकर रहता था। पानी जब उसके नीड़ तक पहुँचा तब उसने कुछ दूर पर अपने पंजों से पहाड की ऊँची चोटी पर मिट्टी को खोदना आरम्भ

किया जिसके फल स्वरूप वहां पानी के निकलने का छोटा सा मार्ग बन गया । पुनः शनैः शनै वह मार्ग विशाल मैदान के रूप में बदल गया और सब पानी इस के मार्ग से बाहर निकल जाने के कारण वह विशाल झील घाट के रूप मे बदल गई जहां से होकर झील का पानी बाहर निकला उस स्थान को आदिवासी आज भी सुग्गा बांध के नाम से पुकारते हैं । निकटवर्ती वन पर्वतों पर स्थित पक्षियों द्वारा इस मैदान मे नाना फल वनस्पति आदि का बीज छोडने पर मैदान, जगल के रूप में बदल गया । यहां महुआ का वृक्ष बहुत उत्पन्न हुआ और ऊँचे स्थान को यहां डांड कहते हैं क्योकि यहां का मैदान बीच में से ऊँचा था इसलिए इस स्थान को सबसे पूर्व निवासियों ने महुआ डांड नाम दिया ।

इस क्षेत्र में सबसे पूर्व मध्य प्रदेश के सरगुजा क्षेत्र से होकर अहीर जन अपने पशुओ को लेकर आये थे । यही इस क्षेत्र के मूल निवासी कहे जाते है । कहा जाता है कि शेर शाह सूरी के शासन काल मे मुन्डा उरावों के मूल निवास पर यवनों का दबाव पड़ने के कारण, यह लोग सुरक्षित स्थान समझ कर कर, इस ओर बढ़े । यहां पर इन का पाला अहीरों से जो कि केवल पशु पालन करते थे, से पड़ा; यह नवीन आने वाले पहिले निवासियो से अधिक सगठित युद्ध मे कुशल और सख्या मे बहुत थे इसलिये यहां से अहीरो को बाहर कर स्वयं इस क्षेत्र के स्वामी बन गये । यही वह लोग है जिन्होने यहां के भीषण जंगलों को साफ कर यहां की भूमि को कृषि योग्य बनाया । यह भूमि कल्लर है । फसल बहुत महनत करने पर भी वर्ष भर निर्वाह करने योग्य अन्न नही उत्पन्न कर सकती । यहां बार-बार अकाल पड़ता रहता था । यह दशा उन लोगों की थी जिनके पास थोड़ी या बहुत भूमि थी किन्तु बहुत से आदिवासी वह भी थे जिनके पास निर्वाह का कोई साधन नहीं । वह जगल की सूखी लकडियां बेचकर जमीन का कान्दा खाकर और जंगल के जानवरों का शिकार कर, जीवन बिताते थे । इस क्षेत्र में आज भी यह बहुधा अन्न-वस्त्र विहीन, कौपीनधारी, दरिद्र नारायण की साक्षात प्रतिमा बने हुए हैं ।

एक समय था जब कि यह प्रदेश, वर्तमान सभ्यता, शिक्षा, चिकित्सा, सुरक्षा और अन्य वैज्ञानिक सुख सुविधाओं से विहीन, एक वन्य-प्रदेश के रूप में तथा यातायात के साधनों के अभाव वाला निजस्वरूप में एक अनोखा क्षेत्र रहा था ।

यहां के निवासियों को कई बार भीषण अकाल और भयंकर महामारियों का, लगातार शिकार बनना पडा था । जब कि यह आपत्ति बेवशी और भयंकर बीमारी तथा भुखमरी का सामना कर रहे थे, उसी समय यहां रोमन कैथोलिकमिशन ने अपना कुबेर वाला स्वरूप दिखाकर इन आदि वासियो को अन्न औषधि देकर इनका सर्वस्व जीवन धन इन से छीन इन्हे अपने पूर्वज राम कृष्ण के स्थान पर श्री ईसा के मानस पुत्र बना लिया था । इस ईसाई अभियान को लगभग १०० वर्ष होते है । स्वतन्त्र प्रकृति वाले आदि वासी ईसाइमत के इस मायावी तूफान का बहुत दिनों तक सामना करते रहे किन्तु पादरी टरकन वर्ब ने अपने मोहनी रूप को दिखाकर बहुसंख्यक इन लोगो को ईसाई बना लिया ।

उसके पश्चात् उसके अनुयायियों ने कनवेन्ट चर्च स्कूल, बोडिंग, छात्र वृत्ति बिना मूल्य के वस्त्र-भोजन चावल, दूध के पाउडर, मक्खन, बिस्कुट, अमन जूस बीज कर्ज मे धन और जंगल से लकडी काटने व शिकार खेलने की छूट तथा जमींदारों की बेगार से मुक्ति आदि सुविधाएं दिलाकर आदिवासी जन को ईसाई और इस क्षेत्र को ईसा लैंड बना लिया । विगत सैकड़ों वर्षों में इस क्षेत्र पर ईसाई प्रचारकों ने करोड़ो रुपया व्यय किया और ५०-६० लाख के लगभग की आज भी विशाल सम्पत्ति इन की यहां खड़ी प्रतीत की पाप भरी गाथा गा रही है ।

कुछ वर्ष पूर्व देश से अंग्रेज राज्य की लानत विदा हुई और अपने देश का राज्य स्थापित हुआ किन्तु यह

प्रदेश भी उपेक्षित बना रहा। यहाँ के भोले-भाले लोग फिर भी यही समझते रहे कि अभी राज्य अंग्रेज का ही है। कुछ वर्ष पूर्व आर्य समाज यहाँ पहुंचा उसने इस प्रदेश के विषय मे सरकार और देश की जनता को बतलाया। चारों ओर से इसके बारे मे उत्सुकता बढ़ी। सुदूर प्रदेशो से आर्य समाज के कार्य कर्त्ता यहाँ पहुंचे और उन्होने इस प्रदेश के कोने-कोने चप्पे २ छान मारा, यहाँ की मूल समस्या का अध्ययन किया फिर सरकार और देश की जनता को झकझोर देने वाला जनता आन्दोलन आरम्भ किया। यह निर्भीक और तपस्वी कर्मठ कार्यकर्त्ता शुद्धि-दलितोद्धार ईसाई प्रचार निरोध आदि आर्य समाज की बहुमुखी सभी उपयोगी योजनाओं को ले कर यहाँ पहुँचे।

आज यहाँ आर्य समाज के व्यापक जन-आन्दोलन के परिणाम स्वरूप साढ़े तीन हजार आदि वासी शुद्ध होकर अपने पुराने धर्म से आ मिले हैं। यहाँ सरकार के भी बहुमुखी विकास कार्य आरम्भ हो गये हैं। किन्तु यह इस क्षेत्र का दुर्भाग्य ही कहा जायगा कि सरकारी मशीनरी जो यहाँ काम करती रही है नितान्त अपवित्र और शिथिल रही है जिसके द्वारा सरकार से प्राप्त अधिकार और इस क्षेत्र के लिए भेजे गये धन का बहुत बेशर्मी और बेदर्दी से उपयोग हुआ है।

फिर भी जहाँ तक आर्य समाज का सम्बन्ध है यह कहना होगा कि आशा से भी अधिक सन्तोषजनक और प्रशंसनीय सेवा कार्य हुआ है। केवल दो वर्ष की इस छोटी सी अवधि में शुद्धि प्रचार, जन-सेवा तथा लोक-कल्याण के कार्यों से इस क्षेत्र मे नव-चेतना का अद्भुत संचार हुआ है।

विगत दो वर्षों के कार्य के प्रभाव से इस क्षेत्र तथा अन्य क्षेत्रो के जो भाई ईसाई मत को छोड़कर अपने पुराने धर्म में सम्मिलित हुए हैं जो कि सैकड़ों वर्षों से ईसाई बना लिये गये थे अपना पुराना आचार-विचार रीति-रिवाज भूल चुके थे उन्हें पुनः सामाजिक न्याय दिलाने की समुचित व्यवस्था करने का विशाल कार्य हमारे सामने है जिसके अभाव में हमारा यह शुद्धि कार्य सफल नहीं कहा जा सकता।

महुआ डांड क्षेत्र की तात्कालिक आवश्यकता

महुआ डांड क्षेत्र की तात्कालिक और सर्व प्रथम तथा सबसे प्रमुख आवश्यकता है ५ दयानन्द सेवा आश्रमो के निर्माण की फिर उनके सफल संचालन की। इसलिये इसके बाद वाली दूसरी आवश्यकता है धन और जीवन दान की जिनके द्वारा हमारे सभी भावी कार्य सफल हो सकेंगे। हमारा यह दृढ़ मत है कि इन आश्रमो के निर्माण मे हमारा शुद्धि, दलितोद्धार, आदि वासियो की आद्य संस्कृति तथा मौलिक मान्यताओं की रक्षा मनोवैज्ञानिक और ठीक प्रकार से व्यवस्थित रूप मे सम्पादित की जा सकेगी। ५ दयानन्द सेवा आश्रमों की निर्माण योजना का क्षेत्र यह ५२ मील का वर्गाकार क्षेत्र है। महुआ डाड की बीच की बस्ती से पूर्व, पश्चिम और दक्षिण १०-१० मील की दूरी पर १०-१० गाँवो के बीच इनका निर्माण होगा एक आश्रम जो इन चारो केन्द्रो को मुख्य रूप से जोड़ने का काम करेगा महुआ डांड की मुख्य बस्ती मे संचालित होगा।

हमारा अनुमान है कि एक आश्रम के निर्माण में लगभग १५ सौ रुपया व्यय आयेगा यही इस क्षेत्र की आर्य समाजें होंगी जिनमें एक छोटी सी दैनिक शिशुशाला, औषधालय, क्षेत्र की महिलाओं के लिये शिल्पशाला, सत्संग देने वाला सत्संग भवन और बीच में एक फल फूल वाली सुरम्य वाटिका तथा आश्रम की चार दीवारी। आश्रम बनाने के लिए यहाँ भूमिदान में अथवा थोड़े मूल्य पर मिल जायगी।

५ आश्रमों के निर्माण में ७॥ साढ़े सात हजार रुपया व्यय आयेगा जिसकी तत्काल आवश्यकता है। दूसरी आवश्यकता हमारे सामने ५ ऐसे सद् गृहस्थ धर्मात्मा प्रचारकों की है जो अपनी पत्नी सहित क्षेत्र मे ५ वर्ष तक रहकर जीवन दान दे सकें। ऐसे जीवनदानदेने वाले सद्-गृहस्थ युवा तथा दोनों

प्रमाणित चिकित्सक भी होने आवश्यक हैं। ऐसे सद् गृहस्थ जो ५ वर्ष तक कार्य करने की प्रतिज्ञा करेंगे उन पर ३००) रुपया प्रति मास आनरेरियम के रूप में व्यय किया जा सकेगा। इस क्षेत्रमें वृद्ध रोगी कार्य-मुक्त, पत्नि-रहित और विद्यार्थी गण प्रवेश करने को उत्साहित न हों। इस प्रकार (१५००) रुपया ५ आश्रमो पर प्रतिमास व्यय आयेगा। वार्षिक व्यय का लेखा २० हजार वार्षिक होगा यह हमारा अनुमानित व्यय है।

भारतवर्ष की एक-एक आर्य समाज अपने वार्षिकोत्सव पर ५-५-६-६ हजार रुपया व्यय कर देती है। एक स्थानीय संस्था के सचालन मे एक वर्ष की अवधि मे ३५-३६ हजार रुपया वार्षिक तक व्यय कर देती है फिर भी वह उतने सुन्दर और अपेक्षित परिणाम उत्पन्न करने मे असमर्थ होती है।

५२ मील के वर्ग क्षेत्र में स्थित महुआ डांड में जहाँ कि ईसाई मिशन ने ५० लाख से ऊपर की सम्पत्ति लगाकर सैकड़ो वर्षों से करोड़ों रुपया पानी की तरह बहाया हो वहाँ २५-२६ हजार रुपया का बजट कोई अर्थ नहीं रखता फिर भी हमारा अनुमान है कि इस क्षेत्र की उपरोक्त आवश्यकता की पूर्ति हो जाने पर केवल ५ वर्ष के प्रचार के सुपरिणाम स्वरूप यह हमारे भोले-भाले २५ हजार आदि वासी ईसाई भाई शुद्ध होकर पुनः राम कृष्ण की सन्तान हो भारत माता की सेवा करने को अवश्यमेव अग्रसर हो जायेंगे।

तत्काल चाहिए

५ वैदिक धर्मावलम्बी त्यागी, तपस्वी आदि युवा सन्यासियों की यहाँ महुआ डांड के लिए तत्काल आवश्यकता है। सन्यासियों का बड़ा मान तथा उनके प्रति श्रद्धा भी है। फिर भी भिक्षा प्राप्त कर यहाँ जीवन निर्वाह चलाने के लिए उपयुक्त वातावरण नहीं है क्योंकि जिन लोगो में कार्य करना है उन्हें स्वय को कभी-कभी दोनों समय भोजन नहीं मिल पाता। अतः भोजन निर्वाह मात्र का प्रबन्ध समिति कर देगी जिससे उनको प्रचार कार्य में बाधा न पड़े। अत: दानी महानुभावों से धनदान की सद् गृहस्थ जनों से कम से कम ५-५ और उत्तम आर्य —सन्यासियों से कम से कम १०-१० वर्ष के जीवन दान की भाव भरी अपील करता हूं। मुझे आशा है कि इस दिशा में वैदिक धर्म तथा आर्य समाज का प्रचार और प्रसार करने तथा अपने दीन-हीन साक्षात् दरिद्र नारायण की सेवा और उद्धार करने के लिए अपने-अपने सात्विक दान से सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की इस विभाग के लिये झोली भर देंगे जिससे आर्य समाज इस क्षेत्र मे प्रभावशाली रूप मे प्रवेश कर बेबस असहाय और धर्म संकट मे पड़े भाइयों का उद्धार कर सके।

(श्री शास्त्री जी सार्वदेशिक सभा की ओर से छोटा नागपुर के क्षेत्रों में ईसाई प्रचार निरोध का कार्य कर रहे हैं। उनका केन्द्र आर्य समाज रांची है। आशा है जनता इस दिशा में अपने कर्त्तव्य का पालन करेगी?)

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

का

५३ वां वार्षिक वृत्तान्त

(गतांक से आगे)

ब्रह्मदेश—

ब्रह्मदेश के आर्य भाइयों मुख्यतः आर्य प्रतिनिधि सभा के अधिकारियों की देर से यह माग थी कि कोई सुयोग्य आर्य विद्वान वा संन्यासी महानुभाव उनके देश मे जाकर प्रचार कार्य करें भले ही कुछ समय पर्यन्त वहाँ रहे। उक्त सभा के उत्साही मंत्री श्री डा० ओ३म् प्रकाश जी ने पत्र व्यवहार द्वारा और मिलकर वहाँ की स्थिति सभा के अधिकारियों को बताई और शीघ्र से शीघ्र किन्हीं महानुभाव को भेजने का अनुरोध किया। सभा ने श्री स्वामी अभेदानन्द जी महाराज से प्रार्थना की और उन्होने स्वीकार करली परन्तु इसी बीच में उनका मौरीशस का प्रोग्राम बन गया और वे वहाँ न जा सके। प्रसन्नता है कि श्री महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज ने इस कर्त्तव्य का निर्वाह किया। यह सभा श्री स्वामी जी के प्रति आभार प्रदर्शित करती है। श्री स्वामी जी १५ अक्टूबर को रंगून पधारे और २० मार्च तक वहाँ रहे। स्थान-स्थान पर भ्रमण करके वैदिक सदेश प्रचारित किया। श्री स्वामी जी की इस यात्रा का बहुत अच्छा प्रभाव रहा। यात्रा का पूर्ण वर्णन इस प्रकार है:—

श्री पूज्यवर स्वामी आनन्द स्वामी सरस्वती जी अक्टूबर १५ ता० को रंगून हवाई अड्डे पर पधारे। स्वागत के लिए फूलमाला आदि के साथ लगभग १५० आर्य हिन्दू भाई-बहिन हवाई अड्डे पर उपस्थित थे। आर्य समाज रंगून के प्रधान काशीनाथ राय, मन्त्री श्री धर्मवीर जी, श्री डा० ओ३म प्रकाश जी एम० बी० बी० एस, श्री डा० सुन्दर लाल लूम्बा, श्रीमती लूम्बा, श्रीमती सत्यभाषिणी देवी साहित्यरत्न, श्रीमती सावित्री तथा अनेक आर्य देवियां थी। आर्य गणमान्य व्यक्तियों मे श्री बी० एल० त्रिखा, श्री चोपडा, श्री चन्द्रदत्त जी, श्री प्रसिद्ध नारायण पाठक, श्री ओ० पी० शोरी आदि मुख्य थे।

१२ मील का मार्ग तय कर स्वामी जी आर्य समाज मन्दिर में पधारे। वही सब लोगों ने उनके दर्शन किये तथा स्वामी जी ने सबका परिचय प्राप्त किया। तत्पश्चात् स्वामी जी को आर्य समाज मन्दिर मे ही एक विशेष कमरे में स्थान दिया गया। प्रतिदिन रात्रि को ठीक ८ से ९ बजे तक स्वामी जी का प्रवचन मनुष्य जीवन गाथा' पर होता रहा। प्रवचन से पहले आधा घन्टे तक कीर्तन होता था जिसमें श्री गोपीराम जी तथा अन्य गीत व भजनकर्त्ता मुख्यतया भाग लेकर जनता को श्रद्धा विभोर कर देते रहे। समाज का हाल तथा गैलरी अच्छी तरह भर जाती रही। लगभग ६ सौ नर-नारियां भक्ति और श्रद्धा के साथ स्वामी जी से धर्म लाभ उठाते रहे। दीवाली तथा ऋषि निर्वाण उत्सव पर स्वामी जी का विशेष प्रवचन हुआ तथा रविवार ता० १६ को आर्य समाज के सत्संग मे भी वेदोपदेश किया। इसके अलावा स्वामी जी प्रतिदिन भक्तो को दर्शन देते रहे तथा आयुर्वेदिक औषधि वितरण करते; शका समाधान तथा धर्म सम्बन्धी वार्तालाप भी करते रहे। भक्त स्त्री पुरुषों का तांता दिन भर लगा रहता। बच्चे भी प्रेम से स्वामी जी

के कृपा भाजन बने रहे। इतना ही नहीं कई रोगियों को स्वामी जी ने योग द्वारा लाभ भी पहुँचाया।

१५ दिन तक रंगून में व्याख्यान हुए। इसी में एक दिन गुरु-द्वारा मे गुरु नानक जन्म दिवस पर तथा डी० ए० वी० स्कूल मे भी बच्चों को उपदेश दिया। तिनानजो तथा कमायुट कस्बे रंगून से ७-८ मील की दूरी पर है। एक एक दिन इन दोनों स्थानों पर स्वामी जी ने अमृत वर्षा की। तिनानजों मे गुजराती तथा यू० पी० के भाईयों ने कमायुट मे बँगाली भाईयों ने विशेष रूप से कार्यक्रम में भाग लिया। एक दिन प्रान्तीय ब्राह्मण महासभा की ओर से गान्धी मेमोरियल हाल में प्रवचन हुआ जिसमे लगभग एक हजार हिन्दू भाई उपस्थित थे।

जियावाड़ी

रंगून के बाद १४० मील रेल यात्रा कर स्वामी जी ३ दिन तक जियावाडी में प्रचार के लिए पधारे। रंगून आर्य समाज के मन्त्री श्री धर्मवीर जी प्रचारक श्री चन्द्रदत्त जी, श्री रघुनाथ जी तथा रघुनन्दन जी भी आपके साथ जियावाडी पहुँचे।

जियावाडी क्षेत्र मे २५००० बिहार प्रान्त के भारतीय बसते हैं। ये किसान हैं। इन सीधेसाधे भाईयों ने अति श्रद्धा तथा प्रेम से स्वामी जी का फूल आदि से हार्दिक स्वागत किया तथा प्रतिदिन दोपहर के बाद ३-४ बजे तक प्रवचन श्रवण किया। सांयकाल ज्ञान गोष्ठी भी होती रही। स्वामी जी बस्ती-बस्ती घूम-घूम कर उन लोगों को जागृत करते रहे। जियावाडी स्कूल मे भी स्वामी जी ने विद्यार्थियों को अपने विद्यालय की उन्नति, विद्याध्ययन तथा सच्चरित्रता पर बल एवं धर्मनिष्ठा पर जोर दिया। माण्डले समाज के मन्त्री श्री कृष्णलाल जी वर्मा, श्री रामलाल जी गुलाटी स्वागतार्थ जियावाडी ही पहुँच गए एवं स्वामी जी के साथ रेल द्वारा माण्डले प्रातः ६ बजे पहुँचे।

माण्डले

शहर रंगून से ४०० मील उत्तर की ओर है। यहाँ आर्य हिन्दू भाईयो ने स्वागत के लिए जलूस निकाला ४० मोटरों व जीपो में आरूढ़ होकर शहर के विभिन्न मार्गों से होते हुए आर्य समाज मन्दिर पहुँचे। माण्डले मे १२ दिन तक "जीवन कैसे बिताएँ" विषय पर व्याख्यान हुए। दिन का भोजन एक २ आर्य परिवार के घर पर प्रीति भोज के रूप मे होता था। प्रीति भोज में लगभग २००-२५० व्यक्ति शामिल होते रहे। व्याख्यान में ५००-६०० की उपस्थिति होती रही। इसी बीच स्वामी जी ने यहाँ के विशिष्ट फुंगियों से भेंट की, तथा उनसे उनके धर्म की चर्चा की। २५ नवम्बर सांय ३॥ बजे से १ दिसम्बर प्रातः तक एकान्त में नायिकता धर्म स्थान में मौन व्रत लिया। इन दिनो स्वामी जी ने किसी व्यक्ति से बातचीत करना तथा देखना भी त्याग दिया। अकेले मे रहते; एक निर्दिष्ट स्थान पर नियत समय तक भोजन रख दिया जाता था। कुछ समय के पश्चात् स्वामी जी भोजन ले कर स्वयं खा लेते थे।

लाश्यो

२ तथा ३ दिसम्बर को माण्डले गुरुद्वारे मे उपदेश दिये तथा ६ दिसम्बर ६० को हवाई जहाज द्वारा लाश्यो पहुँचे। लाश्यो माण्डले से ८० मील है तथा शान स्टेट का एक मुख्य नगर और चीन-बर्मा व्यापार का मुख्य केन्द्र है। लाश्यो के हवाई अड्डे पर लाश्यो के हिन्दू आर्य ३२ जीप कारों के जलूस मे स्वामी जी को शहर मे ले गए। दैनिक एक घंटे कथा होती रही। उपस्थिति ५०० के लगभग होती रही। यहाँ के आर्य बन्धुओ ने आर्य समाज का नया भवन बनाने का निश्चय किया तथा स्वामी जी के हाथों शिलान्यास कराया एवम् ११ हजार रुपया थोडे मिनटों मे ही एकत्र कर लिया। १५ ता० तक कथा करके १६ के दिन मोगोक के लिए प्रस्थान किया। मोगोक का रास्ता कष्ट साध्य है। माडले मे थबेचिन तक इरावदी नदी मे स्टीम बोट द्वारा जाना पडता है। एक रात रास्ते मे ही बितानी पड़ती है तथा दूसरी रात थबेचिन मे रहकर प्रातः मोटर द्वारा ६० मील का पहाडी रास्ता मोगोक तक ले जाता है।

स्वामी जी सांयकाल मोगोक पहुँचे। शहर के १४ मील इधर ही उनके स्वागतार्थ जनता की भीड थी।

इसमें गोरखे नेपाली, शान, पंजाबी, उत्तर प्रदेश आदि के भाई सब सम्मिलित थे । चालीस मोटरो को फूलो से सजाकर स्वागत करते हुए स्वामी जी को ४० जीप कारो के साथ नगर मे ले गये । स्वामी जी ने कुल १० मिनट वहाँ प्रवचन द्वारा जनता को लाभान्वित किया । शहर से दूर सुरम्य गुफा मे एक चीनी बौद्ध साधु रहता है। स्वामी जी उनसे भी मिले । उसे बर्मी सत्यार्थ प्रकाश की एक प्रति भेट की ।

पुनः मांडले

मौगोक सभा समाप्त कर स्वामी जी २७ ता० को माण्डले पहुँच गये । माण्डले मे आर्य सम्मेलन ३१ दिसम्बर तथा पहली जनवरी ६१ को था । इसमें १३ जगहो से आर्य भाई पधारे थे । सब के रहने व खाने आदि का प्रबन्ध माण्डले के भाईयो ने बडे प्रेम से किया । तीनो दिन सम्मिलित भोजन हुआ । कभी किसी भाई के घर कभी किसी भाई के घर । इस सम्मेलन मे अनेक महत्वपूर्ण प्रस्ताव पारित हुए । स्वामी जी ने सम्मेलन मे पूर्ण रूप से भाग लिया ।

इवेबो

ता० ७ से १० तक स्वामी जी का व्याख्यान हुआ । प्रतिदिन ठाकुरवाडी मे सांयकाल प्रवचन होता रहा । दिन मे गुरुद्वारा, आर्य समाज, डी. ए. वी. स्कूल मे भी आध घन्टे के लगभग व्याख्यान हुए । व्याख्यान के विषय— ईश्वर विश्वास, आत्म विश्वास, और भ्रातृ प्रेम थे । इवेबो मे वेङ सयाडो नामक बौद्ध भिक्षु योगी है, स्वामी जी ने इन से योग चर्चा की । एक प्रति बर्मी सत्यार्थ-प्रकाश की भेंट की तथा एक तेडा (बौद्ध भिक्षुओ के धारण करने का गेरूआ वस्त्र) भी प्रदान किया ।

मनेवा

१२-१-६१ को मनेवा पहुँचे । यह नगर माण्डले से उत्तर पश्चिम मे है। आर्य नर-नारियों ने फूल मालाओं से खूब स्वागत किया । यहाँ भी भिक्षु उकुमा सयाडो से मिले तथा पुनर्जन्म, आत्मा, चित्तवृत्ति की साधना आदि विषयों पर वार्तालाप किया । दूसरे दिन मोन्ये सयाडो (आयु ८६ वर्ष) से मिले । बर्मी सत्यार्थप्रकाश की एक प्रति भेट की तथा ऋषि दयानन्द के बारे मे बताया । सयाडो ने प्रसन्नता प्रकट की तथा बदले मे मोन्हेकया के इतिहास की पुस्तक भेट की ।

मोहियान

मनेवा के कुछ दिन बाद माण्डले रहकर १८-१-६१ को मोहियान पहुचे । इसी बीच मेम्यो घूमकर प्रचार कर आये । मोहियान स्टेशन पर आपका सैकडो भारतीयो तथा बर्मी और शान लोगो ने भव्य स्वागत किया । स्वामी जी पर "स्वर्ण छत्र" की छाया की गई और शहर मे जलूस निकाला गया । ठाकुरवाडी मे उपदेश हुआ जिसका बर्मी अनुवाद भी सुनाया गया, बर्मी लोग भी हाथ जोडकर बैठे रहे । व्याख्यान का विषय था 'मनुष्य चोला क्यो मिलता तथा निर्वाण कैसे प्राप्त होता है ?' श्री भगतसिंह सुन्दर, प्राञ्जल बर्मी मे अनुवाद करते थे । स्वामी जी ने वहाँ स्कूल के अभाव पर खेद प्रकट करते हुए एक पाठशाला की आवश्यकता बतलाई कि अपने बाद बच्चे अपनी संस्कृति और सभ्यता को कैसे जानेंगे। उनकी शिक्षा का माध्यम तो बर्मी है। फलतः उसी समय हिन्दी पाठशाला बनाने का निश्चय हो गया।

मचीना

१८-१६ मोहियान रहकर २० की साँय मचीना रेल से पहुँचे । मचीना में श्री ब्रह्मदत्त जी एडवोकेट के गृह पर स्वामी जी तथा उनके साथ जो ७ अन्य सज्जन माण्डले से गये थे निवास किया । ७॥ बजे से ६ बजे तक रात्रि मे स्वामी जी का व्याख्यान 'आज की बिगडी दुनिया में किस प्रकार रहना चाहिये' विषय पर हुआ । भारतीय स्कूल के हाल मे यह व्याख्यान माला ३ दिन तक चलती रही । उपस्थिति ३०० के लगभग होती रही । सिक्ख हिन्दू व गोरखा भाई अच्छी सख्या में थे । श्री ब्रह्मदत्त

जी एडवोकेट श्री पाटदेवसिंह जी, श्री चरण दास जी आदि का उत्साह सराहनीय है ! आर्य समाज के साप्ताहिक सत्संग पारिवारिक सम्मेलन तथा ठाकुरवाडी में महिला संघ द्वारा आयोजित सत्संग में भी स्वामी जी ने उपदेश दिया।

भामो

ता० २५ जनवरी को स्वामी जी मोटर द्वारा भामो पहुँचे। भामो इरावदी नदी पर बसा शहर है। चीन से बहुत निकट है। रंगून से ७०० मील उत्तर मे है। इस नदी मे भामो शहर तक स्टीम बोट चल सकते हैं। भामो मे भारतीय जनता बहुत थोडी है। रामजानकी मन्दिर के प्रांगण मे कथा एक सप्ताह तक हुई। उपस्थिति १५० तक होती रही। २६ ता० को विश्वशान्ति गायत्री महायज्ञ की २५०० आहुतियां दी गई तथा एक भोज हुआ जिसमे पाँच सहस्र व्यक्तियो ने जाति के भेद भूल कर भोजन पाया।

कथा

३० को स्वामी जी कथा पहुँचे। यह शहर इरावदी नदी पर भामो से ५० मील दक्षिण में है। यहाँ दो दिन तक कथा 'गायत्री के महत्त्व' पर हुई। २ फरवरी को नदी द्वारा ही माण्डले पहुंच गए। ३ फरवरी से १५ तक माण्डले मे व्याख्यान करते रहे।

टौजी

माण्डले से हवाई जहाज द्वारा टौजी पहुँचे। हे हो के हवाई अड्डे पर स्वागत के लिए भीड़ इकट्ठी हो गई थी। श्री सरदार जसवतसिंह जी के निवास स्थान "नानक कुटिया" मे उतारा गया। १० दिन तक मानव जीवन की सफलता" पर कथा सत्यनारायण मन्दिर मे हुई। उपस्थिति ४००-५०० होती रही। टौजी गांधी मेमोरियल हाई स्कूल मे स्वामी जी का भाषण हुआ तथा वहाँ पर उन्हे अभिनन्दन पत्र दिया गया। २६-२-६१ को प्रातःकाल गुरुद्वारे मे कथा कहकर दोपहर १ बजे कलो पहुँचे।

कलो

कलो शहर टौजी से कोई २० मील है। स्थानीय आर्य समाज मन्दिर मे ठहरने की व्यवस्था की गई। सांय ४॥ बजे समाज के साप्ताहिक सत्सग मे व्याख्यान हुआ। सायकाल ८-९ बजे तक स्थानीय हाई स्कूल मे "ईश्वर विश्वासी बन" विषय पर कथा हुई। उपस्थिति ३०० के लगभग थी। कलो की यात्रा समाप्त कर श्री पूज्य स्वामी जी महाराज २८ को माण्डले पहुंचे।

पुनः मोगोक

३ मार्च को मौन व्रत के लिए मोगोक वायुयान द्वारा प्रस्थान किया। ४ मार्च प्रात. ६ बजे से मोगोक शहर से एक हजार फुट की ऊँचाई पर नवनिर्मित कुटिया मे आठ दिन तक मौनव्रत रहा। ता० ११-३-६१ को प्रातःकाल ७ बजे से एक बृहत् सत्सग का आयोजन कर कुटिया के सामने वेद मन्त्रो के द्वारा हवन यज्ञ हुआ पश्चात् स्वामी जी ने १०८ गायत्री मन्त्रो की आहुतियो के बाद अपना मौनव्रत खोल पूर्णाहुति स्वतः कराई। इसके बाद आर्य समाज मन्दिर मे प्रीति भोज हुआ जिसमे १२०० नर नारियों ने भाग लिया। १२ व १३ को मोगोक में अमृत वर्षा कर १४ को वायुयान द्वारा माण्डले पहुँचे। १५ ता० माण्डले नगर मे बृहत् प्रीति भोजन की व्यवस्था थी जिसमे शहर के ३-४ हजार भाई-बहिनों ने भोजन ग्रहण किया। इस यात्रा मे श्री चन्द्रदत्त जी साहित्यरत्न स्वामी जी के साथ रहे। १८ मार्च १९६१ को पुनः रंगून पधारे तथा धर्मोपदेश का क्रम आरम्भ किया। १९ को प्रातः आ० स० के सत्संग मे १०८ गायत्री की आहुतियो से उपदेश क्रम आरम्भ किया।

सायंकाल ८-९ तक उपनिषद तथा वेदो के आधार पर मनुष्य जीवन की समस्याओं का "समाधान" कथा हुई।

बैंकोक

आर्य समाज बैंकोक (स्याम) का अपना मन्दिर है जिसकी लागत लगभग १। लाख रुपया है। समाज मन्दिर

मे एक पुस्तकालय है जिसमे लगभग ३०००) रु० की पुस्तकें हैं। इस समाज की स्थापना १६२० में हुई थी। यह समाज सार्वदेशिक सभा को प्रति वर्ष १००) आर्य समाज स्थापना दिवस के अवसर पर वेद प्रचारार्थ देता है। सभा को ईसाई प्रचार निरोध कार्यार्थ २५) मासिक सहायता देता रहा है इस वर्ष उक्त समाज ने लगभग १००० ट्रैक्ट वितरित किए। आर्य समाज में साप्ताहिक सत्संग नियम से होता है और आर्य पर्व समारोह पूर्वक मनाए जाते हैं। इस समाज के सभासद और अधिकारी बड़े उत्साही और कर्मठ हैं। सभा की स्वर्ण जयन्ती निधि के लिए भी उक्त समाज ने एक बड़ी राशि भेजने का उपक्रम किया हुआ है।

सिंगापुर

दक्षिण पूर्व एशिया के विख्यात बंदरगाह सिंगापुर में अपना समाज है। समाज की अपनी भूमि है और समाज मन्दिर तथा डी० ए० वी० हाई स्कूल के भवन निर्माण का आयोजन हो रहा है। समाज का वार्षिकोत्सव और ऋषि निर्वाणोत्सव भारतीय उच्चायुक्त की अध्यक्षता में मनाया गया जिसमे बड़े-बड़े राजनीतिज्ञों विद्वानों अधिकारियों साहित्यकारों तथा साधुजनों के वैदिक धर्म पर भाषण हुए जिनमे सर्व श्री स्वामी प्रेमानन्द भास्करानन्द, श्री यशपाल और श्री विष्णु प्रभाकर के नाम उल्लेखनीय हैं। प्रति रविवार को साप्ताहिक सत्संग, होता है और मास के अन्त मे बृहत रूप मे विशेष आयोजन के साथ वैदिक सत्सग होता है।

सिंगापुर के महत्त्व को दृष्टि में रखते हुए समाज को सुदृढ करने की विशेष आवश्यकता है। सभा का इस ओर विशेष ध्यान है।

ईसाई प्रचार निरोध आंदोलन

इस वर्ष भी ईसाई प्रचार निरोध आन्दोलन इस सभा की प्रगतियो का मुख्य अग रहा। २६-६-६० की अन्तरग सभा ने इस कार्य के सचालन के निमित्त निम्नलिखित समिति नियुक्त की थी—

१. प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा।
२. मंत्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा (संयोजक)।
३. प्रधान अखिल भारतीय श्रद्धानन्द ट्रस्ट दिल्ली।
४. मत्री अखिल भारतीय श्रद्धानन्द ट्रस्ट दिल्ली।
५. श्री पं० जनार्दन भट्ट सयुक्त मत्री अखिल भारतीय आर्य (हिन्दू) धर्म सेवा सघ दिल्ली।
६. प्रधान भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा।
७. मत्री भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा।
८. श्री बटकृष्ण जी वर्मन।
९. श्री प० राजबहादुर जी।
१०. श्री आचार्य रामानन्द जी शास्त्री।
११. श्री आचार्य राजेन्द्र नाथ जी।
१२. श्री ला० हंसराज जी गुप्त।
१३. श्री बा० कालीचरण जी आर्य।
१४. श्री प्रो० रामसिंह जी एम० ए०
१५. श्री भारत भूषण जी त्यागी।
१६. श्री स्वामी दिव्यानन्द जी
१७. श्री नरदेव जी स्नातक

श्रद्धानन्द ट्रस्ट ने इस कार्य का सहायतार्थ इस सभा को ३५००) प्रदान किए इसके लिए सभा ट्रस्ट की आभारी है।

इस वर्ष भी छोटा नागपुर बांसवाडा (राजस्थान) उड़ीसा और नेपाल मे कार्य होता रहा है।

छोटा नागपुर में १५ उपदेशक कार्य कर रहे है जिनमे ३ उपदेशक इस तरफ से गए हुए हैं और १२ उपदेशक उसी क्षेत्र के हैं।

छोटा नागपुर में महुआ डांड हजारी बाग, रांची और सिमडेगा इन ४ केन्द्रों से कार्य होता है। महुआ डाड केन्द्र में श्री रोहन केरकेटा तथा जीतूराम जी हजारी बाग में भूपनारायण सिंह जी, सिमडेगा मे श्री पं० हरि शरण जी तथा रांची केन्द्र में श्री सुखदेव जी शास्त्री तथा श्री पं० कविराम जी की देख-रेख मे कार्य होता रहा है। वैतनिक उपदेशकों के अतिरिक्त अनेक अवैतनिक उपदेशकों ने कार्य मे सहयोग दिया।

छोटा नागपुर में इस समय तक ६७५८ शुद्धियां हो चुकी हैं।

इस वर्ष इस क्षेत्र का मुख्य कार्य श्री ओ३म् प्रकाश जी त्यागी तथा श्री सुखदेव जी शास्त्री द्वारा तथा उनके निरीक्षण में सम्पन्न हुआ। श्री त्यागी जी १ जुलाई १९६० से त्याग पत्र देकर सभा की सर्विस से अलग हो गए। २५-६-६० की अन्तरग बैठक में उनका त्याग पत्र स्वीकृत हुआ। इसके पश्चात् वर्ष के अन्त तक श्री सुखदेव जी शास्त्री कार्य करते रहे।

सभा के कार्यकर्ताओ ने १५ हजार मील से ऊपर यात्राए की। १४५ सभाओं और सम्मेलनों का आयोजन किया गया। १० हजार आदिवासियों में नि:शुल्क औषधियां वितरित की गई।(११००)का दान लेकर निर्धन आदिवासियों मे वितरित किया गया जिसमें से १०००) देहरादून निवासी श्री रामनाथ जी ने सभा को दान दिया था। सभा उनकी विशेष आभारी है। लगभग ४०० नए ईसाई-बहुल क्षेत्रों का सर्वे किया गया जहां प्रचार की व्यवस्था करने का आयोजन विचाराधीन है।

रांची से ७ मील दूर जगन्नाथपुर में एक बड़ा मेला लगता है। जहां लाखों आदिवासी एकत्र होते हैं। यहां ५ दिन तक प्रचार करके ईसाइयो के प्रचार-प्रभाव का सफल निराकरण किया गया। सिमडेगा मे २६ जनवरी से ३० जनवरी तक गांधी मेले में विश्व शांति गायत्री महायज्ञ के आयोजन रूप मे प्रचार-कैम्प लगाया गया।

परिणाम—

सभा के प्रचार कार्य के ३ परिणाम सामने आये हैं जो इस प्रकार हैं।

१. जो विदेशी पादरी आदिवासी जनों को निस्सहाय और लावारिस समझ कर धनादि के प्रलोभन से उन्हें धड़ा धड़ ईसाई बनाते थे अब वह सावधानता पूर्वक हाथ डालते हैं और आर्य समाज के व्यापक प्रभाव से डरते हैं।

२. जो आदिवासी ईसाई हो जाने पर यह समझ बैठते थे कि भविष्य मे उनका उद्धार असम्भव है वे आशावान हो गये हैं कि पुनः हिन्दू धर्म में वापस जा सकते हैं।

३. भारत तथा बिहार सरकारो को विदेशी ईसाई पादरियो की राष्ट्र-विरोधी प्रगतियों का अनुभव होना आरम्भ हो गया है।

यदि भारत सरकार उन आदिवासियों को जो ईसाई बना लिये गये हैं, सरकारी सुविधाओ से वचित करदे तो न केवल सहस्रों की सख्या में ईसाई बने आदिवासी जन शीघ्र ही पुन हिन्दू धर्म में वापस आ जायें अपितु उनके सामूहिक ईसाई-मत-परिवर्तन का क्रम भी बंद हो जाय।

बांसवाड़ा केन्द्र

मार्च १९६०—

दयानन्द छात्रावास बांसवाड़ा में छः भील छात्र प्रविष्ट थे। कन्या छात्रावास भूगडा में भील कन्याये १५ थी। आर्य पाठशाला भीलछुआ में ३० विद्यार्थी पढ़ रहे थे। दो स्थानीय प्रचारक प्रचार कार्य करते थे।

शुद्धि

गांव महोडिया के ११ और बीजलपुर के ६ ईसाईयों की शुद्धि हुई तथा १५ बच्चों को ईसाईयो के स्कूल से मुक्त कराकर अपने स्कूल में प्रविष्ट किया गया।

अप्रैल १९६०

गांव बिहारीपुरा के १० और टीमा मउड़ी के ६ ईसाई शुद्ध किए गए किन्तु टीमा मउडी के दोनो ईसाई खेमा लुज्जा ने आमली पाड़ा के फ्रेंच कैथोलिक पादरी के बहकाने पर कुशलगढ़ अदालत में दफा १०७ का मुकदमा दोनों प्रचारकों एवं उस गांव के १० व्यक्तियो पर चलाया।

मई १९६०

गांव जाम्बुडी में जहां फ्रेंच कैथोलिक मिशन का एक पादरी भी रहता है एक सम्मेलन किया गया जिसमें लगभग २०० व्यक्ति इकट्ठे हुए और निश्चय किया गया कि आस पास के ईसाइयों को शुद्ध होने की प्रेरणा दी जाये।

शुद्धि

गांव बीजलपुर मे ६ व्यक्तियों की शुद्धि हुई।

जून १९६०-शुद्धि

जाम्बुडी सम्मेलन के परिणाम स्वरूप उस गांव के ५२ व्यक्ति शुद्ध हुए।

ईसाई प्रचार निरोध सप्ताह के अंतिम दिन ५ जून को स्थान बिट्ठल देव पर आदिवासी सम्मेलन हुआ जिसमे जिले के सभी प्रतिष्ठित व्यक्ति सम्मिलित हुए। दयानन्द छात्रावास से एक छात्र बी० ए० की परीक्षा में तथा दो छात्र मैट्रिक की परीक्षा मे उत्तीर्ण हुए। शेष तीन छात्र नीचे की कक्षाओं में उत्तीर्ण हुए।

जुलाई १९६०

दयानन्द छात्रावास मे १३ छात्र प्रविष्ट किये गए, मीलछुआ पाठशाला मे ५० छात्र हो गये। कन्या छात्रावास भूगड़ा मे १५ कन्याये प्रविष्ट रही।

अगस्त,सितम्बर १९६०

वर्षा के कारण प्रचार कार्य बन्द रहा। कुशलगढ़ अदालत से पेशिया चलती रही।

अक्टूबर १९६०

गाव जाम्बुडी मे दीपावली का उत्सव किया गया तथा शेरगढ़ पट्ठा एव भमेड़ी आदि गावो मे प्रचार हुआ।

नवम्बर-दिसम्बर १९६०

आर्य समाज बाँसवाड़ा का उत्सव किया गया। जाम्बुड़ी में वस्त्र वितरण किया गया तथा मैजिक लैण्टर्ण से लगभग पच्चीस गावो मे प्रचार हुआ।

शुद्धि—

गाँव पाटड़िया के तीन व्यक्ति शुद्ध हुए।

जनवरी १९६१

ईसाइयो के मुकदमे में जीत हुई। दोनों ईसाई सपरिवार पुनः शुद्ध हुए तथा गांव बिहारी पुर के भी २५ व्यक्ति शुद्ध किए। कन्या छात्रवास की संचालिका श्रीमती मीराबाई का शरीरान्त हो गया।

फरवरी १९६१ शुद्धि

गाव बाड़वास मे तीन व्यक्ति शुद्ध किए गए तथा एक लड़का गांव सेवनिया का स्वयं शुद्ध हुआ।

बांसवाडा केन्द्र में दो प्रचारक कार्य करते हैं और यह कार्य श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी की देख रेख मे होता है। स्वामी जी बडी तत्परता और लग्न से कार्य करते हैं। सभा उन्हे धन्यवाद देती है। २९ मई से ५ जून तक ईसाई प्रचार निरोध सप्ताह का सभा की ओर से आयोजन किया गया। आर्य समाजों तथा आर्य जनता को इस सप्ताह को सफलता पूर्वक मनाने की प्रेरणा की गई। इस अवसर पर "ईसाई पादरियो के कुचक्र से बचो" तथा "ईसाई पादरी उत्तर दें" ये दो ट्रैक्ट छपाए गए जो लाखो की संख्या मे आर्य जनता ने क्रय करके बाँटे। सार्वदेशिक मासिक पत्र जून का अंक विशेषाक के रूप में निकाला गया। इस अवसर पर हुई अपील पर सभा के कोष मे १०६९७) १७ प्राप्त हुआ। ईसाई प्रचार निरोध का समस्त कार्य सभा के उपाध्यक्ष श्री बा० कालीचरण जी की देख रेख मे हो रहा है जो बडी लगन से यह कार्य कर रहे हैं। सभा बाबू जी को धन्यवाद देती है।

वर्ष भर में कुल आय २४१४९) ४२ हुई और व्यय २७५२४) ९३ हुआ। ३३७५) ५१ अधिक व्यय हुआ जो जनरल निधि से पूरा किया गया।

दिल्ली तथा मेरठ जिले में ईसाई प्रचार निरोध कार्य—

ईसाई मिशन ने रामगढ़ के जिन किसानों को ईसाई से हिन्दू बन जाने के कारण खेती की भूमि से बेदखल किया था उनको मुकदमों की पैरवी में सभा ने श्री पं० रुचिराम जी द्वारा सहायता दी। भूमि सम्बन्धी १० अभियोगों में यह लोग हार गए थे। इनकी अपील की हुई है।

दक्षिण दिल्ली प्रचार मंडल के अन्तर्गत रामगढ में आर्य प्राईमरी स्कूल उन्नति कर रहा है। इस स्कूल में मुख्य रूप से शुद्ध किए हुए परिवारो के बच्चे पढते हैं। १ अध्यापक और ६० लड़के हैं। स्कूल का १२५) मासिक व्यय है जिसे श्री बाबू विद्यासागर जी बी० ए० तथा पं० रुचिराम जी एकत्र करके पूरा करते हैं।

रामगढ मे आर्य समाज स्थापित है जिसमें साप्ताहिक सत्सग नियम से होते तथा वार्षिकोत्सव भी होता है। समाज के प्रधान श्री बा० विद्यासागर जी बी० ए० हैं।

मस्जिद मोठ, बेगमपुर, लाडो सराय मे पूर्व के शुद्ध किए हुए परिवारो मे प्रचार कार्य होना रहा।

छपरौली (मेरठ) में मुख्यतया हरिजन विद्यार्थियों की शिक्षा के लिए एक आर्य प्राइमरी स्कूल चल रहा है जिसमे तीन अध्यापक और १६० विद्यार्थी पढते हैं। इस सभा ने इस वर्ष उक्त स्कूल को ३००) की सहायता दी।

हिन्दी-रक्षा-आंदोलन

पजाब की भाषा समस्या के समाधान के लिए निम्नलिखित सरकारी घोषणा के अनुसार पंजाब के राज्यपाल की अध्यक्षता मे २६ सदस्यीय समिति नियुक्त की गई थी :—

The Chief Minister, Sardar Pratap Singh, Kairon, announced in the Vidhan Sabha today the appointment of a 26 member representative committee with the Governor as Chairman to solve the language problem.

The Committee which comprises representatives of Hindu and Sikh cultural and educational organisations in the state has been given a free hand to make constructive suggestions.

The terms of reference of the committee are :

1. To consider the recommendations of the Good Relation Committee and.
2. To recommend to the state Government measures necessary for a satisfactory solution of the language problem and to suggest a programme for implementing these recommendations.

The Committee is expected to start work by the middle of March.

The Good Relations Committee, with Mr. Jaichand Vidyalankar and Bhai Jodh Singh as members, was appointed for one year with effect from August 1958 in the wake of the language agitation in the state.

The committee submitted its report to the Government on August 7 last year. It has, however, not yet been published despite insistent demands.

The announcement of the Chief Minister which took the House by surprise, was generally welcomed. It, in effect, indicated the acceptance of the demand for a round table conference although only a few days ago the Deputy Education Minister and the Finance Minister has said in the legislature that the Government was no party to the language dispute and that it would accept any solution agreed to by the contesting parties provided it did not lay the foundation of a partition.

(क्रमशः)

(पृ० ३८८ का शेष)

वर्ती लोग सदा से मूर्ख चले आए हैं, इनकी उन्नति कभी नहीं हुई। वेदादिकों की प्रतिष्ठा तो दूर रही, परन्तु निन्दा करने से भी पृथक् नही रहते, ब्रह्मसमाज के उद्देश्य से पुस्तक में साधुओं की संख्या में 'ईसा', 'मूसा', 'मुहम्मद,' 'नानक,' और 'चैतन्य' लिखे हैं, किसी ऋषि-महर्षि का नाम भी नहीं लिखा।"

वेद का अर्थज्ञान:—

"वेद का अर्थज्ञान। ज्ञान की ही हद में सृष्टि की सारी बातें हैं। सृष्टि की अव्यक्त अवस्था भी ज्ञान है। स्वामी जी वेदाध्ययन में अधिकारी-भेद नहीं रखते। वह सभी जातियों की बालिका-विद्यार्थिनियों को वेदाध्ययन का अधिकार देते हैं। यहाँ यह स्पष्ट है कि ज्ञानमय कोष वह जड-विज्ञान से सम्बन्ध रखता हो, धर्म-विज्ञान से—नारियों के लिए युक्त हैं, वे सब प्रकार से आत्मोन्नति करने की अधिकारिणी है। इस विषय पर आप सत्यार्थ-प्रकाश में एक मन्त्र उद्धृत करते हैं:—

"यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः।
ब्रह्मराजन्याभ्यां शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय।"
यजु०अ०२६।२

"परमेश्वर कहता है कि (यथा) जैसे मैं (जनेभ्यः) सब मनुष्यों के लिए (इमाम्) इस (कल्याणीम्) कल्याण अर्थात् संसार और मुक्ति के सुख देने हारी (वाचम्) ऋग्वेदादि चारों वेदों की वाणी का (आवदानि) उपदेश करता हूं, वैसे तुम भी किया करो। यहाँ कोई ऐसा प्रश्न करे कि जन-शब्द से द्विजों का ग्रहण करना चाहिए, क्योंकि स्मृत्यादि ग्रन्थों में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य ही के वेदों के पढ़ने का अधिकार लिखा है, स्त्री और शूद्रादि वर्णों का नहीं (उत्तर) ब्रह्मराजन्याभ्याम्) इत्यादि देखो, परमेश्वर स्वयं कहता है, कि हमें ब्राह्मण, क्षत्रिय, (आर्याय) वैश्य (शूद्राय) शूद्र और (स्वाय) अपने भृत्य वा स्त्रियादि (अरण्याय) और अति शूद्रादि के लिए भी वेदों का प्रकाश किया है, अर्थात् सब मनुष्य वेदों को पढ़-पढ़ा और सुन-सुना कर विज्ञान को बढ़ा के अच्छी बातों को ग्रहण और बुरी बातों को त्याग करके दुःखों से छूटकर आनन्द को प्राप्त हों। कहिए, अब तुम्हारी बात माने वा परमेश्वर की? परमेश्वर की बात अवश्य माननीय है। इतने पर भी जो कोई इसको न मानेगा, वह नास्तिक कहावेगा, क्योंकि 'नास्तिको वेदनिन्दक,' वेदों का निन्दक और न मानने वाला नास्तिक कहाता है।"

स्वामी जी ने वेदों के उद्धरणों द्वारा सिद्ध किया है कि स्त्रियों की शिक्षा अध्ययन आदि वेद-विहित हैं। उनके लिये ब्रह्मचर्य के पालन का भी विधान है। स्वामी जी की इस महत्ता को देखकर मालूम होजाता है कि स्त्री-समाज को उठाने वाले पश्चिमी शिक्षा-प्राप्त पुरुषों से वह बहुत आगे बढ़े हुए हैं। वह संसार और मुक्ति दोनों प्रसंगों में पुरुषों के ही बराबर नारियों को अधिकार देते हैं। इस एक ही वाक्य से साबित होता है कि किसी भी दृष्टि से वह नारी-जाति को पुरुष-जाति से घटकर नहीं मानते।"

इस प्रकार महाकवि निराला ने महर्षि दयानन्द और उनके देश के प्रति किये गए सत्कार्यों के प्रति समाज में श्रद्धा भावना प्रकट की है। विरोध नहीं जैसा कि बहुत से लेखक अपने विचारों में उचित अनुचित का निर्णय किये बिना अपना दृष्टिकोण पक्ष अथवा विपक्ष में प्रकट कर दिया करते हैं। निराला जी इसके अपवाद थे। वे जो उचित समझते उसके समर्थन में अपना मत भी प्रदान करते थे। निराला जी के बहुत से विचार जन-साधारण तक नहीं पहुंच पाए हैं। इसलिये यह आवश्यक है कि निराला जी के विचार जन-साधारण तक पहुँचाने के लिए, वे सभी लोग प्रयत्न करें, जो निराला जी के प्रति अपना ममत्व रखते हैं।

खेद है निराला जी अब इस संसार में नहीं हैं। पिछले दिनों ही प्रयाग में उनका देहावसान हुआ। हिन्दी भाषा के प्रमुख कवि के रूप में उनका नाम अमर रहेगा।—सम्पादक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी ध्रुवानन्द जी महाराज का आर्यसमाज सिंगापुर को संदेश

(३४ वें वार्षिकोत्सव के अवसर पर)

—:o:—

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि सिंगापुर जैसे दूरस्थ क्षेत्र में आर्यसमाज सिंगापुर गत ३४ वर्ष से प्रशंसनीय कार्य कर रहा है। मैं आप सब के उत्साह, प्रेम और उद्योग का बहुत आदर करता हूं जो आप लोग वैदिक धर्म और आर्य संस्कृति के प्रचार में प्रदर्शित कर रहे हैं। मुझे आशा है कि आप लोग आर्यसमाज को एक प्रबल शक्ति और प्रकाश-स्तम्भ बनाने में कोई प्रयत्न उठा न रखेंगे। यह तभी सम्भव है जबकि आप सब आर्यसिद्धान्तों और आर्यसंस्कृति के आदर्शों को अपने जीवन में चरितार्थ करते हुए आर्यसमाज और उसके हित को अपने निजी हित से ऊपर रखेंगे।

आप बन्धुओं को यह बात भी लक्ष्य में रखनी होगी कि प्रत्येक आर्य का वैयक्तिक और सामाजिक जीवन निरीक्षण का जीवन होता है। अतः यह आवश्यक है कि वे जीवन इस प्रकार के होने चाहिएं जिन पर कोई अंगुली न उठा सके।

यह परम हर्ष का विषय है कि आपके आर्यसमाज की प्रवृत्तियां बहुत विस्तृत हो गई हैं और आप उन्हें अधिक विस्तृत और स्थिर रूप देने के लिए आर्यसमाज मन्दिर के विशाल हाल के निर्माण और डी० ए० वी० स्कूल की स्थापना का यत्न कर रहे हैं। मैं आप की इन योजनाओं की सफलता चाहता हूं।

यह बड़े सन्तोष की बात है कि भारत और भारत से बाहर के आर्य जनों के हृदयों में, शिरोमणि सभा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रति बड़ी श्रद्धा है और वे मार्ग-दर्शन और प्रकाश के लिए उसकी ओर देखते हैं। इस प्रेम और सभा के अधिकार एवं वर्चस्व में दिन पर दिन वृद्धि हो यही कामना है।

वैदिक धर्म सार्वभौम धर्म है और यह मानव-मात्र से प्रेम करना सिखाता और मानव को अपना सर्वांगीण विकास करने में—वैयक्तिक, सामाजिक, धार्मिक और राजनैतिक क्षेत्र में भी समर्थ बनाता है। इससे मानव अपना लौकिक और पारलौकिक दोनों प्रकार का उत्थान कर सकता है। यह सब प्रकार की रूढ़ियों एवं संकीर्णताओं से रहित है और जाति, धर्म, रंग, लिंग, नस्ल आदि के भेद-भाव के बिना मानव मात्र के लिए अभिप्रेत है। यह समस्त मतों का आदि-स्रोत भी है। एक मात्र यही धर्म इस अशान्त एवं क्लान्त जगत् की जटिल समस्याओं का उपयुक्त समाधान प्रस्तुत करके शाश्वत शान्ति एवं विश्व-बन्धुत्व की स्थापना कर सकता है जो आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है। इसी धर्म से विज्ञान और आध्यात्मिकता का समन्वय संभव है। परमात्मा करे इस धर्म की शीतल छाया में समस्त विश्व ओत-प्रोत हो जाय।

———

साम्प्रदायिक उपद्रव

श्रीयुत जे० बी० कृपलानी

जबलपुर के बाद अलीगढ़ ! वर्तमान में केवल ये ही उपद्रव नही हुए हैं आसाम में तथाकथित भाषायी उपद्रव हुआ था। आन्तरिक विवादो को हिंसा प्रतिहिंसा के द्वारा तय करने का ढंग प्रजातांत्रिक नही हैं। प्रजातन्त्र व्यवस्था मे यदि कोई विशेषता है तो वह यह है कि इसमें आन्तरिक विवादों को शान्ति पूर्ण ढंग से निपटाने की व्यवस्था है। प्रजातन्त्र व्यवस्था मे सिर गिने जाते हैं तोले नहीं जाते। इसका अर्थ कानून का शासन है अर्थात् समस्त झगड़े पुलिस को, मजिस्ट्रेट को और न्यायाधीश को सौंप दिए जाने चाहिये। उपद्रवो मे अपराधी प्राय: बच जाते और निर्दोष मारे जाते हैं।

वर्तमान परिस्थिति में भारत में साम्प्रदायिक उपद्रवों का होना अत्यधिक हानिकर और घातक है। इनसे न केवल विविध वर्गों में कटुता ही उत्पन्न होती अपितु पाकिस्तान को भारत-विरोधी प्रचार की भी प्रचुर सामग्री उपलब्ध हो जाती है। इसके अतिरिक्त पाकिस्तान के हिन्दुओं से बदला निकाला जाता है साथ ही अल्प संख्यक वर्ग के कुछ लोगों में भारत से बाहर के क्षेत्रों के प्रति निष्ठा उत्पन्न होने की संभावना भी रहती है। यदि देश के कुछ लोग राष्ट्र द्रोही बन जाय तो देश की एकता, शान्ति और सुव्यवस्था के लिए इससे बढ़कर घातक बात और कोई नहीं हो सकती।

अल्प संख्यकों की कठिनाइयाँ

ऐसे उदाहरण हैं जिनमें दंगे का प्रारम्भ अल्प संख्यक वर्ग के एक वा कुछ सदस्यों के द्वारा हुआ। जब ऐसा होता है तो बहु संख्यक वर्ग के कुछ सदस्य कानून को अपने हाथ मे लेकर बदला लेते हैं। जब वे ऐसा करते हैं तो बहुसंख्यक होने के कारण स्वभावतः अल्प संख्यक वर्ग की कठिनाइयाँ बढ़ जाती हैं।

उपद्रव करना सदैव बुरा होता है परन्तु बहुसंख्यक वर्ग को अपनी बहु संख्या का लाभ उठाना वा इस प्रकार का आभास देना और अल्प-संख्यक वर्ग के निर्दोष व्यक्तियो से बदला लेना बहादुरी का कार्य नही है। बहु संख्यक वर्ग के कुछ व्यक्तियों की भ्रति का वहाँ भारत मे और पाकिस्तान में बडा दुरुपयोग किया जाता है। मुसलमान कांग्रेसी और तथाकथित राष्ट्रवादी मुसलमान दूर दृष्टि का परित्याग कर ऐसी नीतियों के प्रचार की उत्तरदायिता अपने ऊपर ले लेते हैं जिनके दूरवर्ती परिणाम स्वयं अल्प संख्यक वर्ग और राष्ट्र के लिए घातक होंगे। जब राष्ट्र-वादी मुसलमान साम्प्रदायिक नीतियों का प्रचार वा समर्थन करते हैं तो हिन्दू सम्प्रदायवादी चैतन्य हो जाते हैं। पाकिस्तान में बुरी से बुरी बातें हो जाती हैं। भारत में हमारा शासन असाम्प्रदायिक है। बहु संख्यक वर्ग के कुछ व्यक्तियों का उन्माद थोड़ी बहुत क्षति के उपरान्त राज्य द्वारा शान्त कर दिया जाता है। पाकिस्तान में सर-कार और बहु संख्यक लोगों का दृष्टिकोण साम्प्रदायिक होने से, निर्दोष हिन्दुओं से बदला लिया जाता है। वहाँ का शासन उसको रोकता नहीं भले ही वह सहायता न करे। जबलपुर की घटनाओं का बदला लेने के लिए वहाँ ऐसा ही हुआ था।

अतः यह आवश्यक है कि भारत में बहु संख्यक वर्ग

के लोगों को अपने कुछ पथ-भ्रष्ट लोगों के कार्यों पर पूर्ण नियन्त्रण रखना चाहिए। उन्हें कम से कम यह तो स्मरण रखना ही चाहिए कि वे पाकिस्तान के बहु संख्यक वर्ग और प्रशासन के क्रोध से अपने सह धर्मी निर्दोष हिन्दुओं की रक्षा नहीं कर सकते। उन्हें किसी भी अवस्था में कानून को अपने हाथ में लेकर वास्तविक वा काल्पनिक अपराध के लिए जो उनके किसी एक सदस्य का अनेक सदस्यों के प्रति किया जाय बदला न लेना चाहिए। उन्हें यह भी अनुभूति होनी चाहिए कि यदि बहु संख्यक वर्ग के कुछ लोगों द्वारा प्रतिशोध लेने मे क्षति हो जाय तो उपद्रव का मूल कारण भुला दिया जायगा और समस्त दोष बहु संख्यक वर्ग के ऊपर आ जायगा। अत: यदि वे अपना और देश का भला चाहें तो उनको उचित है कि जब अल्प संख्यक वर्ग के किसी वा किन्हीं व्यक्तियों द्वारा झगड़ा किया जाय वा किया जाना समझा जाय तो पुलिस और राज्याधिकारियों की शरण लेकर अपनी शिकायत दूर करनी चाहिए।

मुसलमानों का कर्तव्य

कांग्रेस वा कांग्रेस से बाहर के मुसलमान नेताओं के लिए भी उचित है कि वे अपने लोगों को नियन्त्रण में रखें। इसी में उनके वर्ग और देश का भला है। उन्हें अनुभव करना चाहिए कि बलवों में संख्या गिनी जाती है। अतः उन्हें बहु संख्यक वर्ग के साथ व्यवहार करने मे बहुत सावधानता बर्तने का अपने सह धर्मियों को निर्देश देना चाहिए। ऐसा करते हुए कभी-कभी उनके अभिमान को ठेस लग सकती है।

मैं समझता हूं कि उस वर्ग के लिए जो यह सोचता है कि उसने कभी हिन्दुस्तान पर हकूमत की थी अपने अभिमान का दमन करना कुछ कठिन है। परन्तु मुसलमानों को यह अनुभव करना चाहिए कि यदि वे संख्या में अधिक अपने साथी देश वासियों के साथ शान्तिपूर्वक रहना चाहें तो भारत की परिवर्तित स्थिति मे यह आवश्यक है कि उन्हें झगड़े से बचने का प्रयत्न करना चाहिए। यदि उनके हितों के प्रति वास्तविक वा काल्पनिक अन्याय हो तो उन्हे राज्याधिकारियों को कहना चाहिए। यदि दोनों पक्ष देश की वर्तमान अशान्त साम्प्रदायिक परिस्थिति मे विवेक और नियन्त्रण को हाथ से न जाने मे तो निश्चय ही शान्ति व्याप्त हो जायगी।

राज्याधिकारियों को जो कानून और व्यवस्था की रक्षा के लिए उत्तरदाता हैं अपने महान् दायित्व को अनुभव करना चाहिए। उन्हे तत्काल न्याय-युक्त और प्रभावशाली कार्यवाही करनी चाहिए। आसाम और जबलपुर में राज्याधिकारियों ने तात्कालिक, न्याय-सगत और प्रभावशाली कार्यवाही न की। हो सकता है कि बहु संख्यक वर्ग के दबाव के कारण विविध राज्य आवश्यक कार्यवाही करने में उदासीनता वा प्रमाद का परिचय दें। उस अवस्था में केन्द्र को ऐसी एजेन्सी का निर्माण करना चाहिए जो राज्याधिकारियों को बाधित करे वा कुछ समय के लिए कानून और व्यवस्था का प्रशासन अपने हाथ मे लेले। कहा जाता है कि यदि अलीगढ़ मे विश्व विद्यालय के अधिकारी झगड़े के प्रति जिसके लक्षण विश्व विद्यालय के क्षेत्र मे विद्यमान थे सावधान रहते और समय पर समुचित कार्यवाही कर लेते तो झगड़ा न होने पाता वा उठते ही दबा दिया जाता।

धार्मिक केन्द्र

मुस्लिम युनिवर्सिटी के क्षेत्र मे जो कुछ हुआ और उत्तर प्रदेश के कई स्थानों पर उसकी प्रतिक्रिया का जो तांता लगा उसने पुनः इस प्रश्न को प्रबल रूप मे हमारे समक्ष उपस्थित कर दिया है कि असाम्प्रदायिक प्रशासन में धर्म और जाति के नाम पर चलने वाले शिक्षणालयों के संचालन की अनुमति होनी चाहिए या नहीं। जब से हमने संविधान का निर्माण किया है तब से ही यह प्रश्न हमारे समक्ष है। एक समय ऐसा लगने लगा था कि इस प्रकार की संस्थाओं को भले ही कानून द्वारा उन्हे समाप्त न किया जाय, सरकारी मान्यता, सहायता और सार्वजनिक फंड से किसी भी प्रकार का लाभ प्रदान न किया जायगा। फिर भी शीघ्र ही ऐसा प्रतीत हुआ कि प्रशासन साम्प्रदायिक वा जाति गत विशिष्ट स्वार्थों को अपना विरोधी

बनाने का साहस न कर सकी। लोक सभा में यह प्रश्न अनेक बार उठा परन्तु न तो कुछ हो सका और न कुछ किए जाने का आभास ही मिल सका।

एक वर्ग या जाति की वर्गगत संस्था के बहु संख्यक विद्यार्थी सोचते हैं कि उसमें उन्हें वरिष्ठता के अधिकार प्राप्त हैं।

अन्य वर्गों वा जातियों के विद्यार्थियों को वे एक मात्र सहन कर लेते हैं। इस प्रकार की संस्थाएं और उनके प्रमुख—चासलर, वाइस चांसलर, प्रिंसिपल, अध्यापक इत्यादि उस वर्ग वा जाति के लोगों में से रखे जाते हैं जिसके द्वारा वह संस्था सस्थापित होती है। इस प्रकार के कार्य कर्त्ता यह अनुभव करते है कि संस्था के वर्गीय स्वरूप पर बल देने से ही वे उत्तरदायित्व पूर्ण पदों पर बने रह सकते हैं। इस प्रकार वर्गीय संस्थानों की बुराई जीवित रखी जातीऔर बढ़ाई जाती है।

समय आ गया है जबकि राज्याधिकारी दोनों हाथों में साहस बटोरकर इस प्रकार के सस्थानों को नोटिस दें कि यदि वे साम्प्रदायिक वा जाति-गत नामों का प्रयोग जारी रखेंगे और उनके साम्प्रदायिक स्वरूप को बनाए रखने का अनुरोध करेंगे तो उन्हें न तो सरकारी सहायता मिलेगी और न अन्य किसी प्रकार की सुविधा ही मिलेगी। यह एक ढंग होगा जिसके द्वारा यदि हम चाहें तो अवश्य ही हम देश से साम्प्रदायिकता को कुछ कम कर देंगे। अधिक नहीं तो कम से कम विद्यार्थियो की आने वाली पीढ़ी को एक पक्षीय निष्ठा से बचा सकेंगे जो हमें बीते हुए युग की विरासत में प्राप्त हुई है। क्याहमारेमहा महिम राज्याधिकारी अब भी विवेक से काम लेंगे ?

हम इस लेख से सर्वांश में सहमत नहीं हैं।

सम्पादक

(पृ० ४०६ का शेष)

देती है। इन सब पारिवारिक समस्याओं से उत्पन्न कुसस्कारो की रोक थाम का उत्तरदायित्व बड़ों पर ही आ जाता है। फिर भी यदि कुछ विशेष परिस्थितियों वश बच्चा किसी बुरी भावना ग्रन्थि एव विकृत आचरण का शिकार हो जाता है तो हमे कुशल मनोविश्लेषण वेत्ताओं की सहायता लेनी चाहिए। कभी-कभी बच्चों के प्रति बड़ों की पक्षपात पूर्ण नीति भी बाल-अपराध वृत्ति को जन्म देती देखी गई है। बहुधा हिन्दू परिवारो में सबसे बड़ा लड़का अपने अन्य छोटे भाई बहिनों की अपेक्षा कुछ अधिक महत्त्व रखता है। मां बाप उसे अतिरिक्त सुविधा प्रदान करते हैं। छोटे बच्चों के भोले मस्तिष्क मे यह पक्षपात पूर्ण नीति यदि एक विद्रोह और आचार की विकृति को जन्म दे दे तो क्या आश्चर्य। कभी-कभी परिवार के कई बच्चों की योग्यता एवं अयोग्यता का मापदण्ड उनका शिक्षात्मक कैरियर ही बन जाता है। विशेष गुणसम्पन्न बच्चा मां बाप से अधिक दुलार पाता है तथा प्रकृति प्रधान बौद्धिक गुणों से हीन बच्चा उपेक्षित व्यवहार पाता है। ऐसी स्थिति में भी बच्चे बाल अपराध की ओर प्रवृत्त हो जाते हैं। इन सब समस्याओं का समाधान मां बाप के विवेक-शील एवं संवेदनशील व्यवहार पर ही निर्भर है।

एक बात का और ध्यान रखना है। बच्चा केवल परिस्थिति एवं वातावरण का दास नहीं होता। वह केवल उनके हाथ का खिलोना ही नहीं है वरन् उसके अन्दर भी क्रियाशीलता और कल्पना के अंकुर विद्यमान रहते हैं जब तक वह उनका इच्छानुसार क्रियात्मक उपयोग नहीं करेगा उसके व्यक्तित्व के विकास की समग्र भावना को संतुष्टि नहीं मिल सकती। श्रीमती मोन्टेसरी ने बच्चों की इस क्रियात्मक शक्ति पर बड़ा बल दिया है। गेस्टाल्ट विचार वादियों ने यह सिद्ध कर दिया कि जो बच्चा प्रारम्भ से ही अपनी क्रियात्मक कल्पना के सहारे वातावरण में मानसिक सन्तुष्टि प्राप्त करता है वह उतना ही भावी जीवन में सफल रहता है।

ओ३म्

सार्वदेशिक धर्मार्य सभा का निर्वाचन

सार्वदेशिक धर्मार्य सभा का तीन वर्ष के लिए निर्वाचन ता० ८-१०-६१ को दयानन्द भवन (दिल्ली) सार्वदेशिक सभा के कार्यालय मे सम्पन्न हुआ जिसमे उत्तर प्रदेश, पजाब, राजस्थान, मध्यप्रदेश, मध्यभारत, बगाल, बिहार, गुजरात आदि के ३० प्रतिष्ठित विद्वानों ने भाग लिया।

तीन वर्ष के लिए निर्वाचन इस प्रकार हुआ

१—प्रधान—श्री प० धर्मदेव जी विद्यामार्तण्ड (देवमुनि जी) ज्वालापुर।
२—उपप्रधान—श्री आचार्य बृहस्पति जी, देहरादून।
३—प्रधान मन्त्री—श्री आचार्य विश्वश्रवाः जी व्यास देहली।
४—सहायक मन्त्री—श्री आचार्य राजेन्द्रनाथ जी शास्त्री, देहली।

अन्तरंग सदस्य

५—श्री आचार्य प० वैद्यनाथ जी शास्त्री, नासिक।
६—श्री प० उदयवीर जी शास्त्री गाजियाबाद।
७—श्री डा० हरिदत्त जी शास्त्री, एम०ए०पी०एच०डी० कानपुर।
८—श्री प० भीमसेन जी शास्त्री एम०ए० देहली।
९—श्री आचार्य वीरेन्द्र जी शास्त्री एम० ए०, रायबरेली।
१०—श्री प० जगदेव जी सिद्धान्ती शास्त्री, पजाब।
११—श्री स्वामी सत्यमुनि जी, पजाब।
१२—श्रीमती प्रभावती जी, गुरुकुल कागड़ी।
१३—श्री ठा० अमरसिंह जी कलकत्ता।
१४—श्री प० ओ३म् प्रकाश जी, खतौली।
१५—श्री आचार्य रामानन्द जी, बिहार।

अनमोल मोती

रात और दिन मधुरता से युक्त हों, प्रत्येक पार्थिव कण प्रकाश और माधुर्य लावें।
हमारे लिए वनस्पति, सूर्य और उसकी किरणें माधुर्य से युक्त हों।
मेरा आना जाना और दैनिक व्यवहार मीठा हो। मैं मीठी वाणी बोलूं।

सार्वदेशिक विद्यार्य सभा नई देहली (कार्यालय रायबरेली) श्रावणी २०१८ वि० की परीक्षाओं का परिणाम

आर्य सिद्धान्त रत्न परीक्षा

केन्द्र लश्कर—तृतीय श्रेणी ३ दिलीप कुलश्रेष्ठ. ४ ओम् प्रकाश धीगरा, ६ शिशुम कुमार, ८ सोमनाथ सफरी;

केन्द्र बांदा—द्वितीय श्रेणी—१० शिवप्रसाद;

केन्द्र बहाना—तृतीय श्रेणी ११ रघुनाथसिंह, १२ सुमेरसिंह;

केन्द्र कोटला—तृतीय श्रेणी —१५ रामवीरसिंह;

केन्द्र बहसुइया—द्वितीय श्रेणी १६ शान्तिस्वरूप आर्य ॥

आर्य सिद्धान्त भूषण परीक्षा

लश्कर—प्रथम श्रेणी—६२ रामचन्द्र मकरानी; द्वितीय श्रेणी—१८ कमलेशकुमार गुप्त, तृतीय श्रेणी—१ विजय प्रधान, ८ रविप्रकाश जाजू, १५ विलासराव, १८ रवीन्द्रकुमार गुप्त, २३ राम कुमार वर्मा, २४ सतनामसिंह, २५ कृष्णलाल बजाज ३३ शैलेन्द्र सक्सेना, ३५ राजेन्द्र अग्रवाल, ३७ कुलदीप किशोर; ३८ लक्ष्मी नारायण; ४० लक्ष्मण करन्दीकर; ४२ आनन्द जुवेकर; ४४ हीरानन्द रोहिड़ा; ४८ कृष्ण प्रतापसिंह; ५६ सुभाषचन्द्र तुली; ५८ जितेन्द्र कुमार; ५९ रुद्रेशचन्द्र शर्मा; ६३ श्रीचन्द्र; ६४ श्रीनिवास;

बांदा—प्रथम श्रेणी—६५ बाबूराम यादव;

बहाना—द्वितीय श्रेणी ६६ श्यामवीर;

सहारनपुर—प्रथम श्रेणी—६९ सरोज; द्वितीय श्रेणी—७२ सन्तोष, ७४ कुसुमलता, ७८ मधु; तृतीय श्रेणी—७० रमेश, ७१ पुष्पा; ७९ शिरोमणि;

इन्दौर—तृतीय श्रेणी—८३ रामचरण वर्मा; ८४ ब्रह्मदेव शर्मा;

करौलबाग देहली—प्रथम श्रेणी—८५ लीलावती;

मुजफ्फर नगर—द्वितीय श्रेणी—८६ मनफूलदत्त आर्य;

बैरगनियां—द्वितीय श्रेणी ८८ श्री चन्द्रिका पाण्डेय; तृतीय श्रेणी ८७ शिवजी प्रसाद;

कोटला—तृतीय श्रेणी—८९ नरेन्द्रकुमार जैन; ९० वेद प्रकाश, ९१ ब्रह्मस्वरूप;

उत्तम नगर (तिलक नगर-दिल्ली)—तृतीय श्रेणी—९२ वीरेन्द्रकुमार; ९३ रमेशचन्द्र राजपाल; ९४ प्रियाशरण गौतम;

इलाहाबाद—तृतीय श्रेणी—९६ सत्यप्रकाश ॥

आर्य सिद्धान्त विशारद परीक्षा

लश्कर—प्रथम श्रेणी—१ देवेन्द्रनाथ गुप्त; १२ राम-किशोर, ६० वासुदेव, ६५ लक्ष्मणदास;

द्वितीय श्रेणी—२ कैशवकुमार, ३१ भगवती देवी, ४३ पंकज कुमार, ४४ ईश्वर नागरानी, ५१ सतीशचन्द्र, ५९ चौथइराम, ६१ सतीश मसन्द, ६४ लक्ष्मी नारायण मिश्र,

तृतीय श्रेणी—३ सुरेशकुमार नीखरा, ५ कुलवीर सिंह, ७ उपेन्द्रमोहन, ९ विजय पुराणिक, १० केशवसिंह यादव, ११ संजीव शर्मा, १३ शिवकुमार १४ महेशचन्द्र गोयल, १५ भरत कुमार मेहता, १७ नरेन्द्र भाला, १८ अशोक पवैया, २० सुरेश त्रिवेदी, २३ शिवाजी, २४

प्रकाश पाटिल, २५ भरत व्यास, २६ विनीत कुमार, २८ रवीन्द्र नाथ शर्मा, २९ शरद् कुमार, ३० रणजीत कांकड़े, ३२ जनकदुलारी, ३३ वीणा देवी आर्या, ३४ रामकिशोर, ३७ महेशकुमार खटोड, ५० विनोदकुमार अग्रवाल, ५४ आलोक बनर्जी, ५५ अतुलकुमार, ५७ श्रवण कुमार ।

शकूरबस्ती (देहली)—प्रथम श्रेणी—६६ प्रेमलता, ६७ दुर्गा, आर्या, ६८ उषा रत्न तृतीय श्रेणी—६९ शारदा चानना ।

शाहबाद—प्रथम श्रेणी ७० राम लड़ैते, ७२ कुंवर पाल, ७३ सावित्रीदेवी,, द्वितीय श्रेणी ७५ प्रेमबिहारी लाल, तृतीय श्रेणी ७४ चन्द्रकान्ता देवी,

डहाना—प्रथम श्रेणी—७७ कमला देवी ।

सहारनपुर—प्रथम श्रेणी ८३ कमलेश कुमारी गर्ग, द्वितीय श्रेणी —७९ मंजु शर्मा, ८२ पुष्पा, ८५ रामदुलारी, ८६ कृष्णा, तृतीय श्रेणी—८० सरला, ८१ कमलेश, ८४ शशि, ८७ रुक्मिणी, ९०, सुदेश, ९१ प्रवेश, ९२ सौभाग्य,

इन्दौर—प्रथम श्रेणी—९९ ओम प्रकाश श्रीवास्तव, १०० राधेलाल शर्मा, १०३ बाबूलाल, तृतीय श्रेणी—९६ मन्ना कुमार, ९८ अरविन्द कुमार सोलंकी,

मुजफ्फर नगर—प्रथम श्रेणी—१०७ प्रमीला मानिक, द्वितीय श्रेणी—१०४ विजय कुमार, १०५ सत्यदेव नागपाल, तृतीय श्रेणी—१०६ ज्ञानचन्द्र,

बैरगनिया—प्रथम श्रेणी—१०९ विद्यानन्द, १११ रामचन्द्रप्रसाद, द्वितीय श्रेणी १०८ ओम् प्रकाश, ११० रामनरेश,

कोटला—तृतीय श्रेणी—११४ विनोद कुमार, ११५ रामबहादुर, ११६ रामपालसिंह, ११७ मुरारी लाल शर्मा, ११८ भवेन्द्रपालसिंह, ११९ लाखनसिंह, १२० दिनेश कुमार, १२१ सुरेशचन्द्र माहेश्वरी, १२२ कुमुद प्रकाश, १२३ किशन पालसिंह, १२४ रवेन्द्रपालसिंह, १२५ करनपाल, १२६ चन्द्रपालसिंह,

उत्तम नगर (तिलकनगर दिल्ली)—तृतीय श्रेणी—१२७ सुशीलचन्द्र, १२८ प्रह्लाद किशोर,

इलाहाबाद—प्रथम श्रेणी—१२९ ओम् प्रकाश, तृतीय श्रेणी—१३३ ओम्प्रकाश ।

दि० ९-१०-६१

वीरेन्द्र शास्त्री एम० ए०, मन्त्री,
सार्वदेशिक विद्यार्यसभा, नई देहली
कार्यालय राय बरेली उ० प्र०

अनमोल मोती

हे मातृ भूमि, हमसे जो द्वेष करे या हम पर सेना से आक्रमण करे जो मन और शस्त्र से हमें दास बनाना चाहे उसको हे मनोरथों को पूर्ण करने वाली मातृ भूमि, तू नष्ट कर दे ।

अथर्व १२-१-१४

हमारे लिए वायु मधुरस लिए चलती है नदिया मधु बहाती हैं औषधियां भी मधु रस से युक्त होवें ।

ऋ १ । ९० । ६

विदेशसमाचार

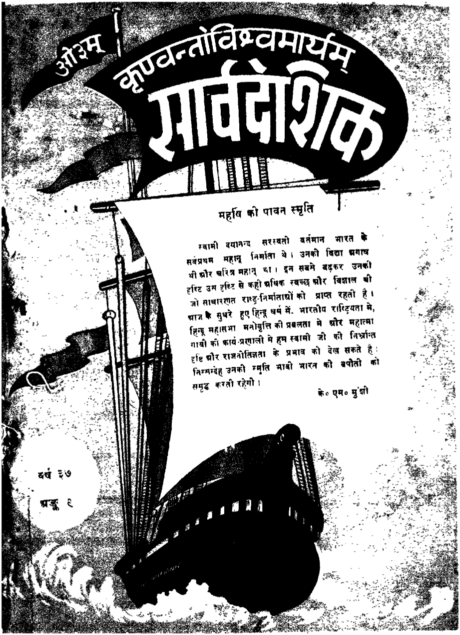
ता० १०-९-६१ रविवार के दिन १० बजे आर्य समाज मम्बासा के नए प्रार्थनाभवन का उद्घाटन राजरत्न दानवीर आर्य श्रेष्ठी श्रीमान नानजी भाई कालिदास के द्वारा हुआ। उनका आर्य समाज के प्रवेश द्वार पर ही फूल हारों से स्वागत किया गया। नवयुवकों ने बैण्डवादन और "गार्ड ओफ ऑनर" से उनके प्रति सम्मान और हर्ष प्रकट किया। व्यवस्थित रूप से मार्ग की दोनो ओर खड़े आर्य समाज और स्त्री समाज की अन्तरंग सभा के सदस्यों का परिचय श्री प्रधान जी द्वारा करवाया गया।

तदनन्तर श्री पं० रणधीर जी वेदालंकार ने ओ३म् ध्वज लहराने की विधि "वैदिक राष्ट्र गान" और "संगठन सूक्त" के मन्त्र पाठ के साथ श्रीमान् सेठ जी के हाथों करवाई। ध्वज के फहराते ही समाज के मैदान में जय घोष और करतल ध्वनि गूंजने लगी। 'आहवनीय अग्नि' के प्रकटाने के साथ वैदिक वास्तु प्रवेश विधि श्रीमान् सेठ जी के ही हाथों श्रीमान् पण्डित जी द्वारा विधान पूर्वक करवाई गई। श्रीमान् पण्डित जी द्वारा करवाई गई विधि पर जनता मुग्ध रही खासकर के वेद मन्त्र पाठ ने जनता को भक्ति रस में बहा दिया। एक घन्टे की इस विधि की समाप्ति के बाद आर्य समाज के प्रधान श्री राम करण जी द्वारा मम्बासा आर्यसमाज का संक्षिप्त इतिहास उपस्थित किया गया और अन्त में कहा कि मुट्ठी भर दफतरों में काम करने वाले आर्य परिवार के सहकार्यकर्ताओं के परिश्रम और लगन का फल यह "प्रार्थना भवन" है। इसके निर्माण में शी. १७५०००।- का खर्च हुआ है। यह समाज का मैदान श्री सेठ जी द्वारा आर्य समाज को अर्पित किया गया है। इस भवन के निर्माण में भी शी: १०,०००।- श्री सेठ जी द्वारा समाज के भिक्षा पात्र में दिये गये हैं। उपसंहार करते हुए उन्होने श्रीमान् सेठ जी के प्रति सम्मान प्रकट करते हुए आर्य परिवार की ओर से एक "अभिनन्दन पत्र" अर्पण किया जिसे उपस्थित जनता को श्री पं० रणधीर जी ने पढ़कर सुनाया।

अन्त में श्रीमान् सेठजी ने उपस्थित जनता और आर्य परिवार का अभिनन्दन करते हुए अपनी अनुभव-गाथा सुनाते हुए कहा कि हमें संगठित होना होगा। हमें एक 'भाषा' को अपनाना होगा। हमारी संस्कृति को जीवित रखने के लिए कटिबद्ध होना पड़ेगा। यदि हम चूक गये तो हमारी हस्ती पूर्व अफ्रीका में खतरे से खाली नहीं रहेगी। भारतीय मातृ शक्ति ने भारतीय संस्कृति को बचाया है। मेरी माताओं और बहिनों से बिनती है कि वे सदा इस क्षेत्र में आगे कदम बढ़ाती रहें। जापान देश की उन्नति का श्रेयः उस देश की महिलाओं को है। यह बात कई उदाहरण देकर श्री सेठजी ने स्पष्ट शब्दों में रक्खी। महर्षि दयानन्द इस नवयुग के प्रवर्त्तक हैं। उनके अधूरे कार्य को पूरा करना हम सब का कर्त्तव्य है। प्रभु हमें शक्ति, सामर्थ्य भक्ति दे कि हम अपने मिशन को पूरा कर सकें।

श्री मंत्री जी के धन्यवाद प्रकट किये जाने के बाद शान्तिपाठ के साथ सभा विसर्जित हुई।

राम करण
प्रधान



महर्षि की पावन स्मृति

स्वामी दयानन्द सरस्वती वर्तमान भारत के सर्वप्रथम महान् निर्माता थे। उनकी विद्या अगाध थी और चरित्र महान् था। इन सबसे बढ़कर उनकी दृष्टि उस दृष्टि से कहीं अधिक स्वच्छ और विशाल थी जो साधारणतः राष्ट्र-निर्माताओं को प्राप्त रहती है। आज के सुधरे हुए हिन्दू धर्म में, भारतीय राष्ट्रियता में, हिन्दू महासभा मनोवृत्ति की प्रबलता में और महात्मा गांधी की कार्य-प्रणाली में हम स्वामी जी की निर्भ्रान्त दृष्टि और राजनीतिज्ञता के प्रभाव को देख सकते हैं। निस्सन्देह उनकी स्मृति भावी भारत की बपौती को समृद्ध करती रहेगी।

के० एम० मुंशी

॥ ओ३म् ॥

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

वार्षिक मूल्य ६) | विदेश से वार्षिक ८) या १२ शि

वर्ष ३७ | सृष्टि संवत् १९७२९४९०६० | १९६१ नवम्बर कार्तिक २०१८ अंक ६।

विषय-सूची

---

* सम्पादक

काली चरण आर्य सभा मन्त्री

* सहायकसम्पादक

रघुनाथप्रसाद पाठक

* प्रकाशक व मुद्रक

रघुनाथप्रसाद पाठक

* कार्यालय

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
दयानन्द भवन, नई दिल्ली

फोन : २२४७७१

* मुद्रक

सम्राट् प्रेस, पहाड़ी धीरज देहली

फोन : २२२५६३

वेद-व्याख्या

॥ ओ३म् ॥

ऋचो अक्षरे परमे व्योमन् यस्मिन्देवा अधिविश्वे निषेदुः ।
यस्तन्न वेद किमृचा करिस्यति य इत्तद्विदुस्त इमे समासते ॥
ऋक० १-१६४-३९; अथर्व ९-१०-१८

ऋचायें परमोत्कृष्ट आकाशवत् सर्व व्यापक अविनाशी सत्ता में स्थित हैं। जिस अविनाशी सत्ता में समस्त दिव्य गुण विशिष्ट सत्ताएं आश्रित होकर ठहरे हुए हैं, जो कोई उस अविनाशी सत्ता को नहीं जान पाता, वह ऋचाओं के अध्ययन मात्र से क्या उपलब्ध करेगा? जो व्यक्ति उस परमोत्कृष्ट अविनाशी सत्ता को जानते हैं, अथवा जानने का यत्न करते हैं, वे लोग वही हैं जो सम्यक् प्रकार से उसमें आश्रय लेते हैं।

संसार में परमपिता परमात्मा आकाश के समान सर्वत्र व्यापक है। वह परमात्मा अविनाशी है, और इसलिए उस परमात्मा को अक्षर-ब्रह्म कहा गया है। वह समस्त विश्व-ब्रह्माण्ड के जितने भी दिव्यगुण विशिष्ट सत्ताएं हैं, उन सब को धारण किये हुए है। समस्त ब्रह्माण्ड उसी में स्थित है। और समस्त ज्ञान उसी एक अक्षर ब्रह्म में वैदिक ऋचाओं के रूप में अवस्थित हैं।

वैदिक ऋचायें सृष्टि के आरम्भ में मनुष्य मात्र के कल्याण के लिए उस परमपिता परमात्मा से ही ऋषियों द्वारा हमें प्राप्त हुए हैं। वैदिक ऋचा में ही प्रत्येक पदार्थ का तत्वज्ञान उपस्थित है। जिन मनुष्यों ने संसार में आकर उन ऋचाओं द्वारा तत्वज्ञान को जानने का यत्न किया है, उन्होंने संसार में अपने परोपयोगी जीवन को सफल बनाया है, और अपने उस उद्देश्य की पूर्ति की है, और प्राप्ति की है जिसकी प्राप्ति की मनुष्य के हृदय में नैसर्गिक रूप में इच्छा उपस्थित है। मनुष्य संसार में आकर अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिए सतत प्रयत्नशील रहता है। परन्तु अनेक बार विफल होता है। इसके अनेक कारण हैं, और विशेष कारण यह है कि वह प्रभु के बतलाये हुए आदेश के अनुसार ठीक कार्यान्वित नहीं होता। वह जानते हुए भी कि समस्त ज्ञान का भण्डार एक मात्र प्रभु है, फिर भी वह इधर-उधर अपने प्रभु को छोड़कर भटकता फिरता है। यह भी किसी से छिपा नहीं है, ज्ञान का एक मात्र स्रोत या खजाना उस ब्रह्म के अतिरिक्त और कहीं नहीं है। फिर भी मनुष्य की प्रवृत्ति अन्यत्र घूमती-फिरती दृष्टिगोचर होती हैं। दूसरा कारण उद्देश्य की प्राप्ति के न होने का यह भी है, कि हम यह जान लेने के पश्चात् भी ऋचाओं में हमारे उद्देश्य की पूर्ति के साधन उपस्थित हैं- हम केवल, उनके पाठ-मात्र को ही अपने कल्याण का पूर्ण साधन मान बैठे हैं। जिस प्रकार मिश्री हथेली पर रखी हुई, हमारे मुख को मीठा नहीं कर सकती जब तक कि हम उसका पान न कर लें वह हमारे लिये लाभान्वित नहीं हो सकती, जब तक हम उसको अपने शरीर का भाग न बना लें। इसी तरह वेद की ऋचायें हमें वह लाभ नहीं पहुँचा सकती, जब तक हम उनमें बताये हुए मार्गों पर चलकर उस अक्षर ब्रह्म को पूर्ण-रूपेण जानकर उसके गुणों को अपने अन्दर धारण नहीं कर लेते। संसार में केवल वही पुरुष जिसने अविनाशी ब्रह्म को उसके द्वारा दिये हुए तत्व ज्ञान देने वाली ऋचाओं में जान लिया है, वही उस अविनाशी ब्रह्म के समीप है अर्थात् उपासना प्राप्त कर सकता है। उस अक्षर ब्रह्म के तत्व-ज्ञान के अभाव में केवल मात्र वैदिक ऋचाओं के पाठ-मात्र से प्रभु की उपासना प्राप्त नहीं होती अतः ऋचाओं का अध्ययन तदनुकूल आचरण हमें उद्देश्य तक ले जाने में समर्थ बनायगा।

कालीचरण आर्य

सार्वदेशिक

सम्पादकीय

दिव्य प्रकाश के वाहक महर्षि

दीपावली का पावन पर्व सदा की भांति इस वर्ष भी उल्लास तथा आमोद का सन्देश लेकर भारतीय जन-मानस के क्षितिज पर उदित हो रहा है। यह पर्व उन गिने-चुने गौरवमय पर्वो मे से एक है जो भाषा, रंग-रूप तथा प्रादेशिक दृष्टि से विभिन्न प्रतीत होने वाले इस विस्तृत भूभाग मे एकता की भावना के प्रतिष्ठापक है। भारतीय इतिहास तथा संस्कृति की पुण्य सम्पदाओ को अपने आंचल मे बटोरकर आने वाली दीपावलि जहाँ आर्यजाति के उद्दाम गौरव की साक्षिणी है वहाँ साथ ही हमारे इतिहास की अनेक घटनाओ को भी इसने अपने साथ जोड लिया है। ऐसी ही एक महत्त्वपूर्ण घटना आज से ७८ वर्ष पूर्व घटी थी जब कि इसी महत्त्वपूर्ण पर्व को महर्षि दयानन्द का निर्वाण हुआ था। विधिका कैसा विलक्षण विधान है। दीपावलि और महर्षि का निर्वाण।

सुषमामयी शारदीय पूर्णिमा के पश्चात् पहली अमावस्या को यह पर्व मनाया जाता है। घोर तमिस्रा में छोटे-छोटे असख्य दीपक जलाकर प्रकाश का पुञ्ज प्रसारित किया जाता है। अन्धकार पर प्रकाश निराशा पर आशा तथा स्वार्थ पर परार्थ की विजय पताका फहरायी जाती है। महर्षि दयानन्द रूपी दीपक के जीवन की भीतो मानो यही गाथा है। वैदिक सस्कृति तथा आलोक की पूर्णिमा के पश्चात् अज्ञान, आडम्बर तथा अन्ध विश्वास की घोर तमिस्रा ने मानव-जाति को मानो सर्वथा संज्ञाहीन बना दिया था। धर्म और ईश्वर के नाम पर असख्य अनर्थो तथा रूढियो का बोलबाला था। मुक्ति का सस्ता मन्त्र देने वाले धार्मिक नेता ही मानव को भयावह बन्धनो में जकड रहे थे। इस प्रकार अज्ञान तथा अविद्या से उत्पीडित मानव को सत्पथ का प्रदर्शन करने के लिये महर्षि दयानन्द वैदिक ज्योति हाथ मे लेकर कार्यक्षेत्र में उतरे।

सचमुच इस वैदिक ज्योति ने अनुपम चमत्कार दिखाया। प्रकाश के प्रति द्वन्द्वी सभी तत्त्व एकदम हतप्रभ हो गये। अज्ञान की तमिस्रा मे पनपने वाले अनर्गल मतमतान्तर आतंकित होकर भाग खडे हुए। ऋषि ने घोषणा की कि प्रकाशस्वरूप परमेश्वर ने प्रलय की रात्रि की समाप्ति पर सृष्टि की पहली सुभग सन्ध्या को मनीषी ऋषियो के माध्यम से जो वेद रूपी ज्योति मानव-जाति को दी, वही ससार मे व्यापक अन्धकार को विलीन करने का सामर्थ्य रखती है उसी के सहारे मानव श्रेयोमार्गका पथिक बन सकता है।

दयानन्द रूपी दीपक ने अपनी इह लीला इसी अमावस्या को अनन्त भौतिक दीपको के साथ समाप्त की, परन्तु वह एक विलक्षण आध्यात्मिक दीपक थे। वह मानवजाति के हाथ मे वैदिक-ज्ञान-ज्योति का अमर आलोक देगये। उनका सारा जीवन दीपक के समान ही त्याग, बलिदान तथा प्रकाश का अनुपम आदर्श प्रस्तुत करता है। वे अपनी ज्योति से असंख्य दीपकों को प्रज्ज्वलित कर गये। उन्ही असंख्य दीपकों का पुञ्ज ऋषि द्वारा प्रवर्त्तित आर्यसमाज है। यही आर्यसमाज की गरिमा है, सन्देश है और उद्देश्य है। ऋषि के निर्वाण दिवस पर प्रत्येक आर्य का कर्तव्य है कि वह अपने महान् आचार्य के अमर सन्देश को सुने, उसकी दिव्य ज्योति को देखे। आज की दीपावलि का पावन पर्व हमे अपना कर्तव्य स्मरण करा रहा है, दिव्य सन्देश सुना रहा है अन्धकार से प्रकाश की ओर अज्ञान से ज्ञान की ओर, निराशा से आशा की ओर तथा बन्धन से मुक्ति की ओर प्रयाण किया जाय, यही इस निर्वाण दिवस का मानव जाति के लिये अमर सन्देश है।

रघुवीरसिंह शास्त्री

सम्पादकीय टिप्पणियाँ

उपवास और राजनीति
Fasts and Politics

श्रीयुन प० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय ४ अक्तूबर के 'लीडर' (प्रयाग) मे उपर्युक्त शीर्षक से लिखते है—

Everybody is happy at the termination of the Punjab fasts. So am I. only the enemies of the country could have been otherwise. But the termination of the individual fasts is not of any permanent value unless people at large are persuaded to believe that fasts as political weapons are not only impolitic but sinful. When the sages of old invented, advised or practised fasts, they were either preparatory to spiritual training, or purificatory to undesirable impressions left on one's soul by some aberrations from the right path. Nowhere in our shastras have fasts been prescribed for attaining political ends or forcing one's opinions or wishes upon the Government or any party. Mahatma Gandhi is sometimes given as an example. But he was so spiritually advanced that it is not easy for us to analyse his inner self and separate the spiritual trends from the political ones. It will be a mistake to copy him in those matters, which he alone was qualified to adjudge In the past few years, fasts have been so frequently used as a means of gaining nonspiritual ends that they have become a sort of epidemic and no efforts have been made to mitigate the evil. To risk one's life, for any cause proper or improper evokes public admiration and this in turn encourages others to follow those whom they find eulogized. It is the duty of the spiritual leaders of different sections of society to impress seriously and sincerely upon the people the dark sides of such practices. Unfortunately, it is only from religious centres that such baits are thrown and emotionally weak people jump at them. Is it not spiritual muddling ? I feel a sort of apprehension that though the evil has passed its potentiality remains and demands a well-considered solution.

प्रत्येक व्यक्ति पंजाब के उपवासों की समाप्ति पर प्रसन्न है। मैं भी प्रसन्न हूं। देश के शत्रुओं की ही इससे भिन्न भावना हो सकती थी। जब तक जन-साधारण की यह मान्यता न हो जाय कि राजनैतिक अस्त्र के रूप मे अनशन करना पाप है तब तक वैयक्तिक अनशनो की

परिसमाप्ति का कोई स्थिर महत्व नहीं होता। जब प्राचीन काल के ऋषियों ने अनशन का आविष्कार, प्रचार वा प्रयोग किया था तो उनके लक्ष्य में उनका उद्देश्य आध्यात्मिक प्रशिक्षण या धर्म-मार्ग से च्युत हो जाने के फल स्वरूप आत्मा पर पड़े कुसंस्कारों का उन्मूलन था। हमारे शास्त्रों में कहीं पर भी राजनैतिक उद्देश्यों की प्राप्ति वा सरकार अथवा किसी दल पर अपनी इच्छा वा सम्मति बलात् लादने के लिए अनशनों का विधान नहीं किया गया है। कभी-कभी महात्मा गाँधी का उदाहरण प्रस्तुत किया जाता है। परन्तु वे आध्यात्मिक दृष्टि से इतने उच्च थे कि उनकें आभ्यन्तरिक का विश्लेषण करना और राजनैतिक एवं आध्यात्मिक रुचियों में भेद करना हमारे लिए सरल नहीं है। इस प्रकार के मामलों में उनका अनुकरण करना भूल होगी क्योंकि इन मामलों में निर्णय करने के वे ही सर्वथा योग्य थे। गत कुछ वर्षों में अनाध्यात्म उद्देश्यों की सिद्धि के लिए इन उपवासों का इतना अधिक प्रयोग हुआ है कि उन्होंने एक संक्रामक रोग का रूप ग्रहण कर लिया है और इस रोग के शमन का कोई उपाय नहीं किया गया है। आध्यात्मिक नेताओं का कर्त्तव्य है कि वे इस प्रकार की क्रियाओं के काले पक्ष को लोगों के हृदयों पर अंकित करें।" आमरण अनशन चाहे वह महात्मा गाँधी के द्वारा किया गया वा अन्य किसी के द्वारा किया गया वा किया जाय, प्रशस्त नहीं है। महात्मा गाँधी अपने अनशनों का उद्देश्य आत्म-शुद्धि वा आत्मिक उन्नति बताया करते थे, दबाव डालना नहीं। कवीन्द्र टैगोर, महामना मालवीय जी प्रभृति देशरत्नों ने महात्मा जी के अनशनों को उचित नहीं बताया था। टैगोर महोदय ने महात्मा जी को निम्न प्रकार लिखा था:—

"जब भगवान् बुद्ध को संसार के असंख्य लोगों के क्लेशों का ज्ञान हुआ तो वह अपने जीवन की अन्तिम घड़ी तक निर्वाण के मार्ग का उपदेश द्वारा प्रचार करते रहे। मृत्यु जब शारीरिक वा मानसिक निर्बलता से अपने आप आये तो उसका धीरता पूर्वक सामना करना चाहिए। किन्तु मृत्यु को अपने लिए बुलाने का हमें कोई अधिकार नहीं है।

महर्षि दयानन्द राज योगी थे। ईश्वर प्राप्ति वा आत्मोन्नति के लिए वे कभी ऐसे अनशन को न मानते थे और न स्वयं करते थे जिसका अन्तिम परिणाम आत्म-हत्या हो।"

सफेद झूठ

आर्य समाज मेहसी (चम्पारन, बिहार) के मन्त्री श्री भरत प्रसाद जी चौधरी ने हमारा ध्यान दयाल बाग आगरा से अंग्रेजी में प्रकाशित राधा स्वामी सत्संग शताब्दी स्मृति-ग्रन्थ के निम्नलिखित अवतरण की ओर आकृष्ट किया है:—

Swamiji Maharaj (Swami Daya Nand Saraswati) came to stay at Dayal bagh Satsang. He put certain questions and held discussion with the Guruji Maharaj. He requested for initiation. He was satisfied. He got it and he was then initiated. He however, desired that he may he permitted to fight against the idolatory and the evils of the Hindu Society. He promised that he would come back to the satsang. He had not criticised this satsang but he had criticised all the faiths.

(Souvinir of the Radha Swami Satsang centenary, Dayal Bagh Agra, Jan. 1961 P.-16.)

अर्थात् स्वामी जी महाराज (स्वामी दयानन्द सरस्वती जी) दयाल बाग सत्संग में ठहरने के लिए आए। उन्होंने गुरुजी महाराज से कुछ प्रश्न किए और वाद-विवाद

किया। उन्होने (दयानन्द जी ने) दीक्षा की प्रार्थना की। वह सन्तुष्ट हुए और तब उन्हे दीक्षित कर लिया गया। फिर भी उन्होने मूर्तिपूजा और हिन्दू-समाज की कुरीतियों के विरुद्ध प्रचार करने की अनुमति प्राप्त करने की इच्छा व्यक्त की। उन्होंने सत्संग मे वापस आने का वचन दिया। उन्होने राधा स्वामी सत्संग की आलोचना नहीं की परन्तु अन्य सब मतो की आलोचना की है :—"

सम्प्रदायवादी लोग बुद्धि और सत्य के कितने बड़े शत्रु होते हैं यह बात इस अवतरण से सुस्पष्ट है। स्वामी दयानन्द सरस्वती प्रारम्भ से ही गुरुडम के कट्टर शत्रु थे अत. यह कहना कि उन्होने राधा स्वामी मत के गुरु जी से दीक्षा ली नितान्त असत्य है। लोगो की आँखों मे इस प्रकार धूल झोंकने से राधा स्वामी मत की प्रतिष्ठा नहीं बढती है। इस प्रकार अनर्गल बात लिखने वाला जहाँ सभ्य और शिक्षित वर्ग मे अपने को उपहास का पात्र बनाता है वहाँ वह यह भी दिखाता है कि सत्य और तथ्य के प्रति उसके नेत्र बंद हैं। राधा स्वामी मत की स्थापना स्वामी जी के जीवन काल मे न होने के कारण वह मत स्वामी जी की आलोचना से बचगया। यतः स्वामी जी ने गुरुजी महाराज से दीक्षा ली थी, अतः उन्होंने राधास्वामी मत की आलोचना न की यह सफेद झूठ बोलने से उस मत की वरिष्ठता प्रतिपादित नही होती। स्वामी जी महाराज की आड़ मे उक्त मत की वरिष्ठता स्थापित करने का यत्न करना उसके खोखलेपन को छुपाने का यत्न ही समझा जा सकता है।

श्री सेठ प्रतापसिंह जी पर वज्रपात

हृदय की गति बंद हो जाने से हुई सार्वदेशिक सभा के उपप्रधान श्री सेठ प्रतापसिंह शूर जी वल्लभदास के छोटे भाई विक्रमसिंह की मृत्यु बड़ी दुःखद घटना है। उनके निधन से श्री सेठ प्रतापसिंह जी के परिवार की ही नहीं अपितु आर्य समाज की भी महती क्षति हुई है। वे आर्य समाज के बड़े प्रेमी थे। उन्होने जलयानो आदि का कारबार अपने हाथ मे सभाला हुआ था जिसे वह बड़ी योग्यता और कुशलता से चला रहे थे। निश्चय ही उनकी मृत्यु से भाई प्रतापसिंह जी की चिन्ता और कठिनाई बढ़ जायगी। इस महान् वियाग में हमारा हृदय उनके साथ है। प्रभु के विधान के समक्ष नत-मस्तक होने केसिवाय और कोई चारा भी नहीं है। भाई विक्रमसिंह ने अभी जीवन के थोड़े से ही वसन्त देखे थे। युवावस्था मे उनकी मृत्यु से एक बार फिर यह सचाई स्पष्ट हो गई है कि बूढे लोग स्वयं मृत्यु के पास जाते हैं और मृत्यु स्वय युवको के पास जाती है। भाई प्रतापसिंह और उनके परिवार को यह सोचकर धैर्य धारण करना चाहिए कि मृत्यु अवश्यम्भावी घटना है। विक्रमसिंह भले व्यक्ति थे। वे चारपाई पर पड़कर नहीं मरे हैं। वे एक छोटे से प्रकाशयुक्त घर से निकलकर महान् प्रकाश युक्त स्थान पर गए हैं जिन्हे वायु ने आदर और प्यार के साथ अन्तिम विदाई दी है।

तथाकथित सांस्कृतिक कार्य-क्रम

इस समय हमारे स्कूलो और कालेजो मे एक बहुत बड़ी बुराई व्याप्त है और हो रही है। सामाजिक और राष्ट्रीय समारोहो तथा अत्यन्त महत्वपूर्ण व्यक्तियों के अभिनन्दन आदि के अवसरों पर तथा कथित सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये जाते है जिनसे न केवल विद्यार्थियों तथा अध्यापको के समय की बर्बादी ही होती है अपितु जो अत्यन्त आपत्तिजनक भी होते हैं। समझदार और सुरुचि रखने वाले व्यक्ति उनको देखने के पश्चात् दुःखी और निराश होते हैं। जिन कार्य-क्रमों को लड़कियाँ प्रस्तुत करती हैं उनकी बड़ी प्रशसा होती है और जिन्हे लड़के प्रस्तुत करते है उनमे कोलाहल और व्यंग व्याप्त रहते है। यह सब कुछ अध्यापको की उपस्थिति मे होता है जो अपने ही विद्यार्थियो की इन कुचेष्टाओ को नियंत्रित करने मे असमर्थ रहते हैं। वस्तुतः नृत्य, ग्राम्य गीत आदि २ मुख्यतया नव युवको से परिपूर्ण समारोहो के लिए अभिप्रेत नहीं होते हैं ये तो एक मात्र स्त्रियो के समारोहो के लिए अभिप्रेत होते हैं। हमारी जवान लड़कियो को पुरुष वर्ग के समक्ष स्टेज पर लाने की प्रथा एक दम बन्द होनी चाहिए। इस प्रकार के कार्य-क्रम हमारी सामाजिक व्यवस्था और सदाचार की भावना के सर्वथा विपरीत है। कार्य-क्रमो के बाद के दिन लड़कियो के अभिभावको और प्रिंसिपलों के लिए बड़े सिर दर्द और लड़कियो के लिए कष्टदायक सिद्ध होते हैं।

उत्तर-प्रदेश की सरकार ने इस दिशा मे प्रशसनीय पग उठाया है। उसने इन कार्य-क्रमो पर कुछ प्रतिबन्ध लगाए हैं। राज्य का कर्त्तव्य है कि समस्त देश मे इन कार्य-क्रमो को बन्द करने के लिए तत्काल ठोस कार्यवाही करे। प्रजा को भी इन कार्य-क्रमों को प्रत्येक प्रकार से निरुत्साहित करने में अग्रसर होना चाहिए। लड़कियो के माता-पिताओं का भी इस दिशा मे बहुत बड़ा कर्त्तव्य है। वे अपनी लडकियों को पुरुष वर्ग के समक्ष स्टेज पर लाए जाने से रोक सकते हैं।

दो प्रशंसनीय कार्य

आर्य मार्तण्ड (१५-१०-६१) मे प्रकाशित समाचार के अनुसार जोधपुर-पाली मार्ग का नाम जो एक प्रमुख राज-मार्ग है महर्षि दयानन्द मार्ग रखा जा रहा है। इसके अतिरिक्त जोधपुर मे उस स्थान पर जहाँ महर्षि को विष दिया गया था श्री स्वामी जी के उपदेशो तथा उनके जीवन की स्मरणीय घटनाओ के उल्लेख सहित शिलालेख लगाया जा रहा है। ये दोनों कार्य नगर-पालिका जोधपुर द्वारा किये जा रहे हैं जो प्रशसनीय हैं।

जघन्यकृत्य

समाचार मिला है कि ग्राम पिलखना परगना डिवाई मे वहाँ के कुछ मुस्लिम गुडो ने श्री ठा० हुक्म सिंह आर्य पर जिन्हे २ वर्ष हुए शुद्ध किया गया था आक्रमण करके खेत मे बहुत मारा पीटा और उनकी नाक भी काट डाली। गुडो के इस कायरतापूर्ण जघन्य कृत्य की जितनी निन्दा की जाय थोड़ी है।

डराने, धमकाने वा इस प्रकार के दुष्कृत्यों से शुद्धि का कार्य न रुका है और न रुक सकेगा। विदित हुआ है इस दिशामे पुलिस का रवैया सराहनीय है। आशा है कि अपराधियो को समुचित दण्ड दिया जायगा और इस प्रकार की बर्बरता पूर्ण कार्य वाहियो को रोकने के लिए कोई प्रयत्न उठा न रखा जायगा।

अल्प संख्यकों का कर्त्तव्य

श्रीयुत अजीजुल हसन (हैदराबाद) श्रीयुत आचार्य कृपलानी जी के लेख के सन्दर्भ में जो अन्यत्र प्रकाशित हुआ है २६-१०-६१ के हिन्दुस्तान टाइम्स में लिखते हैं :—

"आचार्य कृपलानी ने अपने लेख (साम्प्रदायिक दगे हि० टा० अक्तूबर १३-१४) मे इस बात पर ठीक ही बल दिया है कि 'मुस्लिम समाज के नेताओ को अपने सहधर्मियो से यह कहना चाहिए कि वे बहुसख्यक वर्ग से व्यवहार करते समय बहुत सावधान रहा करे और उन्हे अपने अहंकार को पी जाना चाहिए।" मैं तो यह कहूगा कि उन्हें न केवल बहुसंख्यक वर्ग के साथ व्यवहार मे सावधान ही रहना चाहिए अपितु उन्हें उस देश मे रहने का ढंग भी सीखना चाहिये जो विभाजित हो चुका है। साथ ही उन्हें अल्पसख्यक होने की अपनी स्थिति का ऐसा दोहन भी न करना चाहिए जिससे देश का अहित हो।

इस प्रकार का संस्कार पाया जाता है कि एक मात्र हमारा धर्म (मत) ही अच्छा है अत. अन्य लोग काफिर हैं। यह सस्कार मिथ्या है जो हमे प्रायः पथ-भ्रष्ट कर देता है जिसके फलस्वरूप दूसरो की तथा उनके धर्म की निन्दा की जाती है, और अधार्मिककृत्य किए जाते है जिनके कारण साम्प्रदायिक उपद्रवो की भूमि तय्यार हो जाती है। हमें यह शोभा नही देता। इसके स्थान मे इस देश मे मिलजुलकर रहने की दिशा मे हमारा प्रयत्न होना चाहिए। यह वह देश है जिसमे बहुसंख्या मे वे लोग बसे हुए हैं जिनकी धार्मिक परम्पराएँ समृद्ध और गम्भीर हैं जो हिंसा से घृणा करती अहिंसा का प्रचार करती हैं और जिनमें क्रूरता और अत्याचार के लिए कोई स्थान नही है। यह वह देश है जहाँ विवेक का सर्वोपरि साम्राज्य है और जहाँ की प्रजा अपनी धार्मिक और सास्कृतिक परम्पराओ का अनुसरण करने मे स्वतन्त्र है। यदि हम इस देश मे अपने को ठीक प्रकार से रक्खें तो देश मे शान्ति और सौहार्द व्याप्त रहे जो शब्द के ठीक-ठीक अर्थ मे सम्प्रदाय-निरपेक्ष है।

रघुनाथप्रसाद पाठक

महाकवि सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

और

उनके आर्यसमाज के प्रति विचार

फतहचन्द शर्मा 'आराधक'

महाकवि सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' हिन्दी के उन मूर्धन्य साहित्यकारो मे एक थे, जो कुशल कवि, सत्य-द्रष्टा साहित्य स्रष्टा और अपने निश्चय पर अडिग रहने वाले व्यक्ति थे। उन्होने कभी जाने-अनजाने खुशहाली और तंगी दोनो मे अपने विचारो का अनुचित उपयोग न किया। उनके व्यक्तित्व की सबसे बडी विशेषता यह थी कि वे उन सब लोगो के साथ थे, जो समाज मे उपेक्षित थे। बडे खेद की बात है कि कुछ गुटबन्द साहित्यकारों ने उनके प्रति सहयोग और श्रद्धा के बदले मे सदैव यह प्रयत्न किया कि वे समाज के सामने विस्मृत हो जाएँ। आज आकाश वाणी के पास उनके कोई भी ऐसे गीत नही है, और न उनके ऐसे भाषण हैं, जिन्हे आकाशवाणी सुनाकर अपने श्रोताओ के हृदय मे उनके प्रति अपनी कृतज्ञ भावना प्रदर्शित कर सके। कभी भी आकाशवाणी ने यह प्रयत्न किया ही नही, क्योकि आकाशवाणी के अपने अलग कवि, साहित्यकार और वक्ता है। वे अच्छे है या बुरे, इसका निर्णय किये बिना उन्हे बराबर बढ़ावा मिलता रहता है। लगभग ६५ वर्ष होने को आए, इस अवस्था मे महाकवि 'निराला' अपने जीवन से संघर्ष करके बहुत कुछ हिन्दी साहित्य को दे गये। एक बेताज बादशाह की तरह से निराला की छवि हिन्दी के पाठको पर सदैव प्रभाव और प्रेरणा प्रदान करती रहेगी जो उनके व्यक्तित्व एव कृतित्व से प्राप्त हो सकी है। हिन्दी के काव्य-क्षेत्र मे निराला की देन कभी भी विस्मृत नहीं की जा सकेगी।

आर्य समाज के प्रतीक

महाकवि 'निराला' आर्यसमाज के आन्दोलन के विशेष समर्थक रहे। उन्होने स्वामी दयानन्द के सम्बन्ध मे लिखा है कि "१९ वी शती का प्रारम्भ भारत के इतिहास का अमर एव स्वर्ण प्रभात है। कई पावन-चरित्र महापुरुष अलग-अलग उत्तरदायित्व लेकर, इस समय, इस पुण्य भूमि मे मे अवतीर्ण होते हैं। महर्षि दयानन्द सरस्वती भी इन्ही एक महाप्रतिभा मंडित महापुरुष हैं।"

महाकवि ने स्वामी दयानन्द के सम्बद्ध मे लिखा है कि जिस समय पौराणिक रूपको से जनता को मायाजाल मे फसाया जा रहा था, उस समय एक तेजस्वी आत्मा की आवश्यकता थी। उस समय महर्षि दयानन्द का कार्य अपराजित प्रकाश है। उस अपार वैदिक ज्ञान-राशि के आधार-स्तम्भ स्वरूप अकेले बडे-बडे पडितो का उन्होने सामना किया। एक ही आधार से इतनी बडी शक्ति का स्मरण होना है कि आज भारत के युगान्तर साहित्य मे उसी की सत्ता प्रथम है।"

स्वामी जी के सम्बन्ध मे बडी श्रद्धा-भावना से आगे लिखा है—"चरित्र स्वास्थ्य, त्याग, ज्ञान और शिष्टता आदि में जो आदर्श महर्षि दयानन्द जी महाराज से प्राप्त होते हैं, उनका लेशमात्र भी अभारतीय पश्चिमी शिक्षा में सभूत नही, पुन: ऐसे आर्य मे ज्ञान तथा कर्म का कितना प्रसार रह सकता है, वह स्वय इसके उदाहरण है, मतलब यह है कि जो लोग कहते हैं कि वैदिक अथवा

प्राचीन शिक्षा द्वारा मनुष्य उतना उन्नतमना नहीं हो सकता, जितना अंग्रेजी-शिक्षा द्वारा होता है, महर्षि दयानन्द सरस्वती इसके प्रत्यक्ष खण्डन हैं। महर्षि दयानन्द जी से बढ़कर भी मनुष्य हो सकता है, इसका प्रमाण प्राप्त नहीं हो सकता, यही वैदिक ज्ञान की मनुष्य के उत्कर्ष मे प्रत्यक्ष उपलब्धि होती है, यहीं आदर्श आर्य हमें देखने को मिलता है।"

धार्मिक इतिहास

"यहाँ से भारत के धार्मिक इतिहास का एक नया अध्याय शुरू होता है, यद्यपि वह बहुत ही प्राचीन है। हमें अपने सुधार के लिये क्या-क्या करना चाहिये, हमारे सामाजिक उन्नयन मे कहाँ-कहा और क्या-क्या रुकावटें हैं, हमे मुक्ति के लिये कौन-सा मार्ग ग्रहण करना चाहिये महर्षि दयानन्द जी सरस्वती ने बहुत अच्छी तरह समझाया है। आर्य-समाज की प्रतिष्ठा भारतीयो मे एक नये जीवन की प्रतिष्ठा है, उसकी प्रगति एक दिव्य शक्ति की स्फूर्ति है। देश में महिलाओ, पतितों तथा ब्राह्मणेत्तर जातियों के अधिकार के लिये महर्षि दयानन्द तथा आर्य-समाज से बढ़कर इस नवीन विचारो के युग में किसी भी समाज ने कार्य नही किया। आज जो जागरण उत्तर भारत में देख पडता है, इसका प्रायः सम्पूर्ण श्रेय आर्य-समाज को है। स्वधर्म मे दीक्षित करने का यहाँ इसी समाज से श्रीगणेश हुआ है। भिन्न जाति वाले बन्धुओं को उठाने तथा ब्राह्मण क्षत्रियो के प्रहारो से बचाने का उद्यम आर्य-समाज ही करता रहा है। शहर-शहर, जिले-जिले कस्बे-कस्बे मे इसी उदारता के कारण, आर्य-समाज की स्थापना हो गई। राष्ट्र-भाषा हिन्दी के भी स्वामी जी एक प्रवर्तक हैं, और आर्य-समाज के प्रचार की तो यह भाषा ही रही है। अनेक गीत खिचडी शैली के तैयार किए और गाए गये शिक्षण के लिए गुरुकुल जैसी सस्थाएँ निर्मित हो गई। एक नया ही जीवन देश में लहराने लगा।"

प्रतिभाशाली पुरुष

किसी दूसरे प्रतिभाशाली पुरुष से और जो कुछ भी उपकार देश तथा जाति का हुआ हो, सबसे पहले वेदों को स्वामी दयानन्द जी सरस्वती ने ही हमारे सामने रखा। हम आर्य हों, हिंदू हों, ब्रह्मसमाज वाले हों, यदि हमें ऋषियों की संतान होने का सौभाग्य प्राप्त है और इसके लिए गर्व करते हैं, तो कहना होगा कि ऋषि दयानन्द से बढ़कर हमारा उपकार इधर किसी भी दूसरे महा-पुरुष ने नहीं किया, जिन्होने स्वयं कुछ भी न लेकर हमें अपार ज्ञान-राशि वेदो से परिचित कर दिया।"

व्यंग्य बड़े उपदेश-पूर्ण

"स्वामी जी के व्यग्य बडे उपदेश-पूर्ण हैं। आर्य-संस्कृति के लिए आपने निःसहाय होकर भी दिग्विजय किया, और उसकी समुचित प्रतिष्ठा की। स्वामी जी का सबसे बडा महत्त्व यह है कि उन्होने अपनी प्रतिष्ठा की ओर नहीं देखा, वेदो की प्रतिष्ठा की है। ब्रह्म समाज और प्रार्थनासमाज के सम्बन्ध मे आपका कहना है—"ब्रह्मसमाज और प्रार्थनासमाज के नियम सर्वांश मे अच्छे नहीं, क्योकि वेद-विद्या-हीन लोगों की कल्पना सर्वथा सत्य क्योकर हो सकती है? जो कुछ ब्रह्मसमाज और प्रार्थनासमाजियो ने ईसाई मत में मिलने से थोडे मनुष्यों को बचाए और कुछ-कुछ पाषाण आदि मूर्ति-पूजा हटाई, अन्य जाल-ग्रन्थो के फदे से भी कुछ बचाए इत्यादि अच्छी बातें हैं। परन्तु इन लोगो मे स्वदेश-भक्ति न्यून है, ईसाइयो के आचरण बहुत-से लिए हैं, खान-पान विवाहादि के नियम भी बदल दिए हैं। अपने देश की प्रशंसा व पूर्वजों की बडाई करनी तो दूर रही, उसके स्थान में पेट-भर निन्दा करते हैं, व्याख्यानो मे ईसाई आदि अंग्रेजों की प्रशंसा भर-पेट करते हैं। ब्रह्मादि, महर्षियो का नाम भी नहीं लेते। प्रत्युत ऐसा कहते हैं कि बिना अंग्रेजों के सृष्टि में आज पर्यन्त कोई भी विद्वान् नही हुआ, आर्या-

(शेष पृ० ४२० पर)

ऋषि दयानन्द की कसक

श्री रामेश्वरदयाल जी गुप्त
बी० एस-सी० विशारद

गोरखपुर जिला में कलसिया एक स्थान है। कनिङ्घम ने वहाँ के टीलो की खुदाई करके दो स्तम्भो का पता लगाया था। एक स्तूप में गौतम बुद्ध के दाँत एक डिबिया मे सुरक्षित निकले थे। एक टीले के नीचे से आयताकार कमरा निकला जिसमे गौतम बुद्ध की मनुष्य कद मूर्ति लेटी हुई मुद्रा मे है। यह उनके महापरिनिर्वाण का दृश्य है। साथ ही उनके मुख्य शिष्य आनन्द रोने की मुद्रा मे है। जातको मे कथा आई है कि गौतम बुद्ध ने आनन्द से कहा—"आनन्द दुख न करो। मैंने जिन आदि सत्यों का उपदेश दिया है उन्हें लेकर चारों दिशाओ मे फैलाओ। मै सदा तुम्हारे साथ हूँ।" यह भगवान् गौतम बुद्ध का स्वप्न था। गौतम बुद्ध ने कोई पुस्तक न लिखी थी। उनके स्वर्गारोहण के बाद ५० वर्ष महास्थविर मौग्दलायन आदि बौद्ध दर्शन की स्थापना करने और साहित्य प्रस्तुत करने मे लगे। यह सब हो सकने मे बौद्धों को ४ विशाल सभाएँ कालान्तर में हुई। पहली बृहत्सभा तो राजगिरि में हुई जिसका प्रधान नालन्दा का कुलपति था। राजगिरि की गुफाओं मे वे स्थान अब भी सुरक्षित हैं। दूसरी सभा (Syrod) वैशाली मे महास्थविर यश के सभापतित्व मे हुई जबकि स्थविरवादी तथा महासांघिक विभेद परिपक्व हुए। यह बुद्ध के स्वर्गवास के लगभग १०० वर्ष बाद हुई थी। अशोक के समय तक १८ निकाय बौद्धों के बन चुके थे। अशोक ने अपने गुरु तिष्य (उपगुप्त) के प्रधानत्व में तीसरी बृहत्सभा बुलाई। उसमें ८ हजार बौद्ध निष्कासित किये गये थे। अशोक के राज्य काल का वह १७ वाँ वर्ष था और उसे बौद्ध हुए तब केवल ८ वर्ष हुए थे। उस सभा मे बौद्ध धर्म के द्वीप द्वीपान्तर तथा देश-देशान्तर प्रचार की योजना बनाई गई थी और विद्वानो को निम्नप्रकार विदेश भेजा गया था:—

महारक्षित—यौन लोक (यवन देश)।
महादेव—महिस-मडल (मैसूर)।
चेररक्षित—वनवास (उत्तरी कनारा)।
योनक धर्मरक्षित—अपरान्तक (कोकण)।
महाधम्म रक्षित—महाराष्ट्र।
थेर मज्झिम्म और कश्यप—हिमवन्त (हिमालय प्रदेश)।
थेर सोणव उत्तर सुवर्ण भूमि (जावा आदि)।
महामहिन्द्र (महेन्द्र)—लका (सिंहल)—महावश)।

इनमें से प्रत्येक विद्वान् के साथ ४ और सहायक विद्वान् भेजे गये थे। महारक्षित के १ शिष्य ईस्नो तथा थेराथून फिलिस्तीन तथा मिश्र मे जाकर बसे थे। ईसामसीह इन्हीं के सम्पर्क मे आये थे।

अपने धर्म को फैलाने की आदत हिन्दुओ मे नहीं

रही है । परन्तु इसे भारतीय श्रादन नही कहा जा सकता है! क्योकि बौद्धों ने योजनाबद्ध प्रचार द्वारा सम्पूर्ण यूरेशिया—यूनान—मिश्र—चीन व जापान को बौद्ध बना लिया था । बौद्धो के सम्पक और प्रभाव से स्थापित ईसाई धर्म मे ईसा के जन्म व चमत्कार की सब कथाएँ बुद्ध जन्म की कथाओ से ली हैं और मिशनरी धर्म होने की सारी परम्परायें बौद्धों से ली है । अतः घर छोड़ लगनशील पादरियो ने उसे सम्पूर्ण योरुप, अमेरिका व एशिया मे फैला दिया और भारत के धर्मनिष्ठ तोरण को भेद दिया जहाँ का उदघोष था:—

स्वधर्मे निधनं श्रेयः, परधर्मो भयावहः ।

आज देश में एक करोड ईसाई हैं और यही कथा इस्लाम की है 'उम्मी निरक्षर । पैगम्बर साहब ने भी अपने धर्म को फैलाने वाला बनाया । उन्होंने तो कोई साहित्य भी नही सृजा । उनकी मृत्यु के १३ वर्ष बाद खलीफा उम्र ने जैद नामक विद्वान् से कुरान शरीफ़ संकलित करवाई । परन्तु वे धर्म के लिए युद्ध व जिहाद करने वालो का एक दस्ता छोड़ गये थे । इन जिहादियों ने इस्लाम को भी विश्व धर्म बना दिया । आज परिस्थिति यह है कि विश्व मे सब से अधिक ईसाई—फिर बौद्ध फिर मुस्लिम तथा अत मे हिन्दू—फिर एनिमिस्ट (प्रकृति पूजक हैं) ।

हमारे फैलाने की शृंखला टूट गई । अपने त्रैत वाद के महान् सिद्धान्तो के फैलाव की बात दिल में ही रह गई । स्वामी जी महाराज ने पं० गुरुदत्त तथा मूलराज प्रभृति सज्जनों को मरते समय अपने पास बुला भेजा था । बड़े कष्ट से उन्होने कहा था कि 'ईश्वर तेरी इच्छा पूर्ण हो । तूने अच्छी लीला की ।" उनका मानस पुत्र आर्य समाज शैशव मे था और उस पौधे को सींचने का काम वे हम सब पर छोड गये । उस समय के वे मनीषी धम्मपाल—कश्यप और आनन्द की कोटि के हैं । उनकी अपनाई हुई पद्धति से हमारी संख्या भारतवर्ष में लगभग ४० लाख हो गई है परन्तु अब काम अवरुद्ध सा हो गया जान पड़ता है । हमारे मनीषी चले गये । देश-देशान्तर और द्वीप-द्वीपान्तर में लगनशील प्रचारक गये भी । परन्तु विदेशों में हमारा सारा कार्य-क्षेत्र प्रवासी हिन्दुओं तक ही सीमित है । स्थानीय (नैटिव लोगों) मे तो हमने कार्य का विधिवत सूत्रपात ही नहीं किया है । इधर भारतवर्ष के महाराष्ट्र-आंध्र-मैसूर-केरल-मद्रास-उडीसा-त्रिपुरा में भी बहुत कुछ करने को शेष है । इस प्रकार तो स्वामी जी महाराज की कसक पूरी नहीं होगी । समय आ गया है कि बौद्धो की तरह विश्वव्यापी फैलाव की योजना बनाई जावे ।

निश्चय है कि हमारे पास २-४ दर्जन व्यक्ति अवश्य हैं जिन को दुनिया मे बाँटा जा सकता है । इधर देश में प्रचार-प्रसार के लिए अनिवार्य भर्ती होनी चाहिये अर्थात् प्रत्येक आर्य समाजी के लिये एक वर्ष प्रचारार्थ भिक्षा-भरन द्वारा देना लाजिमी करार दे दिया जावे । प्रतिनिधि सभाएँ ऐसे व्यक्तियों को भारत के मानचित्र से एक २ गाँव सौंपते जावें । हजारों युवक और वृद्ध छटपटा रहे हैं कि उन्हें कुछ काम दिया जावे । हमारे पदाधिकारी ऊंचे उठें और युग की माँग पूरी करें क्योंकि छान्दोग्य उपनिषद में कहा है:—

उक्थ प्राणो वै उक्थं ।
क्षत्रं प्राणो वै क्षत्रं ।
यत्तु: प्राणो वै यत्तु: ।
साम् प्राणो वै साम् ।

प्राणवान या जीवित व्यक्ति या समाज की यही पहिचान है कि वह बढ़े । विजातीय द्रव्य को अपने में आत्मसात करें । संगठित होकर एक भाग के दुख को सब का दुख समझें और बाहरी आक्रमण से अपनी रक्षा करे । हम जीवित समुदाय हैं और हमें जीवित रहना है । दुनिया को देने को हमारे पास कुछ है और इसीलिए कुछ वर्षों तक हमारा नारा होना चाहिए ।

प्रसिचक्रम-फैल जाओ ।

महर्षि दयानन्द के प्रति श्रद्धाञ्जलि

कुछ वास्तव मे अत्यन्त-उच्च कोटि के प्रतिभाशाली मनुष्य हो चुके हैं परन्तु उनके अन्दर वह दैवी ज्वाला नही है जो दूसरो मे अग्नि प्रवेश कर सकती है और ईश्वर प्रेरित शिष्य-परम्परा स्थापित कर सकती है । यह गुण दोषनिरूपण का एक सर्वोच्च परीक्षण है और इसमे कोई सन्देह नही कि स्वामी दयानन्द इस परीक्षा मे सफल होते हैं। दूसरो मे प्रकाश डालने के लिए यह महान् आत्मा विशेषता दिखाती है। मैने स्वय अपने नेत्रो से स्वा० दयानन्द की महत्ता की सीमा को देखा है। संसार के भिन्न-भिन्न भागो मे यात्रा के पश्चात् वापस आने पर मैंने यह अकसर कहा है कि किस प्रकार मैंने आर्य समाज को एक जीवित धार्मिक शक्ति के रूप मे आर्य-आचार-व्यवहार की रक्षा करते हुए देखा है जब कि हिन्दू धर्म की दूसरी शाखाये विजातीय शासन की विनाशकारी आचारभ्रष्टता के समक्ष न ठहर सकीं किन्तु आर्यसमाज ने विदेशी मिट्टी मे और विजातीय परिस्थिति में फूलना-फलना सीखा है। उदाहरण के लिए मैं चाहता हूं कि मैं अपने पाठको को दक्षिणी अफ्रीका में ले चलूं और वहां आर्यसमाज का उन दूसरी संस्थाओं के मुकाबिले में जो भारत के सच्चे धार्मिक जीवन को स्थापित करने के लिए पूर्ण प्रकार से उद्योग करती रही है, अत्यन्त प्रबल जीवन दिखलाऊं। इन दूसरी संस्थाओं को भी अपना अपना काम करना था और जो कुछ कर सकती थीं किया। किन्तु आर्यसमाज न केवल जीवित ही है, वरन वह उन्नति कर रहा है। यह एक जीवनशील छोटे वृक्ष के समान है जो अपने जड़ के रेशों को प्रत्येक वर्ष पृथ्वीतल में भेजता रहता है और नए चमत्कार दिखलाता रहता है। इसका प्रभाव दक्षिणी अफ्रिका के भारतीयो पर अपूर्व है।

एक दूसरा परीक्षण समीकरण अथवा अपनाने का (assimilation) है। उसका एक रूप मिलाना, अथवा हजम कर लेना है। मेरा तात्पर्य इससे नही। दक्षिणी अफ्रीका और दूसरे देशो मे आर्यसमाज आचार-विचार मे इतना परिवर्तित नहीं होता कि वह स्वय ही हजम हो जावे। बल्कि उसका अपना आचार-विचार वैसा ही है, किन्तु वह चारों ओर से सत्य के नवीन रूपो को धारण करता जाता है। आर्यसमाज के प्रवर्त्तक स्वामी दयानन्द का भक्त रहते हुए भी आर्यसमाज उनकी आज्ञाओं को ठीक उस ही प्रकार मानता है जैसे वह स्वय इच्छा करते अर्थात् उनके भाव को न कि शब्दों को ग्रहण करता है। नवीन उत्साह और आन्दोलन नवीन विकास और उन्नति और नवीन आदर्श नित्यप्रति निकलते हैं किन्तु आर्यसमाज का वास्तविक लक्षण और विशेषता वही रहती है।

मैं ऊपर आर्यसमाज के एक विशेष लक्षण का उल्लेख कर चुका हूं जिस के कारण गत शताब्दी मे हिन्दू धर्म में सुधार के लिए जितनी संस्थाएँ स्थापित हुई उन सब की अपेक्षा आर्यसमाज का सबसे अधिक महत्त्व है। यह लक्षण आर्यसमाज के विस्तरण और समीकरण की शक्ति का है। जो प्रोत्साहन देश को आर्यसमाज के नेता से मिला वह एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक क्रमशः बढ़ता जा रहा है। इस कार्य में ऋषि दयानन्द की महान् आत्मिक शक्ति से बहुत सहायता मिली और उसके प्रभाव का अभी तक अन्त नहीं।

एक और भी बात मेरे ध्यान मे आई है, विशेषकर भाई परमानन्द के उन पत्रो को पढ़ कर जो उन्होंने एण्डमान कारावास से लिखे हैं और जिन्हे मैने स्वयं उन ही के हस्त लेख मे पढा है। इन पत्रो मे उन्होने दिखलाया है कि ऋषि दयानन्द की आत्मा के परदे मे प्राचीन भारत के पुनरुत्थान की शक्ति भी काम कर रही है। जिस समय पुनरुत्थान आन्दोलन (Renaissance) के समय प्राचीन योरोप की आत्मा सजीव हो उठी थी उस ही प्रकार भारतवर्ष मे आर्यसामाजिक आन्दोलन का उद्देश्य प्राचीन भारत की आत्मा को सजीव बनाना था। ऋषि दयानन्द के आगमन से पहले यह आदर्श केवल पुस्तकों में पाया जाता था। उसका रूप अत्यन्त साहित्यिक हो गया था और उसका प्रचार हमारे विद्यालयो तक ही परिमित था जनसाधारण मे व्यावहारिक रूप से इसका प्रचार नही हुआ था। परन्तु अब स्वयं एक ऋषि हमारी दृष्टि के सन्मुख आ गया जिसने उस प्राचीन आदर्श को ऐसा प्रत्यक्ष कर दिया कि समस्त संसार ने देख लिया। स्वामी दयानन्द के विषय मे यह विचार वास्तव मे सत्य है और मैं इस ही पर अधिक प्रकाश डालने का प्रयत्न करूंगा।

सम्भव है किसी जाति के अतीत मे संग्रह किये हुए आध्यात्मिक विचार कुछ समय के लिए प्रत्यक्ष जीवन से विलुप्त हो जावें परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि हम उन्हे सदा के लिए खो बैठे। वह केवल जातीय आत्मा की अगम्य गहराईयो में डूब जाते है और वही सैकड़ों वर्ष तक सुप्त पड़े रहते हैं। जब जागृति का समय आता है तो इसके साथ-साथ एक अपूर्व उत्तेजना शक्ति का विकास भी होने लगता है जैसे किसी अप्रत्यक्ष शक्ति को जिसकी प्रगति कुछ समय के लिए रोक दी गई हो, अकस्मात् मुक्त कर दिया जावे।

आज हमें ज्ञात है कि भारत का वह प्राचीन समय जिस मे संस्कृत साहित्य, दर्शन-शास्त्र और अन्य विद्याओं की उत्पत्ति हुई कम से कम योरोप के उस प्राचीन समय से कम महत्त्व का न था जिसमे यूनानी सभ्यता और विद्या का डंका बज रहा था और जिसे योरोप कुछ समय के लिए बिल्कुल भूल गया था। विगत तीन शताब्दियों में इतिहास ने भली भांति प्रमाणित कर दिया है कि योरोप की प्राचीन आत्मा की जागृति का पाश्चात्य संसार पर क्या प्रभाव पडा। वास्तव मे आज जिस वस्तु को हम उन्नति कहते है, उसका आरम्भ ही उस समय से हुआ है। भारतवर्ष का पुनरुत्थान मानवीय इतिहास में और भी महत्त्व की घटना समझी जावेगी और प्रत्यक्ष रूप से इसका अनुभव करने के लिए कम से कम तीन या चार शताब्दियों की आवश्यकता होगी। ऋषि दयानन्द ने अपनी दिव्य शक्ति के बल से प्राचीन भारत के अदृष्ट महत्त्व का स्वयं अपनी आत्मा के अन्दर अनुभव कर लिया। उन्होने अपने समस्त जीवन-कार्य की नींव केवल इसी अनुभव पर रक्खी। उनकी संस्था का नाम आर्यसमाज रक्खा गया क्योंकि उनका उद्देश्य आर्य आदर्श को सजीव करना था। उनकी इच्छा थी कि आर्यसमाज का प्रत्येक सदस्य प्राचीन आर्य आदर्श का जीवित दृष्टान्त बन सके।

कभी-कभी यह भी सम्भव होता है कि अतीत को कृत्रिम साधनो से जीवित कर दिया जावे जैसे कि मृतक देह मे बिजली के जोर से कुछ समय के लिए जीवन डाल दिया जाता है। परन्तु स्वा० दयानन्द का उद्देश्य यह नहीं था। उनके आत्मबल ने भारत के प्राचीन समय को केवल जागृत ही नहीं कर दिया बल्कि अर्वाचीन भारतीय जीवन की आवश्यकतानुसार उसकी नई और सजीव रूप मे रचना कर डाली। इसलिए यह न समझना चाहिए कि आर्यसमाज का उद्देश्य केवल पुरानी सभ्यता का अध्ययन करना है। आर्यसमाज ने वर्त्तमान भारत मे विशेषकर पञ्जाब और संयुक्त प्रान्त मे नवीन जीवन का सञ्चार किया है और अपनी शक्ति से हिन्दुधर्म मे एक ऐसी शक्ति की रचना की है जो अपने व्यक्तित्व की भली भांति रक्षा कर सकेगी और जिसे आधुनिक जीवन को यद्यपि वह प्राचीन जीवन से विभिन्न है, अपनाने मे अधिक कठिनता होगी।

अब मैं कुछ विशेष कारण दे चुका हूं जो मुझे

आर्यसमाज सस्था और ऋषि दयानन्द जैसी महानात्मा को अर्वाचीन समय के इतिहास मे उच्च स्थान देने के लिए प्रेरित करते हैं। यह अच्छे प्रकार स्पष्ट है कि ऋषि की महानात्मा मे वह आकर्षण शक्ति और दिव्य गुण थे जिन के कारण उनके अनुयायी उत्साह के ज्वलन्त उदाहरण हैं। मैं यह भी दिखला चुका हूं कि उन्होने अपनी दिव्य प्रतिभा से प्राचीन समय के दिये हुए ज्ञान का द्वार खोल दिया है और भारत की सचित आत्मा को ज्ञान और अनुभव की बहुमूल्य पैतृक सम्पत्ति सहित जागृत करके जन-साधारण मे नवीन जीवन का सञ्चार कर दिया है।

परन्तु इस नवीन जीवन के फूलने फलने के लिए एक और बात की अत्यन्त आवश्यकता थी। इस भय से कि कही अच्छे बीज की उपज न हो क्षेत्र मे से हानि कर कण्टको को साफ करना आवश्यक था। यदि हम योरोप का ध्यान करे तो हमे इस बात का महत्त्व एक अर्वाचीन उदाहरण से अच्छे प्रकार प्रकट हो जावेगा। योरोप मे जागृति के समय अनेक स्थान कण्टको से ऐसे भरे थे कि उनमें नये बीजों का उगना फूलना और फलना नितान्त असम्भव था। योरोप के उत्तरीय देशो मे पुनरुत्थान आन्दोलन (Renasisance movement) को इस लिए विशेष सफलता हुई कि वहाँ रीतिरिवाज और जातिपाँति का अधिक बंधन न था।

इस ही कारण से आर्यसमाज को उत्तरीय भारत मे विशेष सफलता प्राप्त हुई। यहाँ कण्टको का निराकरण सुगमता से हो सका और नवीन बीज को उगने का अच्छा अवसर मिल गया। यह विचारणीय है कि दक्षिण भारत मे बाधाओ का निवारण करना अब तक सामर्थ्य से बाहर रहा है। किन्तु उत्तरीय प्रान्तो मे आर्यसमाज के आन्दोलन की उन्नति और विकास बहुत आसान हो गया है।

आर्यसमाज और उसके प्रवर्त्तक के विषय मे यही बात अत्यन्त महत्वपूर्ण और विचारणीय है। इस में सन्देह नहीं कि आर्यसमाज का आदर्श प्राचीन आदर्श है परन्तु इसकी दृष्टि सदैव धार्मिक और सामाजिक सुधार की ओर रही है। उनका विश्वास है कि मध्यवर्त्ती समय में अनेक कण्टको ने उत्पन्न होकर अच्छे बीजो को उत्पन्न होने और बढने से रोक दिया है। योरोपीय पुनरुत्थान के समय लूथर और एरमसने भी इस ही युक्ति के अवलम्बन से सफलता प्राप्त की थी। उन्होने पुनरुत्थान के आन्दोलन को सुधार आन्दोलन के रूपमे परिणत कर दिया और ऋषि दयानन्द ने भी भारत मे बिल्कुल यही किया है। उनका मूर्तिपूजन को वेदोक्त न मानना, अस्पृश्य अछूतादि वर्णों मे जाति को विछिन्न करने वाली जात-पाँत का अस्वीकार करना। उनका पौराणिक साहित्य को ईश्वरीय और प्रमाण न मानना इन सब बातो ने आर्यसमाज आन्दोलन को वास्तविक सुधार आन्दोलन बना दिया। उन्होने इसे स्वामी विवेकानन्द के नवीन वेदान्त के आन्दोलन से कई महत्त्वपूर्ण बातों मे भिन्न कर दिया। यद्यपि नवीन वेदान्तिक आन्दोलन ने भी अपनी रीति से औदार्य और सुधार का काम किया है परतु यदि इन दोनो आन्दोलनो की तुलना की जावे तो यह कहना उचित होगा कि बगाल आन्दोलन उदारता पर आश्रित है और पश्चिमीय भारत का अर्वाचीन धार्मिक आन्दोलन के सुधार पर ठीक उसी प्रकार जैसे भारत के नेताओ मे से रवीन्द्रनाथ टैगोर अधिक उदार हैं और महात्मा गांधी (जो उस ही प्रान्त मे उत्पन्न हुए है जिसमे कि स्वामी दयानन्द) भाव और आदर्श मे अधिक सुधारक है।

अन्त मे मेरी इच्छा और कामना है कि आर्यसमाज उन्नति के समय में कण्टको का निराकरण अपनी सीमान्तर्गत भी करे और वीरता से इस बीसवी शताब्दी मे उस ही प्रकार से सत्य का अन्वेषण करे जैसे ऋषि दयानन्द ने गत शताब्दी मे किया था।

(स्व०) सी-ऐफ-ऐन्ड्रयूज

धर्म द्वारा शान्ति की उपलब्धि

❀

श्री ज्ञानचन्द
बी० ए०
आर्य सेवक

धर्म के इतिहास में अनेक काले धब्बे विद्यमान् हैं मतान्धता और मत-मतान्तरो की असहिष्णुता, बर्बरता पूर्ण अमानुषिक अत्याचार, जघन्य यातनाएँ, जिहाद और लम्बे युद्ध जिनके परिणाम स्वरूप बडी खून खराबी हुई, धन और जन की अपार क्षति हुई, प्रजा को अनेक कष्ट और यातनाएँ सहन करनी पडी। प्राचीनकला और साहित्य का विनाश हुआ, वैज्ञानिको को सताया गया और ज्ञान एवं आविष्कारो का मार्ग अवरुद्ध किया गया । इसी कारण यदि कुछ व्यक्ति यह कहे कि धर्म के द्वारा शान्ति स्थापित नही की जा सकती तो इस कथन में अतिशयोक्ति नही है।

परन्तु चित्र का उज्ज्वल पक्ष भी है। धार्मिक संस्थानो के द्वारा ज्ञान और संस्कृति का विकास, अन्ध-विश्वासो और सामाजिक बुराइयों के विरुद्ध युद्ध, आत्म-त्याग धर्म-प्रचारको की सेवा-भावना, त्याग एवं बलिदान, मानवीय कष्टों का शमन, सद्गुणो एवं सदाचार की वृद्धि मनुष्य की स्वाभाविक जिज्ञासाओ की संतुष्टि, परलोक की सिद्धि ध्यान एवं परमात्मा की स्तुति, प्रार्थना एवं उपासना के द्वारा आत्मा की उच्चता, शिक्षा और उदाहरण के माध्यम से मानव-समाज की एकता और विश्वबन्धुत्व का प्रचार आदि आदि धर्म के उज्ज्वल पक्ष के परिचायक हैं।

इस प्रकार धर्म-शक्ति का रूप लिए होता है और यदि दुर्भावना की प्रवृत्ति की संतुष्टि के लिए इसका प्रयोग हो तो यह अभिशाप बन जाता है।

परन्तु धर्म के बिना मनुष्य का काम नही चल सकता। पृथ्वी तल पर मानवके प्रादुर्भाव के समय से ही विश्व की पहेली उसके समक्ष रही है। प्रकृति के विविध चमत्कार, मानसिक, और नैतिक समस्याएँ, सामाजिक जटिलताएँ और आध्यात्मिक लालसाएँ ये सब उसके समक्ष उपस्थित रहती हैं। इन सब से वह बच नही सकता।

बुद्धियुक्त पशु होने के कारण ज्ञान विश्वास और आचार धर्म के इन तीन आधार भूत तत्वो का विकास हुआ है।

सम्यक धर्म वा ज्ञान, सत्य विश्वास और सत्य व्यवहार इन तीन पर समस्त समस्याओ का समाधान निर्भर करता है जिनमे विश्व-शान्ति भी सम्मिलित है जो आज की सर्वोपरि समस्या है और जिसने मानव के अस्तित्व तक के लिए खतरा उपस्थित कर रखा है।

वेद की शिक्षा है कि समस्त मनुष्य समाज का एक ही धर्म्म होता है अर्थात् मनुष्य बनना (मनुर्भव) मनुष्य बनने का अभिप्राय है मानवता का चरम विकास—शारीरिक, मानसिक, नैतिक, आध्यात्मिक और सामाजिक दृष्टि से आदर्श मनुष्य बनना। आर्य समाज के छठे नियम मे संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्योद्देश्य बताया है। महर्षि कणाद की परिभाषा के अनुसार धर्म का अर्थ है वे नियम जिनके अनुसार आचरण करने से लोक और परलोक की सिद्धि होती है—यतोऽभ्युदय निःश्रेयस सिद्धिः स धर्मः।

मनुष्य की लौकिक उन्नति के मार्ग में तीन वस्तुएं बाधक होती है—अभाव, अन्याय और अज्ञान। वेद बताते हैं कि मनुष्य का यह धर्म है कि वह कम से कम इन बाधाओं मे से एक के साथ युद्ध करके उसका विनाश कर दे। जो इस दायित्व से बचता है उसे धर्मपरायण व्यक्ति नही कह सकते। जो समाज की धन-सम्पदा मे वृद्धि करके अभाव से लोहा लेता है वह वैश्य कहलाता है। जो अन्याय और अत्याचार को मिटाता और सुव्यवस्था करता है वह क्षत्रिय और जो अज्ञान को मिटाकर प्रकाश का प्रसार करता है वह ब्राह्मण कहलाता है।

आत्मा और परमात्मा का साक्षात्कार करने से आध्यात्मिक आनंद की उपलब्धि होती है।

यस्तु सर्वाणि भूतानि आत्मन्नेवानुपश्यति सर्वभूतेषु चात्मानं ततो न विजुगुप्सिते ॥ यजु ४० । ६ ॥

जो सब मे अपने को और सब को अपने मे देखता है वह सदाचरण से च्युत नही होता।

यस्मिन सर्वाणि भूतानि आत्मैवाभूद्विजानतः
तत्र को मोहः कः शोकऽएकत्वमनुपश्यतः ॥यजु ४०॥७॥

जिसमे सम्यक् ज्ञान से समस्त प्राणी आत्मवत् हो जाते हैं वह शोक और मोह से ऊपर उठ जाता है।

ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथाः मा गृधः कस्यस्विद्धनम् ॥यजु ४०॥१

हम यह अनुभव करे कि संसार का शासक परमात्मा विश्व में ओत प्रोत है। हम उसके दिए हुए प्रसादों का उपभोग करें। हम दूसरों की वस्तु पर मन न ललचाएँ। इस प्रकार जो आत्मा एकत्व को अनुभव करता और विश्व-नियन्ता परमात्मा की आज्ञा का पालन करता है उसे आध्यात्मिक शान्ति प्राप्त होती है।

लौकिक और पारलौकिक उन्नति किस प्रकार हो सकती है? आओ इस प्रश्न पर विचार करे। वेद की आज्ञा है कि यज्ञमय जीवन बनाओ (आयुर्यज्ञेन कल्पताम) यज्ञ का अर्थ है आत्म-त्याग के माध्यम से सब के कल्याण के उच्चतम आदर्श की सिद्धि के लिए समस्त मनुष्यो द्वारा संयुक्त प्रयत्न। यदि समस्त मनुष्य वैदिक आदर्श का अनुसरण करे तो रंग, मत, नस्ल और जातीयता के भेद-भाव मिट जाँय। व्यक्ति के स्वार्थ और व्यष्टि के हित के साथ होने वाले संघर्ष तिरोहित हो जायें भौतिक एवं अभौतिक जगत में शान्ति का साम्राज्य स्थापित हो जाय। तब समस्त विश्व निम्न सुप्रसिद्ध गीत की ध्वनि से प्रतिध्वनित हो उठेगा—

ओ३म् द्यौ शान्तिरन्तरिक्ष ँ शान्तिः पृथ्वी शान्ति रापः शान्ति रोषधय शान्ति वनस्पतयः शान्ति विश्वेदेवा शान्तिः ब्रह्म शान्ति सर्वं ँ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सामा शान्ति रेधि ॥ यजु० ३६ ॥ १ ॥

आकाश में शान्ति हो, पृथ्वी पर शान्ति हो, इन दोनो के मध्य के भाग मे शान्ति हो, जलो मे शांति हो, ओषधियो मे शान्ति हो, वनस्पतियो मे शान्ति हो, समस्त देव हमे शान्ति प्रदान करे। परमात्मा हमे शान्ति देवें। हमारे चहुं ओर शान्ति व्याप्त हो। हम शान्ति प्राप्त करें।

अनमोल मोती

हम एक दूसरे की रक्षा करें। एक साथ मिलकर संसार भोगें। एक साथ मिलकर शक्ति बढावें। हमारे अध्ययन हमे तेजस्वी बनाए। हम आपस में द्वेष न करें। तैति ८-१

आर्यो! दीपावली पर दीक्षा लो

श्री भगवानदेव गुरुकुलीय,

जैनियों का कोई पवित्र दिन था। नगर मे एक बडा भारी जलूस निकाला गया। जैन सम्प्रदाय के स्त्री पुरुषों का उत्साह उस जलूस मे देखने लायक था। तरह-तरह के रंगीन कीमती वस्त्र धारण किये हुए वे लोग सडक पर आगे बढते जा रहे थे। उनके आगे उस सम्प्रदाय के साधु-स्त्री-पुरुष थे। उन साधुओ के त्यागी लिबास को तथा अनुयायियो के रंग-बिरंगी विलासी लबास को देख कर मैं आश्चर्य मे अवश्य पडा, परन्तु ज्यो ही जलूस आगे बढा त्यो ही मैंने एक सुन्दर सजी हुई विक्टोरिया मे एक नव-जवान, खूबसूरत कन्या को देखा। जिसका मुखडा कवि के शब्दों मे लिखो तो चान्द को भी शर्माता था। पूछने पर मुझे बताया गया कि "यह एक करोडपति की एक मात्र कन्या है; जो दीक्षा ले रही है। दीक्षा लेने के पश्चात् यह साधु जीवन बिताएगी और ग्रन्थो का अध्ययन करके उसका प्रचार करेगी।"

इसी प्रकार जैन नवयुवक आदि भी दीक्षा लेते हैं जिन को दीक्षा देते समय असंख्य स्त्री पुरुष बडे उत्साह के साथ इकट्ठे होते हैं और उनका शानदार जलूस निकाला जाता है।

दयानन्द के वीर सैनिक बनने तथा दयानन्द का काम पूरा करने वालो ! दीपावली के पुण्य पवित्र अवसर पर जिस दिन हमारे ऋषि ने मोक्ष पद प्राप्त किया; आप अपने हृदय, घर और समाजो को टटोलो कि आपने अथवा आपके बच्चों ने या आप की समाज मे कितनी संख्या मे लोगो ने दीक्षा लेकर दयानन्द का काम पूरा करने की कोशिश की ?

वास्तव मे आर्यसमाज की वर्तमान स्थिति को देखते हुए आत्मा यही कहता है कि—'आजकल के स्वार्थी आर्य समाजी दयानन्द का काम पूरा—अर्थात् 'समाप्त' या 'खतम' करने बैठे हैं। मैंने कई ऐसे अपने आपको 'आर्य' कहलाने वाले देखे हैं, जो स्वय तो कुछ कर पाते नहीं; अन्य कोई आर्यसमाज की सेवा करता होगा तो उसकी टीका करने को तैयार हो जाते हैं - कि—महर्षि जी ने ऐसा लिखा तैसा लिखा है और यह ऐसा चला रहा है या

कर रहा है आदि ऐसी मनोवृत्ति रखने वालो से मै सिर्फ इतनी प्रार्थना करूँगा कि यदि आप ऋषि के सिद्धान्तो के इतने हामी है और आपकी उम्र ५० वर्ष से ऊपर की है तो, आपको अन्य बाते कहने से पूर्व वानप्रस्थ ले लेना चाहिये। क्योंकि ऋषि ने यह भी तो लिखा है कि "५० वर्ष पूरे होने पर वानप्रस्थ और फिर संन्यास लेकर धर्माचरण करते हुए; धर्म प्रचार तथा प्रभु भक्ति मे अपना मन लगा कर मोक्ष प्राप्ति के लिए प्रयत्न शील रहना चाहिये।"

क्या आप ऋषि के इस सिद्धान्त का पालन करते हैं ? क्या आपने २५ वर्ष पर्यन्त ब्रह्मचर्य पालन करके विद्या अध्ययन किया ? या अपने बच्चो को २५ वर्ष तक ब्रह्मचर्य का पालन कराकर विद्या अध्ययन कराया ? यदि नहीं, तो ऋषि के सिद्धान्तो के ठेकेदार बनकर अन्यो की टीका करना बन्द करें।

कुछ समय पूर्व मथुरा मे "दीक्षा शताब्दी" मनाई गई। लाखो अपने आप को ऋषि 'अनुयायी' और 'आर्य' कहलाने वाले वहाँ इकट्ठे हुए। लाखो रुपये खर्च किये गए। इन पंक्तियो के लेखक को भी उस अवसर को देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। दीक्षा शताब्दी प्रोग्राम की समाप्ति पर जब मैं वापिस अपने निवास स्थान पर लौटा तब मुझ से एक प्रतिष्ठित जैन भाई ने पूछा— 'पंडित जी ! आप इतने दिन कहाँ गए थे ?' मैंने उत्तर दिया—"मथुरा मे दीक्षा शताब्दी थी, वहाँ गया था।' तब उस जैनी महाशय ने जिज्ञासु भावना से पूछा— 'कितने लोगो ने दीक्षा ली ?' यह शब्द सुनकर मेरा मस्तिष्क चकराने लगा कि यह पूछ क्या रहा रहा—और मैं उसे जवाब क्या दूँ !' आखिर मैंने उसे कहा—'मेरे देखने मैं एक ने भी नही।' तब उस जैनी महाशय को बडा आश्चर्य हुआ कि यह कैसे ? दीक्षा शताब्दी मे एक ने भी दीक्षा नही ली !' मैंने उन्हे कहा—हमारे गुरुवर ऋषि दयानन्द सरस्वती ने अपने गुरु के चरणो मे रहकर जब ज्ञान प्राप्त करके दीक्षा ली थी—उसको सौ वर्ष पूरे होने आए थे, इस लिए यह प्रोग्राम रखा गया था।'

मैंने जैनी महाशय को उत्तर तो दे दिया; परन्तु मेरा मन विचार सागर मे डूब गया। आंखो के चारो ओर मुझे—दीक्षा ! दीक्षा !! दीक्षा !!! शब्द दिखाई देने लगा। आत्मा ने कहा—हम लकीर पीटने चले जा रहे है—धीरे-धीरे हमारे अन्दर भी पौराणिको के अनुसार अन्धविश्वास घर करता जा रहा है, हम लकीर के फकीर बनते जा रहे है। जैसे पौराणिक, महापुरुषो की मूर्तियां सामने रख कर अन्धश्रद्धा से उन्हे भगवान् मान कर पूजते है तथा जयन्तियाँ मनाते है उनका सा जीवन अपना बनाने की कोशिश नही करते; यही हालत हमारी बनती जा रही है।

आर्यसमाज की ढोल पीटने वालो ! वैदिक धर्म की जय बोलने वालो ! जब तक आप बौद्ध, जैन तथा नारायण स्वामी सम्प्रदाय के अनुसार सही दीक्षा" लेकर विश्व की विभिन्न भाषाओ को सीखकर ससार के कोने-कोने मे फैल न जाओगे, तब तक न समस्त विश्व आर्य बन सकेगा और न आप दयानन्द का काम पूरा कर सकोगे, न वैदिक धर्म की जय होगी। नारे भले ही लगाते रहो; गीत भले ही गाते रहो। परन्तु होने का कुछ नही।

एक दिन एक आर्यसमाजी घर पर भोजन कर रहा था। बच्चा बीमार था। अचानक उन्हे पता लगा कि पास वाले गाँव मे एक हिन्दू यवन-मत स्वीकार कर रहा है। भोजन को तथा बीमार बच्चे को छोड कर वह चूड़ीदार पाजामा तथा सर पर पगडी बाँधे हुए व्यक्ति उस गाँव की ओर जाने के लिए ट्रेन मे सवार हुए। ट्रेन उस गाँव के छोटे स्टेशन होने के कारण नही रुकी। चलती गाडी मे से वह कूद पडा। दौड कर उस व्यक्ति के घर पर पहुचे जो यवनमत स्वीकार करने के लिए तैयार बैठा था। आते ही उस पगडी पहने हुए व्यक्ति ने उस सज्जन से पूछा— "आपको आर्य (हिन्दू) धर्म मे ऐसी कौन सी कमी अथवा त्रुटि दिखाई दी जो आप यवनमत स्वीकार कर रहे हो? यवनमत स्वीकार करने वाले व्यक्ति ने कहा—यह मैं फिर बताऊंगा, पहले आप यह बताइए कि आपके यह बुरे हाल क्यो है ? कपडे फटे हुए—सारा शरीर घायल—यह सब कुछ क्यो ? मुस्कराकर उसी पगडी वाले ने कहा सुना

था आप यवनमत स्वीकार कर रहे हो तब ट्रेन में बैठ कर आपको समझाने के लिये आ रहा था। ट्रेन स्टेशन छोटा होने के कारण रुकी नहीं। समय हो चला था। इस लिये चलती ट्रेन में से कूद पडा। जिसका यह परिणाम है। यह बात सुनकर यवनमत स्वीकार करने वाले हिन्दू का हृदय पलटा उसने कहा जिस धर्म में आप जैसे जान पर खेलने वाले महान व्यक्ति है उस धर्म को मैं कभी नहीं छोड़ूगा।"

पाठको ! यह और कोई नहीं पगडी पहने हुए धर्म वीर पंडित लेखराम था जिस का एक यवन (मुसलमान) ने विश्वास घात करके खन्जर से खून किया था। इस घटना के पश्चात् सारे शहर पर आर्यसमाज का ऐसा प्रभाव पडा कि वहा थोडे ही दिनो मे एक सुन्दर आर्यसमाज मन्दिर बन गया और वह शहर आर्य समाज का एक गढ बन गया

चाँदनी चौक के चारो ओर संगीनें थी। जन समूह आगे बढने की कोशिश में था। गोरा पल्टन गोलियाँ छोड़ने की तैयारी मे थी। जलूस रुक गया। इतने में एक विशाल काय, तेजस्वी आखों वाला भगवे-वस्त्र धारण किये हुए-एक सन्यासी आगे बढे, छाती के बटन खोलते हुए उस विशाल-काय संन्यासी ने गोरा पल्टन को ललकारा— 'चलाओ गोली।' सन्यासी की गर्जना क्या थी मानो शेर की गर्जना हुई। जैसे जगल मे शेर गर्जना करता है तो छोटे-छोटे जानवर—इधर-उधर जान बचा कर भागते हैं यही हाल सन्यासी की गर्जना से हुआ। चारो ओर सन्नाटा छा गया। गोरा पलटन की संगीनें झुक गई। रास्ता साफ हो गया। जलूस शान के साथ आगे बढ़ा। यही क्रान्तिवीर सन्यासी श्रद्धानन्द था, जिसने गुरुकुल काँगड़ी की स्थापना करके देश को असंख्य देशभक्त नौजवान पैदा करके दिये है, और दे रहा है जिसको एक मतान्ध मुसलमान ने गोली मार कर खून किया था। उस संन्यासी की कर्मवीरता तथा तप के प्रताप के कारण ही आज भारत की राजधानी दिल्ली मे सवासौ से भी अधिक आर्यसमाजें हैं।

जब तक आर्यसमाज मे स्वामी श्रद्धानन्द, पंडित लेखराम, महात्मा हंसराज, लाला लाजपतराय, पं० गुरुदत्त, भाई परमानन्द, नारायण स्वामी, स्वामी दर्शनानन्द, महात्मा आत्माराम, अमृतसरी आदि जैसे त्यागी-वीर, जान पर खेलने वाले, महारथी थे, तब तक आर्यसमाज का बोलबाला रहा। परन्तु आजकल हमारा दिन प्रतिदिन पतन होता जा रहा है। हम अकर्मण्य होते जा रहे हैं। इसका कारण सिर्फ एक है और वह है "पूर्वजों के अनुसार अपना जीवन समाज को समर्पित न करना।" जब से हमने समाज से अपना स्वार्थ साधने की मनोवृत्ति अपनाई है; तब से हमारा तथा समाज का पतन शुरू हुआ है। मैंने ऐसे कई व्यक्ति देखे है जो नेता बनने के लिए अपने आप को आर्यसमाजी कहते है, परन्तु समाज पर मुसीबत आने पर वही व्यक्ति कह देते है,—आर्यसमाज से हमारा कोई सम्बन्ध नहीं है।' ऐसे ढोंगी तथा स्वार्थी आर्यों से मैं इतना ही कहूंगा, याद रखो ! यह मनोवृत्ति न आप को ऊँचा उठा सकेगी और न आपकी समाज को। आप यदि ऊँचा उठना चाहते हो तो अपना जीवन आज ही निर्भय होकर निःस्वार्थ भाव से समाज को अर्पण कर दो और अपने गुरु तथा अन्य पूर्वजो के समान पाखण्ड खण्डनी पताका लेकर धर्मयुद्ध के क्षेत्र मे उतर आओ। अवश्य आप अपने पूर्वजो के समान ऊँचा उठोगे और आप की कीर्ति बढ़ेगी। आप ऊँचा उठोगे तो आपकी समाज अपने आप ऊँचा उठेगी।

तो आर्यो ! आओ आज ऋषि निर्वाण दिवस पर अपना जीवन समाज को अर्पण करने के लिए 'दीक्षा' ले। वह दीक्षा जिससे हम अपना तथा जग का कल्याण कर सकें। जब हम दीक्षा लेकर बौद्ध, भिक्षुओं के अनुसार भूमण्डल पर वैदिक धर्म का प्रचार करने के लिए निकल पड़ेंगे तभी हम वास्तव मे सच्चे दयानन्द के वीर सैनिक कहला सकेंगे। दयानन्द का काम पूरा कर सकेंगे !! विश्व को आर्य बना सकेंगे !!! अन्यथा नहीं।

इसलिए दीपावली पर ऋषि की आत्मा तुम से पुकार पुकार करके कहती है—"आर्यो ! दीक्षा लो ! दीक्षा लो !! दीक्षा लो !!! वैदिक (मानव) धर्म का प्रचार करने के लिए दीक्षा लो।

उप नियमानुशासनम्

(श्री कविराज अमरनाथ वैद्य शास्त्री देहरादून)

आर्यसमाज के १० नियम तो अपरिवर्त्तनीय हैं परन्तु देखना यह है कि आर्यसमाज के कार्यनिर्वाह निमित्त व्यावहारिक व्यवस्था साधक जो उपनियम सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने प्रान्तीय प्र० नि० सभाओं के सहयोग से निर्धारित किए हुए हैं, उन अत्यावश्यक उपनियमों का पालन आर्य समाजों में हो रहा है वा नहीं और यथा समय उनके परिवर्तन, परिवर्द्धन की आवश्यकता प्रतीत हो रही है वा नहीं । अतः सार्वदेशिक सभा का कर्त्तव्य है, इसकी उचित व्यवस्था करे जिससे कि उपनियमों का अनुशासन शिथिल न होने पावे ।

इस समय मेरे हाथ में जो उपनियमावली है, वह वि० सं० २००९ की प्रकाशित (तृतीय संस्करण) है । अर्थात् ९ वर्ष हो गये, इसके प्राक्कथन, में मुद्रित है कि आर्यसमाज के उपनियम ५० वर्ष हुए जब बने थे । यद्यपि उनमें एक उपनियम यह भी था कि वर्ष-वर्ष पीछे विज्ञापन देकर उन्हें संशोधित किया जा सकता है परन्तु इस ओर आर्यसमाजों का ध्यान ही नहीं गया । अब जब आवश्यकताओं ने विवश किया तब इनके संशोधन की ओर सार्वदेशिक सभा का ध्यान गया । उपनियमों के संशोधन के सम्बन्ध में प्रत्येक समाज और प्रान्तीय सभाओं से दो-दो बार सम्मतियाँ मंगाई गयी ।" .... प्रथम अन्तरंग सभा और नैमित्तिक साधारण सभा ने जो संशोधन स्वीकृत किए'''जो कि समस्त आर्य समाजों की सम्मिलित थी वे संशोधित, परिवर्तित हुए उपनियम दि० २६-१-१९३५ को स्वीकृत उपनियम यही है ।

ह० नारायण स्वामी, प्रधान

सार्वदेशिक आ० प्र० सभा, देहली ।

इससे स्पष्ट है कि समय-समय पर यथावश्यकता उप-नियमों का संशोधन, परिवर्त्तन, परिवर्द्धन अवश्य होना चाहिए । अब आवश्यकता प्रतीत हो रही है कि सार्वदेशिक सभा इस ओर अविलम्ब ध्यान देवे क्योंकि वर्तमान समय में अधिकाश आर्यसमाजो मे उप-नियमों का पालन नहीं हो रहा । वार्षिक निर्वाचन के लिए तो सर्वथा अवहेलना ही की जाती है । जीवन के अन्तिम चरण में यह खेद अवश्य है कि अब आर्यसमाज की

आभ्यन्तरीय परिस्थिति उपनियमो, मन्तव्यो एवं सिद्धान्तो के विपरीत होती जा रही है। जब प्रमुख समाजो की दशा खराब हो तो जिले की छोटी समाजो की परिस्थिति और भी विकृत होनी स्वाभाविक ही है मैं। समझता हूँ कि इस प्रकार की उपनियमानुशासन अवहेलना प्राय: आर्यसमाजो मे चल रही है। सौभाग्य से किसी आर्यसमाज के अधिकारी उपनियमो के पालन मे पूरा ध्यान देते होगे। इसके विशेष कारण अपने पक्ष के सदस्यो की सख्या बढाना, किसी विशेष व्यक्ति को सन्तुष्ट करना और अपने अधिकार को सर्वोपरि समझ कर उपनियमो के महत्त्व पर ध्यान न देना, इत्यादि। ऐसी दशा मे अधिकारी तो अपने विधि-विधान हीन कार्य मे सफल हो जाते हैं, परन्तु शनै. २ आर्य समाज की आन्तरिक स्थिति एवं सगठन बिगडता जा रहा है। प्रतिनिधि सभा के जो महोपदेशक समय-समय पर अथवा वार्षिकोत्सवो पर विशेष रूप से पधारते हैं, वे केवल अपना प्रभावशाली भाषण देकर ही विदा हो जाते हैं। उनके पास आर्य समाजो की वैधानिक सगठन स्थिति समझने पूछने निरीक्षण करने का अवसर ही नही होता। इस प्रकार समाजो की परिस्थिति निरन्तर उपनियमानुशासन से विमुख होती जा रही है, तब व्यवस्था कैसे सुधरे, यही विचारणीय है, चिन्तनीय है।

सदाचार और मिथ्याचार

(ख) उपधारा (क) में जो सदाचार की परिभाषा की गई है, उसका पालन न करने वाले सदस्य बढ रहे हैं। उनके विरुद्ध न कुछ कहा जाता है और न वे अपने विकृत आचरण मे सुधार करने को उद्यत होते हैं। अपितु उनके प्रभाव से अधिकारियो को दबना पडता है। ऐसी दशा मे सदाचार की परिभाषा कुण्ठित हो रही है।

उ० नि० ४ (क) के अनुसार आर्य सदस्यों को शतांश शुल्क देने का निर्देश है। इसका पालन ९९ प्रतिशत सदस्य नही कर रहे, किसी समाज का कोई विरला सदस्य ही अपनी आयु का शताश भाग देकर इस उपनियम का पालन करने का श्रेय प्राप्त करता हो। प्राय. अधिकाश सदाचरण शील सदस्य भी साधारणतया अथवा विशेषतया मिथ्याचार का अवलम्बन कर रहे है। प्रत्येक व्यक्ति अपनी आय की स्थिति को समझता हुआ भी शताश शुल्क नही देता, कभी किसी कारण से दे भी नही पाता। ऐसी दशा मे अनायास ही असत्य का व्यवहार दैनिक रूप धारण कर रहा है। अतः इस उपनियम का संशोधन कर यथाशक्ति शुल्क देय कर देना चाहिये जिससे कि मिथ्याचार से उपनियमानुशासन हीनता न होने पावे।

सार्वदेशिक सभा के प्रस्ताव

श्री प्रधान मंत्री जी सार्वदेशिक सभा के आदेश को सार्वदेशिक पत्र मे प्रकाशित कर उपनियम स० ४ का पालन करने का निर्देश किया है। यदि समस्त समाजो मे इसको मानने पालन करने की प्रवृत्ति हो जावे तो उपनियमानुशासन भली प्रकार हो सकेगा।

यद्यपि अब ऐसी स्थिति है कि उपनियमो की व्यवस्था पर पुनः सार्वदेशिक सभा अवश्य ध्यान देवे।

(श्री वैद्य जी की भावना प्रशसनीय है। उपनियमों का अक्षरश: पालन होना चाहिए। आर्य समाज के उपनियमो का सार्वदेशिक सभा द्वारा सशोधन हो रहा है।)

—सम्पादक

—:०—

आवागमन और हजरत इमाम जमाते अहमदिया

श्री बाबू कालीचरण आर्य

(१)

हजरत इमाम साहब ने एक ट्रैक्ट "आवागमन का सिद्धान्त बुद्धि की तुला पर" नाम का लिखा है। उसमे आपने पृष्ठ ३, ४, ५ तथा ६, के आधे तक आवागमन मानने वालो की बात कही। पृष्ठ ७ पर आप ट्रैक्ट मे वैदिक धर्म की धारणाओं के लिये लिखते है, "कि मानव जाति की अवस्था मे जो भेद और अन्तर पाया जाता है, उसका कोई कारण होना चाहिए।" तत्पश्चात् उसका यह कारण बना लेते है कि सब कुछ पिछले कर्मों का परिणाम है, पिछली योनि मे जिसने जैसा कर्म किया है, इस योनि मे उन कर्मों का फल मिलता है।" हजरत साहब कहते हैं कि "यह तो ठीक है मनुष्य जाति की अवस्थाओं मे जो भेद और अन्तर पाया जाता है, उसका कोई कारण होना चाहिये। परन्तु यह किस प्रकार ज्ञात हुआ कि उसका यही कारण है अर्थात आवागमन के फलस्वरूप ही ऐसा होता है। आवागमन की सिद्धि के लिए कोई युक्ति होनी चाहिये। केवल यह सिद्ध कर देना पर्याप्त नही है कि मानव जाति की अवस्थाओ के भेदों का कोई कारण होना चाहिए अपितु यह भी आवश्यक है कि यह सिद्ध किया जाय कि इन भेदों का कारण आवागमन ही है"—

समाधान—मौलाना साहब को यह तो स्वीकार है कि मानव जाति की अवस्थाओ मे भेद है, और अन्तर है और उसका कारण अवश्य होना चाहिए। जो कारण वैदिक धर्म बतलाता है वह आपको स्वीकार नही, परन्तु मौलाना साहब अपना कोई कारण स्पष्ट रीति से उपस्थित नही करते। आपने पृष्ठ ४ पर तीन कारण अनुमान किए हैं और शायद पहले दो कारणो को मौलाना साहब अपने सिद्धान्त के अनुकूल मानते है। उन्ही दो विचारो के सम्बन्ध मे स्वय आपत्ति उठाकर अपना समाधान भी दिया है, जो निम्न प्रकार है:—

पहला कारण जो मौलाना साहब मानते है।

"मनुष्य परमेश्वर की ओर से इस भेद-भाव की अवस्था मे पैदा किया जाता है और यही इसका कारण है"

दूसरा कारण—"अथवा यह कि यह भेद-भाव पैतृक सम्पत्ति के रूप मे मिलते है" इन दोनों कारणो के विरुद्ध आपने जो आपत्ति लिखी है, और उसका समाधान किया है, वह समस्त मनुष्यो के भावी कर्म पर लागू होता है, मौजूदा जन्म के साथ उसका कोई सम्बन्ध नही। आपने एतराज उठाया है कि "यदि परमेश्वर की ओर

से भेद-भाव की अवस्था मे पैदा होना मानेगे या पैतृक सम्पत्ति के रूप मे भेद-भाव का मिलना मानेंगे तो मनुष्य की अपने कर्मो पर जिम्मेवारी नही रहेगी। अर्थात् अपने कर्मों पर अधिकार प्राप्त नहीं रहता क्योकि परमेश्वर की क्रिया अथवा उसके माता पिता की अवस्था उसे अमुक विशेष अवस्था मे चलने के लिए विवश करती है और ऐसी दशा मे वह जो कुछ करता है उसे दण्ड क्यों मिलेगा। जब परमात्मा ने मनुष्य को भला या बुरा बनाया तो उस पर अनुग्रह और दण्ड कैसा।

२. यदि यह मान लिया जाय कि परमात्मा ने ही भेद-भाव की अवस्था मे पैदा किया अथवा पैतृक-सम्पत्ति के रूप में भेद-भाव मिला तो परमेश्वर के न्याय पर यह आरोप लगता है कि उसने मनुष्यो मे ऐसा क्यो अन्तर और भेद रखा ? आत्मा और परमात्मा का सम्बन्ध यह चाहता था कि वह समस्त जनसमाज से साम्य भाव रखते हुए समान व्यवहार करती।

३—यह कह देना कि भेद वा अन्तर परमेश्वर ने यों ही अकारण रखा है, उचित नही, जबकि सृष्टि मे प्रत्येक कार्य विधान सार्थक सकारण है, उसका औचित्य सर्वाङ्गपूर्ण है। अत. किसी बौद्धिक कारण का होना आवश्यक है जो, आवागमन के अतिरिक्त हो

४. जब संसार मे कोई कार्य या कोई बात रहस्य विशेष और परिणाम से खाली नही तब परमात्मा ने जनसमूह को यूं ही जैसा चाहा वैसा बना दिया और उस व्यक्ति का जीवन-निष्फल और परिणाम-शून्य रहा जो प्राकृतिक विधान के विरुद्ध है

मौलाना साहब ने इन चारों आपत्तियों का उत्तर लिखा है, वह बहुत ही विचित्र है —

आपने उपरोक्त चारों आपत्तियों का जो उत्तर लिखा , उसमें आप लिखते हैं "कि यदि किसी मनुष्य के पास कार्य करने के कम साधन हैं, या किसी की परिस्थिति दूसरे की अपेक्षा से कमज़ोर है, तो परमात्मा कमजोर और कम साधन रखने वाले के कर्मों को उस के साधन और दी हुई शक्ति को ध्यान में रखते हुए तोलेगा। अर्थात् यदि किसी अमीर आदमी ने एक हजार रुपया दान दिया है, और किसी गरीब ने एक रुपया दिया है, और यदि एक हजार दान करने वाला मुक्ति का अधिकारी है, तो एक रुपया वाला भी समान रूप से मुक्ति का अधिकारी होगा। इसलिए परमात्मा के न्याय पर कोई एतराज नहीं आता। परमात्मा पर एतराज हो सकता था यदि परमात्मा यह निर्णय करता कि अधिक सत्-कर्म करने वाले को अधिक सफलता मिलेगी और न्यून वाले को न्यून। परन्तु आपने पृष्ठ ८ पर जो कुरान-शरीफ से सूरते-ए-एफ की आयत पेश की है, उस ही मे स्पष्ट लिखा है कि "जिस व्यक्ति के सुकृत्यो का पलडा अधिक भारी होगा, वह सफल हो जायगा" जिसके अर्थ स्पष्ट हैं, जिसका पलडा हल्का होगा वह सफल नही होगा। और इस तरह बहुसुकृत्य—कम सुकृत्य वाले से अच्छा है और कर्मों के आधार पर ही प्रभु अपना फैसला या न्याय करते है। जैसा कि अक्सी कुरान मजीद अज-हज़रत शयखुल-हिन्द मौलाना-महमूद हसन व हज़रत मौलाना शबीर अहमद साहब, उस्मानी, मतबूआ, मदीना प्रेस, बिजनौर से सुफह १६५ पर इस ही आयत का तरजुमा बहुत साफ शब्दों में फरमाया है। "कयामत के दिन सब लोगों के ऐमाल का वजन देखा जायगा, जिनके ऐमाल कल्बिया वह ऐमाल, ज्यादह-वजनी होगे, वह कामयाब हैं, और जिनका वज़न हल्का रहा वह खिसारा मे रहे।" हज़रत शैख साहब फरमाते हैं कि "हर शख्स के अमल वजन के मुआफिक लिखे जाते हैं। आखरत में वह कागज तुलेंगे जिसके नेक काम भारी हुए तो बुराइयों से दर-गुजर हुआ और हल्के हुए तो पकड़ा गया। आयत का तरजुमा—फिर हम उनको अहवाल सुनायेंगे हम अपने इल्म से और हम कहीं गायब न थे और तोल उस दिन ठीक होगी, फिर जिसकी तोलें भारी हुई सो वही हैं निजात पाने वाले और जिसकी तोले हल्की हुई वही हैं, जिन्होंने अपना नुकसान किया।"

जिस आयत को मौलाना साहब ने अपने सबूत में पेश किया वही उनके खिलाफ पड़ती है। इसमे साफ लिखा है कि निजात पाने के लिए सत्कर्म अधिक होगे और जिनके सत्कर्म न होगे या कम होंगे उनको निजात् नहीं मिलेगी। परमात्मा कर्मों के आधार पर ही मनुष्य को

सजा और जजा देना है बिना कर्मों के नहीं। इसलिए आपका फर्माना परमात्मा ने बिना किसी कर्म के मनुष्य को दुनिया मे इतने भेद-भाव के साथ किसी को लूला-लंगडा-अन्धा और किसी को स्वस्थ और किसी को अस्वस्थ और किसी को गरीब और मालदार पैदा किया युक्ति युक्त नहीं है।

इसके अतिरिक्त आपका फरमाना कि मनुष्य को दुनिया मे विभिन्न अवस्थाओ मे पैदा करने से परमात्मा पर कोई आक्षेप नहीं या सिद्धान्त पर कोई आक्षेप नहीं। क्योंकि परमात्मा अवस्था और भेदों को ध्यान मे रखते हुए कर्म फल देता है:—

समाधान—यह आपका समाधान मनुष्य दुनिया मे जब कर्म करने योग्य होता है तब, आगामी कर्मों पर लागू हो सकता है। उनका समाधान आप कर सकते है, यद्यपि यह आपके भी अकीदे के खिलाफ है। परन्तु इसका क्या समाधान है, कि कर्म करने से पहले बच्चा माँ के गर्भ से अन्धा, लूला, लंगड़ा कमजोर कुरूप पैदा हो और दूसरा बच्चा, स्वस्थ, सुन्दर सुडौल पैदा हो और इसका क्या समाधान है, कि एक गरीब के घर मे पैदा हो जहाँ पेट भर रोटी मिलना भी कठिन है और दूसरा राजा के घर पैदा हो जहाँ सारी अवस्थाएँ उत्तम से उत्तम रीति में उपस्थित हो। इस जन्म के कर्म तो कयामत के दिन तोले जायेंगे और उस दिन सज़ा-जज़ा मिलेगी। परन्तु जन्म के अन्धे, लूले, लंगड़े और कंगालों को यहाँ जो कष्ट होता है, यह क्यों? इसका समाधान आपने अपने ट्रैक्ट में अन्त तक कहीं नहीं किया। मैं पूछता हूँ जब आप के एतकाद में कयामत के दिन इन्सान के ऐमालो का फैसला होता है तो कयामत से पहिले दुनिया मे इन्सान को सुख अथवा दुःख क्यों अभी तो मनुष्य के कर्मों का फैसला ही नहीं हुआ है फिर खुदा के बन्दो मे कोई बहुत बडा अमीर इस ही दुनिया मे गरीब क्यों बन जाता है? कोई राजा रंक कोई रंक राजा कैसे बन जाता है? कयामत तोअभी दूर है क्या कारण है कि एक कराह रहा है और उसी समय दूसरा मौज उडा रहा है एक के घर मे शादी की खुशियाँ मनाई जा रही हैं दूसरे के घर मे उसी समय मौत का रंज मनाया जा रहा है। बफर्ज मोहालमान भीलें कि निर्धन का एक पैसा धनवान की बहुत बड़ी सम्पत्ति के समान समझा जायगा जैसा कि आपने पृष्ठ १० पर लिखा है परन्तु यह तो तब समझी जायगी जब कयामत आयेगी परन्तु १ पैसे वाले निर्धन को जो कष्ट धन के अभाव मे है जो आराम धनी को धन से है यह क्यो? क्या यह परमात्मा के न्याय पर जबर्दस्त चोट नहीं है? मौलाना फरमाते हैं कि ठीक है यह एतराज हो सकता है परन्तु इसका आवागमन से कोई सम्बन्ध नहीं। उत्तर—तब सुख दुःख का सम्बन्ध किससे है मौलाना साहब ने स्वयं लिखा है कि दुनिया मे अवस्था भेद एक बुद्धिमान दूसरा दुर्बुद्धि एक मालदार दूसरा गरीब यही तो सुख दुःख के कारण है। आवागमन से इसका सीधा सम्बन्ध है इसका समाधान कुछ नहीं सिवाय इसके कि पूर्व जन्म माना जाय जहाँ से आत्मा कर्म कर के आता है अस्तु मौलाना साहब फरमाते हैं कि यह "सुख-दुःख प्राकृतिक विधानानुसार अवतरित होता है न कि धार्मिक विधानानुसार।" मैं मौलाना साहब से पूछता हूँ कि प्राकृतिक विधान किसका है और धार्मिक विधान किसका है? दोनो का विधाता क्या परमात्मा के अति-रिक्त कोई दूसरा है? यदि नहीं तो वही एतराज कि एक को प्राकृतिक विधान मे कष्ट दूसरे को आराम क्यों?

पुन: मौलाना साहब फरमाते हैं कि यदि किसी गरीब मुसीबत जदा पर आपत्ति आती है तो परमात्मा पर विश्वास रखने से मुसीबत के बदले जब वह परमात्मा से मिलता है तो पाप क्षमा हो जाते हैं। मौलाना साहब जब तकपरमात्मा से नही मिला तब तक तो कष्ट भोगता रहेगा और कैसा अच्छा न्याय है कि पहले तो उसको अधा, लंगडा पैदा किया, कगाल पैदा किया वह दुःख भोगता रहे पश्चात् परमात्मा को वह याद करे उस पर विश्वास करे तब कयामत मे जाकर परमात्मा से मिले उस वक्त उसके गुनाह क्षमा हो। क्यो मौलना साहब जितने दिन दुनिया मे दुख उठाए यह क्यो? इसका कुछ जवाब है? अच्छा एक बात और अगर कोई परमात्मा को याद नही करता, परमात्मा पर विश्वास नही करता, तो दोजख उसी के लिए तो बनी है। अब फरमाइये कि एक इन्सान दोजख मे क्यो गया? बिना कर्मों के या कर्म फल से, यदि कर्म फल से तो किन कर्मो के फल से? वह कर्म कहाँ किए गए जिनसे प्रभावित होकर पुन उसने ऐसे कर्म किये जिनके कारण दोजख मिली बतलाना चाहिए। क्यो परमात्मा ने ऐसा इन्सान कमजोर निर्बुद्धि पैदा किया जिनसे प्रभावित होकर गुनाहगार बना फिर भी दोष परमात्मा पर ही आता है। आप भी मानते है कि कारण जरूर है "क्या है? आपके पास उत्तर नही? क्यो मनुष्य दोजख में जाता है? एक और विचित्र विचार एक सचाई को न मानकर अनेक गलतियाँ होती हैं। मौलाना साहब पृष्ठ ११ पर तहरीर फरमाते हैं कि "यदि आत्मा को परमात्मा कही से पकड कर मनुष्य के शरीर मे डाल देता तो निस्सदेह उसके न्याय पर आक्षेप आता परन्तु आत्मा तो मानवीय शरीर से ही उत्पन्न होती है और पुत्र की आत्मा उसी वीर्य से जन्म लेती है जो पिता से उत्पन्न होता है तो उसमे इन शक्तियों का उद्भूत होना जो पिता मे थी और उसका उद्भूत होकर इन अवस्थाओं का स्वामी होना जो पिता को प्राप्त थी एक प्राकृतिक क्रिया है इसमें कोई अत्याचार नही।" मौलाना साहब कृपा होती यदि आप यह भी लिख देते कि आत्मा का पिता कौन है तो अच्छा था। आपने लिखा है कि "पुत्र पिता के वीर्य से उत्पन्न हुआ अतः पुत्र मे उन शक्तियो का प्रादुर्भाव हुआ जिनसे पुत्र मे पाप करने की शक्ति आई तो वह अपने पिता खुदावंद करीम से आई क्योकि सिवाय खुदा के आत्मा का पिता कौन हो सकता है जबकि आप एक खुदा के सिवाय किसी को मानते ही नही इसके अतिरिक्त जिन भिन्न अवस्थाओ मे मनुष्य पिता द्वारा जन्म दिया जाता है क्या वह सब भिन्न अवस्थाएँ भी खुदा मे थी और हैं क्योंकि खुदा तो अब भी नित्य भिन्न परिस्थियो मे आत्मा को पैदा कर रहा है?

(क्रमशः)

अनमोल मोती

हम दिव्य गुणो से युक्त हो। कानो से अच्छा सुने आँखो से अच्छा देखें। दृढ अंगों और शरीर से निरन्तर भगवान् की स्तुति करते हुए भगवान् की दी हुई आयु प्राप्त करें। —वेद

भाई भाई से द्वेष न करे। बहिन बहिन से द्वेष न करे। हम सब एक चाल वाले हों और एक व्रत होकर भले प्रकार अच्छी वाणी बोलें।

—यजु० अ० ३-३०-३

बच्चों की समस्याएँ

—श्री शरच्चन्द्र पाठक एम० ए० बी० टी०

इस बीसवीं शताब्दी में विज्ञान की अनेक शाखाओं प्रशाखाओं ने प्रत्येक क्षेत्र मे अपनी उपयोगिता प्रमाणित कर दी है। इसी सम्बन्ध मे हमारा ध्यान मनोविज्ञान की ओर खिंच जाता है। यद्यपि मनोविज्ञान का क्षेत्र बहुत विस्तृत है फिर भी बच्चो के व्यवहार शिक्षा और उनकी समस्याओ की दिशा मे इसका कार्य बहुत ही सराहनीय है। साधारण तौर पर एक स्वस्थ व्यक्ति को डाक्टरी सहायता अथवा परामर्श की आवश्यकता नही होती किन्तु विकार-ग्रस्त अवस्था मे स्वास्थ्य विशेषज्ञ की सेवाएँ लाभकारी ही होती है, ठीक यही अवस्था हमारे मस्तिष्क की हैं विशेषतौर पर बच्चों की मनोगुत्थियाँ सुलझाना, उनके व्यवहार का अध्ययन कर उन्हे वांछित मार्ग पर डालना बहुत आवश्यक हो जाता है। इस दिशा मे ससार के विभिन्न मनोविश्लेषको ने बच्चो के बिगड़े हुए मस्तिष्क-सन्तुलन को स्थिर रखने में सहायता की है तथा और अधिक की आशा है। मोटे तौर पर हमारे सामने यही उद्देश्य होता है कि जो बच्चे दुर्भाग्य से किन्ही विशेष परिस्थितियो के कारण अनुशासन हीनता या समाज विरोधी भावो का प्रदर्शन करते है उन्हें मनोवैज्ञानिक उपचार के द्वारा सही मार्ग पर लगा दे। बच्चो की उन दूषित परिस्थितियों एव वातावरण का बारीकी से अध्ययन कर, जिस मे कि उनकी गलत आदतें जन्म लेती हैं, पनपती हैं, उसे स्वस्थ वातावरण में बदलना है इस प्रकार बच्चा अपनी उन परिस्थितियों का अवश्यभावी कुपरिणाम न ग्रहण करे वरन् ग्राह्य को अपना कर अपने व्यक्तित्व का स्वस्थ और सर्वतोमुखी विकास करने मे सफल हो। सौभाग्य से गेस्टाल्टवादी मनोविश्लेषको ने इस दिशा में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है।

बच्चों की बुरी आदतों, अपराध प्रवृत्तियों का यदि बारीकी से अध्ययन किया जाय तो समस्या और समाधान सब कुछ स्पष्ट हो जाता है। श्रीमती Mary buell Sayles ने बच्चों के व्यवहार का सूक्ष्म मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन किया और उनके कोमल शिशुमन की भावात्मक आवश्यकताओं को समझा और कुछ निष्कर्ष निकाले। हीन भावनाओं से पोषित दुखी और निराश बच्चों की, कोमल जीवन वल्ली को प्यार सहानुभूति और ममतारूपी संजीवनी की उतनी ही आवश्यकता है जितनी कि उन्हें अपने शारीरिक स्वास्थ्य के लिए पौष्टिक भोजन की। ठीक इसके विपरीत यदि इन कोमल हृदयी शिशुओं को निरंतर झिड़की लताड़ एवं कटु उपदेशो की कड़ी बौछार सहन करनी पड़े या दैव प्रकोपो से अल्पवय मे ही मां बाप का साया इनके ऊपर मे उठ जाय तो अधिकांशत: वे बच्चे दुखद बाल अपराध वृत्ति के शिकार हो जाते हैं। अत: यह स्पष्ट है कि शुभ-अशुभ सब कुछ वातावरण पर अवलम्बित है।

इस समस्या का समाधान है बच्चो के व्यवहार और उनकी समस्याओं का गहन अध्ययन।

सन् १९३६ में श्रीमती मौन्टेसरी ने बच्चो के स्वभाव का अध्ययन करके एक पुस्तक प्रकाशित की थी उसका

नाम है "शैशवावस्था के रहस्य (The Secrets of Childhood) उसके अन्दर उन्होंने बच्चों के उस भावुक समय के अध्ययन पर जोर दिया है जब कि बच्चों का मस्तिष्क बड़ी तीव्र गति से विकास की सीढ़ियों की ओर उन्मुख रहता है। उस भावात्मक विकास की अवस्था में बच्चे को प्रेम की तीव्र आवश्यकता रहती है। बड़ों के प्यार, दुलार और अविश्वास की छाया में इन नन्हें विरवों का विकास बड़ी अच्छी तरह होता है। किन्तु जब इस नाजुक समय मे उन्हें प्यार और स्नेह युक्त वाणी का सहारा नहीं मिलता तो परिणामतः उनके मस्तिष्क का विकास अपना वांछित मार्ग बदल कर भयंकर दुरावस्था का रूप ग्रहण कर लेता है। ऐसी परिस्थिति में बच्चा हठी, जिद्दी, चिड़ चिड़ा हो जाता है। उसका अंतरमन परिस्थितियों के प्रति विद्रोहात्मक रूप अपना लेता है और व्यवहार की विकृति के सहारे ही चीख चीख कर समाज से अपनी स्वाभाविक आवश्यकता की पूर्ति की मांग करता है और गलत उपायों से अपने आप को सन्तुष्ट करने की विफल चेष्टा करता है किन्तु विश्लेषण वेत्ता इन सब समस्यात्मक व्यवहारों का हल बच्चे की मनोदशा परख कर ढूंढ निकालते हैं।

इसके अतिरिक्त मनोविज्ञान ने एक और रहस्योद्‌घाटन यह किया है कि हमे कभी भी बच्चे पर अपने प्रौढों जैसे जीवन के नैतिक उच्चादर्शों को थोपना नही चाहिये। कुछ व्यक्ति यह चाहते हैं कि हमारा बच्चा अपने शैशव काल मे ही सभ्यता संस्कृति और सदाचार के गुणों से सम्पन्न हो जाय तथा सब प्रकार के आदर्श उसके प्रारम्भिक जीवन में ही प्रतिफलित हो उठें! इस प्रकार के विचार बहुत ही घातक होते हैं। इसका अर्थ तो यह हुआ कि बच्चा अपना बचपन त्याग कर आयु से पहले ही प्रौढ़ मनुष्य हो जाय। इस प्रकार के प्रयोग बच्चों को बर्बाद कर देते हैं, वे कठोर आदेश एवं अनुशासन की चक्की में पिस कर व्यक्तित्व विहीन हो जाते हैं, पग पग पर माँ बाप का सहारा तकते हैं, वे आश्रित हो जाते हैं, तथा उन में हीन भावना उत्पन्न हो जाती है! ऐसी भयावह परिस्थिति से बचने का उपाय है कि जरा धैर्य से काम लें तथा बच्चों के शैशव को ध्यान में रख कर उनकी स्वाभाविक आवश्यकताओं की अपने आदर्शों के सम्मिश्रण से यथाशक्ति पूर्ति करते रहें।

यदि एक ओर बच्चों के प्रति असावधानी और उनकी स्वाभाविक भूख की अतृप्ति घातक है तो दूसरी ओर माँ बाप का अत्यधिक लाड प्यार अनावश्यक प्रशंसा एवं आवश्यकता से अधिक देख रेख भी उतनी ही हानिकारक है। ऐसी अवस्था में ये लाड़ प्यार से पले बच्चे कभी या तो अपने नवजात भाई बहिनों के प्रति प्रेम और सौहार्द की भावना नही रख पाते या स्वयं मां बाप का तिरस्कार करने मे नही चूकते। बच्चे अनुकरणशील होते हैं जैसा वे अपने चारों ओर देखते हैं वैसा ही स्वयं भी करने का प्रयास करते हैं। घर मे बच्चा पिताजी को धूम्रपान का शौक फरमाते देखता है और चोरी छुपे स्वयं भी उसी इच्छा की पूर्ति करता है। इससे भी एक कदम आगे और खराब अवस्था जब आती है जबकि बूढ़े बाबा बच्चो से चिलम भरवाते हैं और जरा दम लगाकर सुलगाने की प्रेरणा देते हैं। परिणामतः बच्चा अल्पायु मे ही इस दुर्गुण का शिकार हो जाता है। इन सब परिस्थितियो से बच्चों को बचाने में बड़ो पर भारी उत्तरदायित्व आ जाता है। उन्हे चाहिए कि वे बच्चो के दैनिक जीवन मे अनुकरणीय आदर्श पेश करें। कभी कभी अपने वैवाहिक जीवन में असफल दम्पति अपना समस्त क्रोध अधाधुंध रूप से बच्चों पर उंडेल देते हैं और उन्हें तबाही के मार्ग पर ले चलने मे सहायता देते हैं।

कभी-कभी ऐसा होता है कि किसी परिवार में बहुत दिनों के पश्चात् बच्चा जन्म लेता है अतएव उसके मांबाप के हृदय में चिर पोषित वात्सल्य की अजस्र धारा बच्चे को अनेक दुर्गुणों एवं कुप्रवृत्तियों के गड्ढों में बहाकर ले जाती हैं। कहीं पर किसी परिवार मे कोई बच्चा एक मात्र सन्तान होने के नाते अनावश्यक लाडप्यार पाकर अनेक बुरी आदतों का शिकार हो जाता है। बहुधा परिवार के सदस्यों के आपसी झगड़े दिन-रात का क्लेश गाली गुफ्तार तथा मार पीट बच्चों के मन मे अनेक कुसंस्कारों की छाप छोड़ उनके आचरण को विकृत कर

(शेष पृष्ठ २२ पर)

प्राप्ति स्वीकार

पुस्तक नाम:—	लेखक नाम	प्रकाशक	पृष्ठ	मूल्य
१—ब्रह्मचर्य के साधन	आचार्य भगवान् देव जी	वैदिक साहित्य सदन २।३१ रूपनगर दिल्ली	५४	।=)
२—वैदिक धर्म परिचय	जगदेवसिंह शास्त्री "सिद्धान्ती"	वैदिक साहित्य सदन	८२	।।=)
३—सुखी जीवन	स्वा० गिरजानन्द सरस्वती "वैदिक पथिक"	संन्यास आश्रम, गाजियाबाद	३२	।-)
४—'तन्मय' कवितावली प्रथम खण्ड	कु० रणजित् "तन्मय"	कु० रणजित् एम० ए० एल-एल० बी० जयपुर	६२	।।)
५—शास्त्रीय-धर्म दिवाकर वा यथार्थ प्रकाश	दण्डी स्वा० रामतीर्थ जी महाराज	पं० अमोलकराम ज्योतिषी, मन्दिर सोनिया पुराना बाजार लुधियाना ।	२००	१।)
६—महर्षि विरजानन्द जी का जीवन-चरित	स्वा० वेदानन्द सरस्वती	वैदिक साहित्य सदन-दिल्ली	१७६	१।।)
७—स्वर्ण सिद्धान्त	ब्र० जगदीशचन्द्र विद्यार्थी विद्यावाचस्पति	आर्य कुमार सभा, किंग्जवे-दिल्ली	२२	२५N.P.
८—वीर शिवाजी	श्री पाद जोशी	वि० वैदिक शोध संस्थान होशियारपुर	२१	६२ ७५N.P.
९—वैदिक भारत में यज्ञ और उसका आध्यात्मिक स्वरूप	मुनि देवराज विद्यावाचस्पति	हरयाणा साहित्य संस्थान गुरुकुल झज्जर (पजाब)	२०८	२)
१०—वैदिक पंच महायज्ञ पद्धति	पं० सत्यपाल शास्त्री, वेद वाचस्पति,	म० प्यारेलाल वेदप्रचारनिधि हापुड़ (मेरठ)	१३६	७५N P.
११—जीवन सन्देश (प्राण-चिकित्सा)	भरतसिंह वैद्य प्राकृतिक चिकित्सक	भरतसिंह वैद्य, प्राकृतिक चिकित्सक सी ३४१ सरोजनी नगर, नई दिल्ली	२५६	३)
१२—अष्टादश पुराण परिशीलन	आचार्य शिव पूजनसिंह कुशवाहा	आयदेव दर्श, बड़ोदा	६६	७५N.P.
१५—सत्यार्थ प्रकाश		वैदिक साहित्य सदन २/३१ रूपनगर, दिल्ली-६	४२८	२)

महुआ डांड जिला पलामू छोटा नागपुर में हमारी भावी प्रचार योजनाएँ

लेखक—
श्री सुखदेव जी शास्त्री

महुआ डांड का स्वरूप और परिचय

महुआ डांड ५२ मील वर्ग क्षेत्र में बसा हुआ एक सुन्दर और सुरम्य वन्य प्रदेश है। कुछ लोगो का कहना है कि इसे आबाद हुए एक हजार वर्ष के लगभग हो गया है। यह क्षत्र रांची से १७० मील की ओर डालटन गंज से ६४ मील की दूरी पर बहुत से वन पर्वत और भयकर जगल पार करने के उपरान्त देखने को मिलता है। यहाँ पहुंचने के लिए एक मार्ग नेत्र हाट होकर भी जाता है। रांची से नेत्र हाट लगभग ९८ मील की दूरी पर है और वहाँ से २९ मील पैदल चल कर महुआ डांड पहुंचा जा सकता है। नेत्रहाट रांची और छोटा नागपुर में जलवायु और प्राकृतिक दृश्यो की दृष्टि से आकर्षक स्थान है। कहा जाता है कि सूर्य देव जी का निकलने और अस्त होने का जितना स्पष्ट और सुन्दर दृश्य नेत्रहाट को देखने को मिलता है उतना कहीं अन्यत्र नहीं मिलता। कवि रवीन्द्र नाथ ठाकुर ने अपनी सुप्रसिद्ध रचना गीताञ्जली का निर्माण इसी सुन्दर स्थान पर किया था।

महुआ डांड की शोभा और आकृति भी कम आकर्षक नहीं है। ओरसा पाठ पर खड़े होकर यदि इस का दृश्य देखा जाय तो इस का स्वरूप एक ऊंचे किनारे वाले गोल कटोरे जैसा बड़ा सुन्दर और प्रिय लगता है। यह ठीक है कि इस के आस-पास में बड़े नगर या छोटे उपनगर नहीं है किन्तु यहाँ के वन वासी प्रतिदिन किसी न किसी स्थान पर लगने वाले पीठ (बाजारो) से अपनी दैनिक आवश्यकता की वस्तुएँ खरीद कर लाते है। बडा नगर महुआ डांड से डालटन गंज निकट पडता है जो ६४ मील की दूरी पर स्थित है। ५२ मील वर्ग क्षेत्र का यह मैदान जिसमें ४० हजार के लगभग आदि वासी जन निवास करते हैं बीच में कुछ ऊंचा चारों ओर समतल अन्तिम किनारो पर ऊंचे ऊंचे गगन चुम्बी पर्वत जो गोलाई में खड़े आसमान से बाते करते हुए अपनी अतीत की कहानी सुना रहे हैं। यहाँ के आदि वासी जो बहु संख्यक ईसाई बना लिये गये हैं मुख्य रूप से कृषि पर जीवन-निर्वाह करते हैं।

यहाँ लगभग सभी वन्य जातियाँ रहती है विशेष रूप से मुन्डा, हो, उरांव नगेसिया, बड़ईक, तुजिया असुर बैगा आदि। इस प्रदेश के नाम करण की भी एक मनोरम कहानी है। कहा जाता है आदि समय यह प्रदेश एक विशाल झील के रूप में था। पहाड़ों की ऊंची-ऊंची चोटियों तक पानी भरा रहता था। इस प्रदेश के पूर्व की ओर एक ऊंचा पर्वत है जिसके विषय में आदि वासी कहते हैं वहाँ कभी शिव (मारंग बोंगा) पार्वती (इतरी बोंगा) ने बहुत दिनों तक तप किया था। उसके निकट वाले पहाड़ पर कोई सुग्गा पक्षी अपना नीड बनाकर रहता था। पानी जब उसके नीड़ तक पहुँचा तब उसने कुछ दूर पर अपने पंजों से पहाड़ की ऊंची चोटी पर मिट्टी को खोदना आरम्भ

किया जिसके फल स्वरूप वहाँ पानी के निकलने का छोटा सा मार्ग बन गया । पुन: शनैः शनै वह मार्ग विशाल मैदान के रूप में बदल गया और सब पानी इस के मार्ग से बाहर निकल जाने के कारण वह विशाल झील घाट के रूप में बदल गई जहाँ से होकर झील का पानी बाहर निकला उस स्थान को आदिवासी आज भी सुग्गा बाँध के नाम से पुकारते हैं । निकटवर्ती वन पर्वतों पर स्थित पक्षियों द्वारा इस मैदान में नाना फल वनस्पति आदि का बीज छोड़ने पर मैदान, जगल के रूप में बदल गया। यहाँ महुआ का वृक्ष बहुत उत्पन्न हुआ और ऊँचे स्थान को यहाँ डाँड कहते हैं क्योकि यहाँ का मैदान बीच में से ऊँचा था इसलिए इस स्थान को सबसे पूर्व निवासियो ने महुआ डांड नाम दिया ।

इस क्षेत्र में सबसे पूर्व मध्य प्रदेश के सरगुजा क्षेत्र से होकर अहीर जन अपने पशुओ को लेकर आये थे । यही इस क्षेत्र के मूल निवासी कहे जाते हैं। कहा जाता है कि शेर शाह सूरी के शासन काल मे मुन्डा उरावों के मूल निवास पर यवनों का दबाव पड़ने के कारण, यह लोग सुरक्षित स्थान समझ कर इधर, इस ओर बढ़े। यहाँ पर इन का पाला अहीरों से पड़ा कि केवल पशु पालन करते थे, से पड़ा; यह नवीन आने वाले पहिले निवासियों से अधिक सगठित युद्ध में कुशल और सख्या में बहुत थे इसलिये यहाँ से अहीरो को बाहर कर स्वयं उस क्षेत्र के स्वामी बन गये । यही वह लोग है जिन्होने यहाँ के भीषण जंगलों को साफ कर यहाँ की भूमि को कृषि योग्य बनाया । यह भूमि कल्लर है । फसल बहुत महनत करने पर भी वर्ष भर निर्वाह करने योग्य अन्न नहीं उत्पन्न कर सकती। यहाँ बार-बार अकाल पड़ता रहता था । यह दशा उन लोगों की थी जिनके पास थोड़ी या बहुत भूमि थी किन्तु बहुत से आदिवासी वह भी थे जिनके पास निर्वाह का कोई साधन नहीं । वह जंगल की सूखी लकड़ियाँ बेचकर जमीन का कान्दा खाकर और जंगल के जानवरों का शिकार कर, जीवन बिताते थे । इस क्षेत्र में आज भी यह बहुधा अन्न-वस्त्र विहीन, कौपीनधारी, दरिद्र नारायण की साक्षात प्रतिमा बने हुए हैं।

एक समय था जब कि यह प्रदेश, वर्तमान सभ्यता, शिक्षा, चिकित्सा, सुरक्षा और अन्य वैज्ञानिक सुख सुविधाओं से विहीन, एक वन्य-प्रदेश के रूप में तथा यातायात के साधनों के अभाव वाला निजस्वरूप में एक अनोखा क्षेत्र रहा था ।

यहाँ के निवासियों को कई बार भीषण अकाल और भयंकर महामारियों का, लगातार शिकार बनना पड़ा था । जब कि यह आपत्ति बेवसी और भयंकर बीमारी तथा भुखमरी का सामना कर रहे थे, उसी समय यहाँ रोमन कैथोलिकमिशन ने अपना कुबेर वाला स्वरूप दिखाकर इन आदि वासियो को अन्न औषधि देकर इनका सर्वस्व जीवन धन इन से छीन इन्हें अपने पूर्वज राम कृष्ण के स्थान पर श्री ईसा के मानस पुत्र बना लिया था । इस ईसाई अभियान को लगभग १०० वर्ष होते है। स्वतन्त्र प्रकृति वाले आदि वासी ईसाइमत के इस मायावी तूफान का बहुत दिनों तक सामना करते रहे किन्तु पादरी टरकन वर्ग ने अपने मोहनी रूप को दिखाकर बहुसंख्यक इन लोगों को ईसाई बना लिया ।

उसके पश्चात् उसके अनुयायियों ने कनवेन्ट चर्च स्कूल, बोर्डिंग, छात्र वृत्ति बिना मूल्य के वस्त्र-भोजन चावल, दूध के पाउडर, मक्खन, बिस्कुट, लेमन जूस-बीज कर्ज में धन और जंगल से लकड़ी काटने व शिकार खेलने की छूट तथा जमीदारों की बेगार से मुक्ति आदि सुविधाएँ दिलाकर आदिवासी जन को ईसाई और इस क्षेत्र को ईसा लैंड बना लिया । विगत सैकड़ों वर्षों में इस क्षेत्र पर ईसाई प्रचारकों ने करोड़ों रुपया व्यय किया और ५०-६० लाख के लगभग की आज भी विशाल सम्पत्ति इन की यहाँ खड़ी अतीत की पाप भरी गाथा गा रही है ।

कुछ वर्ष पूर्व देश से अंग्रेज राज्य की लानत विदा हुई और अपने देश का राज्य स्थापित हुआ किन्तु यह

प्रदेश भी उपेक्षित बना रहा। यहां के भोले-भाले लोग फिर भी यही समझते रहे कि अभी राज्य अंग्रेज का ही है। कुछ वर्ष पूर्व आर्य समाज यहां पहुंचा उसने इस प्रदेश के विषय में सरकार और देश की जनता को बतलाया। चारों ओर से इसके बारे में उत्सुकता बढ़ी। सुदूर प्रदेशों से आर्य समाज के कार्य कर्त्ता यहां पहुंचे और उन्होंने इस प्रदेश के कोने-कोने चप्पे २ छान मारा, यहां की मूल समस्या का अध्ययन किया फिर सरकार और देश की जनता को झकझोर देने वाला जनता आन्दोलन आरम्भ किया। यह निर्भीक और तपस्वी कर्मठ कार्यकर्त्ता शुद्धि-दलितोद्धार ईसाई प्रचार निरोध आदि आर्य समाज की चहुमुखी सभी उपयोगी योजनाओं को ले कर यहां पहुँचे।

आज यहां आर्य समाज के व्यापक जन-आन्दोलन के परिणाम स्वरूप साढ़े तीन हजार आदि वासी शुद्ध होकर अपने पुराने धर्म से आ मिले हैं। यहां सरकार के भी बहुमुखी विकास कार्य आरम्भ हो गये हैं। किन्तु यह इस क्षेत्र का दुर्भाग्य ही कहा जायगा कि सरकारी मशीनरी जो यहां काम करती रही है नितान्त अपवित्र और शिथिल रही है जिसके द्वारा सरकार से प्राप्त अधिकार और इस क्षेत्र के लिए भेजे गये धन का बहुत बेशर्मी और बेदर्दी से उपयोग हुआ है।

फिर भी जहां तक आर्य समाज का सम्बन्ध है यह कहना होगा कि आशा से भी अधिक सन्तोषजनक और प्रशंसनीय सेवा कार्य हुआ है। केवल दो वर्ष की इस छोटी सी अवधि में शुद्धि प्रचार, जन-सेवा तथा लोक-कल्याण के कार्यों से इस क्षेत्र में नव-चेतना का अद्भुत संचार हुआ है।

विगत दो वर्षों के कार्य के प्रभाव से इस क्षेत्र तथा अन्य क्षेत्रों के जो भाई ईसाई मत को छोड़कर अपने पुराने धर्म में सम्मिलित हुए हैं जो कि सैंकड़ों वर्षों से ईसाई बना लिये गये थे अपना पुराना आचार-विचार रीति-रिवाज भूल चुके थे उन्हें पुनः सामाजिक न्याय दिलाने की समुचित व्यवस्था करने का विशाल कार्य हमारे सामने है जिसके अभाव में हमारा यह शुद्धि कार्य सफल नहीं कहा जा सकता।

महुआ डांड क्षेत्र की तात्कालिक

आवश्यकता

महुआ डांड क्षेत्र की तात्कालिक और सर्व प्रथम तथा सबसे प्रमुख आवश्यकता है ५ दयानन्द सेवा आश्रमों के निर्माण की फिर उनके सफल सञ्चालन की। इसलिये इसके बाद वाली दूसरी आवश्यकता है धन और जीवन दान की जिनके द्वारा हमारे सभी भावी कार्य सफल हो सकेंगे। हमारा यह दृढ़ मत है कि इन आश्रमों के निर्माण से हमारा शुद्धि, दलितोद्धार, आदि वासियों की आद्य संस्कृति तथा मौलिक मान्यताओं की रक्षा मनोवैज्ञानिक और ठीक प्रकार से व्यवस्थित रूप में सम्पादित की जा सकेगी। ५ दयानन्द सेवा आश्रमों की निर्माण योजना का क्षेत्र यह ५२ मील का वर्गाकार क्षेत्र है। महुआ डांड की बीच की बस्ती से पूर्व, पश्चिम और दक्षिण १०-१० मील की दूरी पर १०-१० गाँवों के बीच इनका निर्माण होगा एक आश्रम जो इन चारों केन्द्रों को मुख्य रूप से जोड़ने का काम करेगा महुआ डांड की मुख्य बस्ती में संचालित होगा।

हमारा अनुमान है कि एक आश्रम के निर्माण में लगभग १५ सौ रुपया व्यय आयेगा यही इस क्षेत्र की आर्य समाजें होंगी जिनमें एक छोटी सी दैनिक शिशुशाला, औषधालय, क्षेत्र की महिलाओं के लिये शिल्पशाला, सत्संग देने वाला सत्संग भवन और बीच में एक फल फूल वाली सुरम्य वाटिका तथा आश्रम की चार दीवारी। आश्रम बनाने के लिए यहां भूमिदान में अथवा थोड़े मूल्य पर मिल जायगी।

५ आश्रमों के निर्माण में ७॥ साढ़े सात हजार रुपया व्यय आयेगा जिसकी तत्काल आवश्यकता है। दूसरी आवश्यकता हमारे सामने ५ ऐसे सद् गृहस्थ धर्मात्मा प्रचारकों की है जो अपनी पत्नी सहित क्षेत्र में ५ वर्ष तक रहकर जीवन दान दे सकें। ऐसे जो धनदानदेने वाले सद्-गृहस्थ युवा तथा दोनों

प्रमाणित चिकित्सक भी होने आवश्यक हैं। ऐसे सद् गृहस्थ जो ५ वर्ष तक कार्य करने की प्रतिज्ञा करेंगे उन पर ३००) रुपया प्रति मास आनरेरियम के रूप में व्यय किया जा सकेगा। इस क्षेत्रमें वृद्ध रोगी कार्य-मुक्त, पत्नि-रहित और विद्यार्थी गण प्रवेश करने को उत्साहित न हों। इस प्रकार (१५००) रुपया ५ आश्रमों पर प्रतिमास व्यय आयेगा। वार्षिक व्यय का लेखा २० हजार वार्षिक होगा यह हमारा अनुमानित व्यय है।

भारतवर्ष की एक-एक आर्य समाज अपने वार्षिकोत्सव पर ५-५-६-६ हजार रुपया व्यय कर देती है। एक स्थानीय संस्था के सचालन में एक वर्ष की अवधि में ३५-३६ हजार रुपया वार्षिक तक व्यय कर देती है फिर भी वह उतने सुन्दर और अपेक्षित परिणाम उत्पन्न करने मे असमर्थ होती है।

५२ मील के वर्ग क्षेत्र में स्थित महुआ डाड मे जहाँ कि ईसाई मिशन ने ५० लाख से ऊपर की सम्पत्ति लगाकर सैकड़ो वर्षों से करोडों रुपया पानी की तरह बहाया हो वहाँ २५-२६ हजार रुपया का बजट कोई अर्थ नहीं रखता फिर भी हमारा अनुमान है कि इस क्षेत्र की उपरोक्त आवश्यकता की पूर्ति हो जाने पर केवल ५ वर्ष के प्रचार के सुपरिणाम स्वरूप यह हमारे भोले-भाले २५ हजार आदि वासी ईसाई भाई शुद्ध होकर पुनः राम कृष्ण की सन्तान हो भारत माता की सेवा करने को अवश्यमेव अग्रसर हो जायेंगे।

तत्काल चाहिए

५ वैदिक धर्मावलम्बी त्यागी, तपस्वी आदि युवा सन्यासियों की यहाँ महुआ डाँड के लिए तत्काल आवश्यकता है। सन्यासियों का बडा मान तथा उनके प्रति श्रद्धा भी है। फिर भी भिक्षा प्राप्त कर यहाँ जीवन निर्वाह चलाने के लिए उपयुक्त वातावरण नहीं है क्योंकि जिन लोगो में कार्य करना है उन्हें स्वयं को कभी-कभी दोनों समय भोजन नही मिल पाता। अतः भोजन निर्वाह मात्र का प्रबन्ध समिति कर देगी जिससे उनको प्रचार कार्य में बाधा न पडे। अतः दानी महानुभावों से धनदान को सद् गृहस्थ जनो से कम से कम ५-५ और उत्तम आर्य—सन्यासियों से कम से कम १०-१० वर्ष के जीवन दान की भाव भरी अपील करता हूं। मुझे आशा है कि इस दिशा में वैदिक धर्म तथा आर्य समाज का प्रचार और प्रसार करने तथा अपने दीन-हीन साक्षात् दरिद्र नारायण की सेवा और उद्धार करने के लिए अपने-अपने सात्विक दान से सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की इस विभाग के लिये झोली भर देगे जिससे आर्य समाज इस क्षेत्र में प्रभावशाली रूप में प्रवेश कर बेबस असहाय और धर्म संकट में पड़े भाइयों का उद्धार कर सके।

(श्री शास्त्री जी सार्वदेशिक सभा की ओर से छोटा नागपुर के क्षेत्रों में ईसाई प्रचार निरोध का कार्य कर रहे हैं। उनका केन्द्र आर्य समाज राची है। आशा है जनता इस दिशा में अपने कर्त्तव्य का पालन करेगी ?)

सम्पादक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

का

५३ वां वार्षिक वृत्तान्त

(गतांक से आगे)

ब्रह्मदेश—

ब्रह्मदेश के आर्य भाइयों मुख्यतः आर्य प्रतिनिधि सभा के अधिकारियों की देर से यह मांग थी कि कोई सुयोग्य आर्य विद्वान वा संन्यासी महानुभाव उनके देश में जाकर प्रचार कार्य करें भले ही कुछ समय पर्यन्त वहां रहे। उक्त सभा के उत्साही मंत्री श्री डा० ओ३म् प्रकाश जी ने पत्र व्यवहार द्वारा और मिलकर वहां की स्थिति सभा के अधिकारियों को बताई और शीघ्र से शीघ्र किन्हीं महानुभाव को भेजने का अनुरोध किया। सभा ने श्री स्वामी ध्रुवानन्द जी महाराज से प्रार्थना की और उन्होंने स्वीकार करली परन्तु इसी बीच में उनका मौरीशस का प्रोग्राम बन गया और वे वहां न जा सके। प्रसन्नता है कि श्री महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज ने इस कर्त्तव्य का निर्वाह किया। यह सभा श्री स्वामी जी के प्रति आभार प्रदर्शित करती है। श्री स्वामी जी १५ अक्टूबर को रंगून पधारे और २० मार्च तक वहां रहे। स्थान-स्थान पर भ्रमण करके वैदिक संदेश प्रचारित किया। श्री स्वामी जी की इस यात्रा का बहुत अच्छा प्रभाव रहा। यात्रा का पूर्ण वर्णन इस प्रकार है:—

श्री पूज्यवर स्वामी आनन्द स्वामी सरस्वती जी अक्टूबर १५ ता० को रंगून हवाई अड्डे पर पधारे। स्वागत के लिए फूलमाला आदि के साथ लगभग १५० आर्य हिन्दू भाई-बहिन हवाई अड्डे पर उपस्थित थे। आर्य समाज रंगून के प्रधान काशीनाथ राय, मन्त्री श्री धर्मवीर जी, श्री डा० ओ३म प्रकाश जी एम० बी० बी० एस, श्री डा० सुन्दर लाल लूम्बा, श्रीमती लूम्बा, श्रीमती सत्यभाषिणी देवी साहित्यरत्न, श्रीमती सावित्री तथा अनेक आर्य देवियां थी। आर्य गणमान्य व्यक्तियों में श्री बी० एल० त्रिखा, श्री चोपड़ा, श्री चन्द्रदत्त जी, श्री प्रसिद्ध नारायण पाठक, श्री ओ० पी० शोरी आदि मुख्य थे।

१२ मील का मार्ग तय कर स्वामी जी आर्य समाज मन्दिर में पधारे। वहीं सब लोगों ने उनके दर्शन किये तथा स्वामी जी ने सबका परिचय प्राप्त किया। तत्पश्चात् स्वामी जी को आर्य समाज मन्दिर में ही एक विशेष कमरे में स्थान दिया गया। प्रतिदिन रात्रि को ठीक ८ से ९ बजे तक स्वामी जी का प्रवचन मनुष्य जीवन गाथा' पर होता रहा। प्रवचन से पहले आधा घन्टे तक कीर्तन होता था जिसमें श्री गोपीराम जी तथा अन्य गीत व भजनकर्त्ता मुख्यतया भाग लेकर जनता को श्रद्धा विभोर कर देते रहे। समाज का हाल तथा गैलरी अच्छी तरह भर जाती रही। लगभग ६ सौ नर-नारियां भक्ति और श्रद्धा के साथ स्वामी जी से धर्म लाभ उठाते रहे। दीवाली तथा ऋषि निर्वाण उत्सव पर स्वामी जी का विशेष प्रवचन हुआ तथा रविवार ता० १९ को आर्य समाज के सत्संग में भी वेदोपदेश किया। इसके अलावा स्वामी जी प्रतिदिन भक्तों को दर्शन देते रहे तथा आयुर्वैदिक औषधि वितरण करते; शंका समाधान तथा धर्म सम्बन्धी वार्तालाप भी करते रहे। भक्त स्त्री पुरुषों का तांता दिन भर लगा रहता। बच्चे भी प्रेम से स्वामी जी

के कृपा भाजन बने रहे। इतना ही नहीं कई रोगियों को स्वामी जी ने योग द्वारा लाभ भी पहुँचाया।

१५ दिन तक रंगून में व्याख्यान हुए। इसी में एक दिन गुरु-द्वारा मे गुरु नानक जन्म दिवस पर तथा डी० ए० वी० स्कूल मे भी बच्चों को उपदेश दिया। तिनानजो तथा कमायुट कस्बे रंगून से ७-८ मील की दूरी पर है। एक एक दिन इन दोनो स्थानो पर स्वामी जी ने अमृत वर्षा की। तिनानजों मे गुजराती तथा यू० पी० के भाईयो ने कमायुट मे बँगाली भाईयों ने विशेष रूप से कार्यक्रम में भाग लिया। एक दिन प्रान्तीय ब्राह्मण महा-सभा की ओर से गान्धी मेमोरियल हाल में प्रवचन हुआ जिसमे लगभग एक हजार हिन्दू भाई उपस्थित थे।

जियावाड़ी

रंगून के बाद १४० मील रेल यात्रा कर स्वामी जी ३ दिन तक जियावाडी मे प्रचार के लिए पधारे। रंगून आर्य समाज के मन्त्री श्री धर्मवीर जी प्रचारक श्री चन्द्रदत्त जी, श्री रघुनाथ जी तथा रघुनन्दन जी भी आपके साथ जियावाडी पहुँचे।

जियावाडी क्षेत्र मे २५००० बिहार प्रान्त के भारतीय बसते हैं। ये किसान हैं। इन सीधे-साधे भाईयो ने अति श्रद्धा तथा प्रेम से स्वामी जी का फूल आदि से हार्दिक स्वागत किया तथा प्रतिदिन दोपहर के बाद ३-४ बजे तक प्रवचन श्रवण किया। सायंकाल ज्ञान गोष्ठी भी होती रही। स्वामी जी बस्ती-बस्ती घूम-घूम कर उन लोगों को जागृत करते रहे। जियावाडी स्कूल मे भी स्वामी जी ने विद्यार्थियों को अपने विद्यालय की उन्नति, विद्याध्ययन तथा सच्चरित्रता पर बल एवं धर्मनिष्ठा पर जोर दिया। माण्डले समाज के मन्त्री श्री कृष्णलाल जी वर्मा, श्री रामलाल जी गुनाटी स्वागतार्थ जियावाडी ही पहुँच गए एव स्वामी जी के साथ रेल द्वारा माण्डले प्रातः ६ बजे पहुँचे।

माण्डले

शहर रंगून से ४०० मील उत्तर की ओर है। वहाँ आर्य हिन्दू भाईयों ने स्वागत के लिए जलूस निकाला ४० मोटरों व जीपों में आरूढ़ होकर शहर के विभिन्न मार्गों से होते हुए आर्य समाज मन्दिर पहुँचे। माण्डले मे १२ दिन तक "जीवन कैसे बिताएँ" विषय पर व्याख्यान हुए। दिन का भोजन एक २ आर्य परिवार के घर पर प्रीति भोज के रूप मे होता था। प्रीति भोज में लगभग २००-२५० व्यक्ति शामिल होते रहे। व्याख्यान मे ५००-६०० की उपस्थिति होती रही। इसी बीच स्वामी जी ने यहाँ के विशिष्ट फुंगियो से भेंट की, तथा उनसे उनके धर्म की चर्चा की। २५ नवम्बर सांय ३॥ बजे से १ दिसम्बर प्रातः तक एकान्त मे नायिकता धर्म स्थान मे मौन व्रत लिया। इन दिनो स्वामी जी ने किसी व्यक्ति से बात-चीत करना तथा देखना भी त्याग दिया। अकेले मे रहते; एक निर्दिष्ट स्थान पर नियत समय तक भोजन रख दिया जाता था। कुछ समय के पश्चात् स्वामी जी भोजन ले कर स्वयं खा लेते थे।

लाश्यो

२ तथा ३ दिसम्बर को माण्डले गुरुद्वारे मे उपदेश दिये तथा ६ दिसम्बर ६० को हवाई जहाज द्वारा लाश्यो पहुँचे। लाश्यो माण्डले से ८० मील है तथा शान स्टेट का एक मुख्य नगर और चीन-बर्मा व्यापार का मुख्य केन्द्र है। लाश्यो के हवाई अड्डे पर लाश्यो के हिन्दू आर्य ३२ जीप कारों के जलूस मे स्वामी जी को शहर मे ले गए। दैनिक एक घंटे कथा होती रही। उपस्थिति ५०० के लगभग होती रही। यहाँ के आर्य बन्धुओ ने आर्य समाज का नया भवन बनाने का निश्चय किया तथा स्वामी जी के हाथों शिलान्यास कराया एवम् ११ हजार रुपया थोडे मिनटों में ही एकत्र कर लिया। १५ ता० तक कथा करके १६ के दिन मोगोक के लिए प्रस्थान किया। मोगोक का रास्ता कष्ट साध्य है। माडले मे थवेचिन तक इरावदी नदी में स्टीम बोट द्वारा जाना पडता है। एक रात रास्ते मे ही बितानी पड़ती है तथा दूसरी रात थवेचिन में रहकर प्रातः मोटर द्वारा ६० मील का पहाडी रास्ता मोगोक तक ले जाता है।

स्वामी जी सायंकाल मोगोक पहुँचे। शहर के १४ मील इधर ही उनके स्वागतार्थ जनता की भीड थी।

इसमें गोरखे नेपाली, शान, पंजाबी, उत्तर प्रदेश आदि के भाई सब सम्मिलित थे। चालीस मोटरो को फूलो से सजाकर स्वागत करते हुए स्वामी जी को ४० जीप कारो के साथ नगर मे ले गये। स्वामी जी ने कुछ १० मिनट वहाँ प्रवचन द्वारा जनता को लाभान्वित किया। शहर से दूर सुरम्य गुफा मे एक चीनी बौद्ध साधु रहता है। स्वामी जी उनसे भी मिले। उसे बर्मी सत्यार्थ प्रकाश की एक प्रति भेंट की।

पुनः मांडले

मौगोक सभा समाप्त कर स्वामी जी २७ ता० को माण्डले पहुँच गये। माण्डले मे आर्य सम्मेलन ३१ दिसम्बर तथा पहली जनवरी ६१ को था। इसमे १३ जगहो से आर्य भाई पधारे थे। सब के रहने व खाने आदि का प्रबन्ध माण्डले के भाईयो ने बड़े प्रेम से किया। तीनो दिन सम्मिलित भोजन हुआ। कभी किसी भाई के घर कभी किसी भाई के घर। इस सम्मेलन मे अनेक महत्वपूर्ण प्रस्ताव पारित हुए। स्वामी जी ने सम्मेलन मे पूर्ण रूप से भाग लिया।

श्वेबो

ता० ७ से १० तक स्वामी जी का व्याख्यान हुआ। प्रतिदिन ठाकुरवाडी मे सांयकाल प्रवचन होता रहा। दिन में गुरुद्वारा, आर्य समाज, डी. ए. वी. स्कूल मे भी आध घन्टे के लगभग व्याख्यान हुए। व्याख्यान के विषय— ईश्वर विश्वास, आत्म विश्वास, और भ्रातृ प्रेम थे। श्वेबो में वेङ सयाडो नामक बौद्ध भिक्षु मोनी है, स्वामी जी ने इन से योग चर्चा की। एक प्रति बर्मी सत्यार्थ-प्रकाश की भेंट की तथा एक तेङ्गा (बौद्ध भिक्षुओ के धारण करने का गेरूआ बस्त्र) भी प्रदान किया।

मनेवा

१२-१-६१ को मनेवा पहुँचे। यह नगर माण्डले से उत्तर पश्चिम मे है। आर्य नर-नारियों ने फूल मालाओं से खूब स्वागत किया। यहाँ भी भिक्षु उकुमा सयाडो से मिले तथा पुनर्जन्म, आत्मा, चित्तवृत्ति की साधना आदि विषयों पर वार्तालाप किया। दूसरे दिन मोन्ये सयाडो (आयु ८६ वर्ष) से मिले। बर्मी सत्यार्थप्रकाश की एक प्रति भेंट की तथा ऋषि दयानन्द के बारे मे बताया। सयाडो ने प्रसन्नता प्रकट की तथा बदले में मोन्हेकया के इतिहास की पुस्तक भेंट की।

मोहियान

मनेवा के कुछ दिन बाद माण्डले रहकर १८-१-६१ को मोहियान पहुंचे। इसी बीच मेम्यो घूमकर प्रचार कर आये। मोहियान स्टेशन पर आपका सैकडो भारतीयो तथा बर्मी और शान लोगों ने भव्य स्वागत किया। स्वामी जी पर "स्वर्ण छत्र" की छाया की गई और शहर में जलूस निकाला गया। ठाकुरवाडी मे उपदेश हुआ जिसका बर्मी अनुवाद भी सुनाया गया, बर्मी लोग भी हाथ जोडकर बैठे रहे। व्याख्यान का विषय था 'मनुष्य चोला क्यो मिलता तथा निर्वाण कैसे प्राप्त होता है?' श्री भगतसिंह सुन्दर, प्राञ्जल बर्मी मे अनुवाद करते थे। स्वामी जी ने वहाँ स्कूल के अभाव पर खेद प्रकट करते हुए एक पाठशाला की आवश्यकता बतलाई कि अपने बाद बच्चे अपनी सस्कृति और सभ्यता को कैसे जानेगे। उनकी शिक्षा का माध्यम तो बर्मी है। फलतः उसी समय हिन्दी पाठशाला बनाने का निश्चय हो गया।

मचीना

१८-१९ मोहियान रहकर २० को सांय मचीना रेल से पहुँचे। मचीना में श्री ब्रह्मदत्त जी एडवोकेट के गृह पर स्वामी जी तथा उनके साथ जो ७ अन्य सज्जन माण्डले से गये थे निवास किया। ७॥ बजे से ९ बजे तक रात्रि में स्वामी जी का व्याख्यान 'आज की बिगडी दुनिया में किस प्रकार रहना चाहिये' विषय पर हुआ। भारतीय स्कूल के हाल मे यह व्याख्यान माला ३ दिन तक चलती रही। उपस्थिति ३०० के लगभग होती रही। सिक्ख हिन्दू व गोरखा भाई अच्छी सख्या में थे। श्री ब्रह्मदत्त

जी एडवोकेट श्री पारदेवसिंह जी, श्री चरण दास जी आदि का उत्साह सराहनीय है ! आर्य समाज के साप्ताहिक सत्सग पारिवारिक सम्मेलन तथा ठाकुरवाडी मे महिला सघ द्वारा आयोजित सत्सग मे भी स्वामी जी ने उपदेश दिया।

भामो

ता० २५ जनवरी को स्वामी जी मोटर द्वारा भामो पहुँचे। भामो इरावदी नदी पर बसा शहर है। चीन से बहुत निकट है। रगून से ७०० मील उत्तर मे है। इस नदी मे भामो शहर तक स्टीम बोट चल सकते है। भामो मे भारतीय जनता बहुत थोड़ी है। रामजानकी मन्दिर के प्रांगण मे कथा एक सप्ताह तक हुई। उपस्थिति १५० तक होती रही। २९ ता० को विश्वशान्ति गायत्री महायज्ञ की २५००० आहुतियां दी गई तथा एक भोज हुआ जिसमे पाँच सहस्र व्यक्तियों ने जाति के भेद भूल कर भोजन पाया।

कथा

३० को स्वामी जी कथा पहुँचे। वह शहर इरावदी नदी पर भामो से ५० मील दक्षिण मे है। यहाँ दो दिन तक कथा 'गायत्री के महत्त्व' पर हुई। २ फरवरी को नदी द्वारा ही माण्डले पहुच गए। ३ फरवरी से १५ तक माण्डले मे व्याख्यान करते रहे।

टौंजी

माण्डले से हवाई जहाज द्वारा टौंजी पहुँचे। हे हो के हवाई अड्डे पर स्वागत के लिए भीड इकट्ठी हो गई थी। श्री सरदार जसवतसिंह जी के निवास स्थान "नानक कुटिया" मे उतारा गया। १० दिन तक मानव जीवन की सफलता" पर कथा सत्यनारायण मन्दिर मे हुई। उपस्थिति ४००-५०० होती रही। टौंजी गांधी मेमोरियल हाई स्कूल मे स्वामी जी का भाषण हुआ तथा वहाँ पर उन्हे अभिनन्दन पत्र दिया गया। २६-२-६१ को प्रातःकाल गुरुद्वारे मे कथा कहकर दोपहर १ बजे कलो पहुँचे।

कलो

कलो शहर टौंजी से कोई २० मील है। स्थानीय आर्य समाज मन्दिर मे ठहरने की व्यवस्था की गई। सांय ४।। बजे समाज के साप्ताहिक सत्सग मे व्याख्यान हुआ। सायकाल ८-९ बजे तक स्थानीय हाई स्कूल मे "ईश्वर विश्वासी बन" विषय पर कथा हुई। उपस्थिति ३०० के लगभग थी। कलो की यात्रा समाप्त कर श्री पूज्य स्वामी जी महाराज २८ को माण्डले पहुचे।

पुनः मोगोक

३ मार्च को मौन व्रत के लिए मोगोक वायुयान द्वारा प्रस्थान किया। ४ मार्च प्रातः ९ बजे से मोगोक शहर से एक हजार फुट की ऊँचाई पर नवनिर्मित कुटिया मे आठ दिन तक मौनव्रत रहा। ता० ११-३-६१ को प्रातःकाल ७ बजे से एक बृहत् सत्सग का आयोजन कर कुटिया के सामने वेद मन्त्रो के द्वारा हवन यज्ञ हुआ पश्चात् स्वामी जी ने १०८ गायत्री मन्त्रो की आहुतियो के बाद अपना मौनव्रत खोल पूर्णाहुति स्वतः कराई। इसके बाद आर्य समाज मन्दिर मे प्रीति भोज हुआ जिसमे १२०० नर नारियो ने भाग लिया। १२ व १३ को मोगोक मे अमृत वर्षा कर १४ को वायुयान द्वारा माण्डले पहुँचे। १५ ता० माण्डले नगर मे बृहत् प्रीति भोजन की व्यवस्था थी जिसमे शहर के ३-४ हजार भाई-बहिनो ने भोजन ग्रहण किया। इस यात्रा मे श्री चन्द्रदत्त जी साहित्यरत्न स्वामी जी के साथ रहे। १८ मार्च १९६१ को पुनः रगून पधारे तथा धर्मोपदेश का क्रम आरम्भ किया। १९ को प्रातः आ० स० के सत्सग मे १०८ गायत्री की आहुतियो से उपदेश क्रम आरम्भ किया।

सायंकाल ८-९ तक उपनिषद तथा वेदो के आधार पर मनुष्य जीवन की समस्याओ का "समाधान" कथा हुई।

बैंकोक

आर्य समाज बैंकोक (स्याम) का अपना मन्दिर है जिसकी लागत लगभग १। लाख रुपया है। समाज मन्दिर

मे एक पुस्तकालय है जिसमे लगभग ३०००) रु० की पुस्तकें है। इस समाज की स्थापना १६२० मे हुई थी। यह समाज सार्वदेशिक सभा को प्रति वर्ष १००) आर्य समाज स्थापना दिवस के अवसर पर वेद प्रचारार्थ देता है। सभा को ईसाई प्रचार निरोध कार्यार्थ २५) मासिक सहायता देता रहा है इस वर्ष उक्त समाज ने लगभग १००० ट्रैक्ट वितरित किए। आर्य समाज मे साप्ताहिक सत्सग नियम से होता है और आर्य पर्व समारोह पूर्वक मनाए जाते हैं। इस समाज के सभासद और अधिकारी बड़े उत्साही और कर्मठ हैं। सभा की स्वर्ण जयन्ती निधि के लिए भी उक्त समाज ने एक बड़ी राशि भेजने का उपक्रम किया हुआ है।

सिंगापुर

दक्षिण पूर्व एशिया के विख्यात बंदरगाह सिंगापुर में अपना समाज है। समाज की अपनी भूमि है और समाज मन्दिर तथा डी० ए० वी० हाई स्कूल के भवन निर्माण का आयोजन हो रहा है। समाज का वार्षिकोत्सव और ऋषि निर्वाणोत्सव भारतीय उच्चायुक्त की अध्यक्षता मे मनाया गया जिसमे बड़े-बड़े राजनीतिज्ञो विद्वानों अधिकारियों साहित्यकारो तथा साधुजनो के वैदिक धर्म पर भाषण हुए जिनमे सर्व श्री स्वामी प्रेमानन्द भास्करानन्द, श्री यशपाल और श्री विष्णु प्रभाकर के नाम उल्लेखनीय है। प्रति रविवार को साप्ताहिक सत्सग होता है और मास के अन्त मे बृहत रूप मे विशेष आयोजन के साथ वैदिक सत्सग होता है।

सिंगापुर के महत्त्व को दृष्टि में रखते हुए समाज को सुदृढ करने की विशेष आवश्यकता है। सभा का इस ओर विशेष ध्यान है।

ईसाई प्रचार निरोध आंदोलन

इस वर्ष भी ईसाई प्रचार निरोध आन्दोलन इस सभा की प्रगतियो का मुख्य अंग रहा। २६-६-६० की अन्तरग सभा ने इस कार्य के सचालन के निमित्त निम्नलिखित समिति नियुक्त की थी—

१. प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा।
२. मन्त्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा (संयोजक)।
३. प्रधान अखिल भारतीय श्रद्धानन्द ट्रस्ट दिल्ली।
४. मन्त्री अखिल भारतीय श्रद्धानन्द ट्रस्ट दिल्ली।
५. श्री पं० जनार्दन भट्ट संयुक्त मन्त्री अखिल भारतीय आर्य (हिन्दू) धर्म सेवा सघ दिल्ली।
६. प्रधान भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा।
७. मन्त्री भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा।
८. श्री बटकृष्ण जी वर्मन।
९. श्री प० राजबहादुर जी।
१०. श्री आचार्य रामानन्द जी शास्त्री।
११. श्री आचार्य राजेन्द्र नाथ जी।
१२. श्री ला० हंसराज जी गुप्त।
१३. श्री बा० कालीचरण जी आर्य।
१४. श्री प्रो० रामसिंह जी एम० ए०
१५. श्री भारत भूषण जी त्यागी।
१६. श्री स्वामी दिव्यानन्द जी
१७. श्री नरदेव जी स्नातक

श्रद्धानन्द ट्रस्ट ने इस कार्य का सहायतार्थ इस सभा को ३५००) प्रदान किए इसके लिए सभा ट्रस्ट की आभारी है।

इस वर्ष भी छोटा नागपुर बांसवाड़ा (राजस्थान) उड़ीसा और नैपाल मे कार्य होता रहा है।

छोटा नागपुर मे १५ उपदेशक कार्य कर रहे है जिनमे ३ उपदेशक इस तरफ से गए हुए हैं और १२ उपदेशक उसी क्षेत्र के हैं।

छोटा नागपुर मे महुआ डांड हजारी बाग, रांची और सिमडेगा इन ४ केन्द्रो से कार्य होता है। महुआ डाड केन्द्र मे श्री रोहन केरकेटा तथा जीतूराम जी हजारी बाग मे भूपनारायण सिंह जी, सिमडेगा मे श्री पं० हरि शरण जी तथा राची केन्द्र मे श्री सुखदेव जी शास्त्री तथा श्री पं० कबिराम जी की देख-रेख मे कार्य होता रहा है। वैतनिक उपदेशकों के अतिरिक्त अनेक अवैतनिक उपदेशकों ने कार्य मे सहयोग दिया।

छोटा नागपुर में इस समय तक ६७५८ शुद्धियां हो चुकी हैं।

इस वर्ष इस क्षेत्र का मुख्य कार्य श्री ओ३म् प्रकाश जी त्यागी तथा श्री सुखदेव जी शास्त्री द्वारा तथा उनके निरीक्षण मे सम्पन्न हुआ। श्री त्यागी जी १ जुलाई १९६० से त्याग पत्र देकर सभा की सर्विस से अलग हो गए। २५-६-६० की अन्तरग बैठक में उनका त्याग पत्र स्वीकृत हुआ। इसके पश्चात् वर्ष के अन्त तक श्री सुखदेव जी शास्त्री कार्य करते रहे।

सभा के कार्यकर्ताओं ने १५ हजार मील से ऊपर यात्राए की। १४५ सभाओं और सम्मेलनों का आयोजन किया गया। १० हजार आदिवासियों में निःशुल्क औषधियां वितरित की गई।(११००)का दान लेकर निर्धन आदिवासियो मे वितरित किया गया जिसमे से १०००) देहरादून निवासी श्री रामनाथ जी ने सभा को दान दिया था। सभा उनकी विशेष आभारी है। लगभग ४०० नए ईसाई-बहुल क्षेत्रों का सर्वे किया गया जहां प्रचार की व्यवस्था करने का आयोजन विचाराधीन है।

रांची से ७ मील दूर जगन्नाथपुर मे एक बड़ा मेला लगता है। जहां लाखों आदिवासी एकत्र होते हैं। यहा ५ दिन तक प्रचार करके ईसाइयो के प्रचार-प्रभाव का सफल निराकरण किया गया। सिमडेगा में २६ जनवरी से ३० जनवरी तक गाधी मेले में विश्व शाति गायत्री महायज्ञ के आयोजन रूप मे प्रचार-कैम्प लगाया गया।

परिणाम—

सभा के प्रचार कार्य के ३ परिणाम सामने आये हैं जो इस प्रकार हैं।

१. जो विदेशी पादरी आदिवासी जनो को निस्सहाय और लावारिस समझ कर धनादि के प्रलोभन से उन्हें धड़ा धड ईसाई बनाते थे अब वह सावधानता पूर्वक हाथ डालते हैं और आर्य समाज के व्यापक प्रभाव से डरते हैं।

२. जो आदिवासी ईसाई हो जाने पर यह समझ बैठते थे कि भविष्य मे उनका उद्धार असम्भव है वे आशावान हो गये हैं कि पुनः हिन्दू धर्म में वापस जा सकते हैं।

३. भारत तथा बिहार सरकारो को विदेशी ईसाई पादरियों की राष्ट्र-विरोधी प्रगतियों का अनुभव होना आरम्भ हो गया है।

यदि भारत सरकार उन आदिवासियों को जो ईसाई बना लिये गये हैं, सरकारी सुविधाओ से वचित करदे तो न केवल सहस्रो की सख्या मे ईसाई बने आदिवासी जन शीघ्र ही पुन हिन्दू धर्म में वापस आ जायें अपितु उनके सामूहिक ईसाई-मत-परिवर्तन का क्रम भी बंद हो जाय।

बांसवाड़ा केन्द्र

मार्च १९६०—

दयानन्द छात्रावास बांसवाडा मे छः भील छात्र प्रविष्ट थे। कन्या छात्रावास भूगडा में भील कन्याये १५ थी। आर्य पाठशाला भीलछुआ मे ३० विद्यार्थी पढ़ रहे थे। दो स्थानीय प्रचारक प्रचार कार्य करते थे।

शुद्धि

गांव महोडिया के ११ और बीजलपुर के ६ ईसाईयों की शुद्धि हुई तथा १५ बच्चों को ईसाईयो के स्कूल से मुक्त कराकर अपने स्कूल मे प्रविष्ट किया गया।

अप्रैल १९६०

गांव बिहारीपुरा के १० और टीमा मउडी के ६ ईसाई शुद्ध किए गए किन्तु टीमा मउडी के दोनो ईसाई खेमा लुज्जा ने आमली पाड़ा के फ्रेंच कैथोलिक पादरी के बहकाने पर कुशलगढ़ अदालत में दफा १०७ का मुकदमा दोनों प्रचारको एवं उस गाव के १० व्यक्तियो पर चलाया।

मई १९६०

गांव जाम्बुडी में जहां फ्रेंच कैथोलिक मिशन का एक पादरी भी रहता है एक सम्मेलन किया गया जिसमें लगभग २०० व्यक्ति इकट्ठे हुए और निश्चय किया कि आस पास के ईसाइयों को शुद्ध होने की प्रेर[illegible] जाये।

शुद्धि

गांव बीजलपुर मे ६ व्यक्तियों की शुद्धि हुई।

जून १९६०-शुद्धि

जाम्बुडी सम्मेलन के परिणाम स्वरूप उस गांव के ५२ व्यक्ति शुद्ध हुए।

ईसाई प्रचार निरोध सप्ताह के अंतिम दिन ५ जून को स्थान विट्ठल देव पर आदिवासी सम्मेलन हुआ जिसमे जिले के सभी प्रतिष्ठित व्यक्ति सम्मिलित हुए। दयानन्द छात्रावास से एक छात्र बी० ए० की परीक्षा में तथा दो छात्र मैट्रिक की परीक्षा मे उत्तीर्ण हुए। शेष तीन छात्र नीचे की कक्षाओं में उत्तीर्ण हुए।

जुलाई १९६०

दयानन्द छात्रावास में १३ छात्र प्रविष्ट किये गए, भीलखुआ पाठशाला मे ५० छात्र हो गये। कन्या छात्रावास मूगड़ा मे १५ कन्यायें प्रविष्ट रही।

अगस्त, सितम्बर १९६०

वर्षा के कारण प्रचार कार्य बन्द रहा। कुशलगढ़ अदालत मे पेशिया चलती रही।

अक्टूबर १९६०

गाव जाम्बुड़ी में दीपावली का उत्सव किया गया तथा बोरगढ़ पट्ठा एव भभेड़ी आदि गावो मे प्रचार हुआ।

नवम्बर-दिसम्बर १९६०

आर्य समाज बाँसवाड़ा का उत्सव किया गया। जाम्बुड़ी मे वस्त्र वितरण किया गया तथा मैजिक लैण्टर्ण से लगभग पच्चीस गावो में प्रचार हुआ।

शुद्धि—

गांव पाटड़िया के तीन व्यक्ति शुद्ध हुए।

जनवरी १९६१

ईसाइयों के मुकदमे में जीत हुई। दोनों ईसाई सपरिवार पुनः शुद्ध हुए तथा गाव बिहारी पुर के भी २५ व्यक्ति शुद्ध किए। कन्या छात्रवास की संचालिका श्रीमती मीराबाई का शरीरान्त हो गया।

फरवरी १९६१ शुद्धि

गांव बाड़वास में तीन व्यक्ति शुद्ध किए गए तथा एक लड़का गाँव सेवनिया का स्वयं शुद्ध हुआ।

बांसवाडा केन्द्र मे दो प्रचारक कार्य करते हैं और यह कार्य श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी की देख रेख मे होता है। स्वामी जी बडी तत्परता और लग्न से कार्य करते हैं। सभा उन्हें धन्यवाद देती है। २९ मई से ५ जून तक ईसाई प्रचार निरोध सप्ताह का सभा की ओर से आयोजन किया गया। आर्य समाजों तथा आर्य जनता को इस सप्ताह को सफलता पूर्वक मनाने की प्रेरणा की गई। इस अवसर पर "ईसाई पादरियो के कुचक्र से बचो" तथा "ईसाई पादरी उत्तर दें" ये दो ट्रैक्ट छपाए गए जो लाखो की संख्या मे आर्य जनता ने क्रय करके बाँटे। सार्वदेशिक मासिक पत्र जून का अंक विशेषांक के रूप में निकाला गया। इस अवसर पर हुई अपील पर सभा के कोष मे १०६९७) १७ प्राप्त हुआ। ईसाई प्रचार निरोध का समस्त कार्य सभा के उपाध्यक्ष श्री बा० कालीचरण जी की देख रेख मे हो रहा है जो बड़ी लगन से यह कार्य कर रहे हैं। सभा बाबू जी को धन्यवाद देती है।

वर्ष भर में कुल आय २४१४९) ४२ हुई और व्यय २७५२४) ९३ हुआ। ३३७५) ५१ अधिक व्यय हुआ जो जनरल निधि से पूरा किया गया।

दिल्ली तथा मेरठ जिले में ईसाई प्रचार निरोध कार्य—

ईसाई मिशन ने रामगढ़ के जिन किसानों को ईसाई से हिन्दू बन जाने के कारण खेती की भूमि से बेदखल किया था उनको मुकदमों की पैरवी मे सभा ने श्री पं० रुचिराम जी द्वारा सहायता दी। भूमि सम्बन्धी १० अभियोगों में यह लोग हार गए थे। इनकी अपील की हुई है।

दक्षिण दिल्ली प्रचार मंडल के अन्तर्गत रामगढ़ में आर्य प्राईमरी स्कूल उन्नति कर रहा है। इस स्कूल में मुख्य रूप से शुद्ध किए हुए परिवारों के बच्चे पढते हैं। १ अध्यापक और ६० लडके हैं। स्कूल का १२५) मासिक व्यय है जिसे श्री ब बू विद्यासागर जी बी० ए० तथा पं० हरिराम जी एकत्र करके पूरा करते हैं।

रामगढ मे आर्य समाज स्थापित है जिसमें साप्ताहिक सत्संग नियम से होते तथा वार्षिकोत्सव भी होता है। समाज के प्रधान श्री बा० विद्यासागर जी बी० ए० हैं।

मस्जिद मोठ, बेगमपुर, लाडो सराय मे पूर्व के शुद्ध किए हुए परिवारो मे प्रचार कार्य होता रहा।

छपरोली (मेरठ) मे मुख्यतया हरिजन विद्यार्थियों की शिक्षा के लिए एक आर्य प्राइमरी स्कूल चल रहा है जिसमे तीन अध्यापक और १६० विद्यार्थी पढते हैं। इस सभा ने इस वर्ष उक्त स्कूल को ३००) की सहायता दी।

हिन्दी-रक्षा-आंदोलन

पंजाब की भाषा समस्या के समाधान के लिए निम्नलिखित सरकारी घोषणा के अनुसार पंजाब के राज्यपाल की अध्यक्षता मे २६ सदस्यीय समिति नियुक्त की गई थी :—

The Chief Minister, Sardar Pratap Singh, Kairon, announced in the Vidhan Sabha today the appointment of a 26 member representative committee with the Governor as Chairman to solve the language problem.

The Committee which comprises representatives of Hindu and Sikh cultural and educational organisations in the state has been given a free hand to make constructive suggestions.

The terms of reference of the committee are :

1. To consider the recommendations of the Good Relation Committee and.
2. To recommend to the state Government measures necessary for a satisfactory solution of the language problem and to suggest a programme for implementing these recommendations.

The Committee is expected to start work by the middle of March.

The Good Relations Committee, with Mr. Jaichand Vidyalankar and Bhai Jodh Singh as members, was appointed for one year with effect from August 1958 in the wake of the language agitation in the state.

The committee submitted its report to the Government on August 7 last year. It has, however, not yet been published despite insistent demands.

The announcement of the Chief Minister which took the House by surprise, was generally welcomed. It, in effect, indicated the acceptance of the demand for a round table confer ence although only a few days ago the Deputy Education Minister and the Finance Minister has said in the legislature that the Government was no party to the language dispute and that it would accept any solution agreed to by the contesting parties provided it did not lay the foundation of a partition.

(क्रमशः)

(पृ० ३८८ का शेष)

वर्ती लोग सदा से मूर्ख चले आए हैं, इनकी उन्नति कभी नहीं हुई। वेदादिकों की प्रतिष्ठा तो दूर रही, परन्तु निन्दा करने से भी पृथक् नहीं रहते, ब्रह्मसमाज के उद्देश्य से पुस्तक में साधुओं की संख्या में 'ईसा', 'मूसा', 'मुहम्मद,' 'नानक,' और 'चैतन्य' लिखे हैं, किसी ऋषि-महर्षि का नाम भी नहीं लिखा।"

वेद का अर्थज्ञान:—

'वेद का अर्थज्ञान। ज्ञान की ही हद में सृष्टि की सारी बातें हैं। सृष्टि की अव्यक्त अवस्था भी ज्ञान है। स्वामी जी वेदाध्ययन में अधिकारी-भेद नहीं रखते। वह सभी जातियों की बालिका-विद्यार्थिनियों को वेदाध्ययन का अधिकार देते हैं। यहाँ यह स्पष्ट है कि ज्ञानमय कोष वह जड-विज्ञान से सम्बन्ध रखता हो, धर्म-विज्ञान से— नारियों के लिए युक्त है, वे सब प्रकार से आत्मोन्नति करने की अधिकारिणी है। इस विषय पर आप सत्यार्थ-प्रकाश में एक मन्त्र उद्धृत करते हैं:—

"यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः।
ब्रह्मराजन्याभ्यां शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय।"
यजु०अ०२६।२

"परमेश्वर कहता है कि (यथा) जैसे मैं (जनेभ्यः) सब मनुष्यों के लिए (इमाम्) इस (कल्याणीम) कल्याण अर्थात् संसार और मुक्ति के सुख देने हारी (वाचम्) ऋग्वेदादि चारों वेदों की वाणी का (आवदानि) उपदेश करता हूँ, वैसे तुम भी किया करो। यहाँ कोई ऐसा प्रश्न करे कि जन-शब्द से द्विजों का ग्रहण करना चाहिए, क्योंकि स्मृत्यादि ग्रन्थों में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य ही के वेदों के पढने का अधिकार लिखा है, स्त्री और शूद्रादि वर्णों का नहीं (उत्तर) (ब्रह्मराजन्याभ्याम्) इत्यादि देखो, परमेश्वर स्वयं कहता है, कि हमें ब्राह्मण, क्षत्रिय, (आर्याय) वैश्य (शूद्राय) शूद्र और (स्वाय) अपने भृत्य वा स्त्र्यादि (अरण्याय) और अति शूद्रादि के लिए भी वेदों का प्रकाश किया है, अर्थात् सब मनुष्य वेदों को पढ़-पढा और सुन-सुना कर विज्ञान को बढा के अच्छी बातों को ग्रहण और बुरी बातों को त्याग करके दुःखों से छूटकर आनन्द को प्राप्त हों। कहिए, अब तुम्हारी बात माने वा परमेश्वर की ? परमेश्वर की बात अवश्य माननीय है। इतने पर भी जो कोई इसको न मानेगा, वह नास्तिक कहावेगा, क्योंकि 'नास्तिको वेदनिन्दक,' वेदों का निन्दक और न मानने वाला नास्तिक कहाता है।"

स्वामी जी ने वेदों के उद्धरणों द्वारा सिद्ध किया है कि स्त्रियों की शिक्षा अध्ययन आदि वेद-विहित हैं। उनके लिये ब्रह्मचर्य के पालन का भी विधान है। स्वामी जी की इस महत्ता को देखकर मालूम होजाता है कि स्त्री-समाज को उठाने वाले पश्चिमी शिक्षा-प्राप्त पुरुषों से वह बहुत आगे बढे हुए हैं। वह संसार और मुक्ति दोनों प्रसगों में पुरुषों के ही बराबर नारियों को अधिकार देते हैं। इस एक ही वाक्य से साबित होता है कि किसी भी दृष्टि से वह नारी-जाति को पुरुष-जाति से घटकर नहीं मानते।"

इस प्रकार महाकवि निराला ने महर्षि दयानन्द और उनके देश के प्रति किये गए सत्कार्यों के प्रति समाज में श्रद्धा भावना प्रकट की है। विरोध नहीं जैसा कि बहुत से लेखक अपने विचारों में उचित अनुचित का निर्णय किये बिना अपना दृष्टिकोण पक्ष अथवा विपक्ष में प्रकट कर दिया करते हैं। निराला जी इसके अपवाद थे। वे जो उचित समझते उसके समर्थन में अपना मत भी प्रदान करते थे। निराला जी के बहुत से विचार जन-साधारण तक नहीं पहुंच पाए हैं। इसलिये यह आवश्यक है कि निराला जी के विचार जन-साधारण तक पहुँचाने के लिए, वे सभी लोग प्रयत्न करें, जो निराला जी के प्रति अपना ममत्व रखते हैं।

———

खेद है निराला जी अब इस संसार में नहीं हैं। पिछले दिनों ही प्रयाग में उनका देहावसान हुआ। हिन्दी भाषा के प्रमुख कवि के रूप में उनका नाम अमर रहेगा।—सपादक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी ध्रुवानन्द जी महाराज का आर्यसमाज सिंगापुर को संदेश

(३४ वें वार्षिकोत्सव के अवसर पर)

—:o:—

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि सिंगापुर जैसे दूरस्थ क्षेत्रमे आर्यसमाज सिंगापुर अब ३४ वर्ष से प्रशंसनीय कार्य कर रहा है। मैं आप सब के उत्साह, प्रेम और उद्योग का बहुत आदर करता हूं जो आप लोग वैदिक धर्म और आर्य संस्कृति के प्रचार में प्रदर्शित कर रहे हैं। मुझे आशा है कि आप लोग आर्यसमाज को एक प्रबल शक्ति और प्रकाश-स्तम्भ बनाने में कोई प्रयत्न उठा न रखेंगे। यह तभी सम्भव है जबकि आप सब आर्यसिद्धान्तों और आर्यसस्कृति के आदर्शों को अपने जीवन में चरितार्थ करते हुए आर्यसमाज और उसके हित को अपने निज़ी हित से ऊपर रखेंगे।

आप बन्धुओं को यह बात भी लक्ष्य में रखनी होगी कि प्रत्येक आर्य का वैयक्तिक और सामाजिक जीवन निरीक्षण का जीवन होता है। अतः यह आवश्यक है कि उसे जीवन इस प्रकार के होने चाहिएं जिन पर कोई अंगुली न उठा सके।

यह परम हर्ष का विषय है कि आपके आर्यसमाज की प्रगतियां बहुत विस्तृत हो गई हैं और आप उन्हें अधिक विस्तृत और स्थिर रूप देने के लिए आर्यसमाज मन्दिर के विशाल हाल के निर्माण और डी० ए० वी० स्कूल की स्थापना का यत्न कर रहे हैं। मैं आप की इन योजनाओं की सफलता चाहता हूं।

यह बड़े सन्तोष की बात है कि भारत और भारत से बाहर के आर्य जनों के हृदयों मे, शिरोमणि सभा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रति बडी श्रद्धा है और वे मार्ग-दर्शन और प्रकाश के लिए उसकी ओर देखते हैं। इस प्रेम और सभा के अधिकार एवं वर्चस्व में दिन पर दिन वृद्धि हो यही कामना है।

वैदिक धर्म सार्वभौम धर्म है और यह मानव-मात्र से प्रेम करना सिखाता और मानव को अपना सर्वांगीण विकास करने मे—वैयक्तिक, सामाजिक, धार्मिक और राजनैतिक क्षेत्र मे भी समर्थ बनाता है। इससे मानव अपना लौकिक और पारलौकिक दोनों प्रकार का उत्थान कर सकता है। यह सब प्रकार की रूढ़ियों एवं संकीर्णताओं से रहित है और जाति, धर्म, रंग, लिंग, वस्ल आदि के भेद-भाव के बिना मानव-मात्र के लिए अभिप्रेत है। यह समस्त मतों का आदि-स्रोत भी है। एक मात्र यही धर्म इस अशान्त एवं क्लान्त जगत् की जटिल समस्याओं का उपयुक्त समाधान प्रस्तुत करके शाश्वत शान्ति एवं विश्व-बन्धुत्व की स्थापना कर सकता है जो आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है। इसी धर्म से विज्ञान और आध्यात्मिकता का समन्वय संभव है। परमात्मा करे इस धर्म की शीतल छाया से समस्त विश्व ओत-प्रोत हो जाय।

साम्प्रदायिक उपद्रव

श्रीयुत जे० बी० कृपलानी

जबलपुर के बाद अलीगढ ! वर्तमान में केवल ये ही उपद्रव नही हुए है आसाम मे तथाकथित भाषायी उपद्रव हुआ था। आन्तरिक विवादो को हिंसा प्रतिहिंसा के द्वारा तय करने का ढंग प्रजातांत्रिक नही हैं । प्रजातन्त्र व्यवस्था में यदि कोई विशेषता है तो वह यह है कि इसमें आन्तरिक विवादों को शान्ति पूर्ण ढंग से निपटाने की व्यवस्था है। प्रजातन्त्र व्यवस्था मे सिर गिने जाते हैं तोले नहीं जाते। इसका अर्थ कानून का शासन है अर्थात् समस्त झगडे पुलिस को, मजिस्ट्रेट को और न्यायाधीश को सौंप दिए जाने चाहिये। उपद्रवो मे अपराधी प्राय: बच जाते और निर्दोष मारे जाते हैं।

वर्तमान परिस्थिति में भारत में साम्प्रदायिक उपद्रवो का होना अत्यधिक हानिकर और घातक है । इनसे न केवल विविध वर्गों में कटुता ही उत्पन्न होती अपितु पाकिस्तान को भारत-विरोधी प्रचार की भी प्रचुर सामग्री उपलब्ध हो जाती है । इसके अतिरिक्त पाकिस्तान के हिन्दुओ से बदला निकाला जाता है साथ ही अल्प संख्यक वर्ग के कुछ लोगों में भारत से बाहर के क्षेत्रो के प्रति निष्ठा उत्पन्न होने की संभावना भी रहती है। यदि देश के कुछ लोग राष्ट्र द्रोही बन जाय तो देश की एकता, शान्ति और सुव्यवस्था के लिए इससे बढकर घातक बात और कोई नही हो सकती।

अल्प संख्यकों की कठिनाइयाँ

ऐसे उदाहरण हैं जिनमें दंगे का प्रारम्भ अल्प संख्यक वर्ग के एक वा कुछ सदस्यों के द्वारा हुआ। जब ऐसा होता है तो बहु संख्यक वर्ग के कुछ सदस्य कानून को अपने हाथ में लेकर बदला लेते है । जब वे ऐसा करते है तो बहुसंख्यक होने के कारण स्वभावत. अल्प संख्यक वर्ग की कठिनाइयाँ बढ जाती है।

उपद्रव करना सदैव बुरा होता है परन्तु बहुसंख्यक वर्ग को अपनी बहु संख्या का लाभ उठाना वा इस प्रकार का आभास देना और अल्प-सख्यक वर्ग के निर्दोष व्यक्तियों से बदला लेना बहादुरी का कार्य नही है। बहु सख्यक वर्ग के कुछ व्यक्तियो की अति का यहाँ भारत मे और पाकिस्तान में बडा दुरुपयोग किया जाता है । मुसलमान कांग्रेसी और तथाकथित राष्ट्रवादी मुसलमान दूर दृष्टि का परित्याग कर ऐसी नीतियो के प्रचार की उत्तरदायिता अपने ऊपर ले लेते हैं जिनके दूरवर्ती परिणाम स्वय अल्प संख्यक वर्ग और राष्ट्र के लिए घातक होंगे। जब राष्ट्रवादी मुसलमान साम्प्रदायिक नीतियो का प्रचार वा समर्थन करते हैं तो हिन्दू सम्प्रदायवादी चैतन्य हो जाते हैं। पाकिस्तान मे बुरी से बुरी बातें हो जाती हैं। भारत में हमारा शासन असाम्प्रदायिक है। बहु संख्यक वर्ग के कुछ व्यक्तियों का उन्माद थोडी बहुत क्षति के उपरान्त राज्य द्वारा शान्त कर दिया जाता है। पाकिस्तान में सरकार और बहु संख्यक लोगों का दृष्टिकोण साम्प्रदायिक होने से, निर्दोष हिन्दुओं से बदला लिया जाता है। वहाँ का शासन उसको रोकता नहीं भले ही वह सहायता न करे । जबलपुर को घटनाओं का बदला लेने के लिए वहाँ ऐसा ही हुआ था।

अतः यह आवश्यक है कि भारत में बहु संख्यक वर्ग

के लोगों को अपने कुछ पथ-भ्रष्ट लोगों के कार्यों पर पूर्ण नियन्त्रण रखना चाहिए। उन्हे कम से कम यह तो स्मरण रखना ही चाहिए कि वे पाकिस्तान के बहु संख्यक वर्ग और प्रशासन के क्रोध से अपने सह धर्मी निर्दोष हिन्दुओं की रक्षा नहीं कर सकते। उन्हे किसी भी अवस्था में कानून को अपने हाथ में लेकर वास्तविक वा काल्पनिक अपराध के लिए जो उनके किसी एक सदस्य का अनेक सदस्यों के प्रति किया जाय बदला न लेना चाहिए। उन्हे यह भी अनुभूति होनी चाहिए कि यदि बहु सख्यक वर्ग के कुछ लोगो द्वारा प्रतिशोध लेने मे अति हो जाय तो उपद्रव का मूल कारण भुला दिया जायगा और समस्त दोष बहु सख्यक वर्ग के ऊपर आ जायगा। अत. यदि वे अपना और देश का भला चाहें तो उनको उचित है कि जब अल्प संख्यक वर्ग के किसी वा किन्ही व्यक्तियो द्वारा झगडा किया जाय वा किया जाना समझा जाय तो पुलिस और राज्याधिकारियो की शरण लेकर अपनी शिकायत दूर करनी चाहिए।

मुसलमानों का कर्त्तव्य

कांग्रेस वा कांग्रेस से बाहर के मुसलमान नेताओं के लिए भी उचित है कि वे अपने लोगो को नियन्त्रण मे रखे। इसी में उनके वर्ग और देश का भला है। उन्हें अनुभव करना चाहिए कि बलवो में सख्या गिनी जाती है। अतः उन्हें बहु सख्यक वर्ग के साथ व्यवहार करने मे बहुत सावधानता बर्तने का अपने सह धर्मियो को निर्देश देना चाहिए। ऐसा करते हुए कभी-कभी उनके अभिमान को ठेस लग सकती है।

मैं समझता हूँ कि उस वर्ग के लिए जो यह सोचता है कि उसने कभी हिन्दुस्तान पर हकूमत की थी अपने अभिमान का दमन करना कुछ कठिन है। परन्तु मुसलमानो को यह अनुभव करना चाहिए कि यदि वे संख्या मे अधिक अपने साथी देश वासियो के साथ शान्तिपूर्वक रहना चाहें तो भारत की परिवर्तित स्थिति मे यह आवश्यक है कि उन्हें झगडे से बचने का प्रयत्न करना चाहिए। यदि उनके हितो के प्रति वास्तविक वा काल्पनिक अन्याय हो तो उन्हें राज्याधिकारियो को कहना चाहिए। यदि दोनों पक्ष देश की वर्तमान अशान्त साम्प्रदायिक परिस्थिति मे विवेक और नियन्त्रण को हाथ से न जाने मे तो निश्चय ही शान्ति व्याप्त हो जायगी।

राज्याधिकारियों को जो कानून और व्यवस्था की रक्षा के लिए उत्तरदाता हैं अपने महान् दायित्व को अनुभव करना चाहिए। उन्हे तत्काल न्याय-युक्त और प्रभावशाली कार्यवाही करनी चाहिए। आसाम और जबलपुर मे राज्याधिकारियो ने तात्कालिक, न्याय-सगत और प्रभावशाली कार्यवाही न की। हो सकता है कि बहु सख्यक वर्ग के दबाव के कारण विविध राज्य आवश्यक कार्यवाही करने मे उदासीनता वा प्रमाद का परिचय दे। उस अवस्था मे केन्द्र को ऐसी एजेन्सी का निर्माण करना चाहिए जो राज्याधिकारियो को बाधित करे वा कुछ समय के लिए कानून और व्यवस्था का प्रशासन अपने हाथ मे लेले। कहा जाता है कि यदि अलीगढ मे विश्व विद्यालय के अधिकारी झगडे के प्रति जिसके लक्षण विश्व विद्यालय के क्षेत्र मे विद्यमान थे सावधान रहते और समय पर समुचित कार्यवाही कर लेते तो झगडा न होने पाता वा उठते ही दबा दिया जाता।

धार्मिक केन्द्र

मुस्लिम युनिवर्सिटी के क्षेत्र मे जो कुछ हुआ और उत्तर प्रदेश के कई स्थानो पर उसकी प्रतिक्रिया का जो तांता लगा उसने पुनः इस प्रश्न को प्रबल रूप मे हमारे समक्ष उपस्थित कर दिया है कि असाम्प्रदायिक प्रशासन मे धर्म और जाति के नाम पर चलने वाले शिक्षणालयो के संचालन की अनुमति होनी चाहिए या नही। जब से हमने सविधान का निर्माण किया है तब से ही यह प्रश्न हमारे समक्ष है। एक समय ऐसा लगने लगा था कि इस प्रकार की संस्थाओ को भले ही कानून द्वारा उन्हे समाप्त न किया जाय, सरकारी मान्यता, सहायता और सार्वजनिक फंड से किसी भी प्रकार का लाभ प्रदान न किया जायगा। फिर भी शीघ्र ही ऐसा प्रतीत हुआ कि प्रशासन साम्प्रदायिक वा जाति गत विशिष्ट स्वार्थों को अपना विरोधी

बनाने का साहस न कर सकी। लोक सभा में यह प्रश्न अनेक बार उठा परन्तु न तो कुछ हो सका और न कुछ किए जाने का आभास ही मिल सका।

एक वर्ग या जाति की वर्गगत संस्था के बहु संख्यक विद्यार्थी सोचते हैं कि उसमें उन्हें वरिष्ठता के अधिकार प्राप्त हैं।

अन्य वर्गों या जातियों के विद्यार्थियों को वे एक मात्र सहन कर लेते हैं। इस प्रकार की संस्थाएं और उनके प्रमुख—चांसलर, वाइस चांसलर, प्रिंसिपल, अध्यापक इत्यादि उस वर्ग या जाति के लोगों में से रखे जाते हैं जिसके द्वारा वह संस्था सस्थापित होती है। इस प्रकार के कार्य कर्ता यह अनुभव करते हैं कि संस्था के वर्गीय स्वरूप पर बल देने से ही वे उत्तरदायित्व पूर्ण पदों पर बने रह सकते हैं। इस प्रकार वर्गीय संस्थानों की बुराई जीवित रखी जातीऔर बढ़ाई जाती है।

समय आ गया है जबकि राज्याधिकारी दोनों हाथों में साहस बटोरकर इस प्रकार के संस्थानों को नोटिस दें कि यदि वे साम्प्रदायिक वा जाति-गत नामो का प्रयोग जारी रखेंगे और उनके साम्प्रदायिक स्वरूप को बनाए रखने का अनुरोध करेंगे तो उन्हें न तो सरकारी सहायता मिलेगी और न अन्य किसी प्रकार की सुविधा ही मिलेगी। यह एक ढंग होगा जिसके द्वारा यदि हम चाहें तो अवश्य ही हम देश से साम्प्रदायिकता को कुछ कम कर देंगे। अधिक नहीं तो कम से कम विद्यार्थियों की आने वाली पीढ़ी को एक पक्षीय निष्ठा से बचा सकेंगे जो हमे बीते हुए युग की विरासत में प्राप्त हुई है। क्याहमारेमहा महिम राज्याधिकारी अब भी विवेक से काम लेंगे ?

हम इस लेख से सर्वांश में सहमत नहीं हैं।

सम्पादक

(पृ० ४०६ का शेष)

देती है। इन सब पारिवारिक समस्याओं से उत्पन्न कुसस्कारो की रोक थाम का उत्तरदायित्व बड़ों पर ही आ जाता है। फिर भी यदि कुछ विशेष परिस्थितियों वश बच्चा किसी बुरी भावना ग्रन्थि एव विकृत आचरण का शिकार हो जाता है तो हमें कुशल मनोविश्लेषए वेत्ताओं की सहायता लेनी चाहिए। कभी-कभी बच्चों के प्रति बड़ों की पक्षपात पूर्ण नीति भी बाल-अपराध वृत्ति को जन्म देती देखी गई है। बहुधा हिन्दू परिवारो में सबसे बड़ा लड़का अपने अन्य छोटे भाई बहिनों की अपेक्षा कुछ अधिक महत्त्व रखता है। मां बाप उसे अतिरिक्त सुविधा प्रदान करते हैं। छोटे बच्चों के भोले मस्तिष्क में यह पक्षपात पूर्ण नीति यदि एक विद्रोह और आचार की विकृति को जन्म दे दे तो क्या आश्चर्य। कभी-कभी परिवार के कई बच्चों की योग्यता एवं अयोग्यता का मापदण्ड उनका शिक्षात्मक कैरियर ही बन जाता है। विशिष गुणसम्पन्न बच्चा मां बाप से अधिक दुलार पाता है तथा प्रकृति प्रधान बौद्धिक गुणों से हीन बच्चा उपेक्षित व्यवहार पाता है। ऐसी स्थिति में भी बच्चे बाल अपराध की ओर प्रवृत हो जाते हैं। इन सब समस्याओं का समाधान मां बाप के विवेक-शील एवं संवेदनशील व्यवहार पर ही निर्भर है।

एक बात का और ध्यान रखना है। बच्चा केवल परिस्थिति एवं वातावरण का दास नहीं होता। वह केवल उनके हाथ का खिलौना ही नहीं है वरन् उसके अन्दर भी क्रियाशीलता और कल्पना के अंकुर विद्यमान रहते हैं जब तक वह उनका इच्छानुसार क्रियात्मक उपयोग नहीं करेगा उसके व्यक्तित्व के विकास की समग्र भावना को संतुष्टि नहीं मिल सकती। श्रीमती मोन्टेसरी ने बच्चों की इस क्रियात्मक शक्ति पर बड़ा बल दिया है। गेस्टाल्स विचार वादियों ने यह सिद्ध कर दिया कि जो बच्चा प्रारम्भ से ही अपनी क्रियात्मक कल्पना के सहारे वातावरण में मानसिक सन्तुष्टि प्राप्त करता है वह उतना ही भावी जीवन में सफल रहता है।

ओ३म्

सार्वदेशिक धर्मार्य सभा का निर्वाचन

सार्वदेशिक धर्मार्य सभा का तीन वर्ष के लिए निर्वाचन ता० ८-१०-५१ को दयानन्द भवन (दिल्ली) सार्वदेशिक सभा के कार्यालय में सम्पन्न हुआ जिसमें उत्तर प्रदेश, पंजाब, राजस्थान, मध्यप्रदेश, मध्यभारत, बंगाल, बिहार, गुजरात आदि के ३७ प्रतिष्ठित विद्वानों ने भाग लिया।

तीन वर्ष के लिए निर्वाचन इस प्रकार हुआ

१—प्रधान—श्री पं० धर्मदेव जी विद्यामार्तण्ड (देवमुनि जी) ज्वालापुर।
२—उपप्रधान—श्री आचार्य बृहस्पति जी, देहरादून।
३—प्रधान मन्त्री—श्री आचार्य विश्वश्रवाः जी 'व्यास' देहली।
४—सहायक मन्त्री—श्री आचार्य राजेन्द्रनाथ जी शास्त्री, देहली।

अन्तरंग सदस्य

५—श्री आचार्य पं० वैद्यनाथ जी शास्त्री, नासिक।
६—श्री पं० उदयवीर जी शास्त्री, गाजियाबाद।
७—श्री डा० हरिदत्त जी शास्त्री, एम०ए०पी०एच०डी०, कानपुर।
८—श्री पं० भीमसेन जी शास्त्री एम०ए० देहली।
९—श्री आचार्य वीरेन्द्र जी शास्त्री एम० ए०, रायबरेली।
१०—श्री पं० जगदेव जी सिद्धान्ती शास्त्री, पंजाब।
११—श्री स्वामी सत्यमुनि जी, पंजाब।
१२—श्रीमती प्रभावती जी, गुरुकुल कांगड़ी।
१३—श्री डा० अमरसिंह जी कलकत्ता।
१४—श्री पं० ओ३म् प्रकाश जी, खतोली।
१५—श्री आचार्य रामानन्द जी, बिहार।

अनमोल मोती

रातें और दिन मधुरता से युक्त हों, प्रत्येक पार्थिव कण प्रकाश और माधुर्य लावें।
हमारे लिए वनस्पति, सूर्य और उसकी किरणें माधुर्य से युक्त हों।
मेरा आना जाना और दैनिक व्यवहार मीठा हो। मैं मीठी वाणी बोलूं।

सार्वदेशिक विद्यार्य सभा नई देहली (कार्यालय रायबरेली) श्रावणी २०१८ वि० की परीक्षाओं का परिणाम

आर्य सिद्धान्त रत्न परीक्षा

केन्द्र लश्कर—तृतीय श्रेणी ३ दिलीप कुलश्रेष्ठ, ४ ओम् प्रकाश धींगरा, ६ शिशुम कुमार, ८ सोमनाथ सफरी;

केन्द्र बांदा—द्वितीय श्रेणी—१० शिवप्रसाद;

केन्द्र बहाना—तृतीय श्रेणी ११ रघुनाथसिंह, १२ सुमेरसिंह;

केन्द्र कोटला—तृतीय श्रेणी —१५ रामवीरसिंह;

केन्द्र बहसुइया—द्वितीय श्रेणी १६ शान्तिस्वरूप आर्य ॥

आर्य सिद्धान्त भूषण परीक्षा

लश्कर—प्रथम श्रेणी—६२ रामचन्द्र मकरानी; द्वितीय श्रेणी—१८ कमलेशकुमार गुप्त, तृतीय श्रेणी—३ विजय प्रधान, ८ रविप्रकाश जाजू, १५ विलासराज, १८ रवीन्द्रकुमार गुप्त, २३ राम कुमार वर्मा, २४ सतनामसिंह, २५ कृष्णलाल बजाज् ३३ शैलेन्द्र सक्सेना, ३५ राजेन्द्र अग्रवाल, ३७ कुलदीप किशोर; ३८ लक्ष्मी नारायण; ४० लक्ष्मण करन्दीकर; ४२ आनन्द जुबेकर; ४४ हीरानन्द रोहिड़ा; ४८ कृष्ण प्रतापसिंह; ५६ सुभाषचन्द्र तुली; ५८ जितेन्द्र कुमार; ५६ चन्द्रेशचन्द्र शर्मा; ६३ श्रीचन्द्र; ६४ श्रीनिवास;

बांदा—प्रथम श्रेणी—६५ बाबूराम यादव;

बहाना—द्वितीय श्रेणी ६६ श्यामवीर;

सहारनपुर—प्रथम श्रेणी—६६ सरोज; द्वितीय श्रेणी—७२ सन्तोष, ७४ कुसुमलता, ७८ मधु; तृतीय श्रेणी—७० रमेश, ७१ पुष्पा; ७६ शिरोमणि;

इन्दौर—तृतीय श्रेणी—८३ रामचरण वर्मा; ८४ ब्रह्मदेव शर्मा;

करोलबाग देहली—प्रथम श्रेणी—८५ लीलावती;

मुजफ्फर नगर—द्वितीय श्रेणी—८६ मनफूलदत्त आर्य;

बैरगनियां—द्वितीय श्रेणी ८८ श्री चन्द्रिका पाण्डेय; तृतीय श्रेणी ८७ शिवजी प्रसाद;

कोटला—तृतीय श्रेणी—८६ नरेन्द्रकुमार जैन; ६० वेद प्रकाश, ६१ ब्रह्मस्वरूप;

उत्तम नगर (तिलक नगर-दिल्ली)—तृतीय श्रेणी—६२ वीरेन्द्रकुमार; ६३ रमेशचन्द्र राजपाल; ६४ प्रियाशरण गौतम;

इलाहाबाद—तृतीय श्रेणी—६६ सत्यप्रकाश ॥

आर्य सिद्धान्त विशारद परीक्षा

लश्कर—प्रथम श्रेणी—१ देवेन्द्रनाथ गुप्त; १२ रामकिशोर, ६० वासुदेव, ६५ लक्ष्मणदास;

द्वितीय श्रेणी—२ केशवकुमार, ३१ भगवती देवी, ४३ पंकज कुमार, ४४ ईश्वर नागरानी, ५१ सतीशचन्द्र, ५६ चौथराम, ६१ सतीश मसन्द, ६४ लक्ष्मी नारायण मिश्र,

तृतीय श्रेणी—३ सुरेशकुमार नीखरा, ५ कुलवीर सिंह, ७ उपेन्द्रमोहन, ६ विजय पुराणिक, १० केशवसिंह यादव, ११ सजीव शर्मा, १३ शिवकुमार १४ महेशचन्द्र गोयल, १५ भरत कुमार मेहता, १७ नरेन्द्र भाला, १८ अशोक पवैया, २० सुरेश त्रिवेदी, २३ शिवाजी, २४

प्रकाश पाटिल, २५ भरत व्यास, २६ विनीत कुमार, २८ रवीन्द्र नाथ शर्मा, २९ शरत् कुमार, ३० रणजीत कांकडे, ३२ जनकदुलारी, ३३ बीणा देवी आर्या, ३४ रामकिशोर, ३७ महेशकुमार खटोड, ४० विनोदकुमार अग्रवाल, ५४ आलोक बनर्जी, ५५ अतुलकुमार, ५७ श्रवण कुमार ।

शकूरबस्ती (देहली)—प्रथम श्रेणी—६६ प्रेमलता, ६७ दुर्गा, आर्या, ६८ उषा रत्न तृतीय श्रेणी—६९ शारदा चानना ।

शाहबाद—प्रथम श्रेणी ७० राम लडैते, ७२ कुँवर पान, ७३ सावित्रीदेवी,, द्वितीय श्रेणी ७५ प्रेमबिहारी लाल, तृतीय श्रेणी ७४ चन्द्रकान्ता देवी,

डहाना—प्रथम श्रेणी—७७ कमला देवी ।

सहारनपुर—प्रथम श्रेणी ८३ कमलेश कुमारी गर्ग, द्वितीय श्रेणी—७९ मंजु शर्मा, ८२ पुष्पा, ८५ रामदुलारी, ८६ कृष्णा, तृतीय श्रेणी—८० सरला, ८१ कमलेश, ८४ शशि, ८७ रुक्मिणी, ९० सुदेश, ९१ प्रवेश, ९२ सौभाग्य,

इन्दौर—प्रथम श्रेणी—९९ ओम प्रकाश श्रीवास्तव, १०० राधेलाल शर्मा, १०३ बाबूलाल, तृतीय श्रेणी—९६ अरुण कुमार, ९८ अरविन्द कुमार सोलंकी,

मुजफ्फर नगर—प्रथम श्रेणी—१०७ प्रमीला मानिक, द्वितीय श्रेणी—१०४ विजय कुमार, १०५ सत्यदेव नागपाल, तृतीय श्रेणी—१०६ ज्ञानचन्द्र,

बैरगनिया—प्रथम श्रेणी—१०९ विद्यानन्द, १११ रामचन्द्रप्रसाद, द्वितीय श्रेणी १०८ ओम् प्रकाश, ११० रामनरेश,

कोटला—तृतीय श्रेणी—११४ विनोद कुमार, ११५ रामबहादुर, ११६ रामपालसिंह, ११७ मुरारी लाल शर्मा, ११८ गवेन्द्रपालसिंह, ११९ लाखनसिंह, १२० दिनेश कुमार, १२१ सुरेशचन्द्र माहेश्वरी, १२२ कुमुद प्रकाश, १२३ किशन पालसिंह, १२४ रवेन्द्रपालसिंह, १२५ करनपाल, १२६ चन्द्रपालसिंह,

उत्तम नगर (तिलकनगर दिल्ली)—तृतीय श्रेणी—१२७ सुशीलचन्द्र, १२८ प्रह्लाद किशोर,

इलाहाबाद—प्रथम श्रेणी—१२९ ओम् प्रकाश, तृतीय श्रेणी—१३३ ओम्प्रकाश ।

दि० ९-१०-६१ वीरेन्द्र शास्त्री एम० ए०, मन्त्री,
सार्वदेशिक विद्यार्यसभा, नई देहली
कार्यालय राय बरेली उ० प्र०

अनमोल मोती

हे मातृ भूमि, हमसे जो द्वेष करे या हम पर सेना से आक्रमण करे जो मन और शस्त्र से हमें दास बनाना चाहे उसको हे मनोरथों को पूर्ण करने वाली मातृ भूमि, तू नष्ट कर दे ।

अथर्व १२-१-१४

हमारे लिए वायु मधुरस लिए चलती है नदियां मधु बहाती हैं औषधियां भी मधु रस से युक्त होवें ।

ऋ० १ । ९० । ६

विदेश समाचार

ता० १०-९-६१ रविवार के दिन १० बजे आर्य समाज मम्बासा के नए प्रार्थनाभवन का उद्घाटन राजरत्न दानवीर आर्य श्रेष्ठी श्रीमान नानजी भाई कालिदास के द्वारा हुआ। उनका आर्य समाज के प्रवेश द्वार पर ही फूल हारों से स्वागत किया गया। नवयुवकों ने बैण्डवादन और "गार्ड आफ आनर" से उनके प्रति सम्मान और हर्ष प्रकट किया। व्यवस्थित रूप से मार्ग की दोनों ओर खड़े आर्य समाज और स्त्री समाज की अन्तरंग सभा के सदस्यों का परिचय श्री प्रधान जी द्वारा करवाया गया।

तदनन्तर श्री पं० रणधीर जी वेदालंकार ने ओ३म् ध्वज लहराने की विधि "वैदिक राष्ट्र गान" और "संगठन सूक्त" के मन्त्र पाठ के साथ श्रीमान् सेठ जी के हाथों करवाई। ध्वज के फहराते ही समाज के मैदान में जय घोष और करतल ध्वनि गूंजने लगी। 'आहवनीय अग्नि' के प्रकटाने के साथ वैदिक वास्तु प्रवेश विधि श्रीमान् सेठ जी के ही हाथों श्रीमान् पण्डित जी द्वारा विधान पूर्वक करवाई गई। श्रीमान् पण्डित जी द्वारा करवाई गई विधि पर जनता मुग्ध रही खासकर के वेद मन्त्र पाठ ने जनता को भक्ति रस में बहा दिया। एक घन्टे की इस विधि की समाप्ति के बाद आर्य समाज के प्रधान श्री राम करण जी द्वारा मम्बासा आर्यसमाज का संक्षिप्त इतिहास उपस्थित किया गया और अन्त मे कहा कि मुट्ठी भर दफतरों में काम करने वाले आर्य परिवार के सहकार्यकर्ताओं के परिश्रम और लगन का फल यह "प्रार्थना भवन" है। इसके निर्माण में शी. १७५०००।- का खर्च हुआ है। यह समाज का मैदान श्री सेठ जी द्वारा आर्य समाज को अर्पित किया गया है। इस भवन के निर्माण में भी शी: १०,०००।- श्री सेठ जी द्वारा समाज के भिक्षा पात्र में दिये गये हैं। उपसंहार करते हुए उन्होंने श्रीमान् सेठ जी के प्रति सम्मान प्रकट करते हुए आर्य परिवार की ओर से एक "अभिनन्दन पत्र" अर्पण किया जिसे उपस्थित जनता को श्री पं० रणधीर जी ने पढ़कर सुनाया।

अन्त में श्रीमान् सेठजी ने उपस्थित जनता और आर्य परिवार का अभिनन्दन करते हुए अपनी अनुभव-गाथा सुनाते हुए कहा कि हमें संगठित होना होगा। हमें एक 'भाषा' को अपनाना होगा। हमारी संस्कृति को जीवित रखने के लिए कटिबद्ध होना पड़ेगा। यदि हम चूक गये तो हमारी हस्ती पूर्व अफ्रीका मे खतरे से खाली नहीं रहेगी। भारतीय मातृ शक्ति ने भारतीय संस्कृति को बचाया है। मेरी माताओं और बहिनों से विनती है कि वे सदा इस क्षेत्र में आगे कदम बढ़ाती रहें। जापान देश की उन्नति का श्रेय: उस देश की महिलाओं को है। यह बात कई उदाहरण देकर श्री सेठजी ने स्पष्ट शब्दों मे रक्खी। महर्षि दयानन्द इस नवयुग के प्रवर्त्तक हैं। उनके अधूरे कार्य को पूरा करना हम सब का कर्त्तव्य है। प्रभु हमें शक्ति, सामर्थ्य भक्ति दे कि हम अपने मिशन को पूरा कर सके।

श्री मंत्री जी के धन्यवाद प्रकट किये जाने के बाद शान्तिपाठ के साथ सभा विसर्जित हुई।

राम करण
प्रधान

सार्वदेशिक सभा पुस्तक भण्डार की
पुस्तकों का सूची-पत्र

निम्न प्रकाशन नैट मूल्य पर दिये जायेंगे ।

१.	ऋग्वेद सहिता सजिल्द	१०)
२.	अथर्ववेद संहिता सजिल्द	६)
३.	यजुर्वेद सहिता सजिल्द	४)
४	सामवेद संहिता सजिल्द	२।।)
५.	सत्यार्थ प्रकाश	२।)
६.	ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका	२।।)
७.	संस्कार विधि	१।)
८.	पंचमहायज्ञविधि	२०)
९.	कन्नड सत्यार्थप्रकाश	३।)
१०.	मराठी सत्यार्थप्रकाश	१।=)
११.	कर्त्तव्य दर्पण सजिल्द	।।≡)
१२.	वैदिक ज्योति	५)२५
१३.	पञ्च महायज्ञ विधि भाष्यम्	५)

निम्न पुस्तकों पर निम्न प्रकार कमीशन दिया जायेगा ।

१०) से २५) रु० तक १२।।%
२५) से ऊपर २५०) तक २०%
२५०) से ऊपर १०००) तक २५%
१०००) से ऊपर २०००) तक ३० ,,
२०००) से ऊपर ३३।।%

श्री स्वामी ब्रह्ममुनि कृत ।

१.	यम पितृ परिचय	२)
२.	वैदिक ज्योतिष शास्त्र	१।।)
३	वैदिक राष्ट्रीयता	।)
४.	अभ्यास और वैराग्य	१) ६५
५.	बालसंस्कृति-सुधा	५०)
६.	वैदिक ईशवदना	।=)।।
७	वैदिक योगामृत	।।=)
८	दयानन्द दिग्दर्शन	।।।)
९.	वेदो मे दो बडी वैज्ञानिक शक्तिया	।।।)
१०.	निज जीवनवृत्त वनिका अजिल्द	)५०
	,, ,, सजिल्द	)७५
११	बृहत् विमान शास्त्र सजिल्द	१०)
१२.	बाल जीवन सोपान ,,	१।।=
१३.	छान्दोग्य उपनिषद् कथा	३
१४.	दार्शनिक अध्यात्म तत्व	१।।
१५.	वेदान्त दर्शनम् (संस्कृत में)	३
१६	वैदिकवन्दन	५)

* ओ३म् ध्वज *

ओ३म् ध्वजों के लिए आर्य जनता की मांग की पूर्त्यर्थ सभा ने स्वयं ओं ध्वज निर्माण का कार्य अपने हाथ में ले लिया है और उसने शुद्ध खादी के निम्न डिजाइनों के ओध्वज निर्माण करा लिए हैं । उनको लागत मूल्य पर आर्य जनता को पहुँचाने का सभा ने निश्चय किया है । अत आर्य जनता को उन्हे तत्काल मंगाकर अपने समाज मन्दिरों और आर्य संस्थाओं पर लगाने चाहिए ।

ओ३म् ध्वज २७ इच × ४०।। इच मूल्य २)
ओ३म् ध्वज ३६ इंच × ५४ इच मूल्य ३)
ओ३म ,, ४५ इच × ६७।। इंच ,, ४)
मँगाने की दशा में १) अगाऊ भेज देवे ।

आर्यसमाजो को अविलम्ब आर्डर भेज कर प्रतियाँ सुरक्षति करा लेनी चाहिए जिससे बाद मे उन्हे पुस्तके न मिलने की शिकायत का अवसर न रहे ।

श्री बाबू पूर्णचन्द्र एडवोकेट कृत

१७.	कर्मव्यवस्था	४)
१८.	मन मन्दिर	१)
१९.	दयानन्द दीक्षा शताब्दी का सन्देश	।-)
२०.	चरित्र निर्माण	१=)।।
२१.	ईश्वर उपासना और चरित्र निर्माण	।=)।।
२२.	वैदिक विधान और चरित्र निर्माण	=)।।
२३.	दौलत की मार	।)
२४.	अनुशासन का विधान	।)
२५.	धर्म और धन	।)

विविध

२६.	सत्यार्थप्रकाश (उर्दू) मूल्य	३) ५०
२७.	उत्तराखण्ड के बन पर्वतो मे ऋषि दयानन्द अजिल्द	)६२
	,, ,, सजिल्द	)७५
२८.	आर्य समाज प्रवेश पत्र	मूल्य १) सैकडा

श्री महा० नारायण स्वामी कृत ।

२९	योग रहस्य	१।)
३०	मृत्यु और परलोक	१।)
३१.	विद्यार्थी जीवन रहस्य	।।=)
३२.	प्राणायाम विधि	≡)
३३	उपनिषदे :—	

ईश ।=) केन ।।) कठ ।।) प्रश्न ।=)
मुन्डक ।≡) माण्डूक्य ।) एतरेय ।) तैत्तिरीय १)

३४. बृहदारण्यकोपनिषद ३)

श्री प० गंगाप्रसाद उपाध्याय कृत

३५. आर्योदय काव्यम् पूर्वार्द्ध १॥)
३६. उत्तरार्द्ध १॥)
३७ वैदिक संस्कृति १।)
३८. मुक्ति से पुनरावृत्ति ।=)
३९ आर्यसमाज और सनातनधर्म =।)
४०. आर्यसमाज की नीति ।=)

श्री पं० इन्द्रजी द्वारा लिखित

४१. मेरे पिता ४)
४२. सरला की भाभी २)
४३. सरला की भाभी (दूसरा भाग) ३)५०
४४ आत्म बलिदान ३)
४५. जमीदार २)
४६. महर्षि दयानन्द की जीवनी २)
४७. सम्राट् रघु १)२५
४८. आधुनिक भारत में वक्तृत्व कला की प्रगति १)२५
४९. स्वराज्य और चरित्र निर्माण १)२५
५०. स्वतन्त्र भारत की रूप रेखा १)५०
५१. जीवन की झाकियाँ (प्रथम खण्ड))५०
५२. ,, ,, (द्वितीय खण्ड))५०
५३. नौकरशाही जेल के अनुभव १)
५४. आर्यसमाज का इतिहास स० (प्रथम भाग) ४)
५५. ,, ,, (द्वितीय भाग) ५)
५६. आर्यवीर दल बौद्धिक शिक्षण -)

श्रीरघुनाथप्रसादजी पाठक कृत

५७. आर्य जीवन गृहस्थ धर्म ॥=)
५८. कथा माला ॥)
५९. सन्तति निग्रह १।)
६०. नया ससार ≡)
६१. आदर्श गुरु शिष्य ।-)

श्री पं० धर्मदेवजी विद्यामार्तण्ड कृत

६२. स्त्रियो का वेदाध्ययन अधिकार १।)
६३. भक्ति कुसुमाञ्जली ॥)
६४. हमारी राष्ट्र भाषा व लिपि ।-)
महापुरुष कीर्तनम् मूल्य २)

श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द कृत

६५. आर्यसमाज के महाधन २॥)
६६. वेद की इयत्ता १॥)

श्री लाला ज्ञानचन्द कृत

६७ धर्म और उसकी आवश्यकता १)
६८. वर्णव्यवस्था का वैदिक रूप १॥)
६९. इजहारे ह ॥=)
७०. सत्य निर्णय १॥)

विविध

७१. परदेश मे मेरे सात साल (पं० रुचिराम जी) २)
७२. विरजानन्द प्रकाश (भीमसेन शास्त्री) २)
७३. वेद रहस्य (ले० महात्मा नारायण स्वामी) २)५०

पंडित मदनमोहन विद्यासागर कृत

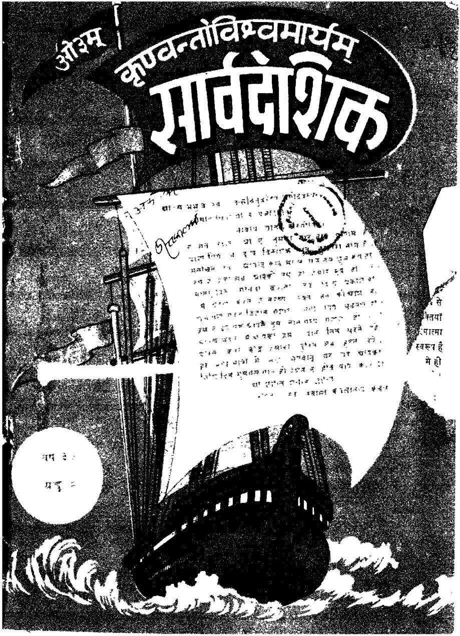
७४. जन कल्याण का मूल मन्त्र ॥)
७५. सस्कार महत्व ॥)
७६. वेदो की अन्त:साक्षी का महत्व ।=)
७७. आर्य घोष (परिवर्द्धित सस्करण))६०
७८. आर्य स्तोत्र ॥)

अन्य विद्वानों कृत

७९ स्वाध्याय सन्दोह (स्वा० वेदानन्द तीर्थ) ४)
८०. स्वराज्य दर्शन (प० लक्ष्मीदत्त दीक्षित) १)
८१. राजधर्म (महर्षि दयानन्द सरस्वती) ॥)
८२. भूमिका प्रकाश (संस्कृत मे) (प० द्विजेन्द्रनाथ शास्त्री) १॥)
८३. एशिया का वेनिस (स्वा० सदानन्द) ॥)
८४. दयानन्द सिद्धान्त भास्कर (श्री कृष्णचन्द्र विरमानी) १॥)
८५ भजन भास्कर सग्रहकर्ता प० हरिशंकर शर्मा कविरत्न) १॥।)
८६. सनातन शुद्धि शास्त्र (गोविन्द प्रकाश शास्त्री) २)
८७. आर्य डायरेक्टरी पुरानी) १।)
८८. सार्वदेशिक सभा का २७ वर्षीय कार्य विवरण अजिल्द २)
८९. आर्य पर्व पद्धति (पं० भवानीप्रसाद कृत) १।)
९०. आदर्श चरित्र)७५

सार्वदेशिक सभा पुस्तक भंडार, दयानन्द भवन, नई दिल्ली—१

सम्राट् प्रेस, पहाड़ी धीरज, दिल्ली मे मुद्रित व रघुनाथ प्रसाद जी पाठक मुद्रक और प्रकाशक के लिये
सार्वदेशिक ...



ओ३म्
कृण्वन्तोविश्वमार्यम्
सार्वदेशिक

॥ ओ३म् ॥

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

वार्षिक मूल्य ६) विदेश से वार्षिक ८) या १२ शिलिंग

वर्ष ३७ सृष्टि संवत् १९७२९४९०६० १९६१ अक्टूबर आश्विन २०१८ अंक ८।

विषय सूची

—०.*:०—

* सम्पादक

काली चरण आर्य सभा मन्त्री

* सहायकसम्पादक

रघुनाथप्रसाद पाठक

* प्रकाशक व मुद्रक

रघुनाथप्रसाद पाठक

* कार्यालय

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
दयानन्द भवन, नई दिल्ली

फोन : २२४७७१

* मुद्रक

सम्राट् प्रेस, पहाड़ी धीरज देहली।

फोन : २२२५६३

प्रभु की शक्ति का दिग्दर्शन

चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः आप्राद्यावा पृथिवीऽअन्तरिक्षꣳ सूर्य्यऽआत्मा जगतस्तस्थुषश्च ।

ऋक् १ । ११५ । १, यजु ७ । ४२; १३ । ४६, अथर्व. १३ । २ । ३५: २० । १०७ । १४

हम उपासको के हृदय मे दिव्य गुण विशिष्ट सत्ताओ की अद्भुत जीवनी शक्ति तथा विशिष्ट सत्ता का उत्कृष्टता पूर्वक प्रकाश हुआ है जो मित्र अर्थात् सम्मिश्रण कारिणी तथा अग्नि अर्थात् विश्लेषण कारिणी और वरुण अर्थात् अवरण कारिणी शक्तियो का चक्षु रूप है। वह जीवन प्रदायिनी शक्ति से लोक इस लोक और अन्तरिक्ष लोको को पूर्णतः परिपूर्ण किए हुए है। वह समस्त विश्व का प्रेरक स्थावर और जंगम दोनो सत्ताओ का आत्म-स्वरूप है।

समस्त विश्व ब्रह्माण्ड अद्भुत असंख्यात दिव्य शक्तियो के द्वारा अनेक प्रकार की प्रक्रियाओ से परिपूर्ण हो रहा है। जिस ओर दृष्टि डालते हैं संसार बड़ी विचित्रता से प्रत्येक वस्तु को हमारे सामने उपस्थित करता है। उन सब दिव्य शक्तियो का आधार जिन दिव्य शक्तियों के सहारे संसार की विचित्रता विचित्र रूप धारण कि ए हुए है उनका आधार स्वरूप विश्व का रचने वाला समस्त प्रक्रियाओं का संचालक असंख्यात अद्भुत शक्तियों को अपने अन्दर धारण करने वाला एक परमात्मा देव है जो अति विचित्र जीवनी शक्ति स्वरूप है। हम उपासको के हृदय उस परमदेव सृष्टि सचालक की विचित्रता से परिपूर्ण रहे। उपासना द्वारा उस विचित्र दिव्य जीवनी शक्ति का भक्तो के हृदय मे प्रकाश होता है जिस प्रकाश से प्रकाशित होकर भक्त जन ससार के कल्याण के कारण बनते हैं। विश्व ब्रह्माण्ड की प्रक्रिया के सचालन मे तीन प्रधान शक्तियाँ कार्य करती हैं। इन तीन विचित्र शक्तियो मे मित्र एक शक्ति है जो सश्लेषणात्मक कार्य करती है। अग्नि दूसरी शक्ति है जो विश्लेषणात्मक कार्य करती है। तीसरी वरुण शक्ति है जो समन्वयात्मक कार्य करती है। यदि इन तीनों को सयोजक नियो क और नियामक शक्ति कहा जाए तो भी ठीक होगा। उपासक का हृदय इन तीनो प्रकार की शक्तियों से प्रभावित रहता है। यह तीनो प्रकार की विचित्र शक्तियाँ जीवन प्रदान करने वाली है और परम-पिता परमात्मा इन तीनो जीवन दायिनी शक्तियो का चक्षु स्वरूप है जिसकी प्रधानता मे ही अर्थात् जिसकी देख-रेख मे ही विश्व ब्रह्माण्ड की प्रक्रिया सचालित होती रहती है। यह शक्ति न केवल पृथिवी, तक सीमित है किन्तु अन्तरिक्ष और देवलोक मे पूर्णतया परिपूर्ण है। यह शक्ति समस्त ब्रह्माण्ड मे ओत-प्रोत है और इस तरह विस्तृत है कि कोई स्थल भी इससे खाली नहीं कहा जा सकता। उपासक उस परम ब्रह्म परमात्मा को अपने हृदय मे उन समस्त अद्भुत और विचित्र प्रक्रियाओं का सचालन अनुभव करता हुआ समस्त ब्रह्माण्ड में उसकी व्यापकता की निश्चयात्मक धारणा रखता हुआ और समस्त ब्रह्माण्ड की संयोजक-नियोजक-नियामक-प्रक्रिया मे उस ही एक प्रभु की शक्ति का अवलोकन करता हुआ प्रभु की उपासना मे सलग्न रहता है तो कल्याण का भागी बनता है। वह परमात्मा ही समस्त जगत का सूर्य अर्थात् प्रेरक स्वरूप आत्मा है।

—कालीचरण आर्य

सम्पादकीय

प्रजातन्त्र में स्वस्थ परम्परा की आवश्यकता

देश में विधान सभाओं तथा लोकसभा के लिए साधारण निर्वाचन अब बिलकुल सिर पर आ रहे हैं। ज्यो-ज्यों निर्वाचन का समय निकट आता जा रहा है, त्यों-त्यों तत्सम्बन्धी सरगर्मियाँ भी तेज होती जा रही हैं। विभिन्न राजनैतिक दल चुनावों मे सफलता प्राप्त करने के लिए जो साधन जुटा रहे हैं, उन मे धन-संग्रह का प्रमुख स्थान है क्योंकि निर्वाचन की प्रक्रिया ऐसी खर्चीली बन गयी है कि उस मे धन को भारी महत्त्व प्राप्त हो गया है। यह भी स्पष्ट है कि देश की साधारण जनता राजनैतिक दलों के निर्वाचन कोष नही भरती और न भर ही सकती है। अत: इसका मुख्य स्रोत प्राय पूंजीपति ही रह जाते हैं। पूंजीपतियो की संख्या देश मे कुछ बहुत बडी नही है, जिसका अर्थ यह होता है कि कुछ मुट्ठी भर लोगो के हाथ मे राजनैतिक दलों की नकेल आ जाती है और वे उन पर छाये रहते हैं।

अभी हमारे प्रधान मन्त्री श्री पं जवाहरलाल नेहरू कानपुर गए और कई लाख रुपये की थैली कांग्रेस के निर्वाचन-कोष के लिए लेकर आये। इस घटना ने विशेष रूप से यह प्रश्न सजीव बना दिया है कि राजनैतिक दलों द्वारा पूंजीपतियो से निर्वाचन-कोष के लिए धन प्राप्त करना कहाँ तक उचित है ? और विशेष रूप से प्रधान मन्त्री का सीधे इस मामले मे पडना तो बहुत विचारणीय है। श्री नेहरू जी देश के प्रधान मन्त्री भी हैं और कांग्रेस के नेता भी है। परन्तु उनकी दोनो हैसियतो को अलग-अलग नही किया जा सकता। तथ्य तो यह है कि आज उनका मुख्य कार्य प्रधान मन्त्री के रूप मे देश का प्रशासन चलाना है, न कि कांग्रेस संगठन की सेवा करना। अत. उनकी स्थिति सरकार के प्रमुख की ही है। हमारी अपनी छोटी-सी बुद्धि के अनुसार यह सम्मति है कि सत्तारूढ लोगो को चुनाव के लिए धन संग्रह के काम मे नही पडना चाहिए। इससे प्रशासन मे भारी भ्रष्टाचार तथा अनैतिकता का बीजारोपण होता है। कहा तो यह भी जा सकता है कि इस प्रकार के रुपये के बल पर जीतने वाले लोगो द्वारा बनायी गयी सरकार की नीव ही अनैतिकता पर रखी जाती है।

ब्रिटिश शासन का वह कटु अनुभव अभी देश के नेताओं तथा जनता को भूला नही है कि जब अंग्रेज शासक इसी प्रकार पूंजीपतियों तथा जनता से राजनैतिक प्रयोजनो के लिये धन लेते थे। उस कार्य मे सरकारी मशीनरी का प्रयोग होता था, विभिन्न स्तरों पर दबाव तथा जबरदस्ती के हथकडे बरते जाते थे। परिणामस्वरूप जनता मे बढता हुआ असन्तोष शासन की जडों को दीमक बन कर खाता था। जो कोई भी शासन इस प्रणाली को अपनायेगा उसे इसके स्वाभाविक परिणामो के लिए भी उद्यत रहना होगा। प्राय: लोगो मे यह प्रवृत्ति होती है कि वे शासन अथवा शासनाधिकारियों को कृतज्ञ बनाने के लिए अवसरो की ताक मे रहते है, विशेषरूप से पूंजीपति लोग इस कला में बडे दक्ष होते हैं और वे किसी अवसर को हाथ से नहीं जाने देते। अपने अपार धनसागर मे से कुछ बूंदें देकर यदि वे सरकार की कृपा पात्रता उपार्जित कर सके तो एक व्यापारी के रूप मे इससे सस्ता और अच्छा सौदा कोई दूसरा नही हो सकता। फिर प्रधानमंत्री जैसी ऊंची स्थिति का व्यक्ति, जिससे हाथ मिलाने अथवा साक्षात्कार मात्र से ही लोग निहाल होने की सोचते हो, उनको सुलभ हो जाय तो क्या कसर रह जाती है ?

मालूम होता है कि श्री नेहरू जी भी इस स्थिति को पूरी तरह समझे हुए हैं यह कोई ऐसा गूढ तत्व भी नही हैं जिसे नेहरू जैसा योग्य तथा अनुभवी व्यक्ति हृदयङ्गम न कर सके। यही कारण है कि उन्होने ये थैलियां लेते हुए ऐसे विचार प्रकट किये जिनसे पता चलता है कि वे स्वयं बहुत सकोच अनुभव कर रहे थे। उन्होने रुपया देने वालों की कुछ आलोचना भी की। परन्तु फिर भी उन्होने थैली स्वीकार की ही। क्या इसका यह अर्थ समझा जाय कि नेहरू जी अपनी आत्मा के विरुद्ध थैलिया स्वीकार करने पर

विवश थे। नेहरू जी के व्यक्तित्व तथा चरित्र को जानने वाला कोई भी व्यक्ति यह नही समझ सकता कि उनमे ऐसे प्रसंगो पर अपेक्षित आत्मबल की कमी है। बात तो यह मालूम देती है कि वे यह भलीभाति समझते थे कि इस कार्य की देश मे आलोचना तथा प्रतिक्रिया होगी। इसी सम्भावित आलोचना को हतप्रभ करने के लिए उन्होने स्वयं ही सफाई भी दे डालने की नीति का अवलम्बन किया। नेहरूजी ने इसी प्रसग मे एक मुद्दा और भी उठाया। उन्होने कहा कि पूंजीपति काग्रेस को भी चन्दा देते है तथा अन्य राजनैतिक दलो को भी। इसका अभिप्राय यह है कि उन्हे किसी सिद्धान्त अथवा नीति से कोई लगाव नही है। प्रधान मन्त्री ने यह भी कहा कि कांग्रेस कार्य कर्ताओ को ऐसे लोगो से चन्दा नही लेना चाहिए जिन का काग्रेस की नीतियो मे विश्वास नही है।

इस पर हमारा विचार यह है कि पूंजीपति लोग राजनैतिक दलो को धन कोई पुण्यलाभ या परोपकार बुद्धि से नहीं देते। ऐसा करने वालो के लिए मानवीय सेवा के विस्तृत क्षेत्र खुले पडे हैं। वे किसी शासनाधिकारी के आने की बाट नही देखते। राजनैतिक दलो को धन केवल स्वार्थ-सम्पादन के लिए दिया जाता है और यह स्वार्थ-सम्पादन सत्तारूढ दल की कृपादृष्टि से ही अधिक मात्रा मे सम्भव है, अतः उसी दल को धन अधिक मिलना स्वाभाविक हैं। हम समझते हैं कि प्रधान मन्त्री के इस कार्य से देश के राजनैतिक क्षेत्र मे एक बुरी परम्परा पड़ी है। इसके बाद राज्यो के मुख्यमन्त्रियो अथवा शासन के महत्व पूर्ण पदों पर आसीन लोगो का द्वार इस काम के लिए खुल जाता है और यही परम्परा नीचे तक के स्तरो तक पहुचती है। प्रजातन्त्र के मूल पर ही कुठाराघात होता है। किस-किस तरीके से ये थैलियां इक्ट्ठी की जाती है सम्बद्ध लोग ही जानते हैं। कुछ मुट्ठी भर लोगो को देश के शासन पर प्रभावी होने देना न देश के हित मे है, न प्रजातन्त्रीय भावना के अनुरूप है और न ही सम्बद्ध सस्था के हित मे है। प्रधान मन्त्री के लिए तो किसी भी दृष्टि से शोभाजनक नही है। प्रत्यक्ष है, यदि काग्रेस संस्था के लिए दान लेना हो तो सघटन के लोग लें। वैसे तो आज उनकी स्थिति भी अर्धसरकारी जैसी है। फिर भी उन लोगों को धन नही मिलता। अतः उच्चस्तरीय सरकारी नेताओं को प्रयोग करने की आवश्यकता पडती है। क्या इसका सीधा यह अर्थ नही कि दाताओ को सस्था के प्रति आकर्षण न हो कर शासन के प्रति लगाव है? प्रधान मन्त्री की उक्त आलोचना का यह भी अर्थ हो सकता है कि वे चाहते है कि पूंजीपति काग्रेस के सिवाय किसी अन्य राजनैतिक दल को भी चन्दा दे, यह उन्हें पसन्द नही है। उनकी नापसन्दगी की प्रतिक्रिया क्या हो सकती है यह भी किसी से छिपा नही है।

चाहे कुछ भी हो; यह मानना पडेगा कि राजनैतिक दलो और विशेषत सत्तारूढ दल द्वारा निर्वाचन के लिए धन संग्रह की यह प्रणाली उचित नही है। हमारे प्रधान मन्त्री कुछ आदर्शप्रिय समझे जाते हैं, अतः उन्हे तो प्रत्येक दशा में अपनी स्थिति को सुरक्षित ही रखना चाहिये। यद्यपि आर्य समाज का देश की सक्रिय राजनीति मे कोई योग नही है, परन्तु राजनैतिक क्षेत्र मे भ्रष्टाचार न व्याप्त हो सके, इतने अंश मे उसकी रूचि निर्विवाद है और इसी दृष्टि से उसे समय-समय पर अपने विचार प्रकट करने होते है। हमारी इन पंक्तियों का भी केवल इतना ही अभिप्राय है। प्रजातन्त्र मे स्वस्थ परम्पराओं का पनपना वाञ्छनीय है।

रघुवीरसिंह शास्त्री

सम्पादकीय टिप्पणियाँ

श्रीयुत डाग हैमरशोल्ड का बलिदान

राष्ट्रसघ के महामन्त्री श्रीयुत डाग हैमरशोल्ड शान्ति की बलि-वेदी पर चढकर युग-पुरुष बन गए हैं। राष्ट्रसघ का उद्देश्य ससार मे शान्ति बनाए रखना है। गृह युद्ध, मार-काट और उपद्रवो से संतप्त कांगो मे शान्ति व्याप्त करने और राष्ट्रसघ के अधिकार और दायित्व की रक्षा करने के महान् उद्देश्य की पूर्त्यर्थ यत्न करते हुए उनके प्राण गए उनके बलिदान से अन्तर्राष्ट्रीय शांति को बड़ा आघात लगने की आशका उपस्थित हो गई है। उनका वायुयान मशीन की किसी खराबी से ध्वस्त हुआ वा यह दुर्घटना किसी तोड़-फोड का परिणाम थी, यह अभी निश्चित नही है। इस दुर्घटना की जांच प्रारम्भ हो गई है। इसके परिणामों की ससार उत्सुकता से प्रतीक्षा कर रहा है क्योंकि ससार के श्रेष्ठ जन इस दुर्घटना से बडे क्षुब्ध और दुःखी हैं। सन्देह यह किया जा रहा है कि यह दुर्घटना पूर्व से आयोजित षडयन्त्र का परिणाम थी। यदि यह प्रमाणित हो गया कि यह दुर्घटना विमान की खराबी के कारण घटित हुई थी तो उनके दुःख के साथ जो रोष और क्षोभ है उसकी मात्रा मे कमी हो जायगी। यदि यह दुर्घटना किसी षडयन्त्र का परिणाम सिद्ध हुई जैसा कि जन-सामान्य को सदेह है, तो अपराधियो को समुचित दड दिए जाने पर ही कुछ सन्तोष का अनुभव होगा। ससार यह बर्दाश्त नही कर सकता कि उसके श्रेष्ठ और अलभ्य जनो का इस प्रकार अन्त कर दिया जाय। श्री डाग के बलिदान से राष्ट्रसघ के पैरो के लड़खड़ाने का भय उत्पन्न हो गया है। आवश्यकता इस बात की है कि राष्ट्रसंघ की इस महान् आपत्ति से प्राण पण से रक्षा की जाय और उसे और भी अधिक शक्तिशाली बनाने में कोई प्रयत्न उठा न रखा जाय। राष्ट्रसघ कागो मे जिस उद्देश्य की सिद्धि में संलग्न है उसकी पूर्ति मे जरा भी प्रमाद वा ढील न होनी चाहिए। जो स्वार्थी लोग श्री डाग को कांगो में वा अन्यत्र अपने कर्त्तव्य पालन में लगा हुआ देखकर उन्हें अपने मार्ग का रोड़ा समझकर उन्हें हटाने की सोचते थे उन्हें हतोत्साहित करने का यही सर्वोत्तम उपाय है।

श्री डाग का बलिदान व्यर्थ न जायगा और जिनके हाथों मे शक्ति है उन्हें तो किसी भी मूल्य पर न जाने देना चाहिए।

श्री डाग स्वीडन के निवासी थे। बडे सुयोग्य राजनीतिज्ञ थे। वे गत ८ वर्ष से इस दायित्व का बड़ी सूझ बूझ, और योग्यता से निर्वाह कर रहे थे। सबसे अधिक कागो के मामले मे उनका व्यक्तित्व कसौटी पर चढ़ा और अपवाद एव अपमान के मध्य भी वे कर्त्तव्य पालन मे अडिग रहे। लुमुम्बा की हत्या होने पर उनपर साम्राज्यवादियो का पक्ष लेने का आरोप लगाया गया। रूस ने उन्हे अपदस्थ करने का आग्रह किया। परन्तु घटना-चक्र कितना विचित्र है। आज उनके निधन मे साम्राज्य वादियो के कुचक्र का संदेह किया जा रहा है जब हम इस बात के प्रकाश मे उनके बलिदान पर विचार करते हैं तो सहसा ही उनकी उच्चता और निष्पक्षता आँखो के सामने आ जाती और अनायास ही हृदय से यह ध्वनित हो उठता है कि वह बडे ही साहसी और तूफानों के मध्य अविचलित रहने वाले महापुरुष थे।

यदि उनके निधन से अन्तर्राष्ट्रीय तनाव मे वृद्धि होकर वह तृतीय महासमर मे परिणत हो गया तो यह स्थिति बड़ी दुर्भाग्यपूर्ण होगी जिसके निवारण के लिए उन्होने अपनी मान-प्रतिष्ठा और जीवन तक को दाव पर लगाया हुआ था।

मनुष्यों को श्रेष्ठ बनाओ

नित्य बढ़ती हुई जनसंख्या और मानव की अंतरिक्ष यात्राएँ ये दोनो समस्याएं एक दूसरे के साथ ग्रथित हुई बताई जाती हैं। खाद्य-पदार्थों की वृद्धि और मानव के

निवास के लिए नए स्थानों की खोज के उपाय ज्ञात किए जा रहे हैं। इन समस्याओं के समाधान के यत्न में मनुष्य की यह धारणा बल पकड़ती दीख पड़ती है कि मूक प्राणियों की आत्मा नहीं होती और उस आबादी को जीवित रखने के लिए जो ब्रह्मचर्य एवं संयम का जीवन व्यतीत करने में असमर्थ है अस्वाभाविक एवं निर्दयता से प्राप्त भोजन की व्यवस्था की जाय जिससे वह वासना की सन्तुष्टि में निमग्न रहकर अंधाधुन्ध बच्चे उत्पन्न करता रहे। दूसरी ओर उन व्यक्तियों को जिनकी माताओं ने बड़े कष्ट और यत्न से पाल-पोस कर बड़ा किया है, अन्तरिक्ष में इस आशा से भेजा जा रहा है कि किसी न किसी दिन वे चन्द्रलोक में पहुँच कर ऐसे नगरों का निर्माण करने में समर्थ हो जायेंगे जिनमें धरती की बढ़ी हुई आबादी समा सके। विज्ञान ने जीवन के प्रति आदर की भावना को जिस निर्ममता से नष्ट किया है यह उसका ज्वलंत उदाहरण है।

इस प्रकार के संसार में जहाँ गुणों का संख्या पर निरन्तर बलिदान हो रहा है किसी को यह नहीं सूझता कि इस समय अधिक व्यक्तियों की अपेक्षा श्रेष्ठ व्यक्तियों की आवश्यकता है। अपनी दुर्बलताओं वैर-भावना और सत्तालोलुपता को दूसरे लोकों में ले जाने के स्थान में यदि हम मनुष्य को अधिक विकसित, कम हिंसक, अधिक ईमानदार और दयालु बनायें तो यह सफलता अन्तरिक्ष उड़ानों की अपेक्षा अधिक शानदार होगी। परन्तु क्या विज्ञानवेत्ता भौतिकवाद और सत्ताके नशे में अंधे हुए अधिनायक गण इस बात की ओर ध्यान देंगे? उनसे यह आशा करना दुराशा प्रतीत होती है क्योंकि वे युक्ति और तर्क के शत्रु होते हैं।

नासिक जिले में ईसाइयों का प्रभाव

पं० गोविन्द प्रसाद त्रिपाठी ने मनमाड (नासिक) में ईसाइयों के बढ़ते हुए प्रचार कार्य का निरीक्षण करके एक समाचार सार्वदेशिक में प्रकाशनार्थ भेजा है जिसका आवश्यक भाग इस प्रकार है:—

"मनमाड में पादरियों ने विदेश से ८० लाख रुपया लाकर अपना हाई स्कूल और दवाखाना बनाना आरंभ कर दिया है। प्रति शनिवार को अन्न और पैसे के लोभ से आकृष्ट निर्धनजन सायंकाल को भोजन करते और रविवार को गिरजे में ईसा की प्रार्थना करते हैं। ईसाई बन जाने वालों को नौकरी, मकान और आर्थिक सहायता आदि की सहायता की जाती है।"

लार्ड रसेल

सुप्रसिद्ध तत्ववेत्ता लार्ड रसेल (बर्टरेण्ड रसेल) को जिनकी आयु इस समय ८९ वर्ष की है लंडन के एक न्यायालय ने अणु आयुधों विरोधी प्रगतियों के कारण ७ दिन की कैद की सजा दी थी जो रद्द करदी गई है। उन्होंने जेल से प्रसारित अपने वक्तव्य में कहा कि अमेरिका, रूस, जर्मनी, फ्रांस और ब्रिटेन के राजनैतिक नेता मानवजीवन की इतिश्री के लिए सन्नद्ध देख पड़ रहे हैं। सत्ता की खोज में निरत दुराग्रही शासन और भ्रष्ट सरकारी विशेषज्ञ अपनी सर्विस पर चिपटे रहने के उद्देश्य से पूर्व और पश्चिम की प्रजा को पथ-भ्रष्ट करके अपनी उन नीतियों को मनवाने के लिए विवश करते हैं जिनका अन्त निश्चय ही अणु-युद्ध में होगा।

इस समय दो काल्पनिक पक्ष हैं और दोनों ही अपने को महानोद्देश्य से प्रेरित हुआ बताते हैं। परन्तु यह धोखा है। कैनेडी, ख्रुश्चेव, अदनार, डिगाल और मैक मिलान सबका एक ही उद्देश्य है और वह है मानव जीवन का अन्त कर देना। कतिपय निर्दयी परन्तु सत्ताधारी व्यक्तियों के सम्मिलित निश्चय के द्वारा प्रजा का परिवारों का और मित्रोंका सफाया हो जायगा।

साहित्य, कला-विज्ञान और विचारक्षेत्र की समस्त वरिष्ठ सफलताएँ सदैव के लिए विनष्ट हो जायगी।

आमोद-प्रमोदों प्रेम और सौख्य, विचार और ज्ञान और उस सौन्दर्य की सृजना करते वाली शक्ति से शून्य होकर जो मानव-जीवन को समृद्ध बनाती है हमारी

नष्ट-भ्रष्ट और जीवन शून्य धरती युग-युगान्तर पर्यन्त सूर्य के चहुँ ओर निरुद्देश्य गति करती रहेगी ।

इस व्यवस्था के निराकरणार्थ ही हम आज जेल में हैं। लार्ड रसेल पर यह आरोप लगाया गया था कि उन्होने १७ सितम्बर को पार्लियामेंट के दोनो सदनो के सामने अणु आयुध विरोधी धरने मे लोगों को सम्मिलित होने की प्रेरणा करके सार्वजनिक शांति भंग करने की चेष्टा की थी। इस धरने मे १० हजार लोगो के सम्मिलित होने की आशा थी।

लंदन के एक पार्क में बिना अनुमति के लाउडस्पीकर का प्रयोग करने के अपराध मे लार्ड रसेल पर २० शिलिंग का जुर्माना भी हुआ। उन्होने ६ अगस्त को लाउडस्पीकर से यह घोषणा की थी कि र्बलिन के प्रश्न पर युद्ध न होना चाहिए।

मास्को रेडियो ने इस जुर्माने के दण्ड पर आलोचना करते हुए कहा है "ब्रिटिश प्रजातन्त्र का नमूना यह है।"

अणु आयुधो के निर्माता और प्रयोक्ता कहते है कि युद्ध की बिभीषिका से मानव को बचाने के लिए ही इनका निर्माण और परीक्षण हो रहा है। लार्ड रसेल भी स्यात ऐसा ही सोचते है। अन्तर केवल इतना है कि लार्ड रसेल मानव की ओर उसकी वरिष्टता की रक्षा के लिए चिन्तित है जब कि अणु आयुधो के निर्माताओ को मनुष्य की सत्ता की रक्षा की तो चिन्ता है उसकी वरिष्ठता की रक्षा की चिन्ता नही है।

सांडो का युद्ध

ब्रिटेन मे रोम साम्राज्य में प्रचलित साडो की लडाई की निर्दय प्रथा को प्रचलित किए जाने का प्रयत्न हो रहा है जो वहाँ कानूनन अवैध है। वहाँ एक क्लब स्थापित है जो स्पेन केएकमहा बलिष्ठ और लडाकू साड को ब्रिटेन मे लडाई के लिये लाने के लिए प्रयत्नशील हैं। इस सांड ने अब तक६ लडाइयों में १२५० सांडो को समाप्त किया है। सौभाग्य से ब्रिटेन के अधिकारी इस विषय में बडे सतर्क हैं और उन्होंने विश्वास दिलाया है कि रोमन कथोलिक देशो मे प्रचलित यह दुष्प्रथा ब्रिटेन मे अवैध है और इस युद्ध की अनुमति न दी जायगी। फिर भी वहां के जीव दया-संस्थान मानव के भयकर पतन को देखते हुए बड़े सशंक है।

मास्टर तारासिंह के अनशन की भर्त्सना

अकाल तख्त के भूत-पूर्व सर्वोच्च महन्त ज्ञानी प्रताप सिंह ने अपने एक प्रेस वक्तव्य मे राजनैतिक उद्देश्य के लिए गुरुद्वारो तथा अन्य धर्म स्थानो के अनशन के लिए प्रयुक्त किए जाने की बडी कठोर आलोचना की है। उन्होने कहा स्वय अनशन सिक्ख धर्म की शिक्षाओ के विरुद्ध है। उन्होने अपने कथन के समर्थन मे पवित्र ग्रन्थ साहब के कई पद उद्धृत किए। गुरु गोविन्दसिंह ने 'रेहतनामा' मे अपनी सम्मति का उल्लेख किया है। उनकी सम्मति मे अनशन आत्म-हत्या के समान है। इसी कारण सिखो के समस्त धार्मिक पर्वों पर और स्वय स्वर्ण मन्दिर मे कडाह-प्रसाद चढ़ाया जात और लोगो मे वितरित किया जाता है।

उनकी सम्मति मे मास्टर तारासिंह की भूख हड़ताल सिख धर्म पर लाछन है क्योकि यह गुरुओ के लगर के अति निकट की जा रही है।

उन्होने कहा कि समस्त धर्मों मे समानता के आदर्श का प्रचार करने के लिए गुरु अर्जुनदेव ने स्वर्ण-मन्दिर का निर्माण किया था। यही कारण है कि गुरुग्रन्थ साहिब में अन्य मतो के सन्तो के वचन भी पाए जाते हैं और वे सन्त हिन्दू, हरिजन और मुसलमान है। स्वर्ण-मन्दिर की आधार-शिला रखने के लिए मुस्लिम सन्त हज़रत मियां मीर को भी आमन्त्रित किया गया था। स्वर्ण मन्दिर के पवित्र प्रांगण मे आमरण अनशन करना मन्दिर का बडा अपमान है।

वर्तमान जगत् ने धर्म को राजनीति से नितान्त पृथक्

किया हुआ है। दुःख है कि अकाली दल के दल-गत कार्यों के लिये गुरुद्वारों का प्रयोग हो रहा है। अन्त में उन्होंने मास्टर जी से अपील की कि वह अनशन का परित्याग करके मन्दिर की पवित्रता की रक्षा करें।

आर्य साहित्य का प्रभाव

गढ़वाल के एक अध्यापक महोदय लिखते हैं :—

'मैं आर्य समाज में शामिल होने की आशा करता हूं। इधर तो इस जिले में आर्य समाज कहीं नहीं है, ऐसा ही मालूम होता है। मैंने १ साल पूर्व से आर्यसमाज का साहित्य पढ़ना आरम्भ किया था और अब कुछ-कुछ आर्यसमाज के नियम ज्ञात हो गए हैं। अपने तीन प्रेमी सज्जनों ने सत्यार्थप्रकाश पढ़ने को प्रोत्साहित किया और मंगाकर पढ़ना आरम्भ कर दिया है। इधर के ब्राह्मण कहे जाने वाले व्यक्ति आर्यसमाज और सत्यार्थप्रकाश की भारी निंदा करते हैं। खैर ईश्वर जैसी मति देंगे। आर्यसमाज की छोटी-छोटी पुस्तकों को पढ़ने से आज से ४ वर्ष पूर्व धूम्रपान, मांस खाना, चाय पीना और शराब का सेवन सदा के लिए त्याग दिया। सामवेद, उपनिषद्, गीता और रामायण भी नित्य पढ़ता हूँ।"

इस पर विशेष टीकाटिप्पणी की आवश्यकता नहीं है। आर्यसमाज के साहित्य का सत्प्रभाव दिखाने के लिए उपर्युक्त पंक्तियां उद्धृत की गई हैं। उचित है कि अपने साहित्य का अधिकाधिक प्रसार किया जाय।

गुरुकुल भटिण्डा

गुरुकुल भटिण्डा स्वर्गीय स्वामी श्रद्धानन्द जी ने आज से लगभग ४० वर्ष पूर्व दानवीर श्री चौ० रामजीदास जी रईस भटिण्डा निवासी के दान से खोला था जिसका प्रबन्ध एक ऐसी कमेटी के आधीन था, जिससे गुरुकुल का कार्य ठीक रूप से नहीं चल रहा था। अब गुरुकुल का प्रबन्ध आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने अपने हाथ में ले लिया है। सभा की ओर से प्रबन्ध के लिए तथा आचार्य पद के लिए सभा के महोपदेशक श्री पं० भूदेव जी शास्त्री वेद वेदान्त सांख्य योग तीर्थ गुरुकुल में पहुँच गए हैं। अब गुरुकुल में प्रवेश आरम्भ है मासिक खर्च केवल १०) तथा प्रवेश फीस ५) है शेष खर्च गुरुकुल कमेटी करेगी।

क्लास गुरुकुल कांगड़ी की चलेगी।

महर्षि की शिक्षाओं का प्रभाव

सितम्बर के इंडियन रिव्यू में कुमारी नन्दिता M. A. का एक लेख छपा है जिसका शीर्षक है "भारतीय रजवाड़ों ने भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में क्या योग दिया ?" इस लेख में उन्होंने रजवाड़ों में राष्ट्रीय-जागृति के ४ कारण बताए हैं जो इस प्रकार हैं:—

१—भारत में अनेकता के होते हुए भी मूलभूत एकता है।

२—स्वामी दयानन्द और विवेकानन्द की शिक्षाएँ उनके अज्ञानावृत्त घरों में प्रविष्ट हो गई थीं।

३—नैपोलियन और गैरीबाल्डी के वीरोचित कारनामों ने उनको चकित कर दिया था।

४—पाश्चात्य विज्ञान ने उनके चहुँ ओर अपना जादू चला दिया था।

५—ब्रिटिश भारत के पुनर्जागरण की भावना ने उन्हें प्रभावित किया था।

देश के धार्मिक एवं सामाजिक पुनर्जागरण के अतिरिक्त राजनैतिक पुनर्जागरण में भी महर्षि दयानन्द का योग सर्वोपरि रहा है जिसको श्रद्धेय स्व० रोमां रोलां। (सुप्रसिद्ध फ्रेंच साहित्यकार एवं तत्ववेत्ता ने इस प्रकार व्यक्त किया है—

"वस्तुतः भारतीय राष्ट्रीय चेतना के पुनर्जन्म और जागरण में सबसे प्रबल प्रेरणा दयानन्द से प्राप्त हुई

वस्तुतः दयानन्द पुनर्निर्माण और राष्ट्रीय संगठन के प्रबलतम अग्रणियों मे से थे।"

महर्षि दयानन्द की शिक्षाओ ने एकमात्र भारतीय रजवाडो मे ही नही अपितु समस्त भारत ही क्या भारत से बाहर भी अमित प्रकाश प्रसारित किया है। उस प्रकाश को देशी रजवाडों तक सीमित समझना वा बताना ठीक नही है।

अंग्रेजी की सेवा करने वाले भारतीयों को इतिहास में स्थान नहीं मिला।

कान्स्टी ट्यूशन क्लब नई दिल्ली मे 'हिन्दी दिवस' के अवसर पर आयोजित एक विशाल सभा का उद्घाटन करते हुए भारत सरकार के सूचना मंत्री श्रीयुत डा० केसकर ने जो भाषण दिया था उसका निम्न लिखित भाग बडा उपयोगी है :—

"अंग्रेजी सीखने के लिए अग्रेजी सभ्यता सीखनाआवश्यक है। हमारे देश में काम-काज के लिए कुछ समय तक कार्य-व्यवहार में अंग्रेजी चलती है। परन्तु यह आवश्यक नहीं है कि अग्रेजी देश में सदा बनी रहेगी। हमारा लक्ष्य राष्ट्रभाषा हिन्दी को उन्नति करके उसे उपयोग में लाने का है।

अग्रेजी शिक्षा का क्रम इस ढग पर चलता है कि अंग्रेजी सभ्यता को विवश होकर अपनाना पड़ता है। जिस इतिहास को अग्रेजी जानने के लिए पढ़ना पड़ता है उससे हमारा कोई सम्बन्ध नहीं होता।

अग्रेजी की सेवा करने वाले लोगों को भी तब तक यह महत्त्वपूर्ण स्थान नहीं मिलता जबतक वे अग्रेज न हों। यही कारण है कि स्व० सरोजिनी नायडू को जीवन भर अग्रेजी साहित्य की सेवा करने पर भी अग्रेजी साहित्य के इतिहास में कहीं कोई स्थान नहीं मिला। यदि वह अपनी साहित्य सेवा उर्दू बंगला आदि में करती तब यह साहित्याकाश में सिरमौर बनतीं। गुरुदेव टैगौर यदि बंगला में साहित्य साधना न करते तो अग्रेजी के तीसरे दर्जे के कवि गिने जाते। माइ केल मधु सूदन दत्त बचपन से ही अग्रेजी कविता करने लगे थे। जब वह एक अंग्रेज आलोचक के पास अपनी कविता दिखाने गए तो उस आलोचक ने कविता पसन्द करके भी यही कहा 'यदि बुरा न मानो तो बगला में ही कविता करो। इस बात का परिणाम यह निकला कि उन्होंने 'मेघनाद वध' जैसा उत्कृष्ट काव्य लिखा जिसकी गुरुदेव टैगौर तक ने सराहना की।"

पं० दत्तात्रेय प्रसाद जी

हैदराबाद आर्य जगत् के वयोवृद्ध नेता तथा आर्य-प्रतिनिधि सभा मध्य दक्षिण हैदराबाद के उप प्रधान श्री पं० दत्तात्रेयप्रसाद जी एडवोकेट के निधन का समाचार देते हुए बडा दुख होता है। हैदराबाद प्रदेश मे आर्य समाज के प्रचार मे आपने जो सेवाएँ की थी वह अविस्मरणीय रहेगीं। साथ ही उन्होने शिक्षण क्षेत्र मे भी केशव स्मारक आर्य विद्यालय के मन्त्री रूप में तथा बासिस मे आर्यन् कालिज की स्थापना के द्वारा महान् कार्य किया था और आर्य समाज द्वारा समय-समय पर चलाए गए आन्दोलनो मे विशेषकर हैदराबाद सत्याग्रह तथा पंजाब हिन्दी रक्षा सत्याग्रह में भी सक्रिय भाग लिया था। उनके निधन से आर्य जगत् की महान् क्षति हुई है जिस की पूर्ति निकट भविष्य में शायद ही सभव हो। हम परमात्मा से प्रार्थना करते है कि दिवंगत् आत्मा को सद्गति तथा कुटुम्बी जनों को धैर्य प्रदान करें।

हम सब मननशील बने रहें

(वा० कालीचरण आर्य)

तन्तुं तन्वन्रजसो भानुमन्विहि ज्योतिष्मतः पथो रक्ष धिया कृतान् ।

अनुल्बणं वयत जोगुवामपो मनुर्भव जनया दैव्यं जनम् ॥

॥ ऋ० १०—५३—६ ॥

(जीवन के कर्म रूपी) तन्तु को तान कर (अग्रसर होते हुए) विश्व की परिक्रियाओ के प्रकाश करने वाले (के मार्ग) का अनुसरण करो। (उन) ज्योतिपूर्ण मार्गों को जिन्हे बुद्धि व पवित्र कर्मों द्वारा निर्माण किया गया है संरक्षण करो। प्रभु-परमात्मन, स्तोताओ (अपने भक्तों) के पवित्र कर्मों को दोष रहित कर दे। (निरन्तर) मननशील बने रहे तथा दिव्य गुण विशिष्ट जन-समुदाय के उत्पादक बनो।

प्रभु-परमात्मा ने वेद मन्त्र मे उपदेश किया है और आदेश दिया है कि हम सब मननशील बने रहे। कभी विचलित न हो। मनुष्य मननशील बनने से ही मनुष्य है अन्यथा पशु और मनुष्य मे कोई अन्तर नही, अपितु यदि यह कहा जाये तो कुछ भूल न होगी कि मनुष्य यदि मननशील नही है तो वह पशुओ से नीचे है क्योकि परमपिता परमात्मा ने मनुष्यो मे जो स्वाभाविक शक्ति स्वयं को जीवित रखने के लिए दी है वह बहुत साधारण और पशुओ मे जो स्वाभाविक शक्ति उनकी अपनी

जीवन यात्रा पूर्ण करने के लिए दी गई है वह उनके लिए पर्याप्त और पूर्ण है। यह पशु योनि भोग योनि है। कर्म योनि नही है, उसे अवसर नही दिया गया कि वह बुद्धि का प्रयोग कर जिस अवस्था मे उत्पन्न किया गया है उससे आगे बढे और इसलिए यह आवश्यक था कि उसकी नैसर्गिक शक्ति (Natural Instinct) बहुत ऊँची हो। मनुष्य अपनी बुद्धि का प्रयोग कर सकता है और उभय योनि मे है अपनी बुद्धि के प्रयोग से, और कर्मो द्वारा बहुत आगे जा सकता है इसलिए उसका जीवनोद्देश्य भी बहुत ऊँचा है और नैसर्गिक शक्ति दुर्बल है। मनुष्य को आदेश है कि वह उस परमपिता परमात्मा के बनाए हुए संसार मे प्रभु की परिक्रियाओ का अनुसरण करे जिस प्रकार प्रभु की रचना मे ससार की प्रत्येक वस्तु प्राणी मात्र के कल्याण के वास्ते है और प्रभु की प्रत्येक परिक्रिया संसार के प्राणियो का कल्याण कर रही है। कोई भी वस्तु या उसकी परिक्रिया निरर्थक नही है। इसी प्रकार मनुष्य का कर्तव्य है कि वह भी प्रभु का अनुसरण करते हुए अपनी प्रत्येक क्रिया से समस्त प्राणियो के लिए हितकर सिद्ध हो किसी का अहित किसी समय भी उसके मस्तिष्क मे न आने पावे। यह तब ही सम्भव है जब कि मनुष्य स्वयं प्रभु के बतलाए हुए मार्ग का अनुसरण करे। सर्वश अपने को उन्ही व्यक्तियो अथवा उन्ही कर्मो से सम्बन्धित रखे जिनसे उसके अन्दर की दैवी शक्तियाँ उन्नत हो और आसुरी दबी रहे। सत्संग और कुसग अपना प्रभाव रखता है सत्सग से मनुष्य दैवी शक्तियो को जागृत करता है। और उनका प्रयोग भी करता है परन्तु कुसग इसके विपरीत दैवी शक्तियो को दबा कर आसुरी वृत्तियों को जगाता है। इसीलिए प्रभु का आदेश है कि जिस ज्योति पूर्ण मार्ग का बुद्धि और पवित्र कर्मों द्वारा निर्माण किया गया है उनका संरक्षण करो। संरक्षण के अर्थ यही हैं कि स्वयं उस दैवी मार्ग पर चलो अन्यों को उस मार्ग पर चलने की प्रेरणा करो। यदि हमारे सामने कोई मनुष्य इसके विपरीत मार्ग पर चलता है उसे उस पर से बचाने का यत्न करना चाहिए। किसी भी भूल करने वाले मनुष्य की भूल देख कर चुप नही रहना चाहिए।

इस प्रकार अपने जीवन को बनाने वाला मनुष्य निस्सन्देह वेद की इस आज्ञा का पालन करता है कि तुम निरन्तर मननशील बने रहो। हा, एक भय अवश्य है कि जिस प्रकार फेकी हुई गेद को जो पृथ्वी पर तेजी से भाग रही हैं, पृथ्वी प्रतिक्षण उसे अपनी ओर आकर्षित करती है और रोकने का यत्न करती है परन्तु यदि गेन्द की गति गेद मे दी हुई शक्ति के कारण अधिक है तो पृथ्वी की आकर्षण शक्ति उसे रोक नही सकती। यदि गेद की शक्ति निर्बल हो जाती है तो भूमि का आकर्षण उसे रोक कर आगे बढने से रोक देता है इसी प्रकार मननशील मनुष्य बन जाने के बाद भी यदि अपने अन्दर स्वाध्याय, सत्संग और प्रभु-भक्ति से वंचित कर लेता है तो ससार के अनेक आकर्षणो की ओर जो मनुष्य को अपनी ओर खेंच रहे हैं खिच जाता है और पुनः पूर्ववत् मननशील बनने की पूर्व दशा मे गिर जाता है और कभी-कभी मननशील मनुष्य के हृदय मे अपनी परिस्थिति को ऊँचा ले जाने के पश्चात् अभिमान की जागृति भी उसे गिरा देती है इसलिए उपासक को सचेत रहने की आवश्यकता है और जैसा प्रभु ने वेद मन्त्र में आदेश दिया है हम प्रभु से प्रार्थना करते रहे। प्रभु हमारे कर्मों को दोष रहित कर दें।

मनुष्य को सर्वदा यह ध्यान रखने की आवश्यकता है कि उसका पैर कहीं फिसल न जाय । वाह्य जगत् मे ही ऐसे आकर्षण नही है जो मनुष्य को अपनी ओर खेंचते रहते हैं और जिनसे बचने की हर समय अत्यन्तावश्यकता है मनुष्य के अन्दर भी इस प्रकार की आसुरी शक्ति हर समय काम करती रहती है । उसको दबाए रखने की आवश्यकता है ताकि मनुष्य के कर्म प्रभु के आदेशानुसार दोष रहित रह सके । मनुष्य मे दोष के कारण किसी न किसी रूप मे हर समय विद्यमान है जो अनुकूल वायुमण्डल पाकर जीवित और जागृत हो जाते हैं । दोषो के फलने और फूलने वाली भूमि जिसमे कि दोष उत्पन्न होते है, बढते हैं, फलते है और फूलते है वह मनुष्य का अपना ही अन्त, करण है और अविद्या उसका मुख्य कारण है। अविद्या के ही कारण वस्तु के प्रयोग मे उसके हित और अहित का जब विचार नही रहता, तब ही दोष का कोई अकुर उभर पडता है और यदि उसी समय उसको दबा न दिया तो वह एक बहुत बडे वृक्ष का आकार बन जाता है और उस समय उससे छुटकारा पाना मनुष्य की शक्ति से बाहिर हो जाता है । अतः प्रथम तो मनुष्य को अविद्या रूपी अन्धकार से अपने को पृथक् ही रखना चाहिए । वेद और वेदानुकूल ग्रन्थो के स्वाध्याय मे लगा रहना चाहिए, सत्संग मे सम्मिलित होने की कभी अवहेलना न करनी चाहिए, यही एक मार्ग है जो प्रभु ने हमे इस वेद मन्त्र मे बतलाया है । प्रभु के समस्त कार्य जो नित्य प्रति और हर समय होते रहते है और जो उसके दिए ज्ञान वेदानुकूल हैं यदि हम उनका ही अवलोकन भली प्रकार करते रहे तो भी मनुष्य दोष रहित हो सकता है और रह सकता है ।

वेद ने अपने अन्तिम पद मे मनुष्य को आदेश दिया कि वह संसार मे स्वयं दोष रहित बन कर मननशील बनकर समस्त दुर्गुणों से अपने को पृथक् रख कर अपने को ही सन्तुष्ट न कर ले अपितु आने वाले ससार के लिए जन-समुदाय का उत्पादक बने । जिस प्रकार आर्य समाज के नियम मे बतलाया गया है कि मनुष्य को अपनी ही उन्नति से सन्तुष्ट न रहना चाहिए किन्तु सबकी उन्नति मे अपनी उन्नति समझनी चाहिए । यह तब ही सम्भव है जब मनुष्य जन-सम्पर्क मे आकर ससार को हेय न जानकर बल्कि ससार को मुक्ति का साधन मान कर अपने व्यवहार से अपने ज्ञान से, अपनी शक्ति से अर्थात् हर प्रकार से यह यत्न करता रहे कि मननशील ही हो और दुर्गुणो और दुर्व्यसनो स रहित हो । ससार का नियम है कि बुराई से बुराई होती है, और भलाई से भलाई होती है । भलाई से बुराई उत्पन्न नही होती यह असम्भव है इसलिए उत्पादक उत्पन्न करने वाला जब भला है और उसने जब अपने आप को भला बना लिया है तो कोई कारण भी नही है कि उससे उत्पन्न होने वाला भावी जन-समुदाय भला न बने ।

अन्त मे मैं यही प्रार्थना करूगा कि मनुष्यो को अपने जीवन मे उत्तम कर्म करते हुए, जन-समुदाय के साथ उत्तम व्यवहार करते हुए, प्रभु की आज्ञा का पालन करना चाहिए, यह विश्व की परिक्रियाओ का अनुसरण करे ज्योति पूर्ण मार्ग का जो बुद्धिपूर्वक और पवित्र कर्मों द्वारा निर्माण किया गया है उसका सरक्षण करे अपने को दोष रहित रखे और मननशील बन कर दिव्यगुण विशिष्ट जन-समुदाय के उत्पादक बन

—०:०:०—

क्यों कहां से और किधर को ?

श्री स्व० राइट आनरेबुल लार्ड पैथिक लारन्सआव पीजलेक पी० सी० एम० ए० भूतपूर्व भारत मंत्री लन्दन

जब से मनुष्य का प्रादुर्भाव हुआ है तब से ही वह जीवन के अभिप्राय पर विचार करता रहा है। उसने अन्य मनुष्यों को उत्पन्न, युवा और वृद्ध होते एवं मरते हुए देखा है। उसने देखा कि पशु-पक्षी, कीट-पतंग, मछली और मगरमच्छ यहाँ तक कि वृक्ष और वनस्पतियाँ भी परिवर्तन और ह्रास की एक जैसी प्रक्रिया में से होकर गुजरती है। उसने दिन और रात, वर्षा और धूप, गर्मी और सर्दी, गरज और बिजली, बाढ और भूकम्प भी देखे है। उसने समय २ पर सूर्य और चन्द्र ग्रहण का भी अवलोकन किया है। उसने पुरुषों और स्त्रियों के व्यवहारों को भी देखा है जिनमे से उसने कुछ को पसन्द किया और कुछ को नापसन्द किया है। उसने अपने हृदय पर भी दृष्टि डाली और देखा कि उसमें इच्छाएँ और भूख विद्यमान है जिनमें से उसने कुछ को चुनकर उनकी पूर्ति की और कुछ का परित्याग कर दिया।

इन सब वस्तुओं पर विचार करते हुए उसके मन मे यह प्रश्न उठा कि ऐसा क्यो होता है? जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त मनुष्य को इस मार्ग पर चलना होता है। संसार के व्यक्ति क्यो स्वस्थ और सुखी है और कुछ व्यक्ति क्यो अस्वस्थ और दुःखी है? मनुष्य का जन्म क्यो होता है? और वह कहाँ से आता और कहाँ जाता है? इन प्रश्नो के कुछ समाधान के लिए मनुष्य को परमात्मा की सत्ता की अनुभूति हुई उसने अपनी आकृति का परमात्मा बना डाला जो मानव से तो कही अधिक शक्तिशाली और स्थिर था परन्तु उसमे मानवीय गुण और आकांक्षाएँ भी थीं। मानव स्वरूप यह परमात्मा पर्वतो की ऊँची से ऊँची चोटियों पर, बादलों वा सूर्य से ऊपर आकाश मे निवास करता हुआ माना गया। वही परमात्मा क्रोध और प्रेम का प्रदर्शन कर सकता था और उपहारों द्वारा सन्तुष्ट भी किया जा सकता था। इतना ही नही वह रति सुख भी ले सकता था।

मानव स्वरूप परमात्मा की इस भावना से मानव जाति की उच्च एव दिव्य भावनाओ की सन्तुष्टि न हो सकी भले

ही इनसे मानव-स्वभाव की चंचलता और स्वार्थपरता का विश्लेषण होता देख पडा।

प्राचीन काल से ही समस्त भूमण्डल के ऋषियों, कवियो और मनीषियों को यह भावना अपर्याप्त और घृणित जान पडती रही। भारत मे वेदो की महान् गरिमामय शिक्षाओं मे मानव के प्रादुर्भाव और उसकी अन्तगति के विषय मे बडे उच्च भाव पाए जाते है। यूनान के दुःखान्त ग्रन्थ लिखने वालो ने खुले तौर पर अन्यायी देवताओ को कोसा। बुद्ध ने कल्याणकारिणी अन्तिम सत्ता सम्बन्धी अपने उच्च सिद्धान्त की व्याख्या की। ईसा ने परमात्मा मे प्रेम और दया के आवश्यक तत्वो को देखा।

हमारे इस युग मे विज्ञान ने हस्तक्षेप करके समय और स्थान की दृष्टि से विश्व का एक नया चित्र खींच कर हमारे सामने प्रस्तुत कर दिया है। ऐसा करते हुए यह अनेक धार्मिक भावनाओ और परम्पराओ के विपरीत चला गया है।

समस्त प्राणियो का उद्भव पृथक्-पृथक होता है। इस सिद्धान्त के स्थान मे जीवन के विभिन्न स्वरूपो की व्याख्या के रूप मे अब विकासवाद को ही प्राय मान्यता दी जाती है। चेतन और अचेतन की चिर-स्वीकृत सीमा-रेखा पर भी शंका की जाने लगी है। परमाणुओ से मानव का निरंतर विकास होता है इस पर भी सदेह किया जाने लगा है। यह स्वीकार किया जाता है कि नक्षत्रो की दूरी जानी जा सकती है और पृथ्वी की आयु करोडो वर्ष बताई जाती है।

प्रश्न यह है कि इस सबसे हमारा क्या बनेगा। ? कुछ व्यक्ति ऐसे हैं जो यह सोचते हैं कि मानव-स्वरूप परमात्मा की प्राचीन भावना के नष्ट और सृष्टि रचना के ऐतिहासिक काल के अप्रमाणित सिद्ध हो जाने पर धर्म के लिए कोई स्थान नही रह जाता और यह विश्व स्वतः निर्मित और स्वचालित सत्ता है। उनकेलिए मानवकी चरम अभि व्यक्ति मानववाद है जिसमे प्रेम, साहस, धैर्य, ईमानदारी और जन-कल्याण आदि २ नैतिक गुण सन्निहित है। कुछ ऐसे व्यक्ति है जो अपने २ धर्म विश्वासो पर श्रद्धा और भक्ति से चिपटे हुए हैं। उनका कथन है कि उनसे हमें आन्तरिक शान्ति मिलती है और वे विश्वास अटल और सत्य है।

क्या हम किनारे की इन दोनो बातो मे से किसी एक को स्वीकार कर सकते हैं ? क्या हम विज्ञान के आविष्कारों को अमान्य करदे वा अपने को ईश्वर-विहीन जगत के अर्पण करदे ? सत्य तो यह है कि धर्म और विज्ञान एक दूसरे के विरोधी नही अपितु पूरक है। दोनोंमे अकेला कोई भी मनुष्य की उपर्युक्त जिज्ञासोओ का समाधान प्रस्तुत करने मे समर्थ नही है।

विज्ञान का वास्तविक दावा क्या है ? इसका दावा यह है कि यह दिखाने के लिए प्रमाण है कि विकासवाद से जीव की उत्पत्ति हो सकती है और हुई भी है। वह प्रकृति की सत्ता स्वीकार करता और यह मानता है कि प्रकृति मे कुछ तत्त्व है और उसकी कुछ प्रक्रियाएँ नियमबद्ध हैं परन्तु विज्ञान यह बताने मे असमर्थ रहा है कि प्रकृति अस्तित्व मे किस प्रकार आई और यह अकाट्य नियमो का पालन क्यो करती है।

धर्म का दावा क्या है ? इसका दावा है कि धर्म वा आध्यात्मिकता मानव-स्वभाव का अविच्छिन्न अग है जो एक ओर उसे मनुष्यो से और दूसरी ओर परमात्मा से प्रेम करना सिखाता है इस सिद्धान्त को स्वीकार करने वालो का धर्म उन्हे मानव-मात्र से प्रेम करना जीवन मे गुणो को धारण करना और उच्च गति को प्राप्त करना सिखाता है।

परन्तु मनुष्य आनन्दकंद परमात्मा के स्वरूप की पूर्ण झाँकी लेने मे समर्थ नही है। यदि विज्ञान आविष्कारो के नए २ अध्याय खोलता रहे और दिव्यालोक से आलोकित पुरुष और देवियो के बुद्धि-सगत मार्ग-प्रदर्शन मे धर्म विकसित होता रहे तो मनुष्य दिव्यता के पुज परमात्मा का अधिकाधिक सान्निध्य प्राप्त करने की आशा कर सकता है।

(वर्ल्डफेथ पत्रिका के सौजन्य से)

बड़ा अन्तर है

(श्री पूर्ण चन्द्र एडवोकेट आगरा)

संसार मे हर पदार्थ निराला है। प्राणी जगत मे और विशेषकर मनुष्यों मे दो आदमियो की सूरत नही मिलती। यदि कभी मिलने लगती है तो बडा आश्चर्य होता है। यदि जोडी मे जोतने के लिए दो घोडे एक ही शकल सूरत के मिल जाते हैं तो उन का मूल्य दुगना हो जाता है। कोई चीज एक दूसरे से बाहर की रूप रेखा मे नही मिलती।

साधारण की बोलचाल मे नीचे लिखे प्रकार हैं जिन से अन्तर का वर्णन किया जाता है :—

(१) रात-दिन का अन्तर।

(२) आकाश-पाताल का अन्तर।

(३) जिन्दगी-मौत का अन्तर।

यह तीनो अन्तर सब की समझ मे आते हैं और सब पर इन का प्रभाव है यदि अन्तर समझ मे आ जाये तो आज ससार की समस्या बहुत सरल हो सकती है।

इन्द्र का प्रभाव

इन्द्र शब्द सूर्य के लिए भी आता है, जीव आत्मा के लिए भी और परमात्मा के लिए भी। यदि इन्द्र को सूर्य के रूप में समझे, तो रात और दिन का बडा अन्तर होते हुए भी कोई अन्तर नहीं रहता। केवल अवस्था का भेद हो जाता है। समय-विभाग की दृष्टि से पृथ्वी का जो विभाग सूर्य रूपी इन्द्र के सम्मुख होता है वहाँ दिन और जहाँ सूर्य सम्मुख नहीं होता वह रात। रात और दिन में अन्धेरे और उजाले का भेद है। उजाला अस्थायी सत्ता है, अन्धेरा उजाले का सामयिक अभाव है। कैसा भी प्रकाश का अभाव क्यो न हो, कुछ न कुछ प्रकाश के साधन उपलब्ध होते हैं,साधारण चन्द्रमा विद्युत् दीपक, सब छोटे बडे अपने ढंग के प्रकाश के साधन है परन्तु यह बात पदार्थ विज्ञान वालो ने सिद्ध कर दी है कि प्रकाश थोडा और बहुत जिस रूप मे भी दिखाई देगा या उपस्थित होगा वह सूर्य के ही प्रभाव से होगा।

आत्मा के रूप में इन्द्र

यदि आत्मा को इन्द्र के रूप में देखे और समझे तो जीवन और मरण का अन्तर समझ मे आजाता है। जीवन आत्मा के समावेश का नाम है। मृत्यु आत्मा के निकल जाने का परिणाम है। प्राणी जगत मेइन्द्र रूपी आत्मा अपना साम्राज्य रखते है। यदि आत्मा रूपी इन्द्र सम्मुख रहे तो जीवन और मरण की समस्या का ही समाधान नही होगा परन्तु जीवित प्राणियो मे जो विषमताये और भिन्नताये दिखाई देती हैं वह भी समझ में आ जायेगी। प्राणियों मे जाति, आयु, और भोग का अन्तर है। जाति से अभिप्राय शरीर और योनि से है, आयु से अभिप्राय उस अवधि का है, जो जन्म से मरण तक किसी प्राणी को जीवित रहने के लिए प्राप्त होती है भोग से अभिप्राय उन अवस्थाओं का है जिसमे प्राणी को अपना जीवन निर्वाह करना पडता है। यह सब भेद कर्मों के फल के अनुसार है और इन्द्र रूपी परमात्मा के न्याय के अनुकूल। इन्द्र रूपी

आत्मा जीवन-मरण के चक्र मे घूमता है और जीवन में भी अनेक रूप और अवस्थाओं मे होकर अपना जीवन निर्वाह करता है। इन्द्र रूपी आत्मा के समझ लेने से उपनिषद की शिक्षा के अनुसार मनुष्य आत्मवत सब प्राणियों को देखने की भावना रख सकता है। आज ससार मे और देश मे जितने विवाद रूप, रग, लिंग, भाषा, सम्प्रदाय और जाति के आधार पर दिखाई दे रहे है उन सब का समाधान इन्द्र रूपी आत्मा को समझ लेने से हो सकता है। आत्मा को गहराई तक देख लेने का अभ्यास साधारण व्यक्तियो को नही है। कभी-कभी तो बडे बडे विशेषज्ञो को भी यह दृष्टिकोण समझ मे नही आता और भूल जाता है। पदार्थ विज्ञान वाले रचना की विवेचना मे इतने रत है, कि उन की दृष्टि न तो इन्द्र रूपी आत्मा तक पहुचती है और न इन्द्र रूपी परमात्मा तक।

परमात्मा इन्द्र के रूप में

आकाश पाताल का अन्तर बडा विशेष है। कहने के लिये यह प्रसिद्ध है कि जमीन आसमान का अन्तर है। परन्तु इन्द्र रूप में परमात्मा सन्मुख रहे तो आकाश पाताल का अन्तर भी कोई अन्तर नही। केवल इस रचित जगत की दो दृष्टि के लिये सीमाये है, यदि परमात्मा विश्व निर्माता के रूप में और सर्व व्यापक और अन्तर्यामी के रूप में हमारे सन्मुख रहेगा तो आकाश पाताल का भी अन्तर समाप्त और पृथिवी के और जितने अंग और विभाग हैं, देश और देशान्तर है, सागर और पहाड़ हैं वह सब एक ही विधाता के विधान में एक ही रचयिता ने रचे हुए और एक से नियमों में बन्धेहुए दिखाई देगे। आज इन्द्र के तीनो स्वरूप सन्मुख न होने से बडा विवाद बढ रहा है और कलह बढता जा रहा है।

इन्द्र सभा

हमने बहुत दिन हुए एक उर्दू की किताब नवल-किशोर प्रेस लखनऊ की छपी हुई 'इन्द्र सभा' नाम की पढी थी, उस मे मुख्य पृष्ठ पर एक राजा का चित्र था जहां शराब के दौर चल रहे थे और वेश्याओ का नृत्य हो रहा था। अब इस इन्द्र शब्द के महत्व को समझते हुए उस चित्र का जब ध्यान आता है तो यह बात समझ मे आती है कि भोगवादियो की दृष्टि ने केवल भोगविलास ही सन्मुख रहता है। उन की दृष्टि वास्तविक परिस्थिति तक नही पहुँचती। राजा इन्द्र की सभा मे जो वास्तव में मनुष्य शरीर है और यह विश्व है भोग और विलास का चक्र तो चल ही रहा है परन्तु यह भोग और विलास सब नाशवान् और परिवर्तनशील है, यदि स्थायी सत्ता पर ध्यान होगा तो यह सब भोग विलास के चक्र कर्म व्यवस्था के और भोग व्यवस्था के परिणाम स्वरूप ही दिखाई देगे।

अनेकता में एकता।

यदि प्रचलित अनेकता मे एकता को समझना है तो इन्द्र रुपी सूर्य इन्द्र रूपी आत्मा और इन्द्र रूपी परमात्मा समझ लेना चाहिये। सारा विश्व उस विश्व-विधाता के आधीन दिखाई देगा।

ईशावास्यमिद सर्व्वं यत्किंच जगत्या जगत्

ओ३म्

आर्य समाज में सस्वर वेदपाठ की व्यवस्था हो

श्री वीरसेन वेदश्रमी, वेद सदन, महारानी रोड इन्दौर

स्वर सहित वेद मन्त्रो के पाठ से सदा तात्पर्य प्रमुख रूप से यही रहता है कि उदात्त, अनुदात्त और स्वरित स्वरो के सहित मन्त्र का उच्चारण मन्त्रों मे लगे हुए चिह्नों के अनुसार कण्ठ स्वर से करना। इस प्रकार उच्चारण करने से बहुत ही उत्तम लाभ होता है। अपने शरीर पर और विश्व पर भी किस प्रकार प्रभाव पडता है वह स्वर शास्त्र का एक महत्वपूर्ण विज्ञान है। इसके अतिरिक्त यदि नियत चिह्नो के अनुसार मन्त्रों का उच्चारण न किया जावे तो स्वर के द्वारा जो महान् लाभ स्वयं को होना चाहिये और विश्व पर होना चाहिये, वह नही होगा।

अपने स्वाभाविक उच्चारण मे, अपने बिना जाने हुए भी उदात्तादि स्वरो का उच्चारण होता रहता है। अतः उदात्तादि नियमो के जाने बिना भी जो मन्त्रो का पाठ करते है उसमे भी स्वर तो होते ही हैं। परन्तु उसको स्वर पाठ नहीं कहा जा सकता। अपितु परमात्मा ने सृष्टि यज्ञ के प्रारम्भ मे वेद मन्त्रों का जो स्वर ऋषियों के ज्ञान मध्य प्रकट किया, उसी स्वर मे तथा उन ऋषियों द्वारा सृष्टि प्रारम्भ काल से अद्यावधि गुरुशिष्य परम्परा द्वारा वेदमन्त्रों के उच्चारण की जो विद्या एवं प्रकार सुरक्षित है उसी के अनुसार वेद मन्त्रो का उच्चारण करना ही सस्वर वेद पाठ कहा जाता है या माना जाता है। उसी पाठ की शिक्षा, रक्षा एवं प्रचलन के लिए जो ग्रन्थ ऋषियों ने निर्माण किये वे शिक्षा ग्रन्थ कहलाते हैं। ये ही शिक्षा ग्रन्थ वेद के षडंगों में प्रथम हैं।

चार वेदों का सस्वर पाठ अपने-अपने वेद की रीति

से होता है और वह जिस प्रणाली से हो रहा है अर्थात् काशी, पूना आदि स्थानो मे प्रचलित है उसे महर्षि स्वामी दयानन्द जी सरस्वती ने भी मान्य किया है और उसी को ग्रहण करने के लिए भी कहा है। अत परम्परागत वेद मन्त्र पाठ की प्रणाली ग्राह्य है। उस प्रचलित पाठ मे यदि कोई दोष हो तो उसका ज्ञान शिक्षा ग्रन्थो के अध्ययन और स्वर पाठ के अभ्यास से ही जाना जा सकता है। अन्य प्रकार से नही। इस प्रकार चारों वेदो के मन्त्रो का ४ प्रकार का सस्वर पाठ हुआ। परन्तु यदि कोई इस बात को न जानकर या न मानकर अन्य प्रकार से ही अपने मन माने ढंग से मन्त्रों का उच्चारण करे तो वह उचित नही होगा। शिक्षा ग्रन्थो ने वेदो के उच्चारण के बारे मे जो नियम बनाये हैं, उन्हें मान्य करना होगा। अन्यथा सभी व्यक्ति अपने-अपने पाठ को ही उचित समझेंगे और उसी के प्रचलन का आग्रह भी करेगे।

आर्य समाज ने वेदो का बहुत प्रचार किया और घर-घर वेद मन्त्रो का प्रचलन किया। यह तो बहुत ही उत्तम कार्य हुआ। जिन लोगो को संस्कृत या देवनागरी की वर्णमाला का भी बोध नही था, उनको भी वेद मन्त्र कण्ठस्थ करा दिये और वे सन्ध्या हवन भी करने लगे। यह एक अद्भुत एवं आश्चर्यमय कार्य वेदो के प्रचलन एवं प्रचार के लिये कर दिया। भारत के किसी-किसी नगर मे ही कोई वेद मन्त्रो का उच्चारण करने वाला था, आर्य समाज के प्रचार एवं प्रयत्न से घर-घर वहाँ वेद मन्त्रो की ध्वनि गुंजायमान होने लगी।

अब आवश्यकता इस बात की है कि आर्यसमाज वेदो के शुद्ध एवं सस्वर मन्त्र पाठ के शिक्षण और प्रचार की भी समुचित व्यवस्था करे। हम सब वेदो को परमात्मा का परम पवित्र ज्ञान मानते हैं और यह भी मानते हैं कि वह ज्ञान शब्द सहित ही दिया गया था। तथा शब्द और अर्थ का भी सम्बन्ध नित्य है। अतः शब्दो के यथार्थ उच्चारण से उसका यथार्थ अर्थ भी समझा जा सकता है और यदि उसको थोड़ा भी अशुद्ध उच्चारित किया जावे तो अर्थ का अनर्थ भी हो सकता है। इसी प्रकार शब्दों को उदात्तादि स्वरो के साथ बोलने से भी अर्थों का प्रकाश या ज्ञान होता है। एक ही शब्द स्वर भेद से अन्य अर्थ को भी प्रकट करने लगता है। अतः वेद मन्त्रों को वर्ण और स्वर दोनों ही रीति से शुद्ध एवं सस्वर पाठ करना चाहिये।

शब्दो के अशुद्ध उच्चारण से वेद मन्त्रों के अर्थो में कितना परिवर्तन हो जाता है इसको निम्न उदाहरणो से समझ सकते है।

(१) यद्भद्रम् = (यत् + भद्रम्) जो कल्याण कारक है (उसे हमे प्राप्त कराइये) यह अर्थ है। परन्तु जब हम—यदभद्रम् = (यत् + अभद्रम्) यह उच्चारण करते है तो अर्थ हो जाता है कि जो अकल्याणकर, अभद्र, अशुभ, बुरा है वह हमे प्राप्त कराइये।

(२) विधेम = विशेष भक्ति करे—यह अर्थ महर्षि दयानन्द जी ने किया है। परन्तु जब हम इसके स्थान पर—वधेम = यह उच्चारण करते है तो उसका अर्थ वध करे, मारे, काटे यह हो जाता है।

(३) भुवः = दुःख नाशक अर्थ है। परन्तु प्रायः लोग भवः = (भूर्भवः स्वः) कहते हैं। भव का अर्थ उत्पन्न होने वाला होता है। परमात्मा तो भुवः है, दुःख का नाशक है और वह तो अजन्मा है अतः उसे भवः नही कह सकते है।

(४) सुहुतं = अच्छी प्रकार से आहुति दिया गया हुआ यह अर्थ होता है। परन्तु यदस्यकर्मणो० मन्त्र बोलते समय लोग—सुहत = बोल देते हैं जिसका अर्थ हुआ अच्छी प्रकार से मारा या नष्ट-भ्रष्ट किया गया। इत्यादि प्रकार से अनेक शब्दो का अशुद्ध उच्चारण प्रायः लोग करते ही है।

मन्त्रो मे स्वर दोष से अर्थ भेद कितना हो जाता है इसको कतिपय निम्न उदाहरणो से जान सकते हैः—

(१) धीमहि = धारण करे। परन्तु जब = धीमहिं = इस प्रकार स्वर हो जाता है तो दो पद = धी। महि। हो जाते हैं और अर्थ हो जाता है धी = अर्थात् बुद्धि जो कि महि = अर्थात् प्रशंसनीय है।

(२) मा हिं ठ्ठ सीः=मत मारो, मत नष्ट करो यह अर्थ हुआ क्योंकि निषेधार्थ में=मा=शब्द उदात्त है। यदि=मोहिं ठ्ठ सं·.=ऐसा प्रयोग करे तो अर्थ हो जायगा—मुझे मारो। क्योंकि अपने अर्थ मे=मा=अनुदात्त होता है।

(३) यस्य क्षयाय जिन्वेथ=महर्षिदयानन्द इस मन्त्र का अर्थ पति के लिए स्त्री निमित्त करते हुए लिखते हैं कि वह स्त्री जिस अपने पति के निवास के लिये है उसे तृप्त करे। आद्युदात्त क्षय शब्द निवास अर्थ मे होता है अतः यहाँ क्षयाय शब्द का निवास के लिये अर्थ हुआ। अब यदि क्षयाय शब्द को मध्योदात्त=क्षयाय=इस प्रकार प्रयुक्त करें तो यहाँ विनाश के लिये अर्थ हो जाता है अर्थात् वह स्त्री पति के विनाश के लिये तृप्त करे। क्योंकि अन्तोदात्त क्षयशब्द नाश अर्थ मे होता है।

(४) भ्रातृव्यस्य वधाये=स्वर की दृष्टि से यहाँ भ्रातृव्य शब्द का अर्थ शत्रु है अर्थात् शत्रु के वध के लिये। क्योंकि आद्युदात्त भ्रातृव्य शब्द शत्रुवाची है। परन्तु यदि इसको=भ्रातृव्यस्य बधाय=इस प्रकार स्वर क साथ प्रयुक्त करे तो अर्थ हो जाता है · भतीजे के वध के लिये।

इत्यादि प्रकार से अनेक दोष स्वर के विपरीत या अशुद्ध बोलने से अर्थ भेद के कारण बन जाते हैं। कुछ लोग ऐसा समझते है कि मन मे जो भाव हैं उसी के कारण अर्थ का लाभ होना चाहिये, वाणी दोष से अर्थ मे दोष नही हो सकेगा। ऐसा समझना नितान्त अशुद्ध है तथा आज्ञानता भी है।

उच्चारण मे वर्ण और स्वरो के दोषों के अतिरिक्त छन्द दोष भी प्रचलित हो गये हैं उदाहरणार्थ–गायत्री मन्त्र "तत्सवितु.०" से "प्रचोदयात्" तक निचृत् गायत्री छन्द मे है। २३ अक्षर का निचृत् गायत्री छन्द होता है। परमात्मा ने इस मन्त्र की रचना निचृत् गायत्री छन्द में की है तो हमे भी उसकी रक्षा उसी छन्द में करनी चाहिये। परन्तु प्रायः लोग "वरेण्य" पद का उच्चारण "वरेणिय" इस प्रकार चार अक्षर तीन अक्षरों के स्थान पर करते हैं। इससे एक अक्षर बढ़ जाता है और २३ के स्थान पर २४ अक्षर हो जाते हैं। परिणामतः छन्द नियम से वह मन्त्र निचृत् गायत्री न रहकर गायत्री छन्द मे हो जाता है। परमात्मा के रचे छन्दों मे यदि हम अपना परिवर्त्तन मिश्रित कर देते हैं तब वेद की रचना परमात्मा ने की ऐसा कहना कठिन होगा। फिर परमात्मा के द्वारा रचे वेदमन्त्र और आपके द्वारा संशोधित वेद मन्त्र ये दो भेद हो जावेगे। हम सब अपने को अल्पज्ञ अवश्य मानते हैं और परमात्मा को सर्वज्ञ। ऐसी स्थिति में आपके परिवर्त्तन अग्राह्य है, हेय कोटि मे हैं। परमात्मा के द्वारा रचे वेद मन्त्रो मे किंचित् भी परिवर्त्तन महादोषपूर्ण तथा अविद्यायुक्त ही माना जावेगा।

इसके अतिरिक्त पुस्तकों मे प्रेस की भूल से तथा प्रकाशको की असमर्थता से मन्त्रो मे अनेक स्थानों पर त्रुटियाँ हो जाती है। सामान्य व्यक्ति तो छपे हुए को शुद्ध मानकर उसके अनुसार ही मन्त्रों का उच्चारण करता है और वैसा ही कण्ठस्थ कर लेता है। इस कारण भी अनेक अशुद्धियाँ सामान्य जनो मे प्रचलित हो गईं। अतः आर्यसमाज के लिये यह अत्यन्त आवश्यक है कि वह वेद मन्त्रों की शुद्धता की रक्षा के लिए उनके शुद्ध एवं सस्वर पाठ की भी व्यवस्था करे। यदि यह कार्य नहीं किया गया तो कालान्तर में वेदों के अशुद्ध उच्चारण का अपयश भी आर्यसमाज को प्राप्त होगा जिसका आभास अनेक घटनाओं से प्रकट हो चुका है।

—: o :—

विश्व-शान्ति विषयक वैदिक शिक्षाएँ

श्री पं० घर्म्मदेव जी विद्यावाचस्पति विद्यामार्तण्ड

शाश्वत शान्ति और आनंद की प्राप्ति मानव-जीवन का परम लक्ष्य है। अतः स्वभावतः प्रत्येक व्यक्ति शान्ति के लिए समुत्सुक रहता है यद्यपि दुर्भाग्य से बहुत कम व्यक्ति इसकी प्राप्ति के उपायो से भिज्ञ है। इस अज्ञान के कारण चहुओर कष्ट संघर्ष और ईर्ष्या-द्वेष व्याप्त है। मानव जाति के नेताओ और शुभ-चिन्तको के लिए उचित है कि वे शान्ति की उपलब्धि के उपायों पर गंभीरता पूर्वक विचार करे और उन उपायो को अपनाने की अपने अनुयायियों को प्रेरणा करे जिससे अखिल विश्व मे शान्ति व्याप्त हो जाय।

शान्ति विषयक वैदिक शिक्षाओ पर संक्षेप में विचार करना युक्तियुक्त होगा। वे शिक्षाएँ सार्वभौम हैं अत. समस्त कालो और समस्त स्थानो पर चरितार्थ होने योग्य हैं।

शान्ति विषयक कुछ प्रार्थना नीचे अंकित की जाती है जिनका प्रतिदिन किया जाना आर्यों के लिए आवश्यक ठहराया गया है।

ओं शन्नो देवी रभिष्टय आपोभवन्तु पीतये।
शंयोरभि स्रवन्तुनः ॥

अर्थात्—दिव्य सर्वव्यापक भगवान् आनन्द की प्राप्ति के लिए और पूर्ण सुख एव शान्ति के भोग के लिए हमें कल्याण दे और हम पर चारों ओर से सुख की वृष्टि करें।

ओं द्यौ शान्तिरन्तरिक्षꣳ शान्ति।

शान्ति पाप्ति के साधन

एक मात्र प्रार्थना पर्याप्त नही है। शान्ति की प्राप्ति के लिए हमे साधन जुटाने होते हैं और उन साधनो के विषय में वेदो से हमे सुनिश्चित निर्देश प्राप्त होते हैं।

शान्ति की प्राप्ति के लिए सबसे पहली बात जो हमें ध्यान मे रखनी होती है वह यह है कि परमात्मा स्थिर शान्ति का स्रोत और उसको प्रदान करने वाला है। दैनिक संध्या की समाप्ति पर हम निम्नलिखित मंत्र का उच्चारण करते हैं।

ओं नमः शंभवाय च मयोभवाय च नमः शंकराय च।
मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च।।

इसका अर्थ इस प्रकार है :—

सुख एवं शान्ति स्वरूप भगवान को नमस्कार हो, **उत्तम** सुख-दाता भगवान को नमस्कार हो, भक्तों के हितकारी भगवान को नमस्कार हो, मंगलमय भगवान को हमारा बारम्बार नमस्कार हो।

इस प्रकार शान्ति की उपलब्धि के लिए पहली आवश्यक बात प्रभु भक्ति है। यदि सब लोग सच्चे हृदय से परमात्मा के भक्त बन जायें और उसे समस्त प्राणियों का पिता और माता मानने लग जायें तो पारस्परिक घृणा, संघर्ष और ईर्ष्या द्वेष के लिए स्थान न रहे। वेद ने शिक्षा दी—

त्वं हि नः पिता वासो त्वं माता शतक्रतो बभूविथ।
अधाते सुम्नमीमहे।।

हे प्रभो, तू हमारा पिता है। तू हमारी दिव्य माता है। अतः आनंद और शान्ति के लिए हम एकमात्र तुझसे अभ्यर्थना करते हैं।

ईश्वर के इस पितृत्व का अर्थ है भ्रातृत्व। वेद के निम्नलिखित मंत्र में हमें स्मरण कराया गया है :—

अज्येष्ठासो अकनिष्ठास एते सभ्रातरो वा वृधुः सौभगाय।
युवा पितास्वपा रुद्र एषां सुदुघापृश्निः सुदिना मरुद्भ्य।।

ऋ० ५।५९।५

सब मनुष्य आपस में भाई भाई हैं, जन्म से न कोई बड़ा है और न कोई छोटा। समानता के इस भाव को धारण करते हुए सब ऐश्वर्य वा उन्नति के लिए मिलकर प्रयत्न करते और आगे बढ़ते हैं। परमात्मा सबका पिता और पृथ्वी माता है।

वेद हमें यह भी शिक्षा देते हैं कि शान्ति की उपलब्धि के लिए वाणी, मन और इन्द्रियों का उचित प्रयोग भी अत्यावश्यक है। इस प्रसंग में निम्नलिखित मंत्र विचार योग्य है :—

इयं वा परमेष्ठिनी वाग्देवी ब्रह्मसंशिता।
ययैव ससृजे घोरं तयैव शान्तिरस्तु नः।।
इदं यत् परमेष्ठिनं मनो वां ब्रह्मसंशितम्।
येनैव ससृजे घोरं तेनैव शान्तिरस्तु नः।।
इमानि यानि पञ्चेन्द्रियाणि मनः षष्ठानि।
मे हृदि ब्रह्मणा संशितानि।।

अथर्व० १९।९।३-५

हमारी यह वाणी जिसका दुरुपयोग संसार में भयंकर विप्लव उत्पन्न कर देता है हमें शान्ति प्रदायिनी होवे। यह शान्ति प्रदायिनी तब होती है जब ठीक ज्ञान प्राप्त होकर इसकी शक्ति बढ़ती और दूसरों को चमकाने एवं परमात्मा का गुणज्ञान करने में इसका प्रयोग होता है।

हे माता-पिताओं और बच्चो, गुरुओं और शिष्यो, शासको और शासितो, पति-पत्नियो! तुम्हारा मन जो संसार में घोर विनाश व्याप्त कर देता है सबको शान्ति और सुख प्रदान करने वाला हो। मन की शक्ति ठीक ज्ञान और प्रभु चिन्तन से विकसित होती है।

ये इन्द्रियाँ जिनका दुरुपयोग संसार में घोर उपद्रव व्याप्त कर देता है, सबको शान्ति देने वाली हो। मन की शक्ति ठीक ज्ञान उच्चकर्मों और जन-हित के कार्यों से विकसित होती है।

परमात्मा करे, समस्त संसार में शान्ति व्याप्त हो।

सामाजिक एकता

ऋग्वेद के अन्तिम सूक्त के निम्नलिखित मंत्रो मे सामाजिक एकता का बडा भव्य आदर्श प्रस्तुत किया गया है जिसके आचरण से शान्ति की समस्या सहज ही सुलझ सकती है।

संगच्छध्वं सं वदध्वं सवो मनांसि जानताम्।
देवाभाग यथापूर्वे संजानाना उपासते॥
समानी व आकूति: समाना हृदयानि वः।
समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति॥
सहृदयं सामनस्यमविद्वेषं कृणोमि व।
अन्यो अन्यमभिहर्यत वत्सं जातमिवाघ्न्या॥
स ध्रीचीनान् वः समनस्कृणोम्येकश्नुष्टीन्त्संवनेनसर्वान्।
देवा इवामृत रक्षमाणा सायं प्रात सौमनसो वो अस्तु॥
अथर्व० ३-३०, १-७

आयरलैंड के सुप्रसिद्ध कवि, कलाकार और तत्ववेत्ता डा० जेम्स कजिन डी० लिट० ने अपनी 'शान्ति का मार्ग' नामक उत्तम पुस्तक मे उपर्युक्त वैदिक शिक्षाओ पर विचार करके निम्न प्रकार से ठीक ही लिखा है —

"प्रेम करना, चिन्तन करना और कर्म करना ये तीनों वैदिक भावना के अनुसार निराशा से परिवेष्टित व्यर्थ की क्षणिक बाते नहीं है अपितु ये तीनों भौतिक प्रक्रिया के प्रतीक हैं जिनमें प्रभु के आनंद का पुट लगा होता है। वे प्रतिच्छाया हैं, नाचती हुई प्रतिच्छाएं है जो समस्त प्रकाशो के प्रकाश से प्रस्फुटित होती हैं, परन्तु वे प्रतिच्छायाएँ अन्धकार की नही अपितु प्रकाश की प्रतिच्छायाएं होती हैं। उस प्रकाश मे प्रभु की उस ज्योति में जो भौतिक जगत के माध्यम से हम तक आती है, मानव-समाज को एक आदर्श की उपलब्धि हो सकती है जो अल्पकालीन दंभ को समस्त प्राणियों के जीवन की पवित्रता के शाश्वत भाव में परिवर्तित कर देगा।

एक मात्र इसी वैदिक आदर्श पर जो विश्व के विषाद के कारणो को दूर कर प्रेम और सहानुभूति की भावनाएं जाग्रत करता है ससार का सुखधाम बनाया जाना सम्भव है।"

आवश्यक सूचना

मारीशस से आने के बाद से श्री स्वामी ध्रुवानन्द जी महाराज का स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहता है। उन्हें हृदय रोग की शिकायत हैं। चिकित्सा चल रही है। चिन्ता की कोई बात नहीं है। स्वास्थ्य की इस अवस्था में उन्हें पत्र-व्यवहार आदि की चिन्ताओं से जितना मुक्त रखा जा सके उतना ही अच्छा है। अत. आर्य जनता से निवेदन है कि सम्प्रति श्री स्वामी जी महाराज से सम्बद्ध पत्र-व्यवहार सार्वदेशिक सभा के साथ किया जाय।

भवदीय
(कालीचरण आर्य)
मन्त्री

देश-विदेश में हिन्दी के प्रति रुचि

हिन्दी दिवस का आयोजन

बुधवार १३-९-६१ को देश भर मे हिन्दी दिवस मनाया गया है। भारतीय संविधान की दृष्टि से यह दिन विदेशी भाषा की पराधीनता से मुक्ति पाने का दिवस था इसलिए स्वाधीनता दिवस, गणतन्त्र दिवस आदि के समान इस दिवस का भी उतना ही महत्व है।

भारतीय संविधान में सन् १९४८ में यह घोषणा की गयी थी कि देश में राज-काज की भाषा हिन्दी होगी। इस घोषणा का केवल हिन्दी भाषा-भाषी प्रान्तो में ही नही अपितु हिन्दीइतर प्रदेशो मे भी बड़ा स्वागत हुआ। हिन्दी को शक्तिशाली बनाने में जितना बडा योग अहिन्दी भाषा-भाषी व्यक्तियों का रहा है, वह कभी भुलाया नहीं जा सकता।

आर्य समाज के प्रवर्तक स्वामी दयानन्द ने देश में नवजागरण का जो शंख फूंका था उसमें उन्होंने राष्ट्र को विदेशी राज्य से मुक्ति पाने का ही सन्देश दिया था। स्वामी जी ने हिन्दी के माध्यम से सारे देश की टूटी कड़ियाँ जोड़ने का अभूतपूर्व प्रयत्न किया था।

तिलक ने हिन्दी सीखी

एक बार कलकत्ता में लोकमान्य तिलक ने अपना भाषण अंग्रेजी में दिया। जब भाषण समाप्त हुआ तब गांधीजी

ने सभा में उपस्थित लोगों से पूछा कि आप लोगों में से कितनों ने यह भाषण समझा। जब लोगों ने हाथ उठाये तो उस विशाल जन समूह में केवल सौ आदमी थे जिन्होने लोकमान्य का भाषण समझा था। गाधी जी ने कहा कि यदि लोकमान्य हिन्दी मे भाषण देते तो सभी समझ लेते। जनश्रुति है कि उसके बाद लोकमान्य ने कुछ महीनो के भीतर हिन्दी सीख ली थी।

गांधी का हिन्दी प्रेम

सन् १९२७ मे जब गांधीजी देश का भ्रमण कर रहे थे उस समय झरिया मे कोयले की खानों के मजदूरों ने उनका स्वागत किया और अभिनन्दन पत्र अंग्रेजी मे भेंट किया। मजदूरो मे अंग्रेजी समझने वालो की संख्या नगण्य थी। गांधीजी यहा के वातावरण से अत्यन्त दुखी हुए इस अवसर पर उन्होंने जो कुछ कहा उसका अभिप्राय यह था कि यह अभिनन्दन पत्र बगला भाषा मे लिखा जा सकता था और उसका अनुवाद हिन्दी अथवा किसी दूसरी भाषा में किया जाता तो अच्छा रहता।

गाधीजी ने प्रथम एशियायी सम्मेलन मे जो दिल्ली मे हुआ था, हिन्दी मे ही भाषण दिया था और कहा था कि यदि मेरी बात मे बल होगा तो सभी तक अवश्य पहुचेगी।

हिन्दी देश के कोने-कोने में सुगमता पूर्वक बोली, समझी और पढ़ी जा सकती है। भारतीय सन्तों की कृपा से हिन्दी सारे देश में जन-साधारण के हृदय का हार बनी और अहिन्दी प्रदेशों में राष्ट्र भाषा प्रचार आन्दोलन के साथ-साथ अन्य समाज सेवी लोगो के प्रयत्नो से महाराष्ट्र, कर्नाटक तमिलनाद आदि मे खूब प्रचलित है। बडे उत्साह से हिन्दी के विभिन्न कार्यों का वहाँ प्रसार हो रहा है। राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार-समिति हिन्दी साहित्य सम्मेलन और वेद स्वाध्याय मडल आदि अनेक संस्थाये हिन्दी प्रचार का काम कर रही है। हजारो छात्र प्रतिवर्ष हिन्दी की विविध परीक्षाओं मे बैठ रहे हैं।

विदेशों मे हिन्दी

विदेशो में हिन्दी के प्रचार के निमित्त भारत सरकार हिन्दी की पुस्तकें और अध्यापक भेजती है। इसके अतिरिक्त सरकार द्वारा हिन्दी के सर्वोत्तम विदेशी छात्रो को भारत-भ्रमण के लिए यात्रा-व्यय भी दिया जाता है। भारत मे हिन्दी पढने वाले अफ्रीकी छात्रो को वृत्तियाँ भी दी जाती है और विदेशी लेखको को हिन्दी मे अनुवाद करने के लिए आर्थिक अनुदान भी दिए गए हैं।

१७ देशो मे हिन्दी के अध्ययन-अध्यापन की व्यवस्था है। श्रीलका, बर्मा, चीन, कम्बोडिया, इण्डोनेशिया, नेपाल, जापान, फिलीपीन, सोवियत रूस, पोलैंड, चेकोस्लावाकिया फ्रास, इटली, ईरान, प. जर्मनी और इङ्गलैंड आदि मे भारतीय दूतावासो में हिन्दी की कक्षाये लगायी जाती हैं तथा स्वतन्त्र संस्थाओ द्वारा भी इसकी व्यवस्था की गई है। विदेशो में हिन्दी के प्रति प्रेम बढ़ता ही जा रहा है। रूमानिया के डा. जार्ज रेडी और जापान के राजदूत भी हिन्दी सीख रहे हैं।

—०✽०—

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

का

५३वां वार्षिक वृत्तान्त

(१-३-६० से २८-२-६१ तक)

निर्माण व्यवस्था

इस वर्ष भी इस सभा में १५ प्रतिनिधि सभाएं सम्मिलित रहीं। वर्ष के अन्त मे यह सभा निम्न प्रकार १५१ सदस्यों का समुदाय थी:—

१. प्रान्तीय सभाओं के प्रतिनिधि	११६
२. भूतपूर्व प्रधान	४
३. प्रतिष्ठित	५
४. आजीवन सदस्य	२६
	१५१

श्रीयुत प० इन्द्र जी विद्यावाचस्पति तथा श्री पं० अवध बिहारी लाल जी के असामयिक निधन से २ स्थान रिक्त हो गए।

सम्बद्ध प्रांतीय सभाएँ

	सदस्य संख्या
१. आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, ५, मीराबाई मार्ग, लखनऊ।	२७
२. आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, गुरुदत्त भवन, होशियारपुर रोड़, जालन्धर।	४२
३. आर्य प्रतिनिधि सभा बिहार, बांकीपुर, पटना।	१०
४. आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल, २४।२ कार्नवालिस स्ट्रीट, कलकत्ता।	१३
५. आर्य प्रतिनिधि सभा मध्यभारत, नया बाजार, लश्कर (ग्वालियर)।	३
६. आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य प्रदेश, सदर बाजार मंगलवारी, नागपुर।	२
७. आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान	७
८. आर्य प्रतिनिधि सभा मध्यदक्षिण सुलतान बाजार, हैदराबाद।	५
९. आर्य प्रतिनिधि सभा सिंध, कैम्प कल्याण, बम्बई।	
१०. आर्य प्रतिनिधि सभा बम्बई, कारेली बाग, बड़ौदा।	६

११. आर्यप्रतिनिधि सभा पूर्वीय अफ्रीका,
पो० बा० २४३,
नैरोबी।

१२. आर्य प्रतिनिधि सभा दक्षिण अफ्रीका,
पो० बा० १७७०,
डर्बन।

१३. आर्य प्रतिनिधि सभा फिजी, ...
पो० बा० ६२८,
सामाबूला।

१४. आर्य प्रतिनिधि सभा सुरीनाम, ...
पो० बा० २५०,
पारामारिबो।

१५. आर्य सभा मोरिशस, ...
पोर्ट लुइस,
मोरिशस। ११६

२६-१-६१ की अन्तरग सभा के निश्चयानुसार गुजरात प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा इस सभा से सम्बद्ध हुई।

अधिकारी—

प्रधान —श्रीयुत बा० पूर्णचन्द्र जी एडवोकेट,

उपप्रधान—१. श्री बा० कालीचरण जी आर्य
२. श्री देसराज जी चौधरी
३. श्री डा० डी० राम जी

मंत्री —श्री रघुवीर सिंह जी शास्त्री

उपमन्त्री —श्री नरदेव जी स्नातक,
—श्री बटकृष्ण जी वर्मन

कोषाध्यक्ष —श्री प्रो० रामसिंह जी, एम० ए०

पुस्तकाध्यक्ष—श्री आचार्य विश्वश्रवाः जी

अन्तरंग सभासद्

१. श्रीयुत मिहिर चन्द्र जी धीमान (बंगाल)
२. श्री पं० भगवान स्वरूप जी (राजस्थान)
३. श्री प० वासुदेव जी शर्मा (बिहार)
४. श्री प्रि० महेन्द्रप्रताप जी शास्त्री (उत्तर प्रदेश)
५. श्री बा० जगनन्दन लाल जी एडवोकेट (उत्तर प्रदेश)
६. श्री डा० महावीर सिंह जी (मध्य भारत)
७. श्री प्रि० लक्ष्मीदत्त जी दीक्षित (पंजाब)
८. श्री रामनाथ जी भल्ला (पंजाब)
९. श्री घनश्याम सिंह जी गुप्त (भूतपूर्व प्रधानों के प्रतिनिधि)
१० श्री ला० हंसराज जी गुप्त (आजीवन सदस्यों के प्रतिनिधि)
११. श्री मनोहर लाल जी (मध्य दक्षिण)
१२. श्री एल० के० नन्दवाना (बम्बई)
१३. श्री स्वामी ध्रुवानन्द जी (विदेश के प्रतिनिधि)
१४. श्री स्वामी अभेदानन्द जी
१५. श्री पं० बुद्धदेव जी विद्यालंकार (जनरल)
१६. श्री पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति (मृत्यु हो गई)

आर्य प्रादेशिक सभा का प्रवेश

सार्वदेशिक सभा की अन्तरंग सभा दिनांक २५-६-६० की बैठक मे आर्य प्रादेशिक सभा का आवेदन-पत्र स्वीकार होकर उक्त सभा सार्वदेशिक से सम्बद्ध हुई।

प्रचार कार्य

उड़ीसा

कार्य विवरणान्तर्गत वर्ष मे श्रीयुत स्वामी ब्रह्मानन्द जी के निरीक्षण मे निम्नलिखित कार्यकर्ता कार्य करते रहे हैं।

१. श्री शुकरामुन्डा २. श्री पं० रघुनाथ महापात्र ३. श्री बिरसा मुन्डा ४. श्री स्वामी नित्यानन्द वानप्रस्थी ५. श्री सनातन साहू ६. श्री तेम्बा भगत ७. श्री चन्द्र सिंह किसान ८. श्री बुड्डु भगत ९. श्री पुरुषोत्तम भगत १०. श्री मुक्तेश्वर पण्डा शर्मा ११. श्री कृपासिंधु-पुष्टि १२. श्री डा० एन महान्ति।

श्री शुकरामुण्डा सुन्दरगढ़ केन्द्र में काम करते हैं, इनके द्वारा १२८ ईसाईयों की शुद्धि हुई।

श्री बिरसा मुन्डा भी सुन्दरगढ़ केन्द्र मे काम करते हैं इनका वेतन दयानन्द सालवेशन मिशन होशियारपुर से मिलता है। इनके द्वारा २३३ ईसाइयो की शुद्धि हुई।

श्री पं० रघुनाथ महापात्र पाटणगीर (जि० वलगीर) केन्द्र में कार्य करते हैं। दातव्य औषधालय चलाने के साथ साथ इन्होने १८७ शुद्धियाँ की है। इनकी दक्षिणा दयानन्द सालवेशन मिशन होशियारपुर से मिलती है।

श्री स्वामी नित्यानन्द जी वानप्रस्थी—ये उड़ीसा के विभिन्न स्थानो में भ्रमण करके वैदिक धर्म का प्रचार करते हैं, इनके भोजनादि का व्यय आर्य स्त्री समाज भवानीपुर कलकत्ता की ओर से मिलता है।

श्री सनातन साहू—राजगांगपुर केन्द्र में कार्य करते हैं। ईसाइयों की गतिविधि पर ध्यान रखना इनका मुख्य कार्य है। इनको वेतन भारतीय संस्कृति संरक्षिणी समाज राजगांगपुर की ओर से मिलता है एवं एक सायकिल भी मिली हुई है।

श्री तेम्बा भगत—बिसरा केन्द्र मे कार्य करते हैं। दिन में गाव-गाव भ्रमण करके प्रचार करते हैं। रात को लुगेई के दयानन्द सेवाश्रम मे ४५ बच्चो को (रात्रि पाठशाला मे) शिक्षा देते हैं। इनको भारतीय संस्कृति संरक्षिणी समाज राजगांगपुर की ओर से वेतन मिलता है तथा भ्रमण के लिए एक साईकिल मिली है।

श्री चन्द्रसिंह किसान—गुदिआली केन्द्र में कार्य करते हैं। दयानन्द सेवाश्रम गुदिआली में दातव्य औषधालय चलाते हैं और रात को रात्रि पाठशाला चलाते हैं। छात्र छात्राओ की संख्या ४८ हैं। सब बच्चे स्तुति प्रार्थना उपासना के साथ सध्या कण्ठस्थ किये हुए हैं। इनको वेतन भारतीय संस्कृति संरक्षिणी समाज राजगांगपुर की ओर से मिलता है एवं एक सायकिल भी मिली हुई है।

श्री बुद्धु भगत हाथीवाड़ी केन्द्र में प्रचार करने के साथ दयानन्द सेवाश्रम बड़ावास दयानन्द सेवाश्रम कोकेरम में रात्रि पाठशाला चलाते हैं। भारतीय संस्कृति संरक्षिणी समाज राजगांगपुर से इन्हे एक सायकिल मिली है एवं वेतन मिल रहा है।

श्री पुरुषोत्तम भगत—रामबगा केन्द्र से कार्य करते हैं। दिन मे प्रचार रात को दयानन्द सेवाश्रम जामबहाल में रात्रि पाठशाला चलाते हैं। इनको भी भारतीय संस्कृति संरक्षिणी समाज राजगांगपुर की ओर से वेतन मिलता है और प्रचार के लिए एक सायकिल मिली हुई हैं।

श्री मुक्तेश्वर पण्डा शर्मा—सम्बलपुर जिलान्तर्गत सोहला केन्द्र मे निःशुल्क प्रचार करते हैं। ये अत्यन्त प्रभावशाली वक्ता है। यह क्षेत्र सम्बलपुर जिला में ईसाइयो का गढ़ माना जाता है जहाँ ईसाइयो के दो हस्पताल और दो हाई स्कूल चल रहे हैं। शर्मा जी सत्यार्थ प्रकाश हाथ मे लेकर उनके मुकाबले मे खड़े हुए हैं।

श्री कृपासिन्धु पृष्टि—वैदिक आश्रम पानपोष केन्द्र में कार्य करते है। केन्द्र का दातव्य औषधालय चलाने के साथ आश्रम की वैदिक पाठशाला मे अध्यापन कार्य भी करते हैं। इनको वेतन लालचन्द शिवपुर हावड़ा तथा प्रभुदास भाई जे० नागरदास कम्पनी कलकत्ता की ओर से मिलता है।

श्री डा० एन० महान्ति—इस्पात नगरी राउरकेला जनसमूह स्थान बिसरोड में दयानन्द सेवाश्रम खोलकर निःशुल्क आदिवासी तथा शुद्ध हुए नर-नारियों की चिकित्सा करते हैं। इस वर्ष १२४१ रोगियों की निःशुल्क सेवा की है।

स्वामी ब्रह्मानन्दजी—समस्त प्रचार केन्द्र के कार्य को देखने के साथ-साथ प्रचार भी करते हैं। कार्य निम्नप्रकार हैं।—

२५७ स्थानों पर प्रचार, व्याख्यान २८१, ५ केन्द्रों (दयानन्द सेवाश्रम) की स्थापना, २७ संस्कार (१ विवाह,

२ उपनयन, २४ शुद्धियाँ) ५ नई पाठशालाएं खोली तथा ३ दातव्य औषधालय चालू किये।

बाढ़ पीड़ित क्षेत्रों में निरन्तर २ मास तक सेवा सहायता का कार्य किया। ५७८३ नर-नारियों को चावल, औषधियाँ और २४४७ को वस्त्र वितरित किये गए।

ऋषिबोधोत्सव के उपलक्ष्य में विशेष प्रचार के साथ ७ दिन तक सुन्दरगढ जिले के प्रधान मेलो-वेदव्यास मेलों-में प्रचार किया गया। ऋषिलंगर खोला गया जिसमे नित्यप्रति हजारो की संख्या मे दरिद्रों को भोजन दिया जाता था। बलागीर जिला में ६ दिन तक बृहद्यज्ञ के साथ २ दयानन्द मेला लगा कर प्रचार किया गया जिसमें नित्यप्रति २० से २५ हजार लोग भाग लेते थे। उड़िया भाषा मे धर्म रक्षाकर पुस्तक दो हजार छपाकर वितरण की गई।

नित्यकर्म पद्धति एक हजार छपाकर प्रचारित की गई।

उड़िया भाषा में सत्यार्थ प्रकाश का नया अनुवाद कराके छपवाने की व्यवस्था हो रही है। श्रीमान् श्रद्धेय चिरजीव लाल बाहरी शिवपुर हावड़ा ने अपने पूज्य पितृदेव श्रीमान् लालचन्द जी बाहरी की स्मृति मे सत्यार्थ प्रकाश के प्रकाशनार्थ ३०००) तीन हजार रुपया देने का वचन दिया है। सत्यार्थ प्रकाश की एक हजार प्रति छपने मे ५०००) के व्यय का अनुमान है। सभा इस कार्य को शीघ्र सम्पन्न कराने के लिए यत्नशील है।

आय शुद्धि विभाग—

१८८०—००	सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली।
१४०८—४४	अखिल भारतीय दयानन्द सालवेशन मिशन होशियारपुर।
१५००—००	भारतीय संस्कृति संरक्षिणी समाज राजगांगपुर उत्कल।
६००—००	आर्य स्त्री समाज भवानीपुर कलकत्ता।
६००—००	आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा जालन्धर।
५००—००	श्री जगतराम जी ऐडवोकेट दयानन्द आर्य अमृतसर।
५००—००	श्री लालचन्द बाहरी ट्रस्ट शिवपुर हावडा।
१२०—००	श्री घनश्याम दास द्वारा-आर्य समाज बडा बाजार कलकत्ता।
१०५—००	श्रीयुत रायसाहब बलदेव साहू जी लोहार-डग्गा राची।
१२०—००	आर्य समाज नामनेर आगरा।
१००—००	केन्द्रीय आर्य सभा आगरा।
७४३३—४४	कुल जोड—आय

व्यय शुद्धि विभाग—

१०२०—०६	शुक्रामुण्डा को दक्षिणा।
७७०—००	भोजनादि व्यय स्वामी ब्रह्मानन्द जी।
७७६—५६	दक्षिणा प० श्री रघुनाथ महापात्र।
६२८—७५	दक्षिणा श्री बिरसा मुण्डा।
३६०—००	वेतन श्री सनातन साहु।
३३०—००	वेतन श्री तेम्बा भगत।
२८०—००	वेतन श्री चन्द्रसिंह किसान।
२७०—००	वेतन श्री बुद्ध भगत।
२७०—००	वेतन श्री पुरुषोत्तम भगत।
६६०—००	भोजन व्यय स्वामी नित्यानन्दवानप्रस्थी।
३१३—००	भोजन व्यय ब्रह्मचारी बलराम पात्र।
२१३—७५	दातव्य औषधालय।
१२०—००	अध्यापक श्री कृपासिन्धु पृष्टि का वेतन।
३२७—७५	वैदिक पाठशाला निर्माण (गृह) व्यय।
३१६—४०	मार्ग व्यय।
१४०—००	नव निर्मित समाज (केन्द्र) को सहायता।
१२०—००	ट्रैक्ट छपवाने मे व्यय।
१०५—१०	शुद्ध किये हुए परिवारो को सहायता।
८८—२६	कार्यालय व्यय।
७७—७५	अतिथि सत्कार।
७४३३-४४	कुल व्यय जोड

आय बाढ़ पीड़ित

५००·००	सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली।
५००·००	हिन्दु (आर्य) धर्म सेवा संघ दिल्ली।
२०००·००	औरियण्ट पेपर मिल्स बजराजनगर उडीसा।
१०००·००	श्री चिरंजीव लाल बाहरी शिवपुर हावडा।
५००·००	श्री ठाकुरदास जी बडा बाजार कलकत्ता।
२५१·००	श्री प्रभुजी भाई जे० नागरदास एण्ड को० कलकत्ता-१।
२००·००	आर्य समाज कलकत्ता।
२००·००	आर्यसमाज बडा बाजार कलकत्ता।
२००·००	स्त्री आर्यसमाज भवानीपुर कलकत्ता।
२००·००	आर्यसमाज जमशेदपुर।
१००·००	श्री जगतराम जी ऐडवोकेट दयानन्द मार्ग अमृतसर।
१००·००	केन्द्रीय आर्य सभा आगरा।
२२४·००	अन्यान्य दान दाताओं से।
५६७५·००	कुल जोड़

इसके अतिरिक्त सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा से (पुराना) ६ बोरी कपडा श्री रामदेव सिहानिया द्वारा आर्यसमाज बडा बाजार से २०० नये कपडे तथा अन्यान्य-दान दाताओं से ३ बोरी कपडा (पुराना) मिला है।

उपयुक्त धन से चावल, दाल, गुड, चूरा, औषधियाँ खरीदा गया।

आय—ऋषि बोध उत्सव—

२००·००	आर्य स्त्री समाज भवानीपुर कलकत्ता।
१००·००	श्री चिरजीव लाल बाहरी, शिवपुर हावडा।
१२५·००	श्री प्रभुदास भाई, जे० नागरदास एण्ड को० कलकत्ता-१।
२३३·००	अन्यान्य दान-दाताओं से।
६५८ ००	कुल

इसके अतिरिक्त ऋषि-लगर के लिये राउरकेला तथा राजगागपुर एवं सम्बलपुर से ७ बोरा चावल १ बोरा दाल, १ बोरा आटा मिला। श्री स्वामी ब्रह्मानन्द जी जिस मनोयोग से यह कार्य कर रहे हैं वह अनुकरणीय एवं प्रशंसनीय है। सभा उन्हें धन्यवाद देती है।

नैपाल प्रचार—

नैपाल राज्य के तराई भाग मे गौर नामक स्थान पर 'दयानन्द सेवाश्रम' के तत्वावधान में गत ३ वर्ष से एक हिन्दी विद्यालय चल रहा है। इस कार्य का निरीक्षण आर्य समाज बैरगनियां द्वारा होता है। विद्यालय में २ अध्यापक कार्य करते हैं। कार्य विवरणान्तर्गत वर्ष में विद्यार्थियो की संख्या प्रति मास लगभग ६० रही। विद्यालय के प्रधान अध्यापक होम्योपैथ चिकित्सक भी हैं जो चिकित्सा द्वारा जनता की सेवा करते हैं। यह सभा इस विद्यालय को ६२) मासिक सहायता प्रदान करती है। यह विद्यालय उस क्षेत्र मे प्रशंसनीय कार्य कर रहा है। इस वर्ष इस सभा की ओर से इसका निरीक्षण श्री सुखदेव जी शास्त्री स० प्रधान संचालक आर्यवीरदल द्वारा हुआ।

कार्तिक पूर्णिमा के अवसर पर बागमती नदी के तट पर लगने वाले मनियारी मेले मे आर्य समाज, गुरुकुल महा विद्यालय एवं दयानन्द सेवाश्रम की ओर से संयुक्त सेवा शिविर लगाया गया। १५ भूले भटके बालको को खोज करके उन्हे उनके अभिभावको के सुपुर्द किया गया इस अवसर पर योग्य प्रचारको द्वारा प्रचार भी कराया गया। गत अक्टूबर मास मे श्री आशानन्द जी भजनोपदेशक ने अनेक ग्रामों में प्रचार करके मुसलमानो के प्रचार को विफल करने का सराहनीय कार्य किया। नैपाल मे इस समय जो राजनैतिक वातावरण व्याप्त है उसको लक्ष्य मे रखते हुए आर्य समाज को अपनी स्थिति के दृढ़ीकरण के लिए विशेष प्रयास करना होगा।

इस वर्ष आर्य समाज मखनटोल काठमाडू के मंत्री श्री हरिहर प्रसाद जी आर्य सामाजिक प्रगति देखने के निमित्त भारत मे आये और लगभग २ मास तक भारत के

विभिन्न नगरों का भ्रमण किया। उनकी इस यात्रा को सफल और सुगम बनाने के लिए इस सभा ने अपेक्षित सहयोग दिया।

सभा के अधिकारी शीघ्र ही स्थिति का निरीक्षण करके वहां सुयोग्य उपदेशक भेजने के लिए चिन्तित और यत्नशील हैं। इस राज्य मे ईसाइयों और मुसलमानों की प्रचार प्रगतियां वृद्धिगत हैं। उनके प्रभाव के निराकरण और हिन्दुओं के रक्षण का कार्य अत्यावश्यक है।

सभा का कार्य आर्य प्रतिनिधि सभा बिहार के निरीक्षण मे हो रहा है।

मद्रास प्रचार

मद्रास पान्त मे आर्य समाज मैसूर तथा मंगलूर के कार्य का विवरण इस प्रकार है —

मैसूर

पारिवारिक सत्सग १२४, नामकरण सस्कार २, विवाह सस्कार ४, गायत्री यज्ञ २ तथा शुद्धियाँ २ हुई। साप्ताहिक सत्सग नियम से होते रहे।

८-८-६० को आर्योपदेशक श्रीयुत कृपाराम जी शास्त्री तथा समाज के प्रधान श्री वरवालिगा चेटी जी ने महाराज मैसूर से भेट की और आर्य समाज के सिद्धान्तो और कार्यों से उन्हे परिचित कराया। कन्नड़ सत्यार्थ प्रकाश और ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका आदि ग्रन्थ उन्हे भेट किए। इस भेंट का दूरगामी श्रेष्ठ परिणाम निकलने की आशा है।

आर्य समाज मैसूर के अधिकारी मुख्यत: मन्त्री श्री रामशरण आहूजा बडी तन्मयता और लग्न से कार्य करते हैं। वहां की जनता का वेदो की महत्ता पर विश्वास बढ़ रहा है और आर्य समाज का प्रभाव गहरा एवं विस्तृत होता जा रहा है।

वहां संस्कृत और अंग्रेजी के वेदवित्त आर्य विद्वानो द्वारा प्रचार की बड़ी आवश्यकता है जिसकी व्यवस्था इस सभा के विचाराधीन है।

मंगलूर

२ शुद्धियाँ, १ मुसलमान और एक जन्म के ईसाई की हुई और ४ अन्तर्जातीय विवाह हुए।

आर्य समाज के तत्त्वावधान मे स्वामी श्रद्धानन्द सेवाश्रम नामक एक अनाथालय चल रहा है जिसमें ३०० बच्चे हैं जिनके पालन-पोषण और शिक्षण की सम्यक् व्यवस्था की जाती है। इनमें से १०० लड़कियां म्युनिसिपल हाई स्कूल मंगलूर में, ४ कनारा गर्ल हाई स्कूल मे, १६ लडके कनारा हाई स्कूल मे, २ लड़के कनारा स्कूल आव् कामर्स मे, ८ लडकियाँ गवर्नमेन्ट सेकेन्डरी और ट्रेनिंग स्कूल मे तथा १३० बच्चे विविध स्कूलो मे छोटी श्रेणियो मे पढते है। आश्रम मे एक अच्छा पुस्तकालय और वाचनालय भी है। आश्रम का वार्षिक व्यय ४० हजार रुपया होता है जो सरकारी सहायता और विविध दान से पूरा किया जाता है। आश्रम के प्रधान श्री ऐम० जी० अनन्तपाल बी० ए० तथा उप मंत्री श्री स्वामी सदानन्द जी हैं।

बंगलूर कैन्ट

यह आर्य समाज उल्लेखनीय कार्य कर रहा है। २८- -६० को आर्य समाज स्थापनादिवस कार्पोरेशन पार्क टाऊन मे श्रीमती वी० इन्दम्मां मेयर बगलौर की अध्यक्षता मे समारोह पूर्वक मनाया गया। अध्यक्षा महोदया ने आर्य समाज के कार्य की भूरि २ प्रशसा की। इस अवसर पर प० सुधाकर जी कृत आर्य समाज ही हार बिंजर आव पीस (शान्ति का अग्रदूत आर्य समाज) ट्रैक्ट आर्य समाज की ओर से वितरित हुआ। समाज के अधिकारी और कार्यकर्त्ता बड़े उत्साह से कार्य करते हैं जिसके लिए वे बधाई के पात्र है।

एक उपयोगी सुझाव

मद्रास प्रान्त मे इस सभा का वर्षों पर्यन्त नियमित प्रचार होता रहा है जिसके फलस्वरूप वहां आर्य समाज का सदेश प्रसारित होकर आर्य समाज आर्य (हिन्दू) धर्म

और संस्कृति के रक्षक के रूप में समादृत हो रहा है। सभा के प्रचार के फलस्वरूप वहां अनेक आर्य समाज स्थापित हुए जिनमे से कुछ आर्य समाजो के अपने निजी भवन एवं संस्थाए हैं और उन्होंने प्रचार सम्भाला हुआ है। उत्तर भारत के उच्चकोटि के आर्य विद्वान समय-समय पर उधर जाकर कुछ मास रहकर वहां प्रचार करे तो उसका बडा अच्छा परिणाम हो सकता है। इस सुझाव को क्रियान्वित करने के लिऐ सभा यत्नवान है।

———

विदेश-प्रचार

अमेरिका—

न्यूयार्क (अमरीका) के श्रीयुत डा० मार्कंस ने वहां वैदिक धर्म के प्रचारार्थ वेद मन्दिर (अमेरिका की वैदिक सोसाइटी) नामक एक संस्था खोली हुई है जहां प्रतिदिन हवन यज्ञ होता है और आर्य साहित्य का अध्ययन किया जाता है। मार्कंस महोदय के साथ सभा का आवश्यक पत्र व्यवहार होता रहता है। उन्हे इस वर्ष आर्य समाज विषयक आवश्यक साहित्य भिजवाया गया है। डाक्टर महोदय भारतवर्ष आकर आर्यसमाज की प्रगतियो को देखने और आर्य विद्वानो एवं नेताओं का साक्षात्कार करने के लिए उत्सुक हैं। आर्य जगत और सार्वदेशिक सभा उनकी भारत यात्रा का स्वागत करेगी।

डाक्टर महोदय तथा उनके वेद मन्दिर का परिचय उनके अपने शब्दो मे इस प्रकार है :—

'I was born on Oct. 20, 1923 in the city of N.Y. My early education was in public schools in N Y. City till the age of 10, and then I moved to Mt. Vernon where I finished all my schooling through high School. I received my doctor of Chiropractic degree in 1947, and since then I have been practising my vocation for the benefit of many people. However, my chief interest for a considerable period of time has been in the realm of metaphysics, philosophy and religion. I have always felt that the basic need of man was and is and will always be the spiritual regeneration or rebirth of man. I hold the firm conviction that the ultimate destiny of mankind as a whole lies in a spiritual fulfilment and realization here and now, on this planet. I feel very happy to say that several years ago, I came in touch with the ancient vedic thought and metaphysics. Its universality is remarkable. I take the liberty of saying that the understanding and awareness of the Vedic principle by people in all the nations would help in breaking down the walls of cultism, religious prejuadices and partisanship. I would feel very much obliged if you and other adherents of Vedic thought in India would co-operate with me for the dissemination of Vedic dharma in our contemporary world.

I and several of my friends have been performing the Hawan ceremony regularly for the last 4 years and have been benefitted greatly by it.

On Aug. 23, a couple of us had a small gathering at my residence in which we resolved to found the VEDIC SOCIETY OF AMERICA for the sole purpose of acquainting

the people here and in othre places with the basic principles of the Vedas. The Vedantic thought has had its root in the soil of America for five decades now. But somehow it has become very much personality conscious, which to me, in the long run, would turn into another major sect after Ramakrishna or Vivekananda. Any religion based around the finite human personality is destined to degenerate into sectarisanim and religious prejudices ahd partisanship. Tnis is why I feel that the Vedic dharma in its original form would do a great deal to elevate the soul of man for direct (not through any human intermediary) communion with that which is immanent and transcendental. I look forward to the day when many human souls will join us for the accomplish ment of our noble mission. We intend to have a Vedic Ashram, at an early date, in this country.

Incidentally, if you come across a distinguished Vedie Swami, please let us know his name and address, for we would like to get in touch with him. It would be indeed a great blessing to us if you could send a Swami here to further the cause of our Vedic sabha.

Plese invite all our friends to contact us when they are in or near N. Y. City.

Thanking you-

Cordially Yours
Dr. Marcus
4 Cottage Avenue Mt. Venon
Newyork City

अर्थात् मेरा जन्म अक्टूबर १९२३ मे न्यूयार्क मे हुआ था। न्यूयार्क के पब्लिक स्कूलो मे १० वर्ष की आयु तक मेरी प्रारभिक शिक्षा हुई। इसके बाद में माउन्ट बरमन गया जहाँ हाई स्कूल परीक्षा के पश्चात् मेरी स्कूलीय शिक्षा पूर्ण हुई। १९४७ मे मैंने डाक्टरी पास की तबसे मैं जनता के हितार्थ डाक्टरी का कार्य कर रहा हूँ। चिरकाल से मेरी रुचि अध्यात्म-विद्या, दर्शन-शास्त्र और धर्म के प्रति प्रेरित रही है। मैं सदैव यह अनुभव करता रहा हूँ कि मानव की मूलभूत आवश्यकता आध्यात्मिक पुनरुज्जीवन था, है और रहेगा। मेरी यह दृढ़ मान्यता है कि समष्टि रूप से मानव-समाज का भाग्य इस लोक मे आध्यात्मिक विकास पर आश्रित है। मुझे यह कहते हुए हर्ष होता है कि कई वर्ष हुए मैं प्राचीन वैदिक विचार धारा और अध्यात्म-विद्या के सम्पर्क मे आया। वैदिक विचार धारा का सार्वभौम स्वरूप भव्य है। मे यह कहने का साहस करता हूँ कि यदि समस्त राष्ट्रों की जनता वैदिक सिद्धान्तों से परिचित हो जाय और वह उन्हे हृदयङ्गम करले तो इससे विविध 'वादों' एव धार्मिक पक्षपातो की दीवारों के धराशायी होने मे सहायता मिलेगी। यदि आप और भारत के अन्य वैदिक धर्मानुयायी ससार के इस भाग मे वैदिक धर्म के प्रचार मे मुझे सहयोग देगे तो मैं बड़ा उपकार मानूँगा।

मैं और मेरे अन्य कई मित्र गत ४ वर्ष से निरतर यज्ञ हवन करते हैं और इससे हमे अमित लाभ हुआ है।

२३-८-५९ को कुछ लोगों ने मेरे घर पर एकत्र होकर "अमेरिका का वैदिक समाज" नामक एक समाज की स्थापना का निश्चय किया जिसका उद्देश्य न्यूयार्क मे तथा अन्य स्थानो मे वेदों के मूल सिद्धान्तो का प्रचार निश्चित

किया गया। गत ५० वर्ष के काल मे वेदान्त के विचारो ने अमेरिका की भूमि मे जड जमाली है परन्तु वेदान्त की विचार धारा ने व्यक्ति प्रधान रूप ग्रहण कर लिया है जो मेरी सम्मति मे अन्त में रामकृष्ण वा विवेकानन्द के नाम पर बड़े २ सम्प्रदायो में परिवर्तित हो जायगी। जो धर्म परिमित मानवीय व्यक्ति पर आधारित होगा वह निश्चय ही धार्मिक पक्षपात और सकीर्णता से विकृत होकर सम्प्रदाय बन जायगा। इसी कारण मैं यह अनुभव करता हूँ कि वैदिक धर्म अपने मूलभूत विशुद्ध रूप मे मनुष्य की आत्मा को उस विश्वात्मा का सीधे (किसी मानवीय मध्यस्थ के साधन से नही) साक्षात्कार करने मे बहुत सहायता प्रदान कर सकता है जो वास्तविक और अलौकिक महान् सत्ता है। मैं उस दिन की प्रतीक्षा कर रहा हूँ जब कि हमारे इस महान् कार्य की पूर्ति के लिए बहु-संख्यक लोग इसमे मिल जायेगे। हम इस देश मे शीघ्र ही एक "वैदिक आश्रम" की स्थापना करने की सोच रहे हैं।

यदि आपको कोई आर्य संन्यासी मिल जाये तो आप हमे उनके नाम और पते से सूचित करे। हम उनसे अपना सम्पर्क स्थापित करना चाहते हैं। यदि आप किसी आर्य सन्यासी को प्रचारार्थ यहाँ भिजवा सकें तो यह हमारे लिए वरदान सिद्ध होगा।

जब आपके कोई मित्र न्यूयार्क वा उसके आसपास आएँ तो उन्हे कहें कि वे हमसे सम्पर्क स्थापित करे।

डा० यूजिन मार्कस ४ काटेज एवेन्यु
माउन्ट वर्नन न्यूयार्क

दक्षिण अमेरिका

दक्षिण अमेरिका के चिली नगर स्थित आक्सफोर्ड हाई स्कूल के संचालक श्रीयुत डा० एडवर्ड ए डी-विट को सभा कार्यालय से कुछ आर्य-साहित्य भेजा गया था जिसे उन्होने बड़े ध्यान से पढ़कर उसकी सराहना की और सभा को निम्नलिखित पत्र भेजाः—

My Dear Aryan brother,

I have just finished reading a most interesting book by Shri Ganga Prasad Upadhyaya entitled L.FE AFTER DEATH.

At the end of Shri Prasadji's book there are some short references to the Scriptures of the Arya Samaj. Finding myself very much in sympathy with yours ideals and work I will be very grateful if you send me more information regarding the Arya Samaj, also if there is a good biography written in English of Swami Dayananda.

I read English and Sanskrit, but I do not read any of the modern Hindi Vernaculars, nay not even Hindi, although thanks to Sanskrit I can read the Devanagari Characters in which is Hindi written, and understand some words which are like Sanskrit or guess the meaning of others that have a certain resemblance with the sacred संस्कृत.

How much would the complete works in English and Sanskrit of Swami Dayananda plus one or two of his best Fnglish Biographies come to in U.S.A. currency ?

How much the साम, अथर्व and यजु come to ? I already own the Rigveda in the Original Sanskrit.

I congratulate you on the good work you do to save India from the Soul-destroying Semitic religions es-

plcially from the inroads of the most negative and brain shrinking of the semitic Religions idest "Christianism or better style it Cretinism.

An Arya who although born in a Romkn Catholic 'milieu' refuses to be "Christianized" and wants to go to the pure source of all truth the Vedas. Thanking you before hand I remain yours faithfully.

Dr. Edward A. de Bittencourt
1885 Teniente Montt.
26-1-61 NUNOA SANTIAGO
CHILLI SOUTH AMERICA

प्रिय आर्य बन्धु !

मैंने अभी अभी श्रीयुत पं० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय कृत "लाइफ आफ्टर डेथ" नामक पुस्तक पढकर समाप्त की है जो बड़ी मनोरंजक है।

इस पुस्तक के अन्त में आर्य समाज के ग्रन्थो और उसके कार्यों का उल्लेख है। आपके आदर्शों और कार्यों के प्रति मेरी रुचि है अतः यदि आप आर्य समाज से सम्बद्ध अधिकाधिक जानकारी देंगे तो मैं आपका बडा कृतज्ञ हूँगा। क्या श्री स्वामी दयानन्द जी की अंग्रेजी जीवनी मिल सकेगी ?

मैं अंग्रेजी और संस्कृत तो जानता हूँ परन्तु आधुनिक हिन्दी से निकली किसी लोक भाषा यहाँ तक कि हिन्दी को भी नहीं जानता हूँ। संस्कृत के प्रति आभार प्रदर्शित करता हुआ यह अवश्य कहूँगा कि मैं देवनागरी अक्षरो को पढ सकता हूँ जिनमे हिन्दी लिखी जाती है और संस्कृत निष्ठ कतिपय शब्दो को वा उनके अभिप्राय को समझ लेता हूँ।

स्वामी दयानन्द जी के समस्त अंग्रेजी और संस्कृत ग्रन्थों का साथ ही उनकी सर्वश्रेष्ठ अंग्रेजी जीवनी का मूल्य डालर में क्या होगा ? साम, अथर्व और यजुर्वेद का भी मूल्य लिखें। मूल संस्कृत मे ऋग्वेद मेरे पास है।

आप लोग आत्मा को नष्ट करने वाले सेमेटिक मतों से विशेषतः मन को कुंठित एवं संकुचित बनाने वाले अनिगामी ईसाईमतवाद से जिसको मस्तिष्क विकार की संज्ञा देना अधिक उपयुक्त होगा भारत की रक्षा करने का जो सत्कार्य कर रहे हैं उसके लिए मैं आपको बधाई देता हूँ।

एक आर्य को जो रोमन कैथोलिक सम्प्रदाय मे उत्पन्न हुआ है अपने को ईसाई कहलाना अंगीकार नहीं है और वह सत्य के मूल वेदो के विशुद्ध स्रोत पर जाने के लिए उत्कंठित है।

धन्यवाद आपका
डा० एडवर्ड
ए. डी. बिट
एन्कोर्ट

इन्हे आर्य समाज विषयक कई अच्छी पुस्तकें सभा से भिजवा दी गयी है जिनका वे मनोयोग पूर्वक अध्ययन कर रहे हैं।

श्रीयुत वेदव्रत जो भारत से अमेरिका गए हुए थे। आर्य समाज की शिक्षाओ से वहाँ के लोगों को परिचित कराने का स्तुत्य कार्य कर रहे थे। उन्होने योग विषयक 'समाधि' 'जनीइन्टू दी सैल्फ' और 'लाइफ आफ्टर डैथ' ये तीन ग्रंथ अंग्रेजी मे लिखकर तैयार किए थे। समाधि ग्रन्थ का निरीक्षण सभा की प्रेरणा पर श्रीयुत प० गंगा प्रसाद जी उपाध्याय ने किया था और इस ग्रन्थ को उपयोगी पाया था। लेखक महोदय ने इस ग्रन्थ की भूमिका उपराष्ट्रपति श्रीयुत डा० राधाकृष्णन से लिखाई थी। वे इस ग्रंथ के प्रकाशन की वहाँ व्यवस्था कराने के यत्न मे थे। खेद है कि २-९-६० को अमेरिका मे हृदय की गति बंद हो जाने से ४० वर्ष की आयु मे ही अचानक उनका देहान्त हो गया। आर्यसमाज को उनसे बड़ी आशाएँ थी। (क्रमश.)

—०००—

सरकारी कलैण्डर

(श्री ऐस सी. चट्टोपाध्याय)

अंग्रेजों ने भारतवर्ष में अपना प्रभुत्व स्थापित कर लेने के पश्चात् अपना पंचांग प्रचलित किया जो ग्रीगोरियन के नाम से प्रसिद्ध था परन्तु जब पिछली दशाब्दी में पाश्चात्य प्रभुत्व समाप्त हो गया तब अपना पचांग प्रचलित करने का प्रश्न हमारे समक्ष समुपस्थित हुआ। हमारी राष्ट्रीय सरकार ने १९५२ ई० में राष्ट्रिय पचांग के निर्माणार्थ एक कमेटी नियुक्त की जिसकी रिपोर्ट १९५५ में सरकार को प्राप्त हुई। इस बात में प्रायः सभी सहमत थे कि हमारे यहाँ सौर वर्ष का प्रचलन होना चाहिए। यतः राम जैसे हमारे महापुरुषों के जन्म-दिन का कोई प्रामाणिक लेख उपलब्ध न था अतः यह निश्चित हुआ कि हमारा वर्ष वसन्त ऋतु में आरम्भ होना चाहिए, परन्तु यह विवाद उठ खड़ा हुआ कि वर्ष का प्रारम्भ प्रथम वैशाख से किया जाय या चैत्र से गत १५०० वर्षों में मेष नक्षत्र की गति बहुत आगे बढ़ जाने से प्रथम वैशाख १४ अप्रैल वा उसके आस पास पड़ता है जबकि सूर्य २१ मार्च को उत्तरायण में प्रविष्ट होता है। यह भी कहा गया कि वर्ष की दिन गणना की भूल के कारण यह अन्तर हो गया।

उन दिनों सौर वर्ष में ३६५ दिन ६ घन्टे और १२-६ मिनट गिने गए जबकि वास्तविक काल ३६५ दिन ५ घन्टे और ४८-८ मिनिट था। १४०० वर्ष में यह अन्तर पड़ जाने से हमारा वर्ष अप्रैल के मध्य में प्रारम्भ होने लगा। वस्तुतः यह वर्ष २२ मार्च को वा उसके आसपास प्रारम्भ होना चाहिए था।

कमेटी के सुझावों पर उचित विचार करने के पश्चात् भारत सरकार ने निम्न लिखित निश्चय किए :—

१—ब्रिटिश शासन काल की भाँति समस्त सरकारी कार्यों में पोप ग्रेगरी के पंचांग पर आधारित रोमन वर्ष व्यवहृत होगा।

२—समस्त सरकारी घोषणाओं में अंग्रेजी तारीखों के साथ-साथ शक सम्वत् के अनुसार देशी तिथियाँ भी दी जाया करेंगी।

३—आकाशवाणी से भी दोनों तिथियाँ उद्घोषित की जायेंगी।

४—छुट्टियों और धार्मिक पर्वों के सम्बन्ध में प्रचलित प्रणाली का अवलम्बन किया जायेगा और वर्ष की विभिन्न ऋतुओं के नाम भी प्रचलित नामों से ही सम्बोधित हुआ करेंगे।

५—शक सम्वत् का प्रथम दिन वसन्त सम्पात से प्रारंभ होगा और वर्ष की अवधि अंग्रेजी पचांग के अनुसार रहेगी।

६—वर्ष का पहला महीना चैत्र होगा और लौंद के वर्ष के अतिरिक्त (जब वह ३१ दिन का होगा) इस मास के दिन ३० रहेंगे। इसके आगे के ५ मास (अर्थात् वैशाख, जेठ, आषाढ, श्रावण और भाद्रपद) प्रत्येक ३१ दिन के और शेष ६ मास (क्वार, कार्तिक, अगहन, पौष, माघ और फाल्गुन) प्रत्येक ३० दिन के होंगे।

७—चैत्र का प्रथम दिन २२ मार्च और लौंद साल में २१ मार्च रहेगा। अन्य महीनों का प्रारम्भ पूर्व की धाराओं में वर्णित नियम के अनुसार हुआ करेगा।

८—धार्मिक पर्वों को मनाने के सम्बन्ध में जो चांद्र मास के अनुसार मनाए जाते हैं आवश्यक हेरफेर किया जायेगा। जब सौर मास में चान्द्र मास २ बार पड़ेगा तो पहला चान्द्र मास अतिरिक्त मास (मलमास) और दूसरा मास वास्तविक मास वा शुभ मास कहलायगा।

९—सरकारी कार्य के निमित्त दिन आधीरात से शुरु होकर आधी रात को समाप्त होगा परन्तु धार्मिक अनुष्ठानों के लिए यह सूर्योदय से लेकर सूर्यास्त तक रहेगा।

१०—अंग्रेजी और शक सम्वत् में ७८ वर्ष का अन्तर है शक सम्वत् बाद में प्रारम्भ होता है।

मां

(रघुनाथ प्रसाद पाठक)

मां की ममता—

'मा' शब्द मे भरी हुई ममता और दिव्यता की अनुभूति ही हो सकती है अभिव्यक्ति नही। प्रेम के ढोंग और प्रदर्शन से युक्त इस जगत् मे मा के प्रेम जैसा वास्तविक, निष्कपट, गहरा और दिव्य प्रेम अन्यत्र कही नहीं देख पडता। मा अपने बच्चे पर अपने को मिटाए रखनी और अपने सुख एव प्राणो के बलिदान पर भी उसके कल्याण और अभ्युत्थान के लिए समुद्यत रहती है। मां की छाती पर पडा और दूध पीता हुआ बच्चा उसके हृदय मे रमा हुआ होता है। पिता अपने बच्चे से उपराम हो सकता है, भाई और बहने शत्रु बन सकते हैं पति और पत्नी एक दूसरे का परित्याग कर सकते हैं परन्तु मां का प्रेम उसका कभी परित्याग नही करता चाहे वह सुखी हो या दुःखी बुरा हो या भला। मा की इस ममता को देखकर मैटरलिंक की यह विचित्रोक्ति समझ मे आ जाती है कि 'अपने बच्चो को प्यार करते समय सभी माताएँ सम्पत्ति शालिनी हो जाती है। कोई माता दरिद्र, कुरूपा या जरा जीर्ण नही रहती', यदि वसुन्धरा पर कोई ऐसी वस्तु है जो प्रभु-प्रेम की अधिक से अधिक स्मृति दिला सकती है तो वह मा है। इसी से वेद मे कहा गया है—मातृदेवो भव'। पृथ्वी पर भगवान की स्वरूप भूता मां ही है। मा की आँखों में मां की प्यारी वाणी मे और उसकी लोरियो मे विश्व की सर्वोत्तम विभूतियां भरी होती हैं।

मां बनने का महत्त्व

स्त्री का हृदय मां बनने पर ही फलता-फूलता है। वन्ध्यापन अभिशाप माना जाता है। मा बनने पर उसके अधिकार और दायित्व में भी वृद्धि हो जाता और परिवार मे उसे अधिक सम्मान पूर्ण स्थान प्राप्त हो जाता है। स्त्री मे सन्तान की इच्छा स्वाभाविक होती है। सन्तान न होने पर यह इच्छा इतनी प्रबल हो उठती है कि स्त्री दूसरे के बच्चे को ही अपना बच्चा बना लेती है। कभी २ वह दूसरे के बच्चे का अपहरण करने और कुपथ-गामिनी बनने तक के लिए भी उद्यत हो जाती है। जो स्त्रियां बच्चे जनने के भय वा झंझट से पराभूत हो बच्चे नही जनती उन्हें यह उक्ति हृदयङ्गम कर लेनी चाहिए—"बहुत से बच्चे बहुत-सी चिन्ताएँ, न कोई बच्चा न कोई आनन्द।" बच्चो से न केवल वंश की वृद्धि ही होती उनसे माता-पिता का विकास भी होता है। उनका हृदय लचकीला एवं विशाल बनता, स्वार्थ का परित्याग होता त्याग और परिश्रम शीलता का स्वभाव बनता और सबसे बढकर उनका आत्मिक उत्थान होता है। परन्तु अच्छे और स्वस्थ बच्चे उत्पन्न होने चाहिएँ। बच्चो की संख्या की अपेक्षा उनके अच्छे प्रकार पर ध्यान रखा जाना चाहिए।

मां का पद क्यों ऊँचा होता है ?

मां की गोद मे वा बिछौने पर लोरियों एवं शिक्षाप्रद बातों और कहानियों द्वारा बच्चे के चित्त पर जो संस्कार पड़ते हैं वे अमिट होते और प्रायः आजीवन बने रहते हैं। मा का हृदय बच्चो की पाठशाला होती है। पिता की शिक्षाओं का प्रभाव बच्चे के मन पर पडता है जो मिट

भी जाता है। गुरु की शिक्षा का प्रभाव बच्चे के मन और आत्मा पर उस समय पड़ता है जब उसमे शिक्षा ग्रहण करने की कुछ क्षमता आ जाती है। इस बात को दृष्टि में रखकर ही गुरु की अपेक्षा पिता का और इन दोनों की अपेक्षा मां का दर्जा ऊँचा माना जाता है। पुर्तगाली कहावत है—'माता के एक ग्रौंस का मूल्य गुरु के एक पौंड के मूल्य के बराबर होता है।"

माता पर समाज का भविष्य निर्भर होता है

उत्तम मातृभक्त और दूसरों की माताओं का आदर करने वाली सन्तानों को समाज के अर्पण करना माता का सबसे बड़ा दायित्व होता है। सन्तान को अच्छा या बुरा बनाना माता के हाथ में होता है क्योकि सन्तान की आत्मा की कुञ्जी उसी के हाथ मे होती है। इस प्रकार वह समाज के भविष्य को बनाने वाली होती है। यदि समाज पर एक मात्र माताओं का अधिकार शेष रह जाय तब भी उसका सचालन वे भलीभांति कर सकती हैं।

एक दिन नेपोलियन ने एक भद्र महिला से पूछा—"फ्रांस के नवयुवकों को सुशिक्षित करने का उपाय क्या है?" उसने उत्तर दिया—"अच्छी माताओं का सहयोग प्राप्त किया जाना।" इस उत्तर से सम्राट नेपोलियन बहुत प्रभावित हुआ और कहा—"इस शब्द मे समस्त शिक्षा-प्रणाली समाई हुई है। फ्रांस को अच्छी माताएँ मिल जायें तो अच्छी सन्तानो की कमी न रहे।"

महान् पुरुषों को बनाने वाली माताएँ होती हैं

युरोपियन पर्यटकों और ग्रन्थकारों ने युरोपियन बच्चों की तुलना मे भारतीय बच्चों को अधिक सुशील, चरित्रवान, मेधावी और योग्य बताया है और इनकी वरिष्ठता का श्रेय भारतीय माताओं को दिया है। यह परम्परा बहुत पुरानी है। राम, कृष्ण, कपिल, मरीचि, अत्रि, अंगिरा, व्यास, वशिष्ठ, भारद्वाज, नारद, पराशर, भीष्म, शंकराचार्य, युधिष्ठिर आदि महापुरुषों को जन्म देने वाली माताएँ स्त्रीत्व, पत्नीत्व और मातृत्व की विशिष्टताओं से परिपूर्ण थी। वन जाते समय दुःख से व्याकुल होकर भी आगा-पीछा सोचकर एवं धर्म का विचार कर राम को वन जाने की आज्ञा देकर माता कौशल्या ने उन्होंने आशीर्वाद दिया था :—

न शक्यते वारयितुं गच्छेदानीं रघूत्तम।
शीघ्रं च विनिवर्तस्व वर्तस्व च सतांक्रमे॥
यं पालयसि धर्मं त्वं प्रीत्या च नियमेन च।
सवै राघव शार्दूल धर्मस्त्वामभि रक्षतु॥

अर्थात् हे पुत्र! मैं तुझे किसी प्रकार रोक नही सकती, अब तो तू वन को जा, पर जल्दी लौटकर आना (अर्थात् १४ वर्ष से अधिक मत ठहरना) और सत्पुरुषो के मार्ग पर चलना। प्रेम और नियम के साथ तू जिस धर्म के पालन में प्रवृत्त हुआ है वही धर्म तेरी रक्षा करेगा!"

राम-रावण युद्ध मे लक्ष्मण बुरी तरह घायल हो गए थे। जब हनुमान पर्वत-शिखा से औषधि लेकर लका को लौट रहे थे तब कुछ समय के लिए अयोध्या में ठहरे। माता कौशल्या और सुमित्रा को लक्ष्मण की मरणासन्न अवस्था बताई तो दोनों माताओं ने जो सदेश दिये वे स्वर्णाक्षरो में लिखे जाने योग्य हैं। सुमित्रा ने कहा हनुमान! तुम राम से कहना यदि लक्ष्मण वीर गति को प्राप्त हो गया तो तुम दुःखी न होना वरन् यह सोचकर प्रसन्न होना कि लक्ष्मण ने सेवक की श्रेष्ठतम गति पाई है। मैंने उसे तुम्हारी तन-मन से सेवा करने के लिए भेजा था और कहा था कि यदि राम के कार्यों मे तुम्हारे प्राण भी चले जाये तो तुम अपने को धन्य समझना।" कौशल्या ने अपने संदेश मे कहा था—"हनुमान! जो औषधि तुम ले जा रहे हो यदि उससे भी लक्ष्मण के प्राण न बचे तो तुम राम से कहना कि मैंने तुम्हे अकेला नहीं भेजा था। लक्ष्मण को भी तुम्हारे साथ भेजा था। यदि दैवयोग से लक्ष्मण की मृत्यु हो जाय तो तुम अयोध्या को मत लौटना।"

वस्तुतः इसी प्रकार की माताओं और सन्तानों से परिवारो में सुख और शान्ति व्याप्त रहती है।

अमेरिका के राष्ट्रपति महात्मा लिंकन कहा करते थे कि मैं जो कुछ हूं और जो कुछ बनने की आशा करता हूं उसका श्रेय मेरी पुण्यशीला मां को प्राप्त है। रस्किन ने लिखा है—"मेरे चरित्र के निर्माण में मेरी माता का प्रभाव अत्यधिक रहा है। वह मुझे बाइबिल के लम्बे-लम्बे अध्याय कण्ठस्थ करने के लिए बाध्य किया करती थी। इस अनुशासन के कारण ही मैं परिश्रमशील बना और मुझमें साहित्यिक अनुराग उत्पन्न हुआ।" अमेरिका के प्रथम राष्ट्रपति जार्ज वाशिंगटन अपनी मां के उपकारों को स्मरण करके कहा करते थे —"पिता की आकृति मात्र मेरे स्मृति-पट पर है। उनका मेरे जीवन पर कोई प्रभाव पड़ा या नहीं, मैं नहीं जानता। मेरी विद्या, बुद्धि, धन-वैभव पद एवं सम्मान - इन सबका मूल-कारण मेरी आदरणीया जननी है।"

जर्ज वाशिंगटन की मां का भव्य उदाहरण

अमेरिका के स्वातंत्र्य संग्राम को जीतने का श्रेय इन्हीं वाशिंगटन को प्राप्त है। युद्ध में प्रवृत्त होने से पूर्व वह माता का आशीर्वाद ग्रहण करने गए। जननी ने उन्हे आशीर्वाद देते हुए कहा—स्वदेश के इस मुक्ति संग्राम में तुम विजयी होकर लौटो। हाथ में विजयी तलवार लेकर लौटना और यदि यह संभव न हो तो तुम स्वयं तलवार पर चढ़ जाना।" अमेरिका विजयी हुआ, स्वाधीन हुआ, और जार्ज वाशिंगटन उसके सर्व प्रथम प्रेसीडेन्ट बनाए गए।

युद्ध-विजय के तत्काल बाद जार्ज वाशिंगटन अपनी मां से मिलने फ्रेडरिक वर्ग गए। स्वागतार्थ सारा नगर सजाया गया परन्तु मां के घर मे कोई परिवर्तन नही स्वागत का कोई समारोह नहीं। सब उस स्वतंत्रता युद्ध के विजयी के स्वागत को उतावले हो रहे हैं किन्तु वह जिनके पास जा रहा था वह सदैव की भांति अपने दैनिक कार्यों में लगी थी। उसके किसी काम में एक मिनट का भी अन्तर न आ रहा था। वाशिंगटन घर में घुसे देखा कि मां नित्य कर्मों को यथावत् करने में लगी है। अभिवादन किया। मां ने पुत्र की ओर देखकर कहा—"विश्व के झाड़-झंखाड़ की सफाई का भार तुम्हारे ऊपर डाला गया है। अनेक परीक्षाओं में तुम्हें पास होना है। अबतक तुम सुयोग्य सिद्ध हुए हो। तुम्हें देखकर आज तुम्हारे पिता की याद आती है।"

इसे आप स्वागत समझें तो, उपदेश समझें तो और बात-चीत समझें तो बस। वह महान् नारी बहुत बोलना न जानती थी। इतने मे ही सब कुशल-मंगल समाप्त हो गया।"

जार्ज वाशिंगटन के युद्ध के दाहिने हाथ मार्किस लाफायते जब अपने देश फ्रास को जाने लगे तो इस माननीय महिला के दर्शनार्थ पधारे। उस समय मेरी वाशिंगटन बर्तन साफ कर रही थी। सामने आने पर उन्होने उस विख्यात फ्रामीसी योद्धा से केवल इतना कहा—"वृद्धानारी को तुम देखने आए हो! आओ!! अपने दरिद्र घर में मै तुम्हारा स्वागत करती हूं। वस्त्रों के बदलने की कोई आवश्यकता मैने अनुभव नहीं की।"

पुत्र के पास राजमहल मे चले जाने पर भी उन्होंने दासियाँ न रखी। उनका पुत्र देश का अध्यक्ष था इसलिए देश के धन को अपने काम मे लेना उन्होने कभी स्वीकार न किया। पहले की भांति ही उनका घर बना रहा। वह सदा अपने हाथ से काम करती रही। थोड़े से व्यय से वह पारिवारिक जीवन चला लेती थी। अपने हाथ से अनेक वस्तुएँ बनाकर बेचती थीं। इस प्रकार जो थोड़ा पैसा परिवार के व्यय से बचता था उसे वह दीन दुखियो मे बाट दिया करती थी।"

मातृ-वियोग

माता से असमय मे वंचित हो जाने से बच्चे के हृदय को बड़ा धक्का लगता है। अब्राहम लिंकन की मां बहुत अच्छी थीं। जब वह ८ वर्ष के थे तभी उनको मातृ-वियोग सहन करना पड़ा। लिंकन ७-८ दिन पर्यन्त मां की समाधि के निकट बैठकर घटो रोए। अमेरिका का राष्ट्रपति बन जाने पर भी जबकि वह सम्मान और अधिकार

की उच्चतम सोपान पर आरूढ़ थे लोगों को सदैव उनके चेहरे पर उदासी छाई देख पड़ती थी एक दिन एक सम्भ्रान्त महिला ने साहस करके उनसे इसका कारण पूछा। इस प्रश्न को सुनकर लिंकन की आँखों मे आँसू आ गए। उन्होंने कहा—"**मेरी माँ मुझे बचपन में ही छोड़कर स्वर्ग चली गई थी। उसकी प्रारम्भिक शिक्षा ने मेरा बड़ा उपकार किया। मैं उसे बहुत प्यार करता था। उसकी मृत्यु से मुझे अपार दुःख हुआ। चेहरे पर छाई हुई उस समय की उदासी अबतक नहीं गई।**"

शरीर से काम करने और घर गृहस्थ को सम्भालन में असमर्थ हो जाने पर भी माता सबको मिलाने वाला वह केन्द्र बिन्दु होता है जिसके चहुंओर प्रेम आज्ञाकरिता कोमल भावनाएं और प्रेरणाएं काम करती रहती हैं।

मातृ-सेवा

सिकन्दर अपनी माता का बहुत आदर करता था। एक बार की बात है कि जब सिकन्दर बाहर था तब अंटीपेटर नामक उसके मंत्री ने जिसे सिकन्दर बहुत चाहता था लिखा—"**आपकी माता के हस्तक्षेप से राज-कार्य का सचालन बड़ा कठिन हो गया है। उनका स्वभाव आप जानते ही हैं वे स्त्री होने पर भी सदा राजकार्य में हस्तक्षेप करती रहती हैं।**"

सिकन्दर ने इस पत्र को पढा और लिख दिया—"मेरी माता का एक बूंद आँसू तुम्हारी हजारो चिट्ठियो को पोंछ डाल सकता है। इसका सदा ध्यान रखना।"

वस्तुतः माता पिता की सेवा करने से उनको उतना लाभ नही होता जितना सन्तान को होता है। माता-पिता की सेवा करने वाले बच्चे दीर्घायु, यश, पुण्य, बल, धन-सम्पदा सब कुछ प्राप्त कर सकते है।

॥ आवश्यक सूचना ॥

कतिपय सज्जनों के पत्र, पुत्री के लिए वर की आवश्यकता और वर के लिए पुत्री की आवश्यकता, विषयक सभा में आते हैं। निवेदन है कि जो जन्मगत जातिभेद को छोड़ कर आर्य मात्र मे गुण-कर्म-स्वभावानुसार सम्बन्धो को चाहे सभा को वही लिखें। इसके अतिरिक्त मैं निवेदन करूंगा कि समस्त आर्य भाई-बहिन अपने विवाह योग्य बच्चे-बच्चियो के नामे सभा मे अकित कराले ताकि सभा सब आर्य भाईयो की सहायता कर सके। चित्र निम्नप्रकार है भर कर भेज दें:—

पुत्र अथवा पुत्री का नाम………………………… शिक्षा…………………

आयु…………………………स्वभाव……………………………पिता। संरक्षक का नाम पूरे पते सहित………………………………………………………………

………………………………………………………………………………

माता। पिता जीवित है या नही…………………………भाई…………………बहिन…………

पिता। सरक्षक की जीविका का साधन……………………………………………………

मासिक आय……………………………स्थान…………………………………आर्य समाज का नाम जिसके सदस्य है……………………………………गोत्र………………………

वर्ण जो स्वयं सिद्धान्तानुसार अपने को दे सके हैं………………………………………………

लडके। लड़को मे आर्यत्व की भावना…………………………………………………………

कालीचरण आर्य
मन्त्री
सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिध सभा, नई दिल्ली

आर्य समाज और राज-नीति

श्री चन्द्रनारायण एम० ए० एल० एल० बी० एम० आर० ए० एस०

"आर्य समाज और राजनीति" ऐसा जटिल और कठिन प्रश्न है जिस पर आर्य समाज के मूर्धन्य नेताओं ने अनेक बार निश्चय करने का प्रयास किया किंतु निश्चय आज तक नहीं हुआ न होने की आशा है।

मेरठ के अष्टम आर्य महा सम्मेलन में भी यह प्रश्न बड़े जोर शोर से उठाया गया था। "आर्य समाज को राजनीति में सक्रिय भाग लेने" का समर्थन करने वालों को सन्तुष्ट करने के लिए लोक सेवक संघ की स्थापना कर दी गई। पं० बुद्ध देव विद्यालंकार को उसका संयोजक भी नियुक्त कर दिया गया। एक जोश था समय के साथ ठंडा पड़ गया।

नवम आर्य महा सम्मेलन में भी यह प्रश्न उठा— धुंवाधार व्याख्यान भी हुए किन्तु ठीक उस समय जब कोई निर्णयात्मक निश्चय होने वाला था—समय और समस्या की गम्भीरता को ध्यान में रखते हुए प्रस्ताव स्थगित कर दिया गया। प्रस्ताव को स्थगित करने का सारा दायित्व पूज्य श्री स्वामी ध्रुवानन्द जी सम्मेलन सभापति को था। कुछ लोग क्रुद्ध हुए, कुछ प्रसन्न, कुछ कुपित हुये, कुछ आनन्दित, कुछ क्षुब्ध हुये, कुछ सन्तुष्ट।

कल्पना कीजिए प्रस्ताव स्वीकृत हो जाता है तब क्या होता? आर्यसमाज के टुकड़े टुकड़े! आर्य समाज के प्रत्येक व्यक्ति को व्यक्तिगत रूप में राजनीति में भाग लेने की पूरी छूट है। इस का एक दुष्परिणाम यह है कि आर्यसमाज के लोग विभिन्न राजनैतिक संस्थाओं में, यथा कांग्रेस, समाजवाद, प्रजा समाजवाद, जनसंघ, हिन्दूमहासभा आदि में प्रविष्ट होकर कार्य कर रहे हैं। परमात्मा का धन्यवाद है कि विभिन्न राजनैतिक विश्वास रखते हुए भी आर्य समाज में ये सब सज्जन आर्य समाज की ही बात कहते हैं। उदाहरणार्थ श्री प्रकाशवीर शास्त्री संसत्सदस्य कांग्रेस के महान् आलोचक हैं और जनसंघ के समर्थक हैं आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान हैं। श्री पं० प्रेमचन्द्र शर्मा पक्के कांग्रेसी हैं। कांग्रेस के टिकट पर विधायक हैं आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री हैं। दोनों ही प्रतिनिधि सभा के

उच्चाधिकारी है किन्तु सभा के कार्य मे इनके राजनैतिक विश्वास बाधा नही डालते ।

परन्तु जब आर्य समाज राजनीति में सक्रिय भाग लेगा और अपनी राजनीति निर्धारित करेगा उस समय अन्य राजनीतिक संस्थाओं में कार्य करने वाले आर्यजन अनेकानेक बार सोचेंगे कि अब क्या करें !

यदि वे अपने राजनैतिक कार्य को त्याग कर आते हैं तो उनका राजनैतिक जीवन ही समाप्त हो जायेगा । अनेक आर्यजनों की उपरोक्त राजनैतिक संस्थाओं से इतनी घनिष्ठता है कि अवसर उपस्थित होने पर वे आर्य समाज को छोड़ देंगे अपने राजनैतिक दल को नही छोड़ सकेंगे । इससे आर्य समाज को बहुत हानि होगी । अच्छे-अच्छे कार्यकर्त्ता आर्य समाज से पृथक् हो जायेंगे । भले ही अपने व्यक्तिगत जीवन मे वे आर्य समाजी बने रहें किन्तु सामाजिक जीवन मे वे कांग्रेस माईनस आर्य समाज, सोशलिस्ट माईनस आर्य समाज, प्रजासोशलिस्ट माईनेस आर्य समाज और जनसघ माईनेस आर्य समाज होंगे । ये ऐसी विषम परिस्थिति होगी कि आर्य समाज इसको सहन नही कर सकेगा । आर्यसमाज का ढांचा अस्तव्यस्त हो जायेगा ।

अब एक और परिस्थिति भी उठेगी । निर्वाचन मे आर्य समाज अपने प्रत्याशी खड़ा करेगा । क्या आप आशा करते हैं कि मुसलमान - जिसके इस्लाम कुर्आन और पैगम्बर का आर्य समाज अपने आदि काल से खण्डन करता रहा है—आर्य समाज को वोट देगा ? एक बार नही—सौ बार नही । क्या ईसाई—जिसके बाईबिल ईसा आदि का आर्य समाज ने जन्म भर खण्डन किया । आर्य समाज को वोट देंगे—नही—भूल कर भी नही । क्या सनातन धर्मी—जिनके अवतारवाद, मूर्तिपूजा, मृतक श्राद्ध आदि का आर्य समाज ने खण्डन किया है आर्य समाज को वोट देंगे—नही प्रलय तक नही । फिर किस बल विश्वास और आधार पर आर्य समाज राजनीति में भाग लेने की सोचता है ।

तो क्या आर्य समाज चुपचाप उदासीन होकर बैठ रहे ? देश में जो राजनैतिक भ्रष्टाचार फैला हुआ है उसे फैलने दें । इस वर्त्तमान राजनीति से तो देश की बहुत हानि है । राजर्षि पुरुषोत्तमदास टण्डन ने कहा था कि आर्य समाज ने शुद्धि का बहुत बड़ा कार्य किया है उसे राजनैतिक शुद्धियाँ भी करनी चाहियें । बात तो ठीक है परन्तु होना क्या चाहिए ! पहिली बात तो यह है कि आज देश में जितने भी वाद फलफूल रहे हैं जैसे मार्क्सवाद, गांधीवाद, समाजवाद, प्रजासमाजवाद, साम्यवाद, जनसघवाद इनका पूर्ण विश्लेषण किया जाये और उनमे जितनी अवैदिक बातें हैं उनका डट कर विरोध किया जाये । प्रेस प्लेटफार्म और पेन तीनों स्रोतो द्वारा इस कार्य को करना होगा । इसके लिए धन चाहिये, इसके लिए मन चाहिये, और दान चाहिए । यदि हम अपने इस प्रयास मे सफल होकर अपने राजनैतिक देवो की मानसिक और बौद्धिक शुद्धि कर डालें, उन्हे वैदिक सिद्धान्तो का अनुयायी बना डालें तो हम संसार, भारत और राष्ट्र के साथ बहुत बड़ा उपकार कर सकेंगे ।

पडित जवाहरलाल नेहरू और उनके सहकारी आज धार्मिक साम्प्रदायिकता के पीछे लट्ठ लेकर पड़े हैं । किन्तु देखा जाये तो भारतवर्ष मे धार्मिक साम्प्रदायिकता का नाम भी नही हैं । यहाँ तो राज्य है राजनैतिक साम्प्रदायिकता का । कांग्रेस सोशलिस्ट प्रजा सोशलिस्ट, जनसघ एक दूसरे को नीचा दिखाने गिराने और अपमानित करने का प्रयत्न करते रहते हैं । एक ईमानदार सच्चरित्र देशभक्त जन सेवी सोशलिस्ट जनसंघी या प्रजा सोशलिस्ट एक अंगूठेक बेईमान, स्वार्थी कांग्रेसी के समक्ष कुछ मूल्य नही रखता । इस राजनैतिक साम्प्रदायिकता को नष्ट करना परमावश्यक है । यह तब हो सकता है जब इस राजनैतिक चक्रव्यूह को तोड़ने के लिए आर्य समाज अभिमन्यु बन कर प्रवेश करे ।

आर्यसमाज को एक शुद्धि अभियान आरम्भ करना चाहिये । निर्वाचन मे भाग न लेकर निर्वाचको को कहना होगा कि किसी राजनैतिक दल विशेष को वोट न देकर सच्चे देशसेवी और चरित्रवान् व्यक्ति को वोट दो । यदि आर्य समाज इस प्रयत्न में सफल हो जाये तो निश्चय ही

(शेष पृष्ठ ३७४ पर)

स्वर्णजयन्ती व आर्य महासम्मेलन

के

विविध भाषण

गोकृष्यादि रक्षा सम्मेलन

श्री बा० पूर्णचंद्र, एडवोकेट का उद्घाटन भाषण

माननीय अध्यक्ष महोदय, माताओ और सज्जनो,

मुझे आदेश हुआ है कि मे गो-रक्षा सम्मेलन का उद्घाटन करूँ। मै यह समझता हूं कि सारे सम्मेलन आप सब के लिए बड़े महत्वपूर्ण हैं, परन्तु आज का पहला दिन है और यह पहला सम्मेलन बड़ा आदरणीय और अनुकरणीय है। मेरी यह धारणा रही है कि ऋषि दयानन्द ने सबसे पहले भारतवर्ष में यह आन्दोलन शुरू किया कि गोमाता की रक्षा हो। गो-शालाओं को स्थापित करना उनके समय से आरम्भ हुआ। उनकी नीति विशेष थी। वे हिन्दू धर्म के प्रचार को और गो-रक्षा को सम्पर्क का विषय मानते थे। ऋषि ने १८८२ में बहुत से लोगों से हस्ताक्षर कराये जिनमें मुसलमान हिन्दू, ईसाई आदि सभी थे और उन दस्तखतों के आधार पर ब्रिटिश सरकार के पास एक बहुत बड़ा प्रार्थना-पत्र भेजा गया था। उसमें यह प्रार्थना की गयी थी कि सारे भारत में गाय का वध एकदम कानूनन बन्द हो जाय।

ऋषि की दूसरी विशेषता यह है कि स्वामी जी ने गो-रक्षा को केवल धर्म की दृष्टि से नहीं, वरन् सामाजिक और आर्थिक दृष्टिकोण से भी उसे हमारे सामने रखा। एक गाय से कितना लाभ होता है, कितना दूध होता है इत्यादि। गाय सम्बन्धी आंकड़े आपके आगे रखे गये। ऋषि की विशेषता यह है कि केवल गो-रक्षा के लिए नहीं, मांस भक्षण के विरुद्ध उन्होंने बड़ी प्रबल आवाज उठायी। अगर आप विचार करें, अगर आर्य, हिन्दू आज मांस भक्षण छोड़ दें तो मेरी धारणा है कि जो गाय का प्रयोग मांस के रूप मे करते हैं, वे अपने आप गाय खाना छोड़ देंगे। यह देश का दुर्भाग्य है कि गाय की रक्षा की पुकार करते हुए भी मांस भक्षण का

प्रचार बढ़ रहा है। ऋषि ने जहाँ गाय की रक्षा पर बल दिया, वहाँ मास-भक्षण रोकने पर भी पूरा बल दिया और कहा कि सामाजिक दृष्टि से और स्वास्थ्य की दृष्टि से भी मांस भक्षण गलत है।

चौथी बात यह है कि उन्होंने केवल यह नही कहा कि गाय की रक्षा करो, केवल यह नही कहा कि मास का भक्षण न करो, बल्कि उन्होने कृषि पर भी बल दिया और यह बताया कि गाय की रक्षा से, बैलों की रक्षा से देश तरक्की करेगा। आज जो हमारे खाने की समस्या है, उसके लिए बड़े अनुचित उपाय किये जा रहे हैं। ऋषि ने कृषि की उन्नति के लिए पूरा ध्यान दिया और उसके लिए बैलो की उपयोगिता बतायी। उन्होने इसे सघर्ष का विषय नहीं बनाया। साम्प्रदायिकता का विषय नही बनाया। हमें और आपको गाय की रक्षा का पूरा आन्दोलन करना चाहिए, परन्तु महर्षि का अनुकरण करते हुए।

मांस भक्षण का विरोध हरेक को करना चाहिए। कृषि पर ध्यान देना चाहिए। मुझे एक बात याद आ रही है कि उत्तर प्रदेश सरकार ने मद्यपान निषेध कानून बनाया तो मैंने सम्बन्धित मन्त्री को लिखा कि यह कानून बना देने से ही सब कुछ नही होता। उस पर आचरण कराइये, तभी इसका कुछ फायदा है। सरकार ने कानून तो बना दिया परन्तु हिचकते हुए।

गो-हत्या के बारे मे जिम्मेदार अफसरों से भी कुछ अजीब-सी बातें सुनने मे आती हैं। एक दफा एक अफसर ने गो-हत्या सम्बन्धी बातचीत के सिलसिले मे मुझे कहा —साहब, गो-हत्या बन्द की गयी तो उसका नतीजा यह हुआ कि गायों को रखने के लिए स्थान की एक विकट समस्या हमारे सामने खड़ी हो गयी है। ऐसी बातें सुनकर आश्चर्य होता है। क्योंकि यह तो गवर्नमेट का काम है कि जितनी भी आबादी है, उनके खाने आदि का प्रबन्ध करे, उसी तरह पशुओं का भी प्रबन्ध करना पड़ेगा। अगर गवर्नमेट नही कर सकती है तो उसकी यह त्रुटि मानी जायगी। खाना न मिलने के कारण उनको मारा जाय, यह बडे दुःख की बात है।

गो-रक्षा देश के लिए लाज़िमी है। जो गाय दूध नहीं देती, उनका भी उपयोग है। उनके गोबर से बढ़िया कोई खाद ही नही है। यह एक ऊचा दृष्टिकोण है जो आध्यात्मिक भावना से ओत-प्रोत है।

गो-रक्षा-आन्दोलन सारे भारत मे प्रचलित कर दिया गया है। मगर आर्य समाज की किसी के साथ स्पर्द्धा नही है। जो गाय की रक्षा चाहता है, सारे नागरिक उसके सदस्य हो सकते हैं। मैं आशा करता हूं कि इस सम्मेलन मे इस बात पर विचार करके महत्वपूर्ण निश्चय किये जायेंगे। यह निहायत जरूरी है कि इस आवश्यक प्रश्न का समाधान करने के लिए गो-रक्षण सभा स्थापित की जाय और लगातार विचार करके तत्पर रहते हुए समाधान कराया जाय।

—:o:—

पृष्ठ ३७२ का शेष

राजनीति सच्चरित्र सुशिक्षित और सच्चे विधायकों के हाथ में होगी वे जो कार्य करेंगे वे देश जाति और समाज के लिए कल्याणकारी होगे। यही आर्य समाज को अभीष्ट हैं।

मैं समझता हूँ कि आर्य समाज राजनैतिक क्षेत्र में पदार्पण न करके राजनैतिक विचारो व सिद्धान्तों को शुद्ध करने का ही अभियान चलाये तो उत्तम है। इसी से "कृण्वन्तों विश्वमार्यम्" की भावना और साधना पूर्ण होगी।

राजनैतिक उद्देश्यों के लिये आर्य समाज तथा उसके मन्दिरों का प्रयोग अनुचित

प्रेस कान्फ्रेन्स में सभा-मन्त्री श्री बाबू कालीचरण जी आर्य की घोषणा

दिल्ली २९ सितम्बर—

आज एक प्रेस कान्फ्रेन्स में सभा मन्त्री ने निम्नलिखित वक्तव्य दिया—

इस समय भारत मे विधान सभाओं तथा संसद् के साधारण निर्वाचन सन्निकट होने के कारण सारे देश के राजनैतिक वातावरण मे उत्तेजना आ रही है और निर्वाचनो मे भाग लेने के लिये विशिष्ट रुचि पैदा हो रही है। विभिन्न राजनैतिक दल अपनी-अपनी दृष्टि से शक्ति के संग्रह तथा आकने मे लगे हैं। साथ ही वे अन्य अराजनैतिक सगठनो का समर्थन प्राप्त करने का भी यत्न कर रहे है। इसकी कुछ प्रतिक्रिया आर्य सामाजिक क्षेत्रो मे भी होनी स्वाभाविक है। अत. आवश्यक है कि इस सम्बन्ध मे आर्य समाज की नीति स्पष्ट की जाए।

सार्वदेशिक सभा ने समय-समय पर जो निश्चय किये है उनके अनुसार आर्य समाज की यह चिरघोषित नीति है कि वह सामूहिक रूप से प्रचलित राजनीति में सक्रिय भाग नही लेता। आर्य समाज एक सार्वभौम धार्मिक सस्था है और उसका कार्यक्रम समस्त ससार के लिये अभिप्रेत है। अपने इस सार्वभौम स्वरूप को अक्षुण्ण रखने के लिये यह युक्ति-युक्त ही था और है कि आर्य समाज किसी भी देश के राजनीति मे सामूहिक रूप से सक्रिय भाग न ले। वैसे आर्य समाज ने अपने सदस्यों को छूट दी हुई है कि वे व्यक्तिगत रूप से प्रचलित राजनीति में भाग लेने मे स्वतन्त्र है।

आर्यसमाज देश तथा विश्व की सामाजिक एव राजनैतिक समस्याओ के सम्बन्ध मे भी सदा अपना दृष्टिकोण प्रस्तुत करता रहा है। भारत की राजनीति को भी उसने पर्याप्त रूप में प्रभावित किया है और देश के स्वाधीनता-आन्दोलन मे आर्य-सामाजिक लोगो का योगदान बहुत महत्वपूर्ण रहा है। हमारा मन्तव्य है कि राजनैतिक योग-क्षेम के लिए सामाजिक योगक्षेम अनिवार्य है। आर्यसमाज ने इस दिशा मे जो पुरोगम बनाया, देश के राजनैतिक दलो तथा प्रशासन ने उसे प्राय: अपना लिया है—जैसे अछूतोद्धार, जात-पाँत निवारण, शिक्षाप्रसार, नशाबन्दी तथा रूढ़ि-उन्मूलन आदि-आदि। आज भी आर्यसमाज को प्रशासन तथा राजनीति में नैतिकता का स्तर ऊँचा करने की बहुत रुचि एव चिन्ता है। परन्तु वह अन्य क्षेत्रों की भाँति इस क्षेत्र मे भी रचनात्मक तथा प्रचारात्मक साधनो को ही अपना कर चलना चाहता है।

इस समय राजनैतिक कार्यों के लिए आर्यसमाज के नाम तथा उसके मंदिरो के उपयोग का प्रश्न भी उठ रहा है। सभा इसे उचित नही समझती। विशेषत: इन दिनों जबकि विभिन्न राजनैतिक संस्थाएँ देश मे परस्पर विरोधी कार्यो तथा उद्देश्यो की प्राप्ति के लिए प्रतिस्पर्धा में संलग्न है। यदि आर्य मंदिरो का प्रयोग इस प्रकार राजनैतिक कार्यो तथा सगठनो के लिए करने दिया जायगा तो बहुत-सी उलझनें पैदा हो जायेगी। अत: सार्वदेशिक सभा की अब तक की नीति के अनुसार आर्यसमाजो तथा आर्य पुरुषों का कर्त्तव्य है कि वे इस विषय में सतर्क रहे। सार्वदेशिक सभा आर्यसमाज के नाम तथा मंदिरो का प्रयोग राजनैतिक कार्यो के लिए उचित नही समझती। इससे उनके महत्त्व तथा पवित्रता पर कुप्रभाव पडता है।

———

कोल्हापुर में आर्य समाज कार्य

(श्री प्रिंसिपल भगवानदास, दयानन्द कालेज सोलापुर)

महाराष्ट्र सरकार ने कोल्हापूर क्षेत्र की बहुत पुरानी मांग के प्रति मान करते हुए कोल्हापुर मे नयी युनीवर्सिटी की स्थापना की घोषणा कर दी है तथा भारत के गौरव श्री छत्रपति महाराज की पवित्र स्मृति मे जिस यूनीवर्सिटी का नाम श्री छत्रपति शिवाजी महाराज यूनवर्सिटी रख रही है । जिसके लिये जो कमीशन बना है उसमे मुझे भी सरकार ने नियुक्त करके सेवा का सुअवसर दिया है। जिस सम्बन्ध मे मुझे कोल्हापुर जाने का अवसर प्राप्त हो गया।

कोल्हापुर में जाते ही यह स्पष्ट हो जाता है कि सरकार के आज के प्रयास की पृष्ठ भूमि आर्य समाज का सुन्दर कार्य भी है तथा वह किस प्रकार से है । श्री साहू जी महाराज जो कोल्हापुर राज्य के महाराज थे वह बहुत अग्रगामी तथा विशाल हृदय के थे वह अपने राज्य से छूआ-छूत तथा जाति-पांति भेद-भाव दूर करना चाहते थे जिस कार्य के लिये श्री सहयाजी महाराज ने जो उनके सम्बन्धी थे तथा बड़ोदा राज्य के प्रभाव-शाली राजा थे उनको यह सुझाव दिया कि इस कार्य के लिये आर्य समाज की सहायता लेनी चाहिए । फल स्वरूप श्री साहूजी महाराज ने आर्य समाज के कार्य कर्त्ताओ को बुलाया तथा उनसे १६१८ से १६२२ तक बहुत प्रचार के द्वारा अपने राज्य से छुआ-छूत तथा जाति-पांति, भेद-भाव मिटा दिये। वह आर्य समाज के प्रचार कार्य से इतना प्रभावित हुए कि उन्होने एक भूमि आर्य समाज को दान दी । तथा आर्य समाज के जलूसों तथा जलसो में स्वयं भाग लेते रहे उन्होने अपने बच्चे के नाम पर कालेज तथा स्कूल खोले । जो अब बहुत बडी सस्थाएं बन गयी हैं। जिन सस्थाओ के आचार्य उन्होने केवल आर्य समाजी रखे थे। प्रिंसिपल नेफासिंह जी तथा डाक्टर बालकृष्ण जी प्रिंसिपल के नाम आज भी बच्चे-बच्चे की जबान पर हैं जिन्होने आर्य समाज का कार्य बहुत ही सुन्दर ढंग से किया। ऊपर लिखित सस्थाएं तो अब सरकार के हाथ में है तथा आर्य समाज का प्रभाव जिन पर मिट चुका है, पर डा० बालकृष्ण जी का बनाया हुआ तीन सस्थाओ (साहू महाराज दयानंद गुरुकुल, मराठी प्रशाला तथा हिंदी प्रशाला) अब भी ठीक प्रकार से चल रहे हैं तथा श्रद्धानद हाल, प्रिंटिग प्रेस आदि भी सुन्दर हैं। यह याद रहे कि सबसे पहले हिंदी का प्रचार कार्य इधर आर्य समाज ने ही किया । मुझे यह सुनकर खेद हुआ कि आर्य समाज का सत्सग नहीं लगता तथा जनता से आर्य समाज का नाम जा रहा है। श्री डी० टी० मालिक मत्री तथा डाक्टर काटे आदि आर्य समाज के पुराने नेता प्रयत्न-शील हैं पर कार्य कर्त्ताओ की न्यूनता है। गुरुकुल के छात्रावास में अब भी ११५ छात्र हैं तथा महाराष्ट्र के बड़े-बड़े नेता इसी छात्रवास मे रहे।

मुझे यह सुनकर प्रसन्नता हुई कि मेरे जाने से दो तीन पूर्व ही स्वामी ओमानद जी महाराज वहां गये थे तथा उन्होंने वहां घोषणा कर दी है कि सार्वदेशिक सभा ने कोल्हापुर की ओर विशेष ध्यान देने का निश्चय कर दिया है तथा तीन लाख रुपये से एक कालेज भी खोल रही है। जिस घोषणा से जनता के अन्दर आर्य समाज के लिए नया उत्साह तथा प्रेम हो गया है । अब जब कि कोल्हापुर मे यूनीवर्सिटी बन रही हैं सार्वदेशिक सभा को अपना कालेज शीघ्र अतिशीघ्र खोलना चाहिए तथा मैं प्रत्येक आर्य समाजी तथा दानी सज्जनो से आर्य समाज के इस बहुत बड़े केंद्र को पुन: जीवित करने के लिए अपील करता हू कि वह सभा के इस उत्साहनीय कार्य में हाथ बटावें।

—०*०—

(सार्वदेशिक सभा ने ऐसा कोई निश्चय नही किया है। श्री ओमानंद जी कौन हैं सभा उनसे अपरिचित है अत: जनता को भ्रम में न पड़ना चाहिए । जब सभा का ऐसा कोई निश्चय होगा सभा उसकी स्वय घोषणा करेगी। जनता को किसी अनाधिकृत व्यक्ति को कोई धन न देना चाहिए ।)

—सम्पादक

विजय-सन्देश

(सुखदेव शास्त्री स० प्रधान संचालक सार्वदेशिक आर्यवीरदल)

विजय दशमी के शुभ अवसर पर आर्य-वीर-दलों को सन्देश

प्रिय आर्य वीरो,

विजय दशमी का यह पावन पर्व युग-युग से मानवता की विजय का सन्देश देता चला आ रहा है। यह पर्व भारत ही नहीं समूचे मानव संसार में अपनी २ भाषा अपनी सामाजिक पद्धतियों से ऊँची श्रद्धा और पूर्ण उत्साह के साथ मनाया जाता है।

आर्य-वीर-दल विशुद्ध मानवतावादी सार्वभौमिक प्रगतिशील युवकों का एक महान् संघटन है। इस का सदस्य और अधिकारी बनना एक बहुत बड़े सौभाग्य तथा अनुपम गौरव की बात है। यह संघटन अपने जन्म काल से संसार के सभी मानवों को भाषा भेद जाति-भेद श्रेणि और सम्प्रदाय भेद से ऊपर रह कर विश्व राष्ट्र की वा मानव राज्य की कल्पना कर बड़े प्रेम-पूर्वक हृदय परिवर्तन की ऊँची सात्त्विक भावना के द्वारा सभी के समान एवं सामूहिक अदम्य उत्साह एवं पौरुष के बल पर मानव (लोक राज्य) बनाने की प्रेरणा देता चला आ रहा है। इस आन्दोलन की मूल भित्ति का जड़वाद और चेतनवाद का समन्वय करते हुए समान अधिकार और समान श्रेणी के सम्बल सहित विश्वबन्धुत्व मधुर परस्पर सौहार्दपूर्ण-सुखद परिस्थिति में मानव (लोक राज्य) की ओर मानव को अग्रसर होने की उत्तम प्रेरणा देकर एक ऐसे पूर्ण राज्य की स्थापना को साकार रूप देना है जिसमें न कोई लघु हो न कोई महान् क्या पूर्व क्या पश्चिम समूचा विश्व एक परिवार के समान मिले जिसमे सब एक दूसरे पर विश्वास करते हो प्रेम करते हों तथा सब अपने स्थान पर सुखी, समृद्ध और सन्तुष्ट हों इसी को ऋषि दयानन्द जी सरस्वती ने आर्यों का चक्रवर्ती राज्य कहा है। यहाँ ऋषि का अभिप्राय किसी ऐतिहासिक आर्य शब्दाभिमानी आर्य रूढ़ अनार्य शीलो से नहीं है अपितु अपने विशेष गुणों से युक्त होने से संसार के किसी भी कोने खण्ड तथा बृहत् अथवा लघु किसी भी देश का रहने वाला कोई भी व्यक्ति विशेष क्यों न हो उसी से अभिप्रेत है।

प्रिय वीरो आज मानव संसार द्रुत गति से आगे बढ़ रहा है और महान व्योम विजय, भूमि विजय समुद्र विजय आदि भौतिक दिशा की ओर उसने अपनी सम्पूर्ण शक्ति लगा दी है। प्रलयकारी भूत भावनी भगवती काल सभी विनाश की प्रमुख शक्ति यहाँ काली की पूजाकर उसे प्रसन्न कर उससे वरदान के रूप विश्व संसार की अमोघ शक्ति प्राप्त करती है। वह विनाश के महा कगार पर खड़ा अपने सर्वनाश के लिए अट्टहास कर अपना सर्वनाश करने पर उतावला हो रहा है। मानव का नैतिक बल लुप्त प्राय हो गया है। मातृ शक्ति जो जगजननी है अपने स्थान से विचलित होने के लिए एक पग उठा चुकी है। मानव-मानव एक दूसरे को घृणा, सन्देह, अविश्वास की दृष्टि से देख घोर नारकीय जीवन बिताने का आदी बन गया है।

जीव दया समाप्त प्रायः है।

मानव सृष्टि जिन अमूल्य और सत्य नियमों पर स्थिर रही है मानव एक २ कर उन्हे छोड़ता चला जा रहा है।

आज राम का आदर्श हमारी सभी सामयिक समस्या का एक मात्र समाधान प्रस्तुत कर हमें एक बार पुनः झकझोर कर भूली राह को छोड़ भटकी पगडंडियियों का परित्याग कर उस महान् राजपथ पर आरूढ़ होने का अमृत मय अमोघ सन्देश दे रहा है।

स्थान २ पर आदर्श मानव राम के चरित्र में से उनके उज्ज्वल गुणों का प्रचार करना चाहिए।

(शेष पृ० ३८० पर)

सरकार का समर्थन

पंजाब की विधान सभा मे २१ सितम्बर को एक गैर सरकारी प्रस्ताव पर विचार हुआ जिसमे मांग की गई थी कि धर्म स्थानो का राजनैतिक कार्यों के लिए प्रयोग अवांछनीय है अतः इसकी रोक थाम होनी चाहिए। पिछले दिनो पजाब सरकार ने गुरुद्वारों पर छापे मारकर साहस का कार्य किया था और इस भ्रम को दूर किया था कि गुरुद्वारों आदि पवित्र धर्म स्थानो के भीतर चाहे कुछ भी होता रहे, सरकार उन पर हाथ नही डाल सकती और उनमे प्रत्येक प्रकार के व्यक्ति निर्द्वन्द रहकर जो मन मे आया कर सकते हैं। गुरुद्वारों आदि की पवित्रता की रक्षा होनी चाहिए और वे अवाछनीय व्यक्तियो के छिपने तथा राज्य एवं समाज विरोधी कार्यकलाप के गढ न बनने चाहिए और न बनने देने चाहिए। इस दिशा मे केन्द्रीय और पजाब सरकार ने जो कार्यवाही इन दिनो की है उसका विधान सभा में प्रबल समर्थन हुआ। उन अकालियो द्वारा जो गुरुद्वारों के भीतर से अपने आन्दोलन को चला रहे हैं गुरुद्वारों आदि धर्म-स्थानो का दुरुपयोग हो रहा है इस बात पर विशेष बल दिया गया। मुख्य मन्त्री प्रताप सिंह कैरो ने कहा कि "पवित्र स्थान साम्प्रदायिक विद्वेष और हिंसा के प्रचार के गढ़ बना दिये गये हैं। उनके भीतर बड़े-बडे नेताओं को गालियाँ दी जाती और उनके विरुद्ध बल प्रयोग की धमकियाँ दी जाती हैं। अपराधियो एवं समाज-विरोधी तत्वो को उनमें शरण दी जा रही है। लोगो को अपराधों को करने का प्रोत्साहन दिया जाता और यहाँ तक कि कुछ नेताओ की हत्या के लिए पुरस्कारों की घोषणा भी की गई। मुख्य मन्त्री महोदय ने अपने कथयंन के सम मे स्वर्ण मन्दिर के भीतर दिए गए भाषणो की रिपोर्ट के कुछ अंश पढकर सुनाए। मुख्य मन्त्री ने विधान सभा मे और इससे पूर्व गुरुद्वारो मे अस्त्र-शस्त्रो के संग्रह के विषय में अपने वक्तव्यो मे जो आरोप लगाए हैं वे बड़े गम्भीर हैं और उनकी अस्वीकृति मात्र से न तो उनकी गुरुता ही कम होती है और न जनता ही उन्हे निराधार मान सकती है। यह स्थिति क्योकर उत्पन्न हुई? इसलिए कि अकाली नेता पवित्र स्थानो मे छुपकर बैठ गए है। वे पजाबी सूबे का आदोलन चला रहे हैं। गुरुद्वारे आदि उपासना वा आध्यात्मिक शान्ति और आनन्द उपलब्ध करने के लिए चिन्तन स्थान माने जाते हैं अतः यह आवश्यक है धार्मिक स्थान सब प्रकार के राजनैतिक प्रभावो से मुक्त रखे जायें।

अकाली नेताओ का कहना है कि सिख धर्म के अनुसार राजनीति को धर्म से पृथक् नही किया जा सकता। परन्तु इस समय गुरुद्वारे सिक्खो के एक वर्ग के अधिकार मे हैं और वह वर्ग पंजाबी सूबे के अपने आन्दोलन के लिए गुरुद्वारो का प्रयोग कर रहा है और इस माग को सिक्खो का सर्व सम्मत समर्थन प्राप्त नही है। दूसरे शब्दों मे गुरुद्वारो का प्रयोग एक वर्ग की माग की पूर्त्यर्थ हो रहा है। यदि यह मान भी लिया जाय कि उच्च राजनीति के लिये गुरुद्वारों का प्रयोग निषिद्ध नही हो सकता तब भी एक वर्ग की माग से सम्बद्ध आन्दोलन के प्रयोग के लिए अनुमति न होनी चाहिए और न यह उचित ही है। सच्चाई यह है कि एक बुरी प्रथा डाली जा रही है। अब समय आ गया है कि सिख जाति अपने धर्म-स्थानों की पवित्रता की रक्षा के लिए कार्यवाही करे। सिखो का हित इसी में है।

पंजाब विधान सभा और लैजिस्लेटिव कौंसिल ने केन्द्रीय सरकार की अकाली मांग विषयक स्थिति का प्राय: सर्व सम्मति से समर्थन किया। कौंसिल ने तो प्रधान मंत्री पं० नेहरू के दृढ़ एवं न्याय पूर्ण रवैए पर प्रसन्नता व्यक्त करके उनके प्रति कृतज्ञता का प्रकाश भी किया और मुख्य मंत्री सरदार प्रतापसिंह कैरों ने जिस योग्यता से अपने उच्च पद के दायित्व का निर्वाह किया और जिस सुन्दर ढंग से राज्य की शान्ति एवं व्यवस्था बनाये रखी उसकी कौन्सिल ने भूरि-भूरि प्रशसा की। प्रजातन्त्र व्यवस्था मे विधान मडलो की सम्मति और उनके निश्चयो की यो ही उपेक्षा नही की जा सकती। अकाली दल कह सकता है कि इस प्रकार के निर्णय की तो पूर्व से ही आशा थी क्योंकि विधान मंडल मे शासक दल के सदस्यो की ही प्रधानता है परन्तु अधिकाश सदस्य अपने निर्वाचन क्षेत्रो का प्रतिनिधित्व करते हैं अत: विधान सभाओ में प्रति बिम्बित मत से सुस्पष्ट है कि लोक मत अकाली नेता के सर्वथा विरुद्ध है। नए चुनाव के होने मे थोड़े से महीने शेष रह गए हैं। अकाली दल को इसका लाभ उठाना चाहिए और कम से कम पजाबी क्षेत्र में यह दिखा देना चाहिए कि लोगों का बहुमत पृथक् पंजाबी राज्य की मांग के पक्ष में हैं। यदि अकाली दल इस दिशा में अपनी शक्ति दिखा सका तो इसका केस अकाट्य हो जायगा। प्रजातंत्र में अनशन का कोई अर्थ नही होता वहाँ तो मत की पेटी ही निर्णायक तत्त्व होता है। अकाली दल को उचित है कि वह स्थिति पर विचार करे और मास्टर तारासिंह को अनशन का परित्याग करने का परामर्श दें। यद्यपि लोक-मत पजाबी सूबे के पक्ष में नहीं है तथापि वह चाहता है कि मास्टर जी हिन्दू सिक्ख एकता के उद्देश्य की पूर्त्यर्थ अपना अनशन तोड़ दें।

(ट्रिब्यून के २३-९-६१ के अग्रलेख पर आधारित)

पंजाबी सूबा

लोक सभा के समान ही पजाब की विधान सभा ने पजाबी सूबे की अकालियो की माग के प्रति नाम-मात्र की सहानुभूति प्रदर्शित की है। पजाब की लेजिस्लेटिव कौंसिल ने तो सर्वसम्मति से प्रधानमत्री की दृढ स्थिति का समर्थन किया है। इसके अतिरिक्त मुख्यमंत्री ने स्थिति का जिस योग्यता से सामना किया है उसकी प्रशंसा की गई। जब उन्होंने सूबा आन्दोलन और उसके पुरस्कर्त्ताओं के सम्बन्ध मे कठोरतम भाषा का प्रयोग किया तब भी कोई उत्तेजना उत्पन्न न हुई। स्पष्ट है कि उन्हे न केवल अकाली नीति और उनकी कार्य-प्रणाली के समर्थन के अभाव का ही विश्वास नही है अपितु कानून और व्यवस्था बनाए रखने और उपद्रव करने का प्रयत्न करने वाले शरारती लोगो से निपटने की अपनी सरकार की क्षमता पर भी विश्वास है। उनके इस दृढ आश्वासन को कि वह किसी को भी शान्ति भंग न करने देंगे और इस कठोर चेतावनी को कि अकालियो की माग के प्रति आत्म सात कर देने से समृद्ध पजाब के आर्थिक, सामाजिक और सास्कृतिक हितों की इतिश्री हो जायगी एवं हिन्दु और सिक्ख बर्बाद हो जायेंगे उन लोगो को नोट कर लेना चाहिए जो अशान्ति की भविष्य वाणी करते है और उन सम्प्रदाय वादियो के उन समर्थकों को भी अंकित करनी चाहिए जो हिन्दू सिक्ख एकता के नाम मे पृथकता वादियों को प्रसन्न करने का पक्ष लेते हैं।

यह दुर्भाग्य की बात है कि अकालियों ने अपने बनाए हुए संसार मे रहते हुए पंजाब के वा समस्त भारत के लोगों की मनोभावना की ओर जरा भी ध्यान नही दिया। यदि मास्टर तारासिंह के साथियो मे से जो देशभक्त और दूरदर्शी हैं मास्टर जी को अनशन के परीक्षण का परित्याग करने और वैध साधनो के द्वारा सिक्खो के अधिकारो के लिए प्रयत्न करने का परामर्श दे तो यह भी सामयिक बात होगी।

(हिन्दुस्तान टाइम्ज २३-९-६१)

विविध समाचार

—०:*:०—

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के विद्यालय विभाग के बच्चों के आश्रम मे कार्य करने के लिए ऐसे आर्य पुरुषों की सेवाओं को हम सहर्ष प्राप्त करना चाहते हैं जो दृढ आर्य विचारों के अवसर प्राप्त व्यक्ति हों। संस्कृत तथा अंग्रेजी में विद्यार्थियों के साथ वार्तालाप कर सकते हों और सेवा भाव तथा धर्म भावना से कार्य करने को प्रस्तुत हों। विद्यालय के आश्रम के बच्चों के स्तर को उन्नत करने के लिए ऐसे त्यागी, तपस्वी, धर्म प्रेमी महानुभावो की आवश्यकता है। निवास,भोजन तथा निर्वाह की व्यवस्था गुरुकुल ऐसे सज्जनों की कर देगा। आशा है बच्चों की शिक्षा तथा चरित्र उन्नति के प्रेमी सज्जन इस कार्य मे हमें सहयोग प्रदान करेंगे।

धर्मपाल विद्यालंकार
स० मुख्याधिष्ठाता

सार्वदेशिक सभा की अन्तरंग सभा

सभा की अन्तरंग सभा का अधिवेशन ८ अक्टूबर ६१ को दयानन्द भवन दिल्ली में मध्याह्नोत्तर २ बजे से होगा महानुभाव अंकित करलें।

शोक प्रस्ताव

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा ने श्री स्वामी अभेदानन्द जी की मृत्यु पर निम्नांकित शोक प्रस्ताव पारित किया :—

"स्वामी अभेदानन्द जी का जीवन आर्यत्व से सर्वदा ओतप्रोत रहा। एक सामान्य व्यक्ति के चरित्र से आर्यत्व की प्रेरणा लेकर वे आर्य जगत के शीर्ष-स्थानीय पद तक पहुंचे। उनकी प्रवचन-शैली, क्रियात्मक जागरूकता, संगठन-समरसता सभी गुण सभी के लिए उद्बोधक हैं। कृण्वन्तो विश्वमार्यम् के उद्घोष को अफ्रीका मे निनादित करते हुए उन्होंने मानव लीला संवरण की है। हम परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा के जीवन वृत्त से प्रेरणा ग्रहण करें। उनके परिवार के सभी सदस्यों के लिये धैर्य धारण करने की परमपिता से प्रार्थना है।

(पृ० ३७७ का शेष)

नवीन शाखाएँ खोलिए, पूर्व से चल रही आर्य वीर दल की शाखाओं को सम्मिलत कर प्रातः काल आर्य-समाज मन्दिरों मे सार्वजनिक यज्ञों का आयोजन किया जाय और प्रयास किया जाय कि यज्ञों मे प्रत्येक नागरिक स्त्री-पुरुष श्रद्धा से भाग लें। सायं ५ बजे से ६ बजे तक खेलशक्ति प्रदर्शन, पुरस्कार नवीन सदस्यों का परिचय तथा रात्रि में स्थानीय आर्य वीर-दल की ओर से स्थानोय आर्य समाज अथवा किसी सार्वजनिक स्थान पर महामहिम महा मानव प्रातः स्मरणीय श्री राम के जीवन पर शिक्षा पद संगीत और भाषण का प्रबन्ध किया जाय।

सार्वदेशिक सभा पुस्तक भण्डार की
पुस्तकों का सूची-पत्र

निम्न प्रकाशन नैट मूल्य पर दिये जायेंगे ।

१. ऋग्वेद संहिता	१०)
२. अथर्ववेद संहिता	६
३ यजुर्वेद संहिता	४)
४ सामवेद संहिता	२॥)
५. सत्यार्थ प्रकाश	२।)
६. ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका	२॥)
७. संस्कार विधि	१।)
८. पंचमहायज्ञविधि	२०)
९. कन्नड सत्यार्थप्रकाश	३।)
१० मराठी सत्यार्थप्रकाश	१।=)
११. कर्त्तव्य दर्पण सजिल्द	।।≡)
१२. वैदिक ज्योति	५)२५
१३. पञ्च महायज्ञ विधि भाष्यम्	५)
१४. विवाह पद्धति	५०)
१५. आर्याभिविनय	)७५

निम्न पुस्तकों पर निम्न प्रकार कमीशन दिया जायेगा ।

१०) से २५) रु० तक १२॥%
२५) से ऊपर २५०) तक २०%
२५०) से ऊपर १०००) तक २५%
१०००) से ऊपर २०००) तक ३० ,,
२०००) से ऊपर ३३%

श्री स्वामी ब्रह्ममुनि कृत ।

१ यम पितृ परिचय	२)
२. वैदिक ज्योतिष शास्त्र	१॥)
३. वैदिक राष्ट्रीयता	।)
४. वैदिक ईशवन्दना	।=)॥
५. वैदिक योगामृत	॥=)
६. दयानन्द दिग्दर्शन	॥।)
७ वेदों में दो बड़ी वैज्ञानिक शक्तियां	॥।)
८. निज जीवनवृत्त वनिका अजिल्द	)५०
,, ,, सजिल्द	)७५
९ बृहत् विमान शास्त्र सजिल्द	१०)
१०. बाल जीवन सोपान ,,	१॥=
११. छान्दोग्य उपनिषद् कथा	३
१२ दार्शनिक अध्यात्म तत्व	१॥
१३. वेदान्त दर्शनम् (संस्कृत में)	३
१४ वैदिकवन्दन	५)
१५ बालसंस्कृति सुधा	)५०
१६ अभ्यास और वैराग्य	१)६५

श्री महा० नारायण स्वामी कृत ।

१७ योग रहस्य	१।)
१८ मृत्यु और परलोक	१।)
१९. विद्यार्थी जीवन रहस्य	॥=)
२०. प्राणायाम विधि	≡)

२१ उपनिषदें :—
ईश ।=) केन ॥) कठ ॥) प्रश्न ।=)
मुन्डक ≡) माण्डूक्य ।) एतरेय ।) तैत्तिरीय १)

२२ बृहदारण्यकोपनिषद	३

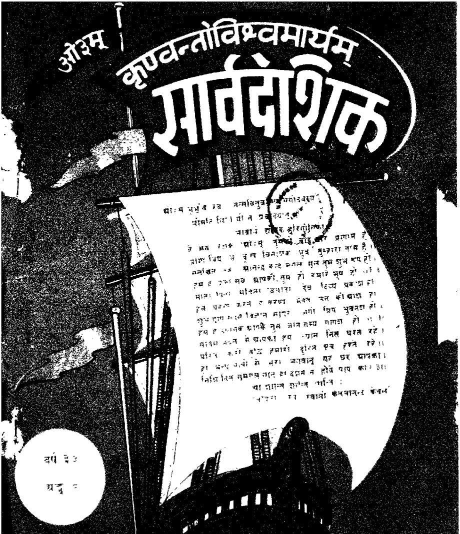
श्री प० गंगाप्रसाद उपाध्याय कृत

२३ आर्योदय काव्यम् पूर्वार्द्ध	१।।)
२४ उत्तरार्द्ध	१॥)
२५. वैदिक संस्कृति	१।)
३६. मुक्ति से पुनरावृत्ति	।=)

सार्वदेशिक सभा पुस्तक भंडार, दयानन्द भवन, नई दिल्ली—१.

रजिस्टर्ड नं० डी-५१

सम्राट् प्रेस, पहाड़ी धीरज, दिल्ली मे मुद्रित व रघुनाथ प्रसाद जी पाठक मुद्रक और प्रकाशक के लिये सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द भवन, नई दिल्ली-१ से प्रकाशित ।


ओ३म्
कृण्वन्तोविश्वमार्यम्
सार्वदेशिक
वर्ष
अङ्क

॥ ओ३म् ॥

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

वार्षिक मूल्य ६) विदेश से वार्षिक ८) या १२ शिलि

वर्ष ३७ सृष्टि संवत् १९७२९४९०६० १९६१अक्टूबर आश्विन २०१८ अंक ८

विषय सूची

—०:*:०—

* सम्पादक

काली चरण आर्य सभा मन्त्री

* सहायकसम्पादक

रघुनाथप्रसाद पाठक

* प्रकाशक व मुद्रक

रघुनाथप्रसाद पाठक

* कार्यालय

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

दयानन्द भवन, नई दिल्ली

फोन : २२४७७१

* मुद्रक

सम्राट् प्रेस, पहाड़ी धीरज देहली।

फोन : २२२५६३

सार्वदेशिक

प्रभु की शक्ति का दिग्दर्शन

चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः आप्राद्यावा पृथिवीऽअन्तरिक्षꣳ सूर्य्यऽआत्मा जगतस्तस्थुषश्च ।

ऋक् १ । ११५ । १, यजु. ७ । ४२; १३ । ४६,
अथर्व. १३ । २ । ३५: २० । १०७ । १४

हम उपासकों के हृदय मे दिव्य गुण विशिष्ट सत्ताओं की अद्भुत जीवनी शक्ति तथा विशिष्ट सत्ता का उत्कृष्टता पूर्वक प्रकाश हुआ है जो मित्र अर्थात् सम्मिश्रण कारिणी तथा अग्नि अर्थात् विश्लेषण कारिणी और वरुण अर्थात् अवरण कारिणी शक्तियो का चक्षु रूप है। वह जीवन प्रदायिनी शक्ति से लोक इस लोक और अन्तरिक्ष लोको को पूर्णतः परिपूर्ण किए हुए है। वह समस्त विश्व का प्रेरक स्थावर और जंगम दोनों सत्ताओं का आत्म-स्वरूप है।

समस्त विश्व ब्रह्माण्ड अद्भुत असंख्यात दिव्य शक्तियों के द्वारा अनेक प्रकार की प्रक्रियाओं से परिपूर्ण हो रहा है। जिस ओर दृष्टि डालते हैं संसार बड़ी विचित्रता से प्रत्येक वस्तु को हमारे सामने उपस्थित करता है। उन सब दिव्य शक्तियों का आधार जिन दिव्य शक्तियो के सहारे संसार की विचित्रता विचित्र रूप धारण किए हुए है उनका आधार स्वरूप विश्व का रचने वाला समस्त प्रक्रियाओं का संचालक असख्यात अद्भुत शक्तियो को अपने अन्दर धारण करने वाला एक परमात्मा देव हैं जो अति विचित्र जीवनी शक्ति स्वरूप है। हम उपासको के हृदय उस परमेश सृष्टि संचालक की विचित्रता से परिपूर्ण रहे। उपासना द्वारा उस विचित्र दिव्य जीवनी शक्ति का भक्तों के हृदय में प्रकाश होता है जिस प्रकाश से प्रकाशित होकर भक्त जन संसार के कल्याण के कारण बनते हैं। विश्व ब्रह्माण्ड की प्रक्रिया के सचालन मे तीन प्रधान शक्तियाँ कार्य करती हैं। इन तीन विचित्र शक्तियो मे मित्र एक शक्ति है जो सश्लेषणात्मक कार्य करती है। अग्नि दूसरी शक्ति है जो विश्लेषणात्मक कार्य करती है। तीसरी वरुण शक्ति है जो समन्वयात्मक कार्य करती है। यदि इन तीनों को सयोजक नियो‍क और नियामक शक्ति कहा जाए तो भी ठीक होगा। उपासक का हृदय इन तीनों प्रकार की शक्तियों से प्रभावित रहता है। यह तीनों प्रकार की विचित्र शक्तियाँ जीवन प्रदान करने वाली हैं और परम-पिता परमात्मा इन तीनो जीवन दायिनी शक्तियो का चक्षु स्वरूप हैं जिसकी प्रधानता में ही अर्थात् जिसकी देख-रेख में ही विश्व ब्रह्माण्ड की प्रक्रिया सचालित होती रहती है। यह शक्ति न केवल पृथिवी, तक सीमित है किन्तु अन्तरिक्ष और देवलोक में पूर्णतया परिपूर्ण है। यह शक्ति समस्त ब्रह्माण्ड में ओत-प्रोत है और इस तरह विस्तृत है कि कोई स्थल भी इससे खाली नहीं कहा जा सकता। उपासक उस परम ब्रह्म परमात्मा को अपने हृदय मे उन समस्त अद्भुत और विचित्र प्रक्रियाओं का सचालन अनुभव करता हुआ समस्त ब्रह्माण्ड में उसकी व्यापकता की निश्चयात्मक धारणा रखता हुआ और समस्त ब्रह्माण्ड की संयोजक-नियोजक-नियामक-प्रक्रिया मे उस ही एक प्रभु की शक्ति का अवलोकन करता हुआ प्रभु की उपासना मे संलग्न रहता है तो कल्याण का भागी बनता है। वह परमात्मा ही समस्त जगत का सूर्य अर्थात् प्रेरक र ‍ ‍न आत्मा है।

—कालीचरण आर्य

सम्पादकीय

प्रजातन्त्र में स्वस्थ परम्परा की आवश्यकता

देश में विधान सभाओं तथा लोकसभा के लिए साधारण निर्वाचन अब बिलकुल सिर पर आ रहे हैं। ज्यों-ज्यों निर्वाचन का समय निकट आता जा रहा है, त्यों-त्यों तत्सम्बन्धी सरगर्मियाँ भी तेज होती जा रही हैं। विभिन्न राजनैतिक दल चुनावों में सफलता प्राप्त करने के लिए जो साधन जुटा रहे हैं, उन में धन-संग्रह का प्रमुख स्थान है क्योंकि निर्वाचन की प्रक्रिया ऐसी खर्चीली बन गयी है कि उस में धन को भारी महत्त्व प्राप्त हो गया है। यह भी स्पष्ट है कि देश की साधारण जनता राजनैतिक दलों के निर्वाचन कोष नहीं भरती और न भर ही सकती है। अत इसका मुख्य स्रोत प्राय. पूंजीपति ही रह जाते हैं। पूंजीपतियों की संख्या देश में कुछ बहुत बड़ी नहीं है, जिसका अर्थ यह होता है कि कुछ मुट्ठी भर लोगो के हाथ में राजनैतिक दलों की नकेल आ जाती है और वे उन पर छाये रहते हैं।

अभी हमारे प्रधान मन्त्री श्री पं जवाहरलाल नेहरू कानपुर गए और कई लाख रुपये की थैली कांग्रेस के निर्वाचन-कोष के लिए लेकर आये। इस घटना ने विशेष रूप से यह प्रश्न सजीव बना दिया है कि राजनैतिक दलों द्वारा पूंजीपतियों से निर्वाचन-कोष के लिए धन प्राप्त करना कहाँ तक उचित है? और विशेष रूप से प्रधान मन्त्री का सीधे इस मामले मे पड़ना तो बहुत विचारणीय है। श्री नेहरू जी देश के प्रधान मत्री भी हैं और कांग्रेस के नेता भी हैं। परन्तु उनकी दोनों हैसियतो को अलग-अलग नही किया जा सकता। तथ्य तो यह है कि आज उनका मुख्य कार्य प्रधान मत्री के रूप मे देश का प्रशासन चलाना है, न कांग्रेस संगठन की सेवा करना। अत. उनकी स्थिति सरकार के प्रमुख की ही है। हमारी अपनी छोटी-सी बुद्धि के अनुसार यह सम्मति है कि सत्तारूढ़ लोगों को चुनाव के लिए धन संग्रह के काम मे नही पड़ना चाहिए। इससे प्रशासन में भारी भ्रष्टाचार तथा अनैतिकता का बीजारोपण होता है। कहा तो यह भी जा सकता है कि इस प्रकार के रुपये के बल पर जीतने वाले लोगों द्वारा बनायी गयी सरकार की नीव ही अनैतिकता पर रखी जाती है।

ब्रिटिश शासन का वह कटु अनुभव अभी देश के नेताओं तथा जनता को भूला नही है कि जब अंग्रेज शासक इसी प्रकार पूंजीपतियो तथा जनता से राजनैतिक प्रयोजनो के लिये धन लेते थे। उस कार्य मे सरकारी मशीनरी का प्रयोग होता था, विभिन्न स्तरो पर दबाव तथा जबरदस्ती के हथकडे बरते जाते थे। परिणामस्वरूप जनता मे बढता हुआ असन्तोष शासन की जडो को दीमक बन कर खाता था। जो कोई भी शासन इस प्रणाली को अपनायेगा उसे इसके स्वाभाविक परिणामों के लिए भी उद्यत रहना होगा। प्रायः लोगो में यह प्रवृत्ति होती है कि वे शासन अथवा शासनाधिकारियों को कृतज्ञ बनाने के लिए अवसरो की ताक में रहते हैं, विशेषरूप से पूंजीपति लोग इस कला में बडे दक्ष होते हैं और वे किसी अवसर को हाथ से नही जाने देते। अपने अपार धनसागर में से कुछ बूंदें देकर यदि वे सरकार की कृपा पात्रता उपार्जित कर सकें तो एक व्यापारी के रूप में इससे सस्ता और अच्छा सौदा कोई दूसरा नही हो सकता। फिर प्रधानमंत्री जैसी ऊंची स्थिति का व्यक्ति, जिससे हाथ मिलाने अथवा साक्षात्कार मात्र से ही लोग निहाल होने की सोचते हो, उनको सुलभ हो जाय तो क्या कसर रह जाती है?

मालूम होता है कि श्री नेहरू जी भी इस स्थिति को पूरी तरह समझे हुए हैं यह कोई ऐसा गूढ तत्व भी नहीं हैं जिसे नेहरू जैसा योग्य तथा अनुभवी व्यक्ति हृदयङ्गम न कर सके। यही कारण है कि उन्होने ये थैलिया लेते हुए ऐसे विचार प्रकट किये जिनसे पता चलता है कि वे स्वयं बहुत संकोच अनुभव कर रहे थे। उन्होने रूपया देने वालों की कुछ आलोचना भी की। परन्तु फिर भी उन्होने थैली स्वीकार की ही। क्या इसका यह अर्थ समझा जाय कि नेहरू जी अपनी आत्मा के विरुद्ध थैलिया स्वीकार करने पर,

विवश थे। नेहरू जी के व्यक्तित्व तथा चरित्र को जानने वाला कोई भी व्यक्ति यह नही समझ सकता कि उनमें ऐसे प्रसंगों पर अपेक्षित आत्मबल की कमी है। बात तो यह मालूम देती है कि वे यह भलीभांति समझते थे कि इस कार्य की देश में आलोचना तथा प्रतिक्रिया होगी। इसी सम्भावित आलोचना को हतप्रभ करने के लिए उन्होंने स्वयं ही सफाई भी दे डालने की नीति का अवलम्बन किया। नेहरूजी ने इसी प्रसंग में एक मुद्दा और भी उठाया। उन्होंने कहा कि पूंजीपति कांग्रेस को भी चन्दा देते हैं तथा अन्य राजनैतिक दलो को भी। इसका अभिप्राय यह है कि उन्हे किसी सिद्धान्त अथवा नीति से कोई लगाव नही है। प्रधान मन्त्री ने यह भी कहा कि कांग्रेस कार्य कर्त्ताओ को ऐसे लोगो से चन्दा नही लेना चाहिए जिन का काग्रेस की नीतियो मे विश्वास नही है।

इस पर हमारा विचार यह है कि पूंजीपति लोग राजनैतिक दलो को धन कोई पुण्यलाभ या परोपकार बुद्धि से नहीं देते। ऐसा करने वालों के लिए मानवीय सेवा के विस्तृत क्षेत्र खुले पड़े है। वे किसी शासनाधिकारी के आने की बाट नही देखते। राजनैतिक दलो को धन केवल स्वार्थ-सम्पादन के लिए दिया जाता है और यह स्वार्थ-सम्पादन सत्तारूढ दल की कृपादृष्टि से ही अधिक मात्रा मे सम्भव है, अतः उसी दल को धन अधिक मिलना स्वाभाविक है। हम समझते हैं कि प्रधान मन्त्री के इस कार्य से देश के राजनैतिक क्षेत्र मे एक बुरी परम्परा पड़ी है। इसके बाद राज्यों के मुख्यमन्त्रियों अथवा शासन के महत्व पूर्ण पदो पर आसीन लोगो का द्वार इस काम के लिए खुल जाता है और यही परम्परा नीचे तक के स्तरो तक पहुचती है। प्रजातन्त्र के मूल पर ही कुठाराघात होता है। किस-किस तरीके से ये थैलियां इक्ट्ठी की जाती है सम्बद्ध लोग ही जानते हैं। कुछ मुट्ठी भर लोगों को देश के शासन पर प्रभावी होने देना न देश के हित मे है, न प्रजातन्त्रीय भावना के अनुरूप है और न ही सम्बद्ध संस्था के हित मे है। प्रधान मन्त्री के लिए तो किसी भी दृष्टि से शोभाजनक नही है। प्रत्यक्ष है, यदि कांग्रेस संस्था के लिए दान लेना हो तो सघटन के लोग ले। वैसे तो आज उनकी स्थिति भी अर्धसरकारी जैसी है। फिर भी उन लोगों को धन नही मिलता। अतः उच्चस्तरीय सरकारी नेताओं को प्रयोग करने की आवश्यकता पडती है। क्या इसका सीधा यह अर्थ नही कि दाताओ को सस्था के प्रति आकर्षण न हो कर शासन के प्रति लगाव है? प्रधान मन्त्री की उक्त आलोचना का यह भी अर्थ हो सकता है कि वे चाहते है कि पूंजीपति काग्रेस के सिवाय किसी अन्य राजनैतिक दल को भी चन्दा दे, यह उन्हे पसन्द नही है। उनकी नापसन्दगी की प्रतिक्रिया क्या हो सकती है यह भी किसी से छिपा नही है।

चाहे कुछ भी हो; यह मानना पडेगा कि राजनैतिक दलो और विशेषतः सत्तारूढ दल द्वारा निर्वाचन के लिए धन संग्रह की यह प्रणाली उचित नही है। हमारे प्रधान मन्त्री कुछ आदर्शप्रिय समझे जाते हैं, अतः उन्हें तो प्रत्येक दशा मे अपनी स्थिति को सुरक्षित ही रखना चाहिये। यद्यपि आर्य समाज का देश की सक्रिय राजनीति मे कोई योग नही है, परन्तु राजनैतिक क्षेत्र मे भ्रष्टाचार न व्याप्त हो सके, इतने अंश मे उसकी रुचि निर्विवाद है और इसी दृष्टि से उसे समय-समय पर अपने विचार प्रकट करने होते हैं। हमारी इन पंक्तियों का भी केवल इतना ही अभिप्राय है। प्रजातन्त्र मे स्वस्थ परम्पराओं का पनपना वाञ्छनीय है।

रघुवीरसिंह शास्त्री

सम्पादकीय टिप्पणियाँ

श्रीयुत डाग हैमरशोल्ड का बलिदान

राष्ट्रसघ के महामन्त्री श्रीयुत डाग हैमरशील्ड शान्ति की बलि-वेदी पर चढकर युग-पुरुष बन गए हैं। राष्ट्रसंघ का उद्देश्य ससार मे शान्ति बनाए रखना है। गृह युद्ध, मार-काट और उपद्रवों से संतप्त कांगों मे शान्ति व्याप्त करने और राष्ट्रसघ के अधिकार और दायित्व की रक्षा करने के महान् उद्देश्य की पूर्त्यर्थ यत्न करते हुए उनके प्राण गए उनके बलिदान से अन्तर्राष्ट्रीय शांति को बड़ा आघात लगने की आशंका उपस्थित हो गई है। उनका वायुयान मशीन की किसी खराबी से ध्वस्त हुआ वा यह दुर्घटना किसी तोड़-फोड़ का परिणाम थी, यह अभी निश्चित नही है। इस दुर्घटना की जांच प्रारम्भ हो गई है। इसके परिणामों की संसार उत्सुकता से प्रतीक्षा कर रहा है क्योकि संसार के श्रेष्ठ जन इस दुर्घटना से बड़े क्षुब्ध और दुःखी हैं। सन्देह यह किया जा रहा है कि यह दुर्घटना पूर्व से आयोजित षडयन्त्र का परिणाम थी। यदि यह प्रमाणित हो गया कि यह दुर्घटना विमान की खराबी के कारण घटित हुई थी तो उनके दुःख के साथ जो रोष और क्षोभ है उसकी मात्रा मे कमी हो जायगी। यदि यह दुर्घटना किसी षडयन्त्र का परिणाम सिद्ध हुई जैसा कि जन-सामान्य को संदेह है, तो अपराधियो को समुचित दड दिए जाने पर ही कुछ सन्तोष का अनुभव होगा। ससार यह बर्दाश्त नहीं कर सकता कि उसके श्रेष्ठ और अलभ्य जनो का इस प्रकार अन्त कर दिया जाय। श्री डाग के बलिदान से राष्ट्रसघ के पैरो के लड़खड़ाने का भय उत्पन्न हो गया है। आवश्यकता इस बात की है कि राष्ट्रसंघ की इस महान् आपत्ति से प्राण पण से रक्षा की जाय और उसे और भी अधिक शक्तिशाली बनाने मे कोई प्रयत्न उठा न रखा जाय। राष्ट्रसघ कांगों में जिस उद्देश्य की सिद्धि में संलग्न है उसकी पूर्ति में जरा भी प्रमाद वा ढील न होनी चाहिए। जो स्वार्थी लोग श्री डाग को कांगो में वा अन्यत्र अपने कर्त्तव्य पालन में लगा हुआ देखकर उन्हें अपने मार्ग का रोड़ा समझकर उन्हें हटाने की सोचते थे उन्हें हतोत्साहित करने का यही सर्वोत्तम उपाय है।

श्री डाग का बलिदान व्यर्थ न जायगा और जिनके हाथों में शक्ति है उन्हे तो किसी भी मूल्य पर न जाने देना चाहिए।

श्री डाग स्वीडन के निवासी थे। बड़े सुयोग्य राजनीतिज्ञ थे। वे गत ८ वर्ष से इस दायित्व का बडी सूझ बूझ, और योग्यता से निर्वाह कर रहे थे। सबसे अधिक कागो के मामले मे उनका व्यक्तित्व कसौटी पर चढ़ा और अपवाद एव अपमान के मध्य भी वे कर्त्तव्य पालन मे अडिग रहे। लुमुम्बा की हत्या होने पर उनपर साम्राज्यवादियो का पक्ष लेने का आरोप लगाया गया। रूस ने उन्हे अपदस्थ करने का आग्रह किया। परन्तु घटना-चक्र कितना विचित्र है। आज उनके निधन मे साम्राज्य वादियों के कुचक्र का संदेह किया जा रहा है जब हम इस बात के प्रकाश मे उनके बलिदान पर विचार करते हैं तो सहसा ही उनकी उच्चता और निष्पक्षता आँखों के सामने आ जाती और अनायास ही हृदय से यह ध्वनित हो उठता है कि वह बडे ही साहसी और तूफानो के मध्य अविचलित रहने वाले महापुरुष थे।

यदि उनके निधन से अन्तर्राष्ट्रीय तनाव में वृद्धि होकर वह तृतीय महासमर में परिणत हो गया तो यह स्थिति बड़ी दुर्भाग्यपूर्ण होगी जिसके निवारण के लिए उन्होने अपनी मान-प्रतिष्ठा और जीवन तक को दाव पर लगाया हुआ था।

मनुष्यों को श्रेष्ठ बनाओ

नित्य बढ़ती हुई जनसख्या और मानव की अंतरिक्ष यात्राएँ ये दोनो समस्याएं एक दूसरे के साथ ग्रथित हुई बताई जाती हैं। खाद्य-पदार्थों की वृद्धि और मानव के

निवास के लिए नए स्थानों की खोज के उपाय ज्ञात किए जा रहे हैं। इन समस्याओं के समाधान के यत्न में मनुष्य की यह धारणा बल पकड़ती दीख पड़ती है कि मूक प्राणियों की आत्मा नहीं होती और उस आबादी को जीवित रखने के लिए जो ब्रह्मचर्य एवं संयम का जीवन व्यतीत करने में असमर्थ है अस्वाभाविक एवं निर्दयता से प्राप्त भोजन की व्यवस्था की जाय जिससे वह वासना की सन्तुष्टि मे निमग्न रहकर अंधाधुन्ध बच्चे उत्पन्न करता रहे। दूसरी ओर उन व्यक्तियो को जिनकी माताओं ने बड़े कष्ट और यत्न से पाल-पोस कर बड़ा किया है, अन्तरिक्ष मे इस आशा से भेजा जा रहा है कि किसी न किसी दिन वे चन्द्रलोक मे पहुँच कर ऐसे नगरो का निर्माण करने मे समर्थ हो जायंगे जिनमे धरती की बढ़ी हुई आबादी समा सके। विज्ञान ने जीवन के प्रति आदर की भावना को जिस निर्ममता से नष्ट किया है यह उसका ज्वलत उदाहरण है।

इस प्रकार के ससार मे जहाँ गुणो का सख्या पर निरन्तर बलिदान हो रहा है किसी को यह नही सूझता कि इस समय अधिक व्यक्तियो की अपेक्षा श्रेष्ठ व्यक्तियों की आवश्यकता है। अपनी दुर्बलताओ वैर-भावना और सत्तालोलुपता को दूसरे लोको में ले जाने के स्थान मे यदि हम मनुष्य को अधिक विकसित, कम हिंसक, अधिक ईमानदार और दयालु बनायें तो यह सफलता अन्तरिक्ष उड़ानो की अपेक्षा अधिक शानदार होगी। परन्तु क्या विज्ञानवेत्ता भौतिकवाद और सत्ताके नशे मे अंधे हुए अधिनायक गण इस बात की ओर ध्यान देंगे ? उनसे यह आशा करना दुराशा प्रतीत होती है क्योकि वे युक्ति और तर्क के शत्रु होते हैं।

नासिक जिले में ईसाइयों का प्रभाव

पं० गोविन्द प्रसाद त्रिपाठी ने मनमाड (नासिक) में ईसाइयों के बढ़ते हुए प्रचार कार्य का निरीक्षण करके एक समाचार सार्वदेशिक मे प्रकाशनार्थ भेजा है जिसका आवश्यक भाग इस प्रकार है:—

"मनमाद मे पादरियों ने विदेश से ८० लाख रुपया लाकर अपना हाई स्कूल और दवाखाना बनाना आरंभ कर दिया है। प्रति शनिवार को अन्न और पैसे के लोभ से आकृष्ट निर्धनजन सायंकाल को भोजन करते और रविवार को गिरजे मे ईसा की प्रार्थना करते हैं। ईसाई बन जाने वालों को नौकरी, मकान और आर्थिक सहायता आदि की सहायता की जाती है।"

लार्ड रसेल

सुप्रसिद्ध तत्ववेता लार्ड रसेल (बर्टरेण्ड रसेल) को जिनकी आयु इस समय ८९ वर्ष की है लंडन के एक न्यायालय ने अणु आयुधो विरोधी प्रगतियो के कारण ७ दिन की कैद की सजा दी थी जो रद्द करदी गई है। उन्होने जेल से प्रसारित अपने व्यक्तव्य मे कहा कि अमेरिका, रूस, जर्मनी, फ्रांस और ब्रिटेन के राजनैतिक नेता मानवजीवन की इतिश्री के लिए सन्नद्ध देख पड रहे है। सत्ता की खोज मे निरत दुराग्रही शासन और भ्रष्ट सरकारी विशेषज्ञ अपनी सर्विस पर चिपटे रहने के उद्देश्य से पूर्व और पश्चिम की प्रजा को पथ-भ्रष्ट करके अपनी उन नीतियो को मनवाने के लिए विवश करते हैं जिनका अन्त निश्चय ही अणु-युद्ध मे होगा।

इस समय दो काल्पनिक पक्ष हैं और दोनो ही अपने को महानोद्देश्य से प्रेरित हुआ बताते है। परन्तु यह धोखा है। कैनेडी, ख्रुश्चेव, अदनार, डिगाल और मैक मिलान सबका एक ही उद्देश्य है और वह है मानव जीवन का अन्त कर देना। कतिपय निर्दयी परन्तु सत्ताधारी व्यक्तियो के सम्मिलित निश्चय के द्वारा प्रजा का परिवारो का और मित्रोका सफाया हो जायगा।

साहित्य, कला-विज्ञान और विचारक्षेत्र की समस्त वरिष्ठ सफलताएँ सदैव के लिए विनष्ट हो जायगी।

आमोद-प्रमोद प्रेम और सौख्य, विचार और ज्ञान और उस सौन्दर्य की सृजना करने वाली शक्ति से शून्य होकर जो मानव-जीवन को समृद्ध बनाती है हमारी

नष्ट-भ्रष्ट और जीवन शून्य धरती युग-युगान्तर पर्यन्त सूर्य के चहुँ ओर निरुद्देश्य गति करती रहेगी।

इस व्यवस्था के निराकरणार्थ ही हम आज जेल में हैं। लार्ड रसेल पर यह आरोप लगाया गया था कि उन्होने १७ सितम्बर को पार्लियामेंट के दोनों सदनों के सामने अणु आयुध विरोधी धरने मे लोगों को सम्मिलित होने की प्रेरणा करके सार्वजनिक शांति भंग करने की चेष्टा की थी। इस धरने में १० हजार लोगों के सम्मिलित होने की आशा थी।

लंदन के एक पार्क में बिना अनुमति के लाउडस्पीकर का प्रयोग करने के अपराध मे लार्ड रसेल पर २० शिलिंग का जुर्माना भी हुआ। उन्होंने ६ अगस्त को लाउडस्पीकर से यह घोषणा की थी कि बर्लिन के प्रश्न पर युद्ध न होना चाहिए।

मास्को रेडियो ने इस जुर्माने के दण्ड पर आलोचना करते हुए कहा है "ब्रिटिश प्रजातन्त्र का नमूना यह है।"

अणु आयुधो के निर्माता और प्रयोक्ता कहते हैं कि युद्ध की बिभीषिका से मानव को बचाने के लिए ही इनका निर्माण और परीक्षण हो रहा है। लार्ड रसेल भी स्यात ऐसा ही सोचते हैं। अन्तर केवल इतना है कि लार्ड रसेल मानव की और उसकी वरिष्ठता की रक्षा के लिए चिन्तित है जब कि अणु आयुधों के निर्माताओ को मनुष्य की सत्ता की रक्षा की तो चिन्ता है उसकी वरिष्ठता की रक्षा की चिन्ता नहीं है।

सांडो का युद्ध

ब्रिटेन मे रोम साम्राज्य में प्रचलित सांडो की लड़ाई की निर्दय प्रथा को प्रचलित किए जाने का प्रयत्न हो रहा है जो वहाँ कानूनन अवैध है। वहाँ एक क्लब स्थापित है जो स्पेन केएकमहा बलिष्ठ और लडाकू सांड को ब्रिटेन में लडाई के लिये लाने के लिए प्रयत्नशील हैं। इस सांड ने अब-तक९ लडाइयों में १२५० सांडो को समाप्त किया है। सौभाग्य से ब्रिटेन के अधिकारी इस विषय में बड़े सतर्क हैं और उन्होंने विश्वास दिलाया है कि रोमन कैथोलिक देशो में प्रचलित यह दुष्प्रथा ब्रिटेन मे अवैध है और इस युद्ध की अनुमति न दी जायगी। फिर भी वहाँ के जीव दया-संस्थान मानव के भयंकर पतन को देखते हुए बड़े सशंक हैं।

मास्टर तारासिंह के अनशन की भर्त्सना

अकाल तख्त के भूत-पूर्व सर्वोच्च महन्त ज्ञानी प्रताप सिंह ने अपने एक प्रेस वक्तव्य मे राजनैतिक उद्देश्य के लिए गुरुद्वारो तथा अन्य धर्म स्थानो के अनशन के लिए प्रयुक्त किए जाने की बडी कठोर आलोचना की है। उन्होने कहा स्वयं अनशन सिक्ख धर्म की शिक्षाओ के विरुद्ध है। उन्होने अपने कथन के समर्थन मे पवित्र ग्रन्थ साहब के कई पद उद्धृत किए। गुरु गोविन्दसिंह ने 'रेहतनामा' मे अपनी सम्मति का उल्लेख किया है। उनकी सम्मति मे अनशन आत्म-हत्या के समान है। इसी कारण सिखों के समस्त धार्मिक पर्वों पर और स्वय स्वर्ण मन्दिर मे कड़ाह-प्रसाद चढाया जाता और लोगो मे वितरित किया जाता है।

उनकी सम्मति मे मास्टर तारासिंह की भूख हड़ताल सिख धर्म पर लाछन है क्योकि यह गुरुओ के लगर के प्रति निकट की जा रही है।

उन्होंने कहा कि समस्त धर्मों में समानता के आदर्श का प्रचार करने के लिए गुरु अर्जुनदेव ने स्वर्ण-मन्दिर का निर्माण किया था। यही कारण है कि गुरुग्रन्थ साहिब मे अन्य मतों के सन्तों के वचन भी पाए जाते हैं और वे सन्त हिन्दू, हरिजन और मुसलमान हैं। स्वर्ण-मन्दिर की आधार-शिला रखने के लिए मुस्लिम सन्त हज़रत मियां मीर को भी आमंत्रित किया गया था। स्वर्ण मन्दिर के पवित्र प्रांगण मे आमरण अनशन करना मन्दिर का बडा अपमान है।

वर्तमान जगत् ने धर्म को राजनीति से नितान्त पृथक्

किया हुआ है। दुःख है कि अकाली दल के दल-गत कार्यो के लिये गुरुद्वारो का प्रयोग हो रहा है। अन्त में उन्होने मास्टर जी से अपील की कि वह अनशन का परित्याग करके मन्दिर की पवित्रता की रक्षा करें।

आर्य साहित्य का प्रभाव

गढवाल के एक अध्यापक महोदय लिखते हैं :—

'मैं आर्य समाज में शामिल होने की आशा करता हूं। इधर तो इस जिले में आर्य समाज कही नही है, ऐसा ही मालूम होता है। मैंने १ साल पूर्व से आर्यसमाज का साहित्य पढ़ना आरम्भ किया था और अब कुछ-कुछ आर्य-समाज के नियम ज्ञात हो गए हैं। अपने तीन प्रेमी सज्जनो ने सत्यार्थप्रकाश पढने को प्रोत्साहित किया और मंगाकर पढना आरम्भ कर दिया है। इधर के ब्राह्मण कहे जाने वाले व्यक्ति आर्यसमाज और सत्यार्थप्रकाश की भारी निंदा करते हैं। खैर ईश्वर जैसी मति देगे। आर्यसमाज की छोटी-छोटी पुस्तको को पढ़ने से आज से ४ वर्ष पूर्व धूम्रपान, मास खाना, चाय पीना और शराब का सेवन सदा के लिए त्याग दिया। सामवेद, उपनिषद्, गीता और रामायण भी नित्य पढ़ता हूँ।"

इस पर विशेष टीकाटिप्पणी की आवश्यकता नही है। आर्यसमाज के साहित्य का सत्प्रभाव दिखाने के लिए उपर्युक्त पंक्तियाँ उद्धृत की गई हैं। उचित है कि अपने साहित्य का अधिकाधिक प्रसार किया जाय।

गुरुकुल भटिण्डा

गुरुकुल भटिण्डा स्वर्गीय स्वामी श्रद्धानन्द जी ने आज से लगभग ४० वर्ष पूर्व दानवीर श्री चौ० रामजीदास जी रईस भटिण्डा निवासी के दान से खोला था जिसका प्रबन्ध एक ऐसी कमेटी के आधीन था, जिससे गुरुकुल का कार्य ठीक रूप से नहीं चल रहा था। अब गुरुकुल का प्रबन्ध आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने अपने हाथ में ले लिया है। सभा की ओर से प्रबन्ध के लिए तथा आचार्य पद के लिए सभा के महोपदेशक श्री पं० भूदेव जी शास्त्री वेद वेदान्त सांख्य योग तीर्थ गुरुकुल मे पहुँच गए हैं। अब गुरुकुल मे प्रवेश आरम्भ है मासिक खर्च केवल १०) तथा प्रवेश फीस ५) है शेष खर्च गुरुकुल कमेटी करेगी।

क्लास गुरुकुल कांगड़ी की चलेगी।

महर्षि की शिक्षाओं का प्रभाव

सितम्बर के इंडियन रिव्यू मे कुमारी नन्दिता M. A. का एक लेख छपा है जिसका शीर्षक है "भारतीय रजवाड़ो ने भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन मे क्या योग दिया ?" इस लेख मे उन्होने रजवाडो मे राष्ट्रीय-जागृति के ४ कारण बताए हैं जो इस प्रकार हैं:—

१—भारत मे अनेकता के होते हुए भी मूलभूत एकता है।

२—स्वामी दयानन्द और विवेकानन्द की शिक्षाएँ उनके अज्ञानावृत्त घरो मे प्रविष्ट हो गई थीं।

३—नैपोलियन और गैरीबाल्डी के वीरोचित कारनामो ने उनको चकित कर दिया था।

४—पाश्चात्य विज्ञान ने उनके चहुँ ओर अपना जादू चला दिया था।

५—ब्रिटिश भारत के पुनर्जागरण की भावना ने उन्हे प्रभावित किया था।

देश के धार्मिक एवं सामाजिक पुनर्जागरण के अतिरिक्त राजनैतिक पुनर्जागरण मे भी महर्षि दयानन्द का योग सर्वोपरि रहा है जिसको श्रद्धेय स्व० रोमा रोला। (सुप्रसिद्ध फ्रेंच साहित्यकार एवं तत्त्ववेत्ता ने इस प्रकार व्यक्त किया है—

"वस्तुतः भारतीय राष्ट्रीय चेतना के पुनर्जन्म और जागरण में सबसे प्रबल प्रेरणा दयानन्द से प्राप्त हुई

वस्तुतः दयानन्द पुनर्निर्माण और राष्ट्रीय संगठन के प्रबलतम अग्रणियों में से थे।"

महर्षि दयानन्द की शिक्षाओं ने एकमात्र भारतीय रजवाड़ो में ही नही अपितु समस्त भारत ही क्या भारत से बाहर भी अमित प्रकाश प्रसारित किया है। उस प्रकाश को देशी रजवाड़ों तक सीमित समझना वा बताना ठीक नही है।

अंग्रेजी की सेवा करने वाले भारतीयों को इतिहास में स्थान नहीं मिला।

कान्स्टी ट्यूशन क्लब नई दिल्ली में 'हिन्दी दिवस' के अवसर पर आयोजित एक विशाल सभा का उद्घाटन करते हुए भारत सरकार के सूचना मंत्री श्रीयुत डा० केसकर ने जो भाषण दिया था उसका निम्न लिखित भाग बड़ा उपयोगी है :—

"अंग्रेजी सीखने के लिए अंग्रेजी सभ्यता सीखना आवश्यक है। हमारे देश में काम-काज के लिए कुछ समय तक कार्य-व्यवहार में अंग्रेजी चलती है। परन्तु यह आवश्यक नहीं है कि अंग्रेजी देश में सदा बनी रहेगी। हमारा लक्ष्य राष्ट्रभाषा हिन्दी की उन्नति करके उसे उपयोग में लाने का है।

अंग्रेजी शिक्षा का क्रम इस ढंग पर चलता है कि अंग्रेजी सभ्यता को विवश होकर अपनाना पड़ता है। जिस इतिहास को अंग्रेजी जानने के लिए पढ़ना पड़ता है उससे हमारा कोई सम्बन्ध नहीं होता।

अंग्रेजी की सेवा करने वाले लोगों को भी तब तक यह महत्त्वपूर्ण स्थान नहीं मिलता जबतक वे अंग्रेज न हों। यही कारण है कि स्व० सरोजिनी नायडू को जीवन भर अंग्रेजी साहित्य की सेवा करने पर भी अंग्रेजी साहित्य के इतिहास में कहीं कोई स्थान नहीं मिला। यदि वह अपनी साहित्य सेवा उर्दू बंगला आदि में करतीं तब यह साहित्याकाश में सिरमौर बनतीं। गुरुदेव टैगोर यदि बंगला में साहित्य साधना न करते तो अंग्रेजी के तीसरे दर्जे के कवि गिने जाते। माइकेल मधु सूदन दत्त बचपन से ही अंग्रेजी कविता करने लगे थे। जब वह एक अंग्रेज आलोचक के पास अपनी कविता दिखाने गए तो उस आलोचक ने कविता पसन्द करके भी यही कहा 'यदि बुरा न मानो तो बंगला में ही कविता करो। इस बात का परिणाम यह निकला कि उन्होंने 'मेघनाद वध' जैसा उत्कृष्ट काव्य लिखा जिसकी गुरुदेव टैगोर तक ने सराहना की।"

पं० दत्तात्रेय प्रसाद जी

हैदराबाद आर्य जगत् के वयोवृद्ध नेता तथा आर्य-प्रतिनिधि सभा मध्य दक्षिण हैदराबाद के उप प्रधान श्री पं० दत्तात्रेयप्रसाद जी एडवोकेट के निधन का समाचार देते हुए बड़ा दु:ख होता है। हैदराबाद प्रदेश में आर्य समाज के प्रचार में आपने जो सेवाएँ की थी वह अविस्मरणीय रहेंगी। साथ ही उन्होने शिक्षण क्षेत्र में भी केशव स्मारक आर्य विद्यालय के मन्त्री रूप में तथा बासिस मे आर्यन् कालिज की स्थापना के द्वारा महान् कार्य किया था और आर्य समाज द्वारा समय-समय पर चलाए गए आन्दोलनो में विशेषकर हैदराबाद सत्याग्रह तथा पंजाब हिन्दी रक्षा सत्याग्रह में भी सक्रिय भाग लिया था। उनके निधन से आर्य जगत् की महान् क्षति हुई है जिस की पूर्ति निकट भविष्य में शायद ही संभव हो। हम परमात्मा से प्रार्थना करते है कि दिवंगत् आत्मा को सद्गति तथा कुटुम्बी जनों को धैर्य प्रदान करें।

हम सब मननशील बने रहें

(बा० कालीचरण आर्य)

तन्तुं तन्वन्रजसो भानुमन्विहि ज्योतिष्मतः पथो रक्ष धिया कृतान् ।

अनुल्बणं वयत जोगुवामपो मनुर्भव जनया दैव्यं जनम् ॥

॥ ऋ० १०—५३—६ ॥

(जीवन के कर्म रूपी) तन्तु को तान कर (अग्रसर होते हुए) विश्व की परिक्रियाओं के प्रकाश करने वाले (के मार्ग) का अनुसरण करो। (उन) ज्योतिपूर्ण मार्गों को जिन्हे बुद्धि व पवित्र कर्मों द्वारा निर्माण किया गया है सरक्षण करो। प्रभु-परमात्मन, स्तोताओ (अपने भक्तों) के पवित्र कर्मो को दोष रहित कर दे। (निरन्तर) मननशील बने रहे तथा दिव्य गुण विशिष्ट जन-समुदाय के उत्पादक बनो।

प्रभु-परमात्मा ने वेद मन्त्र मे उपदेश किया है और आदेश दिया है कि हम सब मननशील बने रहे। कभी विचलित न हों। मनुष्य मननशील बनने से ही मनुष्य है अन्यथा पशु और मनुष्य में कोई अन्तर नही, अपितु यदि यह कहा जाये तो कुछ भूल न होगी कि मनुष्य यदि मननशील नही है तो वह पशुओ से नीचे है क्योकि परमपिता परमात्मा ने मनुष्यो मे जो स्वाभाविक शक्ति स्वयं को जीवित रखने के लिए दी है वह बहुत साधारण और पशुओ मे जो स्वाभाविक शक्ति उनकी अपनी

जीवन यात्रा पूर्ण करने के लिए दी गई है वह उनके लिए पर्याप्त और पूर्ण है। यह पशु योनि भोग योनि है। कर्म योनि नही है, उसे अवसर नही दिया गया कि वह बुद्धि का प्रयोग कर जिस अवस्था मे उत्पन्न किया गया है उससे आगे बढे और इसलिए यह आवश्यक था कि उसकी नैसर्गिक शक्ति (Natural Instinct) बहुत ऊँची हो। मनुष्य अपनी बुद्धि का प्रयोग कर सकता है और उभय योनि मे है अपनी बुद्धि के प्रयोग से, और कर्मो द्वारा बहुत आगे जा सकता है इसलिए उसका जीवनोद्देश्य भी बहुत ऊँचा है और नैसर्गिक शक्ति दुर्बल है। मनुष्य को आदेश है कि वह उस परमपिता परमात्मा के बनाए हुए संसार मे प्रभु की परिक्रियाओ का अनुसरण करे जिस प्रकार प्रभु की रचना मे ससार की प्रत्येक वस्तु प्राणी मात्र के कल्याण के वास्ते है और प्रभु की प्रत्येक परिक्रिया ससार के प्राणियो का कल्याण कर रही है। कोई भी वस्तु या उसकी परिक्रिया निरर्थक नही है। इसी प्रकार मनुष्य का कर्तव्य है कि वह भी प्रभु का अनुसरण करते हुए अपनी प्रत्येक क्रिया से समस्त प्राणियो के लिए हितकर सिद्ध हो किसी का अहित किसी समय भी उसके मस्तिष्क मे न आने पावे। यह तब ही सम्भव है जब कि मनुष्य स्वयं प्रभु के बतलाए हुए मार्ग का अनुसरण करे। सर्वश अपने को उन्ही व्यक्तियो अथवा उन्ही कर्मो से सम्बन्धित रखे जिनसे उसके अन्दर की दैवी शक्तियाँ उन्नत हो और आसुरी दबी रहे। सत्संग और कुसग अपना प्रभाव रखता है सत्सग से मनुष्य दैवी शक्तियो को जागृत करता है। और उनका प्रयोग भी करता हैं परन्तु कुसग इसके विपरीत दैवी शक्तियो को दबा कर आसुरी वृत्तियों को जगाता है। इसीलिए प्रभु का आदेश है कि जिस ज्योति पूर्ण मार्ग का बुद्धि और पवित्र कर्मों द्वारा निर्माण किया गया है उनका संरक्षण करो। संरक्षण के अर्थ यही हैं कि स्वयं उस दैवी मार्ग पर चलो अन्यो को उस मार्ग पर चलने की प्रेरणा करो। यदि हमारे सामने कोई मनुष्य इसके विपरीत मार्ग पर चलता है उसे उस पर से बचाने का यत्न करना चाहिए। किसी भी भूल करने वाले मनुष्य की भूल देख कर चुप नही रहना चाहिए।

इस प्रकार अपने जीवन को बनाने वाला मनुष्य निस्सन्देह वेद की इस आज्ञा का पालन करता है कि तुम निरन्तर मननशील बने रहो। हां, एक भय अवश्य है कि जिस प्रकार फेंकी हुई गेंद को जो पृथ्वी पर तेजी से भाग रही हैं, पृथ्वी प्रतिक्षण उसे अपनी ओर आकर्षित करती है और रोकने का यत्न करती है परन्तु यदि गेन्द की गति गेंद मे दी हुई शक्ति के कारण अधिक है तो पृथ्वी की आकर्षण शक्ति उसे रोक नही सकती। यदि गेंद की शक्ति निर्बल हो जाती है तो भूमि का आकर्षण उसे रोक कर आगे बढने से रोक देता है इसी प्रकार मननशील मनुष्य बन जाने के बाद भी यदि अपने अन्दर स्वाध्याय, सत्संग और प्रभु-भक्ति से वंचित कर लेता है तो ससार के अनेक आकर्षणों की ओर जो मनुष्य को अपनी ओर खेंच रहे हैं खिंच जाता है और पुनः पूर्ववत् मननशील बनने की पूर्व दशा मे गिर जाता है और कभी-कभी मननशील मनुष्य के हृदय मे अपनी परिस्थिति को ऊँचा ले जाने के पश्चात् अभिमान की जागृति भी उसे गिरा देती है इसलिए उपासक को सचेत रहने की आवश्यकता है और जैसा प्रभु ने वेद मन्त्र मे आदेश दिया है हम प्रभु से प्रार्थना करते रहें। प्रभु हमारे कर्मों को दोष रहित कर दें।

मनुष्य को सर्वदा यह ध्यान रखने की आवश्यकता है कि उसका पैर कहीं फिसल न जाय। बाह्य जगत् मे ही ऐसे आकर्षण नही हैं जो मनुष्य को अपनी ओर खेचते रहते है और जिनसे बचने की हर समय अत्यन्ता-वश्यकता है मनुष्य के अन्दर भी इस प्रकार की आसुरी शक्ति हर समय काम करती रहती है। उसको दबाए रखने की आवश्यकता है ताकि मनुष्य के कर्म प्रभु के आदेशानुसार दोष रहित रह सकें। मनुष्य मे दोष के कारण किसी न किसी रूप मे हर समय विद्यमान है जो अनुकूल वायुमण्डल पाकर जीवित और जागृत हो जाते है। दोषो के फलने और फूलने वाली भूमि जिसमे कि दोष उत्पन्न होते है, बढते है, फलते है और फूलते है वह मनुष्य का अपना ही अन्त, करण है और अविद्या उसका मुख्य कारण है। अविद्या के ही कारण वस्तु के प्रयोग मे उसके हित और अहित का जब विचार नही रहता, तब ही दोष का कोई अकुर उभर पडता है और यदि उसी समय उसको दबा न दिया तो वह एक बहुत बडे वृक्ष का आकार बन जाता है और उस समय उससे छुटकारा पाना मनुष्य की शक्ति से बाहिर हो जाता है। अतः प्रथम तो मनुष्य को अविद्या रूपी अन्धकार से अपने को पृथक् ही रखना चाहिए। वेद और वेदानुकूल ग्रन्थो के स्वाध्याय मे लगा रहना चाहिए, सत्संग मे सम्मिलित होने की कभी अवहेलना न करनी चाहिए, यही एक मार्ग है जो प्रभु ने हमे इस वेद मन्त्र मे बतलाया है। प्रभु के समस्त कार्य जो नित्य प्रति और हर समय होते रहते हैं और जो उसके दिए ज्ञान वेदानुकूल हैं यदि हम उनका ही अवलोकन भली प्रकार करते रहें तो भी मनुष्य दोष रहित हो सकता है और रह सकता है।

वेद ने अपने अन्तिम पद मे मनुष्य को आदेश दिया कि वह संसार मे स्वयं दोष रहित बन कर मनन-शील बनकर समस्त दुर्गुणों से अपने को पृथक् रख कर अपने को ही सन्तुष्ट न कर ले अपितु आने वाले ससार के लिए जन-समुदाय का उत्पादक बने। जिस प्रकार आर्य समाज के नियम मे बतलाया गया है कि मनुष्य को अपनी ही उन्नति से सन्तुष्ट न रहना चाहिए किन्तु सबकी उन्नति मे अपनी उन्नति समझनी चाहिए। यह तब ही सम्भव है जब मनुष्य जन-सम्पर्क मे आकर ससार को हेय न जानकर बल्कि ससार को मुक्ति का साधन मान कर अपने व्यवहार से अपने ज्ञान से, अपनी शक्ति से अर्थात् हर प्रकार से यह यत्न करता रहे कि मनन-शील ही हो और दुर्गुणो और दुर्व्यसनो से रहित हो। ससार का नियम है कि बुराई से बुराई होती है, और भलाई से भलाई होती है। भलाई से बुराई उत्पन्न नही होती यह असम्भव है इसलिए उत्पादक उत्पन्न करने वाला जब भला है और उसने जब अपने आप को भला बना लिया है तो कोई कारण भी नहीं है कि उससे उत्पन्न होने वाला भावी जन-समुदाय भला न बने।

अन्त मे मैं यही प्रार्थना करूगा कि मनुष्यो को अपने जीवन मे उत्तम कर्म करते हुए, जन-समुदाय के साथ उत्तम व्यवहार करते हुए, प्रभु की आज्ञा का पालन करना चाहिए, यह विश्व की परिक्रियाओ का अनुसरण करे ज्योति पूर्ण मार्ग का जो बुद्धिपूर्वक और पवित्र कर्मों द्वारा निर्माण किया गया है उसका सरक्षण करे अपने को दोष रहित रखे और मननशील बन कर दिव्यगुण विशिष्ट जन-समुदाय के उत्पादक बन

—०:*:०—

क्यों कहां से और किधर को ?

श्री स्व० राइट ऑनरेबुल लार्ड पैथिक लारेन्सआव पीजलेक पी० सी० एम० ए० भूतपूर्व भारत मंत्री लन्दन

जब से मनुष्य का प्रादुर्भाव हुआ है तब से ही वह जीवन के अभिप्राय पर विचार करता रहा है। उसने अन्य मनुष्यो को उत्पन्न, युवा और वृद्ध होते एवं मरते हुए देखा है। उसने देखा कि पशु-पक्षी, कीट-पतंग, मछली और मगरमच्छ यहाँ तक कि वृक्ष और वनस्पतियाँ भी परिवर्तन और ह्रास की एक जैसी प्रक्रिया मे से होकर गुजरती हैं। उसने दिन और रात, वर्षा और धूप, गर्मी और सर्दी, गरज और बिजली, बाढ और भूकम्प भी देखे है। उसने समय २ पर सूर्य और चन्द्र ग्रहण का भी अवलोकन किया है। उसने पुरुषों और स्त्रियो के व्यवहारो को भी देखा है जिनमे से उसने कुछ को पसन्द किया और कुछ को नापसन्द किया है। उसने अपने हृदय पर भी दृष्टि डाली और देखा कि उसमें इच्छाएँ और भूख विद्यमान है जिनमे से उसने कुछ को चुनकर उनकी पूर्ति की और कुछ का परित्याग कर दिया।

इन सब वस्तुओं पर विचार करते हुए उसके मन मे यह प्रश्न उठा कि ऐसा क्यों होता है? जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त मनुष्य को इस मार्ग पर चलना होता है। संसार के व्यक्ति क्यो स्वस्थ और सुखी है और कुछ व्यक्ति क्यो अस्वस्थ और दुःखी है? मनुष्य का जन्म क्यो होता है? और वह कहाँ से आता और कहाँ जाता है? इन प्रश्नो के कुछ समाधान के लिए मनुष्य को परमात्मा की सत्ता की अनुभूति हुई उसने अपनी आकृति का परमात्मा बना डाला जो मानव से तो कही अधिक शक्तिशाली और स्थिर था परन्तु उसमें मानवीय गुण और आकांक्षाएँ भी थी। मानव स्वरूप यह परमात्मा पर्वतों की ऊँची से ऊँची चोटियों पर, बादलो वा सूर्य से ऊपर आकाश मे निवास करता हुआ माना गया। वही परमात्मा क्रोध और प्रेम का प्रदर्शन कर सकता था और उपहारो द्वारा सन्तुष्ट भी किया जा सकता था। इतना ही नही वह रति सुख भी ले सकता था।

मानव स्वरूप परमात्मा की इस भावना से मानव जाति की उच्च एवं दिव्य भावनाओ की सन्तुष्टि न हो सकी भले

ही इनसे मानव-स्वभाव की चंचलता और स्वार्थपरता का विश्लेषण होता देख पड़ा।

प्राचीन काल से ही समस्त भूमण्डल के ऋषियों, कवियों और मनीषियों को यह भावना अपर्याप्त और घृणित जान पड़ती रही। भारत में वेदों की महान् गरिमामय शिक्षाओं मे मानव के प्रादुर्भाव और उसकी अन्तगति के विषय में बड़े उच्च भाव पाए जाते हैं। यूनान के दु:खान्त ग्रन्थ लिखने वालों ने खुले तोर पर अन्यायी देवताओं को कोसा। बुद्ध ने कल्याणकारिणी अन्तिम सत्ता सम्बन्धी अपने उच्च सिद्धान्त की व्याख्या की। ईसा ने परमात्मा मे प्रेम और दया के आवश्यक तत्वों को देखा।

हमारे इस युग मे विज्ञान ने हस्तक्षेप करके समय और स्थान की दृष्टि से विश्व का एक नया चित्र खीच कर हमारे सामने प्रस्तुत कर दिया है। ऐसा करते हुए यह अनेक धार्मिक भावनाओं और परम्पराओं के विपरीत चला गया है।

समस्त प्राणियों का उद्भव पृथक्-पृथक होता है। इस सिद्धान्त के स्थान मे जीवन के विभिन्न स्वरूपों की व्याख्या के रूप मे अब विकासवाद को ही प्राय मान्यता दी जाती है। चेतन और अचेतन की चिर-स्वीकृत सीमा-रेखा पर भी शंका की जाने लगी है। परमाणुओं से मानव का निरंतर विकास होता है इस पर भी सदेह किया जाने लगा है। यह स्वीकार किया जाता है कि नक्षत्रो की दूरी जानी जा सकती है और पृथ्वी की आयु करोडो वर्ष बताई जाती है।

प्रश्न यह है कि इस सबसे हमारा क्या बनेगा। ? कुछ व्यक्ति ऐसे हैं जो यह सोचते हैं कि मानव-स्वरूप परमात्मा की प्राचीन भावना के नष्ट और सृष्टि रचना के ऐतिहासिक काल के अप्रमाणित सिद्ध हो जाने पर धर्म के लिए कोई स्थान नही रह जाता और यह विश्व स्वतः निर्मित और स्वचालित सत्ता है। उनकेलिए मानवकी चरम अभि व्यक्ति मानववाद है जिसमे प्रेम, साहस, धैर्य, ईमानदारी और जन-कल्याण आदि २ नैतिक गुण सन्निहित है। कुछ ऐसे व्यक्ति है जो अपने २ धर्म विश्वासो पर श्रद्धा और भक्ति से चिपटे हुए है। उनका कथन है कि उनसे हमे आन्तरिक शान्ति मिलती है और वे विश्वास अटल और सत्य हैं।

क्या हम किनारे की इन दोनो बातो मे से किसी एक को स्वीकार कर सकते हैं ? क्या हम विज्ञान के आविष्कारो को अमान्य करदे वा अपने को ईश्वर-विहीन जगत के अर्पण करदे ? सत्य तो यह है कि धर्म और विज्ञान एक दूसरे के विरोधी नही अपितु पूरक है। दोनोमे अकेला कोई भी मनुष्य की उपर्युक्त जिज्ञासोओं का समाधान प्रस्तुत करने मे समर्थ नही है।

विज्ञान का वास्तविक दावा क्या है ? इसका दावा यह है कि यह दिखाने के लिए प्रमाण हैं कि विकासवाद से जीव की उत्पत्ति हो सकती है और हुई भी है। वह प्रकृति की सत्ता स्वीकार करता और यह मानता है कि प्रकृति मे कुछ तत्व है और उसकी कुछ प्रक्रियाएँ नियमबद्ध है परन्तु विज्ञान यह बताने मे असमर्थ रहा है कि प्रकृति अस्तित्व मे किस प्रकार आई और यह अकाट्य नियमो का पालन क्यो करती है।

धर्म का दावा क्या है ? इसका दावा है कि धर्म वा आध्यात्मिकता मानव-स्वभाव का अविच्छिन्न अग है जो एक ओर उसे मनुष्यो से और दूसरी ओर परमात्मा से प्रेम करना सिखाता है इस सिद्धान्त को स्वीकार करने वालो का धर्म उन्हे मानव-मात्र से प्रेम करना जीवन मे गुणों को धारण करना और उच्च गति को प्राप्त करना सिखाता है।

परन्तु मनुष्य आनन्दकंद परमात्मा के स्वरूप को पूर्ण झाँकी लेने मे समर्थ नही है। यदि विज्ञान आविष्कारो के नए २ अध्याय खोलता रहे और दिव्यालोक से आलोकित पुरुष और देवियो के बुद्धि-सगत मार्ग-प्रदर्शन मे धर्म विकसित होता रहे तो मनुष्य दिव्यता के पुंज परमात्मा का अधिकाधिक सान्निध्य प्राप्त करने की आशा कर सकता है।

(वर्ल्डफेथ पत्रिका के सौजन्य से)

बड़ा अन्तर है

(श्री पूर्ण चन्द्र एडवोकेट आगरा)

संसार में हर पदार्थ निराला है। प्राणी जगत मे और विशेषकर मनुष्यो मे दो आदमियों की सूरत नही मिलती। यदि कभी मिलने लगती है तो बडा आश्चर्य होता है। यदि जोडी मे जोतने के लिए दो घोडे एक ही शकल सूरत के मिल जाते हैं तो उन का मूल्य दुगना हो जाता है। कोई चीज एक दूसरे से बाहर की रूप रेखा में नही मिलती।

साधारण की बोलचाल मे नीचे लिखे प्रकार हैं जिन से अन्तर का वर्णन किया जाता है :—

(१) रात-दिन का अन्तर।

(२) आकाश-पाताल का अन्तर।

(३) जिन्दगी-मौत का अन्तर।

यह तीनों अन्तर सब की समझ मे आते हैं और सब पर इन का प्रभाव है यदि अन्तर समझ मे आ जाये तो आज ससार की समस्या सहुत सरल हो सकती है।

इन्द्र का प्रभाव

इन्द्र शब्द सूर्य के लिए भी आता है, जीव आत्मा के लिए भी और परमात्मा के लिए भी। यदि इन्द्र को सूर्य के रूप में समझें, तो रात और दिन का बडा अन्तर होते हुए भी कोई अन्तर नहीं रहता। केवल अवस्था का भेद हो जाता है। समय-विभाग की दृष्टि से पृथ्वी का जो विभाग सूर्य रूपी इन्द्र के सम्मुख होता है वहाँ दिन और जहाँ सूर्य सन्मुख नही होता वह रात। रात और दिन मे अन्धेरे और उजाले का भेद है। उजाला अस्थायी सत्ता है, अन्धेरा उजाले का सामयिक अभाव है। कैसा भी प्रकाश का अभाव क्यों न हो, कुछ न कुछ प्रकाश के साधन उपलब्ध होते हैं,साधारण चन्द्रमा विद्युत् दीपक, सब छोटे बडे अपने ढंग के प्रकाश के साधन है परन्तु यह बात पदार्थ विज्ञान वालो ने सिद्ध कर दी है कि प्रकाश थोडा और बहुत जिस रूप मे भी दिखाई देगा या उपस्थित होगा वह सूर्य के ही प्रभाव से होगा।

आत्मा के रूप में इन्द्र

यदि आत्मा को इन्द्र के रूप में देखें और समझें तो जीवन और मरण का अन्तर समझ मे आजाता है। जीवन आत्मा के समावेश का नाम है। मृत्यु आत्मा के निकल जाने का परिणाम है। प्राणी जगत मेंइन्द्र रूपी आत्मा अपना साम्राज्य रखते है। यदि आत्मा रूपी इन्द्र सम्मुख रहे तो जीवन और मरण की समस्या का ही समाधान नही होगा परन्तु जीवित प्राणियो मे जो विषमतायें और भिन्नतायें दिखाई देती हैं वह भी समझ मे आ जायेगी। प्राणियों में जाति, आयु, और भोग का अन्तर है। जाति से अभिप्राय शरीर और योनि से है, आयु से अभिप्राय उस अवधि का है, जो जन्म से मरण तक किसी प्राणी को जीवित रहने के लिए प्राप्त होती है भोग से अभिप्राय उन अवस्थाओं का है जिसमे प्राणी को अपना जीवन निर्वाह करना पड़ता है। यह सब भेद कर्मों के फल के अनुसार है और इन्द्र रूपी परमात्मा के न्याय के अनुकूल। इन्द्र रूपी

आत्मा जीवन-मरण के चक्र में घूमता है और जीवन में भी अनेक रूप और अवस्थाओं में होकर अपना जीवन निर्वाह करता है। इन्द्र रूपी आत्मा के समझ लेने से उपनिषद की शिक्षा के अनुसार मनुष्य आत्मवत सब प्राणियों को देखने की भावना रख सकता है। आज संसार में और देश में जितने विवाद रूप, रंग, लिंग, भाषा, सम्प्रदाय और जाति के आधार पर दिखाई दे रहे है उन सब का समाधान इन्द्र रूपी आत्मा को समझ लेने से हो सकता है। आत्मा को गहराई तक देख लेने का अभ्यास साधारण व्यक्तियों को नहीं है। कभी-कभी तो बड़े बड़े विशेषज्ञों को भी यह दृष्टिकोण समझ में नहीं आता और भूल जाता है। पदार्थ विज्ञान वाले रचना की विवेचना में इतने रत है, कि उन की दृष्टि न तो इन्द्र रूपी आत्मा तक पहुचती है और न इन्द्र रूपी परमात्मा तक।

परमात्मा इन्द्र के रूप में

आकाश पाताल का अन्तर बड़ा विशेष है। कहने के लिये यह प्रसिद्ध है कि जमीन आसमान का अन्तर है। परन्तु इन्द्र रूप में परमात्मा सन्मुख रहे तो आकाश पाताल का अन्तर भी कोई अन्तर नहीं। केवल इस रचित जगत की दो दृष्टि के लिये सीमाये है, यदि परमात्मा विश्व निर्माता के रूप में और सर्व व्यापक और अन्तर्यामी के रूप में हमारे सन्मुख रहेगा तो आकाश पाताल का भी अन्तर समाप्त और पृथिवी के और जितने अंग और विभाग हैं, देश और देशान्तर हैं, सागर और पहाड़ हैं वह सब एक ही विधाता के विधान में एक ही रचयिता ने रचे हुए और एक से नियमों में बन्धेहुए दिखाई देगे। आज इन्द्र के तीनो स्वरूप सन्मुख न होने से बड़ा विवाद बढ रहा है और कलह बढता जा रहा है।

इन्द्र सभा

हमने बहुत दिन हुए एक उर्दू की किताब नवल-किशोर प्रेस लखनऊ की छपी हुई 'इन्द्र सभा' नाम की पढी थी, उस में मुख्य पृष्ठ पर एक राजा का चित्र था जहां शराब के दौर चल रहे थे और वेश्याओं का नृत्य हो रहा था। अब इस इन्द्र शब्द के महत्व को समझते हुए उस चित्र का जब ध्यान आता है तो यह बात समझ मे आती है कि भोगवादियों की दृष्टि में केवल भोगविलास ही सन्मुख रहता है। उन की दृष्टि वास्तविक परिस्थिति तक नहीं पहुँचती। राजा इन्द्र की सभा ने जो वास्तव में मनुष्य शरीर है और यह विश्व है भोग और विलास का चक्र तो चल ही रहा है परन्तु यह भोग और विलास सब नाशवान् और परिवर्तनशील हैं, यदि स्थायी सत्ता पर ध्यान होगा तो यह सब भोग विलास के चक्र कर्म व्यवस्था के और भोग व्यवस्था के परिणाम स्वरूप ही दिखाई देंगे।

अनेकता में एकता।

यदि प्रचलित अनेकता में एकता को समझना है तो इन्द्र रूपी सूर्य इन्द्र रूपी आत्मा और इन्द्र रूपी परमात्मा समझ लेना चाहिये। सारा विश्व उस विश्व-विधाता के आधीन दिखाई देगा।

ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किंच जगत्यां जगत्

ओ३म्

आर्य समाज में सस्वर वेदपाठ की व्यवस्था हो

श्री वीरसेन वेदश्रमी, वेद सदन, महारानी रोड इन्दौर

स्वर सहित वेद मन्त्रों के पाठ मे सदा तात्पर्य प्रमुख रूप से यही रहता है कि उदात्त, अनुदात्त और स्वरित स्वरो के सहित मन्त्र का उच्चारण मन्त्रो मे लगे हुए चिह्नों के अनुसार कण्ठ स्वर से करना। इस प्रकार उच्चारण करने से बहुत ही उत्तम लाभ होता है। अपने शरीर पर और विश्व पर भी किस प्रकार प्रभाव पड़ता है वह स्वर शास्त्र का एक महत्वपूर्ण विज्ञान है। इसके अतिरिक्त यदि नियत चिह्नो के अनुसार मन्त्रो का उच्चारण न किया जावे तो स्वर के द्वारा जो महान् लाभ स्वयं को होना चाहिये और विश्व पर होना चाहिये, वह नहीं होगा।

अपने स्वाभाविक उच्चारण मे, अपने बिना जाने हुए भी उदात्तादि स्वरो का उच्चारण होता रहता है। अतः उदात्तादि नियमो के जाने बिना भी जो मन्त्रो का पाठ करते है उसमे भी स्वर तो होते ही हैं। परन्तु उसको स्वर पाठ नही कहा जा सकता। अपितु परमात्मा ने सृष्टि यज्ञ के प्रारम्भ में वेद मन्त्रो का जो स्वर ऋषियों के ज्ञान मध्य प्रकट किया, उसी स्वर में तथा उन ऋषियों द्वारा सृष्टि प्रारम्भ काल से अद्यावधि गुरुशिष्य परम्परा द्वारा वेदमन्त्रों के उच्चारण की जो विधा एवं प्रकार सुरक्षित है उसी के अनुसार वेद मन्त्रों का उच्चारण करना ही सस्वर वेद पाठ कहा जाता है या माना जाता है। उसी पाठ की शिक्षा, रक्षा एवं प्रचलन के लिए जो ग्रन्थ ऋषियों ने निर्माण किये वे शिक्षा ग्रन्थ कहलाते हैं। ये ही शिक्षा ग्रन्थ वेद के षडंगो में प्रथम हैं।

चार वेदों का सस्वर पाठ अपने-अपने वेद की रीति

से होता है और वह जिस प्रणाली से हो रहा है अर्थात् काशी, पूना आदि स्थानो में प्रचलित है उसे महर्षि स्वामी दयानन्द जी सरस्वती ने भी मान्य किया है और उसी को ग्रहण करने के लिए भी कहा है। अत: परम्परागत वेद मन्त्र पाठ की प्रणाली ग्राह्य है। उस प्रचलित पाठ मे यदि कोई दोष हो तो उसका ज्ञान शिक्षा ग्रन्थो के अध्ययन और स्वर पाठ के अभ्यास से ही जाना जा सकता है। अन्य प्रकार से नही। इस प्रकार चारो वेदों के मन्त्रो का ४ प्रकार का सस्वर पाठ हुआ। परन्तु यदि कोई इस बात को न जानकर या न मानकर अन्य प्रकार से ही अपने मन माने ढंग से मन्त्रों का उच्चारण करे तो वह उचित नही होगा। शिक्षा ग्रन्थो ने वेदो के उच्चारण के बारे मे जो नियम बनाये हैं, उन्हें मान्य करना होगा। अन्यथा सभी व्यक्ति अपने-अपने पाठ को ही उचित समझेगे और उसी के प्रचलन का आग्रह भी करेगे।

आर्य समाज ने वेदों का बहुत प्रचार किया और घर-घर वेद मन्त्रों का प्रचलन किया। यह तो बहुत ही उत्तम कार्य हुआ। जिन लोगो को संस्कृत या देवनागरी की वर्णमाला का भी बोध नही था, उनको भी वेद मन्त्र कण्ठस्थ करा दिये और वे सन्ध्या हवन भी करने लगे। यह एक अद्भुत एवं आश्चर्यमय कार्य वेदो के प्रचलन एवं प्रचार के लिये कर दिया। भारत के किसी-किसी नगर मे ही कोई वेद मन्त्रों का उच्चारण करने वाला था, आर्य समाज के प्रचार एव प्रयत्न से घर-घर वहाँ वेद मन्त्रों की ध्वनि गुंजायमान होने लगी।

अब आवश्यकता इस बात की है कि आर्यसमाज वेदो के शुद्ध एवं सस्वर मन्त्र पाठ के शिक्षण और प्रचार की भी समुचित व्यवस्था करे। हम सब वेदो को परमात्मा का परम पवित्र ज्ञान मानते हैं और यह भी मानते हैं कि वह ज्ञान शब्द सहित ही दिया गया था। तथा शब्द और अर्थ का भी सम्बन्ध नित्य है। अतः शब्दो के यथार्थ उच्चारण से उसका यथार्थ अर्थ भी समझा जा सकता है और यदि उसको थोड़ा भी अशुद्ध उच्चारित किया जावे तो अर्थ का अनर्थ भी हो सकता है। इसी प्रकार शब्दों को उदात्तादि स्वरों के साथ बोलने से भी अर्थों का प्रकाश या ज्ञान होता है। एक ही शब्द स्वर भेद से अन्य अर्थ को भी प्रकट करने लगता है। अतः वेद मन्त्रो को वर्ण और स्वर दोनों ही रीति से शुद्ध एवं सस्वर पाठ करना चाहिये।

शब्दो के अशुद्ध उच्चारण से वेद मन्त्रों के अर्थो मे कितना परिवर्तन हो जाता है इसको निम्न उदाहरणो से समझ सकते हैं।

(१) यद्भद्रम् = (यत् + भद्रम्) जो कल्याण कारक है (उसे हमें प्राप्त कराइये) यह अर्थ है। परन्तु जब हम—यदभद्रम् = (यत् + अभद्रम्) यह उच्चारण करते हैं तो अर्थ हो जाता है कि जो अकल्याणकर, अभद्र, अशुभ,' बुरा है वह हमे प्राप्त कराइये।

(२) विधेम = विशेष भक्ति करें—यह अर्थ महर्षि दयानन्द जी ने किया है। परन्तु जब हम इसके स्थान पर –वधेम = यह उच्चारण करते है तो उसका अर्थ वध करे, मारे, काटे यह हो जाता है।

(३) भुवः = दुःख नाशक अर्थ है। परन्तु प्रायः लोग भव: = (भूर्भव. स्व:) कहते है। भव का अर्थ उत्पन्न होने वाला होता है। परमात्मा तो भुवः है, दुःख का नाशक है और वह तो अजन्मा है अत: उसे भवः नही कह सकते हैं।

(४) सुहुतं = अच्छी प्रकार से आहुति दिया गया हुआ यह अर्थ होता है। परन्तु यदस्यकर्मणो० मन्त्र बोलते समय लोग—सुहतं = बोल देते है जिसका अर्थ हुआ अच्छी प्रकार से मारा या नष्ट-भ्रष्ट किया गया। इत्यादि प्रकार से अनेक शब्दो का अशुद्ध उच्चारण प्रायः लोग करते ही हैं।

मन्त्रो मे स्वर दोष से अर्थ भेद कितना हो जाता है इसको कतिपय निम्न उदाहरणो से जान सकते है—

(१) धीमहि = धारण करें। परन्तु जब = धीमहिं = इस प्रकार स्वर हो जाता है तो दो पद = धी। महिं। हो जाते हैं और अर्थ हो जाता है धी = अर्थात् बुद्धि जो कि महि = अर्थात् प्रशंसनीय है।

(२) मा हिं ꣳ सीः=मत मारो, मत नष्ट करो यह अर्थ हुआ क्योंकि निषेधार्थ मे=मा=शब्द उदात्त है। यदि=मोहिं ꣳ सीः=ऐसा प्रयोग करें तो अर्थ हो जायगा—मुझे मारो। क्योंकि अपने अर्थ में=मा= अनुदात्त होता है।

(३) यस्य क्षयाय जिन्वथ=महर्षिदयानन्द इस मन्त्र का अर्थ पति के लिए स्त्री निमित्त करते हुए लिखते हैं कि वह स्त्री जिस अपने पति के निवास के लिये है उसे तृप्त करे। आद्युदात्त क्षय शब्द निवास अर्थ मे होता है अतः यहाँ क्षयाय शब्द का निवास के लिये अर्थ हुआ। अब यदि क्षयाय शब्द को मध्योदात्त=क्षयाय=इस प्रकार प्रयुक्त करें तो यहाँ विनाश के लिये अर्थ हो जाता है अर्थात् वह स्त्री पति के विनाश के लिये तृप्त करे। क्योंकि अन्तोदात्त क्षयशब्द नाश अर्थ मे होता है।

(४) भ्रातृव्यस्य वधाये=स्वर की दृष्टि से यहाँ भ्रातृव्य शब्द का अर्थ शत्रु है अर्थात् शत्रु के वध के लिये। क्योंकि आद्युदात्त भ्रातृव्य शब्द शत्रुवाची है। परन्तु यदि इसको=भ्रातृव्यस्य बधाय=इस प्रकार स्वर के साथ प्रयुक्त करें तो अर्थ हो जाता है - भतीजे के वध के लिये।

इत्यादि प्रकार से अनेक दोष स्वर के विपरीत या अशुद्ध बोलने से अर्थ भेद के कारण बन जाते है। कुछ लोग ऐसा समझते हैं कि मन मे जो भाव हैं उसी के कारण अर्थ का लाभ होना चाहिये, वाणी दोष से अर्थ में दोष नही हो सकेगा। ऐसा समझना नितान्त अशुद्ध है तथा अज्ञानता भी है।

उच्चारण मे वर्णों और स्वरों के दोषों के अतिरिक्त छन्द दोष भी प्रचलित हो गये हैं उदाहरणार्थ—गायत्री मन्त्र "तत्सवितु.०" से "प्रचोदयात्" तक निचृद् गायत्री छन्द में है। २३ अक्षर का निचृद् गायत्री छन्द होता है। परमात्मा ने इस मन्त्र की रचना निचृद् गायत्री छन्द में की है तो हमे भी उसकी रक्षा उसी छन्द में करनी चाहिये। परन्तु प्रायः लोग "वरेण्यं" पद का उच्चारण "वरेणियं" इस प्रकार चार अक्षर तीन अक्षरों के स्थान पर करते हैं। इससे एक अक्षर बढ़ जाता है और २३ के स्थान पर २४ अक्षर हो जाते हैं। परिणामतः छन्द नियम से वह मन्त्र निचृद् गायत्री न रहकर गायत्री छन्द में हो जाता है। परमात्मा के रचे छन्दों मे यदि हम अपना परिवर्तन मिश्रित कर देते हैं तब वेद की रचना परमात्मा ने की ऐसा कहना कठिन होगा। फिर परमात्मा के द्वारा रचे वेदमन्त्र और आपके द्वारा संशोधित वेद मन्त्र ये दो भेद हो जावेंगे। हम सब अपने को अल्पज्ञ अवश्य मानते हैं और परमात्मा को सर्वज्ञ। ऐसी स्थिति में आपके परिवर्तन अग्राह्य हैं, हेय कोटि मे हैं। परमात्मा के द्वारा रचे वेद मन्त्रो मे किंचित् भी परिवर्तन महादोषपूर्ण तथा अविद्यायुक्त ही माना जावेगा।

इसके अतिरिक्त पुस्तकों में प्रेस की भूल से तथा प्रकाशकों की असमर्थता से मन्त्रो मे अनेक स्थानों पर त्रुटियाँ हो जाती है। सामान्य व्यक्ति तो छपे हुए को शुद्ध मानकर उसके अनुसार ही मन्त्रों का उच्चारण करता है और वैसा ही कण्ठस्थ कर लेता है। इस कारण भी अनेक अशुद्धियाँ सामान्य जनों में प्रचलित हो गई। अतः आर्यसमाज के लिये यह अत्यन्त आवश्यक है कि वह वेद मन्त्रों की शुद्धता की रक्षा के लिए उनके शुद्ध एवं सस्वर पाठ की भी व्यवस्था करे। यदि यह कार्य नहीं किया गया तो कालान्तर में वेदों के अशुद्ध उच्चारण का अपयश भी आर्यसमाज को प्राप्त होगा जिसका आभास अनेक घटनाओं से प्रकट हो चुका है।

—:०:—

विश्व-शान्ति विषयक वैदिक शिक्षाएँ

श्री पं० धर्मदेव जी विद्यावाचस्पति विद्यामार्तण्ड

शाश्वत शान्ति और आनंद की प्राप्ति मानव-जीवन का परम लक्ष्य है। अतः स्वभावतः प्रत्येक व्यक्ति शान्ति के लिए समुत्सुक रहता है यद्यपि दुर्भाग्य से बहुत कम व्यक्ति इसकी प्राप्ति के उपायों से भिज्ञ हैं। इस अज्ञान के कारण चहुंओर कष्ट संघर्ष और ईर्ष्या-द्वेष व्याप्त है। मानव जाति के नेताओ और शुभ-चिन्तको के लिए उचित है कि वे शान्ति की उपलब्धि के उपायों पर गंभीरता पूर्वक विचार करे और उन उपायो को अपनाने को अपने अनुयायियो को प्रेरणा करें जिससे अखिल विश्व मे शान्ति व्याप्त हो जाय।

शान्ति विषयक वैदिक शिक्षाओ पर संक्षेप में विचार करना युक्तियुक्त होगा। वे शिक्षाएँ सार्वभौम है अतः समस्त कालो और समस्त स्थानों पर चरितार्थ होने योग्य हैं।

शान्ति विषयक कुछ प्रार्थना नीचे अंकित की जाती है जिनका प्रतिदिन किया जाना आर्यों के लिए आवश्यक ठहराया गया है।

ओं शन्नो देवी रभिष्टय आपोभवन्तु पीतये।
शंयोरभि स्रवन्तुनः॥

अर्थात्—दिव्य सर्वव्यापक भगवान् आनन्द की प्राप्ति के लिए और पूर्ण सुख एव शान्ति के भोग के लिए हमें कल्याण दे और हम पर चारों ओर से सुख की वृष्टि करें।

ओं द्यौ शान्तिरन्तरिक्षꣳ शान्ति.।

शान्ति पाप्ति के साधन

एक मात्र प्रार्थना पर्याप्त नही है। शान्ति की प्राप्ति के लिए हमे साधन जुटाने होते हैं और उन साधनो के विषय में वेदों से हमे सुनिश्चित निर्देश प्राप्त होते हैं।

शान्ति की प्राप्ति के लिए सबसे पहली बात जो हमें ध्यान मे रखनी होती है वह यह है कि परमात्मा स्थिर शान्ति का स्रोत और उसको प्रदान करने वाला है। दैनिक संध्या की समाप्ति पर हम निम्नलिखित मंत्र का उच्चारण करते हैं।

ओं नमः शंभवाय च मयोभवाय च नमः शंकराय च।
मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च।।

इसका अर्थ इस प्रकार है :—

सुख एवं शान्ति स्वरूप भगवान को नमस्कार हो, उत्तम सुख-दाता भगवान को नमस्कार हो, भक्तो के हितकारी भगवान को नमस्कार हो, मंगलमय भगवान को हमारा बारम्बार नमस्कार हो।

इस प्रकार शान्ति की उपलब्धि के लिए पहली आवश्यक बात प्रभु भक्ति है। यदि सब लोग सच्चे हृदय से परमात्मा के भक्त बन जायें और उसे समस्त प्राणियो का पिता और माता मानने लग जायें तो पारस्परिक घृणा, सघर्ष और ईर्ष्या द्वेष के लिए स्थान न रहे। वेद ने शिक्षा दी—

त्वं हि नः पिता वासो त्वं माता शतक्रतो बभूविथ।
अघाते सुम्नमीमहे।।

हे प्रभो, तू हमारा पिता है। तू हमारी दिव्य माता है। अतः आनंद और शान्ति के लिए हम एकमात्र तुझसे अभ्यर्थना करते है।

ईश्वर के इस पितृत्व का अर्थ है भ्रातृत्व। वेद के निम्नलिखित मत्र में हमे स्मरण कराया गया है :—

अज्येष्ठासो अकनिष्ठास एते संभ्रातरो वा वृधुः सौभगाय।
युवा पितास्वपा रुद्र एषां सुदुघापृश्निः सुदिना मरुद्भ्य।।

ऋ० ५।५६।५

सब मनुष्य आपस मे भाई भाई हैं, जन्म से न कोई बड़ा है और न कोई छोटा। समानता के इस भाव को धारण करते हुए सब ऐश्वर्य वा उन्नति के लिए मिलकर प्रयत्न करते और आगे बढ़ते हैं। परमात्मा सबका पिता और पृथ्वी माता है।

वेद हमें यह भी शिक्षा देते हैं कि शान्ति की उपलब्धि के लिए वाणी, मन और इन्द्रियों का उचित प्रयोग भी अत्यावश्यक है। इस प्रसग में निम्नलिखित मंत्र विचार योग्य है :—

इयं या परमेष्ठिनी वाग्देवी ब्रह्मसंशिता।
ययैव ससृजे घोरं तयैव शान्तिरस्तु नः।।
इदं यत् परमेष्ठिनं मनो वां ब्रह्मसंशितम्।
येनैव ससृजे घोरं तेनैव शान्तिरस्तु नः।।
इमानि यानि पञ्चेन्द्रियाणि मनः षष्ठानि।
मे हृदि ब्रह्मणा संशितानि ।।

अथर्व० १६।६।३-५

हमारी यह वाणी जिसका दुरुपयोग ससार मे भयंकर विप्लव उत्पन्न कर देता है हमें शान्ति प्रदायिनी होवे। यह शान्ति प्रदायिनी तब होती है जब ठीक ज्ञान प्राप्त होकर इसकी शक्ति बढ़ती और दूसरों को चमकाने एव परमात्मा का गुणगान करने में इसका प्रयोग होता है।

हे माता-पिताओं और बच्चों, गुरुओ और शिष्यो, शासको और शासितों, पति-पत्नियों! तुम्हारा मन जो संसार मे घोर विनाश व्याप्त कर देता है सबको शान्ति और सुख प्रदान करने वाला हो। मन की शक्ति ठीक ज्ञान और प्रभु चिन्तन से विकसित होती है।

ये इन्द्रियाँ जिनका दुरुपयोग संसार में घोर उपद्रव व्याप्त कर देता है, सबको शान्ति देने वाली हों। मन की शक्ति ठीक ज्ञान उच्चकर्मों और जन-हित के कार्यों से विकसित होती है।

परमात्मा करे, समस्त ससार में शान्ति व्याप्त हो।

सामाजिक एकता

ऋग्वेद के अन्तिम सूक्त के निम्नलिखित मंत्रो मे सामाजिक एकता का बडा भव्य आदर्श प्रस्तुत किया गया है जिसके आचरण से शान्ति की समस्या सहज ही सुलझ सकती है।

संगच्छध्वं सं वदध्वं सवो मनांसि जानताम्।
देवाभाग यथापूर्वे संजानाना उपासते॥
समानो व आकूतिः समाना हृदयानि वः।
समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति॥
सहृदयं सामनस्यमविद्वेषं कृणोमि वः।
अन्यो अन्यमभिहर्यत वत्सं जातमिवाघ्न्या॥
स ध्रीचीनान् वः संमनस्कृणोम्येकश्नुष्टीन्त्संवननेनसर्वान्।
देवा इवामृतं रक्षमाणा सायं प्रातः सौमनसो वो अस्तु॥

अथर्व० ३-३०, १-७

आयरलैंड के सुप्रसिद्ध कवि, कलाकार और तत्ववेत्ता डा० जेम्स कजिन डी० लिट० ने अपनी 'शान्ति का मार्ग' नामक उत्तम पुस्तक में उपर्युक्त वैदिक शिक्षाओ पर विचार करके निम्न प्रकार से ठीक ही लिखा है :—

"प्रेम करना, चिन्तन करना और कर्म करना ये तीनों वैदिक भावना के अनुसार निराशा से परिवेष्टित व्यर्थ की क्षणिक बाते नहीं है अपितु ये तीनों भौतिक प्रक्रिया के प्रतीक हैं जिनमें प्रभु के आनंद का पुट लगा होता है। वे प्रतिच्छाया है, नाचती हुई प्रतिच्छाएँ हैं जो समस्त प्रकाशो के प्रकाश से प्रस्फुटित होती हैं, परन्तु वे प्रतिच्छायाएँ अन्धकार की नहीं अपितु प्रकाश की प्रतिच्छायाएँ होती हैं। उस प्रकाश मे प्रभु की उस ज्योति में जो भौतिक जगत के माध्यम से हम तक आती है, मानव-समाज को एक आदर्श की उपलब्धि हो सकती है जो अल्पकालीन दंभ को समस्त प्राणियो के जीवन की पवित्रता के शाश्वत भाव में परिवर्तित कर देगा।

एक मात्र इसी वैदिक आदर्श पर जो विश्व के विषाद के कारणों को दूर कर प्रेम और सहानुभूति की भावनाएं जाग्रत करता है संसार का सुखधाम बनाया जाना सम्भव है।"

आवश्यक सूचना

मारीशस से आने के बाद से श्री स्वामी ध्रुवानन्द जी महाराज का स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहता है। उन्हें हृदय रोग की शिकायत हैं। चिकित्सा चल रही है। चिन्ता की कोई बात नहीं है। स्वास्थ्य की इस अवस्था में उन्हें पत्र-व्यवहार आदि की चिन्ताओं से जितना मुक्त रखा जा सके उतना ही अच्छा है। अतः आर्य जनता से निवेदन है कि सम्प्रति श्री स्वामी जी महाराज से सम्बद्ध पत्र-व्यवहार सार्वदेशिक सभा के साथ किया जाय।

भवदीय

(कालीचरण आर्य)

मन्त्री

देश-विदेश में हिन्दी के प्रति रुचि

हिन्दी दिवस का आयोजन

बुधवार १३-९-६१ को देश भर में हिन्दी दिवस मनाया गया है। भारतीय संविधान की दृष्टि से यह दिन विदेशी भाषा की पराधीनता से मुक्ति पाने का दिवस था इसलिए स्वाधीनता दिवस, गणतन्त्र दिवस आदि के समान इस दिवस का भी उतना ही महत्व है।

भारतीय संविधान में सन् १९४८ में यह घोषणा की गयी थी कि देश मे राज-काज की भाषा हिन्दी होगी। इस घोषणा का केवल हिन्दी भाषा-भाषी प्रान्तों में ही नही अपितु हिन्दीइतर प्रदेशो में भी बड़ा स्वागत हुआ। हिन्दी को शक्तिशाली बनाने में जितना बड़ा योग अहिन्दी भाषा-भाषी व्यक्तियों का रहा है, वह कभी भुलाया नहीं जा सकता।

आर्य समाज के प्रवर्तक स्वामी दयानन्द ने देश में नवजागरण का जो शंख फूंका था उसमें उन्होंने राष्ट्र को विदेशी राज्य से मुक्ति पाने का ही सन्देश दिया था। स्वामी जी ने हिन्दी के माध्यम से सारे देश की टूटी कड़ियाँ जोड़ने का अभूतपूर्व प्रयत्न किया था।

तिलक ने हिन्दी सीखी

एक बार कलकत्ता में लोकमान्य तिलक ने अपना भाषण अंग्रेजी में दिया। जब भाषण समाप्त हुआ तब गांधीजी

ने सभा में उपस्थित लोगों से पूछा कि आप लोगों में से कितनों ने यह भाषण समझा। जब लोगों ने हाथ उठाये तो उस विशाल जन समूह में केवल सौ आदमी थे जिन्होने लोकमान्य का भाषण समझा था। गांधी जी ने कहा कि यदि लोकमान्य हिन्दी में भाषण देते तो सभी समझ लेते। जनश्रुति है कि उसके बाद लोकमान्य ने कुछ महीनों के भीतर हिन्दी सीख ली थी।

गांधी का हिन्दी प्रेम

सन् १९२७ में जब गांधीजी देश का भ्रमण कर रहे थे उस समय झरिया में कोयले की खानो के मजदूरो ने उनका स्वागत किया और अभिनन्दन पत्र अंग्रेजी मे भेंट किया। मजदूरों में अंग्रेजी समझने वालो की संख्या नगण्य थी। गांधीजी यहां के वातावरण से अत्यन्त दुःखी हुए इस अवसर पर उन्होंने जो कुछ कहा उसका अभिप्राय यह था कि यह अभिनन्दन पत्र बंगला भाषा में लिखा जा सकता था और उसका अनुवाद हिंदी अथवा किसी दूसरी भाषा में किया जाता तो अच्छा रहता।

गांधीजी ने प्रथम एशियायी सम्मेलन में जो दिल्ली मे हुआ था, हिन्दी में ही भाषण दिया था और कहा था कि यदि मेरी बात में बल होगा तो सभी तक अवश्य पहुंचेगी।

हिन्दी देश के कोने-कोने में सुगमता पूर्वक बोली, समझी और पढ़ी जा सकती है। भारतीय सन्तों की कृपा से हिन्दी सारे देश में जन-साधारण के हृदय का हार बनी और अहिन्दी प्रदेशों में राष्ट्र भाषा प्रचार आन्दोलन के साथ-साथ अन्य समाज सेवी लोगों के प्रयत्नो से महाराष्ट्र, कर्नाटक तमिलनाद आदि मे खूब प्रचलित है। बडे उत्साह से हिन्दी के विभिन्न कार्यों का वहाँ प्रसार हो रहा है। राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार-समिति हिन्दी साहित्य सम्मेलन और वेद स्वाध्याय मडल आदि अनेक संस्थाये हिन्दी प्रचार का काम कर रही है। हजारों छात्र प्रतिवर्ष हिन्दी की विविध परीक्षाओं में बैठ रहे हैं।

विदेशों में हिन्दी

विदेशों मे हिन्दी के प्रचार के निमित्त भारत सरकार हिन्दी की पुस्तके और अध्यापक भेजती है। इसके अतिरिक्त सरकार द्वारा हिन्दी के सर्वोत्तम विदेशी छात्रों को भारत-भ्रमण के लिए यात्रा-व्यय भी दिया जाता है। भारत मे हिन्दी पढ़ने वाले अफ्रीकी छात्रो को वृत्तियाँ भी दी जाती हैं और विदेशी लेखको को हिन्दी मे अनुवाद करने के लिए आर्थिक अनुदान भी दिए गए हैं।

१७ देशो मे हिन्दी के अध्ययन-अध्यापन की व्यवस्था है। श्रीलका, बर्मा, चीन, कम्बोडिया, इण्डोनेशिया, नेपाल, जापान, फिलीपीन, सोवियत रूस, पोलैंड, चेकोस्लावाकिया फ्रांस, इटली, ईरान, प. जर्मनी और इङ्गलैंड आदि में भारतीय दूतावासो मे हिन्दी की कक्षाये लगायी जाती हैं तथा स्वतन्त्र संस्थाओं द्वारा भी इसकी व्यवस्था की गई है। विदेशों में हिन्दी के प्रति प्रेम बढ़ता ही जा रहा है। रूमानिया के डा. जार्ज रेडी और जापान के राजदूत भी हिन्दी सीख रहे हैं।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

का

५३वां वार्षिक वृत्तान्त

(१-३-६० से २८-२-६१ तक)

निर्माण व्यवस्था

इस वर्ष भी इस सभा में १५ प्रतिनिधि सभाएं सम्मिलित रही। वर्ष के अन्त में यह सभा निम्न प्रकार १५१ सदस्यों का समुदाय थी:—

१.	प्रान्तीय सभाओं के प्रतिनिधि	११६
२.	भूतपूर्व प्रधान	४
३.	प्रतिष्ठित	५
४.	आजीवन सदस्य	२३
		१५१

श्रीयुत प० इन्द्र जी विद्यावाचस्पति तथा श्री पं० अवध बिहारी लाल जी के असामयिक निधन से २ स्थान रिक्त हो गए।

सम्बद्ध प्रांतीय सभाएँ

		सदस्य संख्या
१.	आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, ५, मीराबाई मार्ग, लखनऊ।	२७
२.	आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, गुरुदत्त भवन, होशियारपुर रोड़, जालन्धर।	४२
३.	आर्य प्रतिनिधि सभा बिहार, बांकीपुर, पटना।	१०
४.	आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल, २४।२ कार्नवालिस स्ट्रीट, कलकत्ता।	१३
५.	आर्य प्रतिनिधि सभा मध्यभारत, नया बाजार, लश्कर (ग्वालियर)।	३
६.	आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य प्रदेश, सदर बाजार मंगलवारी, नागपुर।	२
७.	आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान	७
८.	आर्य प्रतिनिधि सभा मध्यदक्षिण सुलतान बाजार, हैदराबाद।	५
९.	आर्य प्रतिनिधि सभा सिंध, कैम्प कल्याण, बम्बई।	
१०.	आर्य प्रतिनिधि सभा बम्बई, कारेली बाग, बड़ौदा।	६

११. आर्य प्रतिनिधि सभा पूर्वीय अफ्रीका,
पो० बा० २४३,
नैरोबी।

१२ आर्य प्रतिनिधि सभा दक्षिण अफ्रीका,
पो० बा० १७७०,
डर्बन।

१३. आर्य प्रतिनिधि सभा फिजी,
पो० बा० ६२८,
सामावूला।

१४ आर्य प्रतिनिधि सभा सुरीनाम,
पो० बा० २५०,
पारामारिबो।

१५ आर्य सभा मोरिशस,
पोर्ट लुइस,
मोरिशस। ११६

२६-१ ६१ की अन्तरग सभा के निश्चयानुसार गुजरात प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा इस सभा से सम्बद्ध हुई।

अधिकारी—

प्रधान —श्रीयुत बा० पूर्णचन्द्र जी एडवोकेट,

उपप्रधान—१ श्री बा० कालीचरण जी आर्य
२ श्री देसराज जी चौधरी
३ श्री डा० डी० राम जी

मन्त्री —श्री रघुवीर सिंह जी शास्त्री

उपमन्त्री —श्री नरदेव जी स्नातक,
—श्री बटकृष्ण जी वर्मन

कोषाध्यक्ष —श्री प्रो० रामसिंह जी, एम० ए०

पुस्तकाध्यक्ष—श्री आचार्य विश्वश्रवा जी

अन्तरग सभासद्

१. श्रीयुत मिहिर चन्द्र जी धीमान (बंगाल)
२. श्री पं० भगवान स्वरूप जी (राजस्थान)
३ श्री प० वासुदेव जी शर्मा (बिहार)
४ श्री प्रि० महेन्द्रप्रताप जी शास्त्री (उत्तर प्रदेश)
५. श्री बा० जगनन्दन लाल जी एडवोकेट (उत्तर प्रदेश)
६ श्री डा० महावीर सिंह जी (मध्य भारत)
७ श्री प्रि० लक्ष्मीदत्त जी दीक्षित (पंजाब)
८ श्री रामनाथ जी भल्ला (पजाब)
९ श्री घनश्याम सिंह जी गुप्त (भूतपूर्व प्रधानों के प्रतिनिधि)
१० श्री ला० हसराज जी गुप्त (आजीवन सदस्यों के प्रतिनिधि)
११ श्री मनोहर लाल जी (मध्य दक्षिण)
१२ श्री एल० के० नन्दवाना (बम्बई)
१३. श्री स्वामी ध्रुवानन्द जी (विदेश के प्रतिनिधि)
१४. श्री स्वामी अभेदानन्द जी
१५. श्री प० बुद्धदेव जी विद्यालंकार (जनरल)
१६ श्री पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति (मृत्यु हो गई)

आर्य प्रादेशिक सभा का प्रवेश

सार्वदेशिक सभा की अन्तरग सभा दिनाक २५-६-६० की बैठक मे आर्य प्रादेशिक सभा का आवेदन-पत्र स्वीकार होकर उक्त सभा सार्वदेशिक से सम्बद्ध हुई।

प्रचार कार्य

उड़ीसा

कार्य विवरणान्तर्गत वर्ष मे श्रीयुत स्वामी ब्रह्मानन्द जी के निरीक्षण मे निम्नलिखित कार्यकर्ता कार्य करते रहे हैं।

१ श्री शुक्रामुन्डा २ श्री प० रघुनाथ महापात्र ३. श्री बिरसा मुन्डा ४. श्री स्वामी नित्यानन्द वानप्रस्थी ५. श्री सनातन साहू ६. श्री तेम्बा भगत ७. श्री चन्द्र सिंह किसान ८ श्री बुडु भगत ९. श्री पुरुषोत्तम भगत १० श्री मुक्तेश्वर पण्डा शर्मा ११. श्री कृपासिंधु-पृष्टि १२. श्री डा० एन महान्ति।

श्री शुकरामुण्डा सुन्दरगढ़ केन्द्र में काम करते हैं, इनके द्वारा १२८ ईसाईयों की शुद्धि हुई।

श्री बिरसा मुन्डा भी सुन्दरगढ़ केन्द्र में काम करते हैं इनका वेतन दयानन्द सालवेशन मिशन होशियारपुर से मिलता है। इनके द्वारा २३३ ईसाइयों की शुद्धि हुई।

श्री पं० रघुनाथ महापात्र पाटणगीर (जि० बलंगीर) केन्द्र मे कार्य करते हैं। दातव्य औषधालय चलाने के साथ साथ इन्होने १८७ शुद्धियाँ की है। इनकी दक्षिणा दयानन्द सालवेशन मिशन होशियारपुर से मिलती है।

श्री स्वामी नित्यानन्द जी वानप्रस्थी—ये उड़ीसा के विभिन्न स्थानों मे भ्रमण करके वैदिक धर्म का प्रचार करते हैं, इनके भोजनादि का व्यय आर्य स्त्री समाज भवानीपुर कलकत्ता की ओर से मिलता है।

श्री सनातन साहू—राजगांगपुर केन्द्र में कार्य करते हैं। ईसाइयों की गतिविधि पर ध्यान रखना इनका मुख्य कार्य है। इनको वेतन भारतीय सस्कृति संरक्षिणी समाज राजगांगपुर की ओर से मिलता है एवं एक सायकिल भी मिली हुई है।

श्री तेम्बा भगत—बिसरा केन्द्र मे कार्य करते हैं। दिन में गाव-गांव भ्रमण करके प्रचार करते हैं। रात को लुगेई के दयानन्द सेवाश्रम में ४५ बच्चों को (रात्रि पाठशाला मे) शिक्षा देते हैं। इनको भारतीय संस्कृति सरक्षिणी समाज राजगांगपुर की ओर से वेतन मिलता है तथा भ्रमण के लिए एक साईकिल मिली है।

श्री चन्द्रसिंह किसान—गुदिआली केन्द्र में कार्य करते हैं। दयानन्द सेवाश्रम गुदिआली में दातव्य औषधालय चलाते हैं और रात को रात्रि पाठशाला चलाते हैं। छात्र छात्राओं की सख्या ४८ हैं। सब बच्चे स्तुति प्रार्थना उपासना के साथ सध्या कण्ठस्थ किये हुए हैं। इनको वेतन भारतीय सस्कृति संरक्षिणी समाज राजगांगपुर की ओर से मिलता है एवं एक सायकिल भी मिली हुई है।

श्री बुडु भगत हाथीबाड़ी केन्द्र में प्रचार करने के साथ दयानन्द सेवाश्रम बड़ाबांध दयानन्द सेवाश्रम बोकेरम में रात्रि पाठशाला चलाते हैं। भारतीय संस्कृति सरक्षिणी समाज राजगांगपुर से इन्हें एक सायकिल मिली है एवं वेतन मिल रहा है।

श्री पुरुषोत्तम भगत—रैमदगा केन्द्र से कार्य करते हैं। दिन मे प्रचार रात को दयानन्द सेवाश्रम जामबहाल में रात्रि पाठशाला चलाते हैं। इनको भी भारतीय सस्कृति संरक्षिणी समाज राजगांगपुर की ओर से वेतन मिलता है और प्रचार के लिए एक सायकिल मिली हुई है।

श्री मुक्तेश्वर पण्डा शर्मा—सम्बलपुर जिलान्तर्गत सोहला केन्द्र मे निःशुल्क प्रचार करते हैं। ये अत्यन्त प्रभावशाली वक्ता हैं। यह क्षेत्र सम्बलपुर जिला में ईसाइयों का गढ़ माना जाता है जहाँ ईसाइयों के दो हस्पताल और दो हाई स्कूल चल रहे हैं। शर्मा जी सत्यार्थ प्रकाश हाथ मे लेकर उनके मुकाबले मे खड़े हुए हैं।

श्री कृपासिन्धु पृष्टि— वैदिक आश्रम पानपोष केन्द्र में आर्य करते हैं। केन्द्र का दातव्य औषधालय चलाने के साथ आश्रम की वैदिक पाठशाला मे अध्यापन कार्य भी करते हैं। इनको वेतन लालचन्द शिवपुर हावड़ा तथा प्रभुदास भाई जे० नागरदास कम्पनी कलकत्ता की ओर से मिलता है।

श्री डा० एन० महान्ति—इस्पात नगरी राउरकेला जनसमूह स्थान बिसरोड मे दयानन्द सेवाश्रम खोलकर निःशुल्क आदिवासी तथा वृद्ध हुए नर-नारियों की चिकित्सा करते हैं। इस वर्ष १२४१ रोगियों की निः शुल्क सेवा की है।

स्वामी ब्रह्मानन्दजी—समस्त प्रचार केन्द्र के कार्य को देखने के साथ-साथ प्रचार भी करते हैं। कार्य निम्नप्रकार हैं।—

२५७ स्थानों पर प्रचार, व्याख्यान २८१, ५ केन्द्रों (दयानन्द सेवाश्रम) की स्थापना, २७ संस्कार (१ विवाह,

२ उपनयन, २४ शुद्धियाँ) ५ नई पाठशालाएं खोली तथा ३ दातव्य औषधालय चालू किये।

बाढ़पीड़ित क्षेत्रों में निरन्तर २ मास तक सेवा सहायता का कार्य किया। ५७८३ नर-नारियों को चावल, औषधियाँ और २४४७ को वस्त्र वितरित किये गए।

ऋषिबोधोत्सव के उपलक्ष्य में विशेष प्रचार के साथ ७ दिन तक सुन्दरगढ़ जिले के प्रधान मेलो-वेदव्यास मेलों-में प्रचार किया गया। ऋषिलंगर खोला गया जिसमें नित्यप्रति हजारों की संख्या में दरिद्रों को भोजन दिया जाता था। बलागीर जिला में ९ दिन तक बृहदयज्ञ के साथ २ दयानन्द मेला लगा कर प्रचार किया गया जिसमे नित्यप्रति २० से २५ हजार लोग भाग लेते थे। उड़िया भाषा में धर्म रक्षाकर पुस्तक दो हजार छपाकर वितरण की गई।

नित्यकर्म पद्धति एक हजार छपाकर प्रचारित की गई।

उड़िया भाषा में सत्यार्थ प्रकाश का नया अनुवाद कराके छपवाने की व्यवस्था हो रही है। श्रीमान् श्रद्धेय चिरजीव लाल बाहरी शिवपुर हावड़ा ने अपने पूज्य पितृदेव श्रीमान् लालचन्द जी बाहरी की स्मृति मे सत्यार्थ प्रकाश के प्रकाशनार्थ ३०००) तीन हजार रुपया देने का वचन दिया है। सत्यार्थ प्रकाश की एक हजार प्रति छपने मे ५०००) के व्यय का अनुमान है। सभा इस कार्य को शीघ्र सम्पन्न कराने के लिए यत्नशील है।

आय शुद्धि विभाग—

१८८०—००	सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली।
१४०८—४४	अखिल भारतीय दयानन्द सालवेशन मिशन होशियारपुर।
१५००—००	भारतीय संस्कृति संरक्षिणी समाज राजगांगपुर उत्कल।
६००—००	आर्य स्त्री समाज भवानीपुर कलकत्ता।
६००—००	आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा जालन्धर।
५००—००	श्री जगतराम जी ऐडवोकेट दयानन्द मार्ग अमृसर।
५००—००	श्री लालचन्द बाहरी ट्रस्ट शिवपुर हावड़ा।
१२०—००	श्री घनश्याम दास द्वारा-आर्य समाज बडा बाजार कलकत्ता।
१०५—००	श्रीयुत रायसाहब बलदेव साहू जी लोहारडग्गा रांची।
१२०—००	आर्य समाज नामनेर आगरा।
१००—००	केन्द्रीय आर्य सभा आगरा।
७४३३—४४	कुल जोड—आय

व्यय शुद्धि विभाग—

१०२०—०६	शुक्रामुण्डा को दक्षिणा।
७७०—००	भोजनादि व्यय स्वामी ब्रह्मानन्द जी।
७७६—५६	दक्षिणा प० श्री रघुनाथ महापात्र।
६२८—७५	दक्षिणा श्री बिरसा मुण्डा।
३६०—००	वेतन श्री सनातन साहु।
३३०—००	वेतन श्री तेम्बा भगत।
२७०—००	वेतन श्री चन्द्रसिंह किसान।
२७०—००	वेतन श्री बुद्ध भगत।
२७०—००	वेतन श्री पुरुषोत्तम भगत।
६६०—००	भोजन व्यय स्वामी नित्यानन्दवानप्रस्थी।
३१३—००	भोजन व्यय ब्रह्मचारी बलराम पात्र।
२१३—७५	दातव्य औषधालय।
१२०—००	अध्यापक श्री कृपासिन्धु पृष्टि का वेतन।
३२७—७५	वैदिक पाठशाला निर्माण (गृह) व्यय।
३१६—४०	मार्ग व्यय।
१४०—००	नव निर्मित समाज (केन्द्र) को सहायता।
१२०—००	ट्रैक्ट छपवाने में व्यय।
१०५—१०	शुद्ध किये हुए परिवारों को सहायता।
८८—२६	कार्यालय व्यय।
७७—७५	अतिथि सत्कार।
७४३३-४४	कुल व्यय जोड़

आय बाढ़ पीड़ित

५००-००	सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली।
५००-००	हिन्दु (आर्य) धर्म सेवा संघ दिल्ली।
२०००-००	ओरियण्ट पेपर मिल्स बजराजनगर उडीसा।
१०००-००	श्री चिरंजीव लाल बाहरी शिवपुर हावड़ा।
५००-००	श्री ठाकुरदास जी बड़ा बाजार कलकत्ता।
२५१-००	श्री प्रभुजी भाई जे० नागरदास एण्ड को० कलकत्ता-१।
२००-००	आर्य समाज कलकत्ता।
२००-००	आर्यसमाज बड़ा बाजार कलकत्ता।
२००-००	स्त्री आर्यसमाज भवानीपुर कलकत्ता।
२००-००	आर्यसमाज जमशेदपुर।
१००-००	श्री जगतराम जी ऐडवोकेट दयानन्द मार्ग अमृतसर।
१००-००	केन्द्रीय आर्य सभा आगरा।
२२४-००	अन्यान्य दान दाताओं से।
५६७५-००	कुल जोड़

इसके अतिरिक्त सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा से (पुराना) ६ बोरी कपड़ा श्री रामदेव सिहानिया द्वारा आर्यसमाज बडा बाजार से २०० नये कपड़े तथा अन्यान्य-दान दाताओं से ३ बोरी कपड़ा (पुराना) मिला है।

उपयुक्त धन से चावल, दाल, गुड़, चूरा, औषधियाँ खरीदा गया।

आय—ऋषि बोध उत्सव—

२००-००	आर्य स्त्री समाज भवानीपुर कलकत्ता।
१००-००	श्री चिरंजीव लाल बाहरी, शिवपुर हावड़ा।
१२५-००	श्री प्रभुदास भाई, जे० नागरदास एण्ड को० कलकत्ता-१।
२३३-००	अन्यान्य दान-दाताओं से।
६५८ ००	कुल

इसके अतिरिक्त ऋषि-लंगर के लिये राउरकेला तथा राजगांगपुर एवं सम्बलपुर से ७ बोरा चावल १ बोरा दाल, १ बोरा आटा मिला। श्री स्वामी ब्रह्मानन्द जी जिस मनोयोग से यह कार्य कर रहे हैं वह अनुकरणीय एवं प्रशंसनीय है। सभा उन्हें धन्यवाद देती है।

नैपाल प्रचार—

नैपाल राज्य के तराई भाग में गौर नामक स्थान पर 'दयानन्द सेवाश्रम' के तत्वावधान में गत ३ वर्ष से एक हिन्दी विद्यालय चल रहा है। इस कार्य का निरीक्षण आर्य समाज वैरगनियाँ द्वारा होता है। विद्यालय में २ अध्यापक कार्य करते हैं। कार्य विवरणान्तर्गत वर्ष में विद्यार्थियों की संख्या प्रति मास लगभग ६० रही। विद्यालय के प्रधान अध्यापक होम्योपैथ चिकित्सक भी हैं जो चिकित्सा द्वारा जनता की सेवा करते हैं। यह सभा इस विद्यालय को ६२) मासिक सहायता प्रदान करती है। यह विद्यालय उस क्षेत्र में प्रशंसनीय कार्य कर रहा है। इस वर्ष इस सभा की ओर से इसका निरीक्षण श्री सुखदेव जी शास्त्री स० प्रधान संचालक आर्यवीरदल द्वारा हुआ।

कार्तिक पूर्णिमा के अवसर पर बागमती नदी के तट पर लगने वाले मनियारी मेले में आर्य समाज, गुरुकुल महा विद्यालय एवं दयानन्द सेवाश्रम की ओर से संयुक्त सेवा शिविर लगाया गया। १५ भूले भटके बालकों की खोज करके उन्हें उनके अभिभावकों के सुपुर्द किया गया। इस अवसर पर योग्य प्रचारकों द्वारा प्रचार भी कराया गया। गत अक्टूबर मास मे श्री आद्यानन्द जी भजनोपदेशक ने अनेक ग्रामों मे प्रचार करके मुसलमानों के प्रचार को विफल करने का सराहनीय कार्य किया। नैपाल में इस समय जो राजनैतिक वातावरण व्याप्त है उसको लक्ष्य में रखते हुए आर्य समाज की अपनी स्थिति के दृढ़ीकरण के लिए विशेष प्रयास करना होगा।

इस वर्ष आर्य समाज मखनटोल काठमाडू के मंत्री श्री हरिहर प्रसाद जी आर्य सामाजिक प्रगति देखने के निमित्त भारत में आये और लगभग २ मास तक भारत के

विभिन्न नगरों का भ्रमण किया। उनकी इस यात्रा को सफल और सुगम बनाने के लिए इस सभा ने अपेक्षित सहयोग दिया।

सभा के अधिकारी शीघ्र ही स्थिति का निरीक्षण करके वहाँ सुयोग्य उपदेशक भेजने के लिए चिन्तित और यत्नशील हैं। इस राज्य में ईसाइयो और मुसलमानो की प्रचार प्रवृत्तियाँ वृद्धिगत हैं। उनके प्रभाव के निराकरण और हिन्दुओं के रक्षण का कार्य अत्यावश्यक है।

सभा का कार्य आर्य प्रतिनिधि सभा बिहार के निरीक्षण मे हो रहा है।

मद्रास प्रचार

मद्रास प्रान्त मे आर्य समाज मैसूर तथा मंगलूर के कार्य का विवरण इस प्रकार है —

मैसूर

पारिवारिक सत्सग १२४ नामकरण संस्कार २, विवाह संस्कार ४, गायत्री यज्ञ २ तथा शुद्धियाँ २ हुई। साप्ताहिक सत्सग नियम से होते रहे।

८-८-६० को आर्योपदेशक श्रीयुत् कृपाराम जी शास्त्री तथा समाज के प्रधान श्री वरवालिगा शेटी जी ने महाराज मैसूर से भेंट की और आर्य समाज के सिद्धान्तो और कार्यों से उन्हे परिचित कराया। कन्नड सत्यार्थ प्रकाश और ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका आदि ग्रन्थ उन्हें भेंट किए। इस भेंट का दूरगामी श्रेष्ठ परिणाम निकलने की आशा है।

आर्य समाज मैसूर के अधिकारी मुख्यत मन्त्री श्री रामशरण आहूजा बडी तन्मयता और लगन से कार्य करते हैं। वहाँ की जनता का वेदो की महत्ता पर विश्वास बढ़ रहा है और आर्य समाज का प्रभाव गहरा एवं विस्तृत होता जा रहा है।

वहा संस्कृत और अंग्रेजी के वेदविद आर्य विद्वानो द्वारा प्रचार की बड़ी आवश्यकता है जिसकी व्यवस्था इस सभा के विचाराधीन है।

मंगलूर

२ शुद्धियाँ, १ मुसलमान और एक जन्म के ईसाई की हुई और ४ अन्तर्जातीय विवाह हुए।

आर्य समाज के तत्वावधान में स्वामी श्रद्धानन्द सेवाश्रम नामक एक अनाथालय चल रहा है जिसमें ३०० बच्चे हैं जिनके पालन-पोषण और शिक्षण की सम्यक् व्यवस्था की जाती है। इनमें से १०० लडकियाँ म्युनिसिपल हाई स्कूल मंगलूर मे, ४ कनारा गर्ल्स हाई स्कूल मे, १६ लडके कनारा हाई स्कूल में, २ लडके कनारा स्कूल आव् कामर्स मे, ८ लडकियाँ गवर्नमेन्ट सेकेन्डरी और ट्रेनिंग स्कूल मे तथा १३० बच्चे विविध स्कूलो में छोटी श्रेणियों में पढ़ते हैं। आश्रम मे एक अच्छा पुस्तकालय और वाचनालय भी है। आश्रम का वार्षिक व्यय ४० हजार रुपया होता है जो सरकारी सहायता और विविध दान से पूरा किया जाता है। आश्रम के प्रधान श्री ऐम० जी० अनन्तपाल बी० ए० तथा उप मंत्री श्री स्वामी सदानन्द जी हैं।

बंगलूर कैन्ट

यह आर्य समाज उल्लेखनीय कार्य कर रहा है। २८- -६० को आर्य समाज स्थापनादिवस कार्पोरेशन पार्क ठाक्कर टाऊन में श्रीमती वी० इन्दम्मा मेयर बगलौर की अध्यक्षता मे समारोह पूर्वक मनाया गया। अध्यक्षा महोदया ने आर्य समाज के कार्य की भूरि २ प्रशसा की। इस अवसर पर प० सुधाकर जी कृत आर्य समाज दी हार बिंजर आव पीस (शान्ति का अग्रदूत आर्य समाज) ट्रैक्ट आर्य समाज की ओर से वितरित हुआ। समाज के अधिकारी और कार्यकर्ता बड़े उत्साह से कार्य करते हैं जिसके लिए वे बधाई के पात्र है।

एक उपयोगी सुझाव

मद्रास प्रान्त में इस सभा का वर्षों पर्यन्त नियमित प्रचार होता रहा है जिसके फलस्वरूप वहाँ आर्य समाज का संदेश प्रसारित होकर आर्य समाज आर्य (हिन्दू) धर्म

और संस्कृति के रक्षक के रूप में समादृत हो रहा है। सभा के प्रचार के फलस्वरूप वहां अनेक आर्य समाज स्थापित हुए जिनमे से कुछ आर्य समाजो के अपने निजी भवन एवं संस्थाएं हैं और उन्होंने प्रचार सम्भाला हुआ है। उत्तर भारत के उच्चकोटि के आर्य विद्वान समय-समय पर उधर जाकर कुछ मास रहकर वहां प्रचार करें तो उसका बड़ा अच्छा परिणाम हो सकता है। इस सुझाव को क्रियान्वित करने के लिऐ सभा यत्नवान है।

विदेश-प्रचार

अमेरिका—

न्यूयार्क (अमरीका) के श्रीयुत डा० मार्कस ने वहाँ वैदिक धर्म के प्रचारार्थ वेद मन्दिर (अमेरिका की वैदिक सोसाइटी) नामक एक संस्था खोली हुई है जहाँ प्रतिदिन हवन यज्ञ होता है और आर्य साहित्य का अध्ययन किया जाता है। मार्कस महोदय के साथ सभा का आवश्यक पत्र व्यवहार होता रहता है। उन्हे इस वर्ष आर्य समाज विषयक आवश्यक साहित्य भिजवाया गया है। डाक्टर महोदय भारतवर्ष आकर आर्यसमाज की प्रगतियो को देखने और आर्य विद्वानो एवं नेताओं का साक्षात्कार करने के लिए उत्सुक है। आर्य जगत और सार्वदेशिक सभा उनकी भारत यात्रा का स्वागत करेगी।

डाक्टर महोदय तथा उनके वेद मन्दिर का परिचय उनके अपने शब्दों में इस प्रकार है :—

'I was born on Oct 20, 1923 in the city of N.Y. My early education was in public schools in N.Y. City till the age of 10, and then I moved to Mt. Vernon where I finished all my schooling through high School. I received my doctor of Chiropractic degree in 1947, and since then I have been practising my vocation for the benefit of many people. However, my chief interest for a considerable period of time has been in the realm of metaphysics, philosophy and religion. I have always felt that the basic need of man was and is and will always be the spiritual regeneration or rebirth of man. I hold the firm conviction that the ultimate destiny of mankind as a whole lies in a spiritual fulfilment and realization here and now, on this planet. I feel very happy to say that several years ago, I came in touch with the ancient vedic thought and metaphysics. Its universality is remarkable. I take the liberty of saying that the understanding and awareness of the Vedic principle by people in all the nations would help in breaking down the walls of cultism, religious prejuadices and partisanship. I would feel very much obliged if you and other adherents of Vedic thought in India would co-operate with me for the dissemination of Vedic dharma in our contemporary world.

I and several of my friends have been performing the Hawan ceremony regularly for the last 4 years and have been benefitted greatly by it.

On Aug. 23, a couple of us had a small gathering at my residence in which we resolved to found the VEDIC SOCIETY OF AMERICA for the sole purpose of acquainting

the people here and in othre places with the basic principles of the Vedas. The Vedantic thought has had its root in the soil of America for five decades now. But somehow it has become very much personality conscious, which to me, in the long run, would turn into another major sect after Ramakrishna or Vivekananda. Any religion based around the finite human personality is destined to degenerate into sectarısanim and religious prejudices ahd partisanship. Tnis is why I feel that the Vedic dharma in its original form would do a great deal to elevate the soul of man for direct (not through any human intermediary) communion with that which is immanent and transcendental. I look forward to the day when many human souls will join us for the accomplish ment of our noble mission. We intend to have a Vedio Ashram, at an early date, in this country.

Incidentally, if you come across a distinguished Vedie Swami, please let us know his name and address, for we would like to get in touch with him. It would be indeed a great blessing to us if you could send a Swami here to further the cause of our Vedic sabha.

Plese invite all our friends to contact us when they are in or near N. Y. City.

Thanking you-

Cordially Yours
Dr. Marcus
4 Cottage Avenue Mt. Venon
Newyork City

अर्थात् मेरा जन्म अक्टूबर १९२३ में न्यूयार्क मे हुआ था। न्यूयार्क के पब्लिक स्कूलो मे १० वर्ष की आयु तक मेरी प्रारभिक शिक्षा हुई। इसके बाद मैं माउन्ट बरमन गया जहाँ हाई स्कूल परीक्षा के पश्चात् मेरी स्कूलीय शिक्षा पूर्ण हुई। १९४७ मे मैने डाक्टरी पास की तबसे मैं जनता के हितार्थ डाक्टरी का कार्य कर रहा हूँ। चिरकाल से मेरी रुचि अध्यात्म-विद्या, दर्शन-शास्त्र और धर्म के प्रति प्रेरित रही है। मैं सदैव यह अनुभव करता रहा हूँ कि मानव की मूलभूत आवश्यकता आध्यात्मिक पुनरुज्जीवन था, है और रहेगा। मेरी यह दृढ़ मान्यता है कि समष्टि रूप से मानव-समाज का भाग्य इस लोक में आध्यात्मिक विकास पर आश्रित है। मुझे यह कहते हुए हर्ष होता है कि कई वर्ष हुए मैं प्राचीन वैदिक विचार धारा और अध्यात्म-विद्या के सम्पर्क मे आया। वैदिक विचार धारा का सार्वभौम स्वरूप भव्य है। मै यह कहने का साहस करता हूँ कि यदि समस्त राष्ट्रों की जनता वैदिक सिद्धान्तों से परिचित हो जाय और वह उन्हे हृदयंङ्गम करले तो इससे विविध 'वादों' एवं धार्मिक पक्षपातो की दीवारों के धराशायी होने मे सहायता मिलेगी। यदि आप और भारत के अन्य वैदिक धर्मानुयायी ससार के इस भाग में वैदिक धर्म के प्रचार में मुझे सहयोग देंगे तो मैं बड़ा उपकार मानूँगा।

मैं और मेरे अन्य कई मित्र गत ४ वर्ष से निरंतर यज्ञ हवन करते हैं और इससे हमे अमित लाभ हुआ है।

२३-८-५९ को कुछ लोगों ने मेरे घर पर एकत्र होकर "अमेरिका का वैदिक समाज" नामक एक समाज की स्थापना का निश्चय किया जिसका उद्देश्य न्यूयार्क मे तथा अन्य स्थानों में वेदों के मूल सिद्धान्तों का प्रचार निश्चित

किया गया। गत ५० वर्ष के काल में वेदान्त के विचारों ने अमेरिका की भूमि में जड जमाली है परन्तु वेदान्त की विचार धारा ने व्यक्ति प्रधान रूप ग्रहण कर लिया है जो मेरी सम्मति में अन्त में रामकृष्ण वा विवेकानन्द के नाम पर बड़े २ सम्प्रदायों में परिवर्तित हो जायगी। जो धर्म परिमित मानवीय व्यक्ति पर आधारित होगा वह निश्चय ही धार्मिक पक्षपात और संकीर्णता से विकृत होकर सम्प्रदाय बन जायगा। इसी कारण मैं यह अनुभव करता हूँ कि वैदिक धर्म अपने मूलभूत विशुद्ध रूप में मनुष्य की आत्मा को उस विश्वात्मा का सीधे (किसी मानवीय मध्यस्थ के साधन से नहीं) साक्षात्कार करने मे बहुत सहायता प्रदान कर सकता है जो वास्तविक और अलौकिक महान् सत्ता है। मैं उस दिन की प्रतीक्षा कर रहा हूँ जब कि हमारे इस महान् कार्य की पूर्ति के लिए बहुसंख्यक लोग इसमे मिल जायेंगे। हम इस देश मे शीघ्र ही एक "वैदिक आश्रम" की स्थापना करने की सोच रहे हैं।

यदि आपको कोई आर्य संन्यासी मिल जाये तो आप हमे उनके नाम और पते से सूचित करें। हम उनसे अपना सम्पर्क स्थापित करना चाहते हैं। यदि आप किसी आर्य संन्यासी को प्रचारार्थ यहाँ भिजवा सकें तो यह हमारे लिए वरदान सिद्ध होगा।

जब आपके कोई मित्र न्यूयार्क वा उसके आसपास आएँ तो उन्हे कहें कि वे हमसे सम्पर्क स्थापित्त करें।

डा० यूजिन मार्कस ४ काटेज एवेन्यु
माउन्ट वर्नन न्यूयार्क

दक्षिण अमेरिका

दक्षिण अमेरिका के चिली नगर स्थित आक्सफोर्ड हाई स्कूल के संचालक श्रीयुत डा० एडवर्ड ए डी-विट को सभा कार्यालय से कुछ आर्य-साहित्य भेजा गया था जिसे उन्होने बड़े ध्यान से पढ़कर उसकी सराहना की और सभा को निम्नलिखित पत्र भेजा:—

My Dear Aryan brother,

I have just finished reading a most interesting book by Shri Ganga Prasad Upadhyaya entitled LIFE AFTER DEATH.

At the end of Shri Prasadji's book there are some short references to the Scriptures of the Arya Samaj. Finding myself very much in sympathy with yours ideals and work I will be very grateful if you send me more information regarding the Arya Samaj, also if there is a good biography written in English of Swami Dayananda.

I read English and Sanskrit, but I do not read any of the modern Hindi Vernaculars, nay not even Hindi, although thanks to Sanskrit I can read the Devanagari Characters in which is Hindi written, and understand some words which are like Sanskrit or guess the meaning of others that have a certain resemblance with the sacred संस्कृत.

How much would the complete works in English and Sanskrit of Swami Dayananda plus one or two of his best Fnglish Biographies come to in U.S.A. currency ?

How much the साम, अथर्व and यजु come to ? I already own the Rigveda in the Original Sanskrit.

I congratulate you on the good work you do to save India from the Soul-destroying Semitic religions es-

plcially from the inroads of the most negative and brain shrinking of the semitic Religions idest "Christianism or better style it Cretinism.

An Arya who although born in a Romkn Catholic 'milieu' refuses to be "Christianized" and wants to go to the pure source of all truth the Vedas. Thanking you before hand I remain yours faithfully.

Dr. Edward A. de Bittencourt
1885 Teniente Montt.

26-1-61 NUNOA SANTIAGO
CHILLI SOUTH AMERICA

प्रिय आर्य बन्धु !

मैंने अभी अभी श्रीयुत पं० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय कृत "लाइफ आफ्टर डेथ" नामक पुस्तक पढ़कर समाप्त की है जो बड़ी मनोरंजक है।

इस पुस्तक के अन्त मे आर्य समाज के ग्रन्थों और उसके कार्यों का उल्लेख है। आपके आदर्शों और कार्यों के प्रति मेरी रुचि है अतः यदि आप आर्य समाज से सम्बद्ध अधिकाधिक जानकारी देंगे तो मैं आपका बड़ा कृतज्ञ हूँगा। क्या श्री स्वामी दयानन्द जी की अंग्रेजी जीवनी मिल सकेगी?

मैं अंग्रेजी और संस्कृत तो जानता हूँ परन्तु आधुनिक हिन्दी से निकली किसी लोक भाषा यहाँ तक कि हिन्दी को भी नहीं जानता हूँ। संस्कृत के प्रति आभार प्रदर्शित करता हुआ यह अवश्य कहूँगा कि मैं देवनागरी अक्षरों को पढ़ सकता हूँ जिनमें हिन्दी लिखी जाती है और संस्कृत निष्ठ कतिपय शब्दों को वा उनके अभिप्राय को समझ लेता हूँ।

स्वामी दयानन्द जी के समस्त अंग्रेजी और संस्कृत ग्रन्थों का साथ ही उनकी सर्वश्रेष्ठ अंग्रेजी जीवनी का मूल्य डालर में क्या होगा? साम, अथर्व और यजुर्वेद का भी मूल्य लिखें। मूल संस्कृत मे ऋग्वेद मेरे पास है।

आप लोग आत्मा को नष्ट करने वाले सेमेटिक मतों से विशेषतः मन को कुंठित एवं संकुचित बनाने वाले प्रतिगामी ईसाईमतवाद से जिसको मस्तिष्क विकार की संज्ञा देना अधिक उपयुक्त होगा भारत की रक्षा करने का जो सत्कार्य कर रहे हैं उसके लिए मैं आपको बधाई देता हूँ।

एक आर्य को जो रोमन कैथोलिक सम्प्रदाय में उत्पन्न हुआ है अपने को ईसाई कहलाना अंगीकार नहीं है और वह सत्य के मूल वेदों के विशुद्ध स्रोत पर जाने के लिए उत्कंठित है।

धन्यवाद आपका
डा० एडवर्ड
ए. डी. बिट
एन्कोर्ट

इन्हें आर्य समाज विषयक कई अच्छी पुस्तके सभा से भिजवा दी गयी हैं जिनका वे मनोयोग पूर्वक अध्ययन कर रहे हैं।

श्रीयुत वेदव्रत जो भारत से अमेरिका गए हुए थे। आर्य समाज की शिक्षाओं से वहाँ के लोगों को परिचित कराने का स्तुत्य कार्य कर रहे थे। उन्होंने योग विषयक 'समाधि' 'जनीइन्टू दी सैल्फ' और 'लाइफ आफ्टर डैथ' ये तीन ग्रंथ अंग्रेजी में लिखकर तैयार किए थे। समाधि ग्रन्थ का निरीक्षण सभा की प्रेरणा पर श्रीयुत पं० गंगा प्रसाद जी उपाध्याय ने किया था और इस ग्रन्थ को उपयोगी पाया था। लेखक महोदय ने इस ग्रन्थ की भूमिका उपराष्ट्रपति श्रीयुत डा० राधाकृष्णन से लिखाई थी। वे इस ग्रंथ के प्रकाशन की वहाँ व्यवस्था कराने के यत्न मे थे। खेद है कि २-९-६० को अमेरिका मे हृदय की गति बंद हो जाने से ४० वर्ष की आयु मे ही अचानक उनका देहान्त हो गया। आर्यसमाज को उनसे बड़ी आशाएँ थीं। (क्रमशः)

—०००—

सरकारी कलैण्डर

(श्री ऐस. सी. चट्टोपाध्याय)

अंग्रेजों ने भारतवर्ष में अपना प्रभुत्व स्थापित कर लेने के पश्चात् अपना पंचांग प्रचलित किया जो ग्रीगोरियन के नाम से प्रसिद्ध था परन्तु जब पिछली दशाब्दी मे पाश्चात्य प्रभुत्व समाप्त हो गया तब अपना पचांग प्रचलित करने का प्रश्न हमारे समक्ष समुपस्थित हुआ। हमारी राष्ट्रीय सरकार ने १९५२ ई० में राष्ट्रिय पचांग के निर्माणार्थ एक कमेटी नियुक्त की जिसकी रिपोर्ट १९५५ मे सरकार को प्राप्त हुई। इस बात में प्राय: सभी सहमत थे कि हमारे यहाँ सौर वर्ष का प्रचलन होना चाहिए। यतः राम जैसे हमारे महापुरुषो के जन्म-दिन का कोई प्रामाणिक लेख उपलब्ध न था अतः यह निश्चित हुआ कि हमारा वर्ष वसन्त ऋतु मे आरम्भ होना चाहिए, परन्तु यह विवाद उठ खड़ा हुआ कि वर्ष का प्रारम्भ प्रथम वैशाख से लिया जाय या चैत्र से गत १५०० वर्षों मे मेष नक्षत्र की गति बहुत आगे बढ़ जाने से प्रथम वैशाख १४ अप्रैल वा उसके आस पास पड़ता है जबकि सूर्य २१ मार्च को उत्तरायण मे प्रविष्ट होता है। यह भी कहा गया कि वर्ष की दिन गणना की भूल के कारण यह अन्तर हो गया।

उन दिनो सौर वर्ष मे ३६५ दिन ६ घन्टे और १२-६ मिनट गिने गए जबकि वास्तविक काल ३६५ दिन ५ घन्टे और४८-८ मिनिट था। १४०० वर्ष मे यह अन्तर पड़ जाने से हमारा वर्ष अप्रैल के मध्य में प्रारम्भ होने लगा। वस्तुतः यह वर्ष २२ मार्च को वा उसके आसपास प्रारम्भ होना चाहिए था।

कमेटी के सुझावों पर उचित विचार करने के पश्चात् भारत सरकार ने निम्न लिखित निश्चय किए :—

१—ब्रिटिश शासन काल की भांति समस्त सरकारी कार्यों मे पोप ग्रेगरी के पंचांग पर आधारित रोमन वर्ष व्यवहृत होगा।

२—समस्त सरकारी घोषणाओं में अंग्रेजी तारीखों के साथ-साथ शक सम्वत् के अनुसार देशी तिथियां भी दी जाया करेंगी।

३—आकाशवाणी से भी दोनों तिथियां उद्घोषित की जायेंगी।

४—छुट्टियों और धार्मिक पर्वों के सम्बन्ध में प्रचलित प्रणाली का अवलम्बन किया जायेगा और वर्ष की विभिन्न ऋतुओं के नाम भी प्रचलित नामों से ही सम्बोधित हुआ करेंगे।

५—शक सम्वत् का प्रथम दिन बसन्त सम्पात से प्रारंभ होगा और वर्ष की अवधि अंग्रेजी पचांग के अनुसार रहेगी।

६—वर्ष का पहला महीना चैत्र होगा और लौंद के वर्ष के अतिरिक्त (जब वह ३१ दिन का होगा)- इस मास के दिन ३० रहेगे। इसके आगे के ५ मास (अर्थात् वैशाख, जेठ, आषाढ़, श्रावण और भाद्रपद) प्रत्येक ३१ दिन के और शेष ६ मास (क्वार, कार्तिक, अगहन, पौष, माघ और फाल्गुन) प्रत्येक ३० दिन के होगे।

७—चैत्र का प्रथम दिन २२ मार्च और लौंद साल में २१ मार्च रहेगा। अन्य महीनों का प्रारम्भ पूर्व की धाराओं में वर्णित नियम के अनुसार हुआ करेगा।

८—धार्मिक पर्वों को मनाने के सम्बन्ध में जो चांद्र मास के अनुसार मनाए जाते हैं आवश्यक हेरफेर किया जायेगा। जब सौर मास मे चांद्र मास २ बार पड़ेगा तो पहला चांद्र मास अतिरिक्त मास (मलमास) और दूसरा मास वास्तविक मास वा शुभ मास कहलायगा।

९—सरकारी कार्य के निमित्त दिन आधीरात से शुरु होकर आधी रात को समाप्त होगा परन्तु धार्मिक अनुष्ठानों के लिए यह सूर्योदय से लेकर सूर्यास्त तक रहेगा।

१०—अंग्रेजी और शक सम्वत् में ७८ वर्ष का अन्तर है शक सम्वत् बाद मे प्रारम्भ होता है।

मां

(रघुनाथ प्रसाद पाठक)

मां की ममता—

'मां' शब्द में भरी हुई ममता और दिव्यता की अनुभूति ही हो सकती है अभिव्यक्ति नहीं। प्रेम के ढोंग और प्रदर्शन से युक्त इस जगत् में मां के प्रेम जैसा वास्तविक, निष्कपट, गहरा और दिव्य प्रेम अन्यत्र कहीं नहीं देख पड़ता। मा अपने बच्चे पर अपने को मिटाए रखती और अपने सुख एवं प्राणों के बलिदान पर भी उसके कल्याण और अभ्युत्थान के लिए समुद्यत रहती है। मां की छाती पर पड़ा और दूध पीता हुआ बच्चा उसके हृदय मे रमा हुआ होता है। पिता अपने बच्चे से उपराम हो सकता है, भाई और बहनें शत्रु बन सकते हैं पति और पत्नी एक दूसरे का परित्याग कर सकते है परन्तु मां का प्रेम उसका कभी परित्याग नहीं करता चाहे वह सुखी हो या दुःखी बुरा हो या भला। मां की इस ममता को देखकर मैटरलिंक की यह विचित्रोक्ति समझ में आ जाती है कि 'अपने बच्चों को प्यार करते समय सभी माताएँ सम्पत्ति शालिनी हो जाती हैं। कोई माता दरिद्र, कुरूपा या जरा जीर्ण नहीं रहती', यदि वसुन्धरा पर कोई ऐसी वस्तु है जो प्रभु-प्रेम की अधिक से अधिक स्मृति दिला सकती है तो वह मां है। इसी से वेद में कहा गया है—मातृदेवो भव'। पृथ्वी पर भगवान की स्वरूप भूता मां ही है। मां की आँखों में मां की प्यारी वाणी में और उसकी लोरियों मे विश्व की सर्वोत्तम विभूतियां भरी होती हैं।

मां बनने का महत्त्व

स्त्री का हृदय मां बनने पर ही फलता-फूलता है। बन्ध्यापन अभिशाप माना जाता है। मा बनने पर उसके अधिकार और दायित्व में भी वृद्धि हो जाता और परिवार में उसे अधिक सम्मान पूर्ण स्थान प्राप्त हो जाता है। स्त्री मे सन्तान की इच्छा स्वाभाविक होती है। सन्तान न होने पर यह इच्छा इतनी प्रबल हो उठती है कि स्त्री दूसरे के बच्चे को ही अपना बच्चा बना लेती है। कभी २ वह दूसरे के बच्चे का अपहरण करने और कुपथ-गामिनी बनने तक के लिए भी उद्यत हो जाती है। जो स्त्रिया बच्चे जनने के भय वा झंझट से पराभूत हो बच्चे नहीं जनतीं उन्हें यह उक्ति हृदयङ्गम कर लेनी चाहिए—"बहुत से बच्चे बहुत-सी चिन्ताएँ, न कोई बच्चा न कोई आनन्द।" बच्चों से न केवल वंश की वृद्धि ही होती उनसे माता-पिता का विकास भी होता है। उनका हृदय लचकीला एवं विशाल बनता, स्वार्थ का परित्याग होता त्याग और परिश्रम शीलता का स्वभाव बनता और सबसे बढ़कर उनका आत्मिक उत्थान होता है। परन्तु अच्छे और स्वस्थ बच्चे उत्पन्न होने चाहिएँ। बच्चो की संख्या की अपेक्षा उनके अच्छे प्रकार पर ध्यान रखा जाना चाहिए।

मां का पद क्यों ऊँचा होता है ?

मां की गोद में वा बिछौने पर लोरियों एवं शिक्षाप्रद बातों और कहानियों द्वारा बच्चे के चित्त पर जो संस्कार पड़ते हैं वे अमिट होते और प्रायः आजीवन बने रहते हैं। मां का हृदय बच्चों की पाठशाला होती है। पिता की शिक्षाओं का प्रभाव बच्चे के मन पर पड़ता है जो मिट

भी जाता है। गुरु की शिक्षा का प्रभाव बच्चे के मन और आत्मा पर उस समय पड़ता है जब उसमें शिक्षा ग्रहण करने की कुछ क्षमता आ जाती है। इस बात को दृष्टि में रखकर ही गुरु की अपेक्षा पिता का और इन दोनों की अपेक्षा मां का दर्जा ऊँचा माना जाता है। पुर्तगाली कहावत है—"माता के एक औंस का मूल्य गुरु के एक पौंड के मूल्य के बराबर होता है।"

माता पर समाज का भविष्य निर्भर होता है

उत्तम मातृभक्त और दूसरों की माताओं का आदर करने वाली सन्तानों को समाज के अर्पण करना माता का सबसे बड़ा दायित्व होता है। सन्तान को अच्छा या बुरा बनाना माता के हाथ मे होता है क्योकि सन्तान की आत्मा की कुञ्जी उसी के हाथ मे होती है। इस प्रकार वह समाज के भविष्य को बनाने वाली होती है। यदि समाज पर एक मात्र माताओं का अधिकार शेष रह जाय तब भी उसका संचालन वे भलीभांति कर सकती हैं।

एक दिन नेपोलियन ने एक भद्र महिला से पूछा—"फ्रांस के नवयुवकों को सुशिक्षित करने का उपाय क्या है?" उसने उत्तर दिया—"अच्छी माताओ का सहयोग प्राप्त किया जाना।" इस उत्तर से सम्राट नेपोलियन बहुत प्रभावित हुआ और कहा—"इस शब्द में समस्त शिक्षा-प्रणाली समाई हुई है। फ्रास को अच्छी माताएँ मिल जाये तो अच्छी सन्तानों की कमी न रहे।"

महान् पुरुषों को बनाने वाली माताएँ होती हैं

युरोपियन पर्यटकों और ग्रन्थकारो ने युरोपियन बच्चों की तुलना मे भारतीय बच्चों को अधिक सुशील, चरित्रवान, मेधावी और योग्य बताया है और इनकी वरिष्ठता का श्रेय भारतीय माताओं को दिया है। यह परम्परा बहुत पुरानी है। राम, कृष्ण, कपिल, मरीचि, अत्रि, अगिरा, व्यास, वशिष्ठ, भारद्वाज, नारद, पराशर, भीष्म, शकराचार्य, युधिष्ठिर आदि महापुरुषो को जन्म देने वाली माताएँ स्त्रीत्व, पत्नीत्व और मातृत्व की विशिष्टताओ से परिपूर्ण थीं। वन जाते समय दुःख से व्याकुल होकर भी आगा-पीछा सोचकर एवं धर्म का विचार कर राम को वन जाने की आज्ञा देकर माता कौशल्या ने उन्होने आशीर्वाद दिया था :—

> न शक्यते वारयितुं गच्छेदानीं रघूत्तम।
> शीघ्रं च विनिवर्तस्व वर्तस्व च सताक्रमे॥
> यं पालयसि धर्मं त्वं प्रीत्या च नियमेन च।
> स वै राघव शार्दूल धर्मस्त्वामभि रक्षतु॥

अर्थात् हे पुत्र! मैं तुझे किसी प्रकार रोक नहीं सकती, अब तो तू वन को जा, पर जल्दी लौटकर आना (अर्थात् १४ वर्ष से अधिक मत ठहरना) और सत्पुरुषों के मार्ग पर चलना। प्रेम और नियम के साथ तू जिस धर्म के पालन में प्रवृत्त हुआ है- वही धर्म तेरी रक्षा करेगा!"

राम-रावण युद्ध में लक्ष्मण बुरी तरह घायल हो गए थे। जब हनुमान पर्वत-शिखा से औषधि लेकर लंका को लौट रहे थे तब कुछ समय के लिए अयोध्या मे ठहरे। माता कौशल्या और सुमित्रा को लक्ष्मण की मरणासन्न अवस्था बताई तो दोनों माताओं ने जो सदेश दिये वे स्वर्णाक्षरो में लिखे जाने योग्य हैं। सुमित्रा ने कहा हनुमान! तुम राम से कहना यदि लक्ष्मण वीर गति को प्राप्त हो गया तो तुम दुःखी न होना वरन् यह सोचकर प्रसन्न होना कि लक्ष्मण ने सेवक की श्रेष्ठतम गति पाई है। मैंने उसे तुम्हारी तन-मन से सेवा करने के लिए भेजा था और कहा था कि यदि राम के कार्यों मे तुम्हारे प्राण भी चले जाये तो तुम अपने को धन्य समझना।" कौशल्या ने अपने संदेश मे कहा था—"हनुमान! जो औषधि तुम ले जा रहे हो यदि उससे भी लक्ष्मण के प्राण न बचे तो तुम राम से कहना कि मैंने तुम्हें अकेला नहीं भेजा था। लक्ष्मण को भी तुम्हारे साथ भेजा था। यदि दैवयोग से लक्ष्मण की मृत्यु हो जाय तो तुम अयोध्या को मत लौटना।"

वस्तुतः इसी प्रकार की माताओं और सन्तानों से परिवारों में सुख और शान्ति व्याप्त रहती है।

अमेरिका के राष्ट्रपति महात्मा लिंकन कहा करते थे कि मैं जो कुछ हूं और जो कुछ बनने की आशा करता हूं उसका श्रेय मेरी पुण्यशीला मां को प्राप्त है। रस्किन ने लिखा है—"मेरे चरित्र के निर्माण में मेरी माता का प्रभाव अत्यधिक रहा है। वह मुझे बाइबिल के लम्बे-लम्बे अध्याय कण्ठस्थ करने के लिए बाध्य किया करती थी। इस अनुशासन के कारण ही मैं परिश्रमशील बना और मुझमें साहित्यिक अनुराग उत्पन्न हुआ।" अमेरिका के प्रथम राष्ट्रपति जार्ज वाशिंगटन अपनी माँ के उपकारों को स्मरण करके कहा करते थे—"पिता की आकृति मात्र मेरे स्मृति-पट पर है। उनका मेरे जीवन पर कोई प्रभाव पड़ा या नहीं, मैं नहीं जानता। मेरी विद्या, बुद्धि, धन-वैभव पद एवं सम्मान- इन सबका मूल कारण मेरी आदरणीया जननी है।"

जर्ज वाशिंगटन की मां का भव्य उदाहरण

अमेरिका के स्वातन्त्र्य संग्राम को जीतने का श्रेय इन्हीं वाशिंगटन को प्राप्त है। युद्ध में प्रवृत्त होने से पूर्व वह माता का आशीर्वाद ग्रहण करने गए। जननी ने उन्हें आशीर्वाद देते हुए कहा—स्वदेश के इस मुक्ति संग्राम में तुम विजयी होकर लौटो। हाथ में विजयी तलवार लेकर लौटना और यदि यह संभव न हो तो तुम स्वयं तलवार पर चढ़ जाना।" अमेरिका विजयी हुआ, स्वाधीन हुआ, और जार्ज वाशिंगटन उसके सर्व प्रथम प्रेसीडेन्ट बनाए गए।

युद्ध-विजय के तत्काल बाद जार्ज वाशिंगटन अपनी मां से मिलने फ्रेडरिक वर्ग गए। स्वागतार्थ सारा नगर सजाया गया परन्तु मां के घर में कोई परिवर्तन नही स्वागत का कोई समारोह नहीं। सब उस स्वतंत्रता युद्ध के विजयी के स्वागत को उतावले हो रहे हैं किन्तु वह जिनके पास जा रहा था वह सदैव की भांति अपने दैनिक कार्यों में लगी थी। उसके किसी काम में एक मिनट का भी अन्तर न आरहा था। वाशिंगटन घर में घुसे देखा कि मां नित्य कर्मों को यथावत् करने में लगी है। अभिवादन किया। माँ ने पुत्र की ओर देखकर कहा—"विश्व के झाड़-झखाड़ की सफाई का भार तुम्हारे ऊपर डाला गया है। अनेक परीक्षाओं में तुम्हें पास होना है। अबतक तुम सुयोग्य सिद्ध हुए हो। तुम्हें देखकर आज तुम्हारे पिता की याद आती है।"

इसे आप स्वागत समझें तो, उपदेश समझें तो और बात-चीत समझें तो बस। वह महान् नारी बहुत बोलना न जानती थी। इतने में ही सब कुशल-मंगल समाप्त हो गया।"

जार्ज वाशिंगटन के युद्ध के दाहिने हाथ मार्किस लाफायते जब अपने देश फ्रांस को जाने लगे तो इस माननीय महिला के दर्शनार्थ पधारे। उस समय मेरी वाशिंगटन बर्तन साफ कर रही थी। सामने आने पर उन्होने उस विख्यात फ्रांसीसी योद्धा से केवल इतना कहा—"वृद्धानारी को तुम देखने आए हो ! आओ !! अपने दरिद्र घर में मैं तुम्हारा स्वागत करती हू। वस्त्रों के बदलने की कोई आवश्यकता मैने अनुभव नहीं की।"

पुत्र के पास राजमहल मे चले जाने पर भी उन्होंने दासियाँ न रखी। उनका पुत्र देश का अध्यक्ष था इसलिए देश के धन को अपने काम में लेना उन्होने कभी स्वीकार न किया। पहले की भाँति ही उनका घर बना रहा। वह सदा अपने हाथ से काम करती रही। थोड़े से व्यय से वह पारिवारिक जीवन चला लेती थी। अपने हाथ से अनेक वस्तुएं बनाकर बेचती थी। इस प्रकार जो थोड़ा पैसा परिवार के व्यय से बचता था उसे वह दीन दुखियो में बांट दिया करती थी।"

मातृ-वियोग

माता से असमय मे वंचित हो जाने से बच्चे के हृदय को बड़ा धक्का लगता है। अब्राहम लिंकन की मां बहुत अच्छी थीं। जब वह ८ वर्ष के थे तभी उनको मातृ-वियोग सहन करना पड़ा। लिंकन ७-८ दिन पर्यन्त मां की समाधि के निकट बैठकर घंटों रोए। अमेरिका का राष्ट्रपति बन जाने पर भी जबकि वह सम्मान और अधिकार

की उच्चतम सोपान पर आरूढ़ थे लोगो को सदैव उनके चेहरे पर उदासी छाई देख पड़ती थी एक दिन एक सम्भ्रान्त महिला ने साहस करके उनसे इसका कारण पूछा। इस प्रश्न को सुनकर लिंकन की आँखो में आँसू आ गए। उन्होंने कहा—"मेरी माँ मुझे बचपन में ही छोड़कर स्वर्ग चली गई थी। उसकी प्रारम्भिक शिक्षा ने मेरा बड़ा उपकार किया। मैं उसे बहुत प्यार करता था। उसकी मृत्यु से मुझे अपार दुःख हुआ। चेहरे पर छाई हुई उस समय की उदासी अबतक नहीं गई।"

शरीर से काम करने और घर गृहस्थ को सम्भालन में असमर्थ हो जाने पर भी माता सबको मिलाने वाला वह केन्द्र बिन्दु होता है जिसके चहुँओर प्रेम आज्ञाकरिता कोमल भावनाएँ और प्रेरणाएँ काम करती रहती हैं।

मातृ-सेवा

सिकन्दर अपनी माता का बहुत आदर करता था। एक बार की बात है कि जब सिकन्दर बाहर था तब अंटीपेटर नामक उसके मंत्री ने जिसे सिकन्दर बहुत चाहता था लिखा—"आपकी माता के हस्तक्षेप से राज-कार्य का संचालन बड़ा कठिन हो गया है। उनका स्वभाव आप जानते ही हैं वे स्त्री होने पर भी सदा राजकार्य में हस्तक्षेप करती रहती हैं।"

सिकन्दर ने इस पत्र को पढ़ा और लिख दिया—"मेरी माता का एक बूंद आँसू तुम्हारी हजारों चिट्ठियों को पोंछ डाल सकता है। इसका सदा ध्यान रखना।"

वस्तुतः माता पिता की सेवा करने से उनको उतना लाभ नही होता जितना सन्तान को होता है। माता-पिता की सेवा करने वाले बच्चे दीर्घायु, यश, पुण्य, बल, धन-सम्पदा सब कुछ प्राप्त कर सकते है।

॥ आवश्यक सूचना ॥

कतिपय सज्जनों के पत्र, पुत्री के लिए वर की आवश्यकता और वर के लिए पुत्री की आवश्यकता, विषयक सभा में आते हैं। निवेदन है कि जो जन्मगत जातिभेद को छोड़ कर आर्य मात्र में गुण-कर्म-स्वभावानुसार सम्बन्धों को चाहें सभा को वही लिखे। इसके अतिरिक्त में निवेदन करूंगा कि समस्त आर्य भाई-बहिन अपने विवाह योग्य बच्चे-बच्चियो के नाम सभा मे अंकित कराले ताकि सभा सब आर्य भाईयों की सहायता कर सके। चित्र निम्नप्रकार है भर कर भेज दें:—

पुत्र अथवा पुत्री का नाम.......................... शिक्षा..........................

आयु.......................... स्वभाव.......................... पिता। संरक्षक का नाम पूरे पते सहित..........................

....

माता। पिता जीवित है या नहीं.......................... भाई.......................... बहिन..........................

पिता। सरक्षक की जीविका का साधन..........................

मासिक आय.......................... स्थान.......................... आर्य समाज का नाम जिसके सदस्य है.......................... गोत्र..........................

वर्ण जो स्वयं सिद्धान्तानुसार अपने को दे सके हैं..........................

लड़के। लडकी में आर्यत्व की भावना..........................

कालीचरण आर्य
मन्त्री
सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली

आर्य समाज और राजनीति

श्री चन्द्रनारायण एम०ए० एल० एल०
बी० एम० आर० ए० एस०

"आर्य समाज और राजनीति" ऐसा जटिल और कठिन प्रश्न है जिस पर आर्य समाज के मूर्धन्य नेताओं ने अनेक बार निश्चय करने का प्रयास किया किंतु निश्चय आज तक नही हुआ न होने की आशा है ।

मेरठ के अष्टम आर्य महा सम्मेलन मे भी यह प्रश्न बड़े जोर शोर से उठाया गया था । "आर्य समाज को राजनीति में सक्रिय भाग लेने" का समर्थन करने वालो को सन्तुष्ट करने के लिए लोक सेवक सघ की स्थापना कर दी गई। पं० बुद्ध देव विद्यालकार को उसका सयोजक भी नियुक्त कर दिया गया । एक जोश था समय के साथ ठंडा पड़ गया ।

नवम आर्य महा सम्मेलन मे भी यह प्रश्न उठा—धुंवाधार व्याख्यान भी हुए किन्तु ठीक उस समय जब कोई निर्णयात्मक निश्चय होने वाला था—समय और समस्या की गम्भीरता को ध्यान मे रखते हुए प्रस्ताव स्थगित कर दिया गया। प्रस्ताव को स्थगित करने का सारा दायित्व पूज्य श्री स्वामी ध्रुवानन्द जी सम्मेलन सभापति को था । कुछ लोग क्रुद्ध हुए, कुछ प्रसन्न, कुछ कुपित हुये, कुछ आनन्वित, कुछ क्षुब्ध हुये, कुछ सन्तुष्ट ।

कल्पना कीजिए प्रस्ताव स्वीकृत हो जाता है तब क्या होता ? आर्यसमाज के टुकडे टुकड़े ! आर्य समाज के प्रत्येक व्यक्ति को व्यक्तिगत रूप में राजनीति मे भाग लेने की पूरी छूट है । इस का एक दुष्परिणाम यह है कि आर्यसमाज के लोग विभिन्न राजनैतिक संस्थाओ मे, यथा कांग्रेस, समाजवाद,प्रजा समाजवाद, जनसंघ, हिन्दूमहासभा आदि में प्रविष्ट होकर कार्य कर रहे हैं । परमात्मा का धन्यवाद है कि विभिन्न राजनैतिक विश्वास रखते हुए भी आर्य समाज में ये सब सज्जन आर्य समाज की ही बात कहते हैं । उदाहरणार्थ श्री प्रकाशवीर शास्त्री ससत्सदस्य कांग्रेस के महान् आलोचक हैं और जनसंघ के समर्थक हैं आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान हैं। श्री पं० प्रेमचन्द्र शर्मा पक्के कांग्रेसी हैं। कांग्रेस के टिकट पर विधायक हैं आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री हैं। दोनों ही प्रतिनिधि सभा के

उच्चाधिकारी है किन्तु सभा के कार्य मे इनके राजनैतिक विश्वास बाधा नहीं डालते ।

परन्तु जब आर्य समाज राजनीति मे सक्रिय भाग लेगा और अपनी राजनीति निर्धारित करेगा उस समय अन्य राजनीतिक संस्थाओ मे कार्य करने वाले आर्यजन अनेकानेक बार सोचेंगे कि अब क्या करें !

यदि वे अपने राजनैतिक कार्य को त्याग कर आते है तो उनका राजनैतिक जीवन ही समाप्त हो जायेगा । अनेक आर्यजनो की उपरोक्त राजनैतिक सस्थाओ से इतनी घनिष्ठता है कि अवसर उपस्थित होने पर वे आर्य समाज का छोड़ देंगे अपने राजनैतिक दल को नहीं छोड़ सकेंगे । इससे आर्य समाज को बहुत हानि होगी । अच्छे-अच्छे कार्यकर्त्ता आर्य समाज से पृथक् हो जायेंगे । भले ही अपने व्यक्तिगत जीवन मे वे आर्य समाजी बने रहे किन्तु सामाजिक जीवन मे वे कांग्रेस माईनेस आर्य समाज, साशलिस्ट माईनस आर्य समाज, प्रजासोशलिस्ट माईनेस आर्य समाज और जनसघ माईनेस आर्य समाज होगे । ये ऐसी विषम परिस्थिति होगी कि आर्य समाज इसको सहन नही कर सकेगा । आर्यसमाज का ढाचा अस्तव्यस्त हो जायेगा ।

अब एक और परिस्थिति भी उठेगी । निर्वाचन मे आर्य समाज अपने प्रत्याशी खड़ा करेगा । क्या आप आशा करते हैं कि मुसलमान - जिसके इस्लाम कुर्आन और पैगम्बर का आर्य समाज अपने आदि काल से खण्डन करता रहा है—आर्य समाज को वोट देगा ? एक बार नही—सौ बार नही । क्या ईसाई—जिसके बाईबिल ईसा आदि का आर्य समाज ने जन्म भर खण्डन किया । आर्य समाज को वोट देंगे—नही—भूल कर भी नही । क्या सनातन धर्मी—जिनके अवतारवाद, मूर्तिपूजा, मृतक श्राद्ध आदि का आर्य समाज ने खण्डन किया है आर्य समाज को वोट देंगे—नही प्रलय तक नही । फिर किस बल विश्वास और आधार पर आर्य समाज राजनीति में भाग लेने की सोचता है ।

तो क्या आर्य समाज चुपचाप उदासीन होकर बैठ रहे ? देश में जो राजनैतिक भ्रष्टाचार फैला हुआ है उसे फैलने दें । इस वर्त्तमान राजनीति से तो देश की बहुत हानि है । राजऋषि पुरुषोत्तमदास टण्डन ने कहा था कि आर्य समाज ने शुद्धि का बहुत बड़ा कार्य किया है उसे राजनैतिक शुद्धियाँ भी करनी चाहियें । बात तो ठीक है परन्तु होना क्या चाहिए ! पहिली बात तो यह है कि आज देश में जितने भी वाद फलफूल रहे हैं जैसे मार्क्सवाद, गाधीवाद, समाजवाद, प्रजासमाजवाद, साम्यवाद, जनसघवाद इनका पूर्ण विश्लेषण किया जाये और उनमे जितनी अवैदिक बातें हैं उनका डट कर विरोध किया जाये । प्रेस प्लेटफार्म और पेन तीनो स्रोतो द्वारा इस कार्य को करना होगा । इसके लिए धन चाहिये, इसके लिए मन चाहिये, और दान चाहिए । यदि हम अपने इस प्रयास मे सफल होकर अपने राजनैतिक देवो की मानसिक और बौद्धिक शुद्धि कर डाले, उन्हें वैदिक सिद्धान्तो का अनुयायी बना डाले तो हम संसार, भारत और राष्ट्र के साथ बहुत बड़ा उपकार कर सकेंगे ।

पंडित जवाहरलाल नेहरू और उनके सहकारी आज धार्मिक साम्प्रदायिकता के पीछे लट्ठ लेकर पड़े है । किन्तु देखा जाये तो भारतवर्ष मे धार्मिक साम्प्रदायिकता का नाम भी नही हैं । यहाँ तो राज्य है राजनैतिक साम्प्रदायिकता का । कांग्रेस सोशलिस्ट प्रजा सोशलिस्ट, जनसघ एक दूसरे को नीचा दिखाने गिराने और अपमानित करने का प्रयत्न करते रहते हैं । एक ईमानदार सच्चरित्र देशभक्त जन सेवी सोशलिस्ट जनसंघी या प्रजा सोशलिस्ट एक अंगूष्ठेक बेईमान, स्वार्थी कांग्रेसी के समक्ष कुछ मूल्य नहीं रखता । इस राजनैतिक साम्प्रदायिकता को नष्ट करना परमावश्यक है । यह तब हो सकता है जब इस राजनैतिक चक्रव्यूह को तोड़ने के लिए आर्य समाज अभिमन्यु बन कर प्रवेश करे ।

आर्यसमाज को एक शुद्धि अभियान आरम्भ करना चाहिये । निर्वाचन मे भाग न लेकर निर्वाचको को कहना होगा कि किसी राजनैतिक दल विशेष को वोट न देकर सच्चे देशसेवी और चरित्रवान् व्यक्ति को वोट दो । यदि आर्य समाज इस प्रयत्न मे सफल हो जाये तो निश्चय ही

(शेष पृष्ठ ३७४ पर)

स्वर्णजयन्ती व आर्य महासम्मेलन

के

विविध भाषरा

गोकृष्यादि रक्षा सम्मेलन

श्री बा० पूर्णचंद्र, एडवोकेट का उद्घाटन भाषण

माननीय अध्यक्ष महोदय, माताओ और सज्जनो,

मुझे आदेश हुआ है कि मैं गो-रक्षा सम्मेलन का उद्घाटन करूँ। मैं यह समझता हूं कि सारे सम्मेलन आप सब के लिए बड़े महत्वपूर्ण हैं, परन्तु आज का पहला दिन है और यह पहला सम्मेलन बड़ा आदरणीय और अनुकरणीय है। मेरी यह धारणा रही है कि ऋषि दयानन्द ने सबसे पहले भारतवर्ष में यह आन्दोलन शुरू किया कि गोमाता की रक्षा हो। गो-शालाओं को स्थापित करना उनके समय से आरम्भ हुआ। उनकी नीति विशेष थी। वे हिन्दू धर्म के प्रचार को और गो-रक्षा को सम्पर्क का विषय मानते थे। ऋषि ने १८८२ में बहुत से लोगों से हस्ताक्षर कराये जिनमें मुसलमान हिन्दू, ईसाई आदि सभी थे और उन दस्तखतों के आधार पर ब्रिटिश सरकार के पास एक बहुत बड़ा प्रार्थना-पत्र भेजा गया था। उसमें यह प्रार्थना की गयी थी कि सारे भारत मे गाय का वध एकदम कानूनन बन्द हो जाय।

ऋषि की दूसरी विशेषता यह है कि स्वामी जी ने गो-रक्षा को केवल धर्म की दृष्टि से नहीं, वरन् सामाजिक और आर्थिक दृष्टिकोण से भी उसे हमारे सामने रखा। एक गाय से कितना लाभ होता है, कितना दूध होता है इत्यादि। गाय सम्बन्धी आकड़े आपके आगे रखे गये। ऋषि की विशेषता यह है कि केवल गो-रक्षा के लिए नहीं, मांस भक्षण के विरुद्ध उन्होने बड़ी प्रबल आवाज उठायी। अगर आप विचार करें, अगर आर्य, हिन्दू आज मांस भक्षण छोड़ दें तो मेरी धारणा है कि जो गाय का प्रयोग मांस के रूप मे करते हैं, वे अपने आप गाय खाना छोड़ देंगे। यह देश का दुर्भाग्य है कि गाय की रक्षा की पुकार करते हुए भी मांस भक्षण का

प्रचार बढ़ रहा है। ऋषि ने जहाँ गाय की रक्षा पर बल दिया, वहाँ मांस-भक्षण रोकने पर भी पूरा बल दिया और कहा कि सामाजिक दृष्टि से और स्वास्थ्य की दृष्टि से भी मांस भक्षण गलत है।

चौथी बात यह है कि उन्होंने केवल यह नहीं कहा कि गाय की रक्षा करो, केवल यह नहीं कहा कि मांस का भक्षण न करो, बल्कि उन्होंने कृषि पर भी बल दिया और यह बताया कि गाय की रक्षा से, बैलों की रक्षा से देश तरक्की करेगा। आज जो हमारे खाने की समस्या है, उसके लिए बड़े अनुचित उपाय किये जा रहे हैं। ऋषि ने कृषि की उन्नति के लिए पूरा ध्यान दिया और उसके लिए बैलो की उपयोगिता बतायी। उन्होंने इसे सघर्ष का विषय नही बनाया। साम्प्रदायिकता का विषय नहीं बनाया। हमें और आपको गाय की रक्षा का पूरा आन्दोलन करना चाहिए, परन्तु महर्षि का अनुकरण करते हुए।

मांस भक्षण का विरोध हरेक को करना चाहिए। कृषि पर ध्यान देना चाहिए। मुझे एक बात याद आ रही है कि उत्तर प्रदेश सरकार ने मद्यपान निषेध कानून बनाया तो मैंने सम्बन्धित मन्त्री को लिखा कि यह कानून बना देने से ही सब कुछ नही होता। उस पर आचरण कराइये, तभी इसका कुछ फायदा है। सरकार ने कानून तो बना दिया परन्तु हिचकते हुए।

गो-हत्या के बारे में जिम्मेदार अफसरों से भी कुछ अजीब-सी बातें सुनने मे आती हैं। एक दफा एक अफसर ने गो-हत्या सम्बन्धी बातचीत के सिलसिले मे मुझे कहा —साहब, गो-हत्या बन्द की गयी तो उसका नतीजा यह हुआ कि गायों को रखने के लिए स्थान की एक विकट समस्या हमारे सामने खड़ी हो गयी है। ऐसी बातें सुनकर आश्चर्य होता है। क्योंकि यह तो गवर्नमेंट का काम है कि जितनी भी आबादी है, उनके खाने आदि का प्रबन्ध करे, उसी तरह पशुओं का भी प्रबन्ध करना पड़ेगा। अगर गवर्नमेंट नहीं कर सकती है तो उसकी यह त्रुटि मानी जायगी। खाना न मिलने के कारण उनको मारा जाय, यह बड़े दुःख की बात है।

गो-रक्षा देश के लिए लाज़िमी है। जो गाय दूध नहीं देती, उनका भी उपयोग है। उनके गोबर से बढ़िया कोई खाद ही नहीं है। यह एक ऊंचा दृष्टिकोण है जो आध्यात्मिक भावना से ओत-प्रोत है।

गो-रक्षा-आन्दोलन सारे भारत में प्रचलित कर दिया गया है। मगर आर्य समाज की किसी के साथ स्पर्द्धा नहीं है। जो गाय की रक्षा चाहता है, सारे नागरिक उसके सदस्य हो सकते हैं। मैं आशा करता हूं कि इस सम्मेलन में इस बात पर विचार करके महत्वपूर्ण निश्चय किये जायेंगे। यह निहायत जरूरी है कि इस आवश्यक प्रश्न का समाधान करने के लिए गो-रक्षण सभा स्थापित की जाय और लगातार विचार करके तत्पर रहते हुए समाधान कराया जाय।

—:o:—

पृष्ठ ३७२ का शेष

राजनीति सच्चरित्र सुशिक्षित और सच्चे विधायकों के हाथ में होगी वे जो कार्य करेंगे वे देश जाति और समाज के लिए कल्याणकारी होंगे। यही आर्य समाज को अभीष्ट है।

मैं समझता हूँ कि आर्य समाज राजनैतिक क्षेत्र में पदार्पण न करके राजनैतिक विचारों व सिद्धान्तो को शुद्ध करने का ही अभियान चलायें तो उत्तम है। इसी से "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" की भावना और साधना पूर्ण होगी।

राजनैतिक उद्देश्यों के लिये आर्य समाज तथा उसके मन्दिरों का प्रयोग अनुचित

प्रेस कान्फ्रेन्स में सभा-मन्त्री श्री बाबू कालीचरण जी आर्य की घोषणा

दिल्ली २६ सितम्बर—

आज एक प्रेस कान्फ्रेन्स में सभा मन्त्री ने निम्नलिखित वक्तव्य दिया—

इस समय भारत में विधान सभाओं तथा संसद् के साधारण निर्वाचन सन्निकट होने के कारण सारे देश के राजनैतिक वातावरण मे उत्तेजना आ रही है और निर्वाचनों में भाग लेने के लिये विशिष्ट रुचि पैदा हो रही है। विभिन्न राजनैतिक दल अपनी-अपनी दृष्टि से शक्ति के संग्रह तथा आंकने मे लगे हैं। साथ ही वे अन्य अराजनैतिक सगठनों का समर्थन प्राप्त करने का भी यत्न कर रहे हैं। इसकी कुछ प्रतिक्रिया आर्य सामाजिक क्षेत्रो में भी होनी स्वाभाविक है। अत. आवश्यक है कि इस सम्बन्ध मे आर्य समाज की नीति स्पष्ट की जाए।

सार्वदेशिक सभा ने समय-समय पर जो निश्चय किये है उनके अनुसार आर्य समाज की यह चिरघोषित नीति है कि वह सामूहिक रूप से प्रचलित राजनीति में सक्रिय भाग नहीं लेता। आर्य समाज एक सार्वभौम धार्मिक संस्था है और उसका कार्यक्रम समस्त ससार के लिये अभिप्रेत है। अपने इस सार्वभौम स्वरूप को अक्षुण्ण रखने के लिये यह युक्ति-युक्त ही था और है कि आर्य समाज किसी भी देश की राजनीति मे सामूहिक रूप से सक्रिय भाग न ले। वैसे आर्य समाज ने अपने सदस्यों को छूट दी हुई है कि वे व्यक्तिगत रूप से प्रचलित राजनीति में भाग लेने में स्वतन्त्र हैं।

आर्यसमाज देश तथा विश्व की सामाजिक एव राजनैतिक समस्याओं के सम्बन्ध में भी सदा अपना दृष्टिकोण प्रस्तुत करता रहा है। भारत की राजनीति को भी उसने पर्याप्त रूप में प्रभावित किया है और देश के स्वाधीनता-आन्दोलन मे आर्य-सामाजिक लोगो का योगदान बहुत महत्वपूर्ण रहा है। हमारा मन्तव्य है कि राजनैतिक योग-क्षेम के लिए सामाजिक योगक्षेम अनिवार्य है। आर्यसमाज ने इस दिशा मे जो प्रोगम बनाया, देश के राजनैतिक दलो तथा प्रशासन ने उसे प्राय: अपना लिया है—जैसे अछूतोद्धार, जात-पाँत निवारण, शिक्षाप्रसार, नशाबन्दी तथा रूढ़ि-उन्मूलन आदि-आदि। आज भी आर्यसमाज को प्रशासन तथा राजनीति में नैतिकता का स्तर ऊँचा करने की बहुत रुचि एवं चिन्ता है। परन्तु वह अन्य क्षेत्रों की भाँति इस क्षेत्र में भी रचनात्मक तथा प्रचारात्मक साधनो को ही अपना कर चलना चाहता है।

इस समय राजनैतिक कार्यों के लिए आर्यसमाज के नाम तथा उसके मंदिरो के उपयोग का प्रश्न भी उठ रहा है। सभा इसे उचित नही समझती। विशेषतः इन दिनों जबकि विभिन्न राजनैतिक संस्थाएँ देश मे परस्पर विरोधी कार्यों तथा उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए प्रतिस्पर्धा में संलग्न है। यदि आर्य मंदिरो का प्रयोग इस प्रकार राजनैतिक कार्यों तथा सगठनो के लिए करने दिया जायगा तो बहुत-सी उलझनें पैदा हो जायेंगी। अतः सार्वदेशिक सभा की अब तक की नीति के अनुसार आर्यसमाजों तथा आर्य पुरुषों का कर्त्तव्य है कि वे इस विषय मे सतर्क रहें। सार्वदेशिक सभा आर्यसमाज के नाम तथा मंदिरों का प्रयोग राजनैतिक कार्यों के लिए उचित नहीं समझती। इससे उनके महत्त्व तथा पवित्रता पर कुप्रभाव पड़ता है।

कोल्हापुर में आर्य समाज कार्य

(श्री प्रिंसिपल भगवानदास, दयानन्द कालेज सोलापुर)

महाराष्ट्र सरकार ने कोल्हापुर क्षेत्र की बहुत पुरानी मांग के प्रति मान करते हुए कोल्हापुर में नयी युनीवर्सिटी की स्थापना की घोषणा कर दी है तथा भारत के गौरव श्री छत्रपति महाराज की पवित्र स्मृति मे जिस यूनीवर्सिटी का नाम श्री छत्रपति शिवाजी महाराज यूनवर्सिटी रख रही है । जिसके लिये जो कमीशन बना है उसमें मुझे भी सरकार ने नियुक्त करके सेवा का सुअवसर दिया है। जिस सम्बन्ध मे मुझे कोल्हापुर जाने का अवसर प्राप्त हो गया।

कोल्हापुर में जाते ही यह स्पष्ट हो जाता है कि सरकार के आज के प्रयास की पृष्ट भूमि आर्य समाज का सुन्दर कार्य भी है तथा वह किस प्रकार से है । श्री साहू जी महाराज जो कोल्हापुर राज्य के महाराज थे वह बहुत अग्रगामी तथा विशाल हृदय के थे वह अपने राज्य से छूआ-छूत तथा जाति-पांति भेद-भाव दूर करना चाहते थे जिस कार्य के लिये श्री सहयाजी महाराज ने जो उनके सम्बन्धी थे तथा बड़ोदा राज्य के प्रभाव-शाली राजा थे उनको यह सुझाव दिया कि इस कार्य के लिये आर्य समाज की सहायता लेनी चाहिए । फल स्वरूप श्री साहूजी महाराज ने आर्य समाज के कार्य कर्त्ताओं को बुलाया तथा उनसे १९१८ से १९२२ तक बहुत प्रचार के द्वारा अपने राज्य से छुआ-छूत तथा जाति-पांति, भेद-भाव मिटा दिये। वह आर्य समाज के प्रचार कार्य से इतना प्रभावित हुए कि उन्होंने एक भूमि आर्य समाज को दान दी । तथा आर्य समाज के जलूसो तथा जलसों मे स्वयं भाग लेते रहे उन्होंने अपने बच्चे के नाम पर कालेज तथा स्कूल खोले । जो अब बहुत बडी सस्थाएं बन गयी हैं। जिन सस्थाओ के आचार्य उन्होने केवल आर्य समाजी रखे थे। प्रिंसिपल नेफासिह जी तथा डाक्टर बालकृष्ण जी प्रिंसिपल के नाम आज भी बच्चे-बच्चे की जबान पर हैं जिन्होने आर्य समाज का कार्य बहुत ही सुन्दर ढंग से किया। ऊपर लिखित सस्थाएं तो अब सरकार के हाथ मे है तथा आर्य समाज का प्रभाव जिन पर मिट चुका है, पर डा० बालकृष्ण जी का बनाया हुआ तीन संस्थाओ (साहू महाराज दयानंद गुरुकुल, मराठी प्रशाला तथा हिंदी प्रशाला) अब भी ठीक प्रकार से चल रहे हैं तथा श्रद्धानद हाल, प्रिंटिंग प्रेस आदि भी सुन्दर हैं। यह याद रहे कि सबसे पहले हिंदी का प्रचार कार्य इधर आर्य समाज ने ही किया । मुझे यह सुनकर खेद हुआ कि आर्य समाज का सत्सग नही लगता तथा जनता से आर्य समाज का नाम जा रहा है। श्री डी० टी० मालिक मत्री तथा डाक्टर काटे आदि आर्य समाज के पुराने नेता प्रयत्न-शील हैं पर कार्य कर्त्ताओ की न्यूनता है। गुरुकुल के छात्रावास में अब भी ११५ छात्र हैं तथा महाराष्ट्र के बड़े-बड़े नेता इसी छात्रवास मे रहे।

मुझे यह सुनकर प्रसन्नता हुई कि मेरे जाने से दो तीन पूर्व ही स्वामी ओमानद जी महाराज वहाँ गये थे तथा उन्होंने वहाँ घोषणा कर दी है कि सार्वदेशिक सभा ने कोल्हापुर की ओर विशेष ध्यान देने का निश्चय कर दिया है तथा तीन लाख रुपये से एक कालेज भी खोल रही है। जिस घोषणा से जनता के अन्दर आर्य समाज के लिए नया उत्साह तथा प्रेम हो गया है । अब जब कि कोल्हापुर मे यूनीवर्सिटी बन रही हैं सार्वदेशिक सभा को अपना कालेज शीघ्र अतिशीघ्र खोलना चाहिए तथा मैं प्रत्येक आर्य समाजी तथा दानी सज्जनो से आर्य समाज के इस बहुत बड़े केंद्र को पुन: जीवित करने के लिए अपील करता हूं कि वह सभा के इस उत्साहनीय कार्य में हाथ बटावें।

—०*०—

(सार्वदेशिक सभा ने ऐसा कोई निश्चय नहीं किया है। श्री ओमानंद जी कौन हैं सभा उनसे अपरिचित है अतः जनता को भ्रम मे न पड़ना चाहिए । जब सभा का ऐसा कोई निश्चय होगा सभा उसकी स्वय घोषणा करेगी। जनता को किसी अनाधिकृत व्यक्ति को कोई धन न देना चाहिए।) —सम्पादक

विजय-सन्देश

(सुखदेव शास्त्री स० प्रधान संचालक सार्वदेशिक आर्यवीरदल)

विजय दशमी के शुभ अवसर पर आर्य-वीर-दलों को सन्देश

प्रिय आर्य वीरो,

विजय दशमी का यह पावन पर्व युग-युग से मानवता की विजय का सन्देश देता चला आ रहा है। यह पर्व भारत ही नही समूचे मानव संसार में अपनी २ भाषा अपनी सामाजिक पद्धतियो से ऊँची श्रद्धा और पूर्ण उत्साह के साथ मनाया जाता है।

आर्य-वीर-दल विशुद्ध मानवतावादी सार्वभौमिक प्रगतिशील युवको का एक महान् सघटन है। इस का सदस्य और अधिकारी बनना एक बहुत बड़े सौभाग्य तथा अनुपम गौरव की बात है। यह सघटन अपने जन्म काल से ससार के सभी मानवो को भाषा भेद जाति-भेद श्रेणि और सम्प्रदाय भेद से ऊपर रह कर विश्व राष्ट्र की वा मानव राज्य की कल्पना कर बड़े प्रेम-पूर्वक हृदय परिवर्तन की ऊँची सात्विक भावना के द्वारा सभी के समान एव सामूहिक अदम्य उत्साह एवं पौरुष के बल पर मानव (लोक राज्य) बनाने की प्रेरणा देता चला आ रहा है। इस आन्दोलन की मूल भित्ति का जड़वाद और चेतनवाद का समन्वय करते हुए समान अधिकार और समान श्रेणी के सम्बल सहित विश्वबन्धुत्व मधुर परस्पर सौहार्दपूर्ण-सुखद परिस्थिति में मानव (लोक राज्य) की ओर मानव को अग्रसर होने की उत्तम प्रेरणा देकर एक ऐसे पूर्ण राज्य की स्थापना को साकार रूप देना है जिसमें न कोई लघु हो न कोई महान् क्या पूर्व क्या पश्चिम समूचा विश्व एक परिवार के समान मिले जिसमे सब एक दूसरे पर विश्वास करते हो प्रेम करते हों तथा सब अपने स्थान पर सुखी, समृद्ध और सन्तुष्ट हो उसी को ऋषि दयानन्द जी सरस्वती ने आर्यों का चक्रवर्ती राज्य कहा है। यहाँ ऋषि का अभिप्राय किसी ऐतिहासिक आर्य शब्दाभिमानी आर्य रूढ अनार्य शीलो से नही है अपितु अपने विशेष गुणों से युक्त होने से संसार के किसी भी कोने खण्ड तथा बृहत् अथवा लघु किसी भी देश का रहने वाला कोई भी व्यक्ति विशेष क्यों न हो उसी से अभिप्रेत है।

प्रिय वीरो आज मानव संसार द्रुत गति से आगे बढ़ रहा है और महान व्योम विजय, भूमि विजय समुद्र विजय आदि भौतिक दिशा की ओर उसने अपनी सम्पूर्ण शक्ति लगा दी है। प्रलयकारी भूत भावनी भगवती काल सभी विनाश की प्रमुख शक्ति यहाँ काली की पूजाकर उसे प्रसन्न कर उससे वरदान के रूप विश्व संसार की अमोघ शक्ति प्राप्त करती है। वह विनाश के महा कगार पर खड़ा अपने सर्वनाश के किए अट्टहास कर अपना सर्वनाश करने पर उतावला हो रहा है। मानव का नैतिक बल लुप्त प्रायः हो गया है। मातृ शक्ति जो जगजननी है अपने स्थान से विचलित होने के लिए एक पग उठा चुकी है। मानव-मानव एक दूसरे को घृणा, सन्देह, अविश्वास की दृष्टि से देख घोर नारकीय जीवन बिताने का आदी बन गया है।

जीव दया समाप्त प्रायः है।

मानव सृष्टि जिन अमूल्य और सत्य नियमो पर स्थिर रही है मानव एक २ कर उन्हे छोड़ता चला जा रहा है।

आज राम का आदर्श हमारी सभी सामयिक समस्या का एक मात्र समाधान प्रस्तुत कर हमे एक बार पुनः झकझोर कर भूली राह को छोड़ भटकी पगडडियो का परित्याग कर उस महान् राजपथ पर आरूढ़ होने का अमृत मय अमोघ सन्देश दे रहा है।

स्थान २ पर आदर्श मानव राम के चरित्र मे से उनके उज्ज्वल गुणों का प्रचार करना चाहिए।

(शेष पृ० ३८० पर)

सरकार का समर्थन

पंजाब की विधान सभा मे २१ सितम्बर को एक गैर सरकारी प्रस्ताव पर विचार हुआ जिसमे मांग की गई थी कि धर्म स्थानो का राजनैतिक कार्यों के लिए प्रयोग अवांछनीय है अतः इसकी रोक थाम होनी चाहिए। पिछले दिनो पजाब सरकार ने गुरद्वारों पर छापे मारकर साहस का कार्य किया था और इस भ्रम को दूर किया था कि गुरुद्वारों आदि पवित्र धर्म स्थानो के भीतर चाहे कुछ भी होता रहे, सरकार उन पर हाथ नही डाल सकती और उनमे प्रत्येक प्रकार के व्यक्ति निर्द्वन्द रहकर जो मन मे आया कर सकते हैं। गुरुद्वारो आदि की पवित्रता की रक्षा होनी चाहिए और वे अवांछनीय व्यक्तियों के छिपने तथा राज्य एवं समाज विरोधी कार्यकलाप के गढ़ न बनने चाहिए और न बनने देने चाहिए। इस दिशा में केन्द्रीय और पंजाब सरकार ने जो कार्यवाही इन दिनों की है उसका विधान सभा में प्रबल समर्थन हुआ। उन अकालियों द्वारा जो गुरुद्वारो के भीतर से अपने आन्दोलन को चला रहे हैं गुरुद्वारों आदि धर्म-स्थानों का दुरुपयोग हो रहा है इस बात पर विशेष बल दिया गया। मुख्य मन्त्री प्रताप सिंह कैरो ने कहा कि "पवित्र स्थान साम्प्रदायिक विद्वेष और हिंसा के प्रचार के गढ बना दिये गये हैं। उनके भीतर बड़े-बड़े नेताओ को गालियाँ दी जाती और उनके विरुद्ध बल प्रयोग की धमकियाँ दी जाती हैं। अपराधियों एवं समाज-विरोधी तत्त्वो को उनमें शरण दी जा रही है। लोगो को अपराधों को करने का प्रोत्साहन दिया जाता और यहाँ तक कि कुछ नेताओं की हत्या के लिए पुरस्कारो की घोषणा भी की गई। मुख्य मन्त्री महोदय ने अपने कथर्यन के सम मे स्वर्ण मन्दिर के भीतर दिए गए भाषणों की रिपोर्ट के कुछ अंश पढकर सुनाए। मुख्य मन्त्री ने विधान सभा में और इससे पूर्व गुरुद्वारों मे अस्त्र-शस्त्रों के संग्रह के विषय में अपने वक्तव्यो में जो आरोप लगाए हैं वे बड़े गम्भीर हैं और उनकी अस्वीकृति मात्र से न तो उनकी गुरुता ही कम होती है और न जनता ही उन्हे निराधार मान सकती है। यह स्थिति क्योंकर उत्पन्न हुई? इसलिए कि अकाली नेता पवित्र स्थानो में छुपकर बैठ गए है। वे पजाबी सूबे का आंदोलन चला रहे हैं। गुरुद्वारे आदि उपासना वा आध्यात्मिक शान्ति और आनन्द उपलब्ध करने के लिए चिन्तन स्थान माने जाते हैं अतः यह आवश्यक है धार्मिक स्थान सब प्रकार के राजनैतिक प्रभावों से मुक्त रखे जायें।

अकाली नेताओं का कहना है कि सिख धर्म के अनुसार राजनीति को धर्म से पृथक् नहीं किया जा सकता। परन्तु इस समय गुरुद्वारे सिक्खों के एक वर्ग के अधिकार में हैं और वह वर्ग पंजाबी सूबे के अपने आन्दोलन के लिए गुरुद्वारो का प्रयोग कर रहा है और इस मांग को सिक्खों का सर्व सम्मत समर्थन प्राप्त नहीं है। दूसरे शब्दों में गुरुद्वारों का प्रयोग एक वर्ग की मांग की पूर्त्यर्थ हो रहा है। यदि यह मान भी लिया जाय कि उच्च राजनीति के लिये गुरुद्वारों का प्रयोग निषिद्ध नहीं हो सकता तब भी एक वर्ग की माग से सम्बद्ध आन्दोलन के प्रयोग के लिए अनुमति न होनी चाहिए और न यह उचित ही है। सच्चाई यह है कि एक बुरी प्रथा डाली जा रही है। अब समय आ गया है कि सिख जाति अपने धर्म-स्थानों की पवित्रता की रक्षा के लिए कार्यवाही करे। सिखों का हित इसी में है।

पंजाब विधान सभा और लैजिस्लेटिव कौंसिल ने केन्द्रीय सरकार की अकाली माग विषयक स्थिति का प्राय सर्व सम्मति से समर्थन किया। कौंसिल ने तो प्रधान मंत्री प० नेहरू के दृढ एव न्याय पूर्ण रवैए पर प्रसन्नता व्यक्त करके उनके प्रति कृतज्ञता का प्रकाश भी किया और मुख्य मंत्री सरदार प्रतापसिंह कैरो ने जिस योग्यता से अपने उच्च पद के दायित्व का निर्वाह किया और जिस सुन्दर ढग से राज्य की शान्ति एव व्यवस्था बनाये रक्खी उसकी कौंसिल ने भूरि भूरि प्रशसा की। प्रजातन्त्र व्यवस्था मे विधान मडलो की सम्मति और उनके निश्चयो की यो ही उपेक्षा नही की जा सकती। अकाली दल कह सकता है कि इस प्रकार के निर्णय की तो पूर्व से ही आशा थी क्योकि विधान मडल मे शासक दल के सदस्यो की ही प्रधानता है परन्तु अधिकाश सदस्य अपने निर्वाचन क्षेत्रो का प्रतिनिधित्व करते हैं अत विधान सभाओ मे प्रति बिम्बित मत से सुस्पष्ट है कि लोक मत अकाली नेता के सर्वथा विरुद्ध है। नए चुनाव के होने मे थोडे से महीने शेष रह गए हैं। अकाली दल को इसका लाभ उठाना चाहिए और कम से कम पंजाबी क्षेत्र में यह दिखा देना चाहिए कि लोगो का बहुमत पृथक् पंजाबी राज्य की माग के पक्ष में है। यदि अकाली दल इस दिशा मे अपनी शक्ति दिखा सका तो इसका केस अकाट्य हो जायगा। प्रजातन्त्र मे अनशन का कोई अर्थ नहीं होता वहाँ तो मत की पेटी ही निर्णायक तत्त्व होता है। अकाली दल को उचित है कि वह स्थिति पर विचार करे और मास्टर तारासिंह को अनशन का परित्याग करने का परामर्श दें। यद्यपि लोक मत पंजाबी सूबे के पक्ष मे नही है तथापि वह चाहता है कि मास्टर जी हिन्दू सिक्ख एकता के उद्देश्य की पूत्यर्थ अपना अनशन तोड दें।

(ट्रिब्यून के २३-६-६१ के अग्रलेख पर आधारित)

पंजाबी सूबा

लोक सभा के समान ही पंजाब की विधान सभा ने पंजाबी सूबे की अकालियो की माग के प्रति नाम मात्र की सहानुभूति प्रदर्शित की है। पंजाब की लेजिस्लेटिव कौंसिल ने तो सर्वसम्मति से प्रधानमंत्री की दृढ स्थिति का समर्थन किया है। इसके अतिरिक्त मुख्यमंत्री ने स्थिति का जिस योग्यता से सामना किया है उसकी प्रशसा की गई। जब उन्होने सूबा आन्दोलन और उसके पुरस्कर्त्ताओ के सम्बन्ध मे कठोरतम भाषा का प्रयोग किया तब भी कोई उत्तजना उत्पन्न न हुई। स्पष्ट है कि उन्हे न केवल अकाली नीति और उनकी कार्य प्रणाली के समर्थन के अभाव का ही विश्वास नही है अपितु कानून और व्यवस्था बनाए रखने और उपद्रव करने का प्रयत्न करने वाले शरारती लोगो से निपटने की अपनी सरकार की क्षमता पर भी विश्वास है। उनके इस दृढ आश्वासन को कि वह किसी को भी शान्ति भग न करने देगे और इस कठोर चेतावनी को कि अकालियो की माग के प्रति आत्म सात कर देने से समृद्ध पंजाब के आर्थिक सामाजिक और सास्कृतिक हितो की इतिश्री हो जायगी एव हिन्दु और सिक्ख बर्बाद हो जायगे उन लोगो को नोट कर लेना चाहिए जो अशान्ति की भविष्य वाणी करते है और उन सम्प्रदाय वादियो के उन समर्थको को भी अंकित करनी चाहिए जो हिन्दू सिक्ख एकता के नाम मे पृथकता वादियो को प्रसन्न करने का पक्ष लेते हैं।

यह दुर्भाग्य की बात है कि अकालियो ने अपने बनाए हुए ससार मे रहते हुए पंजाब के वा समस्त भारत के लोगो की मनोभावना की ओर जरा भी ध्यान नही दिया। यदि मास्टर तारासिंह के साथियो मे से जो देशभक्त और दूरदर्शी हैं मास्टर जी को अनशन के परीक्षण का परित्याग करने और वैध साधनो के द्वारा सिक्खो के अधिकारो के लिए प्रयत्न करने का परामर्श दे तो यह भी सामयिक बात होगी।

(हिन्दुस्तान टाइम्ज २३-६ ६१)

विविध समाचार

—०:●:०—

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के विद्यालय विभाग के बच्चों के आश्रम में कार्य करने के लिए ऐसे आर्य पुरुषों की सेवाओं को हम सहर्ष प्राप्त करना चाहते हैं जो दृढ आर्य विचारों के अवसर प्राप्त व्यक्ति हों। संस्कृत तथा अंग्रेजी में विद्यार्थियों के साथ वार्तालाप कर सकते हों और सेवा भाव तथा धर्म भावना से कार्य करने को प्रस्तुत हो। विद्यालय के आश्रम के बच्चों के स्तर को उन्नत करने के लिए ऐसे त्यागी, तपस्वी, धर्म प्रेमी महानुभावो की आवश्यकता है। निवास,भोजन तथा निर्वाह की व्यवस्था गुरुकुल ऐसे सज्जनों की कर देगा। आशा है बच्चो की शिक्षा तथा चरित्र उन्नति के प्रेमी सज्जन इस कार्य मे हमें सहयोग प्रदान करेंगे।

धर्मपाल विद्यालंकार
स० मुख्याधिष्ठाता

सार्वदेशिक सभा की अन्तरंग सभा

सभा की अन्तरंग सभा का अधिवेशन ८ अक्टूबर ६१ को दयानन्द भवन दिल्ली में मध्याह्नोत्तर २ बजे से होगा महानुभाव अंकित करलें।

शोक प्रस्ताव

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा ने श्री स्वामी अभेदानन्द जी की मृत्यु पर निम्नांकित शोक प्रस्ताव पारित किया :—

"स्वामी अभेदानन्द जी का जीवन आर्यत्त्व से सर्वदा ओतप्रोत रहा। एक सामान्य व्यक्ति के चरित्र से आर्यत्व की प्रेरणा लेकर वे आर्य जगत के शीर्ष-स्थानीय पद तक पहुंचे। उनकी प्रवचन-शैली, क्रियात्मक जागरूकता, संगठन-समरसता सभी गुण सभी के लिए उद्बोधक हैं। कृण्वन्तो विश्वमार्यम् के उद्घोष को अफ्रीका में निनादित करते हुए उन्होंने मानव लीला संवरण की है। हम परम-पिता परमात्मा से प्रार्थना करते है कि दिवगत आत्मा के जीवन वृत्त से प्रेरणा ग्रहण करें। उनके परिवार के सभी सदस्यों के लिये धैर्य धारण करने की परमपिता से प्रार्थना है।

(पृ० ३७७ का शेष)

नवीन शाखाएँ खोलिए, पूर्व से चल रही आर्य वीर दल की शाखाओं को सम्मिलत कर प्रातः काल आर्य-समाज मन्दिरों मे सार्वजनिक यज्ञों का आयोजन किया जाय और प्रयास किया जाय कि यज्ञों मे प्रत्येक नागरिक स्त्री-पुरुष श्रद्धा से भाग लें। सायं ५ बजे से ६ बजे तक खेलशक्ति प्रदर्शन, पुरस्कार नवीन सदस्यों का परिचय तथा रात्रि में स्थानीय आर्य वीर-दल की ओर से स्थानीय आर्य समाज अथवा किसी सार्वजनिक स्थान पर महामहिम महा मानव प्रातः स्मरणीय श्री राम के जीवन पर शिक्षा पद संगीत और भाषण का प्रबन्ध कि... जाय।

सार्वदेशिक सभा पुस्तक भण्डार की
पुस्तकों का सूची-पत्र

निम्न प्रकाशन नैट मूल्य पर दिये जायेंगे ।

१. ऋग्वेद सहिता	१०)
२. अथर्ववेद संहिता	६.
३ यजुर्वेद सहिता	४)
४ सामवेद सहिता	२॥)
५. सत्यार्थ प्रकाश	२।)
६. ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका	२॥)
७. संस्कार विधि	१।)
८. पंचमहायज्ञविधि	२०)
९. कन्नड सत्यार्थप्रकाश	३।)
१० मराठी सत्यार्थप्रकाश	१।=)
११. कर्त्तव्य दर्पण सजिल्द	॥≡)
१२. वैदिक ज्योति	५)२५
१३. पञ्च महायज्ञ विधि भाष्यम्	५)
१४. विवाह पद्धति	५०)
१५. आर्याभिविनय	)३५

निम्न पुस्तकों पर निम्न प्रकार कमीशन दिया जायेगा ।

१०) से २५) रु० तक १२॥%

२५) से ऊपर २५०) सक २०%

२५०) से ऊपर १०००) तक २५%

१०००) से ऊपर २०००) तक ३० ,,

२०००) से ऊपर ३३%

श्री स्वामी ब्रह्ममुनि कृत ।

१. यम पितृ परिचय	२)
२. वैदिक ज्योतिष शास्त्र	१॥)
३ वैदिक राष्ट्रीयता	।)
४. वैदिक ईशवन्दना	।=)॥
५. वैदिक योगामृत	॥=)
६. दयानन्द दिग्दर्शन	।॥)
७ वेदो मे दो बडी वैज्ञानिक शक्तिया	।॥)
८. निज जीवनवृत्त वनिका अजिल्द	)५०
,, ,, सजिल्द	)७५
९ बृहत् विमान शास्त्र सजिल्द	१०)
१०. वाल जीवन सोपान ,,	१॥=
११. छान्दोग्य उपनिषद् कथा	३
१२ दार्शनिक अध्यात्म तत्व	१॥
१३. वेदान्त दर्शनम् (सस्कृत मे)	३
१४ वैदिकवन्दन	५)
१५ बालसस्कृति सुधा	)५०
१६ अभ्यास और वैराग्य	१)६५

श्री महा० नारायण स्वामी कृत ।

१७ योग रहस्य	१।)
१८ मृत्यु और परलोक	१।)
१९ विद्यार्थी जीवन रहस्य	॥=)
२०. प्राणायाम विधि	≡)
२१ उपनिषदे :—	
ईश ।=) केन ॥) कठ ॥) प्रश्न ।=)	
मुन्डक ≡) माण्डूक्य ।) एतरेय ।) तैत्तिरीय १)	
२२ बृहदारण्यकोपनिषद	३

श्री प० गंगाप्रसाद उपाध्याय कृत

२३ आर्योदय काव्यम् पूर्वार्द्ध	१।)
२४ उत्तरार्द्ध	१॥)
२५. वैदिक सस्कृति	१।)
३६. मुक्ति से पुनरावृत्ति	।=)

सार्वदेशिक सभा पुस्तक भंडार, दयानन्द भवन, नई दिल्ली—१.

रजिस्टर्ड नं० डी-५१

प्रचार करने योग्य ट्रैक्ट

	मूल्य प्रति सैंकडा	
१ आर्यसमाज के मन्तव्य	)१२ प्रति	१०)
२. शंकासमाधान	)०३ ,,	३)
३. पूजा किसकी	)०३ ,,	२ ५०
४. आर्यसमाज	)०३ ,,	२)५०
५. ऋग्वेद मे देवृकामा या देवकामा	)०६ ,,	५)
६. गोकरुणानिधि	)०६ ,,	४)
७. गोहत्या क्यो ?	)१२ ,,	१०)
८. चमड़े के लिए गोवध	)१८ ,,	१५)
९. पंचमहायज्ञविधि	)२० ,,	१५)
१० मासाहार घोर पाप	)१५ ,,	१०)
११. भारत का एक ऋषि	)१२ प्रति	१०)
११. दशनियम व्याख्या	)०६ ,,	७)५०
१२. तीर्थ और मोक्ष	)०६ ,,	७)५०
१३. ग्रहण और दान	)०६ ,,	७)५५
१४. भारतवर्ष मे जाति भेद	)०६ ,,	७)५०
१५. वैदिक राष्ट्र धर्म	)२० ,,	१५)
१६. प्रजापालन	)०५ ,,	४)
१७. नारायण स्वामी जी की संक्षिप्त जीवनी	)०६ ,,	५)
१८ सत्यार्थप्रकाश की रक्षा मे	)०६ ,,	५)
१९. मुर्दों को क्यो जलाना चाहिए	)०६ ,,	५)
२०. आर्यसमाज के नियमोपनियम	)०९ ,,	७)५०
२१ आदर्श गुरु शिष्य	)२५ ,,	२०)

ENGLISH PUBLICATIONS

1 Introduction to the Commentary on Vedas 2/8/-
2. Kenopanishat (Translation by Pt Ganga Prasad ji M A) -/4/-
3 hopanishat (Pt Ganga Prasad M A Rtd Chief Judge) 1/4/
4 Aryasamaj & International Aryan League (Pt. Ganga Prasad ji Upadhyaya M A) -/1/-
5. Truth Bed Rocks of Aryan Culture (Rai Sahib Thakur Datt Dhawan) -/8/,
6 A Case of Satyarth Prakash in Sind (S. Chandra) 1/8
7. In Defence of Satyarth Prakash (Prof. Sudhakar M A.) -/2/-
8 Tributes to Rishi Dayanand & Satyarth Prakash (Pt Dharma Deva ji Vidyavachaspati) -/8/-
9 Political Science (Mahrishi Dayanand Saraswati) -/8/-
10 Elementary Teachings of Hinduism (Ganga Prasad Upadhyaya M A) -/ /
11. Life after Death ,, 1/4/-
12 Philosophy of Dayanand . 10/-
13 Agnihotra (Dr. Sat a Prakash) 2/8-
14 Daily Prayer of an Arya (Shri Narain Swami) -/8/-
15. The Constitution of Arya Samaj 20 N. P.
16 Crucifixion by an Eye witness Rs 1/-

नोट - (१) आर्डर के साथ २५ प्रतिशत चौथाई धन अगाऊ रूप मे भेजे ।

(२) अपना पूरा पता डाकखाने तथा स्टेशन के नाम सहित साफ साफ लिखे ।

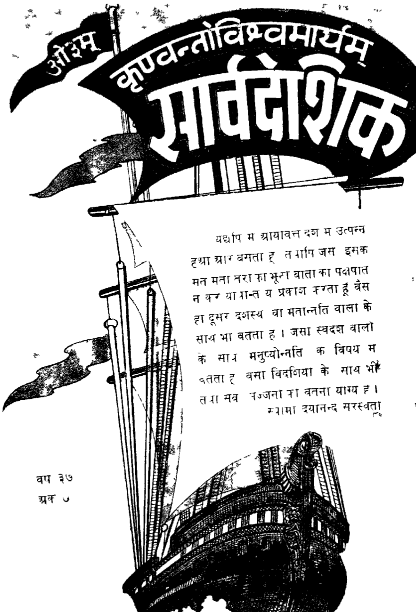
(३) विदेश से यथासम्भव धन पोस्टल आर्डर द्वारा आना चाहिए ।

व्यवस्थापक—**सार्वदेशिक सभा पुस्तक भंडार, दयानन्द भवन, नई दिल्ली—१**

सम्राट् प्रेस, पहाडी धीरज, दिल्ली मे मुद्रित व रघुनाथ प्रसाद जी पाठक मुद्रक और प्रकाशक के लिये सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द भवन, नई दिल्ली-१ से प्रकाशित ।

ओ३म् कृण्वन्तोविश्वमार्यम्

सार्वदेशिक



यद्यपि म आयावत्त दश म उत्पन्न हुआ आर वसता हू तथापि जस इसक मत मता तरा का भूठा बाता का पक्षपात न कर याथातथ्य प्रकाश करता हू वैस हा दूसर दशस्थ वा मतान्नति वाला के साथ भा वतता ह । जसा स्वदश वालो के साथ मनुष्योन्नति क विषय म वतता हू वसा विदशिया के साथ भी तथा सब सज्जना का वतना याग्य ह ।

स्वामा दयानन्द सरस्वता

वप ३७

अक ७

॥ ओ३म् ॥

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

वार्षिक मूल्य ६) | विदेश से वार्षिक ८) या १२ शिलिंग

वर्ष ३७ | सृष्टि संवत् १९७२९४९०६० | सितम्बर १९६१ भाद्रपद २०१८ अंक ७ ।

विषय सूची

* सम्पाद

काली चरण आर्य सभा मन्त्री

* सहायकसम्पादक

रघुनाथप्रसाद पाठक

* प्रकाशक व मुद्रक

रघुनाथप्रसाद पाठक

* कार्यालय

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

दयानन्द भवन, नई दिल्ली

फोन : २२४७७१

* मुद्रक

सम्राट् प्रेस, पहाड़ी धीरज देहली ।

फोन : २२२५६३

सार्वदेशिक

सम्पादकीय

हमारा वेद-प्रचार-सप्ताह

जब मैं यह पंक्तिया लिख रहा हूँ तो सारे आर्य जगत् मे वेद प्रचार सप्ताह मनाया जा रहा है और सर्वत्र आर्य समाजो मे वेद सम्बन्धी कथा-वार्ता तथा भाषणो की परम्परा चल रही है। आज ही मैं दिल्ली में एक तांगे मे बैठा था, मेरे हाथ मे ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका पुस्तक थी। पास मे बैठे एक वृद्ध व्यक्ति ने पूछा कि क्या यह वेद है? मैंने कहा कि वेद तो नही ऋषि दयानन्द रचित ऋग्वेदादि-भाष्य भूमिका' है। वे वृद्ध पौराणिक सत्संगी थे, श्रद्धावान् प्रतीत होते थे। भरे हुए गले से मुझे बोले कि आज तक मुझे 'वेद' देखने का सौभाग्य नही मिला, मन मे बडी चाह है कि वेद के पुस्तक को देख सकूं। पुराण तो सारे देखे हैं, उनकी कथाएँ भी बहुत सुनी है, परन्तु वेद न देखे और न उनकी कथा ही कभी सुनी। पता नही वेद में परमात्मा की स्तुति-प्रार्थना आदि ही है या अन्य विषयो पर भी कुछ चर्चा है।"

इस सज्जन की इतनी बात सुनने के पश्चात् मैंने उन्हे कहा कि आपको यदि वेद कथा सुननी है या वेद पुस्तक देखने हैं तो आप आर्य समाज मन्दिर में जाइये, वहा आपकी अभिलाषा पूर्ण हो सकेगी। उन्होने यह भी कहा कि मैंने कई बार आर्य समाज के व्याख्यान भी सुने हैं, परन्तु उनमें वेद सम्बन्धी बाते सुनने को नही मिली।"

इस प्रसग से मेरे मन पर एक आत्म-निरीक्षण के ढंग की प्रतिक्रिया हुई। मुझे लगा कि वेद-प्रचार की दिशा में हम क्या प्रगति कर पाये हैं? बहुत कुछ करना शेष है। ऋषि दयानन्द ने घोषणा की कि संसार मे सच्चे धर्म की प्रतिष्ठा के लिये वेद का प्रचार आवश्यक है। उन्होने वेद प्रचार को ही अपने जीवन का एकमात्र लक्ष्य बनाया और उसी लक्ष्य की पूर्ति के निमित्त ही 'आर्य समाज' की स्थापना की। आर्य समाज के दस नियमो मे तीसरा नियम यही बनाया—"वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढना-पढाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।" अत. यह स्वाभाविक ही था कि आर्य समाज ने भी अपने प्रवर्तक के पश्चात् वेद के पठन-पाठन तथा प्रचार को अपना मुख्य उद्देश्य समझा। इसी उद्देश्य की पूर्ति के हेतु अनेक गुरुकुल-महाविद्यालय खोले गये। निस्सन्देह इन सस्थाओं ने अनेक वेदज्ञ विद्वान् तथा प्रचारक पैदा किये। यो भी प्रत्येक आर्य मे वेद पढने की एक अदम्य लगन होती थी। वे प्रायः स्वाध्याय करते थे और साधारण से साधारण आर्यसामाजिक व्यक्ति के विषय मे लोगो की यह धारणा रहती थी कि वह वेद तथा वैदिक सिद्धान्तो के विषय मे कुछ जानता है। आर्य समाज

तथा महर्षि दयानन्द से पहले इस देश मे सस्कृतज्ञ विद्वान् तो बहुत थे, परन्तु वे वेद के विषय मे कुछ न जानते थे। अर्थात् संस्कृतज्ञ होते हुए भी वेद से विमुख थे। ऋषि ने वेद का नाद गुञ्जाया और सचमुच यह नाद सर्वत्र गूँजा।

परन्तु समय की गति से आज यह नाद मन्द सापड गया है जिसका स्पष्ट अर्थ यह है कि वेद प्रचार के लिए आर्य-समाज का उत्साह रूप प्रयास कुछ शिथिल हो गया है। गुरुकुल-महाविद्यालय आदि संस्थाओं की स्थिति भी नाजुक सी बन गई है। उनकी लोकप्रियता कम हो रही है। न उनमें अपेक्षित स्तर के छात्र पहुचते हैं और न जनता से पहले जैसी आर्थिक सहायता ही मिलती है। किसी भी संस्था को देखिये ज्यो-त्यो करके अपनी जीवन यात्रा चला रही हैं। अधिकाश तो इनमे केवल सरकारी परीक्षाओ के लिये छात्र तैयार करने का ही काम करती हैं। यदि इन संस्थाओ को समय रहते न सम्भाला गया तो इनका स्वरूप ही बदलने की स्थिति आ सकती है। अतः आवश्यक है कि आर्यसमाज इस समस्या पर विचार करे कि किस प्रकार बदली हुई परिस्थितियो मे इन संस्थाओ का वेद शिक्षणालयो वाला स्वरूप बना रह सकता है। सार्वदेशिक सभा की विद्यार्थ्य सभा इस दिशा में वर्षो से कुछ यत्न अवश्य कर रही है, परन्तु अभी तक कुछ बन नही पाया।

आर्यो के स्वाध्याय की प्रवृत्ति भी उसी प्रकार शिथिल हो रही है। पहली पीढ़ी के समान वर्तमान पीढ़ी के युवको की वेद के प्रति रुचि नही दीखती। अनेक प्रसिद्ध आर्य पुरुषो के घरो मे आपको वैदिक साहित्य के उच्चकोटि के ग्रन्थ मिलेंगे परन्तु आज उनका वहाँ कोई उपयोग नही करता। हमारी दशा भी सनातन धर्मी समाज की भाँति ही होती जा रही है। उस समाज मे कुछ थोड़े से पुजारी, पुरोहित अथवा पण्डित हैं जिनके यह काम सुपुर्द है कि धर्म ग्रन्थो को पढे। शेष सब लोग मानो यह समझते हैं कि उनका यह काम नही। वे अपने सांसारिक कार्यो मे ही व्यस्त रहते हैं, पढते-लिखते हैं तो कुछ और ही विषय धार्मिक साहित्य नहीं। यही दशा कुछ हमारी भी हो रही है। हमारे यहाँ भी अब वेद धार्मिक ग्रन्थ तथा सस्कृत पढ़ने का काम कुछ थोडे से लोगो का जो इस क्षेत्र मे काम करते हैं, उनका ही समझा जाने लगा जबकि ऋषि का आदेश तथा आर्यसमाज का तीसरा नियम है कि "वेद का पढना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यो का परम धर्म है।"

स्पष्ट है कि हम अपने इस परम धर्म को कुछ भूलते जा रहे हैं। यदि यह गति रही तो आर्य समाज भी एक दिन अन्य सम्प्रदायो की भाति ढर्रा मात्र रह जायेगा। अतः आवश्यक है कि वेद प्रचार सप्ताह मे हुई वेद-कथाओ का हम पर यह स्थिर प्रभाव हो कि प्रत्येक आर्य प्रतिदिन कुछ न कुछ समय लगाकर वेद का स्वाध्याय करे। आर्य-समाज अन्य कामो की अपेक्षा इसी कार्य को प्राथमिकता तथा महत्त्व दे। यदि इस कार्य से कुछ शक्ति या साधन अतिरिक्त हो तो हम दूसरे कामो मे भी लगे, अन्यथा मुख्यतया अपनी गतिविधियों को वेद-प्रचार तक केन्द्रित तथा सीमित रखे। वेद प्रचार हो सके तो मानो अन्य कार्य सब स्वयं सिद्ध हो सकेंगे, क्योंकि वे सब उसके ही अन्तर्गत हैं। पहले प्रत्येक आर्य-सामाजिक व्यक्ति के घर मे वेद विद्या का प्रकाश हो और फिर उस प्रकाश को हम मानव मात्र तक पहुँचाने का बीड़ा उठाये, बस इस वेद-प्रचार सप्ताह की यही प्रतिक्रिया हम पर होनी चहिये।

रघुवीरसिंह शास्त्री

सम्पादकीय टिप्पणियाँ

अश्लील चित्र और गीत असह्य हैं

श्रीयुत विनोबा भावे ने श्रीमन्नारायण को जो 'योजना आयोग (प्लैनिंग कमीशन) के सदस्य है एक पत्र लिख कर उपर्युक्त चेतावनी दी है । पत्र का मुख्य भाग इस प्रकार है:—

"मुझे समाचार पत्रो से यह ज्ञात हुआ है कि भारत सरकार के आदेशानुसार सिनेमा के चित्रो का सेसर अब पहले की अपेक्षा अच्छा होने लगा है और सिनेमा उत्पादको ने इस जरा सी कठोरता के विरुद्ध आन्दोलन आरम्भ कर दिया है । इस समाचार से मुझे दुःख हुआ है ।

आप जानते है कि मैंने अनेक बार यह कहा है कि मैं फिल्म उद्योग का विरोधी नही हूं । यह उद्योग शिक्षा और मनोरंजन का अच्छा साधन सिद्ध हो सकता है यदि इसको ठीक प्रकार से व्यवस्थित और नियोजित किया जाय । जैसा कि रस्किन ने कहा है प्रत्येक उद्योग को जन-हित को अपने लक्ष्य मे रखना चाहिए । इस उदार उद्देश्य के भीतर उचित लाभ के लिए स्थान रह सकता हैं । परन्तु यदि प्रकाश के इस युग में फिल्म उद्योग अपने लक्ष्य मे एक मात्र लाभ ही रक्खेगा और जन-हित की चिन्ता न करेगा जबकि प्रजा का अहित सुस्पष्ट हो तब फिल्म उद्योग की यह गति-विधि सह्य न होगी ।

मै एक पग आगे बढ कर कहूँगा कि यदि फिल्म उत्पादको का रवैया ऐसा ही कठोर रहा तो उस उद्योग का जिसका जनता के मस्तिष्क पर विशेष प्रभाव पडता है प्राइवेट सेक्टर में रहने देना भयानक समझा जायगा ।

अश्लील पोस्टरों के विरुद्ध सत्याग्रह का सूत्रपात करने मे मुझे दुःख हुआ था । परन्तु मै ऐसा करने के लिए विवश हो गया था । पोस्टर तो आन्तरिक बीमारी के लक्षण मात्र है ।

अश्लील पोस्टरों पर रोक लगाने के साथ-साथ अश्लील चित्रो और गीतों का रोका जाना भी अनिवार्य है । हर्ष की बात है कि भारत सरकार ने अब इस ओर ध्यान दिया है । मै फिल्म उत्पादको को प्रेरणा करूँगा कि वे सहयोग की भावना का परिचय देते हुए देश मे आचारवान नई पीढी के निर्माण मे जनता का मार्ग-प्रदर्शन करे ।"

श्री विनोबा जी ने जो भाव प्रकट किए हैं वे अक्षरशः ठीक हैं । अश्लील चित्रों और गीतो का मुख्यतया नई पीढी पर बड़ा घातक प्रभाव पड रहा है । इस प्रभाव को जितना शीघ्र दूर किया जाय उतना ही अच्छा है । जिस मनोरंजन से आचार-हीनता व्याप्त हो उसकी राष्ट्र अनुमति कदापि नही दे सकता । राज्य ने अश्लील चित्रो को निरुत्साहित करने मे अक्षम्य उपेक्षा दिखाई है । यदि अब उसका ध्यान इधर गया है तो यह ठीक ही है । उसे अपनी इस उपेक्षा का समुचित प्रायश्चित कर देना चाहिए । अश्लील चित्रो, पोस्टरो और गीतो को भूतकाल की वस्तु बनाने के यत्न के साथ-साथ सास्कृतिक कार्य क्रमों को भी जिन्हे स्वयं राज्य प्रोत्साहित करने का घोर अपराध कर रहा है तत्काल बद कराने का यत्न होना चाहिए । आश्चर्य है कि हमारे राज्य के कर्णधार बुराई को बुराई मान कर भी उससे आँखें बन्द किये बैठे रहे वा बन्द किए बैठे हैं । उन्हे यह बात हृदयङ्गम कर लेनी चाहिए कि राज्य की दृढता का आधार प्रजा की भौतिक समृद्धि नही अपितु नैतिक समृद्धि होती है ।

———

फिल्म और सेंसर शिप

सिनेमा के चित्र शिक्षण और मनोरंजन के अत्यन्त प्रभावशाली साधन है अतः यह अत्यावश्यक है कि सिनेमा के चित्रो का निर्माण,नियन्त्रित और सुनियोजित किया जाय जिससे कि प्रजा पर मुख्यतया नवयुवको पर उनका प्रभाव अच्छा पड़े जिन की निम्न वासनाएँ सहज ही उत्तेजित हो जाती हैं। प्रेम और श्रृंगार के प्रसङ्गो का सर्वथा ही बहिष्कार नही किया जा सकता परन्तु आवश्यकता इस बात की है कि मनुष्य के आचारिक और सामाजिक पार्श्वों पर बल दिया जाय। सेंसर शिप के विषय को लेकर फिल्म उद्योग और राज्य के मध्य एक संघर्ष उत्पन्न हो गया है। फिल्म निर्माताओ ने 'सेंसरशिप' को 'हास्यास्पद' और 'अनर्गल' कह कर माँग की है कि सरकार और सेंसर करने वालो को कठोर नीति बदलनी चाहिए। एक प्रसिद्ध भारतीय फिल्म-निर्माता ने माँग की है कि कुएँ मे मेंढको के सदृश इस सेंसरशिप का अन्त होना चाहिए। उन्होने हेतु यह दिया है कि विदेश मे बडी भारी प्रतियोगिता चल रही है। यदि भारतीय फिल्मो पर सेंसर का अकुश रहा तो भारतीय फिल्म इस प्रतियोगिता मे खड़े न रह सकेंगे। इसका अर्थ यह हुआ कि फिल्म निर्माता यह चाहते हैं कि फिल्मो के निर्माण और प्रदर्शन मे उन्हे स्वतन्त्र छोड़ दिया जाये। परन्तु इसकी अनुमति नही दी जा सकती। न इस बात की ही अनुमति दी जा सकती है कि राज्याधिकारी और सेंसर इस बात पर ध्यान दे कि भारतीय फिल्मो को अन्य देशो के फिल्मो की प्रतियोगितामे खडा होना पड़ता है जो प्रमुखतः विकारोत्पादक होते हैं। भारतीय चित्रों की अपनी विशेषताऐं होनी चाहिएँ। वे चित्र न केवल मौलिक, गभीर और कलापूर्ण ही होने चाहिएँ अपितु वे हमारी संस्कृति और इतिहास के भी मुख्य प्रतीक होने चाहिएँ। इस प्रकार के चित्रो का एक निराला आकर्षण और प्रभाव होगा क्योंकि इनका प्रकार उन चित्रों से सर्वथा भिन्न होगा जिनको देखने के विदेश के लोग अभ्यस्त हैं। इन चित्रो की पृष्ठ भूमि भारतीय जीवन और वातावरण होना चाहिए।

यह बहुत आवश्यक है क्योंकि भारत के लिए उनका निर्माण होता है और यह आशा की जाती है कि उनके द्वारा भारतीय जीवन का निर्माण होगा। सिनेमा के चित्रों का बोलबाला होने से पूर्व धार्मिक और सांस्कृतिक नाटको और अभिनयो का विशेष महत्त्व था और लोगों के जीवन पर उनका प्रायः अच्छा प्रभाव पडता था। यदि फिल्म निर्माता इस बात को ध्यान मे रख कर विकारो को उत्तेजित न करने वाले उच्च कोटि के चित्र बनाने लग जाये तो वे लोगो की रुचि को ठीक दिशा मे प्रेरित करने के श्रेय के भागीदार बन सकते हैं। किसी भी अवस्था मे विकारोत्पादक चित्रों को प्रोत्साहन न दिया जाना चाहिए।

भारत सरकार ने फिल्मो पर लगे अंकुश को हटाने से इन्कार करके अच्छा ही किया है भले ही सेंसर शिप' के जरा सा कडा करने पर आन्दोलन किया जा रहा हो। अब आचार्य विनोबा भावे ने इस दिशा मे भारत सरकार को अपना प्रभावशाली समर्थन प्रदान किया है। उन्होने अश्लील चित्रो और गीतो के विरुद्ध आवाज उठाई है।

देश का भविष्य नवयुवको एव नवयुवतियो पर अवलम्बित है और जीवन के प्रति उनका दृष्टिकोण स्वस्थ और ठीक बने इसके लिए कोई यत्न उठा न रखा जाना चाहिए। इसमे दो मत नही हो सकते कि प्रजा का नैतिक पतन बहुत हुआ और हो रहा है और न केवल इस पतन की गति को रोकने के लिए ही अपितु उनमे सदाचार की भावना जागृत करने के लिए जिसके अभाव में बहुत से अपराध और पाप हो रहे है सच्चा प्रयत्न होना ही चाहिए।

समाज को आधुनिक ढंग से उन्नत करने की प्रक्रिया मे उसके आधार भूत भूतकाल को न तो भुलाया जा सकता है और न समाज का उससे सम्बन्ध ही तोड़ा जा सकता है।

(ट्रिब्यून जुलाई ३० के अग्रलेख का अश)

बधाई—

हमे यह समाचार देते हुए हर्ष होता है कि श्री पंडित उषबुध जी जो गत कई वर्ष से लंदन, रूस इत्यादि मे प्रचार करने के पश्चात् ब्रिटिशगायना मे बैठे प्रचार और संगठन का कार्य कर रहे हैं। ६-८-६१ को गृहस्थाश्रम मे प्रवेश कर चुके हैं। ब्रिटिशगायना के एक प्रतिष्ठित आर्य परिवार की कन्या कुमारी गोपा बी० ए० के साथ उनका पाणिग्रहण हुआ। इस मांगलिक अवसर पर हमारी शुभ कामनाएँ उनके साथ हैं। हमारी कामना है कि वर और वधू चिर काल पर्यन्त यशस्वी जीवन बिताएँ और यह विवाह देश, समाज और परिवारो के लिए मंगलकारी सिद्ध हो।

श्री पं० इन्द्र जी का स्मृति-दिवस

गुरुकुल काँगड़ी ने स्व० श्री पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति जी का स्मृति-दिवस २३-८-६१ को मनाया। इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री बा० काली चरण जी ने निम्नलिखित सन्देश भेजा.—

"श्री पंडित जी आज इस संसार मे नही है परन्तु उनकी कीर्ति विद्यमान है। उन्होने आर्य समाज की मूल्यवान सेवा की जो भुलाई न जा सकेगी, गुरुकुल कांगड़ी के सुयोग्य स्नातक के रूप मे उन्होने अपनी योग्यता प्रतिभा और सेवाओ से गुरुकुल के गौरव की रक्षा की इतना ही नही उसमे अति वृद्धि भी की। वे गुरुकुल कांगड़ी को उन्नत रूप मे देखने के लिए उत्सुक थे। इसके लिए उन्होने कोई प्रयत्न उठा न रक्खा था।

श्री पंडित जी की टक्कर के पत्रकार और प्रौढ लेखक विरले ही होगे। उनका सबसे बड़ा गुण यह था कि वे सभा-चतुर थे। उनका मस्तिष्क इतना स्वच्छ था कि बड़ी से बड़ी जटिल समस्या को सहज ही सुलझा दिया करते थे।"

प्राचीन मिश्र पर भारतीय सभ्यता का प्रभाव

'मिश्र' शब्द की उत्पत्ति के सम्बन्ध में विद्वानों में मतभेद पाया जाता है। कुछ विद्वानों के मतानुसार 'मिश्र' शब्द सेमेटिक धातु 'मुस्र' अथवा अरबी शब्द 'मस्र' से बना है। परन्तु अन्य विद्वानों का मत यह है कि यह नाम संस्कृत के 'मिश्र' शब्द से ग्रहण किया गया है श्रीयुत आर० के० सिद्धान्त शास्त्री जुलाई के इंडियन रिव्यू मे प्रकाशित अपने लेख मे इस मत को ठीक मानते है। वह लिखते हैं:—

"मिश्र की उपजाऊ भूमि के कारण देश-देशान्तर के किसान लोग इस स्थान पर आकर रहने लगे थे। भारत के आर्य गए भी वहाँ पहुँचे थे और स्थानीय लोगों में अपनी उच्च सभ्यता का प्रसार करके उन्होंने देश का नाम ही बदल दिया था, इस मान्यता में तथ्य प्रतीत होता है। यह बात भी विश्वास योग्य प्रतीत होती है कि दूर-दर्शी भारतीय जनों ने समस्त जातियों के प्रति समान आदर भाव प्रदर्शित करने के उद्देश्य से इस देश का नाम 'मिश्र' रख दिया जिसका अर्थ है मिश्रित आबादी का देश क्योंकि इस देश के निवासी भिन्न २ देशों से आकर वहाँ बसे थे।

'मिश्र' की सभ्यता सेमेटिक वा अरब सभ्यता से पुरानी है। सेमेटिक शब्द 'मुस्र' वा अरबी शब्द 'मस्र' का मूल भी संस्कृत का 'मिश्र' शब्द ही प्रतीत होता है।

यूनान के प्राचीन निवासी मिश्र देश को 'आइगी परोज' नाम से पुकारते थे। प्रो० अविनाशचन्द्र के मतानुसार यह यूनानी शब्द जिसके कारण मिश्र का नाम 'इजिप्ट' पड़ा संस्कृत के 'अगुप्त' वा भली-भांति सुरक्षित शब्द से लिया गया है।"

आर्य विद्वानों से प्रार्थना है कि वे इस सम्बन्ध में अपने विचार लिख भेजने का कष्ट करें। उन्हे सहर्ष 'सार्वदेशिक' में स्थान दिया जायगा।

शान्तिनिकेतन

शान्ति निकेतन गुरुकुल कांगडी इत्यादि कतिपय संस्थाएं है जिनके अपने विशिष्ट लक्ष्य और उद्देश्य रहे और जिनकी अपनी विशेषताए रही हैं। इन सबका लक्ष्य नागरिक वातावरण और सरकारी सरक्षण एवं हस्ताक्षेप से पृथक् रहकर विद्यार्थियो मे सादगी, सदाचार और राष्ट्रिय भावनाएं ओत प्रोत करके उन्हे शरीर और आत्मा मे बलवान बनाकर हर प्रकार से योग्य बनाना रहा है। शान्तिनिकेतन इस समय चार्टर्ड विश्व-विद्यालय है जिसे सरकारी सहायता और सरक्षण प्रचुर मात्रा मे प्राप्त है। परन्तु सस्था के शुभचिन्तक इस परिवर्तन से प्रसन्न नही हैं। श्रीमती सविता सहगल ने ३०-७-६१ के हिन्दुस्तान टाइम्स मे 'शान्तिनिकेतन किधर' एक लेख लिखा है। उस लेख की निम्नांकित पक्तियो से इस तथ्य की सम्पुष्टि होती है:—

"मेरे जैसे उन लोगों के लिए जो संस्था को उस समय से जानते है जबकि कवीन्द्र वहां रहते थे सरकार द्वारा संरक्षित शान्तिनिकेतन आज दुःख और शोक—विनिष्टहुए आदर्शो और अवसरों के भाव प्रस्फुटित करता दीख पड़ता है। इस बात को लक्ष्य में रखते हुए कि यह स स्था प्रत्येक क्षेत्र मे अग्रणी रही है यह भाव उत्पन्न हुए बिना नहीं रहता कि यह स स्था धीरे २ अपने आदर्श से और इसके स स्थापक के ध्येय से च्युत होती जा रही है। कवीन्द्र को यह भय था कि किसी न किसी दिन उनकी विश्व-भारती विधान वादियों और एकाउन्टेन्टों के च गुल में फंस जायेगी। उनका भय सत्य हो निकला। आज यह वह स्थान बन गया है जहां सब वस्तुएं वृद्धिगत हैं विशेषत: इमारते और वेतन के ग्रेड — परन्तु मनुष्य अवनत हो रहा है, जहां प्रत्येक व्यक्ति को अपनी चिन्ता है और जिसका मस्तक नीचा है। सरकारी संस्था के रूप में अभी हाल में जो इसका काया पलट हुआ है वह खतरे से खाली नही है। यदि स्कूल के स्तर पर अंग्रेजी शिक्षा का माध्यम बनायी गई तो यह उसकी अर्थी में एक दूसरी कील सिद्ध होगी और कवीन्द्र की माया और उनके विरोध के प्रति निर्दय विश्वासघात होगा।"

प्राचीन शिक्षा-प्रणाली के उद्धार आश्रम-व्यवस्था के पुनरुज्जीवन और समाज को सुयोग्य विद्वान उपदेशक एवं सदाचारी देशभक्त नागरिक प्रदान करने के उद्देश्य से गुरुकुल कांगडी स्थापित किया गया था। इसकी अपनी विशेषताएँ रही है जिनकी रक्षा भी हुई है परन्तु क्या सरकारी संरक्षण प्राप्त हो जाने पर गुरुकुल का आदि वा वास्त विक स्वरूप बना रह सकेगा? यह प्रश्न विचारणीय है। शान्ति निकेतन के उदाहरण से हमें शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए।

श्री पं० युधिष्ठर जी की अस्वस्थता

श्री पं० युधिष्ठिर जी मीमासक के गिरते हुए स्वास्थ्य का समाचार पाकर हमे दु ख हुआ। वह चिरकाल से प्लूरिसी से पीडित थे अब पेट के फोडे से पीडित है और आपरेशन के लिए बम्बई ले जाए गए हैं। हमारी कामना है कि पंडित जी शीघ्र स्वस्थ हो कर अपनी साहित्यिक सेवाओं मे पुनः मनोयोग पूर्वक सलग्न होने मे समर्थ हो जाएं।

बम्बई का उनका पता द्वारा श्री गिरधारी देवेन्द्र कुमार पेपर मर्चेन्ट ६८।७१ सुतार चौल बम्बई है।

श्रीयुत उपाध्याय जी का अभिनंदन

आर्य समाज चौक प्रयाग ने श्री प० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय की आयु के ८० वर्ष पूर्ण हो जाने पर ६-६-६१ को अभिनदन समारोह का आयोजन किया है जिस की अध्यक्षता श्री स्वामी ध्रुवानन्द जी महाराज करेंगे। हम समस्त आर्य जगत् की ओर से उनका हार्दिक अभिनंदन करते हैं। श्री उपाध्याय जी की विद्वत्ता बहुत गहरी और चरित्र बहुत ऊचा है। सेवाओ, विद्वत्ता उत्कृष्ट साहित्य एवं सच्चरित्रता से उनकी वृद्धावस्था कमनीय और आदर णीय बन गई है और उनकी अमरता का बचपन आरम्भ हो गया है। उनकी वृद्धावस्था हर प्रकार से सुख पूर्ण है। घर मे सुयोग्य पुत्र पुत्रियाँ पुत्रवधू पौत्र पौत्रिया हैं। पूज्य माता जी की सचिन्त्य देखरेख और सहयोग उन्हें प्राप्त

है। उनकी सुख-पूर्ण वृद्धावस्था उनकी आर्योचित रीति से व्यतीत की हुई युवावस्था का पुरस्कार है और वह युवावस्था अपना चिराग साथ लाई है।

परमात्मा करे श्री पूज्य उपाध्याय जी चिरकाल पर्यन्त अपने मूल्यवान साहित्य से आर्यसमाज के साहित्य को समृद्ध बनाने मे समर्थ रहे और आर्यसमाज की शोभा बने रहें।

आर्य समाज का मिशन

आर्य समाज का मिशन सब लोगों को आपस मे मिलाना है और बहिष्कार की उस नीति और भावना से बिल्कुल अलग है जो वर्तमान हिन्दू धर्म का एक खास लक्षण है और जो भारतवर्ष के विद्वान् पडितो मे आमतौर से पाई जाती है। आर्य समाज ने हिन्दू धर्म मे मिशनरी भावना का संचार किया है जो सामूहिक और व्यवस्थित रूप मे निर्धनो अज्ञानियो और पिछडे हुए लोगो की विविध प्रकार की सेवा-शुश्रुषा के द्वारा व्यक्त हो रही है। अन्य मतावलम्बियो को वैदिक धर्म मे दीक्षित करने के प्रचार को भी आर्य समाज ने पुनर्जीवित किया है।

आर्यसमाज मे यह भाव कूट कूट कर भरा हुआ है कि वैदिक धर्म के अनुयायियों के पास मानव-समाज के कल्याण के लिए एक महान् सन्देश है और मानव समाज के विकास के लिए उन्हे एक विशेष मिशन की पूर्ति करनी है। इसी विश्वास से प्रेरित होते हुये और अपने उस उद्देश्य की पवित्रता मे पूर्ण निष्ठा रखते हुए आर्यसमाज के सदस्य न केवल भारतवर्ष मे ही वरन् संसार के प्रायः समस्त सभ्य देशों में अपना कार्य कर रहे हैं। आर्यसमाज एक प्रकार से सार्वभौम प्रगति बन गई है। इसने प्राय: हर स्थान पर वैदिक धर्म के अनुयायियों और दूसरे मतावलम्बियो के बीच उत्तम सम्बन्ध उत्पन्न करने मे बड़ा काम किया है। इस रीति से वह समस्त सभ्य देशो मे विश्व बन्धुत्व की भावना को लोक प्रिय बनाने मे एक साधन का कार्य कर रहा है। यह कार्य यह समाज वैदिक शिक्षाओ के प्रचार तथा समस्त धर्मों मे निहित मुख्य-मुख्य सिद्धान्तो की आवश्यक एकता के प्रतिपादन के द्वारा कर रहा है। आर्यों ने अपने अनुसधान कार्य से यह सिद्ध कर दिया है कि बौद्ध, इस्लाम, ईसाई मतों मे जो धार्मिक शिक्षाएँ पाई जाती है उन सब का आदि स्रोत वैदिक धर्म है।

(श्री लोक नायक अणे
आर्य महासम्मेलन शोलापुर
के अध्यक्षीय भाषण का
एक अश)

परिवार-नियोजन असफल क्यों:—

ट्रिब्यून के सम्वाददाता द्वारा प्रसारित समाचार के अनुसार अमृतसर के स्वास्थ्य अधिकारियो ने परिवार-नियोजन की योजना की असफलता स्वीकार की। इस विषय के प्रशिक्षण के लिए उन्होने नगर मे अनेक केन्द्र खोले हुये हैं फिर भी उनकी योजना सफल नही हो रही है। एक विशेषज्ञ ने सम्वाददाता को बताया कि स्त्री और पुरुष दोनो ही साधारण सा आपरेशन कराने के लिये उद्यत नही होते। बहुत से स्त्री पुरुष अन्य उपायो को अव्यावहारिक समझते हैं। "संसार मे मुँह खोलने से पूर्व ही परमात्मा नए बच्चे के लिए खाने की व्यवस्था कर देता है" हिन्दू धर्म शास्त्र का यह सिद्धान्त लोगो के हृदयों पर

गहरा प्रभाव डाले हुए हैं। देश के महानतम नेता का परिवार नियोजन विषयक आदेश उपदेश कोई प्रभाव रखता प्रतीत नही होता। एक दूसरे विशेषज्ञ का मत यह है कि धार्मिक भावनाओं के हटने तथा सुगम उपायो के ज्ञात होने से ही यह योजना सफल हो सकती है।

देश के महानतम नेता से विशेषज्ञ का अभिप्राय श्रीयुत् पं० जवाहरलाल जी नेहरू से ही प्रतीत होता है। श्री पं० जी एकमात्र देश की खाद्य-समस्या के समाधान के लिये परिवार-नियोजन पर बल देते हैं। उनकी भावना ठीक है। परन्तु इस कार्य की सिद्धि के निमित्त कृत्रिम साधनों के द्वारा सन्तति निग्रह का आश्रय लेना और उसपर बल देना ठीक नही है। श्री पं० जी श्रेष्ठ ध्येय की सिद्धि के लिए गर्हित साधनों का आश्रय लेने के सर्वथा विरुद्ध हैं। होना भी ऐसा ही चाहिए परन्तु खाद्य-समस्या के श्रेष्ठ ध्येय की पूर्त्यर्थ भ्रष्ट सन्तति-निग्रह जैसे अश्रेष्ठ साधनो का आश्रय लेना सिद्धान्त-विहीनता ही कही जा सकती है।

आशा है कृत्रिम साधनो के समर्थक और प्रचारक अपनी भूल को अनुभव करेंगे। इन साधनों के प्रचार से देश की बढ़ी हुई चरित्र हीनता को बढावा देने का उनसे जो अक्षम्य अपराध ही रहा है उसके प्रति वे सजग होगे और उससे शीघ्र से शीघ्र हाथ खीच लेंगे। कृत्रिम साधनो के द्वारा सन्तति नियमन भारत जैसे धर्म प्रधान देश की स्वाभाविक प्रवृति के सर्वथा विरुद्ध है और भ्रष्टसन्तति निग्रह की खेती के लिए भारत की भूमि वस्तुत: ऊसर ही है।

मुरारिलाल शास्त्री पर वज्रपात

श्रीयुत मुरारीलाल जी शास्त्री के छोटे भाई श्री ठाकुरदत्त शर्मा एम० ए० मेजर की आकस्मिक एवं असामयिक मृत्यु २०-७-६१ को इरविन अस्पताल दिल्ली मे हुई। श्री शास्त्री जी इस समय आर्य समाज हिसार के प्रधान, सार्वदेशिक सभा के सदस्य और आर्य प्रादेशिक सभा के अन्तरंग सदस्य हैं। हैदराबाद के सत्याग्रह मे और हिन्दी आन्दोलन की सफलता मे उनका योग उल्लेखनीय रहा है। श्री शास्त्री जी का सम्बन्ध उच्च आर्य परिवारो के साथ है। वह गाँधी अध्ययन केन्द्र हिसार के आचार्य हैं। अन्य अनेक आर्य शिक्षण सस्थाओ के साथ उनका सम्बन्ध रहा है। हिन्दी आन्दोलन के समय सभा के कार्यालय मे रहकर उन्होने अपने ढग से जो कार्य किया वह भुलाया न जा सकेगा। श्री शास्त्री जी के प्रति इस महान् दुःख मे हमारी हार्दिक सहानुभूति है। प्रभु से प्रार्थना है कि उन्हें और उनके परिवार को इस महान् दु ख को सहन करने की क्षमता और दिवगत आत्मा को सद्गति प्रदान करें।

रघुनाथप्रसाद पाठक

श्री पं० गङ्गाप्रसाद जी उपाध्याय कृत

'आर्योदय'

नामक

संस्कृत-महाकाव्य

की

विशेषताएँ

श्री प० सुरेन्द्र शर्मा गौरः
काव्य-वेदतीर्थः साहित्याचार्यः

श्री पं० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय M A. प्रयाग निवासी आर्यजगत् मे उन गण्य मान्य व्यक्तियो मे से एक ऐसे सात्विक, सौम्य स्वभाव के मननशील सज्जन है जिनकी विद्यादि योग्यता, आचार-विचार और कर्त्तव्य-परायण जीवन से कोई भी समाज गौरवान्वित हो सकता है। आपने छोटे बडे अनेकश: ग्रन्थ लिखे है जिन मे आस्तिकवाद, शाङ्कर मतानुलोचन—आदि कई ग्रंथ बडे मौलिक है।

आप का जीवन एक सच्चे आर्य पुरुष के समान पठन-पाठन और समाजसेवा मे ही तत्पर रहता हुआ ६-९-६१ को ८० वे वर्ष गाठ को प्राप्त हो रहा है।

आप कई वर्षों तक शिरोमणि आर्य सार्वदेशिक सभा के प्रधान मन्त्री रहे है तथा आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के प्रधान भी रह चुके है और ब्रह्मा, अफ्रीका आदि देशो मे जाकर वैदिक सिद्धान्तो का प्रचार भी करते रहे है।

यद्यपि आपने हिन्दी और अँग्रेजी मे तो कई ग्रन्थ लिखे ही है जिन से आर्य जगत भलि-भाति परिचित हैं तथापि आपने "आर्योदय" नामक एक संस्कृत महाकाव्य भी लिखा है जो अभी तक गुप्त दशा मे ही प्रसुप्त पडा हुआ है। यह महाकाव्य–१० सर्ग पूर्वार्द्ध और ११ सर्ग उत्तरार्द्ध करके कुल २१ सर्ग और क्रमशः ५८२ तथा ५८४=११६६ श्लोको मे पूर्ण हुआ है। १३ श्लोको मे कवि ने आत्मवश परिचय भी दिया है।

प्रस्तावना के २० श्लोको मे कवि ने ग्रन्थ लेखन का प्रयोजन सुविस्पष्टतया प्रकट कर दिया है। सर्गो मे अनुष्टुप, उपजाति इन्द्रवज्ञ, वंशस्थ, शिखरिणी, शार्दूल विक्रीडित आदि भिन्न-भिन्न छन्दो मे काव्य ग्रथित है।

शिखरिणी छन्द मे आपने भाग्य की प्रबलता को यूं वर्णित किया है—

"विधौ वामे याते, क्षरति गरलं चन्दन तरु,
विधौ वामे याते, दहति पुरुषं शीतलजलम् ।
विधौ वामे याते,' धरति तनुज शत्रुतनुताम्,
विधौ वामे याते, भवति विपरीत खलुजगत् ।।
६ । ५० ।।

अर्थात् दैव के विपरीत होने पर मनुष्य के लिये चन्दन, विष, शीतल जल दाह, पुत्र शत्रु बन जाता है। यहाँ तक कि जगत् की प्रत्येक अच्छी वस्तुएं भी विपरीत होकर दुखकारक ही सिद्ध होने लगती है। कैसा सरलतम सरस वर्णन है।

इसके पूर्वार्द्ध मे सक्षेपत. सृष्टि की उत्पत्ति, आर्य जाति का सार्वभौम अभ्युत्थान और पतन, वैदिक धर्म के ह्रास होने पर पारसी, ईसाई, यवन पौराणिक मत मतान्तरो की उत्पत्ति, पठान, मुगल, सिकन्दर, सेल्यूकस, चन्द्रगुप्त मौर्य, मुहम्मद गौरी, गजनवी, सूरी, बाबर, हुमायूँ, अकबर, राणाप्रताप, जहांगीर, शाहजहाँ, औरगजेब, सिक्खोत्थान पतन, गोविन्दसिंह जो का खालसा पन्थ चलाना, अंग्रेजों का शासन, और उनसे स्वतन्त्रता प्राप्त करने तक का इतिहास सरलतम पद्यो में वर्णित किया गया है।

इस "आर्योदय" महाकाव्य के उत्तरार्द्ध ११ वे सर्ग मे सृष्टि की उत्पत्ति का प्रयोजन वर्णन करके १२ वे से २० वे सर्ग तक ऋषि दयानन्द के जन्म से मरण तक जीवन चरित का क्रमबद्ध सुन्दर प्रकार से वर्णन किया गया है। पाठक को ऋषि के जीवन वृतान्त के साथ-साथ काव्य रस का आनन्द भी प्राप्त होता जाता है। ऋषि दयानन्द के निर्वाण का वर्णन आपने यूं किया है—

"अथाऽगमत् कार्तिकमास्यमावसी,
आकाश वेदाङ्क शशाङ्क—विक्रमे ।
कुहू ! कुहू ! यत्र"कु" नाम भूतलात्,
अभ्युत्थितो"हू ३,, इति रोदन ध्वनि'',
२१ । १८ वाँ ।।

अब १९४० विक्रमी की कार्तिक मास की अमावस्या आ पहुची। अमावस्या को सस्कृत मे "कुहू" कहते हैं। कु नाम पृथ्वी का है। अर्थात् ऋषि दयानन्द के निर्वाण अवसर पर पृथ्वी से "हू" करके रोने की ध्वनि प्रकट होने लगी। अजमेर नगर मे कार्तिक कृष्ण पक्ष अमावस्या स० १९४० वि० को सायकाल साढे ६ बजे महर्षि श्री स्वामी दयानन्द जी सरस्वती अपना पञ्चभौतिक शरीर त्याग कर स्वर्ग सिधार गये थे। उनकी मृत्यु से अजमेर ही नही प्रत्युत सारा भारतवर्ष ही शोकाकुल हो गया। पुन क्रमशः

२१ वे सर्ग के ६० वे श्लोक मे—

"सौभाग्यतो गुर्जर मातृभूः पुन',
अजीजनद् भारत-पाश-भञ्जकम् ।
गांधी मुनि मोहनदासतापसम्,
अपूर्व बुद्धि च विचित्र साहसम ।।
२१ । ६० ।।

गुजरात भूमि ने पुन एक महात्मा मोहनदास कर्मचन्द गांधी को जन्म दिया जिसने भारतमाता को विदेशियो की दासता से विमुक्त कराया।

जिस गाधी महात्मा ने—

"अपूर्व योगो मुनिना व्यवस्थितः,
निवेदितास्तेन समस्त भारताः ।
हिंसाऽनृते मानव जाति घातके,
त्यक्तं व ते शान्ति मियादिद जगत् ।।
२१ ।। ६५ ।।

भारतियो को उपदेश दिया कि हिंसा और झूठ ये दो अवगुण मनुष्य जाति के नाशक है। इनके छोड देने पर ही जगत मे शान्ति हो सकती है।

गाधी ने देश को संगठित करके अग्रेजो के साथ असहयोग आन्दोलन चलाया। विदेशी वस्त्रो का त्याग और खद्दर का प्रचार किया। अन्त मे—

"अथाम्बुधि व्योम, ख, नेत्र वत्सरे,
कृपालुरीश प्रददौ स्वतन्त्रताम् ।।
वृद्धाऽयर्य जातिः पुनरुद्ययौ भुवि,
कर्तुं प्रचार शुभ वेद सस्कृते ।। २१ । ७१ ।

संवत् २००४ विक्रमी—ता० १५ अगस्त १९४७ ई० को भगवान् ने दया करके भारत को स्वराज्य दिला दिया और इस स्वतन्त्रता को प्राप्त करने पर एक बार पुन यह वृद्ध आर्य जाति संसार मे पवित्र आर्य-वैदिक सस्कृति के प्रचारार्थ उठ खडी हुई है।

इस "**आर्योदय**" महाकाव्य की समाप्ति पर स्वनाम धन्य श्री पं० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय M. A महा कवि महोदय ने अपनी कामना प्रकट की है कि—

"सर्गादौ पुरुषेण येन रचित पूर्णेन पूर्णं" जगत्,
नाना यत्र विभर्त्ति जीवनिकरान भोगाय वा कर्मणे।
धर्माधर्म विवेचनार्थमथवा वेदाश्च नृभ्योददौ,
पात्वस्मान् स तथाऽऽर्य जातिमखिलां शान्त्यैश्च न.
सस्कृतिम् । २१ । ७२ ।।

जिस पूर्ण परमेश्वर ने सृष्टि के आरम्भ मे पूर्ण उपादान से पूर्ण जगत को रचा । जो ईश्वर नाना जीवो को उनके कर्मफल भुगाता और कर्म करने के लिए उनको जन्म देकर पालन-पोषण करता है तथा धर्माधर्म के विवेक पूर्वक उत्तम कर्म करने के लिए जिसने अपना ज्ञान-वेद भी आरम्भ मे ही प्रदान किया है वही भगवान् हमारी **समस्त आर्यजाति और वैदिक सस्कृति की सदैव रक्षा करे जिससे ससार मे पूर्ण शान्ति और सुख का संचार हो सके** ।।

महाकवि की यह पवित्र कामना ईश्वर पूर्ण करे। हम भी इस कामना के साथी है। एवमस्तु।

इस काव्य में **अन्य काव्यों के समान छात्र जीवन ब्रह्मचर्याश्रम में काम-विकारोत्पादक किसी भी शृंगारादि रस का उल्लेख नही है।** केवल सीधा-सादा ऐतिहासिक वर्णन है। अतएव यदि आठवी श्रेणी से ऊपर विशेषतः **मैट्रिक एव इन्टर तथा B A आदि श्रेणियों** के पाठ्यक्रम मे यह ग्रन्थ रख दिया जाये तो जहाँ बालक बालिकाओ को **सस्कृत भाषा मे सूत इतिहास का यथार्थ बोध होगा** वहाँ कवि का प्रशंसनीय पुरुषार्थ भी सफल हो सकता है अन्यथा कोई भी ग्रन्थ चाहे कितना भी उत्तम क्यो न हो वह बेकार है यदि उसका पठन-पाठन न हो। आज हम देखते है कि कवि कुल गुरु कालिदास आदि के कई ग्रन्थ ऐसे भी प्रसिद्ध है कि जिनमे किशोर अवस्था के छात्राओं में प्रसुप्त कामाग्नि को भडकाने वाला वर्णन है। धार्मिक शिक्षित समाज मे यद्यपि उनका कोई महत्व नही उन का प्रचलन है सुप्रसिद्धि भी है। यह केवल इसलिए है कि वे ग्रन्थ अनेक पाठ विधियो मे परीक्षाओ मे नियत हैं **अन्यथा उन्हे दो कौडी को भी कोई न पूछे।**

यदि राजकीय शिक्षणालयो मे भी और स्वतन्त्र सामाजिक शिक्षणालय गुरुकुल, कन्या गुरुकुल आदि आर्य सस्थाओ मे **यह ग्रंथ रख दिया जाये तो छात्र-छात्राओं को निर्दोष लाभ अवश्य होगा। ऐसा होने पर इस में रही कुछ काव्य शास्त्रीय न्यूनताये भी दूर हो जायगी और परीक्षोपयोगी इस की संस्कृत टीका भी की जा सकती है—**

श्री उपाध्याय जी इस प्रकार के कवि भी हैं जो सस्कृत पद्यो मे महाकाव्य ११६६ श्लोको मे लिख सकते है यह आशातीत और आश्चर्यजनक प्रतीत अवश्य हुआ। इस महाकाव्य के उदय मे श्री उपाध्याय जी स्वय भी **"कवित्व बीज प्रति-मानम्"** अपनी कवित्व शक्ति के साथ **महाकवि के रूप में भी प्रकट होते हैं** अतः उनके लिए बधाई और हमारे लिए विशेष प्रसन्नता की बात है।

श्री उपाध्याय जी के इस ८१ वे वर्षायु प्रवेश पर यदि कोई भी आर्य शिक्षा-सस्था उनके इस **महाकाव्य** को अपने कोर्स मे नियत करने की **घोषणा कर सके तो वास्तव** मे उपाध्याय जी को **सच्ची श्रद्धांञ्जलि** भेंट के साथ मे उनका कर्त्तव्य भी पूर्ण होगा। एवमस्तु।

श्री उपाध्याय जी इस समय ६-९-६१ को अपनी ८१ वे वर्षायु को प्राप्त हो रहे है तदर्थ आपको बधाई और आपके स्वास्थ्य एव पूर्णायु के लिए हमारी शुभ कामनायें है।

त्र्यायुष जमदग्ने कश्यपस्य त्र्यायुषम्।
यद्देवेषु त्र्यायुष तन्नोऽस्तु त्र्यायुषम् ।। यजु ३। ६१
तथा—त्र्यम्बक यजामहे सुगन्धि पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात् ।।
यजु० ३। ६१ ।।
एवमस्तु। शमोम्। ५।

इसी अगस्त मास की १३-१४, १५ तारीख को मेरा किसी विशेष कार्य से बनारस मे रहना हुआ और मै यहाँ पाणिनि महाविद्यालय के संचालक श्री पं० ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु के पास ठहरा। यो तो सस्कृत के एक सुप्रतिष्ठित आर्य विद्वान् होने के नाते श्री पं० ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु जी के नाम से मै छात्रावस्था से ही परिचित था, गत वर्षो मे कई बार मिलना भी हुआ, परन्तु उनको इतना निकट से देखने का यह पहला ही अवसर था। आर्यसमाज मे आर्ष पाठ विधि के कट्टर पोषक इने-गिने ही विद्वान् हैं, और जिज्ञासु जी उन सब मे अग्रगण्य कहे जा सकते है। सकता। महर्षि दयानन्द की इस स्थापना को हम अनेक बार दोहराते हैं कि अनार्ष ग्रन्थो की अपेक्षा आर्ष ग्रन्थों के अध्ययन से थोडे ही परिश्रम तथा समय मे यथेष्ट मात्रा मे सफलता मिलती है। परन्तु साथ ही यह भी सत्य है कि हमारा व्यवहार इसके सर्वथा विपरीत है, मानो हम महर्षि की बात को उतना व्यावहारिक नही पाते।

परन्तु जिज्ञासु जी का इस दिशा मे प्रयत्न बहुत अनुकरणीय है। वे यह सिद्ध करने मे पूरी तरह सफल हुए हैं कि अष्टाध्यायी का क्रम ही व्याकरण के मर्मज्ञान का सरल तथा प्रशस्त मार्ग है। इनका कहना है कि सर्वथा

पाणिनि महाविद्यालय

मोतीझील बनारस

(*श्री रघुवीरसिंह शास्त्री*)

उनकी विशेषता यह है कि उन्होने इस पाठ-विधि को प्रतिष्ठित करने की दिशा मे विशेष अध्यवसाय तथा सफल परीक्षण किया है। पाणिनि महाविद्यालय भी इन्होने इसी उद्देश्य से चला रखा है।

मै भी जब गुरुकुल मे प्रविष्ट हुआ तो सबसे पहले अष्टाध्यायी कण्ठस्थ करायी गई थी, परन्तु इसका उपयोग हमारे लिए कुछ नही था, क्योकि व्याकरण हमे लघु-सिद्धान्त कौमुदी से ही पढाना आरम्भ किया गया। कारण यह था कि प्राय यह विश्वास रहता है कि अष्टाध्यायी के क्रम से पढ़ने से कोई व्याकरण का मर्मज्ञ नही बन नये प्रविष्ट होने वाले छात्र को इस रीति से ४-५ वर्ष में व्याकरण का विद्वान् बनाया जा सकता है। पाणिनि महाविद्यालय के विद्यार्थी इसका ज्वलन्त प्रमाण हैं। एक विद्यार्थी गोपीचन्द नामक मुझे मिला जो हिन्दी मिडिल परीक्षा पास करने के पश्चात् यहाँ दो वर्ष पूर्व प्रविष्ट हुआ और आज अष्टाध्यायी की प्रथमावृत्ति पूरी कर चुका है। विशेष आश्चर्य यहाँ दो बहनो को देख कर हुआ। प्रज्ञा और मेधा नाम की दो सगी बहनें अपने परिवार के साथ विद्यालय के पास ही रहती है। प्रज्ञा युवति है और मेधा अभी बच्ची ही है। प्रज्ञा (बड़ी बहिन)

पंडित जी के पास पढने आती है। यह इंटर-मीडियेट परीक्षा उत्तीर्ण करके संस्कृत पढने मे लगी। चार वर्ष मे ही पंडित जी ने इसे अष्टाध्यायी तथा महाभाष्य की विदुषी बना दिया। प्रज्ञा अपनी छोटी बहिन मेधा को अष्टाध्यायी पढा रही है। दो वर्ष मे मेधा ने अष्टाध्यायी की प्रथमावृत्ति पूरी कर ली है। प्रथमावृत्ति का अभिप्राय है कि यह लडकी सारी अष्टाध्यायी को कण्ठाग्र करके नये सूत्रो के पदच्छेद, समास, अनुवृत्ति, अर्थ तथा उदाहरण आदि भली-भांति समझ चुकी है। मेरे सामने उसने स्थानिवदादेशोऽनल्विधौ" तथा "अच परस्मिन् पूर्वविधौ" इन दो सूत्रों की व्याख्या बहुत ही तत्परता से की। आठो प्रकार के आदेश तथा 'अल्विधि' शब्द के सारे अर्थ इसने इस तरह सुनाये कि मै स्तब्ध रह गया। मेरे लिए तो जीवन मे यह पहला ही उदाहरण था। प्राय. लोग यह भी समझते हैं कि सिद्धिया तो प्रक्रियाग्रन्थो की सहायता के विना आ ही नही सकती, परन्तु मैने देखा है कि मेधा सब सिद्धियो को अनायास ही करती चली जा रही है। बडी बहिन प्रज्ञा आजकल जिज्ञासु जी के निरीक्षण में अष्टाध्यायी की प्रथमावृत्ति लिख रही है। तीन अध्याय लिखे जा चुके है। यह लेख भी मैने देखे। लगता है कि यह रचना अपने ढग की बहुत ही उपयोगी होगी और इसके प्रकाशित होने पर अन्य विद्यालयो मे भी अष्टाध्यायी क्रम से पठन-पाठन का मार्ग बहुत प्रशस्त हो जायगा।

पाणिनि महाविद्यालय मे पडित जी के अतिरिक्त केवल एक और अध्यापक है श्री विजयपाल जी। यह नवयुवक जिला मेरठ का रहने वाला है। बी०ऐस०सी०करने के पश्चात् वैदिक साहित्य तथा सस्कृत पढने की धुन मे जिज्ञासु जी के पास पहुँच गया। अब यह व्याकरण का उच्चकोटि का पडित है। तपस्वी वेष मे साधक वृत्ति से रहता है। प्राचीन गुरुकुलो की ही भाँति बडे छात्र क्रम से छोटो को पढाते है। अध्ययनाध्यापन की इस आर्ष परम्परा को देखकर मन बहुत प्रफुल्लित हुआ।

जिज्ञासु जी भी हर समय जुटे रहते है। विद्यार्थियो को पढ़ाते है, वेदभाष्य भी कर रहे हैं। यजुर्वेद के दश अध्यायो का भाष्य प्रकाशित हो चुका है, अगले दश अध्यायो का लिख कर पूरा होने वाला है। भाष्य देखने से उनके श्रम तथा विद्वत्ता का स्पष्ट आभास मिलता है।

उनके साथ मैं वाराणसेय सस्कृत विश्वविद्यालय मे भी गया। पढाई के समय ही हम कई श्रेणियो मे गए, अनेक विद्वानो से सस्कृत मे वार्तालाप हुआ। मैने देखा कि काशी की पडित मंडली मे भी जिज्ञासु जी का विशिष्ट स्थान तथा प्रभाव है। सब उनकी योग्यता, सच्चरित्रता तथा सिद्धान्तनिष्ठता का आदर करते है। सर्वज्ञात विपरीत परिस्थितियो मे भी वे सस्कृत विश्वविद्यालय की पाठविधि मे ऋषि दयानन्द के ग्रन्थो तथा आर्ष-पाठविधि के समावेश का यत्न करते रहते है, इस विषय मे उन्हे सफलता भी बहुत मिली है।

मेरा भी सभी आर्यसमाजिक सस्कृत संस्थाओ के सचालको तथा आचार्यों से सविनय अनुरोध है कि वे एक बार अवश्य पाणिनि महाविद्यालय मोतीझील बनारस मे जाकर यहाँ की अध्ययन परम्परा को देखे। मुझे निश्चय है कि उन्हे वहाँ जाकर एक सुखद अनुभव होगा और फिर उसी पद्धति को वे अपनी सस्था मे चलाने को समुत्सुक होगे। मुझे तो इस सस्था तथा जिज्ञासु जी के सहवास मे बिताये ये तीन दिन सदा स्मरण रहेगे।

....

कर्त्तव्य और अधिकार

श्री बा० कालीचरण आर्य

सुख और शान्ति के अभिलाषी को यह देखना आवश्यक है कि उसकी प्रत्येक गति प्रभु की ओर ले जा रही है या नही । उसका मार्ग जो उसने अपनाया है उसको प्रभु के निकट ले जा रहा है अथवा अपने उपास्य देव से दूर कर रहा है। धार्मिक ससार का अधिकाश मनुष्य तो यह विचार रखता है कि प्रभु के पाने के लिए अथवा उस तक पहुंचने के लिए एक ही मार्ग नही हो सकता, अनेक मार्ग हैं और इसी ही विचार के आधीन वह कहते है कि समस्त धर्मावलम्बी अपने २ धर्म के अनुसार कार्य करते हुए प्रभु तक पहुच जावेगे। सब को एक ही समान बनने की आवश्यकता नही और उनके विचार मे यही नही कि आवश्यकता ही नही अपितु वे इसे असम्भव भी समझते हैं। मनुष्य स्वभाव से विभिन्न विचार और विभिन्न मस्तिष्क के उत्पन्न हुए है अत सबका समान मार्ग किस तरह सम्भव हो कुछ भी हो मनुष्य के अपने विच र करने की शैली चाहे कितनी ही विभिन्न क्यो न हो परन्तु इन सबको एक ही स्थल पर पहुचना है और सबका उद्देश्य एक ही है तो प्रत्येक के लिए अनिवार्य रूप से एक ही निश्चित मार्ग अपनाना होगा। जिम प्रकार संसार का रचने वाला प्रभु एक है उसी प्रकार उसे पाने का मार्ग तथा उसके पास पहुंचने का मार्ग एक ही होना चाहिए इसलिए परमावश्यक है कि मनुष्य अपनी प्रत्येक गति को जो प्रात से साय तक करता है उस पर दृष्टि रखे कि वह अपने उत्पन्न करने वाले तक पहुँचने के लिए अपने मार्ग मे कही स्वयं तो रोडा नही बन रहा है क्योकि बाहर के विरोध का सुगमता से मुकाबला किया जासकता है और हटाया जा सकता है परन्तु आन्तरिक विरोध जो आन्तरिक शत्रुओ द्वारा होता है उसका मुकाबला करना अत्यन्त कठिन हो जाता है इसके अतिरिक्त यह अच्छा मालूम होता है कि मनुष्य अपना निरीक्षण स्वय करे इसमे ही उसका कल्याण है दूसरे के किये निरीक्षण से मनुष्यो मे दूसरो के प्रति द्वेष भावना जागृत होती है और अपने कल्याण से परे हो जाता है।

मनुष्य ससार मे मुख्य रूप से ऐसी ही वस्तुओ से घिरा हुआ है जिन से प्रभावित होकर अपने जीवन रूपी

नय्या को इस पथरीली और बडी तेजी से चलने वाली ससार रूपी नदी को पार करना होता है। जितना-जितना और जिस-जिस वस्तु से जो मनुष्य प्रभावित होता है उतना ही उत्तम-मध्यम या निकृष्ट रीति मे जीवन बिताता है। कोई मनुष्य किसी एक से प्रभावित है तो कोई दोनो से। जिस ने किसी एक की भी अवहेलना की उसने ही हानि उठाई और जिसने दोनो का समन्वय कर दोनो से काम लिया उसने अभीष्ट फल प्राप्त कर जीवन यात्रा को सफल बनाया और वही सुखी रहा।

जीवन को प्रभावित करने वाली वे वस्तुएँ ससार मे कर्त्तव्य और अधिकार के रूप मे सर्वत्र व्यापक है। कर्त्तव्य कडवा है अधिकार रोचक है और सुन्दर, आकर्षक और मीठा भी। इसी को अग्रेजी मे Duty and Beauty कहा है।

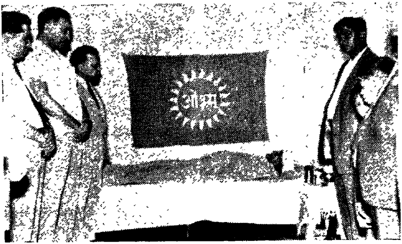
Duty कर्त्तव्य है और Beauty आकर्षण है जो अधिकार मे पूर्ण रूपेण समावेश किए हुए है। जिस प्रकार पृथ्वी प्रत्येक पार्थिव पदार्थ को अपनी ओर आकर्षित कर रही है और वस्तु पृथ्वी की ओर आकर्षित हो रही है उसी प्रकार संसार की समस्त वस्तुएँ मनुष्य को अपनी ओर आकर्षित कर रही है और मनुष्य स्वभावतः उनकी ओर दौडता चला जा रहा है। जिस प्रकार चुम्बक पत्थर मे लोहे को अपनी ओर खेचने की शक्ति है उसी प्रकार लोहे मे चुम्बक की ओर आकर्षित हो जाने की प्रवृत्ति है। चुम्बक की ओर आकर्षित हो जाने की प्रवृति लोहे मे ही है लकडी मे नही। इसी तरह ससार की वस्तुएँ अपनी चमक और दमक के कारण मनुष्य की अज्ञानता, दुर्बलता से लाभ उठा कर अपनी ओर आकर्षित करती है और मनुष्य मे आकर्षित हो जाने की प्रवृति है। हाँ एक अन्तर अवश्य है वही अन्तर मनुष्य को मनुष्य बनाए हुए है अन्यथा मनुष्य भी उस अन्तर के हट जाने पर बुद्धिमानो की दृष्टि मे जड ही समझा जाता है। अन्तर यह है कि लोहा कभी लकड़ी नही बन जाता और सदा लोहा ही बना रहता और जब कभी सामने चुम्बक आ जाता है तो आकर्षित हो हो जाता है। ऐसा एक बार भी नही होता लोहा लकडी की तरह चुम्बक के उस आकर्षण गुण को मना कर दे। परन्तु मनुष्य में यह गुण है कि वह संसार की वस्तुओ की ओर आकर्षित हो अथवा न हो अपने को आकर्षण वाली वस्तुओ से अपने त्याग और तपस्या के बल पर उनका उचित उपयोग करते हुए उनसे पृथक् भी रह सकता है और यही मनुष्य का कर्त्तव्य है कि जिस पर उसे अपनी दृष्टि सर्वदा रखनी है और कभी विचलित नही होना।

कर्त्तव्य और आकर्षण मे विरोध नही है परन्तु सघर्ष अवश्य है। कभी-कभी कर्त्तव्य और आकर्षण के बीच मे एक बहुत मोटी दीवार बन कर खडी हो जाती है उस समय यदि मनुष्य तनिक सचेत रह कर कर्त्तव्य की आवाज को सुन लेता है और आकर्षित नही होता तो मनुष्य पतन की गहरी खाई मे गिरने से अपने आप को बचा लेता है और यदि उसकी आवाज को न सुन कर दीवार को बीच मे से हटाने का प्रयत्न करता हैं और ससार के चमत्कारो की ओर आकर्षित हो जाता है निस्सन्देह ही वह अन्धकार के गर्त मे गिर कर चूर-चूर हो जाता है। मनुष्य को सर्वदा और सर्वथा ही सचेत रहने की आवश्यकता है। पग-पग पर उस को ऐसे अवसर आते है कि "वह कि कर्त्तव्य विमूढ़" की भाँति खडा होकर विचारता है कि मुझे क्या करना चाहिए ? इस समय यदि वह आकर्षण करने वाली वस्तुओ का सदुपयोग कर कर्त्तव्य के पालन मे लग जाता है तो मनुष्य निस्सन्देह अपने जीवन को ऊँचा बना कर दूसरो को ऊँचा बनाने मे समर्थ हो जाता हैं। मनुष्य कर्त्तव्य की ओर तभी झुकता है जबकि उसका पग प्रभु की ओर बढता है। प्रभु के सद्गुण तप, त्याग और तपस्या जब उसमे प्रवेश पाते हैं तो ससार की प्रत्येक वस्तु उसके लिए लाभदायक और उपकारी बन जाती है और जितना-जितना अधिक वह कर्त्तव्य की ओर बढता जाता है उतना ही उतना वह प्रभु के अन्य गुणो को धारण करता है। इन दोनो मे अर्थात् प्रभु के गुणो को धारण

करने और कर्त्तव्य के पालन करने मे परस्पर बडी गहरी मैत्री है। सद्गुणो का आधिक्य कर्त्तव्य की ओर अधिक खीचता है और कर्त्तव्य का पालन करने वाला सदा अधिकार को प्राप्त करता है और अधिकार प्रभु के गुणो से सुशोभित मनुष्य को कभी गलत मार्ग मे नही ले जा सकता और अधिकार व कर्त्तव्य मे गहरी समता हो जाती है और दोनो मिल कर उस परमपिता परमात्मा की उपासना प्राप्त कराते है जो मनुष्य के जीवन का ध्येय है।

कर्त्तव्य मे सर्वदा संघर्ष है क्रिया है, जीवन है और सुख है। आकर्षण मे सरलता है परन्तु दु ख है। कर्त्तव्य सीधा मार्ग है जिस पर चल कर मनुष्य सीधा अपने ध्येय पर पहुंचता है और कभी धोखा नही खाता जिस प्रकार दो बिन्दुओं के बीच में सबसे सीधी रेखा एक ही होती है दो नही, तीन नही, चार नही उसी प्रकार मनुष्य जीवन के आरम्भ से ध्येय प्राप्ति तक के बीच का मार्ग एक ही होगा और सब मनुष्यो के लिए समान होगा जिसमे कोई विकल्प नही होगा। सीधी रेखा सर्वत्र और सर्वथा एक रस रहती है कभी नही बदलती। एक जैसी रहने वाली होती है। इसी प्रकार प्रभु तक पहुँचाने वाला मार्ग सर्वथा-सर्वथा अपरिवर्तनशील है और सदा एक ही होता है उसमे भी कभी कोई परिवर्तन नही है जिस तरह दो बिन्दुओं के बीच टेढी रेखाएँ यद्यपि उनमे सौन्दर्य बहुत होता है कभी एक नही हो सकती अनेक होगी और परस्पर सब भिन्न होगी। इसी प्रकार मनुष्य जीवन में यदि मनुष्य सीधी रेखा को छोड़ कर जो कर्त्तव्य का द्योतक है टेढी रेखाओं के फन्दे मे फस कर (जो संसार के भोगो का द्योतक है) अपने को तबाह कर लेगा इसलिए मनुष्य को प्रभु की प्राप्ति के बतलाए हुए एक मात्र मार्ग पर चलने का यत्न करना चाहिए जो स्वयं के निरीक्षण से सुगम हो जाता है। जैसा कि मैंने आरम्भ मे कहा कि मनुष्य अपनी प्रत्येक गति को देखता रहे कि उसकी प्रत्येक क्रिया ईश्वर की ओर ले जाने वाली है। अपने का निरीक्षण करते-करते मनुष्य भूलो से बचने का स्वभाव बना लेता है और प्रभु के गुणो को अधिक से अधिक अपने अन्दर धारण करता है। मनुष्य जब स्वयं अपने को योग्य बना लेता है वह अनुकरणीय बन जाता है। समस्त जनता उसकी ओर देखती है। देश और जाति का नेता बन नेतृत्व करता है। जनता उसे अधिकार देती है और वह अधिकार को छोडता है और यदि वह वह कभी अधिकार को स्वीकार भी कर लेता तो है इस प्रकार से प्राप्त किया हुआ अधिकार चिरकाल तक उसके पास रहता है। आर्य जाति ने ससार पर अपने कर्त्तव्य पालन के सहारे ही चक्रवर्ती राज्य किया और एक दो वर्ष नही सौ-पचास वर्ष नहीं, लाखो और करोडों वर्ष तक समस्त ससार का नेतृत्व किया। यदि दुर्भाग्य से कभी कोई अनाचार और अत्याचार और दुराचार से अधिकार को प्राप्त भी कर लेता है तो वह चिरस्थायी नही रह सकता। अतः मनुष्य का कर्त्तव्य है कि वह सदा अपने कर्त्तव्य की ओर दृष्टि रखे, स्वयं भला बने और दूसरो को बनाने का तथा दूसरो के साथ भलाई करने का सर्वदा ध्यान रखे।

—०—०—



श्री स्वामी अभेदानन्द जी महाराज मृत्यु शय्यापर



श्री स्वामी अभेदानन्द जी महाराज का मोरीशस
में श्मशान भूमि में लिया हुआ चित्र

(गतांक से आगे)

अतिथि:—जिन घरों या स्थानों मे अतिथि का सत्कार होगा वहाँ निरन्तर धर्म सदाचार के उपदेश सुनायेगा ही इससे उन घरों या स्थानो मे धर्म का प्रचार सदाचार का संचार होने से व्यवहार शुद्ध कलह सघर्ष से रहितता और मन मे सुख-शान्ति का सचार रहा करता है। सत्कार पाया हुआ अपने को धर्मज्ञान का लाभ पहुँचायेगा अपने को नही तो अन्यो को तो पहुचायेगा ही सभी धर्मात्मा और ज्ञानी नही हैं। अत: श्रोत्रिय अतिथि का सत्कार करना ही चाहिए।

अगले सूक्त पर विचार—

ऋषि·—ब्रह्मा = ब्रह्मज्ञानी आस्तिक जन।

देवता—अतिथि:, विद्या = विद्वान् अतिथि का सत्कार करना, विद्या के दान का फल पाना निज के लिये विद्या का लाभ लेना, अन्यो मे विद्या का प्रचार करना है।

> स य एव विद्वान्–क्षीरमुपसिच्योपहरति।
> यावदग्निष्टोमेनेष्ट्वा सुसमृद्धेनावरुन्द्धे
> तावदेनेनावरुन्द्धे ॥१–२॥

(स·-य:·एव विद्वान्) वह जो इस प्रकार जानता हुआ श्रोत्रिय अतिथि का सत्कार करता हुआ उसके लिए (क्षीरम्–उपसिच्य–उपहरति) क्षीर–सुपक्व पाक रूप दूध, अन्य खाने योग्य भोजन के ऊपर डाल कर या उसके साथ परोस कर समर्पित करता है (अग्निष्टोमेन–इष्ट्वा) वह अग्निष्टोम से यजन करके (यावत् सुसमृद्धेन–अव-रुन्द्धे) तब तक उस सुसमृद्ध हुए अग्निष्टोम से अपने को यजमान अवरुद्ध करता है—उसके फल से समन्वित करता है (तावत्–एनेन अवरुन्द्धे) तब तक उतने

† उपसिच्य—ऊपर डाल कर या साथ देकर अर्थ-लक्षित है, जैसे कण्ठोपनिषद् मे निर्दिष्ट किया है "यस्य ब्रह्म च क्षत्रं चोभे भवत ओदनः मृत्युर्यस्य चोपसेचनम्" (कठो० १।२।२४) ब्रह्म और क्षत्र परमात्मा को ओदन अर्थात् ओदन-चावल मृदु भोजन है और मृत्यु तो उपसेचन ऊपर से डालने या लेने योग्य है।

अथर्ववेदीय

अतिथि सत्कार

और

मांस शब्द

विवेचन

श्री स्वामी ब्रह्ममुनि परिव्राजक

समय तक इस क्षीर-सुपक्व पाकभूत दूध सहित भोजन समर्पण से अपने को श्रोत्रिय का सत्कार करने वाला समन्वित करता फलयुक्त करता है ।। ३-४ ।।

स य एवं विद्वान्त्सर्पिरुपसिच्यो पहरति ।

यावदतिरात्रेणेष्ट्वा सुसमृद्धे नावरुन्द्धे तावदेने ना वरुन्द्धे ।।

(सः-यः-एवं विद्वान्) वह जो इस प्रकार जानता हुआ श्रोत्रिय अतिथि का सत्कार करता हुआ उसके लिए (सर्पिः-उपसिच्य-उपहरति) सर्पिः-घृत को अन्य खाने योग्य भोजन के ऊपर डाल कर या उसके साथ बना कर परोस कर समर्पित करता है (अतिरात्रेण-इष्ट्वा) वह अतिरात्र से यजन करके (यावत् सुसमृद्धे न-अवरुन्द्धे) जब तक उस सुसमृद्ध हुए अतिरात्र से अपने को यजमान अवरुद्ध करता है—उसके फल से समन्वित करता है तावत्-एनेन-अवरुन्द्धे) तब तक उतने समय तक इस सर्पिः-घृत सहित भोजन समर्पण से अपने को श्रोत्रिय का सत्कार करने वाला समन्वित करता है फल युक्त करता है ।। ३-४ ।।

स य एवं विद्वान् मधूपसिच्योपहरति ।
यावत्सत्त्रसद्येनेष्ट्वा सुसमृद्धे नावरुन्धे तावदेनेनावरुन्द्धे ।।५-६।।

(सः-यः-एवं विद्वान्) वह जो इस प्रकार जानता हुआ श्रोत्रिय अतिथि का सत्कार करता हुआ उसके लिए (मधु-उपसिच्य-उपहरति) मधु-माक्षिक शहद महौषध को अन्य खाने योग्य भोजन के ऊपर डाल कर या साथ परोस कर समर्पित करता है (सत्रसद्येन-इष्ट्वा) वह सत्रसद्य से यजन करके (यावत् सुसमृद्धे न-अवरुन्द्धे) जब तक उस सुसमृद्ध हुए सत्रसद्य से अपने को यजमान अवरुद्ध करता है—उसके फल से समन्वित करता है (तावत्-एनेन-अवरुन्द्धे) तब तक-उस समय तक इस मधु सहित भोजन समर्पण से श्रोत्रिय का सत्कार करने वाला अपने को समन्वित करता है—फल युक्त करता है ।।

स य एवं विद्वान् मांसमुपसिच्योपहरति ।

यावद् द्वादशाहेनेष्ट्वा सुसमृद्धे नावरुन्द्धे तावदेनेनावरुन्द्धे ।।

(सः-यः-एवं विद्वान्) वह जो इस प्रकार जानता हुआ श्रोत्रिय अतिथि का सत्कार करता हुआ उसके लिए (मांसम्-उपसिच्य-उपहरति) मानस-मनः प्रसादक—पके फल का मृदु भाग तथा यथोचित विशिष्ट पाक रूप का अन्य खाने योग्य भोजन के ऊपर डाल कर या साथ परोस कर समर्पित करता है (द्वादशाहेन-इष्ट्वा) वह द्वादशाह से यजन करके (यावत् सुसमृद्धेन-अवरुन्द्धे) जब तक उस सुसमृद्ध हुए द्वादशाह से अपने को यजमान अवरुद्ध करता है—उसके फल से समन्वित करता है (तावत्-एनेन- अवरुन्द्धे) तब तक-उस समय तक इस मानस-मनः प्रसादक—पके फल के मृदुभाग या उसके यथोचित पाक रूप से युक्त भोजन समर्पण से अपने को श्रोत्रिय का सत्कार करने वाला समन्वित करता है—फल युक्त करता है ।। ७-८ ।।

स य एव विद्वानुदकमुपसिच्योपहरति ।
प्रजाना प्रजननाय गच्छति प्रतिष्ठा प्रियः प्रजाना
भवति य एवं विद्वानुदकमुपसिच्योपहरति ।।९-१०।।

(स.-यः-एवं विद्वान्) वह जो इस प्रकार जानता हुआ श्रोत्रिय अतिथि का सत्कार करता हुआ उसके लिये (उदकम्-उपसिच्य-उपहरति) उदक—जल को खाने योग्य भोजन मे केवल जल डाल कर या जल से बना कर या जल उसके साथ रख कर समर्पित करता है (प्रजाना प्रजननाय प्रतिष्ठा गच्छति) वह सन्तानो के उत्पादन के लिये योग्यता को प्राप्त होता है (प्रजाना प्रियः-भवति) सन्तानो का प्यारा-प्रेम भाजन बन जाता है (यः-एव विद्वान्-उदक उपसिच्य-उपहरति) जो इस प्रकार जानता हुआ श्रोत्रिय अतिथि के लिये जल को समर्पित करता है ।। ९-१० ।।

यहाँ यह निष्कर्ष है कि जिस किसी प्रकार भी श्रोत्रिय का भोजन सत्कार होना ही चाहिए उसके लिये विशिष्ट भोजन या साधारण भोजन यथाशक्ति समर्पित करे‡ ।

---

† 'आशाप्रतीक्षे संगत ॐ सूनृतां चेष्टापूर्ते पुत्रपशूश्च सर्वान् । एतद् वृङ्क्ते पुरुषस्याल्पमेधसो यस्यानश्नन वसति ब्राह्मणो गृहे ।।" (कठो० १।१।७) ब्राह्मण-श्रोत्रिय का भोजन सत्कार न करके मनुष्य अल्पयज्ञ वाला है, श्रोत्रिय सत्कार में यज्ञफल निहित है यह यहाँ संकेत है ।

श्रोत्रिय के भोजन सत्कार में जो पांच प्रकार की फल प्राप्ति प्रदर्शित की है वह व्यवहार की समानता से या शब्द की समानता से जाननी चाहिए। उसके विवरण के लिए निम्न तालिका देते है—

रहे। यदि दैवयोग से या अपनी आर्थिक स्थिति के कारण उक्त विशिष्ट वस्तुओं को भोजन के साथ न दे सके तो फिर जल सहित साधारण भोजन से ही उसका सत्कार करे जिससे उसकी क्षुधा तो निवृत्त हो सके

उपसेचन योग्यवस्तु—	फल—	समानता—
१. क्षीर—सुपाक को प्राप्त हुआ दूध।	अग्निष्टोम के जैसा।	दूध पकता हुआ जब तक घना हो उतने काल तक अग्नि के समीप बैठना अग्निस्तवन जैसा है, अतः अग्निष्टोम भाग जैसा फल होने की समानता है।
२. सर्पिः—मक्खन से सर्पित हुआ निकला हुआ ताजा घृत।	अतिरात्र भाग जैसा फल।	साय दूध जमाकर रात्रि का अतिक्रमण कर प्रातः दही से मक्खन बनाने पर सर्पिः—ताजा घृत सर्पित होता है निकलता है। अति रात्र भाग भी अन्तिम रात्रि मे किया जाता है अतः फल की समानता है।
३. मधु—मधु मक्खियो का शहद।	सत्रसद्य भाग के समान फल।	मधुमक्खियाँ छत्र, पत्ते पर बैठती है वे 'छत्रसद्' हुई और उनका कार्य 'छत्रसद्य' मधु हुआ उसे समर्पित करने से फल सत्रसद्य का छत्रसद्य के साथ शब्द की कुछ समानता से है।
४ मांस—पके फल का गुद्दा।	द्वादशाह भाग के समान।	आम, खजूर आदि प्रमुख फल द्वादश मास मे पकते हैं, द्वादशाह भाग द्वादश दिनो मे सम्पन्न होता है द्वादश संख्या की समानता है।
५. उदक—'आपः' जल।	प्रजाओ पुत्रो के उत्पन्न करने की योग्यता।	"आपो नारा वै प्रोक्ता आपो वै नरसूनव.।" (मनु० १।१०) 'आपः जल 'नारा' हैं क्योकि नर, मनुष्य उसके सूनु पुत्र होने से। "वेत्थ यथा पञ्चम्यामाहुतावापः पुरुषवचसो भवन्तीति" (छान्दो० ५।३।३) "...पुरुषवाचो भूत्वा समुत्थाय वदन्ति" (बृद्धा० ६।२।६) जब पचमी आहुति मे मनुष्य नाम से कहे जाते है पुन. उत्पन्न होकर बोलते है। जलो से प्रजाप्रजनन पुत्रो के उत्पन्न करने की योग्यता साक्षात् प्रदर्शित हैं।

श्रोत्रिय अतिथि के भोजन में जहाँ क्षुधानिवृत्ति के लिये अन्न का भाग हो साथ ही स्वादुतर, पौष्टिक, रोग नाशक वस्तुएँ भी होनी चाहिए। दूध पाक या खीर और फलो के गुद्दे मेवा आदि या उनसे युक्त हलवा आदि स्वादुतर, घृत जैसे—पौष्टिक और मधु जैसे रोग नाशक मधुर योग भी रहने चाहिये जिससे वे प्रसन्न होकर शुभ आशीर्वाद दे शुभ चिन्तन कर सके विद्या के अध्ययनाध्यापन और प्रचार मे निरन्तर उन्नतिशील

‡ कापोति के परिवार मे कापोति और उसकी पत्नी तथा उसका पुत्र और पुत्रवधू ये चार थे। दुर्भिक्ष पड गया छ. दिन भूखे रह कर व्यतीत किए छठे दिन कोई सेर भर सत्तू प्राप्त हुआ, पाव-पाव प्रत्येक के लिए हुआ। खाने के लिए बैठे ही थे कि एक विद्वान् ब्राह्मण ने आकर कहा अरे मैं बारह दिन का भूखा हू अन्न चाहिए ऐसा कहा। कापोति ने सोचा कि विद्वान् ब्राह्मण है और बारह दिन का भूखा है मैं तो छ दिन का ही भूखा

श्रोत्रिय विद्वान् भी एक यज्ञ है जैसे यज्ञ के अन्दर डालने से वह यज्ञिक अन्न के साथ स्वादुतर पौष्टिक रोग नाशक मिष्ट आदि पदार्थ विश्व कल्याण को सिद्ध करता है एव श्रोत्रिय के भोजन मे उक्त पदार्थ समर्पित करने से वह विश्व का कल्याण साधता है एव यज्ञ का जो फल उन वस्तुओ के यजन से होता है वैसा ही फल श्रोत्रिय के अन्दर भोजन द्वारा प्रक्षेपण से वह यज्ञ फल प्राप्त होता है। यज्ञ के धन-धान्य आदि वस्तुओ का परमार्थ फल यज्ञ मे प्रक्षेपण से प्राप्त होता है। उदर मे जाने से ही है। अन्यथा सग्रह तो अशान्ति का कारण है। वेद मे कहा है कि धन-सम्पत्तियाँ तो भूमियाँ बदलने वाली हुआ करती हैं सदा एक के पास नही रहती जैसे गाड़ी का पहिया भूमियाँ बदलता रहता है । लाभ तो उनका सदुपयोग ही है। वेद में कहा है जो धन-धान्य का उपार्जन कर्ता स्वयं न भोगे और जो योग्य जनों योग्य स्थानो मे धन-धान्य प्रदान न करता हो वह मनुष्य सज्जनो मे नीच निकृष्ट चोर है चोर हरण करता है दूसरे की अधिकृत वस्तु को परन्तु अदाता भी तो योग्य के अधिकार का हरण करता है जो विद्या का प्रचार करता है उसकी विद्या में अन्यो का भी अधिकार विद्या लाभ लेने का जैसे है वैसे ही धन-धान्यवान् के धन-धान्य मे विद्यावान् जनों का भी अधिकार है यदि विद्यावान् जन भी अपने निर्वाहार्थ उसीभाँति धन-धान्य के उपार्जन मे लग जावे तो विद्या का उपार्जन न कर सके पुनः विद्या का प्रसार रुक जावे विद्या का लोप हो जावे अविद्यान्धकार मे पड कर यथावत् मानवता के सुख और शान्ति से वचित होकर मानव समाज का ह्रास और नाश हो जावे। छान्दोग्योपनिषद् मे कहा गया है कि मानव जो धनधान्य प्राप्त करता है वह कही बाहिर से साथ नहीं लाया ईश्वर की सृष्टि मे से पाया ईश्वर का ही है जो अपने तक ही रखता है ईश्वर के प्रति प्रदान नही करता उसके आदेश का विद्याधर्म का प्रचार विस्तार करने वाले को नही देता वह ईश्वर का कृतघ्न है कृतघ्नता के पाप का भागी है। अतः उदारता के मार्ग को अपना कर श्रोत्रिय विद्वानो विद्यास्थानो, गुरुकुल विद्यालयो मे धनधान्य का समर्पण करना चाहिए।

जीता है वह मनुष्य जो औरो के लिये जीए ।
उसका भी क्या जीना है जो अपने लिए जीए ।।

क्योकि "जन्म केवल मात्मार्थं नास्माक जगतीतले" (हितोक्तिः) हमारा जीवन केवल अपने लिए ही जगती तल पर नही है। स्वार्थमय जीवन ही मानव जीवन नहीं वह तो पशु जीवन ही है।

———

हू यह मुझसे अधिक अन्न का पात्र है अपना भाग उसके आगे रख दिया वह खा कर बोला भूख नहीं मिटी, पुनः कापोति की पत्नी ने अपना भाग दे दिया उसे भी खाकर बोला भूख नही मिटी, पुनः पुत्र ने अपना भाग दे दिया उसे भी खा गया और बोला अभी भूख शान्त नही हुई, तब पुत्रवधू ने अपना भाग दे दिया उसे खाकर बोला मै अब तृप्त हो गया और तृप्त होकर शुभ आशीर्वाद देकर चला गया। यह है विद्वान् या अतिथि का सत्कार वैदिक सस्कृति मे।

† "यज्ञो वा अर्यमा" (तै० २।३।५४) "नार्यमण पुष्यति नो सखाय केवलाघो भवति केवलादी" (ऋ० १०। ११७।६) अर्यमा विद्वान् अतिथि।

‡ अतएव अतिथि प्रथम सत्कार करना चाहिए अन्यत्र शास्त्रो मे भी कहा है कि "अग्रे भोजयदतिथीनन्तर्वतीरनन्तरम् बाल वृद्धान् तथा दीनान् व्याधितांश्च विशेषतः।।"

अर्थात् प्रथम अतिथियो को खिलावे फिर गर्भवतियो को पुनः बालक वृद्ध अंगभंग वालो और रोगियो को सबके पश्चात्गृहस्थ भोजन खावे।

‡ "प्रणीयादिन्नाधमानाय तव्यान् द्राघीयांसमनुपश्येत् पन्थाम्। ओ हि वर्तन्ते रथ्येव चक्रा अन्यमन्यमुपतिष्ठन्त रायः।।" (ऋ० १०।११७।५)

‡ यश्च पणिरघुरिजिष्ठ्यो यश्च देवाँ अदा शुरिः। धीराणा शश्वतामहं तदपागिति शुश्रुम।।

(अथर्व० २०।१२८।४)

सा हि त्य स मा लो च ना

बाल--संस्कृति सुधा

लेखक और प्रकाशक स्वामी ब्रह्ममुनि परिव्राजक
विद्यामार्तण्ड गुरुकुल कांगडी हरिद्वार
पुस्तक मिलने का पता—सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि
सभा दयानन्द भवन
राम लीला मैदान नई दिल्ली
पृष्ठ सं ५२, $\frac{२० \times ३०}{१६}$
मूल्य ५० नए पैसे

इस पुस्तक मे बालको के उत्थान और विकास के उपाय बताए गए है। बालक किस प्रकार के खान-पान रहन-सहन और व्यायाम से स्वस्थ हो सकता है, किस प्रकार के आचरण से शिष्ट, सदाचारी, अनुशासन—प्रिय, विद्यानुरागी, मेधावी, परिश्रमी सद व्यवहार कुशल और ईश्वर विश्वासी बन सकता है आदि २ विषयो को वेदो, शास्त्रो, स्मृतियो एवं नीति ग्रथो के प्रमाण देकर भली भाति स्पष्ट किया गया है। पुस्तक बालको और विद्यार्थियो के लिए उपादेय है।

अभ्यास और वैराग्य

लेखक और प्रकाशक—स्वामी ब्रह्ममुनि परिव्राजक
विद्यामार्तण्ड गुरुकुल कागडी
हरिद्वार (सहारनपुर)
मिलने का स्थान—सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा
दयानन्द भवन नई दिल्ली,
पृष्ठ १६० $\frac{२० \times ३०}{१६}$
मूल्य—१रुपया ६५ नया पैसा

इस पुस्तक मे योगदर्शनादि दर्शनो, उपनिषदो तथा वेदो से अभ्यास और वैराग्य विषय को लेकर उनका विश्लेषण किया गया है। विषय अपने मे पूर्ण तथा अनुपम है। यह पुस्तक स्वाध्याय और दैनिक सत्संग मे कथा प्रवचनादि के लिए उपयुक्त है।

आत्माका स्वाभाविक प्रयत्न गुण ज्ञान और प्रयत्न है इसके प्रमाण मे कोई वेदमन्त्र दे दिया जाता तो अच्छा होता।

महिला-जगत

भारतीय नारी की लोकोत्तर झाँकी

श्री रामनिवास शर्मा

भारतीय नारी वस्तुतः माधुर्य मे शरच्चन्द्र और ऐश्वर्य मे प्रचन्ड मार्त्तण्ड की भी स्पर्धा की वस्तु है। जीवन के इन दोनो तत्त्वो का विश्लेषणात्मक साहित्यिक मूर्त रूप कवि के अबला-सबलात्मक निम्नलिखित मनोज्ञ चित्रण मे पढिए।

अबला—अबला जीवन! हाय तुम्हारी यही कहानी।
आँचल मे है दूध और आँखो मे पानी॥

सबला—सबला जीवन! सत्य तुम्हारी यही प्रणाली।
हाथों मे है मृत्यु और आँखो मे काली॥

यह है भारतीय नारी का स्वरूप—कोमलता और कठोरता के विलक्षण रूप। भारतीय नारी देखने मे प्राकृतिक मालूम होती है परन्तु है वह असल मे विशुद्ध पारमार्थिक तत्त्वो की बनी हुई वस्तु। तभी तो वह अपने माता, बहिन, पुत्री, पत्नी आदि विविध और विभिन्न रूपो मे आज भी पूज्या है।

कुमार-संभव में हिन्दू-नारी की इसी रूपरेखा की कालिदास ने इन शब्दो मे स्तुति की है .—

इयेष सा कर्तु मवन्ध्यरूपता
समाधि मास्थाय तपोभिरात्मनः।
अवाप्यते वा कथमन्यथा द्वयं
तथा विधं प्रेम पतिश्च तादृशः॥

तप से सौन्दर्य को सफल बनाने की इच्छा क्या पवित्रता के विश्व की भी अनोखी बात नही है? दार्शनिकता की भी सीमा से बाहर की वस्तु नही है? परन्तु भारतीय नारी की तो यह नित्य की सुलभ लोक-परम्परा है।

यही कारण है कि म० Amiel के शब्दो मे आर्य-जाति की आज की पतनोन्मुख अवस्था मे भी यही आर्योचित सम्पूर्ण सुख-सौभाग्य को सदैव अपने उत्तरीय मे संभाले रहती हैं।

भारत की नारी अपने प्रत्येक प्रकार, रूप, और दशा मे आज भी अलङ्कार का विषय बनी हुई है। उनकी महनीय विलक्षणता तो इसी मे सन्निहित है कि वह प्रवृत्ति और निवृत्ति दोनो क्षेत्रो मे सती, साध्वी और तपस्विनी ही बनी हुई है। उसके जीवन का प्रत्येक क्षण तप, त्याग और बलिदान की अनन्त गाथाओ का विषय है।

यदि आधुनिक दृष्टि से भी वह पूर्णतः शिक्षित होकर अपने वैदिक विशुद्ध श्रेयात्मक रूप मे खडी हो जाय तो बात की बात मे यह समाज की विचारात्मक और रचनात्मक सभी कठिन समस्याओ को हल कर सकती है।

विदेशी विद्वानो ने भी भारतीय नारी की प्रशंसा करने का सफल यत्न किया है। कुछ विद्वानों के उद्गार इस प्रकार है—

(१) सह धार्मिकता के आदर्श को पूर्णत. निर्वाह करने वाली देवियाँ भारत के सिवा अन्यत्र नहीं मिल सकतीं। जर्मन यात्री ग्रास्टिजर एफ

(२) भारतीय स्त्रियाँ सर्व प्रथम अपने गौरवान्वित साहस का दावा कर सकती है। सर एफ० टी० वार्ट

(३) साधारणत भारतीय देवियाँ पुरुषों से अधिक शुद्ध, कार्यकुशल और निपुण होती है।
जा० ए० बाप मॅन

(४) ससार में किसी भी देश की स्त्रियाँ सुन्दरता के क्षेत्र में भारतीय महिलाओं की प्रतियोगिता में खड़ी नहीं हो सकतीं। सर फ्री स्काइन

भारतीय नारी आदर्श की प्रतीक जनक-नन्दिनी सीता के विषय मे मिस मेरी स्काट लिखती हैं—

"सीता स्त्रीत्व का वह मधुरतम आदर्श है जिसका मैंने पहले कभी अध्ययन नहीं किया था।"

कुछ एक अभिनन्दनीय प्रसंग युरोपियन बन्धुओ के आंखो देखे इस प्रकार हैं —

१. किसी भी जाति के इतिहास में राजपूत महिलाओ की भाँति अनुराग एव देश-प्रेम के इतने अधिक ज्वलन्त उदाहरण नही मिल सकते।

२. हिन्दू बच्चे युरोपियन बच्चो की अपेक्षा बहुत तेज और निपुण होते हैं। इसका कारण उनकी माताएँ ही हैं।

भारतीय नारी की विशेषता के अभिव्यंजक बूँदी की महारानी और राजमाता के निम्नलिखित संवाद पर विचार कीजिए :—

महारानी ने महलो मे 'राव' की मृत्यु का समाचार सुनकर चिल्लाकर पूछा—"क्या वह अकेला ही चल बसा?"

राजमाता—कभी नही, वह बालक जिसने इन छातियो का दूध पिया है रणक्षेत्र से कभी अकेला प्रस्थान नही कर सकता (अर्थात् वह दूसरों को मार कर मरा होगा)।

यह कहते हुए माता का मस्तक गर्व से ऊँचा हो गया। उनकी छातियों से दूध बह निकला।

यह सत्य है कि राजपूत अपने शत्रुओ की संख्या नही पूछते थे अपितु उत्सुकता से उनका पता पूछते थे।

यह सब पुण्यश्लोका भारतीय नारियो के ही दूध अथवा भारत के जल-वायु के ओज-तेज का ही प्रभाव था।

यदि आज भी भारत की नारी अपने स्वरूप को अच्छी तरह समझ लें तो वह क्या नही कर सकती? हमारी समझ मे तो वह नाशोन्मुख ससार के धरातल को बहुत कुछ ऊँचा उठा सकती है और भारत को तो वह न जाने क्या और कैसा बना सकती है। सच तो यह है कि आज भी वह ससार को पवित्रता, कर्त्तव्य-परायणता और वास्तविक वीरता का पाठ पढा सकती है।"

भारतीय नारी के सच्चे लोकोत्तर सपूत श्री राम के लिए देखिए आदि कवि वाल्मीकि इस तरह लिखते हे :—

"राम धनुष पर एक ही बार बाण चढाते हैं।"

यह है भारतीय नारी और उसके सपूतो के विश्व-दुर्लभ कारनामे। आज भी इसी से आर्य-जाति जीवित है और भविष्य मे भी इन्ही से हमे सब कुछ आशा है।

———

महिला-जगत

विविध समाचार

भारत में वेश्यावृत्ति

जम्मू और काश्मीर राज्य का दावा है कि उस राज्य में वेश्यावृत्ति नहीं है। त्रिपुरा, मणिपुर, अंडमान, निकोबार लंकाद्वीप मिनीकाओ और अमिन्दिवी द्वीपों में भी वेश्या-वृत्ति नहीं है।

३० दिसम्बर १६५६ को स्त्रियों और लडकीयों के अनैतिक व्यापार उन्मूल, न विधेयक को राष्ट्रपति की स्वीकृति प्राप्त हुई थी। १ मई १६५८ को यह कानून समस्त देश में प्रचलित हुआ। इस वर्ष समस्त देश में ३०३५ नारी रक्षण गृह स्थापित हुए। केन्द्रीय गृह मंत्री को विविध राज्य सरकारों ने इस विधेयक के सम्बन्ध में कुछ सुझाव भेजे हैं।

फिल्म संसार और महिलाएं

१० जुलाई को महिलाओं का एक शिष्ट मंडल प्रधान मंत्री प० जवाहरलाल नेहरू से मिला और माग की कि फिल्मो का कड़ा सेंसर होना चाहिए। बुरे चित्रो की उत्पत्ति को रोकने के लिए उन्होंने सुझाव दिया कि फिल्मो के प्रचलन से पूर्व उनका भली भांति निरीक्षण कर लिया जाया करे और सेंसर बोर्ड में महिलाओं को प्रतिनिधित्व मिलना चाहिए। उन्होंने यह भी कहा कि सिनेमा प्रजा के शिक्षण का अत्यन्त प्रभावशाली साधन है उसमें हमारे धर्म और पतिनिष्ठा की मर्यादा की रक्षा होनी चाहिए। इस शिष्टमंडल का नेतृत्व श्री मती रामेश्वरी नेहरू ने किया था और इसमे डा० सुशीला नैय्यर एम० पी, श्री मती रक्षाशरण और श्रीमती तारा बाई सम्मिलित थीं।

अल अज़हर विश्वविद्यालय

अन्ततोगत्वा स्त्रियां संसार की प्राचीनतम मुस्लिम संस्था अल अज़हर (मिश्र में स्थापित) विश्वविद्यालय की दीवारों में छेद करने में समर्थ हो गई हैं। गत १००० वर्ष से इस विश्वविद्यालय मे लड़को के अतिरिक्त किसी लड़की को प्रवेश न मिल सका था। संसार के विभिन्न देशो के हजारो मुस्लिम लडको ने इस विद्यालय से उपाधियां प्राप्त की। कैरो के विश्व विद्यालयो की महिलाओं ने इस प्रतिबन्ध का विरोध किया और कहा कि इस्लाम के मन्त-व्यानुसार स्त्रियां भी पुरुष के समान इस विश्वविद्यालय मे पढ़ने की अधिकारिणी हैं। अक्टूबर ही से लडकियां भी लडको के साथ स्नातक परीक्षा के लिए इस विश्वविद्यालय मे पढ़ सकेंगी

पाकिस्तान का विवाह कानून

पाकिस्तान की महिलायें परम्परा की दीवारों को तोडने मे कृतकार्य हो गई हैं।

६ वर्ष के घोर संघर्ष और आन्दोलन के पश्चात् उन्होंने एक कानून बनवाकर छोडा जिसके अनुसार तलाक पर प्रतिबन्ध लग गया है और बहु पत्नीवाद प्रथा का पनपना असंभव बना दिया गया है। मुस्लिम पुरुषों ने और अखिल पाकिस्तान महिला एसोसियेशन ने कुरान के कठोर आदेशो पर प्रहार किया जिनके अनुसार पुरुष एक समय मे एक से अधिक पत्नियां रख सकता है परन्तु शर्त यह है कि वह सबके साथ समान न्याय का व्यवहार करे।

अब पाकिस्तान सरकार ने परम्पराओं की उपेक्षा करदी है। नवीन-मुस्लिम परिवार विधेयक अध्यादेश के आधीन यदि कोई पति दूसरी पत्नी रखना चाहेगा तो उसे अपनी वर्तमान पत्नी को 'सहमति' प्राप्त करनी होगी और इसके बाद पञ्चायत कौंसिल की अनुमति जिसका कार्य यह देखना होगा है कि नया विवाह आवश्यक और न्याय संगत है या नही। यह कार्यवाही न होने पर पति को वर्तमान पत्नी को एक मुश्त मेहर का धन देना होगा (२) १ वर्ष कैद या १००० शि० या दोनो दण्ड मिलेंगे (३) पहली पत्नी के लिए तलाक देना सुलभ करना होगा।

मनोरंजक हास्य

कालेज की एक लडकी ने अपने पिता से पूछा पिता जी क्या आपने मेरा परीक्षाफल देखा है ? फिलासफी और अर्थशास्त्र में मैंने विशेषता (डिस्टिंक्शन) प्राप्त की है। क्या यह सफलता शानदार नही है ? पिता ने कहा बेटी वस्तुत "यह सफलता शानदार है परन्तु यदि तुम्हारा भावी पति खाना बनाने, सीने-पिरोने और बच्चो का पालन-पोषण करने मे डिस्टिंक्शन प्राप्त करे तो यह और भी अधिक शानदार रहेगा।"

यह है स्त्रियो की वर्तमान त्रुटिपूर्ण शिक्षा-पद्धति पर करारा प्रहार।

वैदिक युग, धार्मिक जीवन

श्री प्रो० जनमेजय विद्यालकार, कानपुर

वैदिक युग बहुत ही प्राचीन युग है, इसलिए उस युग का हाल-चाल जानने के लिए सबसे अच्छे साधन हमारे पास स्वय वेद ही है। इतनी प्राचीन पुस्तक ससार मे अन्य कोई नही है जितनी कि वेद।

वेदो के स्वाध्याय से हमे पता लगता है कि उस युग मे लोगो का जीवन बहुत ही सरल था। वह लोग धर्मात्मा थे और ईश्वर विश्वासी थे। वे लोग एक ईश्वर को मानते थे और उसे सर्वशक्तिमान् तथा निराकार मानते थे। यजुर्वेद के ४०वे अध्याय का ८वां मन्त्र इस विषय मे विशेष द्रष्टव्य है।

ओ३म् सपर्यगाच्छुक्रमकायमव्रणमस्नाविरᳬशुद्धमपापविद्धम्।
कविर्मनीषी परिभूः स्वयंभुर्याथातथ्यतोऽर्थान् व्यदधाच्छा
श्वतीभ्य समाम्य. ॥

इसका अर्थ यह है कि, "ईश्वर सर्वव्यापक है, कल्याणकारी, उसके कोई शरीर नही है, शरीर ही जब नही है तब उसमे रोग, फोडा, फुन्सी आदि का तो प्रश्न ही पैदा नही हो सकता। उसमे मास हड्डी नस नाडी आदि भी कुछ नही है, वह बिल्कुल शुद्ध है, सब पापो से रहित है। वह क्रांतदर्शी, विद्वान्, कवि, विचारशील, स्वयं उत्पन्न होने वाला, सर्वव्यापक है। उसके कोई माता पिता आदि नही हैं। वह अनादिकाल से यथावत् सृष्टि की उत्पत्ति पालन और विनाश करने वाला है।"

इसी विषय मे दो अन्य मन्त्र भी विशेष ध्यान देने के योग्य हैं।

ओ३म् तदेवाग्निस्तदादित्यस्तद् वायुस्तदु चन्द्रमाः।
तदेव शुक्रं तद् ब्रह्म ता आपः स. प्रजापतिः॥

ओ३म् इन्द्रं मित्रं वरुणमग्नि माहुरथो दिव्य स.
सुपर्णोगरुत्मान्।
एक सद्विप्रा बहुधा वदन्ति अग्नि यमं मातरिश्वानमाहुः॥

यह दोनो मन्त्र ऋग्वेद के हैं। कमश. इनका अर्थ यह है कि 'वही एक ईश्वर अग्नि, सूर्य, वायु, चन्द्रमा, शुक्र,

ब्रह्मा, जल, प्रजापति आदि नामो से पुकारा जाता है।" "उसी एक निराकार ईश्वर को विद्वान् लोग इन्द्र, मित्र, वरुण, अग्नि, यम आदि भिन्न-भिन्न नामो से स्मरण करते हैं।" इन मन्त्रो के आधार पर यह निश्चय पूर्वक कहा जा सकता है कि वैदिक काल मे लोग एकेश्वर वादी थे। उसी एक ईश्वर को वह लोग ब्रह्मा, विष्णु, महेश आदि भिन्न-भिन्न नामो से स्मरण करते थे। ब्रह्मा, विष्णु महेश आदि कोई अलग देवता वह लोग नही मानते थे। वह लोग उसी एक निराकार ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना किया करते थे और उसी को अनेक नामो से पुकारते थे।

दूसरी बात जो उस युग की अपनी एक विशेषता थी वह यह थी कि उस समय ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य शूद्र तथा स्त्रियाँ सब समान रूप से वेद विद्या को पढते थे। किसी प्रकार का भेदभाव उन लोगो मे जन्म के कारण नही माना जाता था। वेद पर सबका समानाधिकार था। यह भी कहा जा सकता है कि वेद का पढना-पढाना, सुनना-सुनाना उस युग मे सबके लिए एक आवश्यक कर्त्तव्य था। इस विषय मे यजुर्वेद का एक मन्त्र बहुत महत्वपूर्ण है।

ओ३म् यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः।
ब्रह्मराजन्याभ्यां शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय च॥

इस वेदमन्त्र का अर्थ यह है कि, "मैं परमेश्वर इस कल्याणकारी वेदवाणी को जिस प्रकार ब्राह्मणों क्षत्रिय और वैश्यो के लिए प्रकट कर रहा हू उसी प्रकार शूद्रों के लिए भी और अतिशूद्र भृत्य आदि के लिए भी प्रकट कर रहा हू।" सो यही कारण है कि वेदो के मन्त्रो के पूरे-पूरे ज्ञान को प्राप्त करने वाले जिन वैदिक ऋषियो के नाम आज भी उन-उन मन्त्रो से पहले छपे हुए मिलते हैं उन महात्माओ मे कई स्त्रियाँ भी हैं और कई वह ऋषि लोग भी है जिनका जन्म नीचे कहे जाने वाले कुलो मे हुआ था। सक्षेप मे यह कहा जा सकता है कि वैदिक युग मे जन्म के कारण कोई भी उच्च अथवा नीच नही समझा जाता था। सब को वेद पढने तथा सब प्रकार की उन्नति करने की पूरी-पूरी सुविधायें प्राप्त थी।

तीसरी धार्मिक विशेषता उस युग मे यह थी कि वह लोग गोहत्या नही करते थे, गोमांस नही खाते थे, यज्ञो मे भी पशु हिंसा नही होती थी, वह लोग शाकाहारी थे। वेदो मे गाय के लिए एक शब्द बार-बार आता है, "अघ्न्या"। इस अघ्न्या शब्द का अर्थ है, "न मारने योग्य" इसी प्रकार एक दूसरा शब्द है "अदिति"। अदिति शब्द भी गौ के लिए बार-बार वेदो मे आता है। इसका अर्थ है, "न काटने योग्य"। यह दोनों शब्द ही इस बात के साक्षी है कि उस काल मे गौ को "न मारने योग्य" तथा "न काटने योग्य" माना जाता था। इसी प्रकार यज्ञ के लिए "अध्वर" शब्द बार-बार वेदो मे प्रयुक्त होता है। अध्वर का अर्थ है, "जहाँ हिंसा न की जाय"। यह बडी ही आश्चर्य की और खेद की बात है कि इन सरल सीधे संस्कृत शब्दो के अर्थों पर जरा भी ध्यान न देकर कुछ लोगो ने वेदो मे गोहत्या और गोमासभक्षण का विधान सिद्ध करने का कैसे दुःसाहस किया और कैसे लिख दिया कि वैदिक युग से यज्ञो मे पशुहिंसा होती थी। इस विषय मे ऋग्वेद का एक महत्वपूर्ण मन्त्र हम यहाँ उद्धृत करते हैं।

ओ३म् माता रुद्राणां दुहिता वसूनां स्वसाऽदित्या नाममृतस्यनाभिः।
प्र नु वोचं चिकितुषे जनाय मा गांमनागामदितिं वधिष्ठ॥

इसका अर्थ सक्षेप मे यह है कि, "गौ बहुत उपयोगी तथा पवित्र पशु है, दूध के रूप मे अमृत की प्राप्ति हमे इसी पशु से होती है। गौ निर्दोष और निष्पाप प्राणी, गाय को मत मारो।"

इसी प्रकार अथर्ववेद का एक मन्त्र है कि

मुग्धा देवाः उत शुना यजन्त उत गोरङ्गैः पुरुधायजन्त ।

इसका अर्थ है कि, "उस याज्ञिक को महामूर्ख समझना चाहिए जो कुत्ते से अथवा गौ से यज्ञ करता है।"

चतुर्थ विशेषता वैदिक काल की यह है कि यद्यपि उनका जीवन बहुत ही सरल था परन्तु यह नही समझना चाहिए कि राजनीति आदि कुटिल विषयो को वह समझते ही नही थे। बात यह है कि यदि सम्पूर्ण जनता ही सरल हो जाए तो राजनीति मे भी झूठ और कुटिलता की आवश्यकता ही नहीं रह जाती है। वैदिक काल से राष्ट्रो की रक्षा के मूलभूत सिद्धान्तो पर बहुत जोर दिया जाता था, वह मूलभूत सिद्धान्त ही उनकी राजनीति थी। वेद का एक मन्त्र हैं कि,

ओ३म् सत्यंबृहद् ऋतमुग्रं दीक्षा तपो ब्रह्म यज्ञ पृथिवी धारयन्ति ।

अर्थात्, 'सत्य से, ज्ञान से, दृढता और प्रयत्न से, तपस्या से और सगठन से, राष्ट्र की रक्षा होती है।"

किसी एक राष्ट्र विशेष की ही नही प्रत्युत सम्पूर्ण पृथिवी की रक्षा इन्ही वस्तुओ से होती है। विशेष तौर पर ध्यान देने की बात इस विषय मे यह है कि भौतिक उन्नतियो की कही भी उपेक्षा वेद मे नहीं की गई परन्तु मुख्य ध्यान हमेशा ही सदाचार पर और आत्मिक उन्नति पर दिया गया है। सत्य, सदाचार, तपस्या, संगठन और आत्मिक उन्नति ही उस वैदिक काल मे लोगो की राजनीति भी थी।

वैदिक धर्म, जो बाद में बहुत ही आडम्बरपूर्ण और पेचीदा बना दिया गया था और जिसके विरोध मे ही महात्मा बुद्ध और महात्मा महावीर जैसे महापुरुषो को बाद में धार्मिक क्रान्ति करनी ही पड़ी थी, उस वैदिक युग में बहुत ही सरल था। आडम्बर रहित, सदाचारपूर्ण, सत्यपरायण, प्राणिमात्र के लिए हितकारी था। जातपात की प्रथा उस काल मे नही थी। भोजन, वस्त्र, निवास, शिक्षा, वेदाध्ययन आदि मे सभी का समानाधिकार था। ऊच-नीच की भावना प्राचीन वैदिक आर्यों मे जरा भी नहीं थी। स्त्रियों को बहुत स्वतन्त्रता थी, वह पुरुषों के समान ही समझी जाती थी। जीवन के किसी भी क्षेत्र में स्त्रिया पुरुषो की समानता कर सकती थी। विवाह के मामले मे भी उन्हें पूर्ण स्वतन्त्रता थी। वर तथा कन्या की सहमति हो जाने पर बड़े लोग प्रसन्नता पूर्वक उन्हे परस्पर विवाह करने की अनुमति दे देते थे। विवाह यौवन काल मे ही होता था। बाल विवाह नही होते थे। जात-पांत का पचड़ा न होने के कारण वैदिक युग के युवक युवतियो को अपना जीवन सगी चुनने मे बडी सुगमता थी, उनके परस्पर चुनाव का क्षेत्र बहुत विस्तृत था। ससुराल जाने पर स्त्री को "साम्राज्ञी" अर्थात् महारानी कहकर सम्बोधित किया जाता था और वहाँ उसका खूब स्वागत, सत्कार होता था।

वैदिक युग मे लोगो के अरमान क्या थे, उनकी भावनाए क्या थी, इच्छाएं क्या थी, उनके भाव क्या थे, इन सब बातो को जानने के लिए आवश्यक है कि हम उस समय की प्रार्थनाओ को विशेष तौर पर ध्यानपूर्वक देखे। गायत्री मन्त्र जो वस्तुत. एक प्रार्थना मन्त्र ही है, इस विषय मे विशेष द्रष्टव्य है।

ओ३म् भूर्भुव. स्व. तत्सवितुर्वरेण्य भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो न. प्रचोदयात् ।

इसका अर्थ यह है कि, "हम लोग एक निराकार ईश्वर का ध्यान करते है जो प्राणस्वरूप, दु खविनाशक, सुख स्वरूप, सब संसारो को रचने वाला, सबसे अधिक प्रिय, सब उत्तम गुणो से परिपूर्ण है ऐसा वह ईश्वर हम सब की बुद्धियो को प्रेरणा करे और हमारा मार्ग-प्रदर्शन करे।" वैदिक युग की अन्य प्रार्थनाएं भी प्राय. इस जैसी ही हैं।

इन सब मन्त्रो के आधार पर निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि वैदिक युग के लोग धर्मात्मा एकेश्वरवादी, उच्च विचारो वाले, सदाचारी, निःस्वार्थ, और सरल थे, उनका हृदय विशाल था, वह सच्चे थे और ज्ञानी थे। उनका जीवन बहुत सुखी था।

(अखिल भारतीय आकाशवाणी के सौजन्य से)

वैदिक-त्रिक

श्री सूरजप्रकाश एम० ए०

प्रभु की कृपा से ही, होते पूर्ण काम है।
उसकी ही भक्ति मे, आनन्द सब समाया है ॥ १ ॥
गुण कर्म स्वभाव से, होते अनेक नाम है।
वेदों द्वारा "ओम" नाम, श्रेष्ठ एक बताया है ॥ २ ॥
होता है सर्वत्र द्वन्द्व, वन्ध मोक्ष नाम है।
यौगिक रूढ़ि अर्थो से, दो का भेद बताया है ॥ ३ ॥
ईश्वर जीव प्रकृति ही, पदार्थ तीन नाम है।
सत चित् आनन्द ही, मुख्य गुण बताया है ॥ ४ ॥
ज्ञान कर्म उपासना ही, विद्याओं का नाम है।
जाति आयु भोग ही, कर्म फल बताया है ॥ ५ ॥
ब्रह्मा विष्णु महेश ही, प्रभु शक्ति नाम है।
कर्म भोग उभय ही, योनि ही बताया है ॥ ६ ॥
आकाश, पृथ्वी, पाताल ही, लोक तीन नाम है।
भू भुर्व. स्वः को ही, महाव्हृति बताया है ॥ ७ ॥
स्तुति प्रार्थना उपासना ही, भक्ति का नाम है।
काल स्थान ज्ञान को ही, दूरी ही बताया है ॥ ८ ॥
सत रज तम भी, तीन गुणों के नाम है।
मल विक्षेप आवरण को, मनका दोष बताया है ॥ ९ ॥
मन वचन कर्म से, करना सब शुद्ध काम है।
आर्यो के लिये करना, वैदिक संध्या बताया है ॥ १० ॥

स्वाध्याय का पृष्ठ

पृथ्वी की गुरुत्वाकर्षण शक्ति–

पृथ्वी मे गुरुत्वाकर्षण शक्ति है, इसका पता सर्व प्रथम आइजक न्यूटन ने एक छोटी-सी घटना से लगाया, ऐसा कहा जाता है। कहते हैं कि एक दिन न्यूटन अपने सेब के बाग मे बैठा था तभी एक सेब वृक्ष की टहनी से टूट कर नीचे गिरा। न्यूटन सोचने लगा कि यह सेब नीचे न गिर कर ऊपर क्यो न उड गया। गम्भीर मन्थन के उपरान्त उसने यह मत निर्धारित किया कि पृथ्वी मे एक ऐसी शक्ति है जो प्रत्येक वस्तु को अपनी ओर आकृष्ट कर लेती है। उसका नाम उसने रखा पावर आव ग्रेवीटेशन। यूरोप के लोगो को यह ज्ञान नया था। इस कारण वे न्यूटन को यदि इसका आविष्कारक कहे तो ठीक है किन्तु भारत के लिए यह कोई नवीन आविष्कार नही। वेद ने 'सविता मन्त्रै." मन्त्र द्वारा हमे यह रहस्य बताया हुआ है और इसी के आधार पर भारतीय ज्योतिष-शास्त्र के महान् विद्वान् भास्कराचार्य ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ 'सिद्धान्त शिरोमणि के' एक प्राचीन श्लोक उद्धृत किया है जो इस प्रकार है—

'आकृष्ट शक्तिश्च महीतया यत स्वस्थं गुरु स्वाभिमुखी करोति। आकृष्यते तत्पततीव भाति समे समन्तात कुरिय प्रतीतिः।

इसका भाव यह है कि सब पदार्थों मे एक आकर्षण शक्ति विद्यमान् है इसीलिए आकाशस्थ पदार्थ को यह पृथ्वी अपनी ओर खीचती है। इसी कारण वह गिरता हुआ जान पडता है।

ब्राह्म गुण और क्षात्र गुण

आर्य जाति मे श्री कृष्ण और श्रीराम दोनो की पूजा होती है। इसका यही कारण था कि जहाँ राम मर्यादा पुरुषोत्तम थे, वहाँ धनुर्धारी भी थे। जहाँ श्रीकृष्ण योगेश्वर थे वहाँ सुदर्शन चक्रधारी भी थे। इन दोनो मे ब्राह्म और क्षात्र दोनो शक्तिया एक साथ विद्यमान थी। इस लिए वे जीवन मे सफल हुए और आर्य जाति के आदर्श माने गए। वाल्मीकि रामायण मे लिखा है कि राम जहाँ वेद वेदाङ्गो के तत्त्व को जानने वाले थे वहा धनुर्वेद शास्त्र मे भी पूरे निपुण थे।

वेद वेदांग तत्वज्ञो धनुर्वेदे च निष्ठित ॥

श्रीकृष्ण महाराज भी अपने समय के सबसे महान् विद्वान् और योद्धा थे। राजसूय यज्ञ मे जब यह विचार हुआ कि इस यज्ञ मे सबसे श्रेष्ठकिसे माना जावे उस समय भीष्म पितामह ने भरी सभा मे यह कहा कि इस युग मे श्रीकृष्ण सबसे श्रेष्ठ व्यक्ति हैं। वे वेद-विज्ञान के जानने वाले है, बल, चातुर्य, शूरवीरता और बुद्धिमत्ता मे सबसे अधिक हैं इन्हे ही पूजा का अर्घ मिलना चाहिए।

वेद वेदांग विज्ञानं बल चाप्यधिक तथा नृणां लोके हि को ऽप्योऽस्ति विशिष्ट केशवादृते।

म० भा० सभापर्व, अ ३८, १९, २०

इन प्रमाणों और दृष्टान्तों से सिद्ध होता कि जो भी मनुष्य अथवा जाति मानपूर्वक अपने जीवन को व्यतीत करना चाहती है उसे बुद्धि और बल दोनों को साथ २ अपने मे धारण करना चाहिये। क्षात्र बलके बिना ब्राह्म बल और ब्राह्म बल के बिना क्षात्र बल अधूरा है। महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश के छठे समुल्लास के अन्त मे ठीक ही लिखा है —

"**जो केवल आत्मा का बल अर्थात् विद्या, ज्ञान बढ़ाए जाय और शरीर का बल न बढ़ावे तो एक ही बलवान् पुरुष ज्ञानी और सैकड़ों विद्वान् को जीत सकता है। और** जो केवल शरीर का बल बढ़ाया जाय आत्मा का नही तो राज्य पालन-की उत्तम व्यवस्था बिना विद्या के कभी नही हो सकती। बिना व्यवस्था के सब आपस मे फूट, विरोध लडाई-झगडा करके नष्ट-भ्रष्ट हो जाए" इसलिए सर्वदा शरीर और आत्मा के बल को बढाते रहना चाहिए।"

भोगवाद का वात चक्र

जब महर्षि कण्व की आज्ञा से उनके दो प्रिय शिष्य शारङ्गरव और शारद्वत शकुन्तला देवी को महाराजा दुष्यन्त के राजभवन मे पहुँचाने के हेतु हस्तिनापुर नगर मे प्रवेश करते है तो शारङ्गरव कहता है —

महाभाग. कामं नरपतिरभिन्न स्थितिरसौ।
न कश्चिद्वर्णानामपथमपकृष्टोऽपि भजते॥
तथा पीदं शश्वत्परिचित विविक्ते न मनसा।
जनाकीर्णं मन्ये हुतवह परीतं गृहमिव॥

मैं भलीभाँति अनुभव करता हूँ कि नगर के राजा दुष्यन्त तेजस्वी तथा मर्यादाशील शासक हैं। उनके राज्य मे कोई अधमाधम व्यक्ति भी अपने मार्ग से विचलित नही होता। फिर भी मैं सर्वदा एकान्त-प्रिय मन वाला होने से नगर मे प्रविष्ट होते समय अग्नि से प्रदीप्त भवन मे प्रविष्ट होते हुए के समान अपने को पाता हूँ अर्थात् यहाँ के चमकीले भड़कीले शृंगारादि को अपने लिये महा विनाशक समझ रहा हू। तपस्यालीन आध्यात्मिक पुरुष भोगवाद मे ग्रस्त और पतित मानवो को किस दृष्टि से देखते थे इससे सुन्दर चित्र और कहाँ सुलभ हो सकता है।

पश्चिमी देशो के दूषित वातावरण का प्रभाव भारत-वर्ष आदि पूर्वी देशो पर पड रहा है जिसके कारण भोग विलास मे अधिकाधिक रुचि बढती जा रही है। पाश्चात्य सभ्यता मे पालित-पोषित भारत के प्रधान मंत्री प०- जवाहरलाल नेहरू भी जो भारत को अमेरिका आदि देशो के समकक्ष सम्पन्न करने के इच्छुक और प्रयत्नशील हैं आज यह अनुभव करने पर विवश हैं कि जीवन मे केवल भौतिक वादी सिद्धान्त से शान्ति प्राप्त नही हो सकती इसके लिए हमे अध्यात्मवादी भी बनना पडेगा। सादा-जीवन, उच्च विचार का आदर्श अपनाना ही पडेगा।

(आर्यवीर जून पृ० ४७, ४८)

आर्य सभासद सदाचार का ध्यान रख कर बनाए जावें जिससे समाज के प्रबन्ध का भी लेविल ऊँचा हो। यह बात ध्यान मे रखनी चाहिए कि आर्यों की सख्या बहुत बढ़ जाने से अब यह संभव नही रहा कि प्रत्येक आर्य नर-नारी आर्य समाज के सभासद बन सके इसलिए यत्न यह होना चाहिए कि आर्य समाज के सभासद "अधिक से अधिक अच्छे ही पुरुष बनाए जावें जिससे आर्य समाज आर्य जनता के लिए आदर्श का काम कर सके।"

श्री महात्मा नारायण स्वामी

सार्वदेशिक सभा का आर्य समाजों के नाम परिपत्र

* ओ३म् *

सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा की अतरंग सभा ने अपनी २९-१-६१ की बैठक मे आर्यसमाज के उपनियमो की धारा स० ४ के सम्बन्ध मे निम्नलिखित आदेश प्रचारित करने का निश्चय किया है —

१—२५ प्रतिशत उपस्थिति का नियम सार्वदेशिक सभा तथा प्रान्तीय सभाओ के अधिकारियो तथा उक्त सभाओ द्वारा स्वीकृत उपदेशको पर लागू न होगा ।

२—आर्य सभासद वे ही होगे —

(क) जिनका नाम आर्यसमाज मे १ वर्ष से अकित हो ।

(ख) जिनका आचरण उपधारा (ग)मे प्रयुक्त सदाचार सम्बन्धी परिभाषा के अनुसार रहा हों ।

(ग) जो अपनी आय का शतांश मासिक वा वार्षिक वा २५०) वार्षिक वा अधिक धन उस समाज को देते रहे हो और जिनकी उपस्थिति साप्ताहिक सत्सगो मे कम-से-कम २५ प्रतिशत हो ।

कृपया इस उपनियम का कडाई के साथ पालन कराएं जिससे आर्यसमाज के सदस्यो की वरिष्ठता बढे ।

आशा है प्रत्येक आर्यसमाज समाज-हित को दृष्टि मे रखते हुए इस नियम का ठीक-ठीक पालन करके एक आदर्श की रक्षा करेगा ।

वेदी की पवित्रता

विविध आर्य महासम्मेलनो के प्रस्तावो और सार्वदेशिक सभा की अंतरंग के आदेशो द्वारा आर्यसमाजो को प्रेरणा की जाती रही है कि आर्यसमाज की वेदी से एकमात्र महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तों और प्रवचनादि का ही प्रचार हो, अन्य किसी संस्था का नही । इस वेदी से सिद्धान्त-विरोधी बात न कही जाय और सुयोग्य उपदेशको को ही वेदी पर बैठने की प्रमुखता दी जाय । वेदी से सत्संगों और सार्वजनिक सभाओ मे प्रबन्ध-सम्बन्धी आलोचनाएँ न की जायें । प्रबन्ध सम्बन्धी त्रुटियो पर विचार आवश्यक हो तो वे अंतरग सभा के सम्मुख प्रस्तुत की जाया करें । वेदी की पवित्रता पर आर्यसमाजों को विशेष ध्यान रखना चाहिए जिससे आर्यसमाज और उसकी शिक्षाओं की ओर जनता का आकषण बढे और श्रोता लोग प्रचुर मात्रा मे लाभान्वित होकर जाया करें । आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उप-सभा दिल्ली ने व्यवस्था की है कि उनके अधीनस्थ आर्यसमाजो मे आगामी वेद-प्रचार-सप्ताह के काल मे महर्षिकृत ऋग्वेदादि-भाष्य-भूमिका पर ही व्याख्यान कराये जाये । अन्य आर्यसमाज इस उदाहरण से लाभ उठाकर महर्षिकृत ग्रन्थो के पाठ और प्रवचनादि करा सकते हैं ।

आर्यसमाज मन्दिर चित्र

आर्य जनता को विदित ही है कि सार्वदेशिक सभा ने आर्य मन्दिरो के निर्माणार्थ एक चित्र तैयार कराया हुआ है जो सभा के पुस्तक भंडार से मूल्य पर मिलता है । नवीन आर्य मन्दिरो का निर्माण उसी चित्र के अनुसार करना चाहिए ।

आर्य वीर दल स्थापना दिवस समारोह

४ सितम्बर से १० सितम्बर तक आर्य वीर दल स्थापना सप्ताह के रूप में मनाए जाने का निश्चय किया गया है । कार्यक्रम साथ भेजा जा रहा है । आप स्थानीय आर्य वीर दल को प्रेरणा करें कि इस सप्ताह को उत्साह

एवं सफलता पूर्वक मनाएँ । अपने आर्यसमाज के आधीन आर्य वीर दल मे कम-से-कम २५ वीरो को भर्ती करने की व्यवस्था कर उन्हे प्रशिक्षित करने की योजना बनाएँ और उनके नाम पते आदि की सूचना सप्ताह के अन्त मे सभा के कार्यालय को भिजवा देवे ।

श्री सुखदेव जी शास्त्री सहायक प्रधान सचालक आर्य वीर दल निरीक्षण और सगठन के हेतु आर्यसमाजों मे भ्रमण कर रहे हैं । आर्यसमाजो को उचित है कि वे इन्हे अपना पूरा-पूरा सहयोग प्रदान करें ।

विविध अपीलो का धन

जिन आर्यसमाजो ने आर्यसमाज स्थापना दिवस की अपील का धन अभी तक नही भेजा है वे तत्काल सार्वदेशिक सभा को भिजवा दें ।

जिन आर्यसमाजों वा व्यक्तियों के पास ईसाई प्रचार निरोध, स्वर्ण जयन्ती आर्य महासम्मेलन के नोट तथा हिन्दी रक्षा निधि का धन पड़ा हो वे नोट तथा धन हिसाब सहित अविलम्ब सार्वदेशिक सभा मे भिजवा देवें । विश्वास है, उन्हे प्रेरणा करने की आवश्यकता न होगी ।

सभा के अलभ्य प्रकाशन

सभा ने स्वर्ण जयन्ती आर्य महासम्मेलन के अवसर पर कई आवश्यक एवं अलभ्य पुस्तकें छपावाई हैं जिनका अधिकाधिक प्रचार आवश्यक है । ये पुस्तके आर्यसमाजो तथा सस्थाओ के पुस्तकालयो और आर्य सभासदों के पास तो अनिवार्यत. रहनी चाहिएँ । पुस्तकों का विवरण इस प्रकार है ।

१—सार्वदेशिक सभा का संक्षिप्त इतिहास —

इस इतिहास मे सभा के स्थापना काल से अब तक की प्रमुख-प्रमुख प्रगतियों का वर्णन अंकित है जो आर्यसमाज के इतिहास का आधार बनाने वाली है । मूल्य ७५ नए पैसे ।

२—सार्वदेशिक सभा के निर्णय—

सभा ने स्थापना काल से लेकर अब तक जो नीति-सम्बन्धी आवश्यक निर्णय किए हैं वे सब आर्य जगत के मार्ग-प्रदर्शन के लिए इस पुस्तक मे संगृहीत कर दिए गए हैं । मूल्य ४५ नए पैसे ।

३—आर्य महासम्मेलनों के प्रस्ताव—

इस समय तक आर्य महासम्मेलन के नौ अधिवेशन हो चुके हैं । इस पुस्तक मे आरम्भ से लेकर आठवे महासम्मेलन तक के निश्चय अंकित हैं । सम्मेलन के स्थान, तिथि तथा प्रधान आदि के उल्लेख के साथ-साथ प्रत्येक सम्मेलन के होने के कारणो पर भी प्रकाश डाला गया है । मूल्य ६० नए पैसे ।

४—आर्य महासम्मेलनों के अध्यक्षीय भाषण —

इस सग्रह मे समस्त महासम्मेलनो के अध्यक्षो के भाषण दिए गये हैं । प्रत्येक अध्यक्ष का चित्र तथा जीवन-परिचय भी दिया गया है । पुस्तक मे लगभग २०० पृष्ठ हैं । मूल्य १) रुपया ।

५—आर्यसमाज का परिचय—

इस पुस्तक मे आर्यसमाज तथा उससे सम्बद्ध आवश्यक सामग्री के साथ-साथ अनेक अलभ्य चित्र भी दिए गये है । इस पुस्तक को पढने पर आर्यसमाज विषयक कोई जानकारी शेष नही रह जाती । यह भेंट करने योग्य अलभ्य प्रकाशन है । समस्त पुस्तक आर्ट पेपर पर छपी है । मूल्य १) रुपया ।

६—पाथ आव परफेक्शन (अंग्रेजी)—

यह पुस्तक चरित्र-निर्माण मे परम सहायक हो सकती है । इसके लेखक हैं सभा के भूतपूर्व प्रधान श्री बा० पूर्णचन्द जी एडवोकेट । मूल्य ४० नए पैसे ।

७—यज्ञपद्धति प्रकाश—

सार्वदेशिक धर्मार्य सभा के विद्वानो ने अनेक वर्ष परिश्रम करके अनेक यज्ञों की पद्धतियो का ऋषि के अनुसार स्वरूप निश्चित कर दिया । जिस यज्ञ की पद्धति की आर्य जनता चिरकाल से प्रतीक्षा कर रही थी वह छप कर तैयार हो गई । सब आर्यसमाजो का कर्त्तव्य है कि उनके अनुसार साप्ताहिक अधिवेशनो तथा यज्ञ आदि को करें जिससे देश-देशान्तर मे एकरूपता धार्मिक कर्मकाण्डों मे रहे । मूल्य ५० नए पैसे -

इस ग्रंथ में पांच पद्धतियां हैं—

१—साप्ताहिक अधिवेशन आदि के समय बृहद् यज्ञ की पद्धति।

२—नित्य यज्ञ करने वालों के लिए नित्य यज्ञपद्धति।

३—आहिताग्नियों के लिए आहिताग्नि नित्य यज्ञ-पद्धति।

४—ब्रह्मपारायण यज्ञपद्धति।

५—साप्ताहिक अधिवेशन सर्वत्र किस प्रकार हो इसके लिए साप्ताहिक अधिवेशन पद्धति।

इन पांच पद्धतियों के अतिरिक्त साप्ताहिक अधिवेशन के समय-विभाग का एक पृथक् चार्ट छापा गया है जो मन्दिरो मे लगाना चाहिए इसका मूल्य १० नए पैसे मात्र है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती का यात्रा चित्र

महर्षि स्वामी दयानन्द जी सरस्वती महाराज का यात्रा-चित्र तीन रंगो मे बहुत सुन्दर सार्वदेशिक सभा ने प्रकाशित किया है। यह एक बड़ा चित्र नक्शे के समान है जिसके द्वारा प्रत्येक व्यक्ति बड़ी आसानी से एक दृष्टि डालते ही जान सकता है कि महर्षि अपने जीवन मे कहां-कहां गये और कहां नही। जिस किसी नगर या ग्राम मे स्वामी जी अनेक बार गये वहां संख्या दी हुई है। ऋषि के दो चित्र भी उसमे हैं—एक खडाऊ पहने और दूसरा पूर्ण वस्त्रों मे। टकारा से चल कर परमर्षि योगाभ्यास के लिए गंगोत्री आदि से भी ऊपर पर्वत के जिस शिखर तक पहुचे वहां एक कुटिया दिखाई गई है। विद्याध्ययन के लिए और प्रचार के लिए किन-किन स्थानो को पवित्र किया वे सब स्थान दिखाए गये हैं।

इस चित्र में यह भी दिखाया गया है कि महर्षि ने किन-किन स्थानों पर योगाभ्यास किया। उन सब स्थानों की एक विस्तृत सूची भी इस चित्र मे है। महर्षि के विद्या-गुरुओं के और योग सिखाने वाले गुरुओं के नाम भी दिखाए गये हैं। यह चित्र देखते ही बनता है। प्रत्येक आर्य का घर और प्रत्येक आर्यसमाज मन्दिर इस चित्र से अलंकृत होना चाहिए। इस चित्र के रूप मे महर्षि का सारा जीवन एक पृष्ठ पर है। सार्वदेशिक सभा ने बड़े परिश्रम से इसको तैयार करा कर तीन रंगों मे छपाया है। केवल इसलिए कि प्रत्येक के पास पहुंच जावे नाम मात्र मूल्य ५० नए पैसे रखा है।

इन सब प्रकाशनो की छपाई, सफाई गैटअप बड़े भव्य और चित्ताकर्षक हैं।

ओ३म् ध्वज

ओ३म् ध्वज के लिए आर्य जनता की माँग की पूर्त्यर्थ सभा ने ओ३म् ध्वज का निर्माण का कार्य अपने हाथ मे ले लिया है और उसने शुद्ध खादी के निम्न डिजाइनो के ओ३म् ध्वज निर्माण करा लिए हैं। उनको लागत मूल्य पर आर्य जनता को पहुँचाने का सभा ने निश्चय किया है। अतः आर्य जनता को उन्हे तत्काल मँगा कर अपने समाज, मन्दिरो और आर्य सस्थाओं पर लगाने चाहिएँ।

ओ३म् ध्वज २७ इंच × ४०॥ इंच मूल्य २)

ओ३म् ध्वज ३६ इंच × ५४ इंच मूल्य ३)

ओ३म् ध्वज ४५ इंच × ७०॥ इंच मूल्य ४)

मंगाने की दशा में १) अगाऊ भेज देवें।

आर्यसमाजो को अविलम्ब आर्डर भेज कर प्रतियाँ सुरक्षित करा लेनी चाहिए जिससे बाद मे उन्हे पुस्तकें न मिलने की शिकायत का अवसर न रहे।

आर्य-समाज और राजनीति

आर्यसमाज को समष्टिरूप से प्रचलित राजनीति मे किसी प्रकार भाग न लेना चाहिए। सभा की इस नीति का कड़ाई के साथ पालन किया जाय।

कालीचरण आर्य
मन्त्री
१९-८-६१

देश-विदेश के समस्त आर्य वीर दलों को विशेष आदेश

४ सितम्बर से १० सितम्बर तक

आर्य वीर दल स्थापना दिवस सप्ताह

कार्यक्रम इस प्रकार रहेगा :—

४-९-६१ को प्रात. ५ बजे प्रत्येक आर्य वीर यज्ञ के लिए नियत स्थान पर ढाक वा आम की आठ अंगुल की समिधा लेकर तत्परता से पहुचें। यज्ञ मे भाग ले, आर्य वीर दल को निरन्तर चालू रखने के लिए प्रतिज्ञाएं करें। जो दीक्षित आर्य वीर हों वह अपनी प्रतिज्ञाएं दोहराएं। नवीन सदस्य भर्ती करें। राष्ट्र-गान, ध्वज-गान गाकर नियत क्रम से निवृत्त हो जायें।

५-९-६१ स्थानीय शाखाओं मे सर्वोच्च संख्या दिवस मनाया जाय। इस दिवस जो भी युवक एक बार दल की शाखा मे आ गया हो उसको अवश्य पुनः लाया जाय और आज के दिन भूले-भटके अपने पुराने-नये सभी युवकों को एकत्रित कर दल की शाखा नियमित रूप से चलाने की घोषणा की जाय।

६-९-६१ स्थानीय शाखाएं इस दिवस को अनुशासन दिवस के रूप मे मनाएं और अपने से उच्च अधिकारी के अनुशासन को भंग न करने की प्रतिज्ञा की जाय।

७-९-६१ को परिचय दिवस मनाया जाय। एक दूसरे के घर जाकर प्रेमपूर्वक मिल कर वार्तालाप करें। यदि सम्भव हो सके तो तीसरे पहर ५ बजे कहीं बाहर बागो आदि में जाकर सम्मिलित फलाहार करें।

८-९-६१ स्थानीय आर्यसमाज के अधिकारियों की अध्यक्षता में स्थानीय शाखा अपने शारीरिक व्यायाम, खेल, आदि का प्रदर्शन करें। यह कार्य-क्रम सायंकाल सुविधानुसार रक्खा जाय।

९-९-६१ अपने आर्यसमाज के मंत्री महोदय से मिल कर स्थानीय आर्य वीर दल के सदस्यों के प्रवेश-पत्र भरवाये जावें और यदि कोई स्थानीय आर्य वीर दल की कठिनाई हो तो वह नम्रतापूर्वक लिखित रूप मे मंत्री महोदय आर्यसमाज को निवेदन करें।

१०-९-६१ नियमित शाखा ५ बजे से ६ बजे प्रातः लगाई जाय। आर्य कुमारों, आर्य सदस्यों के बालकों को दल मे प्रविष्ट किया जाय और ४ बजे से ५ बजे तक (सायं) नगर मे स्वच्छता सप्ताह मनाया जाय।

नोट—प्रत्येक स्थानीय आर्य वीर दल अपने कार्यक्रम की तीन प्रतियां बनायेगा। एक स्थानीय आर्यसमाज को, एक मंत्री प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के द्वारा प्रान्तीय दल समिति को और एक सार्वदेशिक आर्य वीर दल समिति, दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली—१ को भेजें।

सुखदेव शास्त्री
सहायक प्रधान संचालक

मिहिरचंद्र धीमान
प्रधान संचालक

सार्वदेशिक आर्य वीर दल, नई दिल्ली

योगिराज कृष्ण के चरणों में

(रघुनाथ प्रसाद पाठक)

योगिराज कृष्ण महामानव थे और आर्य संस्कृति की भव्य देन थे। यह गौरव आर्य संस्कृति को ही प्राप्त है कि उसने राम और कृष्ण जैसे महामानवों को उत्पन्न किया जिनका राज्य आज भी और युग-युगान्तर-पर्यन्त जाति के हृदयों पर है तथा रहेगा। वे ईश्वर के अवतार न थे। उन्हें ईश्वरावतार वा अलौकिक व्यक्ति मानकर हम उनके महान् चरित्र से वह प्रेरणा ग्रहण नहीं कर सकते जो हम उन्हें अपने जैसा मानव मानकर प्राप्त कर सकते हैं।

अब से ५००० वर्ष पूर्व मानव-समाज का नेतृत्व उनके हाथ में था। वह शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति की दृष्टि से इसके सर्वथा योग्य थे। उनकी शारीरिक शक्ति का लोहा भीष्म पितामह जैसे ब्रह्मचारी भी मानते थे। जब शिशुपाल ने पांडवों की सभा में उनका अपमान करना चाहा और इसी उद्देश्य से उन्हें शक्ति का परिचय देने के लिए ललकारा तो उन्होंने तत्काल शिशुपाल का प्राणान्त कर दिया। कंस के पहलवानों को पछाड़कर जो उनके वध के लिए नियत किए गए थे उन्होंने अपनी शारीरिक शक्ति का सिक्का बचपन में ही बिठा दिया था।

आध्यात्मिक रूप में उनका स्थान इतना ऊंचा था कि आज भी संसार की समस्त सभ्य जातियां गीता में दी हुई शिक्षाओं के समक्ष नत-मस्तक हैं। आज नैपोलियन और नेलसन बनने की इच्छा कहीं नहीं देखी जाती परन्तु कृष्ण बनने की इच्छा सर्वत्र पाई जाती है। उनके विचार में सामाजिक उन्नति के लिए प्रत्येक व्यक्ति का अच्छा होना आवश्यक था। उनका विश्वास था कि माता-पिता का कर्तव्य है कि तैयारी करके सन्तान उत्पन्न करें। उन्होंने अपने उदाहरण से इसकी शिक्षा दी। रुक्मिणी से विवाह करने के अनन्तर जब दोनों में सन्तान पैदा करने की इच्छा उत्पन्न हुई तो कृष्ण और रुक्मिणी ने १२-१२ वर्ष पर्यन्त ब्रह्मचर्य का पालन किया और तब एक पुत्र उत्पन्न हुआ वह प्रद्युम्न था जिस पर माता-पिता दोनों को गर्व था। जाति के निर्धन और असहाय व्यक्तियों के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए इस सम्बन्ध में उनकी शिक्षा सुदामा-चरित्र से प्राप्त होती है।

सामाजिक उन्नति के लिए उन्होंने बताया कि समाज हित के समक्ष अपने स्वार्थ को हेय समझो। वंश-परम्परा से नहीं अपितु गुण कर्म एवं योग्यता की वरिष्ठता से ही राजा बनना चाहिए और समस्त भूमण्डल में चक्रवर्ती राज्य होना चाहिए। इसी में समाज का सर्वोपरिहित सन्निहित होता है। जब उन्होंने चक्रवर्ती राज्य स्थापित करने का निश्चय कर लिया तो उन्होंने एक क्षण के लिए भी अपने मन में इस विचार को प्रश्रय न दिया कि राज्य का राजा मुझे बनना चाहिए। यदि वह ऐसा करते तो वह इसके लिए उपयुक्त थे। परन्तु इससे वह जो आदर्श और उदाहरण उपस्थित करना चाहते थे वह स्थापित न होता। उन्होंने जो किया उसका उदाहरण इतिहास में नहीं मिलता।

गृह-कलह से देश की शक्ति नष्ट न होनी चाहिए। इस दृष्टि से भी उनका जीवन शिक्षा-प्रद है। उन्होंने जरासंध से युद्ध नहीं किया। उन्हें मथुरा छोड़कर द्वारका जाना पड़ा परन्तु गृह-कलह में न उलझे। जरासंध के राज्य को देश के चक्रवर्ती राज्य के अधीन होना चाहिए इसके लिए

उन्होंने इतनी बुद्धिमत्ता से काम लिया कि सिवाय जरासध के एक व्यक्ति की भी जान की हानि न हुई और उसका राज्य आधीनता में आ गया।

अत्याचार और अन्याय का सहन करना पाप है। उन्होंने कंस का वध इसी पाप से बचने के लिए किया। सदैव मानव समाज को प्रकाश प्रदान करता रहेगा। जिन कवियो साहित्यकारो और ग्रन्थ भक्तो ने ग्रन्ध भक्ति के प्रवाह मे बहकर उनके उज्जवल चरित्र पर अश्लीलता और कामुकता की कालिमा चढाई है उन्होंने न केवल महात्मा कृष्ण के प्रति ही अन्याय किया है अपितु जाति के

सार्वदेशिक सभा के मंत्री श्री बा० कालीचरण जी

का

ट्रैक्ट विभाग आर्य समाज चौक के प्रधान मंत्री के नाम बधाई संदेश

२२-८-६१ ई०

आपके निमन्त्रण के लिए धन्यवाद। यह जानकर बड़ा हर्ष हुआ कि आप लोग ६-९-६१ को श्रीयुत् पं० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय की ८०वी वर्ष गाँठ मना रहे है। वस्तुतः श्री उपाध्याय जी शब्द के ठीक-ठीक अर्थ मे इस सम्मान के अधिकारी है। उनकी सेवाएं बडी विशद और विविध हैं। उनका जीवन मूल्यवान् एवं यशस्वी है। अतः इस दृष्टि से उनकी ८० वर्ष की आयु बडी नही कही जा सकती। परमात्मा से प्रार्थना है कि उनके इस मूल्यवान् जीवन की आयु अधिकाधिक बडी हो।

श्री उपाध्याय जी जैसे आर्यों पर कोई भी समाज गर्व कर सकता है। वह साहित्य से और अपनी अन्य सेवाओं से न केवल वर्तमान ही अपितु आने वाली सतति के लिए भी भव्य उदाहरण प्रस्तुत कर रहे हैं।

इसी पाप से बचने के लिए महाभारत का सूत्रपात कराया। उन्होने दुर्योधन को समझाने और पाण्डवों के साथ न्याय करने के लिए तयार करने का कोई उपाय उठा न रखा था।

यह है महात्मा श्री कृष्ण के जीवन का चित्र जो प्रति अक्षम्य अपराध भी किया है।

श्री कृष्ण का जन्म-दिवस मनाते हुए उनके उदात्त जीवन से हमें कोई न कोई शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए।

———

श्री मास्टर तारासिंह का अनशन

स्वामी ध्रुवानन्द जी सरस्वती, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली, के अध्यक्ष ने निम्नलिखित वक्तव्य मास्टर तारा सिंह के पृथक् पंजाबी सूबे की माँग के सम्बन्ध मे किए गए अनशन पर प्रेस को प्रसारित किया :—

"सिक्ख समुदाय के नेता के रूप मे मास्टर तारा सिंह के प्रति मेरा आदर है क्योकि सिक्खो ने अपने महान् गुरुओ के समय से राष्ट्र के लिए अपूर्व वीरता पूर्वक त्याग किया है लेकिन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा सिक्ख नेता के अनशन को एक चिन्ताजनक विषय मानती है क्योकि इसके द्वारा मास्टर तारा सिह का भारत सरकार तथा शासक दल पर पजाबी सूबा के लिए एक अनुचित दबाव डालने का प्रयास है।

सामाजिक एव धार्मिक संस्था के रूप मे भी आर्य-समाज ने देश-भक्ति का परिचय दिया है तथा वैयक्तिक रूप से आर्य-समाज ने सिद्धान्ततः राजनीतिक प्रगति मे दासता के युग से लेकर स्वतंत्रता के समय तक यथेष्ट सहयोग दिया है।

आर्य-समाज अपनी उस विचार-धारा पर अब भी अटल है कि भाषावादी राज्य देश के व्यापक हितो के विरुद्ध है तथा ऐसी प्रवृत्तियों को खत्म कर देना चाहता है।

हमारे नेताओं ने भाषा के आधार पर जो भी सीमा का निर्धारण किया है वह मेरी दृष्टि मे भूल थी पुनरावृत्ति से उन्हे बचना चाहिए।

ऐसे संकट के समय में जब कि देश की सीमाओं को चारों ओर से खतरा है हर देश-भक्त भारतीय को चाहे वह किसी धर्म को मानता हो या उसकी कोई वैयक्तिक रूप से सामाजिक विचार-धारा हो यह पुनीत कर्तव्य हो जाता है कि वह प्रधान मंत्री का हाथ सुदृढ़ करे।

मैं मास्टर तारा सिंह से अनुरोध करता हूँ कि वे अपना अनशन अविलम्ब तोड़ दें तथा हर विचारवान सिक्ख नेता से अपील करता हूँ कि वे मास्टर जी को अनशन तोडने की राय दें। जब तक वे अनशन नहीं समाप्त कर देते तब तक मेरा यह कर्तव्य है कि मैं स्वामी रामेश्वरानंद सरस्वती के अनशन का समर्थन करूँ। स्वामी जी ने मास्टर जी के अनशन के विरुद्ध देश का जो विरोध है उसे स्पष्ट प्रकट करने के लिए अनशन शुरू किया है। मास्टर तारा सिंह का अनशन भारत सरकार एवं शासक दल द्वारा एक अत्यन्त अनुपयुक्त माँग को पूरा कराने का प्रयास है। सिक्ख नेताओ की ओर से सर्व-साधारण को यह बताया जा रहा है कि माँग भाषाधारित है। तथ्य तो यह है कि माँग पूर्णतया धार्मिक है। अप्रत्यक्ष रूप से भाषा के नाम पर हिन्दू समुदाय के ऊपर एक छोटे से धार्मिक समुदाय का शासन लादे जाने का प्रयास है। भारत के अन्य भाषावार प्रातो का उदाहरण पंजाबी सूबा की माँग पर किसी प्रकार लागू नही होता। स्पष्ट है कि विस्तृत क्षेत्र के बहुसख्यक हिन्दुओं पर अल्प संख्यको का शासन लादा जा रहा है।

प्रधान मत्री ने पूर्णतया ऐसी असहनीय माँग को अस्वीकार कर देश की सुरक्षा का बहुत बड़ा हित किया है।

अपने सिद्धान्तों पर अडिग पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति

(श्री० डा० युद्धवीरसिंह)

पं० इन्द्र जी मुझ से सात-आठ वर्ष बड़े थे और जब से भी उन से मेरा परिचय हुआ बिलकुल बड़े भाई की तरह मैंने उन्हें समझा और उन्होंने मुझे छोटे भाई की तरह स्नेह दिया। मैं तब पढ़ता ही था कि पण्डित जी गुरुकुल के कुछ विद्यार्थियों को भ्रमण कराने के लिए जयपुर ले गये। आर्यसमाज में उनका तार पहुँचा कि वह विद्यार्थियो की एक पार्टी के साथ आ रहे हैं तो मेरी ड्यूटी उन्हे लाने के लिए लगी। समय पर मैं स्टेशन पहुँच गया और पंडित जी मय विद्यार्थियो के आ गए। मैंने देखा कि विद्यार्थियो की संख्या लगभग १००-१२५ है और इसके लिए घोड़ा गाडी का प्रबन्ध करने के लिए मेरे पास पर्याप्त धन भी नहीं है। मे इस असमंजस में था ही कि पंडित जी ने बडे प्रेम से शायद मेरे दिल की बात समझ कर कहा – "ये सब लोग गुरुकुल के विद्यार्थी हैं और ये आर्य समाज मन्दिर तक पैदल ही चले जायेंगे। केवल एक या दो तांगे असबाब के लिए हम लोग कर लेंगे।"

मेरे सिर का बोझ तो उतरा, लेकिन मैंने डरते-डरते कहा—"यहाँ से आर्यसमाज मन्दिर दो मील है।"

जवाब में पण्डित जी ने हंसते हुए कहा ये विद्यार्थी तो मीलों सफर करने के आदी हैं। चिन्ता न कीजिए।"

आज से लगभग ४०-४५ वर्ष पूर्व की यह घटना मुझे वैसी-की वैसी याद है। आर्य समाज मन्दिर के पास ही मेरा घर था। दो तीन रोज तक पडित जी वहा ठहरे। मैंने जयपुर की खूब सैर कराई और जब वह चलने लगे तो बड़े स्नेह और प्रेम से मुझ से कहा—"आप कभी गुरुकुल नहीं आते। आइये और जरूर आइये।"

चरित्रवान् और निर्भीक

इस घटना के लगभग ५-७ वर्ष बाद ही मैं दिल्ली आ गया और पण्डित जी भी यहां आ गए और जब मैं उन से मिला तो वह मुझे भूले नही थे। तब से लेकर मृत्यु पर्यन्त उन्होंने मुझे बडे भाई की तरह अपना स्नेह दिया, पथ-प्रदर्शन किया और समय-समय पर उचित परामर्श भी दिया। दिल्ली मे रहते हुए आर्यसमाज के क्षेत्र में सार्वदेशिक सभा मे और कांग्रेस के राजनीतिक क्षेत्र में सब जगह मुझे पण्डित जी के नेतृत्व में काम करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ और मुझे इस बात का हर्ष है कि

वह कभी अवसरवादी नहीं बने और न उन्होंने कभी सिद्धांत छोड़े

वह हमेशा मेरे काम से सन्तुष्ट रहे और जब कभी कोई कठिनाई आई तो बडे प्रेम पूर्वक मेरा पथ-प्रदर्शन किया। श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी के चरणों मे जो मेरी पहुंच हुई—यह पण्डित जी ने ही कराई और स्वामी जी ने भी मुझे पुत्रवत् ही हमेशा समझा। स्वामी जी तो महान् व्यक्ति थे और उनकी महत्ता तो सारा संसार जानता ही है, लेकिन इन्द्र जी भी अति उदार, स्नेहशील चरित्रवान्, निर्भीक और साहसी व्यक्ति थे। घबराहट उन्हे कभी नही होती थी। उन्हें बहुत-सी कठिन बीमारियाँ आई पर वह कभी घबराये नही। सार्वजनिक जीवन में काम करते हुए बहुत-सी समस्यायें सामने आती हैं, मगर वह उनका बहुत ही शान्त स्वभाव से मुकाबला करते और हर समस्या का हल बडी गम्भीरता से शांति-पूर्वक निकाल लेते। मैं दंग रह गया जब कि एक ऐसा समय आया कि स्वय स्वामी जी और इन्द्र जी के राजनीतिक विचारो मे मतभेद हो गया। अपने पूज्य पिता जी और गुरु स्वामी श्रद्धानन्द जी के प्रति किसी प्रकार का अनादर प्रकट किए बिना पंडित इन्द्रजी ने स्वराज पार्टी के चुनावो के समय कांग्रेस का साथ दिया जब कि श्री स्वामीजी ला० लाजपतराय और पं० मदनमोहन मालवीय के पक्ष मे हो गए थे। स्वय स्वामी जी ने इस पर कोई आपत्ति नही उठाई और दोनो अपने-अपने क्षेत्र में अपने-अपने विश्वास के अनुसार कार्य करते रहे।

सिद्धान्तों पर अडिग

पूज्य-पडित ने जो साहित्य सेवा की है वह तो सभा पर प्रकट है। उनके लेखो मे जो ओज और तेज भरा हुआ होता था वह हर कोई जानता है। किसी भी पत्र-पत्रिका मे लेख पर उनका नाम देखने के बाद उसे पढ़े बिना रहा नही जा सकता था। फिर उनके लेखो में हर विषय पर बडी-ही सुलझी हुई विचारधारा होती थी। पंडित जी कभी भावुकता में नहीं बहे। सिद्धान्तों पर अटल रहे और उसके कारण जो भी कष्ट सहने पड़े वे सहे।

१९३२ में लगभग ६ मास मुल्तान जेल में मैं उनके साथ रहा और वहाँ मैंने देखा कि जेल मे भी उनका जीवन कितना नियमित था। एक प्रोग्राम के अनुसार वह अपना सारा कार्य करते थे और तन्दुरुस्ती ठीक न होते हुए भी कभी चिन्तित नही हुए। हम नौजवान उन से काफी प्रेरणा प्राप्त करते और उनके साथ बहस भी करते और उस बहस मे काफी कड़ी से कडी आलोचना भी कर डालते, लेकिन पंडित जी ने कभी बुरा नही माना और हमेशा प्रेमपूर्वक ही व्यवहार करते रहे। जब वह दिल्ली कांग्रेस कमेटी के प्रधान थे तो मुझे उनका मन्त्री होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ और वह मेरे कार्य से सदा प्रसन्न रहे। पंडित जी दिल्ली म्युनिसिपल कमेटी के कई वर्ष तक सदस्य रहे। उन्ही की सदस्यता के समय १९४७-४८ में जब प्रधान चुनने का समय आया तो मेरे नेता और बडे भाई होते हुए भी उन्होने मुझे ही प्रधान पद के लिए आगे रखा। जब मैं प्रधान चुना गया तो उस रोज कमेटी मे बड़ा हर्ष मनाया गया और सभी लोगो ने मुझे बधाई देते हुए मेरी बहुत प्रशसा की। प्रत्येक मनुष्य को अपनी प्रशसा से खुशी होती ही है, लेकिन वह थोड़े से शब्द जो उस रोज पंडित जी ने कहे मुझे आज तक याद हैं—उन्होने कहा—"मुझे आज इस बात की खुशी है कि सब से पहला यह अवसर है कि जबकि जन-साधारण मे से एक व्यक्ति आज इस आसन पर सुशोभित है जिस पर अब तक डिप्टी कमिश्नर या सरकारी जी-हुजूर ही सुशोभित होते थे।" आगे उन्होने कहा कि इस वजह से मैं और मेरे तमाम साथियो का सम्पूर्ण सहयोग, सहायता और आशीर्वाद हमारे इस प्रधान को प्राप्त होगा।" इस प्रकार अनेक अवसर ऐसे आए जब उन्होने मेरे जीवन मे मुझे ऐसे ही शब्दों से प्रोत्साहित किया और प्रेरणा दी। इतना ही नही कठिनाइयों में भी सहायता की जैसे अपना कोई बड़ा भाई आपत्ति के समय हाथ बढ़ाकर ऊपर उठा लेता है।

अवसरवादिता से दूर

पंडित जी के गुणों का वर्णन कहाँ तक किया जाय। गुरुकुल कांगड़ी की जो वर्तमान अवस्था है उसका सारा श्रेय पंडित जी को ही है। सबसे बडी बात जो मैंने उन में देखी वह यह थी कि वह समय के अनुसार सिद्धान्तों को बदलते नहीं थे। अवसरवादिता उनमे बिलकुल नही थी चाहे उसके कारण उन्हे हानि उठानी पड़ी हो, लेकिन वह कभी अवसरवादी नहीं बने और कभी उन्होंने अपने सिद्धान्त नही छोडे। उनका जीवन बड़ा सादा था, लेकिन नियमित था। प्रातःकाल बहुत जल्दी उठ करके वह कुछ लिखा करते थे और वे ही अमूल्य कृतियाँ आज हमारे मार्गदर्शन को रह गई है। ईश्वर हमें यह शक्ति दे कि हम उनके गुणों को ग्रहण कर सकें और उनकी निर्भीकता, राष्ट्रीयता उच्च कोटि का चरित्र और अध्यवसाय अपने जीवन मे ला सकें।

'न दैन्यम् न पलायनम्' के उद्घोषक

—जगन्नाथ

एक विद्वान् ने लिखा है महान् पुरुष काल-प्रसूत होते हैं। श्री इन्द्र जी ऐसे इतिहास काल-प्रसूत पुरुषो मे से थे। उन्होने विदेशी शासन से त्रस्त जनता मे स्वतन्त्रता एवं निर्भयता का मन्त्र फूँक कर घने अन्धकारमय समय में जब कि जनता को नेताओं के बदले देश-सेवकों की आवश्यकता थी—मूक सेवक की भाँति अपना सर्वस्व अर्पण करके, अपनी लौह-लेखनी से मा सरस्वती के भंडार को भर कर इतिहास का निर्माण किया।

भारत-माता के वह लाडले सपूत थे, ऐसे वीर लाल, जो माता की गौरव-रक्षा के लिए कोई भी बलिदान बिना हिचकिचाहट दे सकते थे, ऐसे वीर लाल, जिसकी दृष्टि मे देश के सामने किसी भी चीज की कोई कीमत नहीं थी न वैयक्तिक सुयश और सुख की, न परिवार और बन्धु बांधव की और ऐसे वीर लाल जिससे माता की गोद निहाल हो सकती है।

पत्रकारो के वह शिरोमणि थे। सम्पादक और पत्रकार देश के मानस और मुख होते हैं। मानस जो चाहे सोच सकता है और मुख का धर्म है कि वह बोलने योग्य हर बात को निर्भयतापूर्वक कह दे। उन्होने जो कुछ सोचा निर्भयता से सोचा और उसे निर्भयता से व्यक्त किया।

'अनुव्रतः पितुः पुत्रः'

इन्द्र जी को अपने पिता स्वामी श्रद्धानन्द जी से उत्तराधिकार मे गुणो का अक्षय-भडार मिला था। वह एक योग्य पुत्र थे। इसी से उन्हे साधारण व्यक्ति की तरह समाज में अनुपम स्थान पाने के लिए संघर्ष नही करना पडा। गुरुकुल कांगड़ी के प्रथम स्नातक होने के नाते आर्य-समाजों में वह मूर्द्धन्य नेताओं में गिने जाने लगे। पिता से 'सद्धर्म प्रचारक' मिला उससे जनता में वह उच्च-कोटि के सम्पादक रूप में अवतीर्ण हुए। पिता की आज्ञाओं

को मानने में उन्होने अपने को धन्य समझा। पिता ने अपनी मृत्यु के पूर्व जो कार्य उन्हे सौपा था उसे उन्होने अत्यन्त सफलतापूर्वक पूर्ण किया। महात्मा गाँधी और उनके ज्येष्ठ पुत्र मे मतभेद होने का कारण था कि महात्माजी ने अपने ज्येष्ठ पुत्र को बैरिस्टरी पढने के लिए इगलैंड नही भेजा लेकिन इन्द्रजी ने पिता से पूर्व वचन मिलने पर भी बैरिस्टरी के मोह को त्याग दिया था। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने गुरुकुल के लिए जहाँ आत्म-त्याग किया, वहाँ उन्होने अपने दोनो पुत्रो के भविष्य को भी त्याग की बलिवेदी पर अर्पित कर दिया था और उनके पुत्रो ने युग की पुकार को सुना और नए उठते जगत और नवीन जागृत भारत के लिए त्याग और बलिदान के महत्त्व को अनुभव किया और इस नूतन युग का प्रहरी होने में गर्व माना। इन्द्र जी सच्चे अर्थों मे 'अनुव्रतः पितु पुत्र' के प्रतीक थे।

प्रखर योद्धा

इन्द्र जी राजनीति, साहित्य, पत्रकारिता तथा लेखन के अपूर्व योद्धा थे। अग्रेजो के क्रूर दमन से देश निस्तेज हो गया था। जनता भय से मुख नही खोलती थी। ऐसे समय मे उन्होने 'वीर अर्जुन' 'विजय' आदि पत्रो द्वारा स्वतन्त्रता का उद्घोष किया। 'वीर-अर्जुन' का ध्येय वाक्य था—'अर्जुनस्य प्रतिज्ञे द्वे न दैन्य न पलायनम्'। उन्होने इस युग की कमजोरियो को पहचान लिया था। आग के पास पहुँच कर आग की सत्ता से आँख फेर लेना यह उस युग का धर्म बन गया था। बडे-बडे नेता भी स्वतन्त्रता सग्राम से भाग रहे थे उन्होने 'न दैन्यं न पलायनम्' की घोषणा से राष्ट्र को नवजीवन प्रदान किया उनके आह्वान पर लाखो देशवासियों ने स्वतन्त्रता की बलिवेदी पर अपना सर्वस्व अर्पण कर दिया था। अत्याचारी शासको से लोहा लेने मे वह वज्र के समान कठोर थे। वैसे वह फूल से कोमल हृदय वाले थे। उन्होने कहा था—"राजनीति मेरे लिए तभी तक आकर्षण का केन्द्र रही जब तक उसमे त्याग तथा तपस्या का महत्त्व था।" राजनीति उनके लिए महज दिमागी खुराफात नही थी। वह इसे एक पवित्र वस्तु मानते थे इसका प्रमाण हमे उन की मृत्यु से पूर्व १५ अगस्त पर (साप्ताहिक हिन्दुस्तान में प्रकाशित) लिखा हुआ 'यदि आज चाणक्य प्रधान मंत्री होते' शीर्षक लेख से मिलता है।

हैण्डप्रेस द्वारा 'विजय' तथा 'सद्धर्म प्रचारक' का प्रकाशन करना उन जैसे योद्धा का ही कार्य था। सरकार द्वारा जब्त हो जाने पर भी उन्होने इनका प्रकाशन जारी रखा उनसे असख्य नर-नारियों को प्रेरणा प्राप्त होती थी। पत्रकारिता के तो वह जन्मदाता थे। जिस समय अंग्रेज सरकार के विरुद्ध लिखना अपनी मृत्यु को आमंत्रण देने के बराबर था ऐसे समय में उन्होने पत्रकारिता को अक्षुण्ण बनाए रखा। युग की पुकार को सशक्त लेखनी और वाणी से गुंजाने वाले वह अपूर्व योद्धा थे। राज्यसभा मे भी उन्होने राष्ट्रपति के धन्यवाद प्रस्ताव से लेकर अन्य छोटे कार्यो मे भी हिन्दी को ही अपनाया। उनकी हिन्दी सरल एवं बोधगम्य होती थी, जिसे अहिन्दी भाषा-भाषी भी सरलता से समझ सकते थे।

संस्कृत तथा हिन्दी साहित्य के वह धनी थे। लेखनी उनकी चेरी थी। कुशल चितेरे की भाँति वैदिक, मुस्लिम, ब्रिटिश तथा वर्तमान युगो का उन्होने अपने उपन्यासों, जीवन चरित्रो, ऐतिहासिक ग्रन्थो तथा नाटको द्वारा चित्रण किया। जब तक उनका साहित्य हमारे मध्य विद्यमान रहेगा तब तक उनका यशःकाय हमारे मध्य सदा बना रहेगा। उन्होने मृत्यु से कुछ दिन पहले ये शब्द कहे थे—

"मेरे गिरने का समय आ रहा है, परन्तु मैं चाहता हूँ कि मेरा देश न गिरे, मेरी सतति न गिरे, जिन क्षेत्रों में मैने कार्य किये है वे न गिरे और उस दिशा में आगे बढ़ने वाले आप लोग न गिरें।"

उनके ये शब्द हमारा आह्वान कर रहे हैं। सघर्षों के युग मे वह पैदा हुए, उसी मे वह पले और बढे और उसी मे वह अन्त तक सघर्ष करते हुए योद्धा और महारथी के समान वीरगति को प्राप्त हुए। उनका भौतिक शरीर लुप्त हो गया है, लेकिन उनकी दिव्य ज्योति हमारे शरीर को आलोकित कर रही है। वह हमारे मानस-पटल पर सदा बने रहेंगे। (साप्ताहिक हिन्दुस्तान)

अनशन बुद्धि संगत नहीं है

प्रधान मंत्री पंडित नेहरु ने पंजाबी सूबे के निर्माण की मांग को जिस दृढता से रद्द किया है उसी दृढ़ता से मास्टर तारासिंह ने अपने इस निश्चय को दुहराया है कि जब तक पंजाबी सूबे के निर्माण का सिद्धान्त स्वीकृत न होगा, तब तक वह अपना अनशन समाप्त न करेंगे। इस प्रकार स्थिति ज्यों की त्यों बनी हुई है। मास्टर तारासिंह ने २८-८-६१ की सायकाल को जो वक्तव्य दिया उसमे उन्होंने इस आरोप को दुहराया है कि सिखो पर विश्वास नही है और उनके साथ भेद-भाव का वर्ताव किया जाता है। पंडित नेहरु ने लोक सभा मे दिये हुए अपने वक्तव्य मे यह घोषणा की कि मैं अकालियों के इस आरोप की जाँच करने के लिए उद्यत हूँ। उन्होंने यह भी कहा कि मैं दोनो क्षेत्रो के प्रतिनिधियो तथा पंजाब सरकार के द्वारा इस बात की जाँच करने के लिए भी सन्नद्ध हू कि क्षेत्रीय योजना का प्रचलन भली-भाँति हुआ है या नही। अकाली दल ने क्षेत्रीय योजना का बहिष्कार इस आधार पर किया था कि उसका प्रचलन उचित रीति से नही हुआ है। यह दल सिखों के प्रति भेद-भाव के व्यवहार की भी अनिश्चित रूप से शिकायत करता रहा है। श्री नेहरु अकाली दल के इन आरोपों को ठीक नही मानते इस पर भी उन्होंने लोक सभा मे यह प्रस्ताव प्रस्तुत कर दिया कि वे अधिकृत प्रतिनिधियों के द्वारा आरोपों की जाँच पड़ताल कराने के लिए उद्यत हैं जिससे अकालियों को इस विषय में शिकायत का अवसर न रहे। श्री नेहरु तो यहाँ तक कह गए कि आवश्यक होने पर वे दोनों क्षेत्रीय समितियो के अधिकारो में वृद्धि करने को भी तय्यार हैं। अकाली दल और श्री मास्टर तारासिंह के लिए निष्पक्ष समिति द्वारा अपने आरोपो की जाँच कराने का यह सुअवसर था परन्तु यह अवसर भी हाथ से जाने दिया गया है। यह बात दुर्भाग्य पूर्ण है।

सिखों के विरुद्ध भेद-भाव की चर्चा होती रही है परन्तु अकाली दल इस आरोप को प्रमाणित करने के सुनिश्चित प्रमाण प्रस्तुत करने मे असमर्थ रहा है। विपरीत इसके वह स्थिति बदलता रहा है। मास्टर जी ने २८-८-६१ को यह भी कहा कि राष्ट्रीय दृष्टि से स्वीकृत सिद्धान्त के अनुसार पंजाबी भाषा-भाषी राज्य के निर्माण को अस्वीकार कर देने के फल स्वरूप सामाजिक बर्ग के रूप मे सिखों के साथ वास्तविक भेद-भाव का व्यवहार हो रहा है। यदि किसी क्षेत्र के निवासी न्यूनाधिक रूप मे सर्व सम्मति से भाषायी राज्य के निर्माण के पक्ष मे हो तो वे उचित रीति से इस प्रकार की माग कर सकते हैं। परन्तु पंजाब मे तो स्थिति ही भिन्न है। मास्टर तारासिंह के प्रभाव में अकाली दल का जो वर्ग है उसके अतिरिक्त राज्य की अन्य प्रजा किसी भी आधार

पर राज्य का और विभाजन जो बहुसंख्या में हैं नहीं चाहती। यदि इन लोगों की इच्छा के विरुद्ध उन पर विभाजन बलात थोपा गया तो क्या उनके प्रति अन्याय न होगा पंजाब राज्य आज जिस रूप मे विद्यमान् है उसका निर्माण स्वतन्त्रता से पूर्व ही हुआ था—आज यह राज्य जैसा कि प० नेहरु ने कहा है एक सुगठित सामाजिक एवं भाषायी इकाई हैं । इस राज्य के लोग भारत के अन्य राज्यो के लोगों की अपेक्षा आपस मे अधिक घुले-मिलें हैं। यदि अकाली दल को सन्तुष्ट करने के लिए इसे विभाजित किया गया तो यह बडी दुःखजनक बात होगी। अकाली दल की माँग की स्वीकृति में जो अन्याय निहित है उसे कोई भी समझदार व्यक्ति एकदम अनुभव कर सकता है परन्तु अकालियों का नेतृत्व अन्यो के दृष्टिकोण का आदर करने का कभी यत्न नही करता।

क्षेत्रीय योजना स्वयं मास्टर तारा सिंह की सहमति से बनाई गई थी और हिन्दू मत इसके विरुद्ध था। हिन्दुओ ने अभी तक इस योजना का पूर्णतया समर्थन नही किया है। हो सकता है कि मास्टर तारा सिंह या अकालीदल की यह धारणा बन गई हो कि इस योजना को क्रियान्वित करने मे जान-बूझ कर देर की गई है अथवा इसको सच्चे हृदय से क्रियान्वित नही किया गया है। इस बात की जाँच की जा सकती है। परन्तु इस धारणा के कारण यह नही कहा जा सकता कि योजना हीसमाप्त हो गई है। यदि इसको ठीक रूप में क्रियान्वित किया जाय तो यह अकाली मत को सन्तुष्ट कर सकती है। अकालियों के समर्थन से उद्देश्य की सिद्धि के लिए यह बनाई गई थी। पं० नेहरू ने अकालियों को अवसर दिया है कि वे अपने आरोपों को सिद्ध करें। इस प्रेरणा को अस्वीकार कर देने का निश्चित अर्थ होगा युक्तियुक्त समझौते की संभावनाओ का समाप्त हो जाना। राजनैतिक समस्या के समाधान मे हठ धर्म्मी अत्यन्त अवांछनीय एवं अयुक्ति-युक्त बात होती है। इसका परित्याग होना चाहिए।

मास्टर तारा सिंह ने कहा है कि मैं अपमान पूर्ण मृत्यु नही चाहता। जनता की इच्छा के आदर स्वरूप अनशन तोड़ने में कोई अपमान नही है। वस्तुतः यदि पंजाबी सूबे की माँग का उद्देश्य देश और राज्य के जीवन मे सिक्खों के लिए सम्मान पूर्ण स्थान की प्राप्ति था तो यह उद्देश्य बहुत कुछ पूरा हो गया है क्योकि श्री नेहरू अकालियों के भ्रम और संदेह के निराकरण के लिए अत्यधिक दूर तक जाने के लिए समुद्यत हैं। देशवासियो को मास्टर तारा सिंह के स्वास्थ्य की चिन्ता है। उनकी प्रार्थनाओ और अकालियों की शिकायतो के निराकरण सम्बन्धी प० नेहरू के आश्वासनों को दृष्टि में रखते हुए उन्हें अनशन तोड़ने में कोई झिझक न होनी चाहिए। राजनैतिक उद्देश्य की सिद्धि के लिए अनशन का आश्रय लेना ठीक नही है। वर्तमान परिस्थिति मे तो ऐसा करना बुद्धिसंगत भी नहीं है।

(ट्रिब्यून)

२६-८-६१

स्वर्ण जयन्ती नवम आर्य
महा सम्मेलन दिल्ली

महात्मा आनन्द स्वामी जी का भाषण

(झंडा अभिवादन के समय)

आर्य पुरुषों और देवियो,

संसार मे झण्डे अनेक हैं। हरएक जाति वालो ने, हर एक राष्ट्र ने अपने-अपने झडे बना रखे हैं। परन्तु रशिया के झण्डे के नीचे केवल रूस के लोग एकत्र हो सकते हैं और अमरीका के झण्डे के नीचे अमरीका वाले, किन्तु, हमारी यह पताका न एक प्रदेश की है और न एक राष्ट्र की, बल्कि सारे संसार की है। ओ३म् के झण्डे के नीचे अमरीका और रूस सब के लिए एक दूसरे से मिलने और इस पवित्र पताका के नीचे शान्ति स्थापित करने का अवसर मिल सकता है। जगद्गुरु दयानन्द ने यह ओ३म् का झण्डा बनाया। इसलिए महा सम्मेलन के प्रारम्भ में यह ओ३म् की पताका फहरायी गई। हमारे जीवन मे, बोलचाल में, हमारे आचारों मे, विचारों मे, हमारे व्यवहार मे यह ओ३म् ही समाया हुआ है। उठते बैठते, सोते जागते हर समय उसी ओ३म् का स्मरण होना चाहिए।

मैं दूसरी बात यह कहना चाहता हूँ कि आप हृदय में यह प्रतिज्ञा कर ले कि ओ३म् की इस पताका को लहराने के लिए अपने मन को तपस्वी बनायेंगे और बलिदान देने के लिए हर वक्त तैयार रहेंगे। संसार के आकाश के ऊपर बडे घनघोर बादल छाये हुए हैं। इन काली घटाओ को दूर करने के लिए यह आर्य समाज कटिबद्ध है। आज अपने मन के अन्दर यह आप निश्चय करें कि आर्य समाज के अधीन, अपने बलिदान से, अपनी तपस्या से आर्य समाज के मार्गदर्शन मे उन घटाओं को दूर करने का यत्न करेंगे।

मैं तीसरी बात यह बताना चाहता हूँ कि किसी देश का उत्थान करना होता है तो उसके विचार बड़े उच्च होने चाहिएँ। हृदय विशाल होने चाहिए। स्वार्थ दूर करना चाहिए। राष्ट्र जनता से बनते हैं और राष्ट्र जनता से उजड़ जाते हैं। संकुचित विचार न आने दें। आर्य समाज, को, भाइयो, अपने स्वार्थ से ऊपर रखो।

मनुष्य दुनिया में पैदा होता है। दुनिया परमात्मा ने बनायी। लेकिन मैं किस प्रकार की दुनिया चाहता हूँ? अच्छा पिता, अच्छा पुत्र, अच्छी पुत्री, अच्छी पुत्री, अच्छी पत्नी, अच्छा वातावरण, अच्छा राज्य, यह सब मेरे अख्तियार में है। वह सब कहाँ से आता है? वह विचारों से आता है। ए मेरे भगवान, मेरे विचारो को, मेरे सकल्प को पवित्र कर दो। जब तक सकल्प अच्छा नही है, तब तक कोई भी अच्छा काम हम नही कर सकेंगे।

स्वामी दयानन्द ने बड़े शानदार शब्दो मे कहा.—

"हम इधर-उधर की बाते पढकर कहते हैं कि दुनिया बिगड गई। लेकिन दुनिया का सुधार कैसे होगा? पहले घर का सुधार करो। पहले एक कौने से सफाई शुरू करो। भगवान् ने कहा.—मैने तुमको ऊपर उठने के लिए बनाया, नीचे गिरने के लिए नही बनाया।

दुनिया मे कर्म दो प्रकार के हैं—एक नीचे ले जाने वाले और दूसरे ऊपर उठाने वाले। कर्म दोनो ने किये हैं, यानी दो व्यक्ति इन दोनो प्रकार के कार्य करते है, एक गढा खोदता है और दूसरा कई मंजलो की इमारत बनाता है तो दोनो मे अन्तर बनता है कि गढ़ा नीचे की ओर ले जाता है और इमारत ऊपर उठती जाती है। इस लिए हमे ऊपर की ओर उठानेवाले विचार अपने अन्दर पैदा करने है। अच्छे विचार संसार मे अरबो साल से है, अच्छे विचार देने वाला एक ही है और वह है भगवान्। वह कवियो का कवि, महानो से महान्, शाहशाहो का भी शाहशाह। उससे बड़ा कोई नही है। आइए, हम अपने अन्दर यह निश्चय करे कि हम परमात्मा की संगत करें। अच्छे लोगों की संगत करें। जब हम परमात्मा की संगत मे बैठेंगे तो हमारे अन्दर पवित्र और उत्थान के विचार पैदा होंगे। अगर दुनिया वालों के बीच बैठेंगे तो इधर-उधर की बातें ही हम सुनेंगे। हमारे आचरण मे बुराई, अपवित्रता आ जाती है। इसलिए हम मे निष्ठा होनी चाहिए।

जहां जहां हम जायेंगे, हम दोष को ही देखते हैं। लेकिन तुम दोष नहीं देखो। अवगुण छोड दो। अवगुण न ढूंढो। मैं एक बार करोलबाग में कथा कर रहा था। एक मित्र ने मुझे दूध पीने के लिए अपने घर बुलाया। ऐन मौके पर बिजली फेल हो गई। मेरे मित्र का यह हाल था कि उसके घर मे न मोम बत्ति का पता था और न दियासलाई का। अंधेरे मे इधर उधर लड़खड़ाकर चक्कर काटते हुए लगे सरकार कोकोसने कि देखिये जी, सरकार भी कैसी निकम्मी है। बिजली रोज फेल हो जाती है। तो मैंने कहा अरे भले आदमी, लेकिन तुम्हारे घर की तुम्हारी भी व्यवस्था कौन सी सुन्दर है जो सरकार को कोस रहे हो? अगर आप गुण ग्रहण करेंगे तो इस झन्डे के नीचे सारे ससार का आप भला कर सकेंगे।

आर्य समाज कोई सम्प्रदाय नही है। आर्य समाज के अन्दर सारे ससार का उपकार करने की भावना है। महर्षि दयानन्द ने अपना सारा जीवन इस के लिए अर्पण कर दिया। दया करो भगवान्, आर्यो के अन्दर नयी भावना आ जाय, उदार और विशाल भावना इसके हृदय के अन्दर आ जाय। इसके अन्दर का सारा अन्धकार दूर हो जाय, यही मेरी भगवान् से प्रार्थना हैं।

श्री जगजीवनराम जी, रेलवे मंत्री, भारत सरकार

का

प्रदर्शिनी का उद्घाटन करते हुए दिया भाषण

देवियो और सज्जनो,

मै अपने लिए यह बडे सौभाग्य की बात मानता हूं कि आपने मुझे अपनी स्वर्ण जयन्ती के शुभ अवसर पर आर्य-प्रदर्शिनी का उद्घाटन करने का अवसर प्रदान किया। महर्षि दयानन्द ने मानव-जीवन से सम्बन्धित, मनुष्यता से सम्बन्ध रखने वाले जितने भी क्षेत्र हो सकते है, उन सब पर न केवल अपना प्रभाव डाला, वरन् उनका कई अशो मे अपने जीवन मे दिग्दर्शन कराया। यो तो मै मानता हू कि हरेक क्षेत्र मे उनकी सबसे बडी देन रही। आर्य संस्कृति, आर्य सभ्यता और धर्म के ऊपर जो आवरण चढ गया था, उसकी वजह से हमारा धर्म एक कलुषित-सा प्रतीत होता था। उस आवरण को बहुत बहादुरी के साथ उतार फेका और हिन्दू धर्म का जो एक प्राजल स्वरूप था, उसको उन्होने हमारे सामने रखा।

यह उनकी बहुत बडी देन थी लेकिन सामाजिक क्षेत्र मे, शिक्षा के क्षेत्र मे, आर्थिक गठन के क्षेत्र मे, राजनीतिक क्षेत्र में, कोई ऐसा क्षेत्र बाकी नहीं रहा जिसमे उनका अपनी देन नगण्य-सी कही जा सके।

आर्य समाज एक जीती-जागती सस्था बनी रही, जिसमे शक्ति थी, प्रेरणा देने की शक्ति, तपस्या की शक्ति थी और यही कारण था कि उसने समाज के भ्रमो को, अन्धकार को दूर फेक दिया। प्रतिरोध की भावना से लोग आगे आये, लेकिन आर्य समाज नष्ट नही हुआ। यह आर्य समाज की विशेषता है। यदि उसी रूप में आज भी आ जाये तो कोई कारण नही है कि आर्य समाज सारे जगत को एक ऐसी देन दे जिससे मनुष्य, मनुष्य बन जाय।

आज सबसे अधिक आवश्यकता इसी चीज की है आज धर्म का संघर्ष, संस्कृतियो का संघर्ष, विचारों का संघर्ष, वादो का सघर्ष, न केवल मनुष्य से मनुष्य को विभाजित

कर रहा है, बल्कि मनुष्य को मनुष्यता की सीढी से नीचे गिरा रहा है। मानवी और दैवी शक्ति नीचे गिरती जा रही है और दानवी शक्ति ऊपर आ रही है। ऐसा लगता है कि मनुष्य नही रहा। सृष्टि का विध्वस हो जायगा और जगत् का विनाश होगा। ऐसे समय मे एक ऐसी वाणी की, एक ऐसे मिशन की आवश्यकता होगी जो दुनिया को कह सके कि वादों के इन संघर्षों, मे अगर मनुष्य मिट जाता है, तो वह आदर्श और धर्म किस काम का? मनुष्य को बचाना है और तभी हम इस संस्कृति की या उस संस्कृति की, इस धर्म की या उस धर्म की बात कर सकते हैं।

आज जगत एक संक्रमणकाल से गुजर रहा है, यह एक क्राइसिस मे है और क्राइसिस के समय मे ऐसे सक्रमण काल मे महापुरुषो की स्मृतियाँ ही हमारा मार्गदर्शन किया करती है।

महर्षि दयानन्द ऐसे पुरुषो मे से थे जिन्होने युग के इंगित को पहचाना है, युग धर्म का आवाहन किया और युग-धर्म का प्रचार किया। आज ऐसे युग-पुरुष की आवश्यकता है जो उस युग-धर्म को पहचान सके और युग-धर्म पर चलने के लिए मानव मात्र का आवाहन कर सके।

हम जयन्तियाँ मनाते है, स्मरण करते हैं, उनके आदर्शों का स्मरण, गुणो का स्मरण, हम लोगो को करना चाहिए। सबसे बडी बात यह है कि अपने अन्दर एक प्रेरणा लेकर उन आदर्शो पर चलने का हम प्रयत्न करते है। मैंने जान-बूझकर "यत्न" शब्द इस्तेमाल किया। क्योंकि यह कठिन कार्य है। हम यत्न ही कर सकते हैं। जहाँ तक हम उन आदर्शों पर चल सकें, चले।

युगवाणी किसी जाति विशेष, देश विशेष के लिये नही हुआ करती है। अगर भगवान की वाणी सीमित हो तो वह भगवान की वाणी नही कहलायेगी। वह सार्वभौम होती है, जगत मात्र के लिए, मनुष्य मात्र के लिए और जहाँ कही भी हमने भगवान की भावना को संकुचित किया, उसकी शक्ति को सकुचित कर दिया तो वह महामानव नही रह जायगा। जो महापुरुष होते हैं, उनके प्रयत्न किसी धर्म विशेष के लिए, जाति विशेष के लिए, वर्ण विशेष के लिए, वर्ग विशेष के लिए, राष्ट्र विशेष के लिये नही होते हैं, बल्कि वह सारे ससार के लिये होते हैं और महर्षि दयानन्द के भी प्रयत्न सार्वभौम थे।

इसलिए हमे संकुचित दायरे से बाहर निकलने का और सबसे पहला प्रयत्न हमारा यही होगा कि हम मनुष्य को मनुष्य बनावे। आर्य, हिन्दू, मुसलमान, ईसाई सिक्ख, पारसी आदि अगर पहले इन्सान बने तो हमारा कार्य सफल हो जायगा।

आप देखेंगे कि महर्षि का जीवन एक सम्यक् मनुष्य का जीवन था और सम्यक् मनुष्य ही महापुरुष होता है। उनके आदर्शों से हम प्रेरणा ले और अपने सीमित क्षेत्र मे ही अनुदान दे ताकि मनुष्य को मनुष्यता के आदर्श पर स्थित किया जा सके और मनुष्य मनुष्यता का अग बन सके।

इसलिये मैंने कहा। मै अपने लिए यह बडे सौभाग्य की बात मानता हूँ, अपका आभारी हू कि आपने मुझे यह अवसर दिया कि इस काम मे अपना योगदान कर सकूँ। पुनः आपको धन्यवाद देता हूँ और महर्षि के चरणो मे अपनी श्रद्धाजलि अर्पित करता हूँ।

—:o:—

२२ वैदिक संस्कृति १।)
२३. मुक्ति से पुनरावृत्ति ।=)
२४. आर्यसमाज और सनातनधर्म ।=)
२५. आर्य समाज की नीति ।=)

श्री पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति कृत

२६ आर्य समाज का इतिहास सजिल्द
(प्रथम भाग) ४)
(दूसरा भाग) ५)

श्री रघुनाथप्रसादजी पाठक कृत

२७. आर्य जीवन गृहस्थधर्म ।।=)
२८. कथा माला ।।।)
२९ सन्तति निग्रह १।)
३० नया ससार ≡)
३१ आदर्श गुरु शिष्य ।-)

श्री पं० धर्मदेवजी विद्यामार्तण्ड कृत

३२. स्त्रियो का वेदाध्ययन अधिकार १।)
३३. भक्ति कुसुमाञ्जली ।।)
३४. हमारी राष्ट्रभाषा व लिपि ।-)
३५. महापुरुष कीर्तनम् २)

श्री स्वामी स्वतंत्रानन्द कृत

३६ आर्यसमाज के महाधन २।।)
३७ वेद की इयत्ता १।।)

श्री लाला ज्ञानचन्द कृत

३८ धर्म और उसकी आवश्यकता १।)
३९. वर्ण व्यवस्था का वैदिक रूप १।)
४०. इजहारे हकीकत (उर्दू मे) ।।=
४१. सत्यार्थप्रकाश नया सस्करण
(बढिया कागज व छपाई) मूल्य २)५०

पं० मदन मोहन विद्यासागर कृत

४२. जन कल्याण का मूल मन्त्र ।।)
४३. संस्कार महत्व ।।।)
४४. वेदो की अन्तःसाक्षी का महत्व ।।=)
४५. आ ।।)
४६. आर ।।)

कृत

४७ स्वा [illegible] वदानन्द तीर्थ) ४)
४८ स्वराज्य दर्शन (प० लक्ष्मीदत्त दीक्षित) १।
४९. राजधर्म (महर्षि दयानन्द सरस्वती) ।।)
५० भूमिका प्रकाश (संस्कृत मे)
(प० द्विजेन्द्रनाथ शास्त्री) १।।)
५१. एशिया का वेनिस (स्वा० सदानन्द) ।।।)
५२. दयानन्द सिद्धान्त भास्कर
(श्री कृष्णचन्द्र विरमानी) १।।)
५३. भजन भास्कर (सग्रहकर्त्ता पं० हरिशकर)
शर्मा कविरत्न) ५)
५७ सनातन शुद्धिशास्त्र (गोविन्द प्रकाश शास्त्री २)
५८ आर्य डाइरेक्टरी पुरानी १।)
५९ सार्वदेशिक सभा का २७ वर्षीय कार्य
विवरण अजिल्द २)
६० आर्य पर्व पद्धति (पं० भवानीप्रसाद कृत) १।)

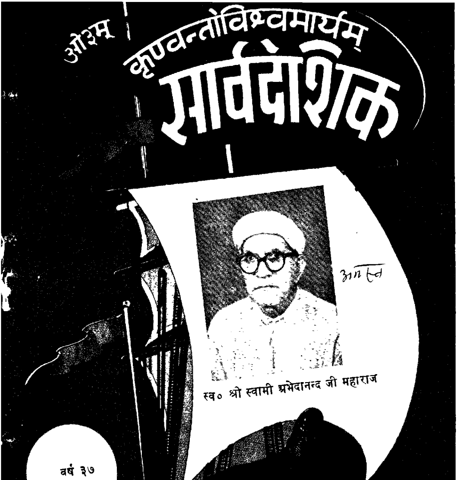
अतरौली) कृत

६१ पूर्वजन्म स्मृति ।=)
६२ ऋषि दयानन्द के पुण्य सस्मरण १.३७
६३ गीता विमर्श ।।।)

ईसाई प्रचार निरोध साहित्य

६४. ईसाई षड्यन्त्र ।)

सम्राट् प्रेस, पहाड़ी धीरज, दिल्ली मे मुद्रित व रघुनाथ प्रसाद जी पाठक मुद्रक और प्रकाशक के लिये
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द भवन, नई दिल्ली-१ से प्रकाशित।



स्व० श्री स्वामी अभेदानन्द जी महाराज

॥ ओ३म् ॥

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

वार्षिक मूल्य ६)　　　विदेश से वार्षिक ८) या १२ शिलिंग

वर्ष ३७]　　सृष्टि सम्वत १९७२९४९०६०　　अगस्त १९६१ श्रावण २०१८　　अंक ६

विषय-सूची

* सम्पादक

काली चरण आर्य सभा मन्त्री

* सहायक सम्पादक

रघुनाथप्रसाद पाठक

* प्रकाशक व मुद्रक

रघुनाथप्रसाद पाठक

* कार्यालय

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
दयानन्द भवन, नई दिल्ली

फोन : २४७७१

* मुद्रक

सम्राट् प्रेस, पहाड़ी धीरज देहली ।

फोन : २८४३४

अमरावती के सुप्रसिद्ध दानवीर

श्रीयुत भवानीलाल जी शर्मा



श्रीमती निज्जोदेवी जी

(धर्मपत्नी श्रीयुत भवानीलाल जी शर्मा)



श्री शर्मा जी ने सार्वदेशिक पत्र की सहायतार्थ तथा सत्यार्थ प्रकाश के प्रकाशनार्थ पृथक्-पृथक् ५-५ हजार रुपये की स्थिर निधियां सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली में स्थापित की है ।

१० हजार रुपये का महान सहयोग

श्री भवानीलाल गज्जूलाल जी शर्मा स्थिर निधि

विश्वकर्मा कुलोत्पन्न स्व० श्रीमती गिरजादेवी-भवानीलाल जी शर्मा कलुहार की पुण्य स्मृति में श्री भवानीलाल जी शर्मा कानपुर वर्तमान अमरावती (विदर्भ) निवासी ने 'सार्वदेशिक' पत्र के हितार्थ श्री० जी० शर्मा स्थिर निधि की योजना निम्न लिखित नियमानुसार कार्तिक २०१३ वि० नवम्बर १९५६ ई० को प्रस्थापित की।

नियम—

१—इस मूलधन से प्राप्त वार्षिक ब्याज का आधा भाग पत्र को सहायता रूप में मिलता रहेगा। शेष आधा भाग उसी निधि में सम्मिलित होता रहेगा।

२—यदि किसी भी कारण वश पत्र बन्द हो जाय तो उक्त सहायता का मिलना भी बन्द हो जायगा और वार्षिक ब्याज की सम्पूर्ण रकम मूलधन में मिलती रहेगी।

३—पत्र यदि पुनः चालू हुआ तो उक्त सहायता प्राप्ति के लिये वह पूर्ण अधिकारी होगा।

४—पत्र के चालू न होने की पूर्ण निराशा में सार्वदेशिक सभा उक्त योजना का सर्वाधिकार सहर्ष ही किसी अन्य योग्य आर्य पत्र को दे सकती है।

५—सभा के निश्चयानुसार उपर्युक्त सम्पूर्ण योजना सार्वदेशिक पत्र में प्रत्येक वर्ष प्रति तीसरे मास प्रकाशित होती रहेगा।

सार्वदेशिक सभा की ७-१०-५६ की अन्तरंग का तत्सम्बन्धी निश्चय—

सर्व सम्मति से निश्चय हुआ कि यह १००००) का दान सधन्यवाद स्वीकार किया जाय और उक्त योजना भी स्वीकार की जाय। यह सभा श्री भवानीलाल जी शर्मा को यह आश्वासन देती है कि उपरोक्त योजना अवश्य चलती रहेगी। श्री शर्मा जी १००००) सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली को अविलम्ब भेज दें ताकि कार्य प्रारम्भ करने में विलम्ब न हो।

श्री शर्मा जी का सार्वदेशिक पत्र की सहायतार्थ १००००) का दान सभा को प्राप्त हो चुका है। जहां यह दान उनकी दानशीलता एवं आर्य समाज के प्रति उनकी निष्ठा का सूचक है वहां सार्वदेशिक पत्र की लोकप्रियता का भी द्योतक है। उन्होंने आर्य नर नारियों के सम्मुख एक अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया है। हम सभा तथा सार्वदेशिक परिवार की ओर से उन्हें हार्दिक बधाई देते हैं। इस राशि की अर्द्ध आय सार्वदेशिक की उन्नति में ही व्यय की जाती रहेगी।

रघुवीरसिंह शास्त्री

मन्त्री

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली—६

सम्पादकीय

श्री स्वामी अभेदानन्द जी महाराज का निधन

(जन्म १८६३ ई० निधन १६-७-६१)

श्री पूज्य स्वामी अभेदानन्द जी महाराज के निधन का समाचार देते हुए अत्यन्त दुःख होता है। श्री स्वामी जी का निधन १६ जुलाई ६१ को मौरीशस के एक हस्पताल में हुआ। आर्य सभा मौरीशस के १५-७-६१ के तार से जो १६-७-६१ को सार्वदेशिक सभा के कार्यालय में प्राप्त हुआ प्रथम बार यह ज्ञात हुआ कि वे डाइबिटीज के रोग से बीमार हैं, फोड़ों का आपरेशन करके शौच का मार्ग बदलना होगा और उनकी दशा चिन्ताजनक है। १७ को प्राप्त हुए तार से उनके निधन का हृदय-विदारक समाचार मिला। आर्य सभा मौरीशस और वहां के आर्य बन्धुओं ने उनकी चिकित्सा और उपचार में कोई प्रयत्न उठा न रक्खा।

श्री स्वामी जी ५-१०-६० को प्रचार तथा संगठन कार्य के लिए आर्य सभा की विशेष प्रार्थना पर हवाई जहाज से मौरीशस गये थे। नैरोबी में ६-१०-६० से २१-१०-६० तक रहे और प्रचार करके २२-१०-६० को मोरीशस पहुँचे थे। श्री स्वामी जी ने श्री स्वामी ध्रुवानन्द जी महाराज का स्थान ग्रहण करके अपनी योग्यता और कार्य-कुशलता का अच्छा परिचय दिया था। श्री स्वामी ध्रुवानन्द जी महाराज उनके वहां रहते निश्चिन्त थे।

श्री स्वामी अभेदानन्द जी का वानप्रस्थाश्रम का नाम पं० वेदव्रत था। वह हिंदी, उर्दू, संस्कृत, फारसी और अंग्रेजी के बड़े विद्वान् थे। उनका जन्म उत्तर प्रदेश में हुआ था। बिहार और उत्तर प्रदेश प्रमुख रूप से उनके कार्य-क्षेत्र रहे। उन्होंने आर्य समाज और कांग्रेस दोनों की अनथक सेवा की। उन्होंने राष्ट्रपति डा० राजेन्द्रप्रसाद जी के सहयोग से बिहार में वर्षों पर्यन्त कांग्रेस का काम किया। ३ बार जेल यात्रा की। आल इन्डिया कांग्रेस कमेटी के सदस्य तथा जिला कांग्रेस कमेटी बस्ती और छपरा के प्रधान रहे।

वह आर्य प्रतिनिधि सभा बिहार और डी० ए० वी० कालेज सीवान के जन्म दाताओं में से थे। कई वर्षों तक उस सभा के मंत्री और प्रधान रहे। गुरुकुल महाविद्यालय वैद्यनाथ धाम के आचार्य रहकर उसे उन्नत किया। बिहार की अधिकांश आर्य समाजें श्री स्वामी जी के पुरुषार्थ का फल है।

श्री स्वामी जी हैदराबाद सत्याग्रह के ५ वें अधिनायक और सिन्ध सत्याग्रह के एक प्रमुख अग्रणी रहे। २ वर्ष पर्यन्त सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान रहकर

समस्त आर्य-जगत का मार्गप्रदर्शन और पंजाबमें हिन्दी रक्षा आन्दोलन का १९५७ मे सफल संचालन किया।

इस समय वह सार्वदेशिक वानप्रस्थ सन्यास आश्रम ज्वालापुर के प्रधान और भारत साधु समाज की अन्तरंग के सदस्य थे।

श्री स्वामी जी बड़े सरल और सौम्य थे। वाणी में ओज और प्रवाह था। उनके भाषण बड़े विद्वत्ता पूर्ण और प्रभावोत्पादक होते थे। उनमें हिन्दी संस्कृत और अंग्रेजी में धारा प्रवाह लिखने और बोलने की अपूर्व क्षमता थी। उनका व्यक्तित्व ऊचा और बहुत आकर्षक था। आर्य समाज उनकी सेवाओं के लिये चिरऋण रहेगा।

आर्य समाज उनसे अपने को वंचित पाकर अकिंचन अनुभव कर रहा है।

—कालीचरण आर्य

सम्पादकीय टिप्पणियाँ

चक्रवर्ती राज्य का महत्त्व

इन दिनों अणु बम आदि महाघातक अस्त्रों के नियन्त्रण वा निरस्त्रीकरण की चर्चा चल रही है। तृतीय विश्व युद्ध के निराकरण और शीत-युद्ध की समाप्ति के लिए रूस, अमेरिका, इंगलैंड और फ्रांस इत्यादि के शासक और राजनीतिज्ञ इसी उपाय को अनिवार्य बता रहे हैं। उनकी मान्यता है कि निरस्त्रीकरण से ही स्थिर शान्ति कायम रह सकती है। क्रुश्चेव ने कहा है कि 'यही समस्त समस्याओं की समस्या है।" राष्ट्रपति कैनेडी ने अपने निर्वाचन के तत्काल पश्चात् इस विषय पर इसी प्रकार का अपना मत व्यक्त किया था।

यह प्रश्न नया नहीं है। अब से ३० वर्ष पूर्व भी यह प्रश्न उठा था जिसके फलस्वरूप १९३२ से १९३४ तक जिनेवा में निरस्त्रीकरण सम्मेलन होते रहे थे। उस अवसर पर भी इसी प्रकार के विचार प्रकट किए गए थे परन्तु द्वितीय महायुद्ध के छिड़ जाने के कारण यह मामला खटाई मे पड़ गया था।

द्वितीय महा समर का उद्देश्य युद्ध की सदैव के लिए परिसमाप्ति बताई गई थी। परन्तु इस महान उद्देश्य की पूर्ति न हुई उल्टे तृतीय महा समर की सम्भावना ही और अधिक बढ गई है। पारस्परिक भय और अविश्वास इतना अधिक बढ़ गया है और इनसे वातावरण इतना अधिक दूषित हो गया है कि यदि पूर्ण निरस्त्रीकरण वा नियन्त्रित निरस्त्रीकरण की सन्धि पर बड़े-बड़े राष्ट्रों के कर्णधारों के हस्ताक्षर हो भी गए तब भी स्थिर शान्ति की कोई आशा न की जा सकेगी।

१९४५ से १९४९ तक के काल में अणुबम एक मात्र अमेरिका के पास रहा और युद्ध की ओर से लोग निश्चिन्त

रहे। राजनीतिज्ञों ने समझा कि उन्हें युद्ध के शमन की राम बाण औषधि मिल गई है और इसके रहते रूस आदि को युद्ध छेड़ने का साहस न होगा। परन्तु यह घातक अस्त्र प्रतिबंधकारी सिद्ध न हुआ। रूस ने कुछ अर्से मे ही अणु बम बना लिया।

स्पष्ट है कि वर्तमान राजनैतिक ढांचे में बड़े से बड़ा घातक अस्त्र प्रतिबंधकारी न होकर प्रेरणादायक सिद्ध होता है। इसके बाद से तो रूस और अमेरिका मे घातक अस्त्रों के निर्माण की होड लग गई। जिस दिन दोनों गुटो की शक्ति संतुलित हो जायगी उसी दिन तृतीय महा युद्ध की छाया बहुत निकट आ जायगी।

युद्धों का निराकरण न तो शस्त्रीकरण से होता है और न निरस्त्रीकरण से। यदि युद्ध करना ही हुआ तो वह चाकुओं, घूसों, और लाठियों से भी हो सकता है।

वैदिक राजनीति में स्थान २ पर चक्रवर्ती राज्य की महिमा और खंड राज्यों की निन्दा दर्शाई गई है इसीलिए कि इनसे युद्ध और संघर्ष का भय बना रहता है। श्री एमरी रेव्ज ने जून १९६१ के रीडर्स डाइजेस्ट मे लिखित अपने लेख मे इस तथ्य को अंगीकार करते हुए ठीक ही लिखा है कि "विरोधी वर्गों मे शान्ति कभी स्थापित नही हो सकती और जब तक उन वर्गों को नियन्त्रित करने वाली उनके ऊपर सर्व प्रभुता सम्पन्न सत्ता नही होती तब तक युद्धों का ताता लगा ही रहता है। इस तथ्य को हृदयङ्गम कर लेने पर शस्त्रीकरण और निरस्त्रीकरण पर वाद-विवाद व्यर्थ जान पड़ेगा। यदि मानव-समाज इस प्रकार सगठित हो कि उसकी इकाइयों के पारस्परिक सम्बन्ध प्रजातान्त्रिक नियन्त्रित कानून द्वारा सुनियोजित हों तो घातक से घातक अस्त्रों के निर्माण से भी युद्ध न होगा परन्तु यदि हम विविध इकाइयो को खुली छुट्टी और वे सर्व प्रभुता सम्पन्न बनी रहें तो युद्ध का भय कभी टल न सकेगा, भले ही हम घातक अस्त्रों पर यहाँ तक कि चाकुओं और लाठियों पर भी प्रतिबन्ध क्यों न लगा दें।

वेदों में गणित

सार्वदेशिक के जुलाई के अंक में श्री सेवानन्द जी एम० ए० का एक लेख 'वेदों मे 'गणित' शीर्षक से छपा था। इस लेख को पाठकों ने पसन्द किया और प्रेरणा की है कि श्री स्वामी जी महाराज से अपने अनुसंधान के फल को पुस्तक रूप मे रखने की प्रार्थना की जाय। श्री नानूलाल कोठारी सरदारपुरा उज्जैन से लिखते हैं:—

"श्री स्वामी जी का लेख पढ़कर सन्तोष हुआ। मेरी ओर से सरस्वती जी को धन्यवाद दीजिए। मेरी प्रार्थना है कि वे इस खोज को और गहनतर बनाकर उपलब्धियाँ पुस्तकाकार प्रकाशित कराने की चेष्टा करे ताकि गणित के आधुनिक बीज एवं रेखागणित पर भारतीय प्राचीनता प्रतिपादित की जा सके।"

उपर्युक्त लेख में प्रेस की भूल से स्वामी जी का नाम 'सेवानन्द' के स्थान मे 'सेवकानन्द' छप गया था। पाठक भूल को सुधारलें।

श्री स्वामी जी से निवेदन है कि वे अपनी कृतियों से जनता को अधिकाधिक लाभान्वित करने की चेष्टा करें।

स्व० डा० वेदव्रत

जन्म—२३-७-१९१६ मृत्यु—२-९-१९६०

कई मास हुए रूटर ने अमेरिका से डा० व्रत की मृत्यु का समाचार प्रसारित किया था। उस समाचार से यह स्पष्ट न हुआ था कि प्रसिद्ध आर्य विद्वान् डा० वेदव्रत जी का निधन हो गया है। उनके आदरणीय पिता श्रीयुत के० पी० वर्म्मा के पत्र से इस समाचार की पुष्टि हो जाने पर हमारे दुःख का पारावार न रहा। डा० व्रत अमेरिका मे अपने अध्ययन और अनुसंधान कार्य के साथर वैदिक सिद्धान्तों से अमेरिकन प्रजा को परिचित कराने का भी प्रशसनीय कार्य कर रहे थे। उन्होने योग विषय पर अंग्रेजी मे समाधि नामक एक बहुत बड़ा और उच्चकोटि का ग्रन्थ लिखा था जिसके हस्त

लेखकों सार्वदेशिक सभा की प्रार्थना पर श्रीयुत पं० गंगा प्रसाद जी उपाध्याय ने देखा और उसकी मुक्त कंठ से सराहना की थी। इस ग्रन्थ की भूमिका उपराष्ट्रपति श्री डा० राधाकृष्णन ने लिखी है। इसके अतिरिक्त उन्होंने लाइफ आफटर डैथ आदि कई ग्रन्थ लिखकर तैयार किए थे जिनमें वैदिक सिद्धान्तों का प्रति-पादन किया गया था। वह समाधि ग्रन्थ के प्रकाशन की योजना बनाही रहे थे कि इतने में इस उदीयमान ज्योति का अन्त हो गया। आर्य समाज को उनसे विशेष आशाएं थीं। समाधि ग्रन्थ की छपाई का आनुमानिक व्यय लगभग १० सहस्र रुपया है। जो कोई सज्जन और आर्य समाजें उसके प्रकाशन में अपना आर्थिक योग देना चाहें वे अपनी सहायता सार्वदेशिक सभा को भेज सकते हैं। इस बीच में सभा उस ग्रन्थ की हस्त लिपि उनके परिजनों से प्राप्त करने का यत्न करेगी। अमेरिका में सम्प्रदाय वादियों ने 'योग' के सम्बन्ध में बड़ी भ्रान्ति फैलाई हुई है। 'योग' का वास्तविक रूप प्रस्तुत करने में यह ग्रन्थ परम सहायक सिद्ध हो सकता है।

डा० व्रत की मृत्यु बालमोन्ट (अमेरिका) में हृदय की गति बन्द होने से हुई। १९४६ में प्रयाग विश्वविद्यालय से फर्स्ट डिवीजन में एम० एस० सी० परीक्षा उत्तीर्ण की और समस्त विद्यार्थियों में फर्स्ट रहे थे। विज्ञान और दर्शन में अनुसंधान कार्य को जारी रखने के लिए अमेरिका चले गये थे। अपने कार्य से वहां उन्हें ख्याति प्राप्त हुई और विज्ञान तथा दर्शन सम्बन्धी अनेक संस्थाओं के सदस्य बनाए गए।

उनके पिता डा० के० पी० वर्म्मा १९५४ में अपना शेष जीवन अपने प्रिय पुत्र के पास व्यतीत करने के उद्देश्य से अमेरिका चले गये थे। वर्म्मा जी ने वहां अपने पुत्र के साथ आर्य समाज का प्रचार किया और वैदिक रीति से एक उल्लेखनीय विवाह किया जिसका समाचार सार्वदेशिक में छपा था।

डा० व्रत अपने पीछे पत्नी, १ पुत्र (देव) २ पुत्रियां (रिता और गीता), वृद्धपिता और तीन बहिनें छोड़ गए हैं, हम इस परिवार के महान् दुःख में अपनी हार्दिक समवेदना का प्रकाश करते हुए दिवंगत आत्मा की सद्गति के लिए परमात्मा से प्रार्थना करते हैं।

श्रीयुत वर्म्माजी को हम किन शब्दों में धैर्य बधाएं उन्हें इस उक्ति से धैर्य धारण करना चाहिए कि जो व्यक्ति परमात्मा के प्यारे होते हैं। वे जवानी में ही मर जाते हैं।

पाश्चात्य विचारधारा पर भारतीय प्रभाव

बाइबिल की कहानियों की शैली बौद्ध जातक कथाओं की प्रतिध्वनि मानी जाती है। विन्सेन्ट स्मिथ कहते हैं ईसाइयत की पुरानी कुछ शिक्षाओं में गौतम की कुछ शिक्षाओं का समावेश दीख पड़ता है।" विन्टर निट्स का विश्वास है कि यहूदी और यूनानी विचारधारा के संमिश्रण में जिस पर ईसाइयत के सिद्धान्त अवलम्बित हैं बौद्ध विचार धारा का भी कुछ पुट लगा हुआ देख पड़ता है।

कुछ वर्ष हुए एक पुस्तक प्रकाशित हुई थी जिसका नाम था 'जेसस क्राइस्ट का अज्ञात जीवन' और जो उस हस्त लेख का अनुवाद था जो तिब्बत के एक मठ में रूसी अन्वेषक लुटोविच को प्राप्त हुआ था। इस पुस्तक में ईसा के उन १२ वर्षों का उत्तर भारतीय भ्रमण का वर्णन अंकित है जबकि वह यरुशलम से अनुपस्थित रहे थे। इस काल में ईसा भारत के प्रसिद्ध स्थानों पर गए थे और अनेक सन्तों और विद्वानों से उन्होंने भेंट की थी।

पाकिस्तान में बहुविवाह

अखिल-पाकिस्तान महिला एसोशियेशन की अध्यक्षा बेगम रजिया मुहम्मद अली ने प्रेस प्रतिनिधियों को बताया है कि इन दिनों पाकिस्तान में बहुविवाहों की धूम मची हुई है। उनको देश की महिलाओं से बहु संख्या में प्रति-वेदन प्राप्त हो रहे हैं जिनमें मांग की जाती है कि 'मुस्लिम परिवार विधेयक अध्यादेश का प्रचलन शीघ्र से शीघ्र कराया जाय जिसमें बहु विवाह निषिद्ध कर

दिए गए हैं। पुरुष वर्ग अध्यादेश के प्रचलन से पूर्व ही दूसरे विवाहों के करने की जल्दी में हैं।

बेगम महोदया ने यह भी बताया कि बहुविवाह की वृद्धि के लिए स्त्री और पुरुष दोनों ही अपराधी हैं। यदि लड़कियों के माता-पिता विवाह न करने के लिए डट जायें और लड़कियां सपत्नियां बनने से इन्कार करदे तो यह समस्या जटिल न बनने पावे।

इन पंक्तियों को लिखने के बाद पता लगा है कि अध्यादेश का प्रचलन आरम्भ हो गया है।

अमेरिकन महिलाएँ और कर्णवेध

अमेरिका के एक बड़े जौहरी के मतानुसार अमेरिका की महिलाओं ने अपने कानों को बिंधवाना आरम्भ कर दिया है। उस जौहरी ने कानों को बींधने के लिए एक विशेषज्ञ को नियुक्त कर रक्खा है और अपनी ग्राहिकाओं के कानों को मुफ्त बींधता है। उस ने एक विज्ञापन प्रकाशित कराया है जिसमे बताया गया है कि अब तक लगभग १ लाख महिलाएँ अपने कान बिधवा चुकी है। कानों के बिंधवाने का लाभ यह प्रकट किया गया है कि बिंधे हुए कानों में कर्णफूलों को पहनने से उनके खो जाने का भय नहीं रहता जबकि क्लिप में लगे हुए कर्णफूल खो जाते हैं।

भारतीय महिलाओं को यह देखकर हर्ष होगा कि इस सम्बन्ध मे अमेरिका की महिलाएँ उनका साथ देने लगी है।

कानों को बिंधवाने की प्रथा का स्वास्थ्य सम्बन्धी महत्त्व भी है।

हिन्दुओं का उत्तराधिकार का कानून और पुत्रियाँ

ला कमीशन के अध्यक्ष जस्टिस वेंकट रम्मा अय्यर ने ६ जून को कोयम्बटूर में वकीलों को बताया कि पंजाब में यह यत्न किया जा रहा है कि हिन्दू कानून के अनुसार उत्तराधिकार मे मिलने वाली सम्पत्ति केवल अविवाहित पुत्रियों को प्राप्त हो विवाहितों को नही।

'कानून सुधार' के विषय पर बार एसोसियेशन में भाषण करते हुए अय्यर महोदय ने कहा 'इस प्रकार के प्रश्नों का समाधान कानूनी सिद्धान्तो की अपेक्षा सामाजिक परिस्थितियो को सामने रखकर होना चाहिए।"

वेदो के मन्तव्यानुसार जिस कन्या का भाई न हो अथवा जो कन्या पिता के घर मे रहे उसका अपने पिता की सम्पत्ति मे अधिकार रहना चाहिए। कई आचार्यों के अनुसार जैसा कि यास्क ने लिखा है ऋग्वेद ३, ३१ १ मे यह उपदेश भी दिया गया है कि सभी कन्याओं का पिता की सम्पत्ति में भाइयों के समान ही अधिकार है। जैसा कि यास्क ने लिखा है कई आचार्य इस मन्त्र को कन्या के उत्तराधिकार मे न लगाकर पुत्र के उत्तराधिकार में लगाते हैं। यदि इस मन्त्र के अर्थ में मत भेद हो और यह न माना जाय कि पिता की सम्पत्ति मे विवाहित कन्या का भी अधिकार होता है तो भी कोई हानि नहीं है और न ही उस अवस्था में कन्याओं के साथ कोई अन्याय ही होता है क्योंकि विवाहित कन्याओ का अपने पतियों की सम्पत्ति में तो अधिकार रहेगा ही।

(शेष पृ० २७२, २७३)

श्रद्धेय स्व० स्वामी अभेदानन्द जी महाराज के निधन पर सार्वदेशिक सभा के तत्वावधान में आयोजित दिल्ली का विराट शोक सभा

२३-७-१९६१ को आर्य समाज दीवान हाल दिल्ली में सायंकाल ५ बजे से सार्वदेशिक सभा के तत्वावधान मे श्री स्वामी अभेदानन्द जी के निधन पर एक विराट शोक सभा हुई जिसकी अध्यक्षता श्री स्वा० ध्रुवानन्दजी महाराज प्रधान सार्वदेशिक सभा ने की।

इस सभा में सर्व श्री महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज, महात्मा आनन्दभिक्षु जी डी. डी. पुरी (पूर्वीय अफ्रीका) प० बुद्धदेव विद्यालंकार, रघुवीरसिंह शास्त्री, जगदेव सिंह सिद्धांती, नरदेव स्नातक एम. पी. प्रिंसिपल ईश्वरदास जी, डा० डी० राम प्रधान आर्य प्रति० सभा बिहार, आचार्य विश्वश्रवा, श्री ल० रामगोपाल शालवाले, प्रधान आर्य केन्द्रीय सभा, ओ३मप्रकाश त्यागी जी ने अपनी श्रद्धांजलियाँ प्रदान की। इस बैठक मे दिल्ली के प्राय सभी प्रमुख आर्य नेता उपस्थित थे।

श्री स्वामी ध्रुवानन्द जी ने अपने प्रारम्भिक भाषण मे श्री स्वामी जी का संक्षिप्त जीवन परिचय देते हुए कहा कि वह उत्तर प्रदेश के बस्ती जिले के निवासी थे। जन्मतः ब्राह्मण पांडे थे। जब गोरखपुर मे मैट्रिक मे पढ़ते थे तभी आर्य समाज की ओर प्रेरित हुए और आजन्म आर्य समाज के ही बने रहे। यद्यपि उन्होंने राष्ट्रीय आंदोलन आदि मे डट कर कार्य किया तथापि वे सदैव आर्य समाज को आगे रखते रहे। आर्य समाज के लिए वह राष्ट्रीय आंदोलन तक को छोड़ने के लिए उद्यत रहते थे। मौरीशस मे स्व० स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी ने बड़ा कार्य किया। उन्होंने दोनो सभाओ को मिलाया।

यदि सार्वदेशिक सभा का प्रतिनिधि वहां रहता तो पुनः दोनों सभाएं न होती। सार्वदेशिक सभा ने यह कार्य मेरे सुपुर्द किया कि मैं दोनों सभाओं को पुनः मिला दूं। ३ वर्ष के काल मे मैंने यह काम सम्पन्न किया और निश्चय किया कि मारीशस छोडने से पूर्व मे किसी महानुभाव को अपने स्थान पर बिठा दूंगा। मैंने दृष्टि दौडाई। मुझे श्री स्वामी अभेदानन्द जी महाराज इस कार्य के लिए बहुत उपयुक्त जान पड़े। एक तो वह बडे विद्वान् थे दूसरे विधान के ज्ञाता थे तीसरे बडे लोकप्रिय थे। वह मौरीशस के वातावरण के अनुकूल थे क्योकि वहा जिन लोगो के मध्य उन्हे रहना और कार्य करना था वह अधिकांश में बिहार प्रांतीय थे और बिहार ही स्वामी जी की सामाजिक प्रगतियों का प्रमुख केन्द्र रहा। मेने स्वामी जी से प्रार्थना की परन्तु पहले तो उन्होंने निषेध कर दिया परन्तु जब उनके सामने यह स्थिति आई कि उन का जाना अनिवार्य है और मै उनके पहुचे बिना मौरीशस नही छोड़ सकता तो उन्होने मेरे तथा सार्वदेशिक सभा के अनुरोध को स्वीकार करके कर्त्तव्य की प्रेरणा पर वहां जाना स्वीकार कर लिया। वे वहां पहुचे। मैंने ३ महीने उनके साथ रह कर वहाँ की स्थिति तथा मुख्य २ कार्यकर्त्ताओं से जब उन्हे भली भांति परिचित कर दिया तब उन्होंने मुझे भारत-प्रस्थान की अनुमति दे दी। वहां के कार्य को उन्होने बड़ी उत्तमता से सम्भाला हुआ था। वह वहां के लोगों में घुलमिल गए थे। मैं तथा सार्वदेशिक सभा उनकी वहां उपस्थिति से निश्चिन्त थे।

मैं गुजरात के दौरे पर था जब कि सभा का तार पहुचा कि श्री स्वामी अभेदानन्द जी अब इस संसार में नहीं हैं। मुझे सहसा विश्वास न हुआ। दूसरा तार बम्बई पहुँचने पर मिला। मे अवाक् रह गया। मुझे जो मर्मान्तक वेदना हुई उसका वर्णन करने मे असमर्थ हूं। दिल्ली आने

पर मुझे मोरीशस के तीन पत्र मिले। उन्हें पढ़कर मुझे सन्तोष हुआ कि मोरीशस के आर्य भाइयों ने स्वामी जी की चिकित्सा और उपचार में कोई कमी नहीं रखी।

श्री महात्मा आनन्द स्वामी जी ने अपनी श्रद्धांजलि प्रस्तुत करते हुए कहा कि आर्य समाज में पहले ही से सन्यांसी कम हैं। जो भी हैं एक २ करके जा रहे है। स्वामी अभेदानन्द जी संस्कृत, हिन्दी, फारसी और अंग्रेजी के बड़े विद्वान थे। कई अवसरों पर मुझे उनके साथ रहने का अवसर मिला। पूना के कालेजों मे उनके ५ व्याख्यान अंग्रेजी मे हुए जिनका प्रभाव बहुत अच्छा रहा था। यह बडी शांत प्रकृति के निरभिमानी और मिलनसार थे। आर्य समाज मे अधिक से अधिक योग्य सन्यासी आए इस का यत्न होना चाहिए।

श्री पं० बुद्धदेव विद्यालंकार ने अपनी श्रद्धांजलि प्रस्तुत करते हुए घोषणा की कि वह १९६२ मे सन्यास ग्रहण करेंगे। टंकारा से अजमेर तक पैदल यात्रा करके अजमेर में स्वामी व्रतानन्द जी से सन्यास की दीक्षा लेगे।

डा० डी राम जी ने कहा कि मैं राष्ट्रपति महोदय की बीमारी के कारण दिल्ली आया था। यहा विदित हुआ कि आर्य समाज दीवान हाल मे शोक सभा होने वाली है। मैंने अपने व्यस्त कार्यक्रम मे से २ घंटे समय निकालकर यहा पहुचना कर्त्तव्य समझा। श्री स्वामी जी के मोरीशस प्रस्थान के समय आर्य प्रतिनिधि सभा बिहार ने तथा सार्वदेशिक सभा ने जो विदाई-समारोह किए थे उनका सौभाग्यवश मुझे प्रधानत्व करने का शुभावसर मिला। दिल्ली में हवाई जहाज मे बैठाते समय में उपस्थित था। स्वामी जी का हमारे साथ १९२७ से घनिष्ठ सम्पर्क था। बिहार और आर्य प्रतिनिधि सभा बिहार के हम लोग उनकी सेवाओं के लिए ऋणी हैं। स्वामी जी को अपने शरीर के कपडो आदि की कोई सुधि न रहती थी। मोरीशस जाते समय दिल्ली मे मेरे विशेष अनुरोध पर उन्होंने मुझे कुर्त्ता आदि बनवाने और अटैची खरीद कर लाने की अनुमति दी थी क्योंकि उनके पास यह सामान न था। सार्वदेशिक सभा वालों को मना कर दिया था कि इस सामान की आवश्यकता नही है

श्री जगदेव सिंह सिद्धान्ती जी ने कहा कि सार्वदेशिक सभा स्वामी जी की स्मृति को स्थिर रखने की कोई योजना बनायेगी तो आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब उसकी सफलता के लिए पूर्ण योग देगी।

आचार्य विश्वश्रवा: जी ने कहा श्री स्वामी जी की मृत्यु एक दुःखद घटना है। उनकी मृत्यु तिथि निश्चित थी चाहे वह भारत में होती वा मोरीशस में। उन्होंने यह भी बताया कि परोपकारिणी सभा मे श्री महर्षि दयानन्द के हाथ से लिखी हुई, एक पत्र पर तीन चार पंक्तियां सुरक्षित है कि जिस मे इस आशय का लेख है १०० वर्ष की आयु से पूर्व मेरी मृत्यु होगी और नियत दिन होगी क्योंकि मृत्यु का समय और दिन नियत होता है और यह वेद भाष्य का कार्य पूरा न होगा इसमें ४०० वर्ष लगेंगे।

श्री डी० डी पुरी ने बताया कि मोरिशस जाते हुए १५, २० दिन तक नैरोबी मे हमे उनके आतिथ्य का सौभाग्य प्राप्त हुआ। हम सब उनके जीवन से बड़े प्रभावित थे। नैरोबी मे उनका पासपोर्ट गुम हो गया। "कहा क्या मैं सदा अफ्रीका मे ही रहूंगा।" खोज की गई परन्तु जब न मिला तो पासपोर्ट बनवाया गया। वह मौरिशस गए परन्तु उनके उपर्युक्त शब्द मेरे हृदय मे सदैव उद्वेलित रहे। मुझसे कहा दिल्ली लौटने पर मैं आपके यहाँ ठहरूंगा परन्तु क्या पता था कि वह दिल्ली न लौट सकेंगे।

अन्य वक्ताओं ने उनके गुणों का वर्णन करते हुए अपनी श्रद्धान्जलियाँ प्रस्तुत की।

शोक सभा का प्रस्ताव

यह सभा आर्य समाज के वीतराग तपस्वी संन्यासी तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के भूतपूर्व प्रधान श्री स्वामी अभेदानन्द जी महाराज के आकस्मिक निधन पर हार्दिक शोक प्रकट करती और दिवगत आत्मा क सद्गति के लिए परमात्मा से प्रार्थना करती है। स्वामी जी का निधन वस्तुतः आर्य समाज और देश की भारी क्षति है।

श्री स्वामी जी आर्य समाज के उज्ज्वल रत्न और महाधन थे। वह हिन्दी संस्कृत, अंग्रेजी और फारसी के प्रौढ़ वक्ता और लेखक थे। आर्य समाज और स्वाधीनता के प्रत्येक आन्दोलन में वे आगे रहे। वह आर्य समाज की शोभा थे और आर्य समाज को उन पर गर्व था। निश्चय ही आर्यजन सदा उनके आदर्श जीवन से प्रेरणा ग्रहण करते रहेंगे।"

मौरीशस के पत्र

श्री टी० कालीचरण पोर्टलुइस भूतपूर्व प्रधान आर्य सभा मोरीशस का १६-७-६१ का पूज्य स्वामी (ध्र ुवानन्द) जी की सेवा में।

"अत्यन्त दुःखी हृदय से आपको लिखता हू कि पूज्य स्वामी अभेदानन्द जी महाराज का स्वर्गवास आज (१६-७-६१) २ बजे दिन में हो गया। यह पत्र रात को आठ बजे लिखा जा रहा है जब कि स्वामी जी घोर निद्रा में सो रहे हैं। लाख कोशिश की गई फिर भी उन्हें बचा न सके। हम बड़े अभागे हैं। गत सप्ताह सोमवार ता० ३ जुलाई को अनाथालय कमिटी लगी। वहाँ आश्रम में जाने से पता लगा कि स्वामी जी अस्वस्थ हैं। बीमार होते तो वह बोलते नही। पूछताछ करने के बाद मालूम हुआ कि बीमारी साधारण रही थी। बवासीर फोड़ा Rectal Abcess हो गया है। इलाज आपरेशन के सिवा कोई न था। दूसरी तरफ स्वामी जी डायाबेटीज से पीडित थे। खून का विश्लेषण करवाने के बाद ज्ञात हुआ कि चीनी लगभग ३ ग्राम है। डा० तिलक और डा० चरभरण से फोन द्वारा तुरन्त सलाह की गयी। दोनों देखने आये और बाद में लगभग ६ बजे तक यह तय हुआ कि स्वामी जी को क्लीनिक मे दाखिल किया जाय। दूसरे दिन सवेरे स्वामी जी क्लीनिक मोरीशस जो कि रेजवी में है और जो कि सबसे नया और माडर्न क्लीनिक है वहाँ दाखिल किया गया। एक दिन तो डायबिटीज को कम करने की कोशिश की गई। डाक्टरों ने फिर सोचा कि आपरेशन एक दो दिन के लिए स्थगित कर दिया जाय। फिर आपरेशन किया गया। बवासीर का आपरेशन हो जाने के बाद डाक्टरों ने सोचा कि मल का रास्ता दूसरा बनाना चाहिए जिससे बवासीर अच्छा होने में मल के सम्पर्क से बाधा न हो। यह भी किया गया। लेकिन दूसरे आपरेशन के बाद जो कि बहुत जरूरी था स्वामी जी बहुत कमजोर होते गए। डाक्टरों ने सेरोप आदि से सेवा की। लेकिन हालत दिन पर दिन खराब होती गई और हम उन्हें बचा न सके। आज १० बजे प्रातः समाचार आया कि स्वामी जी की हालत बहुत खराब है। डाक्टरों को फोन किया और डा० चरभरण और डा० तिलक दोनों तत्काल क्लिनिक पहुँचे। स्थानीय डाक्टर जिनका नाम जुफर मोतेला है वह तो वहाँ थे। बड़े स्पेशालिस्ट है—रात दिन स्वामी जी की सेवा की लेकिन नाकामयाब हुए। अनेक अन्तरंग सदस्य भी वहां पहुँचे। परन्तु हम सब कुछ न कर सके। लगभग २ बजे दिन में स्वामी जी चल बसे। शव उठाकर श्रद्धानन्द आश्रम में लाया गया और माता जी के कमरे मे रखा। अन्तिम क्रिया के लिए प्रबन्ध कर रहे हैं। आज एयरमेल का मौका है। यहां की जनता को रेडियो, टैक्सी और फोन द्वारा समाचार भेज दिया है। समाचार पाते.ही आश्रम मे भीड लग गई। भारतीय कमिश्नर श्री मुस्तफा किदवई जी इनकी धर्मपत्नी (इन दोनों से स्वामी जी की बहुत घनिष्ठता हो गई थी) आश्रम आए। सहानुभूति प्रकट करते हुए अफसोस किया। लेजिस्लेटिव कौंसिल के सदस्य माननीय जे० एफ० राम लाला, डा० तिलक आदि भी आए। सार्वजनिक शोक हो गया है और सब लोग एक मत से कहते हैं कि आर्य जगत से एक महान नेता आज उठ गया। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा और श्री स्वामी जी के परिवार को हम केवल इतना कहना चाहते हैं कि कोशिश करने में हम जरा भी पीछे न हटे और जो कुछ हुआ वह परमेश्वर की इच्छा के सिवा और नहीं कहा जा सकता।

(शेष पृष्ठ २७४ पर)

गायत्री की महिमा

ओ३म् भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमहि धियोयो नः प्रचोदयात् ॥

यजु० ३ । ३६

इसे गुरु मन्त्र तथा सावित्री मन्त्र आदि के नाम से कहा जाता है। गुरु वेदारम्भ संस्कार के समय इसी मन्त्र द्वारा शिष्य को दीक्षा देता है इसलिए इसे गुरु मन्त्र कहते हैं। गायत्री छन्द मे होने तथा 'गायन्तं त्रायत' इति श्रद्धा पूर्वक गान करने के कारण इसे गायत्री मन्त्र के नाम से कहते हैं। परमात्मा का स्मरण 'सविता' के नाम से इस मन्त्र मे किया जाता है। गायत्री मन्त्र का पाठ ओ३म् और व्याहृति अर्थात् भूः भुवः स्वः सहित किया जाता है। ओ३म् परमात्मा का सर्वश्रेष्ठ नाम है जिसके जप का विधान "ओ३म् क्रतोस्मर" इत्यादि वेद मन्त्रों तथा सर्वे वेदा यत्पदमामनन्ति. तपांसि सर्वाणि च यद्वदन्ति यदिच्छन्तो ब्रह्मचर्यं चरन्ति, तत्ते पदं सग्रहेण ब्रवीम्योम् ॥ इत्यादि उपनिषद वाक्यों मे किया गया है। माण्डूक्य उपनिषद् आदि मे इसी ओ३म् की विशेष व्याख्या है। योगदर्शन मे "तस्य वाचकः प्रणवः" इस सूत्र द्वारा 'ओ३म् को परमेश्वर का मुख्य नाम बताकर 'तज्जपस्तदर्थ भावनम्' द्वारा उसका अर्थ भावना सहित जप का चित्त की एकाग्रता के लिये विधान किया गया है। केवल उच्चारण से लाभ नही हो सकता जब तक उसके अर्थ का चिन्तन भली-भांति न किया जाय। ओ३म् का मुख्यार्थ रक्षक है। रक्षक के रूप में परमेश्वर का ध्यान करने से चित्त के अन्दर निर्भयता आती है। जब सर्व शक्तिमान् परमेश्वर हमारा रक्षक है तो भय चिन्ता का क्या काम है ? इस प्रकार ओ३म् का जप मनुष्य को सर्वथा निर्भय बना देता है। भूर्भुवः स्वः ये तीन व्याहृति के शब्द परमेश्वर के गुण सूचक हैं। भू सत्तायाम् से भू शब्द बनता है जिसमें परमेश्वर के सर्वत्र अस्तित्व का सर्व व्यापकता का भाव आता है। भुवः में सर्वज्ञता का भाव आता है और स्वः में सुख स्वरूप का भाव, इस प्रकार ये शब्द सच्चिदानन्द स्वरूप का भाव सूचित करते है। प्रकृति का स्वरूप सत् है जीव का सत् चित है और परमात्मा का सच्चिदानन्द

स्वरूप है। यह इनका भेद है। जीव का उद्देश्य वा लक्ष्य इन शब्दों से सूचित होता है कि वह सच्चिदानन्द स्वरूप परमेश्वर का ध्यान कर आनन्द को प्राप्त करे। जप के लिए ईश्वर के उन गुणों को लेना चाहिए जिनको हम अपने अन्दर धारण कर सकते हैं। 'राम' शब्द का आध्यात्मिक दृष्टि से अर्थ कई ग्रन्थों मे 'रमन्ते, योगिनोऽस्मिन्, अर्थात् जिसमे योगी लोग रमण करते हैं ऐसा किया गया है किन्तु यह मान लेने पर भी इसके जप से इसलिए लाभ नहीं हो सकता क्योकि हम सर्व व्यापक नही बन सकते।

अर्यमा (न्यायकारी) मित्र वरुण आदि परमात्मा के गुणों को हम अपने अन्दर धारण कर सकते हैं। सविता का अर्थ सर्वोत्पादक है। इस रूप मे परमेश्वर का चिन्तन करने से उसके प्रति श्रद्धा और विश्वास उत्पन्न होते हैं श्रद्धा का अर्थश्रत् अर्थात् सत्य को धारण करना है। इसका अर्थ लोगों ने अशुद्ध समझ रक्खा है। वे समझते हैं कि केवल विश्वास से सब बातें स्वयं मेव पूर्ण हो जाती हैं किन्तु यह सत्य नहीं है। यदि एक यात्री अल्मोडा की तरफ जाने वाली सडक पर न जाकर काठगोदाम की सडक पर चल पडे और विश्वास करे कि वह अल्मोडा पहुंच जायगा तो यह कैसे हो सकता है? एक बच्चा कौतुकवश अग्नि मे हाथ रख देता है जिससे उसका हाथ जल जाता है तब वह इस सचाई को अपने अन्दर धारण कर लेता है कि आग जलती है कितना ही कहो, अब वह आग मे हाथ रखने का नाम नहीं लेता इस प्रकार करना ही श्रत् वा सत्य को धारण करना है। जितना ज्ञान हृदय मे अकित कर लिया जाता है वही अपना होता है शेष तो पुस्तकों मे ही रह जाता है।

वरेण्यम् का अर्थ ग्रहण करने योग्य वा उपासनीय है। भर्ग. मे पवित्रता का भाव आता है जो अपवित्रता अज्ञानादि को दूर कर दे। हमें इस पवित्रता को अपने अन्दर धारण करना चाहिए।

अद्भिर्गात्राणि शुद्धयन्ति मन: सत्येन शुद्धयति ।
विद्या तपोभ्याभूतात्मा बुद्धिर्ज्ञानेन शुद्धयति ।

इत्यादि द्वारा मनु महाराज ने अनेक प्रकार की पवित्रता का प्रतिपादन किया है। इसमें उन्होंने बताया है कि शरीर के अङ्ग जल से शुद्ध होते हैं, मन सत्य के धारण करने से पवित्र होता है। मनुष्य का आत्मा विद्या और तप से शुद्ध होता है और बुद्धि ज्ञान से पवित्र होती है। देवस्य मे भाव-ज्ञान प्रकाश देने वाले का है। इस ज्ञान की प्राति से मनुष्य को अमृत की प्राप्ति होती है जैसे "प्रति बोध विदितं मतम्, अमृतत्वं हि विदन्ते" इत्यादि उपनिषद् वचनो मे कहा है। साधारणतया इन्द्रियो से वाह्य विषयों का ज्ञान और आत्मा द्वारा परमेश्वर का विशेष ज्ञान विज्ञान के नाम से शास्त्रों मे स्मरण किया गया है। ज्ञान विज्ञान का भेद वही है जो अंग्रेजी में Intellect Intuitional perception में है। आम आदि का स्वाद जैसे पूर्णतया शब्दों द्वारा वर्णन करना असम्भव प्राय: है वैसे ही ईश्वर ज्ञान के आनन्द का शब्दों द्वारा वर्णन करना असम्भव है। बुद्धि के द्वारा जगत का ज्ञान और निदिध्यासनादि द्वारा आत्मा से परमात्मा का ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। यही परमात्मा का साक्षात्कार है जो अनुभव का विषय है। इस प्रकार इन गुणो को धारण करने के पश्चात् हम ईश्वर को अपने अन्दर धारण कर सकते हैं। ईश्वर को इसलिये अपने अन्दर धारण किया जाय अथवा उसका ध्यान किया जाय ताकि हमारी बुद्धि कल्याण कारिणी प्रेरिता तथा पवित्र हो जाय।

पाश्चात्य लोगो का आचार-व्यवहार यदि प्रेरिता बुद्धि के अनुसार होता तो पशुओं की तरह परस्पर युद्ध भीषण हत्या का घोर दृश्य न दिखाई देता। वे लोग केवल बुद्धि तक सीमित हैं निदिध्यासनादि की उनके अन्दर अभाव के कारण ही सब हीन हैं। ईश्वर से भी अधिक मांगने की आवश्यकता नहीं। केवल शुद्ध बुद्धि को मांगना ही पर्य्याप्त है जैसे कि इस गायत्री मन्त्र में किया गया है। इस प्रकार अर्थ सहित इस गायत्री मन्त्र का चित्त को एकाग्र करके जप करने से विशेष लाभ हो सकता है।

[श्री महात्मा नारायण स्वामी जी की डायरी से]

मांस-भक्षण और ऋषि दयानन्द

श्रीयुत पं० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय

श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज न केवल स्वयं ही मांस भक्षण नही करते थे, अपितु मांस भक्षण को वेद विरुद्ध, अनाचार तथा पाप समझते थे। यह बात उनके ग्रन्थों से इतनी स्पष्ट है कि सन्देह अथवा विवाद के लिये कोई स्थान ही नहीं है। सत्यार्थप्रकाश मे हमे ३२ ऐसे स्थान मिले हैं जहां मांस-भक्षण निषेध का थोड़ा बहुत संकेत है। इनको हम कई कोटियों में बांट सकते हैं।

(१) मांस-भक्षण पाप है।
(देखो सं० २, ६, ८, १३, १६,)

(२) मांस-भक्षण वेद-विरुद्ध है।
(सं० ३, १५, १७, २७)

(३) मांस-भक्षण का दोष वेदों के सिर उन लोगों ने मढ़ा है जो वाम मार्गी थे।
(सं० १४, १५, १६, १७, २०, २१, २२)

(४) मांस-भक्षण मनुष्य जाति के लिये अहित कर है। (सं० ६, १०)

(५) मांस-भक्षण से अन्य गुण भी नष्ट हो जाते हैं।
(सं० १०, २४, २५ २६)

(६) मांस-भक्षण की प्रथा विधर्मियो ने फैलाई है।
(सं०, १२, २४, २६)

(७) यज्ञों में पशु हिंसा विहित नही है। (सं० १८)

(८) मांस-भक्षण घृणित कर्म है।
(सं० २८, ३०, ३१, ३२)

१

माता पिता आचार्य अपने सन्तान और शिष्यो को सदा सत्य उपदेश करें और यह भी कहे कि · " मद्य मांसादि के सेवन से अलग रहें। (समुल्लास २)

२

जब मांस का निषेध है तो सर्वदा ही निषेध है। (समुल्लास ४)

ब्रह्मचारी और ब्रह्मचारिणी मद्य मांस···आदि कुकर्मों को सदा छोड देवे। (समुल्लास ३)

४

मद्य मासादि वर्जित होकर सदा विचरता रहे। (समुल्लास ५ सन्यासप्रकरण)

५

जैसे सिंह वा मासाहारी हृष्ट पुष्ट पशु को मार कर खा लेते हैं वैसे स्वतन्त्र राजा प्रजा का नाश करता है। (सं० ६)

६

जो लोग मांस-भक्षण और मद्यपान करते हैं उनके शरीर और वीर्यादि धातु भी दुर्गन्धादि से दूषित होते हैं, इसलिये उनके संग करने से आर्यों को भी यह कुलक्षण न लग जांय यह तो ठीक है। परन्तु जब इनसे व्यवहार और गुण ग्रहण करने मे कोई भी दोष वा पाप नही है किन्तु इनके पक्षपातादि दोष को छोड गुणो को ग्रहण करे। (समुल्लास १०)

७

हाँ इतना अवश्य चाहिये कि मद्य मांस का ग्रहण कदापि भूलकर भी न करें। (समुल्लास १०)

८

हां मुसलमान, ईसाई आदि मद्य मांसाहारियों के हाथ के खाने में आर्यों को भी मद्य-मांसादि खाना पीना अपराध पीछे लग जाता है। (समुल्लास १०)

६

मद्य-मांसाहारी मलेच्छ कि जिनका शरीर मद्य-मांस के परमाणुओं ही से पूरित हैं उनके हाथ का न खावे। जिसमें उपकारी प्राणियों की हिंसा अर्थात् जैसे एक गाय के शरीर से दूध, घी, बैल गाय उत्पन्न होने से एक पीढी में चार लाख पचहत्तर सहस्र छ सौ मनुष्यों को सुख पहुँचता है वैसे पशुओं को न मारे न मारने दे। बकरी के दूध से २५९२० पच्चीस सहस्र नौ सौ बीस) आदमियों का पालन होता है। वैसे हाथी, घोड़े, ऊंट, भेड़ गदहे आदि से भी बड़े उपकार होते हैं। इन पशुओं को मारने वालों को सब मनुष्यों की हत्या करने वाले जानियेगा। (समुल्लास १०)

१०

जब से विदेशी मांसाहारी इस देश में आये गौ आदि पशुओं के मारने वाले मद्यपानी राज्याधिकारी हुए है तब से क्रमशः आर्यों के दुःख की बढ़ती होती जाती है। (समुल्लास १०)

११

प्रश्न—जो सभी अहिंसक हो जायें तो व्याघ्रादि पशु इतने बढ़ जायें कि सब गाय आदि पशुओं को मार खायें तुम्हारा पुरुषार्थ ही व्यर्थ हो जाय।

उत्तर—यह राज पुरुषों का काम है कि जो हानि कारक पशु या मनुष्य हों उनको दंड देवें, और प्राण से भी वियुक्त करदें।

प्रश्न—फिर क्या उनका मांस फेंकदें ?

उत्तर—चाहे फेंकदें चाहे कुत्ते आदि मांसाहारियों को खिला देवें वा जला देवें अथवा कोई मांसाहारी खावे तो भी संसार की कुछ हानि नहीं होती किन्तु उस मनुष्य का स्वभाव मांसाहारी हो कर हिंसक हो सकता है। जितना हिंसा और चोरी, विश्वास-घात, छल-कपट आदि से पदार्थों को प्राप्त हो कर भोग करना है वह अभक्ष्य और अहिंसा धर्मादि कर्मों से प्राप्त होकर भोजनादि करना भक्ष्य है। (समुल्लास १०)

१२

देखो महाराजा युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में भूगोल के राजा, ऋषि-महर्षि आये थे एक ही पाकशाला में भोजन किया करते थे। जबसे ईसाई, मुसलमान आदि मत-मतान्तर चले आपस में बैर-विरोध हुआ। उन्होंने मद्यपान गोमांस आदि का खाना-पीना स्वीकार किया उसी समय से भोजनादि में बखेड़ा हो गया।

(समुल्लास १०)

१३

इससे देश में विद्या, सुशिक्षा नष्ट होकर दुर्गुणता और दुष्ट व्यसन, बढ़ जाते हैं जैसा कि मद्य-मांसादि सेवन।

(समुल्लास ११)

१४

पश्चात् जब विषयासक्त हुए तो मांस मद्य का सेवन गुप्त-गुप्त करने लगे। पश्चात् उन्हीं में से एक वाममार्ग खड़ा किया।

(समुल्लास ११)

१५

अर्थात् देखो इन गबगण्ड पोपों की लीला कि जो वेद विरुद्ध महा अधर्म के काम हैं उन्ही को श्रेष्ठ वाम मार्गियों ने माना। मद्य-मांस मीन अर्थात् मच्छी......

(समुल्लास ११)

१६

एक पात्र में मद्य भरके मांस और बड़े आदि एक स्थाली में धर रखते हैं। (समुल्लास ११)

१७

प्रोक्षित अर्थात् यज्ञ में मांस खानेमें दोष नहीं ऐसी पामर पन की बात वाममार्गियोंने चलाये उनसे पूछना चाहिए कि जो वैदिक हिंसाहिंसा न हो तो तुझ और तेरे कुटुम्बको मार कर होम कर डालें तो क्या चिन्ता है ? मांस भक्षण करने, मद्य पीने, परस्त्री गमन करने आदि मे दोष नही है यह कहना छोकड़ा पन है क्योंकि बिना प्राणियों के पीडा दिये मांस प्राप्त नहीं होता, और बिना अपराध के पीडा देना धर्म का काम नहीं है। मद्य पान का तो सर्वथा निषेध ही है । क्योंकि अब तक वाम मार्गियों के बिना किसी ग्रन्थ में नही लिखा किन्तु सर्वत्र निषेध हैं। और बिना विवाह के मैथुन में भी दोष है इसको निर्दोष कहने वाला सदोष है। ऐसे-ऐसे वचन भी ऋषियों के ग्रन्थ मे डाल के कितने ही ऋषि मुनियों के नाम से ग्रन्थ बना कर गोमेध, अश्वमेध, नाम के यज्ञ भी कराने लगे थे। अर्थात् इन पशुओ को मार कर होम करने से यजमान और पशु को स्वर्ग की प्राप्ति होती है। ऐसी प्रसिद्धि का निश्चय तो यह है कि जो ब्राह्मण ग्रन्थो मे अश्वमेध, गोमेध, नरमेध, आदि शब्द हैं उनका ठीक २ अर्थ नही जाना है क्योंकि जो जानते तो ऐसा अनर्थ क्यों करते ।

(समुल्लास ११ पृष्ठ ३७६)

१८

प्रश्न---यज्ञ कर्ता कहते हैं कि यज्ञ करने से यजमान और पशु स्वर्ग-गामी तथा होम करके फिर पशु को जिन्दा करते थे यह बात सच्ची है वा नहीं।

उत्तर---नहीं; जो स्वर्ग को जाते हों तो ऐसी बात कहने वाले को मार कर होम कर स्वर्ग में पहुंचना चाहिये वा उसके प्रिय माता, पिता, स्त्री और पुत्रादि को मार होम कर स्वर्ग में क्यों नही पहुंचाते ? वा वेदों मे से पुन: क्यों नही जला लेते हैं।

(समुल्लास ११ पृष्ठ ३८०)

१९

अथवा---दुष्ट पुजारियों को धन देते हैं, वे उस धन को वेश्या, परस्त्री-गमन, मद्य, मांसाहार लड़ाई बखेड़ों मे व्यय करते हैं जिससे दाता का सुख का मूल नष्ट हो कर दु:ख होता है। (समुल्लास ११ पृष्ठ ४२१)

(प्रकरण मूर्तिपूजा के दोष)

इत्यादि मंत्र जपते, मद्य मांसादि यथेष्ट खाते पीते, भृकुटी के बीच से सिन्दूर रेखा देते कभी २ काली आदि के लिये किसी आदमी को पकड़ मार होम कर कुछ २ उसका मांस खाते भी हैं। जो कोई भैरवी चक्र में जावे मद्य मांस न खावे न पीवे तो उसको मार होम कर देते हैं। उनमें से जो अघोरी होता है वह मृत मनुष्य का भी मांस खाता है। अजरी बजरी करने वाले विष्ठा मूत्र भी खाते पीते हैं। (समु० ११पृ० ४७२)

(वाम मार्गियों के दोष)

२१

और जो मांस खाता है वह भी उन्ही वाममार्गी टीकाकारो की लीला है। इसलिए उनको राक्षस कहना उचित है। परन्तु वेदों में कही मांस का खाना नही लिखा इसलिये इत्यादि मिथ्या बातों का पाप उन टीकाकारों को और जिन्होने वेदों के जाने सुने बिना मन मानी निन्दा की है नि: सन्देह उनको लगेगा।

(समु० १२ पृ० ५४५)

२२

परन्तु बौद्धों में वाममार्गी मद्यमांसाहारी बौद्ध हैं।

(समु० १२ पृ० ५५८)

२३

इन का दयाधर्म कथन मात्र है और जो है सो क्षुद्र जीवों और पशुओं के लिए है। जैन-भिन्न मनुष्यों के लिये नहीं।

(समु० १२ पृ० ५८६)

२४

क्या एक को प्राण कष्ट देकर दूसरे को आनन्द कराने से दयाहीन ईसाइयों का ईश्वर नहीं है ? जो माता पिता एक लड़के को मरवा कर दूसरे को खिलावे तो महा पापी

नहीं है ? इसी प्रकार यह बात है। क्योंकि ईश्वर के लिए सब प्राणी पुत्रवत् है, ऐसा न होने से इनका ईश्वर कसाईवत काम करता है और सब मनुष्यों को हिंसक भी इसीने बनाया है। इसलिये ईसाइयों का ईश्वर निर्दय होने से पापी क्यों नहीं।

(समु० १३ पृ० ६४१)

२५

अब देखिये, सज्जन लोगों जिनका ईश्वर बछड़े का मांस खावे उनके उपासक गाय बछड़े आदि पशुओं को क्यों छोड़े। जिसको कुछ दया नही और मास के खाने में आतुर रहे वह बिना हिंसक मनुष्य के ईश्वर कभी हो सकता है ? (समु० १३ पृष्ठ ६४१)

२६

मांसाहारिणः कुतो दया। जब ईसाइयो का ईश्वर मांसाहारी है तो उसको दया करने से क्या काम है ?

२७

जब ईसाइयो का खुदा भी बैलो का बलिदान लेवे तो उसके भक्त गाय के बलिदान की प्रसादी से पेट क्यो न भरे ? और जगत की हानि क्यों न करे। ऐसी ऐसी बुरी बाते बाइबल मे भरी हैं और इसी के कुसंस्कारों से वेदों मे भी ऐसा झूठ दोष लगाना चाहते हैं। परन्तु वेदों में ऐसी बातों का नाम भी नही।

२८

तनिक विचारिए कि बैल को परमेश्वर के आगे उसके भक्त मारें और वह मरवावे और लहू को चारों ओर छिड़कें, अग्नि में होम करें, ईश्वर सुगन्ध लेवे, भला यह कसाई के घर से कुछ कमती लीला है।

(समु० १३ पृष्ठ ६५८)

२९

भला कपोत के बच्चे का गला मरोड़ने से वह बहुत देर से तड़फता होगा तब भी ईसाइयों को दया नहीं आती। दया क्योंकर आये इनके ईश्वर का उपदेश ही हिंसा करने का है। (समु० १३ पृ० ६६०)

३०

भला कोई मनुष्य एक लड़के को मरवावे और दूसरे लड़के को उसका मांस खिलावे ऐसा कभी हो सकता है। वैसे ही ईश्वर के सब मनुष्य और पशु पक्षी आदि सब जीव पुत्रवत हैं। परमेश्वर ऐसा काम कभी नहीं कर सकता।

(समु० १३ पृष्ठ ६६०)

३१

कसाई आदि मुसलमान गाय आदि के गले काटने में भी "बिस्मिल्लाह" इस वचन को पढते है जो यही इसका पूर्वोक्त अर्थ है तो बुराइयों का आरम्भ भी मुसलमान परमेश्वर के नाम पर करते है।

(समु० १४ पृ० ७०४)

३२

जिस वस्तु से अधिक उपकार होवे उन गाय आदि के मारने का निषेध न करना जानो हत्या करा कर खुदा जगत का हानि कारक है। हिंसा रूप पाप से कलंकित भी हो जाता है।

(समु० १४० ७१२)

अथर्ववेदीय

अतिथि सत्कार

और

मांस शब्द

विवेचन

(श्री स्वामी ब्रह्ममुनि परिव्राजक)

अधिगवं क्षीरं वा मांसं वा (अथर्व ९।८।९)

इस वचन पर सायणभाष्य तो है नही परन्तु किन्हीं विद्वानों द्वारा यहां अतिथि भोजनार्थ मांस समर्पण की कल्पना की गई है और किन्ही ने वैसा भाष्य भी कर दिया है। किन्तु यहां यह धारणा ठीक नही, हम इसका प्रतिवाद करते है। सो कैसे ? इसके लिये दो हेतु उपस्थित करते हैं विद्वज्जन उन्हें देखें।

१—अथर्ववेद में ही अन्यत्र यह कहा गया है कि—

पयो धेनूनां रसमोषधीनां जवमर्वतां कवयो य इन्वथ।
(अथर्व ४।२७।३)

इस अथर्वश्रुति मे गोओ का दूध ओषधियों-वनस्पतियों का रस-रसमयफल विद्वान् जन सेवन करते हैं इस ऐसे प्रतिपादन से यह स्पष्ट होता है कि गौओं का मांस नही खाना चाहिए तथा घोडो का मांस भी नहीं खाना चाहिए। यहां 'धेनु' शब्द समस्त दूध देने वाले पशुओ के लिये जानना चाहिए और 'अर्वा' शब्द न दूध देने वाले पशुओं के लिये निदर्शनरूप है। किन्तु भोजनार्थ तो मनुष्य को ओषधि वनस्पतियों का फल आदि ही लेना चाहिए। अतः यहां प्रस्तुत प्रसङ्ग 'अधिगवं क्षीरं वा मासं वा' मे अतिथि के भोजनार्थ मास समर्पण किसी प्रकार युक्त नहीं।

२—प्रस्तुत प्रसङ्ग से अगले सूक्त में घोषित किया गया है कि—

स य एवं विद्वान् मासमुपसिच्योपहरति।
यावद् द्वादशाहेनेष्ट्वा सुसमृद्धेनावरुन्धे तावदेनेनावरुन्धे॥
(अथर्व० ९।९।७-८)

अतिथि के लिये भोजन में मांस समर्पित करके द्वादशाह यज्ञ का फल प्राप्त करता है इस ऐसे कथन मे पशु मांस समर्पण करना तो अयुक्त है, क्योकि शास्त्रदृष्टि से तो "अहिंसा परमो धर्मः" अहिंसा परम धर्म है। यह तो यहां "पयो धेनूनां···" अथर्वश्रुति से भी मिलता ही है अपितु लोक से भी, अहिंसा से प्राप्त भोजन धर्म्य है उसकी अपेक्षा हिंसा से प्राप्त भोजन निकृष्ट-अधर्म है इसमे सन्देह नही है। फिर अनिष्ट निकृष्ट अधम कर्म हिंसा से यज्ञफल की प्राप्ति वधको के प्रति कैसे सङ्गत हो सके, कभी नही। वह यज्ञ-फलतो आर्यों को प्राप्त हो सकता है उन दयाधर्मवान् जनों के

द्वारा यज्ञ का अनुष्ठान हो सकने से उनके लिये ही यशों का विधान होने से।

अतः अतिथि के भोजनार्थ मांस शब्द से पशु का अङ्ग-रूप मांस नहीं ग्रहण किया जा सकता। तो फिर यहां मांस शब्द से क्या ग्रहण किया जाना युक्त है, सो कहते हैं।

प्रस्तुत सूक्त के मन्त्र और उनके शब्दार्थ प्रथम देते हैं—
ऋषिः—ब्रह्मा=ब्रह्मध्यानी आस्तिक जन।

देवता—अतिथिः, विद्या=विद्वान् अतिथि का सत्कार करना विद्या के दान का फल पाना निज के लिये विद्या का लाभ लेना अन्यो में विद्या का प्रचार करना †

इष्टं च वा एष पूर्तं च गृहाणामश्नाति यः पूर्वोऽतिथेरश्नाति ॥१॥

(यः—अतिथेः पूर्वः-अश्नाति) जो अतिथि से पूर्व खा लेता है।

(एषः—वै गृहाणाम् इष्टं च पूर्तं अश्नाति) वह यह निश्चय घरों के पारिवारिक घरों के इष्ट-यज्ञ याग और पूर्तं कूपतडागादि को खा लेता है-विनष्ट करता हैं व्यर्थं करता है ॥१॥*

पयश्च वा एष रसं च गृहाणामश्नाति यः पूर्वोऽतिथेरश्नाति ॥२॥

(यः-अतिथेः पूर्वः-अश्नाति) जो अतिथि से पूर्व खा लेता है।

(एषः-वै गृहाणां पयः-च रसं च-अश्नाति) वह यह निश्चय घरों के पारिवारिक घरो के पयः दूध को और रस-फल 'रसओषधीनाम्' खा लेता है-विनष्ट करता है निष्प्रयोजन बना देता है ॥२॥

ऊर्जां च वा एष स्फातिं च गृहाणामश्नाति यः पूर्वोऽतिथेरश्नाति ॥३॥

(यः-अतिथेः पूर्वः अश्नाति) जो अतिथि से पूर्व खा लेता है।

† देवता के प्रसंग मे अतिथि और विद्या को देवता कहा गया है। इससे यह स्पष्ट होता है कि सूक्त मे विद्यावान् अतिथि अभिप्रेत है।

* इन शब्दो का स्पष्टी करण आगे करेंगे।

(एषः—वै गृहाणाम्-उर्जां च स्फातिं च अश्नाति) वह यह निश्चय-घरो के पारिवारिक घरों के कच्चे अन्न को और स्फाति-उसके पाक से विवृद्ध विविध बनी भोजन सामग्री को खा लेता विनष्ट कर देता है निरर्थक बना देता है निःसार सिद्ध कर देता है ॥३॥

प्रजां च वा एष पशूंश्च गृहाणामश्नातियः पूर्वोऽतिथिरश्नाति ॥४॥

(यः-अतिथेः पूर्वः-अश्नाति) जो अतिथि से पूर्व खा लेता है।

(एषः-वै गृहाणा प्रजा च पशून्-च-अश्नाति) वह यह निश्चय घरो के पारिवारिक घरो की प्रजा-पुत्रादि सन्तान को और पशुओं को खा लेता है—विनष्ट करलेता है—यथावत् ममत्व के सुखलाभ से वञ्चित हो जाता है ॥४॥

कीर्ति च वा एष यशश्च गृहाणामश्नाति यः पूर्वोऽतिथेरश्नाति ॥५॥

(यः-अतिथेः पूर्वः अश्नाति) जो अतिथि से पूर्व खा लेता है।

(एषः-गृहाणा कीर्तिं च यशः-च-अश्नाति) वह यह निश्चय घरों के पारिवारिक घरो की कीर्ति-निजकुला-दि वर्तमान प्रसिद्धि को और यश-अन्यत्र फैली प्रसिद्धि को खा लेता है विनष्ट कर देता है खो देता है ॥५॥

श्रियं च वा एष संविदं च गृहाणामश्नाति यः पूर्वोऽतिथेरश्नाति ॥६॥

(यः-अतिथेः पूर्वः-अश्नाति) जो अतिथि से पूर्व खा लेता है।

(एषः-वै गृहाणां श्रियं च संविद च अश्नाति) वह यह निश्चय घरों के पारिवारिक घरों की शोभा को और संविद विद्या को खा लेता है—विनष्ट कर देता है-व्यर्थ बना देता है ॥६॥

एष वा अतिथिर्यच्छ्रोत्रियस्तस्मात् पूर्वोनाश्नीयात ॥७॥

(एषः-वै अतिथिः—यत्-श्रोत्रिय) निश्चय यह अतिथि है जो कि श्रोत्रिय है वेदज्ञ विद्वान् है (तस्मात् पूर्वः-न अश्नीयात्) उस से पूर्व न खाये ॥७॥

अशितावत्यतिथावश्नीयाद्यज्ञस्य सात्मत्वाय
यज्ञस्याविच्छेदाय तद्व्रतम् ॥८॥

(अशिद्रावति-अतिथौ-अश्नीयात्) खा चुके अतिथि पर अतिथि के खाचुक लेने पर खावे (यज्ञस्य सात्मत्वाय) यज्ञ के सात्म्य करने के लिये जीवन मे यज्ञ का आधान करने के लिये (यज्ञस्य-अविच्छंदाय) यज्ञ की निरन्तरता के लिये (तत्-व्रतम्) वह यह ऐसा करना व्रत है सदाचरण है ॥८॥

एतद् वा स्वादीयो यदधिगवं क्षीरं वा मांस वा तदेव नाश्नीयात् ॥९॥

(एतत्—वै उ स्वादीय: क्षीरं वा मांसं वा) यह ही वस्तुत: स्वादुतर—अत्यन्त स्वादवाला क्षीर है या मास* (अधिगव यत्) अधिगव* जो है (तत्—एव न–अश्नीयात्) उसे ही न खावे ॥९॥

प्रसङ्ग यहाँ है अतिथि से पूर्व अपने आप खा लेने के निषेध का, अतिथि से पूर्व गृहस्थ को भोजन नही खाना चाहिये, जो इस मर्यादा का उल्लन्घन करके अतिथि से पूर्व स्वयं खाता है वह पापी है, वह ऐसा जन अपने किये इष्ट-यज्ञ कर्म और पूर्त-परहित कर्म को खा लेता है विनष्ट कर देता है। इसी प्रकार पय: दूध और रस-रसमय फल को, ऊर्जा अन्न और स्फाति--विविध पकी भोजन सामग्री को, प्रजा--सन्तान और पशुओं को कीर्ति और यश को, श्री--शोभा और संवित्—विद्या को खा जाता है, विनष्ट करता है इनके वास्तविक लाभ से वंचित हो जाता है। यहाँ छ: प्रकार के ऋद्धियुगल का विनाश या व्यर्थ होना प्रदर्शित किया है। इन सब युगलों में प्रत्येक पूर्व पदार्थ तो सूक्ष्म या अल्प है और पश्चात् का पदार्थ स्थूल या महान् है। इस विषय में निम्न तालिका देखें—

सूक्ष्म या अल्प	स्थूल या महान्
१--(धर्म युगल) इष्ट यज्ञ यजन के- अनन्तर अदृश्य।	पूर्त-कूप तड़ाग उद्यान धर्मशाल आदि स्थान दृश्य।
२–(स्वादु युगल) पय--दूध तरल।	रस-रसवाला वनस्पति फल, कहा भी है 'रसमोषधीनाम्'
३--(आहार युगल) ऊर्जा–अन्न दाना रूप।	स्फाति–अन्न दानों की वृद्धि उसके पाक से विविध भोजन सामग्री।
४--(ममत्व का युगल) प्रजा पुत्रादि।	पशव:-पशुओं का होना-बहुतेरे पशु।
५–प्रशस्ति युगल कीर्ति–निजकुल या नगर मे प्रशंसा प्रसद्धि।	यश:–देश देशान्तर में प्रथित फैली हुई प्रशंसा प्रसिद्धि।
६--(शोभा युगल) श्री–शोभा निज शरीर में वर्तमान।	संवित्–शरीर मन आत्मा में प्रतिभासित सब मनुष्यों में विदित प्रभाव रूपविद्या,

*इन शब्दों का विवेचन आगे होगा।

इन छ: प्रकार के युगलों में आहार युगल 'ऊर्जा'–खेत में उत्पन्न या खडा अन्न और स्फाति--उस अन्न के पाक से विविध भोजन सामग्री। उसी प्रकार स्वादु युगल मे पय: (दूध) तो गौ आदि से दूहा हुआ ज्यों का त्यों दूध, रस—रसमय रस वाला फल। वनस्पति फल, जैसे कहा गया है "रसमोषधीनाम्" मनुष्य स्वादु द्रव्य पशुओं से दूध लेते हैं और वनस्पक्तियों से स्वादु वस्तु फल प्राप्त करते हैं। वे ये दोनों स्वादु वस्तुए स्वादीय:—स्वादुतर–अधिक स्वाद वाली प्रसिद्ध होती हैं क्रमश: "क्षीर" नाम से और 'मास' नाम से। पय:—अपक्व दूध जैसा का तैसा दूहा हुआ दूध, क्षीर—पक्व सुपक्व दूध पीने योग्य नहीं किन्तु खाने योग्य *गाढ़ा या घना दूध। इसी प्रकार रस-रसमय रसवाला फल वृक्ष पर लगा हुआ, इस काल से पके हुये फल मे जो अन्दर मृदु—नरम तत्त्व गुद्दा है वह मांस *'घस्लृ भक्षणे' (भ्वादि०) घस से 'ईरन्' प्रत्यय। इससे भक्षण करने योग्य पाक से घनी भूत सा हुआ गाढ़ा सा हुआ दूध।

शब्द से कहा जाता है, जैसे ही यहाँ "पयश्च वा एष रसञ्च गृहाणामश्नाति" यह दर्शाया है उसी भाँति "पयो धेनूनां रसमो षधीनाम्" यह भी दिखलाया है यह समान ही है पूर्व कथन के पय अपक्व दूध और रस—फल का समीकरण है पय: के स्थान में क्षीर उसी दूध की विशेष स्थिति है तब उसी भाँति रस फल कि समीकरण में मांस शब्द फलस्वरूप वस्तु ही के लिये प्रयुक्त है। फल में वर्त्तमान मृदु तत्त्व-गुद्दे को मांस कहा भी है "तद्यथा चूतफले परिपक्वे केशरमांसास्थि मज्जान: पृथक्-पृथक् दृश्यन्ते कालप्रकर्षात्" (सुश्रुत) जैसे परिपक्व—पके हुये आम फल मे तन्तु (सूफ) मांस (गुद्दा) अस्थि (गुठ्ली)

मज्जा अस्थि (गुठली के अन्दर की मीगी) वस्तुएं समय पर पृथक् पृथक् प्रकट हो जाती हैं इसी प्रकार पूर्ण गर्भ में स्नायुतन्तु मांस हड्डी मज्जा वस्तुएं बन जाती हैं। यहाँ दृष्टान्त रूप पके हुये आम फल में प्रथम से ही मास नाम स्वीकृत किया है गुद्दे के लिये। अतः प्रस्तुत अथर्वमन्त्र मे मास शब्द जन्तु के अङ्ग का द्योतक नही और भी "अधिग-वम्" मे 'गो' शब्द गौ पशु को कहने में समर्थ नहीं है क्यो कि अन्यत्र अथर्वश्रुति मे यह स्पष्ट कर दिया गया है या विधान कर दिया गया है कि 'पयो धेनूनाम्' गौओ का दूध लेना न कि मास। अतः यहाँ प्रस्तुत 'अधिगवम्' वचन मे 'गो' शब्द पशु वाचक नही है यह सम्यक सिद्ध है। प्रश्न बस यह उपस्थित है कि यह 'अधिगव' शब्द किस अर्थ का द्योतक है। अब उसे कहते हैं—

जिस अतिथि से पूर्व भोजन नही खाना चाहिए। वह अतिथि 'श्रोत्रिय' है यह वही कहा भी है 'एष वा अतिथि र्यच्छ्रोत्रियः" (७) वह यह अतिथि श्रोत्रिय अर्थात् वेद-वेत्ता है†। "अधिगवम्" इस प्रकरण मे तो आपद्धर्म प्रदर्शित किया है। "अशितावत्यतिथावश्नीयात्'''तद्व्रतम्" (८) उसके खाचुकने पर खावे, पुनः ऐसे कथन के पश्चात् जो फिर यह कहा कि "एतद् वा ३ स्वादीयो यदधिगवक्षीरं व मांसं वा तदेव नाश्नीयात्" (९) यह स्वादीयः स्वादुतर अधिक स्वादु क्षीर (पका गाढा दूध-खीर) या मांस (पके फल का गुद्दा एव उस से बना पाक) तो खावे ही नहीं आपत्काल में भी। हाँ! आपत्तिकाल में इन दोनों वस्तुओं से भिन्न साधारण भोजन तो खा सकता है परन्तु स्वादीय स्वादुतर अधिक स्वादवाले को न खाने जो कि "अधिगवम्" गौ अर्थात् स्तोता के निमित्त है†। "गौः स्तोतृनाम" (निघ० ३।१६) स्तोमो को गाता है उस गाते हुए का नाम गौ है वह पूर्व से प्राप्त श्रोत्रिय है "श्रोत्रियश्छन्दोऽधीते" (अष्टा० ५।२।८४) जो छन्दों-स्तोमो-मन्त्रो को पढ़ता है है वह श्रोत्रिय है। इस प्रकार श्रोत्रिय और स्तोता शब्दों मे समान लक्ष्य है। अतः उस श्रोत्रिय के निमित्त जो सुपक्व पाक रूप दूध जो कि क्षीर नाम से कहने योग्य है जिस कारण लोक में खीर नाम से प्रसिद्ध है और सौराष्ट्र मे दूधपाक नाम से कहा जाता है उसे तथा रस-रसमय-रस वाला कालपक्व सुपक्व फल-वनस्पतिफल है उस से निकला या निकाला हुआ मृदुभाग-नरम मांस शब्द से कहा जाता है उस मानस मनः प्रसाद-मन के प्रसाद कारक ‡ विशिष्ट पाक किए बादाम खजूर आदि से बने मोहन भोग प्रसाद काटाह प्रसाद-कढाप्रसाद हलवा है? उसे अवश्य न खावे आपत्तिकाल में भी श्रोत्रिय स्तोता से पूर्व उन दोनों अधिक स्वादु वस्तुओं से भिन्न साधारण अन्न भोजन तो खाने मे कामचार है यह स्पष्ट अर्थ है।

गृहस्थ के यहाँ षड्युगल ऋद्धि या षट्सम्पत्ति के युगल बने रहे बढते रहे। वे षड्युगल ऋद्धियो या षट्युगल सम्प-त्तियो के पदार्थ हैं (१) धर्म (२) आहार (३) स्वादु (४) ममत्व (५) प्रशस्ति—प्रशंसाप्रसिद्धि (६) शोभा।

१ – गृहस्थ के यहाँ इष्ट यज्ञ नैत्यिक और नैमित्तिक होते रहने चाहिए और पूर्त कूप तडाग उद्यान धर्म शाला आदि सार्वजनिक हित के स्थानों का निर्माण कराने या

† सूक्त का देवता अतिथि और विद्या दिया गया है, यहां अतिथिसत्कार मे विद्या की प्रशंसा या मान्यता लक्ष्य हैं। इस से भी विद्यावान्-श्रोत्रिय अतिथि यहाँ है यह स्पष्ट होता है। अन्यत्र वेदो मे "अतिथि. विद्वान्" (ऋ, ५।४।५, अथर्व० ७।७३।९)" विद्वान्'''अतिथिः (अथर्व० १५।११।१, १३।१) "कविः'''अतिथि:" (यजु० ७।२८, ३३।८, ऋ० ६।७।१)" वृहस्पति'''विप्र'''अतिथिम्" (ऋ० ३।२६।२) अतिथि को विद्वान्, कवि, बृहस्पति और विप्र विशेषण दिए हैं। ऋषि दयानन्द ने भी पूर्ण विद्यावान् और पूर्णविद्वान् को अतिथि कहा है। "अतिथय ये पूर्णविद्यावतः (ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका) "अतिथि पूर्णविद्वान् (सत्यार्थ-प्रकाश) चतुर्थ समुल्लास)।

† गवि स्तोतरि स्तोतृनिमित्तम्। निमित्तसप्तमी अव्ययीभाव समासो विभक्त्यर्थे, यथा शालायाम्-अधिशालम्।

‡ "मांसं मानसं वा मनोऽस्मिन् सीदति वा" नि० ४।३)

† क्षीर-नीर में और मांस-मानस-प्रसाद कढाप्रसाद हलवे में अधिक चावल डालने अधिक सुज्जी या आटा डालने की आधुनिक प्रवृत्ति है। सौराष्ट्र प्रान्त में तो दूध पाक खीर में अत्यन्त थोड़े चावल होते हैं।

ऐसे कार्यों में यथाशक्ति सहयोग सहायता देते रहना चाहिए।

२—(आहार युगल) गृहस्थ के घर में भोजनार्थ ऊर्ज अन्न, और स्फाति अन्न से बनी विभिन्न भोजन सामग्री क्षुधा निवृत्ति के लिये बने रहे ये दोनों प्रकार के आहार चुकने न पावे।

३—(स्वादु युगल) दूध और फल भी कुछ न कुछ मात्रा में वर्तमान रहें।

—(ममत्वयुगल पुत्र पुत्री या सन्तान, और, पशु भी अत्यन्त आवश्यक हैं। ये दोनों जीवन के साथी हैं।

५—(प्रशस्तियुगल) गृहपति की कीर्ति घर में कुल में और बाहिर भी यश फैला हुआ होना चाहिए।

६—(शोभा युगल) शरीर में कान्ति, तथा मन और आत्मा में भी विद्या का वास जिससे मनुष्यों मे प्रभाव रहे।

यदि किसी गृहस्थ के यहाँ किसी वैदिक विद्वान् का स्वादु भोजन से सत्कार नहीं होता या वह इससे प्रथम स्वयं खा लेता है तो उसके ये सब होने न होने के समान हैं, मानो ये सब उसके नष्ट हो चुके वह केवल नाम का ही इनका आधिपत्य कर रहा है। यह ठीक है यदि वेद का पठन पाठन कैसे हो सकेगा। वेद के अप्रचार के पाप का भागी गृहस्थ को बनना पड़ेगा।

जैसे यहां विद्वान् अतिथि के असत्कार से हानियां दर्शाई गई हैं इसी प्रकार अन्यत्र भी दिखलाई गई हैं—

(क) कठोपनिषद् में भविष्य, वर्तमान भूत का ऐश्वर्य, उत्तमवाणी, इष्ट, पूर्त, पुत्र पशु, नष्ट हो जाते हैं जिसके घर में ब्राह्मण भूखा रहे।

(ख) अतिथिः पूजितो यद्धि ध्यायते मनसा शुभम्।
न तत्क्रतुशतेनापि तुल्यमाहुर्मनीषिणः॥

+आशाप्रतीक्षे सङ्गतं चेष्टापूर्ते पुत्र पशूंश्च सर्वान्। एतद् वृंक्ते पुरुषस्याल्पमेधसो यस्यानश्नन् वसति ब्राह्मणो गृहे ॥"

(कठोप० १।१।८) अतिथि ब्राह्मण होता है वह बात भी यहाँ लक्षित होती है तथा "एक रात्रं हि निवसन् ह्यतिथिर्ब्राह्मणः स्मृतः" (वाचस्पत्ये) अतिथि ब्राह्मण कहा है।

पात्र त्वतिथिमासाद्य शीलाढ्यं या न पूजयेत्।
स दत्वा दुष्कृतं तस्मै पुण्यमादाय गच्छति॥
(महाभारत अनुशा० अ० १२६, ६२, ६३)

पूजा सत्कार पाया हुआ अतिथि गृहस्थ का मन से शुभचिन्तन जो करता है वह फल सैकडों यज्ञो के भी समान नहीं हो सकता। शील गुण सम्पन्न पात्र अतिथि को जो नहीं पूजता है मानो उसको वह अपना पाप कर्म देकर और उसका पुण्य कर्म होकर चला जाता है।

(ग) स्त्रीघ्नै गोघ्नैश्च ब्रह्मघ्नैगुरुतल्पगैः।
तुल्यदोषो भवत्येभिर्यस्यातिथिरनार्चितः॥
(महाभारत अनुशा० अ० १२६,२८)

स्त्रीघातक, गोघातक, कृतघ्न, ब्रह्मघातक और गुरुपत्नी गामी के तुल्य दोषी हो जाता है जिसने अतिथि का अनादर असत्कार किया हो।

ऋग्वेद मे कहा है कि "वह अज्ञ व्यर्थ मे अन्न को प्राप्त किये हुए है सत्य कहता हूं उसके लिये वह घातक है जो जन अपने अन्न से न किसी पूजनीय अतिथि का और न किसी सम्बन्धी का सत्कार करता है। अकेला खाने वाला मात्र पापी है। —क्रमशः

+मोघमन्नं विन्दते अप्रचेताः सत्यं ब्रवीमि वध इत् सतस्य। नार्यमणं पुष्यति न सखायं केवलाघो भवति केवलादी॥

(ऋ० १०, ११७, ६)

मेरी गंगोत्री यात्रा

श्री नारायणदास कपूर
नई दिल्ली

जून १९६१ के प्रथम सप्ताह में मेरे आध्यात्मिक गुरु ब्रह्मचारी व्यासदेव जी महाराज ने गंगोत्री से पत्र द्वारा आदेश दिया कि मैं इस बार गगोत्री आऊँ। मैंने उत्तर में महाराज जी को लिखा कि रक्तचाप रोग के कारण मैं गंगोत्री तो शायद न आ सकूं, परन्तु उत्तर काशी आऊँगा और यदि रोग ने आज्ञा दी तो गंगोत्री भी आने का यत्न करूंगा। इधर से महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज का प्रोग्राम गंगोत्री जाने का था, मैंने धारणा कर ली कि उत्तर काशी तक तो महात्मा जी के साथ चलूँगे। अपने निश्चय से मैंने महात्मा जी को सूचित कर दिया जो बड़े प्रसन्न हुए। मैं अपने छोटे लडके नरेन्द्र को साथ लेकर देहली से ऋषिकेश और वहाँ से महात्मा जी के साथ उत्तर काशी १५ घटे बस की यात्रा करके पहुँच गया। उत्तर काशी मे पूज्य महात्मा जी के साथ मैंने बहुत से महात्माओं के दर्शन किये जिसमें मुख्य निम्नलिखित हैं।

१. स्वामी रामानन्द जी अवधूत साधु।
२. स्वामी ब्रह्मप्रकाश जी उज्जैली।
३. स्वामी विष्णुदत्त जी तिलौट जो कि गंगा के पार रहते हैं और प्रातःकाल चार घंटे और सायंकाल तीन घण्टे गगा में खड़े होकर जाप करते हैं।

ज्ञानसू साधुवेला मे भी बहुत से महात्माओं के दर्शन किये। एक नए स्वामी गुरु दास जी सिन्धी जो कि थोड़े ही दिन पूर्व साधुवेला में पधारे थे उनके भी दर्शन हुए। उन्होने बतलाया कि वह एक महात्मा से अभी अभी मिल कर आये है जो कि बद्रीनारायण से ५२ मील परे घने जगल में एक लम्बी गुफा मे रहते हैं और जिन की आयु इस समय २२३ वर्ष की है और उनकी खुराक एक सप्ताह के लिए केवल दो बुन्द रस एक जडी का है जो कि वह पानी मे मिलाते है और पानी जम जाता है। स्वामी गुरुदास जी ने कहा कि उन्होने भी वही २ बूंद जल मे पान की खुराक खाई और उनको भी एक सप्ताह भूख न लगी।

इसके पश्चात् पूज्य महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज को मैंने कहा कि मेरी बड़ी इच्छा है गंगोत्री जाने की परन्तु यह रक्तचाप पीछा नही छोडता। उन्होने कहा कि यदि प्रबल इच्छा है तो चलो। यह रोग तुम्हे तंग नहीं करेगा और महात्मा जी मुझे डाक्टर के पास रक्तचाप (त्रिदोष) टेस्ट करवाने के लिए ले गये। टेस्ट करवाया गया और रक्तचाप नारमल से कम और दिल्ली मे जितना रहता था उससे बहुत ही कम निकला। अब तो मेरा हौसला बढ़ गया और मैंने महात्मा जी के साथ गंगोत्री जाने का निश्चय कर लिया। ९ जून को हम उत्तर काशी पहुँचे थे और १४ की प्रातः मैं अपने छोटे लड़के और पूज्य महात्मा जी के साथ गंगोत्री के लिए चल पड़ा। उत्तर काशी से गंगोत्री ५६ मील है। उत्तर काशी की ऊँचाई ३८०० फीट है और गंगोत्री की ऊँचाई १०५०० फीट है। ऋषिकेश से उत्तर काशी ९७ मील है। बस में १० घटे लगते हैं परन्तु हमें १५ घंटे

लगे क्योंकि वर्षा के कारण रास्ता कुछ खराब था। रास्ते में निम्न गेट्स आते हैं क्योंकि रास्ता इतना छोटा है कि एक समय में एक ही गाड़ी जा सकती है इस कारण हर गेट के खुलने का समय नियत है। नरेन्द्र नगर, आगरा खाल, नागनी, चम्बा, टीहरी, बड़लाहन, धरात्। उत्तर काशी से गंगोत्री तक निम्नलिखित ठहरने के स्थान, चट्टी, धर्मशाला है और इनमें से कुछ स्थानों पर डाक बंगले भी हैं जहाँ पर कि डिस्ट्रिक फारिस्ट आफिसर के पहले सूचित रहने से कमरा भी रिजर्व हो सकता है।

	स्थान	फासला उत्तर काशी से	ऊँचाई फीट
०	मनेरी	९ मील	४००० ,,
०	भटवाडी	१८ ,,	४८०० ,,
०	गंगनानी	२७ ,,	६४०० ,,
०	सुखी	३६ ,,	९००० ,,
	झाला	३९ ,,	८६०० ,,
०	हर्साल	४२ ,,	८००० ,,
	धराली	४४ ,,	८४०० ,,
	जागंला	४७ ,,	८००० ,,
	भोरगंगा	४९ ,,	७८०० ,,
०	भैरोंघाटी	५१ ,,	१०००० ,,
०	गंगोत्री	५६ ,,	१०५०० ,,

१४ जून ४ बजे सायंकाल हम घटवाड़ी पहुँच गये और रात्रि को डाक बंगले में विश्राम किया। भटवाड़ी मे एक अच्छा बाजार है जहा पर खाने पीने की सब वस्तुएँ मिल जाती हैं और ठहरने के लिए धर्मशाला और डाक बंगला है १८ मील में केवल १००० फीट ही ऊँचा जाना पड़ता है और इस सड़क पर अब सरकारी जीप चलती है। ठेकेदार राशन की जीप में यात्रियों को भी उत्तर काशी से भटवाड़ी और भटवाड़ी से उत्तर काशी ले जाता है और पांच रुपये एक ओर का किराया लेता है। इसके पश्चात् दूसरे दिन प्रातः ६ बजे हम भटवाड़ी से चले और १२ बजे गंगनानी पहुंच गये। गंगनानी से आधा मील पूर्व एक गर्म पानी का चश्मा है वहाँ पर हमने स्नान किया और एक धर्मशाला में ठहर गये।

पानी चश्मे से इतना गर्म निकल रहा था कि आलू भी चंद मिनट में उबल जाते हैं। वहाँ पर एक शिव मन्दिर है जिसमें से यह चश्मा निकल रहा है और वहाँ से तीन गज पर एक ठंडे जल का चश्मा है जिसका पानी अति उत्तम और ठंडा है। गर्म चश्मे से जल तीन कुण्डों में ले जाया गया है जहाँ पर पानी स्नान करने के लायक हो जाता है। यह स्थान उत्तर काशी और गंगोत्री के ठीक बीच में है। गंगनानी मे छोटा सा बाजार धर्मशाला और डाक बंगले हैं। डाक बंगला सड़क से बहुत ऊँचा होने के कारण बहुत कम यात्री वहाँ ठहरते हैं अधिकतर धर्मशाला और चट्टी के मकानों में ठहर जाते हैं। खाने के लिए जलेबी, बरफी, चना, आलू और चाय मिलती है। कच्ची रसद आटा, चावल, दाल, घी, दूध इत्यादि मिलते हैं। खाना बनाने के बर्तन और लकड़ी इत्यादि भी मिलती हैं। अधिकतर यात्री कच्ची रसद और बर्तन किराये पर लेकर खाना बना लेते है। मिट्टी का तेल, मोमबत्ती इत्यादि भी मिलती हैं। यात्री सब प्रातःकाल उठकर चल पड़ते हैं। आम यात्री ८ मील प्रतिदिन सफर करते हैं क्योंकि चट्टी (ठहरने का स्थान) ८ या ९ मील के पश्चात् आती है और सायंकाल आमतौर पर वर्षा हो जाती है इस कारण सब यात्री चार बजे से पूर्व ही अपनी दिन की यात्रा को समाप्त कर लेते हैं। तेज चलने वाले यात्री १६ मील से १८ मील प्रतिदिन सफर करते थे। सिवाय भटवाड़ी से गंगनानी जो कि ९ मील है जिसमे चढ़ाई उतराई बहुत आती है और रास्ता खतरनाक है। बहुत से स्थानो पर घोड़े पर चढने वालो को भी घोड़े से उतर कर पैदल चलना पड़ता है क्योंकि पगडंडी केवल २ फीट से ४ फीट तक होती है। एक ओर नीचे गंगा बहती है और दूसरी ओर ऊँचे पर्वत बड़े २ काले पत्थरों मे से सुरंग जैसा रास्ता बनाया हुआ है। चलते २ थोड़ा ही पांव फिसले और सीधे गंगा मे और गंगा का पानी इतना तेज है कि २०, २५ मील फी घंटा की रफतार से चलता है। इन स्थानों पर यात्री, घोडे इत्यादि सावधान होकर एक २ कदम देख कर चलते हैं। यात्रा मे अधिक यात्री मारवाड़ और मध्य प्रदेश के देखे गये। पंजाबी, यू० पी० वाले, गुजराती, बंगाली बिहारी बहुत कम

गंगनानी धर्मशाला में यात्रियों के साथ एक कीर्तन पार्टी, हारमोनियम, ढोलक, आदि से लैस भी ठहर गई और ५ बजे सायंकाल ही कीर्तन आरम्भ कर दिया। जिस कमरे में हम ठहरे थे उसके बाहर बराडे में ही उन्होने रंग जमा दिया। धीरे २ सारे यात्री वहाँ इकट्ठे हो गये। राजा हरिश्चन्द्र की कहानी कविता मे कह रहे थे लोग मस्त हो गये और जय श्री कृष्ण और जय सिया राम की ध्वनि आकाश मे गूँजने लगी। फिर राम धुन आरम्भ हो गई। सब यात्री ताली से ताल दे रहे थे। यह कीर्तन दो घंटे रहा। इसके पश्चात् कीर्तन पार्टी को मैंने एक रुपया दिया और प्रार्थना की सध्या का समय हो गया है इस कारण कीर्तन स्थगित किया जाय। मेरी प्रार्थना उन्होंने स्वीकार कर ली और कीर्तन स्थगित हो गया।

रात्रि को हम सब सो गये और प्रातःकाल ४ बजे सब यात्री उठ बैठे और नित्य नियम से निवृत्त होकर यात्रा पर चलने की तैयारी करने लगे। बहुत से यात्री तो पाँच बजे ही चल पड़े, परन्तु हम लोग नाश्ता इत्यादि करके ६ बजे चल पडे। गंगनानी से ६ मील चलने के पश्चात् सुक्खी की चढाई आरम्भ हुई जो कि दो मील कैंची की तरह ऊपर जाती है। यात्री थोड़ी दूर चलकर फिर विश्राम करते थे। इस प्रकार बैठते चलते सुक्खी २ बजे दोपहर को पहुँचे। वहाँ जाकर कुछ खाया पिया। अधिक यात्रियों ने तो वहीं डेरा डाल दिया, परन्तु हम आगे चल पड़े और ६ मील और चलकर हरसाल पहुंच गये।

हरसाल डाक बंगले मे जाकर विश्राम किया। एक मिलिटरी के मेजर ने जो कि उसी डाक बंगले मे ठहरा हुआ था हमारा बड़ा स्वागत किया और शाम को ५ बजे खाना बनवाकर दिया। रास्ते मे प्रातःकाल से सायंकाल तक जब कोई यात्री गंगोत्री से आता मिलता तो जय गंगे से सम्बोधित करता। इस कारण जब तक चलते जय गंगे होता रहता। यात्रियों मे साधु महात्माओं की संख्या अधिक थी। रास्ते में भी कोई तो शिवजी का डमरू बजाता कोई बंसरी बजाता और कोई जय सिया-राम की रट लगा रहा था। इस प्रकार ४ बजे सायं हम हरसाल पहुंच गये। हरसाल एक गाँव है जहाँ पर बहुत से भूटानी परिवार आबाद है। सबने ऊन बेलने की और गर्म कपडा बनाने की छोटी २ मशीनें लगाई हुई हैं। यह लोग गर्म चादर, लोई इत्यादि बनाते हैं और इस प्रकार सारे देश मे बेचते हैं। यह सब बौद्ध हैं और हर घर पर बुद्ध भगवान् का झंडा लहरा रहा था। इनके यहाँ पर मन्दिर भी हैं और बाजार भी है। १७ की प्रातः को हम हरसाल से चले और दो मील पर ही धराली गाँव है वहाँ पर पहुँच कर महात्मा जी ने ठाकुर कुन्दनसिंह जी को बुलवा भेजा और मुझे बतलाया कि यह ठाकुर कुन्दन, ठाकुर शिवसिंह भगत का पोता है जिसने हमारे ऋषि दयानन्द जी महाराज की सेवा की, जब कि वह उस सामने वाली गुफा में घोर तपस्या करते रहे तथा समाधियाँ लगाते रहे। कई स्थानों पर तप करने के पश्चात् स्वामी जी महाराज इस स्थान पर पहुंचे जो कि गंगोत्री से १२ मील इधर को है और जो कि गंगोत्री यात्रा का अंतिम गाँव है और इस गुफा में घोर तपस्या योगाभ्यास किया। ठाकुर साहब मुझे और महात्मा जी को उस गुफा में जो कि पहाड़ के ऊपर थी ले गये। गुफा के निकट पहुचते ही ऐसा प्रतीत हुआ कि हम ऋषि के समीपवर्ती हो गये है और दिल भर आया कि ऋषि ने हमारी खातिर कितनी घोर तपस्या की। सिर झुक गया। गायत्री मत्र का जाप किया और फिर यात्रा आरम्भ हो गई।

तीन मील के पश्चात् जागला पहुँचे और उसके पश्चात् दो मील और चलने पर गंगा पहुँच गये। यहाँ पर भूटान से जो नदी आती है और गंगा में मिलती है उसको भोट गगा कहते हैं। यहां से एक रास्ता नीलंग मठ को जाता है और १२ मील के पश्चात् तिब्बत की हद आरम्भ होती है। उत्तर काशी से नीलंग मठ तक मोटर रोड बन रही है जो कि दो साल मे बन जायगी और यह ही वह स्थान है उस खतरनाक चढ़ाई का जिस को भैरों घाटी की चढ़ाई कहते हैं यह है तो केवल आधा मील परन्तु २००० फीट ऊपर जाना पड़ता है यहाँ

पर घुड़सवारों को भी नीचे उतरना पड़ता है और यात्रियों को कई घन्टे लग जाते हैं ऊपर चढ़ने में। हम तो केवल ४० मिनट में ऊपर पहुंच गये और भैरों घाटी चट्टी पर पहुँच गये। बहुत से यात्री तो यहीं पर सारा दिन ठहरते हैं और दूसरे दिन गंगोत्री के लिए प्रस्थान करते हैं। यहां पर एक चश्मा है जिसका जल बड़ा मीठा और पाचनकारी है। बड़ी अच्छी एक धर्मशाला है और चाय की दुकान और कच्ची रसद मिलती है। स्थान बड़ा सुन्दर है। परन्तु लक्ष्य गंगोत्री होता है और गंगोत्री केवल ५ मील है। इस कारण फिर चल पड़े और २ बजे गंगोत्री जा पहुँचे। अपने लक्ष्य पर पहुँच कर किसको प्रसन्नता नहीं होती। फिर चार दिन की तपस्या के पश्चात् जब हमें गंगोत्री की कुटिया दिखाई दी तो चित्त गद्-गद् हो गया। योग निकेतन मे पहुचने के लिए गौरी कुण्ड से रास्ता होकर जाता है और गौरी कुण्ड के निकट ही हमारे आध्यात्मिक गुरु ब्रह्मचारी व्यास देव जी महाराज का आश्रम योग निकेतन है। गंगा का स्तर बहुत ऊँचा है और गौरी कुण्ड बहुत नीचे है उसमे सारी गंगा की धार जब पड़ती है तो सारी गंगा की धार नीचे ही लोप हो जाती है और २०० फीट के पश्चात् फिर निकलती है उछलती-कूदती बड़ी तेज रफ्तार से आगे चली जाती है। जिस समय गंगा गौरी कुण्ड मे गिरती है तो एक बड़ी ध्वनि उत्पन्न होती है जिस प्रकारकि 'ओ३म्' शब्द कोई बड़े जोरसे उच्चारण कर रहा हो। पौराणिक दन्त कथा के अनुसार इसी गौरीकुण्ड के निकट गौरी पार्वती ने शिव जी महाराज को ग्रहण करने के लिए बारह वर्ष घोर तपस्या की थी। फिर हम योग निकेतन में पहुँचे। महाराज जी ने उसी समय पहिले चाय और फिर भोजन कराया। थोड़ा विश्राम किया और सायं काल पतंगना गये जोकि गंगोत्री से एक मील है। यह एक छोटा-सा मैदान है जहाँ पर बताया जाता है पाण्डवों ने यज्ञ किया था। १८ जून प्रातःकाल के पश्चात् मैं और महात्मा जी साधु महात्माओं के दर्शन के लिए चल पड़े। सबसे प्रथम स्वामी रामानन्द जी अवधूत जोकि बिहार के रहने वाले हैं उनके दर्शन किये। आप बारह महीने गंगोत्री में ही रहते हैं। प्रश्न करने पर कि गृहस्थियों को अपना जीवन कैसे बिताना चाहिए। स्वामी जी ने उत्तर दिया कि "गृहस्थ में रहते हुए भी अपने सब कार्य भगवान् के निमित्त करो।" आपकी आयु लगभग ८० वर्ष की होगी परन्तु आपके चेहरे पर ओज था और आँखें शेर की तरह चमक रही थी। इसके पश्चात् हम महात्मा कृष्ण आश्रम जी के दर्शन करने गये। आप की भी आयु ६० वर्ष से ऊपर ही होगी। आप सदा मौन रहते हैं। आज से लगभग ४५ साल पूर्व हिन्दू यूनिवर्सिटी के मन्दिर की आधार शिला रखने के लिए पं० मदन मोहन मालवीय आप को ही गंगोत्री से बनारस ले गये थे। महात्मा जी की शिष्या ने बतलाया कि आप पहले मुट्ठी भी बन्द रखते थे और मौन रहते थे। यह देखने के लिए कि भगवान् अपने भक्तों को मुंह मे किस प्रकार अन्न डालता है बहुत दिन आप को भूखे प्यासे रहना पड़ा फिर लोगो को पता चल गया और वह उनके मुंह में भोजन डालने लगे परन्तु पानी कोई न पिलाता एक दिन वह गंगा के किनारे गये और बकरी की तरह झुक कर जल पीने लगे। गंगा मे गिर पड़े। जल इतना ठंडा था कि बेहोश हो गये और कहीं दूर जाकर किसी स्त्री ने उनको पानी मे से बाहर एक पत्थर के पास लगा दिया जब होश आई तो शरीर का निचला भाग गंगा मे और ऊपर का भाग एक पत्थर पर मुट्ठी बन्द पाया। मुट्ठी बिना खोले ऊपर नही आ सकते थे उन्होने मुट्ठी खोल दी और बाहर आ गये। प्रभु पर अटूट विश्वास की एक और घटना उन्होने बतलाई। वह उगली से भूमि पर लिखते थे और उनकी शिष्या जो कि एक बड़ी विदुषी देवी है पढ़ कर सुनाती थी जो कि इस प्रकार है, एक दिन रात्रि में वर्षा हुई और प्रातःकाल पहाड़ी से छोटे-छोटे पत्थर गिरने आरम्भ हो गये। उसी समय देवी जी ने महात्मा जी को जोकि कुटिया से बाहर बैठे थे कहा कि महाराज कुटिया से दूर हट जाइये पहाड़ गिर रहा है।" महात्मा जी यह कहते हुए अन्दर चले गये कि "यदि काल आ गया है और भगवान् की ऐसी ही इच्छा है तो कुटिया के अन्दर ही मरेंगे"। इतनी ही देर में पहाड़ से बहुत बड़ा कई टन का एक पत्थर धड़ाम से कुटिया के

ऊपर आ गिरा और कुटिया का नामो निशान मिट गया। देवी जी ने समझ लिया कि महात्मा जी तो समाप्त हो गये परन्तु थोड़ी देर के पश्चात् महात्मा जी सिर को पकड़े हुए ईश्वर का नाम लेते हुए पत्थर की एक ओर से बाहर आ गये। सिर बिल्कुल फट चुका था खून से सारा शरीर लथ-पथ था और भी शरीर पर चोटें थी। सब लोग इकट्ठे हो गये और प्रार्थना की कि महाराज इन जख्मों पर दवाई लगानी चाहिए। महाराज जी ने साफ इन्कार कर दिया और कहा कि "जिसने जख्म लगाये हैं वही इन्हें ठीक करेगा।" धीरे २ जख्म ठीक हो गये। आपने आयु भर कभी कोई दवाई नहीं लगाई।

डांडी पर भी कुलियों के हिसाब से देना पड़ता है। दो मन तक वजन के आदमी पर चार कुली और इससे अधिक वजन वाले पर ६ कुली। यात्रियों को दो कम्बल, दरी, खेस, गद्दा, सिरहाना आदि साथ लेजाना चाहिये और खाने के लिये बन्द डिब्बे बिस्कुट के, दूध के बन्द डिब्बे और बन्द डिब्बे सब्जियों के। यदि हो सके तो स्टोव और चाय भी साथ लेते जायें। वैसे तो चाय भी प्रति मील के पश्चात् मिल जाती है। बिस्तरे को बरसाती से पूरी तरह लपेट लेना चाहिये। गंगोत्री यात्रा के लिए मई जून और सितम्बर मास ठीक रहते हैं। शरीर पर पहनने के लिए, पंजामा या निकर कमीज और स्वेटर

आर्य समाज का मिशन

आर्य समाज का मिशन सब लोगों को आपस में मिलाना है और बहिष्कार की उस नीति और भावना से बिल्कुल अलग है जो वर्तमान हिन्दू धर्म का एक खास लक्षण है और जो भारतवर्ष के विद्वान् पण्डितों में आमतौर से पाई जाती है। आर्य समाज ने हिन्दू धर्म मे मिशनरी भावना का संचार किया है जो सामूहिक और व्यवस्थित रूप मे निर्धनों अज्ञानियों और पिछड़े हुए लोगों की विविध प्रकार की सेवा-शुश्रूषा के द्वारा व्यक्त हो रही है। अन्य मतावलम्बियों को वैदिक धर्म मे दीक्षित करने के प्रचार को भी आर्य समाज ने पुनर्जीवित किया है।

"आर्य समाज मे यह भाव कूट कूट कर भरा हुआ है कि वैदिक धर्म के अनुयायियो के पास मानव-समाज के कल्याण के लिए एक महान संदेश है और मानव-समाज के विकास के लिए उन्हें एक विशेष मिशन की पूर्ति करनी है।

(श्री लोक नायक अणे
आर्यमहासम्मेलन शोलापुर
के
अध्यक्षीय भाषण का एक अंश)

इसके पश्चात् हम स्वामी प्रज्ञानाथ जी के दर्शन करने गये। आप एक बंगाली साधु हैं बहुत उच्च कोटि के विद्वान् हैं। उन्होंने कहा कि गंगोत्री एक बड़ा महत्त्वपूर्ण स्थान है जहाँ पर पहुंचना बड़ा कठिन है।

गंगोत्री मे यात्रियों के लिए एक छोटा सा बाजार है जहाँ से दूध, चाय, जलेबी, मिठाई और कच्ची रसद मिल जाती है। दूध दो रुपये सेर है। हर एक वस्तु का भाव ४० रुपये मन नीचे की निस्बत अधिक है जो कि किराये के रूप में लगता है। घोड़े वाले १०० रुपये आने जाने का किराया लेते हैं। कुली ७५ नये पैसे मील लेता है।

ठीक रहेंगे।

एक गर्म चादर या गर्म कोट गंगोत्री में केवल प्रातः व सांयकाल के लिए भी आवश्यक है। थकावट अधिक होने के कारण यदि नींद ना आती हो तो गर्म जल में टांगो को घुटनों तक डुबो दें और कुछ काल के पश्चात् तौलिये से साफ करके जुराब पहन कर सो जायें। नींद ठीक आयेगी। साथ में लवण भास्कर चूर्ण या अमृतधारा रखें तो अच्छा है। ऋषिकेश से धराली तक मक्खी और खटमल होता है परन्तु गंगोत्री में खटमल, मच्छर इत्यादि नहीं होता।

एक आर्य के जीवन से प्रभावित एक प्रसिद्ध साहित्य-कार

श्री रामनरेश त्रिपाठी के आत्मवृत्त का एक अंश

"उन दिनों कलकत्ते में सत्य सनातन धर्म नाम का एक आर्य समाजी अखबार दो पैसे में बिकता था। मैं रोज एक अखबार खरीदता और उसे पूरा पढ़ जाता। उसमें बाबू *टेकचन्द आर्य के नाम से प्रायः प्रत्येक अंक में कुछ न कुछ इस प्रकार के समाचार छपते कि, उन्होंने कुछ विद्यार्थियों को छात्र-वृत्ति दी, कुछ आदमियों को सहायता दी, कन्या पाठशाला में पुरस्कार बांटा इत्यादि। मुझे वे बड़े उत्साही और लोकोपकारी व्यक्ति जान पड़े।

मैंने उन्हें एक कार्ड लिखा, जिसमें यह निवेदन किया कि मैं गांव से आया हूं, यहां मेरा कोई परिचित नहीं है और कोई काम चाहता हूं। पन्द्रह दिन तक कोई जवाब नहीं मिला। मैं हताश हो चला। इतने में लाहौर से उन का पत्र आया कि, दो हफ्ते के अन्दर वे कलकत्ते आयेंगे, वहीं मिलो। जैसे तैसे दो हफ्ते और काटे। उनके मकान या दुकान का पता मुझे नहीं मालूम था। पहला पत्र भी आर्य समाज के पते से डाला था। मैं सोचता था कि, वे आयेंगे तो अपना पता लिखकर मुझे बुलायेंगे। मुझे यह भी नहीं मालूम था कि इस ऊचाई के लोग किसी प्रार्थी का पता याद रखने की जहमत में नहीं फंसते। दो हफ्ते बाद मैंने फिर उनको आर्य समाज के पते से ही एक पत्र डाला और पूछा—"आप आये हों, तो कृपया अपना पता लिखिये, मैं आकर मिलूं।"

भाग्य की बात थी कि, पत्र उनको मिल गया और उन्होंने उत्तर भी दिया। अपने दोनों पत्रों के उत्तर पाकर मुझे विश्वास हो गया कि वे बड़े उत्साही और परोपकारी व्यक्ति होंगे। मैं उनसे मिलने गया। वे दूसरी मंजिल पर एक कमरे में गद्दी पर एक मसनद के सहारे बैठे कुछ काम कर रहे थे। सामने कई अखबार पड़े हुए थे। कमरे में

+नवनीत अप्रैल ६०

* श्री टेकचन्द जी बाद में लंदन चले गये थे। जीवन-पर्यन्त आर्यसमाज का कुछ न कुछ कार्य करते रहे। —सम्पादक

कोनों पर कई कर्मचारी बैठे काम कर रहे थे। कुछ बाहर के लोग भी आ जा रहे थे। मैंने अपना परिचय दिया, तब उन्होंने अखबारों को मेरी ओर सरकाकर कहा—"तब तक इन्हें पढ़ जाइये।"

वे बड़े मेहनती थे। हर वक्त कुछ-न-कुछ करते ही रहते थे। मैं साढ़े आठ बजे उनके पास गया था। ग्यारह बजे तक वे मुझसे कुछ नहीं बोले। ग्यारह बजे उन्होंने काम से सिर उठाया और मुझसे पूछा—"अखबारों में क्या-क्या छपा है?" मानो वे खबरें सुनते-सुनते सुस्ताना चाहते थे। सत्य सनातन धर्म द्वारा यह मैं पहले से ही जानता था कि, वे आर्य समाजी हैं, इससे आर्य समाज सम्बन्धी जितने महत्त्वपूर्ण समाचार थे, संक्षेप में मैंने सब कह सुनाये। बारह बजे के लगभग जब वे कहीं जाने को उठे, तो बोले—"रोज इसी वक्त आया कीजिये।"

इस तरह दो महीने तक लगातार मैं उनके पास जाता रहा, पर काम की कोई बात नहीं हुई। एक दिन मैंने उनसे अपने काम के लिए कहा और वे मुझे लेकर अपने कुछ मित्रों के पास गये भी, पर हर एक ने यही कहा—"अभी तो काम नहीं है। ध्यान रखेंगे।"

लेकिन भाग्य तो दूर से मेरा पीछा करता चला आ रहा था। एक दिन उसने मुझे पकड़ लिया। सुबह सात बजे मैं उस गली में, जिसमें बाबू टेकचन्द की दुकान थी, किसी काम से गया। दूकान के सामने पहुँचने पर मेरे मन में आया कि चलूँ ऊपर चलकर देख आऊँ क्या हो रहा है। यह बात मन में क्यों पैदा हुई, इसकी तो अब कल्पना भी नहीं कर सकता। इतना ही कह सकता हूं कि, कोई अदृश्य शक्ति आदमी को पीछे से टार्च दिखाती है और आदमी उसी के प्रकाश के आगे चलने के लिए विवश हो जाता है। वह शक्ति सुख की तरफ ले जाये या दुःख की तरफ, आदमी को जाना ही पड़ता है। बस मैं यही जानता हूँ कि, किसी ने मुझे भीतर से प्रेरणा दी या टार्च दिखायी और मैं सीढ़ियाँ चढ़कर उस दुकान की दूसरी मंजिल में चला गया। ऊपर जगन नाम का नौकर जिसका बायां हाथ कोहनी के ऊपर से कटा हुआ था कमरों में झाड़ू लगा रहा था। मैं जीने से चढ़कर सीधा उस कमरे में गया, जिसमें बाबू टेकचन्द के पास रोज बैठा करता था। वहाँ मैंने देखा कि, कागजों का एक गोल पुलिंदा मसनद से दबा हुआ पड़ा है। मैंने समझा कि, कुछ कागज पत्र होंगे, जिन्हें बाबू टेकचन्द भूल गये हैं। अतः मैंने उन्हें जरूरी कागज पत्र समझकर उठा लिया। लेकिन उसमें नोट थे। मैंने उन्हें बिना गिने जेब में रख लिया। फिर सोचा कि, जब खाना खाकर लौट कर आऊँगा, तब बाबूजी को दे दूँगा। जगन को अपने जाने की सूचना देकर, मैं नीचे उतर आया और घर चला गया।

खा-पीकर दस बजे के करीब मैं दूकान पर फिर आया। बाबू टेकचन्द नौ बजे ही दुकान में आ गये थे। बाद को उन्हीं से मालूम हुआ कि, जब वे खाना खाने बैठे तब उन्हें याद आया कि, उन्हें एक ग्राहक सात सौ रुपयों के नोट दे गया था, उनका क्या हुआ? उन्होंने अपनी जेबें टटोलीं, नोट कहीं नहीं मिले। तब वे खाना छोड़कर सिर्फ कमीज पहने हुए ट्राम में चढ़कर दुकान में आये। जगन से पूछताछ की, पर उसने इन्कार किया। अब खजांची आया, पूछे जाने पर उसने कहा कि कल दूसरे वक्त तो वह दुकान में आया ही नहीं था। और भी इधर-उधर खोज हुई, पर नोट न मिले। इतना हो चुकने पर मैं पहुंचा। टेकचन्द जी के सामने पहुंचकर मैंने नोटों का बंडल निकाला और उन्हें देकर बोला—"आज सबेरे यों ही मैं दुकान में आया था। यह बंडल मसनद के नीचे दबा हुआ दिखाई पड़ा। मैंने समझा, किसी बाहरी आदमी के हाथ न पड़ जाये इसलिए लेता गया।"

बाबू टेकचन्द ने बंडल खोलकर नोट गिने, पूरे के पूरे सात सौ रुपये थे। वे बहुत खुश हुए। ५० रुपये निकालकर उन्होंने मेरी तरफ बढ़ाये और कहा—"यह इसका इनाम है।" मैं हँसने लगा और बोला—'ये रुपये मेरे कमाये होते, तो मैं इनाम जरूर ले लेता, पर यहीं तो मैं रोज आता जाता हूं, आपकी चीज आपको देकर मैंने कोई कमाई तो की नहीं, फिर इनाम क्या लूं?"

और मैंने रुपये लिये भी नहीं। उसी दिन से मैं बाबू टेकचन्द की नजरों में चढ़ गया।

सात सौ रुपये का मोह मुझे क्यों नहीं लगा, इसे मै आज भी नहीं समझ सका हूँ। मैं गरीब का लड़का था। कमाने के लिए ही कलकत्ते गया था। मन मे यह बात उठ सकती थी कि, रुपये लेकर रेल का टिकट कटाओ और घर भाग चलो। पर अब मै समझता हूं कि, मेरे भावी जीवन की नींव तो वही अदृश्य शक्ति रख रही थी। वह मुझे वहां से क्यों हटने देती? अगले ही दिन बाबू टेकचन्द ने मुझे अपनी एजेंसी की नौकरी मे ले लिया। लेकिन बचपन की इस घटना का मेरे जीवन मे बड़ा महत्वपूर्ण योग रहा।

मै पहले पहल उर्दू पढने के लिए बैठाया गया था। संयोग से काशी के प० रामनारायण मिश्र, जो उन दिनो जौनपुर जिले के स्कूलों के डिप्टी इंस्पेक्टर थे, हमारे घर एक शाम को भोजन करने आये, तब उन्होने मुझे पास खड़ा देखकर बुलाया और पूछा—"क्या पढते हो?" मैने कहा—"उर्दू।" यह सुनकर उन्हें बहुत खेद हुआ। उन्होने मेरे पिता और भाई को बुलाकर बहुत लज्जित किया। उसके अगले दिन ही मैंने उर्दू छोड दी और हिन्दी पढनी शुरू की। उनका मेरे जीवन पर यह महान् उपकार है, जिसके लिए उनका रोम-रोम से कृतज्ञ रहूगा।

अब मै सोचता हू कि, भगवान् मुझे बचपन से ही हाथ का सहारा न देते आ रहे होते और मैं उर्दू ही पढ़ता रहता, तो आज किसी वकील का मुशी या किसी हाकिम का पेशकार होता। क्या दशा होती? मेरा जीवन तो नरक हो गया होता। तब भला यह साहित्य की बडी पुस्तक और खंडकाव्य लिखने का सौभाग्य मुझे कैसे प्राप्त होता? मै भी मक्खी मच्छरो का सा जीवन बिताता और किसी को पता भी न होता कि, मै कब जन्मा और कब मरा? न मुझे टंडन जी मिलते, न मालवीय जी, न पंडित जवाहरलाल जी और न गाधीजी। वह तो दुनिया ही दूसरी होती, घोर निराशामय और सबसे निकृष्ट।

—०×०—

सार्वदेशिक विद्यार्य सभा, देहली

वसन्तपंचमी २०१७ वि० की परीक्षाओं का परिणाम

आर्य सिद्धान्त विशारद परीक्षा

केन्द्र आबू रोड—द्वितीय श्रेणी—३ प्रकाशवती श्रीवास्तव १३ शकुन्तलादेवी १७ सन्तोष, १६सरोजकुमारी तृतीय श्रेणी—२ कृष्णा, ४ सुशीला देवी, ६ पुष्पा देवी, ७ सुमित्रा देवी, ६ कुसुमलता, १० कमला, ११ वर्षा, १३ चन्द्रिका, १४ सुमित्रा देवी, १६ कौशल्या, १८ विमला १६ दुर्गादेवी २१ सुशीला, २२ राधारानी, २३ विजयलक्ष्मी, २४ पद्मा, २६ रामप्यारी २७ मीरा, २८ कलावती ३१ सुकलकोर, ३२ शकुन्तला, ३३ सुशीला, ३४ मुन्नी, ३५ पुष्पा, ३६ रेखा रानी, ३७ शान्ति॥

केन्द्र सहारनपुर तृतीय श्रेणी ४० कुमारी कुसुमलता, ४३ सन्तोषकुमारी वर्मा।

केन्द्र पीलीभीत—प्रथमश्रेणी—४४ आनन्दस्वरूपवर्मा, ४५ इन्द्रपालसिंह तोमर। द्वितीय श्रेणी—४६ इन्द्रेशचन्द्र सक्सेना॥

केन्द्र दौराला—तृतीय श्रेणी ४७ कमलेश नं० २ ।।

केन्द्र देवरिया—द्वितीय श्रेणी–५६ रामलली मिश्र, ६० फूल कुमारी देवी, ७० गंगोत्री कुमारी, ७४ राजकुमारी अग्रवाल, तृतीय श्रेणी—६३ अणिमा रानी, ६४ सुषमा रानी, ६५ शैल कुमारी ६६ माधुरी कुमारी, ६८ सावित्री देवी, ६६ रानी श्रीवास्तवा, ७१ मनोरमादेवी ७२ विद्यावती पाण्डे, ७३ सुशीलादेवी, ७६ सुलोचनाकुमारी अग्रवाल, ७७ सुलोचना कुमारी (पिता श्री कृष्ण प्रसाद), ७८ गीताकुमारी अग्रवाल ।।

केन्द्र मोहाना - प्रथम श्रेणी ८७ धर्मवीर । द्वितीय श्रेणी ७६ जगदीशसिंह, ८० धर्मपालसिंह, ८१ सतेन्द्र कुमार, ८३ राजपालसिंह, ८४ महेन्द्रकुमार, ८६ यदुवीरसिंह, ६० देवीसिंह, तृतीय श्रेणी—८६ जगरूपसिंह ।।

केन्द्र देहली—प्रथम श्रेणी ६३ लीलावती ।।

केन्द्र आगरा—प्रथम श्रेणी ११३ रामदेवी । द्वितीय श्रेणी ६६ शशी भारद्वाज, १०० सुमन, १०१ विमला मेहता, ११३ पुष्पा, १०४ रजनी चतुर्वेदी, ११२ शकुन्तला । तृतीय श्रेणी—६६ कान्तिदेवी, ६८ पुष्पा लता शर्मा, १०२ मंजु निगम, १०५ यशोधरा शर्मा, १०६ शशिलता महेश्वरी, १०७ मंजुला बंसल,, ११० कमला गुप्ता, ११४ मिथिलेश गुप्ता, ११६ शकुन्तला शर्मा ।।

केन्द्र बहाना—द्वितीय श्रेणी ११८ शकुन्तलाकुमारी, ११६ महेशचन्द्र । तृतीय श्रेणी--११७ जगदीश सिंह गहलौत ।।

केन्द्र यमुनानगर अम्बाला—प्रथम श्रेणी १२० सत्यप्रिय आर्य (भारियाशर्मा) द्वितीय श्रेणी--१२१ रामस्वरूप आर्य (कालूराम) १२३ देवराज (बत्तूसिंह)। तृतीय श्रेणी १२२ विश्वमित्र (रूलियाराम)।

केन्द्र खंडवा—तृतीय श्रेणी १२६ रामकृष्ण माहेश्वरी ।।

केन्द्र लालगंज (रायबरेली)—द्वितीय श्रेणी १२७ राधेश्याम, १२८ राम औतार । तृतीय श्रेणी १३१ कालीचरन, १३३ शन्नोदेवी, १३४ सावित्रीदेवी, १३५ रामशरण श्रीवास्तव, १३७ रन्नोदेवी ।।

केन्द्र शाहाबाद (हरदोई)—द्वितीय श्रेणी १३६ जगन्नाथप्रसाद, १४० राजेन्द्रकुमार वर्मा, तृतीय श्रेणी १३८ ओमप्रकाश ।।

केन्द्र लखनऊ—प्रथम श्रेणी १४१ उर्मिला सक्सेना, १४२ शोभा सक्सेना, १४३ किरन सक्सेना ।।

केन्द्र लोहरदगा—प्रथमश्रेणी १४४ वीरेन्द्रप्रसाद, द्वितीय श्रेणी-१४५ नारायण महापात्र

केन्द्र लखीमपुरी खीरी—प्रथम श्रेणी १५० रामरानी, द्वितीय श्रेणी--१४७ सुषमा अस्थाना, १५२ श्यामलता अस्थाना। तृतीय श्रेणी--१४८कुसुमकुमारी, १५१ प्रभा खण्डेलवाल, ३५१ रमाकुमारी जागड़ा।।

केन्द्र कचौरा—प्रथम श्रेणी १६६ राजकुमार। द्वितीय श्रेणी १६४ भरतसिंह तृतीय श्रेणी--१५३ जगत् प्रकाश १५६ दलबीरसिंह १६५ तोफानसिंह, १६७ राजपालसिंह, १६८ हाकिम सिंह, १६६ प्रेमचन्द्र, १७० रामगोपाल, १७१ सतीशचन्द्र, १७२ व्रजगोपाल, १७३ ओ३मप्रकाश, १८८ सियारामसिंह, १७६ रामसिंह, १८० मौरश्री, १८१ मधुबाला, १८३ चन्द्रवतीदेवी, १८४ माधवीदेवी, १८५ रामबेटी ।।

केन्द्र गुलावठी—द्वितीय श्रेणी १८७ सरोज देवी १८८ कृष्णा देवी, १६३ कुसुमलता, १६६ गीतादेवी, १६६ सुशीलादेवी, २१० सन्तोषकुमारी। तृतीय श्रेणी १८६ पुष्पा देवी, १८६ लक्ष्मी देवी, १६० माधुरी देवी १६१ यशोदेवी, १६२ राजेश्वरी देवी १६४ चन्द्रकला, १६५ निर्मला देवी, १६७ इन्द्रादेवी, १६८ कैलाश, २०० सरला देवी, २०१ सन्तोष देवी २०२ कमलेश, २०३ कुन्तीदेवी २०४ पुष्पादेवी, २०६ मूर्तिदेवी, २०७ मायादेवी, २०८ दर्शन कुमारी, २०६ राजदुलारी, २११ मधुवाला, २१२ राजेन्द्रीदेवी ।।

केन्द्र कुम्हेर (भरतपुर)–प्रथम श्रेणी २१३ जगदीशप्रशाद २१५ नरेन्द्रसिंह । तृतीय श्रेणी-२१३ धर्मेन्द्रसिंह, २१५ छोटे लाल आर्य, २१७ अमरनाथ आर्य ।।

केन्द्र फैजाबाद–द्वितीय श्रेणी २३१ हीरालाल, २६३ जगदीशचन्द्र । तृतीय श्रेणी २२८ राजकुमार वर्मा, २२६ राम दास, २३८ काशीनाथ, २४७ अवध किशोर,

२५५ जगदम्बा प्रसाद, २५६ जयप्रकाश, २५८ प्रताप राजपाल, २५९ रमेशचन्द्र यादव, २६२ ओ३मप्रकाश, २६७ विश्वनाथ सिंह, मोतीलाल, २७० मनोहरलाल, २७१ रामचन्द्र, २७२ सुरेशबहादुरसिंह, २७४ मिथिलेश-यादव, २७५ तीर्थराज यादव, २७६ जितेन्द्रमोहन, २७८ सुरेश तिवारी, २८० रमेशचन्द्र, २८१ जमंयतमल, २८३ हनुमानदास, २८४ वजीरदास, २८६ शोभादास ।

केन्द्र पार्वती आ० क० पा० बदायूं—तृतीय श्रेणी-२८६ मीरा खरे, २९० विद्यावती वर्मा, २९१ निर्मल, २९२ कुसुमकुमारी, २९३ देवी, २९४ स्नेहलता, २९५ कान्तिदेवी शर्मा, २९६ मधुशंकर ।

केन्द्र मुजफ्फरनगर—द्वितीय श्रेणी ३०५ मनफूलदत्त आर्य, तृतीय श्रेणी--३०४ भगवानदास

केन्द्र आ० स० बदायूं—प्रथम श्रेणी ३२८ रामसेवक शर्मा, ३२४ व्रजमोहनसिंह । द्वितीय श्रेणी-३०० हरिशंकर ३१४ प्रेम दाससिंह वाली, ३१८ रामनिवास, ३२३ हरिश्चन्द्र सक्सेना, ३२५ रमाकान्त पाठक । तृतीय श्रेणी ३११ लालमणिसिंह, ३१६ रामप्रकाश, ३१९ विष्णुनिवास ३२० सुरेशचन्द्र पालीवाल ।

केन्द्र हजरतपुर पोठरी—प्रथम श्रेणी ३४३ ओमपाल आर्य, ३४४ वसन्तलाल शर्मा, द्वितीय श्रेणी ३४६ रामस्वरूपसिंह, तृतीय श्रेणी–३४५ बनीसिंह, ३४८ जगपाल, ३४९ श्यामसिंह, ३५० राजेन्द्र ।

आर्य सिद्धान्त भूषण

केन्द्र सहारनपुर—प्रथम श्रेणी १ स्वर्ण कुमारी। द्वितीय श्रेणी २ सुमित्रा देवी, ५ कैलाश कुमारी। तृतीय श्रेणी ३ कैलाशसैनी, ६ सन्तोष जौली, ७ रानी देवी शर्मा ॥

केन्द्र पीलीभीत—तृतीय श्रेणी ८ रामगोपाल प्रेमी, ९ रामप्रसाद आर्य, १० श्रीनिवास ॥

केन्द्र बहाना—प्रथम श्रेणी १३ नरेशचन्द्र अग्रवाल, द्वितीय श्रेणी ११ तेजवीरसिंह राणा, १२ रघुनाथसिंह सीसोदिया ॥

केन्द्र बांदा—द्वितीय श्रेणी १६ शिवप्रसाद ॥

केन्द्र लखीमपुर खीरी—तृतीय श्रेणी १७ मालती शुक्ला, २४ अमरजीत ॥

केन्द्र कबीरा—तृतीय श्रेणी ३५ सियारामसिंह, ३६ महावीरसिंह, ३७ चन्द्रपाल, ३८ रमाशंकर, ३९ दानपालसिंह, ४० गगाधर, ४१ रामरज आजाद, ४२ महेन्द्रपाल, ४३ प्रेमपालसिंह ॥

केन्द्र गुलावठी—प्रथम श्रेणी ६७ उर्मिला रानी (विश्वेश्वरदयाल) ७० हेमलता । द्वितीय श्रेणी ४६ सत्यवती, ४८ निर्मला, ५० शारदा देवी, ५२ शहनाज, ५८ कमलेश, ५९ कान्ति देवी, ६० दयावती, ६१ सुमित्रा, ६२ शकुन्तला, ६६ मुन्नीदेवी, ६८ राजरानी, ६९ सरस्वती, ७१ पुष्पादेवी, ७२ द्रौपदी देवी, ७३ कौशल कुमारी, ७५ रमेशलता, ७६ पुष्पादेवी । तृतीय श्रेणी ४५ राजेश्वरी देवी, ५१ मंजुबाला, ५३ कसुमलता ५४ इन्द्रा रानी, ५५ कुसुमकुमारी, ५६ विमला देवी, ६३ ऊषा गुप्ता, ६४ ऊषा, ६५ उर्मिलादेवी (लक्ष्मी-नारायण), ७४ लज्जावती ॥

केन्द्र फैजाबाद—तृतीय श्रेणी ८० हरिप्रसाद शर्मा, ८२ प्रमोदराज शर्मा ॥

केन्द्र बदायूं—द्वितीय श्रेणी ८७ किरन सक्सेना, तृतीय श्रेणी ८६ सुशील कुमारी, ८८ मृदुला ॥

केन्द्र मुजफ्फर नगर—प्रथम श्रेणी १०२ ईश्वरलाल, द्वितीय श्रेणी १०१ लेखराम ॥

वीरेन्द्र शास्त्री एम० ए०
मन्त्री

आर्य सिद्धान्त रत्न परीक्षा

केन्द्र देवरिया प्रथम श्रेणी—२ सरोज श्रीवास्तवा ॥

केन्द्र खन्डवा—प्रथम श्रेणी—३ सुन्दरलाल मालवीय, ५ सुखराम आर्य । द्वितीय श्रेणी ४ भगवती प्रसाद मिश्र ।

केन्द्र लखनऊ—तृतीय श्रेणी ८ तपेश्वर प्रसाद मिश्र ।

केन्द्र फैजाबाद—तृतीय श्रेणी १२ यामिनी भूषण, १३ वीरेन्द्र प्रताप सिंह ॥

वीरेन्द्र शास्त्री एम ए०
मंत्री
१६-३-६१

हिन्दू-समाज में स्त्री और पुरुष एक प्राण, दो देह माने जाते हैं, उनका स्वार्थ, उनका स्वत्व और उनका अधिकार एक होता है। पति सम्पत्ति का और स्त्री का स्वामी है तो पत्नी भी पति के सर्वस्व की तथा उसके हृदय की भी स्वामिनी है। पुरुष गृहस्वामी होने के साथ ही बाहर काम करने वाला श्रमिक भी है, किन्तु स्त्री पुरुष की समस्त सम्पदा पर एक मात्र अधिकार रखने वाली घर की रानी है। अतः भारतीय नारी को जो आदर और सम्मान प्राप्त है, वह अन्यत्र दुर्लभ हैं। पति के धन पर तो समान अधिकार है ही हिन्दू-नारी की कुछ ऐसी सम्पत्ति भी होती है, जिस पर केवल उसी का व्यक्तिगत अधिकार होता है।

शक्ति और वैभव को समझने के लिए लगायी जाती थी। यह शुल्क कहीं धन के रूप में और कहीं पराक्रम के रूप चुकाना पड़ता था। आज भी बहुत-सी जातियों में कन्या के लिए जेवर लाने की शर्त करके ब्याह किये जाते हैं। यह "स्त्री धन" स्त्री अपनी इच्छा के अनुसार सत्कार्य में लगाती थी, स्त्री की मृत्यु के पश्चात् वह धन उसके पुत्र पुत्रियों को मिलता था। सन्तान न होने पर अन्य निकटतम सम्बन्धी को प्राप्त होता था।

नारी को जीवन निर्वाह के लिये मिला हुआ धन भी स्त्री-धन है, ऐसा महर्षि देवल का मत है। मिताक्षरा में स्त्री धन की सीमा और विस्तृत है। स्त्री को उत्तराधिकार में प्राप्त धन, उसकी खरीदी हुई सम्पत्ति है। बटवारे में

नारियों का धनाधिकार

विवाहिता कन्या अथवा वधू को जो जवाहारात और सुवर्ण आदि के गहने मायके तथा ससुराल से मिलते हैं, उस पर वह स्वतन्त्र अधिकार रखती है, वह केवल उसी की सम्पत्ति है। उसके सिवाय भी जो समय-समय पर पिता-माता, भाई,सास, सुसर, पति एवं अन्य गुरुजनों से उसको उपहार में धन मिलता है, वह भी उसी का है। इस प्रकार का धन "स्त्री धन" कहा गया है। प्राचीन काल मे कोई-कोई शुल्क लेकर कन्या का विवाह करते थे, ऐसे विवाह प्रायः क्षत्रियों में ही होते थे। वह शुल्क कन्या को ही दिया जाता था। शुल्क की शर्त केवल वरपक्ष की

मिला हुआ धन, विवाह में प्राप्त और अपने अधिकार मे आया हुआ धन-इन सबको "स्त्री धन" कहा जाता है—- "रिक्थक्रयसंविभागपरिग्रहाधिकमप्राप्तमेतत् स्त्रीधनम्" (मिताक्षरा)

मनु जी का मत है कि "स्त्री धन" का व्यय करने के पूर्व नारी के लिये पति की सम्मति ले लेना परम आवश्यक है। कात्यायन कहते हैं-स्त्री-धन दो प्रकार का है। सौदायिक और असौदायिक-पिता, माता, भ्राता और पति के द्वारा प्राप्त धन सौदायिक है, शेष असौदायिक है। सौदायिक धन पर नारी का पूर्ण अधिकार है, परन्तु

असौदायिक धन—का वह केवल उपभोग कर सकती है। नारद के मत में सौदायिक धन के अन्तर्गत भी जो अचल सम्पत्ति है, उसे स्त्री नहीं बेच सकती। अधिकांश धर्मशास्त्रों का ऐसा ही मत है। मिताक्षरा के लेखक विज्ञानेश्वर का मत है कि पति की मृत्यु के बाद विधवा उसके धन की पूर्णरूपेण स्वामिनी बन जाती है। याज्ञवल्क्य के मत से विधवा को यह भी अधिकार है कि वह सम्पत्ति अपनी कन्या को दे सके। मिताक्षरा का यह भी कथन है कि सम्मिलित परिवार में किसी पुरुष की मृत्यु होने पर उसकी सम्पत्ति का पूरा उत्तराधिकार उसके पुत्रों को ही नहीं प्राप्त है तो नारी को कैसे प्राप्त हो सकता? इन्हीं सब बातों पर विचार करके प्रीवी कौंसिल ने फैसला दिया था कि-"स्त्री उत्तराधिकार में प्राप्त हुई सम्पत्ति को, स्त्री-धन होने पर भी, बेच नहीं सकती, वह उसके पति के अन्य उत्तराधिकारियों को ही मिलेगी-।" देवल का कथन है कि यदि पति स्त्री धन को खर्च करे तो उसे सूद के साथ पुनः नारी को लौटा दे। पति के सिवा दूसरे किसी को स्त्री धन स्पर्श करने का भी अधिकार नहीं हैं। याज्ञवल्क्य के मत से यदि दुर्भिक्ष में, धर्मकार्य में अथवा रोग की दशा में पति स्त्री धन का उपयोग करे तो उसे वह लौटाने को बाध्य नहीं है : कात्यायन कहते हैं, यदि पति ने उस समय इस शर्त पर धन को लिया हो कि लौटा देंगे, तो उसे अनुकूल समय पर अपने वचन का पालन करना चाहिये। पति बिना लौटाये ही मर जाय तो पुत्रों को ऋण समझकर उसे स्वयं लौटाने का प्रयत्न करना चाहिये। कात्यायन का यह भी मत है कि असती अथवा दुराचारिणी स्त्री "स्त्री धन" को पाने की अधिकारिणी नहीं है।

स्त्री की मृत्यु होने पर उसके धन की अधिकारिणी कन्या मानी गयी है। विवाहिता की अपेक्षा अविवाहिता का अधिक अधिकार है। विवाहिताओं में भी जो दरिद्र हो, उसका विशेष अधिकार है। मनुजी के मत में स्त्री का निर्धन हो जाने पर उसके धन को पुत्र और पुत्री दोनो बराबर बांट लें। पुत्री का पुत्र (दौहित्र) भी नाना के धन का उत्तराधिकारी माना गया है। वसिष्ठ-धर्म-सूत्र में दौहित्र को नहीं, पुत्री को ही पिता का वास्तविक प्रतिनिधि बताया गया है। महाभारत, बृहस्पति-स्मृति और नारदस्मृति के अनुसार पुत्र के अभाव में पुत्री ही धन की अधिकारिणी है, परिवार का दूसरा कोई व्यक्ति नहीं। अविवाहिता कन्याओं को भाई के रहने पर भी धन का भाग प्राप्त होता था (ऋग्वेद) कौटिल्य-अर्थशास्त्र के अनुसार भाई के रहते हुए बहिन का पिता के धन पर अधिकार नहीं है। परन्तु शुक्राचार्य उस दशा में भी अधिकार मानते हैं। विष्णु और नारद के मत में यह अधिकार केवल अविवाहिता का है। याज्ञवल्क्य के मतानुसार प्रत्येक भाई धन का चतुर्थांश देकर बहिन का विवाह कर दे, ऐसा विधान है। देवल के मत से विवाह में जितना आवश्यक हो, उतना ही धन लगाना चाहिए। आपस्तम्ब, कुलूकभट्ट, गौतम, विष्णु तथा याज्ञवल्क्य आदि की राय में संतानहीन विधवा पति के धन की उत्तराधिकारिणी मानी गयी है। कौटिल्य ने केवल उसके भरण-पोषण तक ही अधिकार माना है। बृहस्पति केवल चल सम्पत्ति में और दक्ष चल-अचल दोनों सम्पत्तियों में उसका अधिकार स्वीकार करते हैं। जीमूतवाहन की भी यही राय है। याज्ञवल्क्य के मत में वही विधवा पति के धन की उत्तराधिकारिणी है, जिसका पति परिवार से अलग हो गया हो। परन्तु बृहस्पति और जीमूतवाहन संयुक्त परिवार से भी उसके इस अधिकार को अक्षुण्ण मानते हैं। इस बात में प्रायः सभी स्मृतिकार एक मत है कि विधवा का उसके जीवन-काल तक पति के धन पर अधिकार हैं, वह उसे बेच नहीं सकती। हाँ, दान और धर्म करने में उसके लिए कोई रुकावट नहीं है। कहीं-कहीं पुत्र की सम्पत्ति पर विधवा का नहीं, उसकी माता का अधिकार माना गया है। यह बात संयुक्त परिवार के लिए ही है और वह भी पुत्र आदि के न रहने पर ही। याज्ञवल्क्य ने यह भी लिखा है कि यदि नृशंस और अत्याचारी पति के दुर्व्यवहार से सती-साध्वी पत्नी का उसके साथ रहना असम्भव हो जाय तो पति की सम्पत्ति का एक तिहाई भाग उसे पृथक् रहकर निर्वाह करने के लिये मिल जाना चाहिये।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, देहली

की

धार्मिक परीक्षायें

प्रत्येक आर्यसमाज तथा प्रत्येक आर्य विद्यालय को अपने यहाँ अनिवार्य रूप से इनका केन्द्र स्थापित करना चाहिए और पूरा यत्न करना चाहिए कि समस्त आर्य सदस्य तथा प्रायमरी से ऊपर की कक्षाओं के छात्र और छात्रायें इनमें से किसी न किसी परीक्षा में अवश्य सम्मिलित हों। ये परीक्षायें गत चार वर्षों से प्रचलित हैं।

इस वर्ष पहली परीक्षा श्रावणी पर २७ अगस्त को होगी जिसके लिए परीक्षार्थी सूची और शुल्क शीघ्र आ जाना चाहिए।

निवेदक—

स्वामी ध्रुवानन्द प्रधान	वीरेन्द्र शास्त्री, एम०ए, मंत्री,
सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि	कार्यालय-सार्वदेशिक विद्यार्य
सभा	सभा रायबरेली (उ० प्र०)

नियमावली तथा पाठविधि

[सन् १९६१ से पुनः परिवर्तन पर्यन्त]

१—किसी भी परीक्षा मे कोई भी व्यक्ति बैठ सकता है किन्तु मुख्यतया ये परीक्षायें छात्र-छात्राओं तथा आर्य-सदस्यों के लिए हैं।

२—कम से कम ५ परीक्षार्थी होने पर किसी विद्यालय के आचार्य या आर्य समाज के प्रधान की अध्यक्षता मे केन्द्र स्थापित किया जा सकता है।

३—परीक्षायें प्रतिवर्ष श्रावणी पूर्णिमा पर (अगस्त में) तथा वसन्त पंचमी पर (जनवरी मे) ली जावेंगी आवेदन पत्र शुल्क सहित साधारणतः एक मास पूर्व भेजना चाहिए। तत्पश्चात् २५ नये पैसे प्रति छात्र अतिरिक्त शुल्क देना होगा।

४—परीक्षायें आर्य सिद्धान्त विषय में होंगी। पर छात्रों की उपाधि तथा शुल्क आदि का विवरण निम्न लिखित है—

नाम उपाधि	शुल्क	प्रश्न-पत्र
(१) आर्य सिद्धान्त विशारद	१)रु०	१
(२) आर्य सिद्धान्त भूषण	२)रु०	२
(३) आर्य सिद्धान्त रत्न	३)रु०	३

५—उत्तीर्ण छात्रों को उपाधि तथा प्रमाणपत्र सभा की ओर से सार्वदेशिक सभा के प्रधान के हस्ताक्षरों से युक्त प्रदान किये जायेंगे। सर्व प्रथम परीक्षार्थी को विशेष पुरस्कार दिया जायेगा।

६—प्रत्येक प्रश्न पत्र का पूर्णाङ्क १००, उत्तीर्णताङ्क तृतीय श्रेणी मे ३३ से ४४ तक, द्वितीय श्रेणी में ४५ से ५९ तक, प्रथम श्रेणी में ६० से १०० अङ्क तक प्रतिशत होंगे।

७—परीक्षा का माध्यम हिन्दी होगा। आवश्यकतानुसार अन्य भाषाओं के लिए विशेष अनुमति लेनी चाहिये।

पाठ-विधि

१—आर्य सिद्धान्त विशारद [१ प्रश्नपत्र, पूर्णाङ्क १००]

[१] पञ्चमहायज्ञविधि (संध्या अर्थ सहित तथा हवन मंत्र दैनिक)

[२] आर्योद्देश्यरत्नमाला [३] व्यवहारभानु

[४] महर्षिदयानन्द का स्वकथित जीवन चरित्र

२—आर्य सिद्धान्त भूषण [२ प्रश्न पत्र, पूर्णाङ्क २००]

प्रथम प्रश्न-पत्र—सत्यार्थप्रकाश (पूर्वार्ध—१ से १० समुल्लास)

द्वितीय „ „—संस्कार विधि

(संस्कारविधि की व्यावहारिक परीक्षा भी ऐच्छिक रूप में होगी। जो चाहें वे फार्म में निर्देश करदें)

३—आर्य सिद्धान्त रत्न (३ प्रश्न पत्र, पूर्णाङ्क ३००)

प्रथम प्रश्न-पत्र—ऋग्वेदादि-भाष्य-भूमिका

द्वितीय „ „—सत्यार्थ प्रकाश (उत्तरार्द्ध—११ से १४ वें समुल्लास तक)

तृतीय „ „—आर्य सिद्धान्तों पर निबन्ध

—वीरेन्द्र शास्त्री एम०ए०, आचार्य
मन्त्री, सार्वदेशिक विद्यार्य सभा, कार्यालय
रायबरेली (उ० प्र०)

—*:o:*—

केन्द्र के लिये प्रार्थना पत्र तथा परीक्षार्थी-सूची

श्री मन्त्री जी, सार्वदेशिक विद्यार्य सभा, कार्यालय रायबरेली (उ०प्र०)
श्रीमन् नमस्ते !

कृपया निम्नलिखित केन्द्र स्थापित रखें। परीक्षाओं की व्यवस्था पूर्ण उत्तरदायित्व के साथ की जावेगी। कोई परीक्षार्थी अनुचित व्यवहार न करने पावेगा। वि० सं० २०१ सन् (१९६) की श्रावणी। वसंतपंचमी की परीक्षा में सम्मिलित होने वाले परीक्षार्थियों की सूची भेजी जाती है—

केन्द्र स्थान डाक घर जिला स्टेशन
परीक्षार्थी संख्या विशारद भूषण रत्न सम्पूर्ण योग ह० केन्द्राध्यक्ष

संख्या	परीक्षार्थी का नाम	पिता का नाम	आयु	परीक्षा नाम	शुल्क	परीक्षार्थी के हस्ताक्षर

(शेष नाम पृथक् कागज पर इसी प्रकार खाने भर कर लिखिए।)

कार्यालय—
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा,
दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान)
नई दिल्ली—१
दिनांक १-९-६१

सत्याग्रह बलिदान-स्मारक दिवस

शनिवार २६ अगस्त १९६१ को मनाइये

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, देहली के दिनांक १३–१०–४० के स्थायी निश्चयानुसार हैदराबाद सत्याग्रह में अपने प्राणों की आहुति देने वाले आर्य वीरों की पुण्य स्मृति में श्रावण शुक्ला पूर्णिमा तदनुसार शनिवार २६ अगस्त १९६१ को आर्यसमाज मन्दिरों में सत्याग्रह बलिदान स्मारक दिवस मनाया जायगा। इसी दिन श्रावणी का पुण्य पर्व है। इसका कार्यक्रम आर्य पर्व पद्धति के अनुसार श्रावणी उपाकर्म के साथ मिलाकर निम्न प्रकार किया जाय :—

प्रातः ८॥ बजे आर्य समाज मन्दिरों में सभाएँ की जायें जिनमें उपाकर्म को कार्यवाही के पश्चात् सब उपस्थित भद्र पुरुष तथा देवियां मिलाकर निम्न पाठ करें।

१—ओ३म् ऋतावान् ऋतजाता ऋतावृधो घोरासो अनृतद्विषः।
तेषां वः सुम्ने सुच्छर्दिष्टमे नरः स्याम ये च सूरयः॥ ऋग्वेद ७। ६६। १३॥

२—ओ३म् अग्ने व्रतपते व्रतं चरिष्यामि तच्छकेयं तन्मे राध्यताम्।
इदमहमनृतात् सत्यमुपैमि॥ यजुर्वेद १। ५॥

३—ओ३म् इन्द्रं वर्धन्तो अप्तुरः कृण्वन्तो विश्वमार्यम्।
अपघ्नन्तो अराव्णः॥ ऋ० ९। ६३। ५॥

४—ओ३म् उपस्थास्ते अनमीवा अयक्ष्मा अस्मभ्यं सन्तु पृथिवि प्रसूताः।
दीर्घं न आयुः प्रतिबुध्यमाना वयं तुभ्यं बलिहृतः स्याम॥ अथर्ववेद १२। १। ६२॥

आर्यसमाजों के पुरोहित अथवा अन्य कोई वेदज्ञ विद्वान् उपर्युक्त मन्त्रों का तात्पर्य इन शब्दों में पढ़ कर प्रार्थना करायें :—

१—जो विद्वान् सदा सत्य के मार्ग पर चलते हुए सत्य की निरन्तर वृद्धि और असत्य के विरोध में तत्पर रहते हैं, उनके सुखदायक उत्तम आश्रय में हम सब सदा रहें तथा हम भी उनकी तरह मन, वचन और कर्म से पूर्ण सत्यनिष्ठ बनें।

२—हे ज्ञानस्वरूप! सब उत्तम संकल्पों और कर्मों के स्वामी परमेश्वर! हम भी आज से एक उत्तम व्रत ग्रहण करते हैं जिसके पूर्ण करने की शक्ति आप हमें प्रदान करें ताकि उस व्रत के ग्रहण से हमारी सब तरह से उन्नति हो। वह व्रत यह है कि असत्य का सर्वथा परित्याग करके हम सत्य की ही शरण में आते हैं। आप हमें शक्ति दें कि हम अपने जीवनों को पूर्ण सत्यमय बना सकें।

३—हे मनुष्यो! तुम सब आत्मिक शक्ति तथा उत्तम ऐश्वर्य को बढ़ाते हुए श्रमशील बन कर उन्नति में बाधक आलस्य प्रमादादि दुर्गुणों का परित्याग करते हुए सारे संसार को आर्य अर्थात् श्रेष्ठ सदाचारी, धर्मात्मा बनाओ।

४—हे प्रिय मातृभूमे! हम सब तेरे पुत्र और पुत्रियाँ तेरी सेवा में उपस्थित होते हैं। सर्वथा नीरोग, स्वस्थ तथा ज्ञान सम्पन्न होते हुए हम दीर्घायु को प्राप्त हों और तेरी तथा धर्म की रक्षा के लिए आवश्यकता पड़ने पर अपने प्राणों की बलि देने को भी तैयार रहें।

इसके पश्चात् मिलकर निम्नलिखित कविता का गान किया जावे :—

धर्मवीरों के प्रति श्रद्धांजलि

श्रद्धांजलि अर्पण करते हुए, करके उन वीरों का मान।
धार्मिक स्वतन्त्रता पाने को, किया जिन्होंने निज बलिदान॥
परिवारों के सुख को त्यागा, युवक अनेकों वीरों ने।
कष्ट अनेकों सहन किये पर, धर्म न छोड़ा वीरों ने॥
ऐसे सभी धर्म वीरों के, आगे शीश झुकाते हैं।
उनके उत्तम गुण गण को हम निज जीवन में लाते हैं॥
अमर रहेगा नाम जगत् में, इन वीरों का निश्चय से।
उनका स्मरण बनायेगा फिर, वीर जाति को निश्चय से॥
करें कृपा प्रभु आर्य जाति में, कोटि कोटि हों वीर।
धर्म देश हित जो कि खुशी से, प्राणों की आहुति दें वीर॥
जगदीश को साक्षी जानकर, यही प्रतिज्ञा करते हैं।
इन वीरों के चरण चिह्न पर, चलने का व्रत करते हैं॥
सर्वशक्ति दें बल ऐसा, धीर वीर सब आर्य बनें।
पर उपकार परायण निशिदिन, शुभ गुणधारी आर्य बनें॥

(ध० दे०)

❀ धर्मवीर नामावली ❀

श्यामलाल जी महादेव जी राम जी श्री परमानन्द।
माधव राव विष्णु भगवन्ता, श्री स्वामी कल्याणानन्द॥
स्वामी सत्यानन्द महाशय मलखान श्री वेदप्रकाश।
धर्म प्रकाश रामनाथ जी पाण्डुरंग श्री शान्तिप्रकाश॥
पुरुषोत्तम जी ज्ञानी लक्ष्मण राव सुनहरा वेंकट राव।
भक्त अरुड़ा मातूराम जी नन्हूंसिंह जी श्री गोविन्दराव॥
बदनसिंह जी रतीराम जी मान्य सदाशिव ताराचन्द।
श्रीयुत छोटेलाल अशर्फीलाल तथा श्री फकीरचन्द॥
माणिकराव श्री भीमराव जी महादेव श्री अर्जुनसिंह।
सत्यनारायण बैजनाथ ब्रह्मचारी दयानन्द नरसिंह।
राधाकृष्ण सरीखे निर्भय अमर हुए इन वीरों का।
स्मरण करें विजयोत्सव के दिन, सब ही वीरों धीरों का॥

कालीचरण आर्य
मन्त्री
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली

(पृ० २४१ का शेष)

संस्कृत की महिमा

अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन के २६ वें अधिवेशन का २-७-६१ को कलकत्ता नगर में उद्घाटन करते हुए मान्य राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसाद जी ने अपने भाषण में संस्कृत की महत्ता दर्शाते हुए कहा—

"संस्कृत एक भाषा मात्र नहीं और इसका साहित्य कवियों और लेखकों की कृतियों का संग्रह मात्र नहीं। वास्तव में संस्कृत के विशेष महत्व का कारण यह है कि इसमें देश की आत्मा झलकती है। हमारा जीवन हमारा चिन्तन हमारे सामाजिक और धार्मिक अनुष्ठानों की उत्पत्ति और अतीत काल से हमारी सांस्कृतिक परम्पराओं का क्रमिक विकास—ये सभी बातें अगर हमें कहीं देखने को मिलती हैं तो केवल संस्कृत साहित्य में।

—एक प्रकार से संस्कृत का इतिहास कम से कम एक अंश में अन्य भारतीय भाषाओं का इतिहास है। संस्कृत का अध्ययन सदियों तक एक अन्तर्राष्ट्रीय भाषा के रूप में किया गया। प्रायः समस्त मध्य पूर्वी, मध्य एशिया और पड़ौसी नेपाल अफ़गानिस्तान आदि देशों के विश्व-विद्यालयों में संस्कृत पढ़ाई जाती है।

किन्तु हमारे दृष्टिकोण से संस्कृत भाषाओं और साहित्य की सब से बड़ी विशेषता यह है कि उसने समस्त भूखण्ड को जिसमें सहस्रों वर्षों से विभिन्न विचार वाले और विभिन्न बोलियां बोलने वाले लोग रहते आए हैं सांस्कृतिक एकता के सूत्र में बहुत हद तक बांध दिया है।

मानव की दृढ़तम आस्थाएँ, आन्तरिक विश्वास, धारणाएं, तथा संस्कार जिन तत्वों से बने हैं उनकी रचना कई हजार वर्ष पहले संस्कृत के माध्यम से हुई थी और आज भी ठीक वैसी ही बनी है। भारत में संस्कृत का पद एक भाषा का नहीं रहा। वास्तव में वह एक संस्था रही है। एक ऐसी संस्था जो हमारे वैयक्तिक, सामाजिक और राष्ट्रीय जीवन की रूप रेखाओं का निर्माण करती रही है।

सभी का यह मत है कि संस्कृत एक सम्पन्न भाषा है। उसका शब्द-भंडार असीम और अनन्त है और उसके द्वारा आवश्यकतानुसार प्रत्येक विषय के नवीन शब्दों का निर्माण सरलता से हो सकता है।"

संस्कृत की रक्षा देश के कोने २ में गरीब विद्वानों ने की और उसके साहित्य को समृद्ध किया है। उत्तर प्रदेश की राज्य सरकार ने वाराणसी मे और बिहार राज्य सरकार ने दरभंगा में संस्कृत विश्वविद्यालयों की स्थापना की है। कई राज्य सरकारो ने संस्कृत को माध्यमिक स्कूलों में अनिवार्य विषय बनाया है। यह सब सराहनीय है। परन्तु संस्कृत की रक्षा के लिए आवश्यक है कि संस्कृत पाठशालाओं को प्रोत्साहित किया जाय जिनमे गुरु-शिष्य की परम्परा गौरवान्वित रही जिनका वातावरण त्याग और तपस्या के जावन से मण्डित रहा और जिन्होने अनेक ज्ञात और अज्ञात तपस्वी विद्वानों को प्रशिक्षित करने का यश प्राप्त किया जिनके प्रति राष्ट्रपति महोदय ने निम्न शब्दों मे श्रद्धांजलि प्रस्तुत करते हुए उद्घाटन भाषण समाप्त किया—

"एक बार फिर संस्कृत साहित्य के महान् स्तम्भ उन प्राचीन तपस्वी संस्कृत विद्वानों के प्रति जिनकी साधना ने इस अमूल्य निधि (संस्कृत) की महान् संक्रमण कालों में भी रक्षा की है, श्रद्धा व्यक्त करते हुए मैं इन शब्दों के साथ सम्मेलन के इस २६ वे अधिवेशन का उद्घाटन करता हूं।"

दहेज विधेयक

भारत सरकार के गजट मे प्रकाशित घोषणा के अनुसार 'दहेज निषेध' कानून १ जुलाई १९६१ से प्रचलित हो गया है।

यह कानून जम्मू और काश्मीर को छोडकर समस्त भारत मे व्यवहृत होगा। २०-५-६१ को इस पर राष्ट्रपति महोदय की स्वीकृति प्राप्त की गई।

१-७-६१ से दहेज का देना, लेना और मांगना कानूनन दडनीय होगा। कानून का उल्लंघन करने वाले को ६ मास तक की कैद या ५००० तक का जुर्माना वा दोनों ही दंड दिये जा सकते हैं।

राज्य सरकार वा ऐसे व्यक्ति की जिसे राज्य सरकार अधिकृत करे, पूर्व स्वीकृति के बिना कोई भी न्यायालय दहेज मांगने के अपराध के मामलो को हाथ मे नही ले सकता।

माननीय राष्ट्रपति डा० राजेन्द्रप्रसादजी की समवेदना

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री बा० कालीचरण जी के नाम पत्र

राष्ट्रपति को पर्सनल सेक्रेटरी राष्ट्रपति भवन

२५-७-६१ ई०

प्रिय महोदय,

आपका दिनाक १७ जुलाई १९६१ का पत्र यथा समय मिल गया था जिसमे आपने स्वामी अभेदानन्द जी के दुःखद निधन का समाचार दिया था। समाचार मिलते ही इसकी सूचना पूज्य राष्ट्रपति जी को दे दी थी। स्वामी जी के स्वर्गवास का दुःखद समाचार जानकर उन्हे बहुत दुःख हुआ। स्वतन्त्रता आन्दोलन के समय वे उनके काफी समय तक साथी रहे यह राष्ट्रपति जी को अच्छी तरह स्मरण है। दिवंगत आत्मा के प्रति उन्होने श्रद्धांजलि प्रकट की है।

ज्ञानवती दरबार

दहेज-विरोधी लोक-मत के जागरण के लिए आर्य नर-नारियों और आर्य समाजों को विशेष प्रयत्न करना चाहिए और आवश्यक होने पर ही कानून का सहारा लेना चाहिए। आर्य समाज के प्रचार की विशेषता यह होनी चाहिए कि कानून का कम से कम आश्रय वा बिना आश्रय लिए ही दहेज-प्रथा के उन्मूलन की अवस्थाएँ उत्पन्न हो जाएँ। उन्हें यह भी ध्यान रखना होगा कि इस कानून पर निर्दोष व्यक्तियों की बलि न चढ़ाई जाय क्योकि बहुधा इस प्रकार के कानून मकडी के जालों के सदृश होते हैं जिसमे छोटे और दुर्बल तो फंस जाते हैं और बलवान एवं धनवान जालो को ही तोडकर उन्हें निकम्मा बना देते हैं। आर्यो ने स्वयं इस दिशा में अच्छे आदर्श उपस्थित किए है उन्हे इन आदर्शों मे वृद्धि करते रहना चाहिए। प्रचार और आदर्श के द्वारा जिस वस्तु की उपलब्धि हो सकती है उसके लिए कानून का सहारा लेना शोभाजनक नही होता।

रघुनाथ प्रसाद पाठक

(पृ० २४४ का शेष)

परमात्मा की इच्छा के सामने नतमस्तक हुए। हमारी सब आशाओं पर पानी फिर गया। मोरीशस का आर्य समाज सूना हो गया। समाज और जनता की भलाई के लिए स्वामी जी ने अनेक योजनाएँ तैयार की हुई थीं। सब बेकार रह गई। आगे क्या होगा कुछ समझ मे नही आता। इस परिस्थिति मे केवल ईश्वर का ही भरोसा है। हम सबसे क्या हो सकता है। ? हम बिल्कुल हताश हैं। मालूम होता है कि जिस आशा से हमने बाग लगाया था वह हमेशा के लिए मिट गया।

आपको सार्वदेशिक सभा को एवं दुःखी परिवार को हम सहानुभूति अर्पण करते हैं,

श्री मोहनलाल मोहित १८-७-६१ सेंन्टपियरे

१७-७-६१ को अन्त्येष्टि क्रिया हुई। स्वामीजी के शव के लगभग समतुल्य भाग घृत सामग्री का प्रबन्ध सभा ने किया।

शव-यात्रा आश्रम से चली। आर्य सभा के भवन और भारतीय राजदूत भवन के द्वार पर एक-एक मिनिट ठहरी। श्री किदवई राजदूत ने पुष्प माला भेंट की। आश्रम से श्मसान तक दस बारह पंडित स्वस्ति, शान्ति प्रकरण का मन्त्र पाठ करते रहे। मोरीशस के कोने-कोने से १५ हजार के लगभग नर-नारी शव-यात्रा में शामिल थे।

श्री रामकृत जगेसर बोवाकई १८-७-६१

१५ हजार से अधिक संख्या मे आर्य गण टापू के चारों कोनों से आकर पग-पग पर अर्थी को कंधा लगाए और श्मसान भूमि तक रोते बिलखते गये।

सर्वत्र शोक छाया हुआ है। स्वामी जी ने यहाँ पर दिलोजान से समाज सेवा की।

श्रद्धाञ्जलियाँ

श्री पं० बिहारीलालशास्त्री

श्री स्वामी जी सदा को ही बिछुड़ गए शोक। उन जैसे कर्मठ, बहुश्रुत तथा धर्म प्रचार की लगन रखने वाले और निरभिमान व्यक्ति कम मिलेंगे। समाज की बहुत बडी क्षति हुई।

श्री प० नरेन्द्रजी मन्त्री आ० प्र० सभा मध्य दक्षिण (हैदराबाद)

स्वामीजी की मृत्यु का समाचार सुनकर हृदय को बड़ा ही आघात पहुचा। स्वामी जी के निधन से आर्य जगत की अपार क्षति हुई है। स्वामी जी का आदर्श जीवन तथा धर्म-प्रचार-उत्साह आर्य जगत के लिए अनुकरणीय है।

आचार्य रामानन्दशास्त्री (बिहार)

सार्वदेशिक सभा के तार द्वारा बिहार सभा को परम पूजनीय स्वामी अभेदानन्दजी की मृत्यु का समाचार मिला। सारा बिहार -शोक-सागर में निमग्न हो गया। धार्मिक, राजनैतिक, सामाजिक और शैक्षणिक संस्थाओं में स्वामीजी की मृत्यु से यही आवाज आती है कि बिहार के सार्वजनिक क्षेत्र का एक महान् व्यक्तित्व चला गया।

श्री प्रकाशवीर शास्त्री प्रधान आ० प्र० सभा उत्तर प्रदेश

आर्य समाज ने जो सामाजिक क्रान्ति के लिए समय-समय पर बड़े आन्दोलन चलाए हैं उनमें स्वामी अभेदानन्दजी का अपना प्रमुख स्थान रहा है। आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश स्वामीजी के आकस्मिक निधन को आर्य समाज की एक बहुत बड़ी पूरी न हो सकने वाली क्षति समझती है।

श्री प्रेमचन्द्र शर्मा मन्त्री आ० प्र० सभा उत्तर प्रदेश

स्वामी जी महान् विद्वान् ओजस्वी वक्ता और मधुर-भाषी थे। हैदराबाद के सत्याग्रह में ५वें अधिनायक के रूप में और सार्वदेशिक सभा के प्रधान के रूप में उन्होंने हिन्दी-रक्षा आन्दोलन का सफल नेतृत्व किया था। स्वामी जी आर्य समाज के महान् संन्यासी थे।

श्री ला० रामगोपाल जी शालवाले

स्वामी जी का जीवन त्याग और तपस्या का प्रतीक था। वह सार्वदेशिक सभा के प्रधान रहे। उनकी ही प्रधानता में हिन्दी आन्दोलन का सफल संचालन हुआ था। उनके निधन से आर्य समाज की महती क्षति हुई है।

श्री जगदेवसिंह जी सिद्धान्ती

वैदिक धर्म प्रचार की धुन स्वामी जी के जीवन का मुख्य अंग थी। वे उच्च स्थिति के उपदेशक रहे। स्वामी जी आर्य समाज के प्रौढ विद्वान् संन्यासी थे। स्वामी जी निरन्तर २ वर्ष तक सार्वदेशिक सभा के प्रधान रहे। स्वामी जी के निधन से आर्य जगत् की महती क्षति हुई है।

श्री रघुवीरसिंह जी शास्त्री

श्री स्वामी अभेदानन्द जी महाराज बड़े विद्वान् निरभिमानी और सरल प्रकृति के महानुभाव थे। सार्वदेशिक सभा के प्रधान पद से मुक्त होने पर उन्होंने सभा के अधिकारियों को अपना मुक्त सहयोग दिया। वे दिल्ली में दयानन्द भवन में ही रहते थे। हम उनके सद् परामर्श और मार्ग-प्रदर्शन से लाभ उठाते थे। सचमुच स्वामी जी का हृदय बड़ा उदार था। उनके निधन से ऐसा लगता है मानो हमारी कोई मूल्यवान् वस्तु हमसे छीन ली गई है।

श्री म० कृष्णजी

स्वामी जी के निधन से निस्सन्देह उच्च कोटि का एक और संन्यासी चल बसा है। वह वास्तव में साधु थे, मस्त मौला न किसी से ईर्ष्या न द्वेष। उनके निधन से आर्य समाज की कभी पूरी न होने वाली क्षति हुई है।

श्री बा० पूर्णचन्द्र जी ऐडवोकेट

श्री पूज्य स्वामी अभेदानन्द जी के निधन का समाचार जानकर बड़ा दुःख हुआ। उनके निधन से आर्य जगत् की महान् क्षति हुई है।

—०:*:०—

श्री स्वामी अभेदानन्द जी की स्मृति में श्रद्धांजलि

दिनांक १८-७-६१ को सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा के तार द्वारा बिहार सभा को परम पूजनीय स्वामी अभेदानन्द जी की मृत्यु का समाचार मिला। सारा बिहार शोक सागर में निमग्न हो गया। धार्मिक, राजनैतिक, सामाजिक एवं शैक्षणिक सस्थाओं में स्वामी जी की मृत्यु से यही आवाज आती थी कि बिहार के सार्वजनिक क्षेत्र का एक महान् व्यक्तित्व चला गया।

स्वामी अभेदानन्द, विद्वान्, तपस्वी, कर्मठ, उदार, वाग्मी एवं महान् प्रतिभाशाली आर्य संन्यासी थे। यद्यपि उनका जन्म स्थान बस्ती जिला (उत्तरप्रदेश) था। किंतु उन्होंने अपना कार्य-क्षेत्र बिहार को बनाया। बिहार मे जो आर्य समाज का क्रिया-कलाप दिखाई पड़ रहा है, वह उस अदम्य उत्साही प्रतिभा सम्पन्न संन्यासी की अविरत तपस्या का फल है।

स्वामी अभेदानन्द ज्ञान के आगार तथा चलते-फिरते इनसाइक्लोपिडिया थे। उनका अधिकार अंग्रेजी, संस्कृत, उर्दू और फारसी पर विशेष था। वे भारत की राज्यभाषायें बंगला एवं अनेक क्षेत्रीय भाषायें बोलते थे तथा उन भाषाओं में ऋषि दयानन्द के संदेश को सुनाते थे। स्वामी जी प्राचीन ऋषि मुनि महात्माओं के समान जीवन व्यतीत करते थे। मुझे स्वामी जी के साथ २० वर्षों तक रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। स्वामी जी

पुत्रैषणा एवं लौकैषणा से बिलकुल मुक्त थे। उनके भाइयों की मृत्यु समाचार मेरे सामने आया, उन्हीं भाइयों पर उनके पुत्र कृष्णचन्द एवं गिरीशचन्द के पालन का भार था, किन्तु स्वामी जी के उदात्त चेहरे पर सिकन भी नहीं आया उन्होंने इसे साधारण घटना कह कर टाल दिया। मैंने अपने जीवन में ऐसा चट्टान के समान पुरुष नहीं देखा है।

स्वामीजी ने ४० वर्षों तक देश की सेवा की है किन्तु कहीं पर उन्होंने आश्रम नहीं बनाया। वे कहा करते थे कि आर्य समाजें ही हमारा आश्रम है। उनका जीवन मार्क्स के समान था, वे पैसे को सिकता तथा ठिकरी से बदतर समझते थे। जब कभी पास में पैसा आया कि गरीबों, दीनों और विद्यार्थियों में बांट दिया जाता था दूसरे दिन एक पैसा चाय के लिए भी नहीं रहता था। स्वामी जी के बाद उनका एक पैसा भी कहीं पर सुरक्षित नहीं है न कहीं बक्सा अलावा ट्रंक, कुछ पुस्तकें अवश्य हैं। वे सार्वजनिक पैसे को बड़ा महत्व देते थे। आज हजारों जन स्वामी जी कीं मृत्यु पर निःससहाय है। स्वामी जी वैदिक आदर्शों के प्रतीक थे। उन्होंने किसी धर्मावलम्बी अथवा किसी आदमी को अपनी वाणी से असंतुष्ट नहीं किया, इस लिए उनसे ईसाई मुसलमान, सनातनधर्मी सब प्रभावित थे। उन्होंने अपने व्याख्यानोंसे लाखोंको हरा दिया।

स्वामीजी ने देश तथा आर्य समाज के लिए जेल की भी यात्रा की। वे कोई पुस्तक नहीं लिख गये लेकिन उनसे शिक्षा लेकर सैकड़ों पुस्तकें लिखी गयी हैं। बिहार वैदिक अरण्य का केसरी दूर देश में जाकर अपने निर्घोष से नैरोबी और मोरिशस को गुंजित कर महा प्रयाण कर गया। आज बिहार सूना है। हम बिहार के आर्यसमाजी नेता विहीन निस्तेज हैं। भगवान् हमें शक्ति दे। स्वामी जी के जीवन के सम्बन्ध में निम्नलिखित श्लोक हैं:—

बस्तीमण्डले शुभ्रे, ख्यातो धोवखरा तत्र।
बहोः कालाद् द्विजास्तत्र, निवासं खलु चक्रिरे ॥ १ ॥
निष्णाताः सर्वं शास्त्रेषु धनाढ्याः धर्मचारिणः।
सरस्वत्याश्च लक्ष्म्याश्च सरित् तत्र प्रवाहिता ॥ २ ॥
तेषु विप्रवरिष्ठेषु गोत्रं सर्वाणि वर्णितम्।
अभवद् इन्द्रदत्तो हि द्विजः कश्चिदुदार धीः ॥ ३ ॥

तदीया पतिव्रता भार्या कुलीना धर्मतत्परा ।
जनयामास वै पुत्रान् त्रीन् देवान् इव विश्रुतान् ॥ ४ ॥

समुद्र इव गाम्भीर्ये राम इव उदारधीः ।
रामसमुद्र नाम्ना स यून आयुरवाप्तवान् ॥ ५ ॥

वेदे निष्ठां विशेषेण ज्ञात्वा तस्य च सज्जनाः ।
सज्ञां वेदव्रतं नूनम्, ददुः तस्मै महात्मने ॥ ६ ॥

नगरे पत्तने ग्रामे कष्टं सोढ्वा स वेदधीः ।
दयानन्दस्य ब्रह्मर्षेः संदेशमदिशत् दिशि ॥ ७ ॥

संस्कृतमांग्लभाषां च पारसीमारवीं तथा ।
इतिहासं धर्मशास्त्रं च वै नीतिशास्त्रं च ज्ञातवान् ॥ ८ ॥

समाप्य वानप्रस्थ च स सन्यासमाप्तवान् ।
अभेदानन्द नाम्ना वै लोके कीर्ति च प्राप्तवान् ॥ ६ ॥

रामानन्दः शास्त्री
उप-प्रधान,
आर्यप्रतिनिधि, सभा, बिहार राज्य
पटना ।

आर्य वीरों से अनुरोध

कई वर्षों तक वैदिक धर्म प्रचारार्थ विदेशों में रहने के पश्चात् मैं भारत आया। यहां आते ही आर्य जगत् की वर्तमान स्थिति को देखते हुए अस्वस्थ अवस्था में भी मैंने सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पद का भारी भार अपने ऊपर ले लिया।

सारी स्थिति का अध्ययन करने के पश्चात् मुझे ज्ञात हुआ कि सभा के साथ कुछ विचार भेद होने के कारण कितने ही नवयुवक सघटन से पृथक् हो गए हैं और उन्होने अन्तर्राष्ट्रीय आर्य वीरदल नामक अलग सघटन बना लिया है।

मैं सदैव से ही इस बात का समर्थक रहा हूँ कि आर्य समाज की सभी संस्थाओं को आर्य समाज के अनुशासन मे रहना चाहिए। इसी नाते में ऐसे सभी नवयुवकों और मुख्यतः अन्तर्राष्ट्रीय आर्य वीरदल के संचालकों से निवेदन करता हूँ कि वे आर्य समाज के हितार्थ अपने उक्त सगठन को समाप्त कर पूर्ववत् सार्वदेशिक आर्य वीरदल के अंग बन जायें।

सभा की आर्य वीरदल सम्बन्धी नीति के विषय मे उनका जो विचार भेद होगा उस पर मैं गंभीरता पूर्वक विचार करूंगा और दल को सुदृढ़ बनाने के निमित्त जो भी सुझाव वे देंगे उन पर सहानुभूति पूर्वक विचार किया जायगा।

स्वामी ध्रुवानन्द सरस्वती
प्रधान

दीक्षाशताब्दी सार्वदेशिक विशेषांक

के अद्भुत लेख

जिस में दो चित्र भी हैं—

गुरु विरजानन्द दण्डी का असली चित्र अलवर नरेश का बनवाया तथा
महर्षि दयानन्द सरस्वती का अत्याकर्षक चित्र चार रंगों में
मूल्य डाकव्यय सहित १।) मात्र

कुछ ही प्रतियां शेष हैं।

इस विशेषाङ्क में कई महत्त्वपूर्ण लेख हैं जो अन्यत्र नहीं छपे हैं—

१. डा० रघुवीर एम० ए० डी लिट् एम पी० का लेख—

भारतीय संस्कृति का विश्व में प्रसार

इस में विदेशों से प्राप्त १४ चित्र ब्लाक बनाकर छापे गये जिसके द्वारा यह दर्शाया गया कि भारत की संस्कृति किन-किन देशों मे किस-किस रूप में विद्यमान है बहुत विस्तृत वर्णन डाक्टर रघुवीर ने दिया है।

२. महात्मा आनन्दस्वामी जी का लेख—

'परम योगी देव दयानन्द की योग साधना'

इस लेख में आनन्द स्वामी जी ने यह दर्शाया है कि ऋषि दयानन्द योगाभ्यास सीखते-सीखते किन पहाड़ों बीहड़ जंगलों योगाश्रमों में योग सीखने चले गये और कहाँ-कहाँ किन योगियों से योग सीखा। यह अद्भुत रिकार्ड ऋषि की योग साधना का है जो आनन्दस्वामी जी ने स्वयं उन पर्वतों पर घूम कर प्राप्त किया है।

३. पं० भीमसेन शास्त्री एम० ए० का लेख—

ऋषि के सम्पूर्ण जीवन की तारीखें घटनाओं सहित

यह भी एक अच्छा संग्रह है जो अत्यन्त उपयोगी है।

४. रामगोपाल बी० एस० सी० भाषा विशेषज्ञ का लेख—

"विश्वभाषाओं का आदि स्रोत वैदिक संस्कृति"

इस लेख में संसार की भाषाओं की संस्कृत से तुलना है सब भाषाओं के उदाहरण इस लेख में हैं।

इसी प्रकार सब अति महत्त्वपूर्ण हैं उनकी सूची इस प्रकार है—

१. वेदमन्त्रों की आर्ष व्याख्या अन्य टीकाओं की समालोचना सहित—आचार्य विश्वश्रवाः
२. सदाचार—दयानन्द बी० ए०
३. परमयोगी दयानन्द की योग साधना—महात्मा आनन्दस्वामी
४. लौंगे लवङ्ग (कविता)—रविदत्त जी
५. दयानन्द का महत्त्व—बा० पूर्णचन्द्र एडवोकेट
६. आर्षसंपदा—रमेशचन्द्र शास्त्री
७. वेदों का पुनरुद्धार—पं० गंगा प्रसाद एम० ए०
८. महर्षि दयानन्द सरस्वती—भीमसेन शास्त्री
९. दर्शन मे दयानन्द की देन—पं० उदयवीर शास्त्री
१०. ऋषि जीवन के कुछ अप्रकाशित वृत्त—ठाकुर अमर सिंह जी
११. ऋषि के नाम पर क्या और क्या नहीं—आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री
१२. दयानन्द दीक्षा का मतमतान्तरों पर प्रभाव—पं० धर्मदेव जी
१३. ऋषि का हस्तलिखित पत्र ब्लाक चित्र—
१४. मानमर्दन (नाटक)—लीलावती प्रभाकर
१५. भगवान् विरजानन्द और दयानन्द—पं० भीमसेन शास्त्री
१६. विश्वभाषाओं का आदि स्रोत—रामगोपाल बी० एस० सी०
१७. वैदिकवृष्टि विज्ञान—पं० वीरसेन जी वेदश्रमी
१८. भारतीय संस्कृति का विश्व में प्रसार—डाक्टर रघुवीर
१९. प्राचीन और नवीन वेद भाष्यकार—श्रीमती देवी वेदाचार्या
२०. विरजानन्द और दयानन्दर्षि की मुख्य-मुख्य तिथियाँ—भीमसेन शास्त्री
२१. परमेश्वर का नाम ओ३म् सर्वोत्तम क्यों—डाक्टर सत्यकाम भारद्वाज
२२. महर्षि दयानन्द आर्यसमाज और हमारा कर्तव्य—वेदश्रवाः
२३—अपनों से अपनी बात—आचार्य राजेन्द्रनाथ
२४—रामायण महाभारतकाल में वेदाङ्गों की पढ़ाई—आचार्य राजेन्द्रनाथ

सार्वदेशिक सभा पुस्तक भण्डार की

पुस्तकों का सूची-पत्र

निम्न प्रकाशन नेट मूल्य पर दिये जायेंगे ।

१. सत्यार्थ प्रकाश	२।)
२. सिन्धी सत्यार्थप्रकाश	१)२०
३. कन्नड़ सत्यार्थप्रकाश	३।)
४. मराठी सत्यार्थप्रकाश	१।=)
५. वैदिक ज्योति	५।)
६. पञ्च महायज्ञ विधि भाष्यम्	५)

निम्न पुस्तकों पर निम्न प्रकार कमीशन दिया जायेगा ।

१०) से २५) रु० तक १२॥%
२५) से ऊपर २५०) तक २०%
२५०) से ऊपर १०००) तक २५%
१०००) से ऊपर २०००) तक ३० ,,
२०००) से ऊपर ३३%

श्री स्वामी ब्रह्ममुनि कृत ।

१. यम पितृ परिचय	२)
२. वैदिक ज्योतिष शास्त्र	१॥)
३. वैदिक राष्ट्रीयता	।)
४. वैदिक ईशवन्दना	।=)॥
५. वैदिक योगामृत	॥=)
६. दयानन्द दिग्दर्शन	॥।)
७. वेदों में दो बड़ी वैज्ञानिक शक्तियां	॥।)
८. वैदिक वन्दन	५)
९. बृहत् विमान शास्त्र सजिल्द	७॥)
१०. बाल जीवन सोपान ,,	१॥=)
११. छान्दोग्य उपनिषद् कथा	३)
१२. दार्शनिक अध्यात्म तत्व	१॥)
१३. वेदान्त दर्शनम् (संस्कृत में)	३)

श्री महा० नारायण स्वामी कृत ।

१४. कर्त्तव्य दर्पण	१)
१५. योग रहस्य	१।)
१६. मृत्यु और परलोक	१।)
१७. विद्यार्थी जीवन रहस्य	॥=)
१८. प्राणायाम विधि	≥)
१९. उपनिषदें :—	
केन ॥) कठ ॥) प्रश्न ।=) मुण्डक ।≥)	
माण्डूक्य ।) एतरेय ।) तैत्तिरीय १)	
२०. बृहदारण्यकोपनिषद्	३)

श्री पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय कृत

२१. आर्योदय काव्यम् पूर्वार्द्ध	१॥)
उत्तरार्द्ध	१॥)

२२. वैदिक संस्कृति १।)
२३. मुक्ति से पुनरावृत्ति ।=)
२४. आर्यसमाज और सनातनधर्म ।=)
२५. आर्य समाज की नीति ।=)

श्री पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति कृत

२६. आर्य समाज का इतिहास सजिल्द
(प्रथम भाग) ४)
(दूसरा भाग) ५)

श्री रघुनाथप्रसादजी पाठक कृत

२७. आर्य जीवन गृहस्थधर्म ।।=)
२८. कथा माला ।।।)
२९. सन्तति निग्रह १।)
३०. नया संसार ≡)
३१. आदर्श गुरु शिष्य ।-)

श्री पं० धर्मदेवजी विद्यामार्तण्ड कृत

३२. स्त्रियों का वेदाध्ययन अधिकार १।)
३३. भक्ति कुसुमाञ्जली ।।)
३४. हमारी राष्ट्रभाषा व लिपि ।-)
३५. महापुरुष कीर्तनम् २)

श्री स्वामी स्वतंत्रानन्द कृत

३६. आर्यसमाज के महाधन २।।)
३७. वेद की इयत्ता १।।)

श्री लाला ज्ञानचन्द कृत

३८. धर्म और उसकी आवश्यकता १।)
३९. वर्ण व्यवस्था का वैदिक रूप १।।)
४०. इजहारे हकीकत (उर्दू में) ।।।=)
४१. सत्यार्थप्रकाश नया संस्करण
(बढ़िया कागज व छपाई) मूल्य २)५०

पं० मदन मोहन विद्यासागर कृत

४२. जन कल्याण का मूल मन्त्र ।।)
४३. संस्कार महत्व ।।।)
४४. वेदों की अन्तःसाक्षी का महत्व ।।=)
४५. आर्य घोष ।।)
४६. आर्य स्तोत्र ।।)

अन्य विद्वानों कृत

४७. स्वाध्याय संदोह (स्वा० वेदानन्द तीर्थ) ४)
४८. स्वराज्य दर्शन (पं० लक्ष्मीदत्त दीक्षित) १)
४९. राजधर्म (महर्षि दयानन्द सरस्वती) ।।)
५०. भूमिका प्रकाश (संस्कृत मे)
(पं० द्विजेन्द्रनाथ शास्त्री) १।।)
५१. एशिया का वेनिस (स्वा० सदानन्द) ।।।)
५२. दयानन्द सिद्धान्त भास्कर
(श्री कृष्णचन्द्र विरमानी) १।।)
५३. भजन भास्कर (संग्रहकर्ता पं० हरिशंकर)
शर्मा कविरत्न) ५)
५४. सनातन शुद्धिशास्त्र (गोविन्द प्रकाश शास्त्री) २)
५५. आर्य डाइरेक्टरी पुरानी १।)
५६. सार्वदेशिक सभा का २७ वर्षीय कार्य
विवरण अजिल्द २)
६०. आर्य पर्व पद्धति (पं० भवानीप्रसाद कृत) १।)

पं० राजेन्द्र (अतरौली) कृत

६१. पूर्वजन्म स्मृति ।=)
६२. ऋषि दयानन्द के पुण्य संस्मरण १.३७
६३. गीता विमर्श ।।।)

ईसाई प्रचार निरोध साहित्य

६४. ईसाई षड्यन्त्र ।)

आर्य समाज की उन्नति के उपाय

(१) प्रत्येक आर्य सभा सद के पास चारों वेदों के शतक, आर्याभिविनय सत्यार्थ प्रकाश आदि अपने २ होने चाहिए, साप्ताहिक सत्संग में बारी २ पुस्तकों का पाठ होना चाहिए सभासदों को आगामी सूचना के अनुसार उसी पुस्तक को साथ लाना चाहिए। इससे स्वाध्याय करने की प्रवृति आती है।

(२) संध्या प्रार्थना, प्रवचन इत्यादि मे रुचि पैदा करने के लिए प्रत्येक सदस्य को बारी बारी वेदी पर लाने का प्रयत्न करना चाहिए।

(३) प्रत्येक समाज का अपना ३×६ फुट का सूचना पट होना चाहिए। २ फुट स्थान पर दैनिक व साप्ताहिक सत्संग की सूचना आदि अंकित होनी चाहिए २ फुट पर विशेष सूचना और बाकी २ फुट स्थान पर विज्ञापन लगाने के लिए होना चाहिए। दूसरी समाजों से आई सूचना और विज्ञापन भी अवश्य लगाना चाहिए। इससे संगठन का सबूत मिलता है।

(४) आर्य समाज का लक्ष्य हमेशा हमारे सम्मुख रहे। इस से कार्य करने में प्रेरणा मिलती है। इस वास्ते एक बोर्ड जैसे स्कूलों में होता है और दीवार में या तीन टांगों वाले स्टैंड के सहारे खड़ा किया जाता है वैसे ही सत्संग स्थान में चाहे समाज मन्दिर में हो चाहे बाहर किसी जगह निम्नलिखित कविता का बोर्ड जनता की ओर मुख करके लगाना चाहिए।

आर्य समाज का लक्ष

सब वेद पढ़ें सुविचार बढ़ें बल पाय चढ़े नित ऊपर को।
ध्रुव धर्म धरें पर दुख हरें, तन त्याग तरें भवसागर को।।
अविरुद्ध रहे ऋजु पंथ गहें परिवार कहें वसुधा भर को।
दिन फेर पिता बर दे सविता फिर आर्य करे जगती भर को।

ऐसे बोर्ड से साधारण जनता को भी आर्य समाज के लक्ष्य से जानकारी होती है।

(५) प्रत्येक मंगलवार को बारी-बारी नगर के विभिन्न भागों मे सायंकाल को वेद प्रचार की दृष्टि से सत्संग लगाना चाहिए, इसमे समाप्ति पर ज्ञान रूपी प्रसाद, ट्रैक्ट जनता में वितरित करना चाहिए जिससे आर्य समाज के बारे मे साधारण जनता को जानकारी हो सके।

(६) दीवाली, शिवरात्रि, जन्म अष्टमी, रामनवमीं इत्यादि पर्व बनाते हुए पर्व सम्बन्धी ट्रैक्ट जनता में बाँटने चाहिए।

(७) साप्ताहिक सत्संग आत्मिक उन्नति व सामाजिक उन्नति या शक्ति का परिचायक हैं इस लिए सत्संग मे दारियों के स्थान पर टाट बिछाने चाहिए जहाँ हम अपने आपको एक विद्यार्थी समझकर लाइन मे बठे और इस तरह लाइन मे बैठने से जहाँ डिसिप्लिन होता है वहाँ एकता की भावना भी जागृत होती है।

(७) वार्षिक उत्सवों पर ऐसे-ऐसे विषयो पर सम्मेलन रखने चाहिये जिसमें अन्य धर्मावलम्बियों को भी निमंत्रित किया जा सके।

(९) पोप लीला व भ्रमात्मक विचारों का निराकरण भी करना चाहिए जैसे आपके शहर में निरंकारीमत ब्रह्मकुमारी मत या आनन्दपुरी मत का प्रचार जिन का साधन जनता को लूटना गुलाम बनाना और सदाचार से गिराना है उनके खिलाफ़ जनता को सचेत किया जावे और जैसे आजकल आम जनता में विचार है कि १९६२ में ९ ग्रह होंगे बड़ा अनिष्ट होगा, ऐसे विचारों का भी विज्ञापन द्वारा निराकरण करना चाहिए जिससे जनता भ्रम में न रहे। ×

स्वर्ण जयन्ती के विशिष्ट उपहार

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने स्वर्ण जयन्ती और आर्य महासम्मेलन के पुण्य अवसर पर निम्नलिखित ७ अलभ्य पुस्तकें प्रकाशित की हैं —

(१) सार्वदेशिक सभा का ५२ वर्षीय संक्षिप्त इतिहास

इस पुस्तक मे सभा के जन्म-काल से लेकर १९६० तक की प्रमुख २ भी प्रगतियो का तथ्यपूर्ण संक्षिप्त विवरण दिया गया है जिससे न केवल सभा के ही अपितु आर्य समाज के शृंखलाबद्ध इतिहास का सहज ही परिज्ञान हो जाता है।

मूल्य ७५ नये पैसे।

(२) सार्वदेशिक सभा के निर्णय

इस पुस्तक मे सभा की स्थापनाकाल अर्थात् १९०८ से लेकर १९६० तक के वे सभी महत्वपूर्ण निर्णय दिए गए हैं, जिनको जानना प्रत्येक आर्य सभासद् के लिए अनिवार्य है। निस्सन्देह इस में आर्यजनों और आर्य समाजो के पथ-प्रदर्शन के लिए अलभ्य प्रचुर सामग्री विद्यमान है।

मूल्य लागत मात्र ४५ नये पैसे।

(३) आर्य महासम्मेलनों के प्रस्ताव

इस संग्रह मे आर्य महासम्मेलनो के समस्त प्रस्ताव अंकित हैं। प्रत्येक सम्मेलन के स्थान, समय और प्रधान आदि के उल्लेख के साथ साथ उसकी पृष्ठ भूमि भी लिखदी गई है। इस प्रकार यह संग्रह बडा उपयोगी बन गया है। पृष्ठ १२१ मूल्य ६० नये पैसे।

(४) आर्य महासम्मेलनों के अध्यक्षीय भाषण

इस समय तक आर्य महासम्मेलनो के ९ अधिवेशन हुए हैं। इस पुस्तक मे समस्त अध्यक्षीय भाषण अंकित हैं। प्रत्येक सम्मेलन के अध्यक्ष का चित्र और संक्षिप्त जीवन-परिचय भी दे दिया गया है। यतः सभी अध्यक्ष आर्य समाज और देश के सार्वजनिक जीवन मे उच्च और

विशिष्ट स्थान रखते हैं अतः उनके भाषण मार्गदर्शन युक्त प्रचुर एवं वरिष्ठ सामग्री से ओत-प्रोत है। लगभग २०० पृष्ठ की पुस्तक का मूल्य १) रु०।

(५) आर्य समाज परिचय

इस पुस्तक मे आर्य समाज के जानने योग्य सभी सामग्री एकत्र की गई है। पुस्तक में महर्षि दयानन्द, सचित्र दयानन्द, दयानन्द भवन, बलिदान भवन सार्वदेशिक सभा के प्रथम कार्यालय, सभा के प्रधानों आर्य महासम्मेलनों के अध्यक्षों हैदराबाद के हुतात्माओं, वैदिक तरु, ओ३म् ध्वज, आर्य मन्दिर आदि के अनेक चित्र दिए गए हैं। पुस्तक आर्ट पेपर पर छपी है। आकार प्रकार अत्यन्त भव्य और आकर्षक।

मूल्य लागत मात्र १)

(६) पाथ आव् परफेक्शन

यह पुस्तक अंग्रेजी मे प्रकाशित की गई है जिसमे चरित्र-निर्माण और भ्रष्टाचार निरोधक अलभ्य सामग्री उपलब्ध होती है। इसके लेखक सभा के भूतपूर्व प्रधान श्री बा० पूर्णचन्द्र जी एडवोकेट हैं।

मूल्य ४० नये पैसे।

(७) यज्ञपद्धति

इस पुस्तक मे धर्मार्य सभा द्वारा स्वीकृत और प्रचारित यज्ञ, तथा साप्ताहिक सत्संग आदि ५ ... लए दी गई हैं। इस पुस्तक की गत ३ वर्ष से अ प्रतीक्षा की जा रही थी।

मूल्य ५० नये

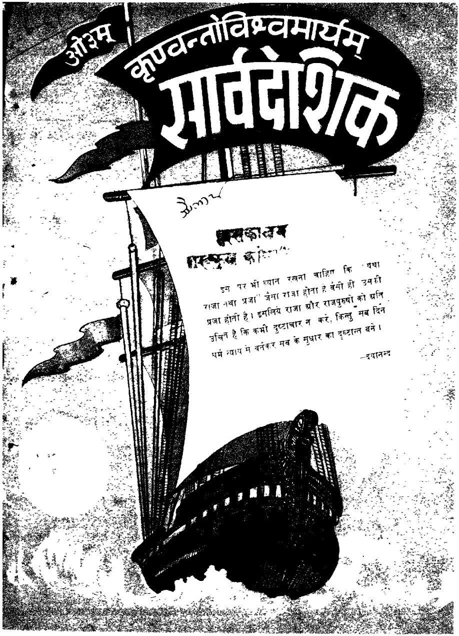
यह सभी पुस्तकें आकार प्रकार छपाई कागज आदि की दृष्टि से भी आकर्षक एवं उत्तम हैं। प्रत्येक आर्य सभासद के पास और आर्य समाज में अवश्य रहनी चाहिएं।

आर्य जनों और आर्य समाजों को आर्डर भेजने में शीघ्रता करनी चाहिए।

मिलने का पता :—

सार्वदेशिक सभा पुस्तक भन्डार, दयानन्द भवन, नई दिल्ली-१

सम्राट् प्रेस, पहाड़ी धीरज, दिल्ली में मुद्रित व रघुनाथ प्रसाद जी पाठक मुद्रक और प्रकाशक के लिये सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द भवन, नई दिल्ली-१ से प्रकाशित।


ओ३म्
कृण्वन्तोविश्वमार्यम्
सार्वदेशिक
इस पर भी ध्यान रखना चाहिए कि "यथा राजा तथा प्रजा" जैसा राजा होता है वैसी ही उसकी प्रजा होती है। इसलिये राजा और राजपुरुषों को अति उचित है कि कभी दुष्टाचार न करें, किन्तु सब दिन धर्म न्याय से वर्तकर सब के सुधार का दृष्टान्त बनें।
—दयानन्द

॥ ओ३म् ॥

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

वार्षिक मूल्य ६) विदेश में वार्षिक ८) या १२ शिलिंग

वर्ष ३७] सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०६० जौलाई १९६१ असाढ़ २०१८ अंक ५

विषय-सूची

★ सम्पादक
काली चरण आर्य सभा मन्त्री

★ सहायक सम्पादक
रघुनाथप्रसाद पाठक

★ प्रकाशक व मुद्रक
रघुनाथप्रसाद पाठक

★ कार्यालय
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
दयानन्द भवन, नई दिल्ली
फोन : २७७३१

★ मुद्रक
पुरी प्रिन्टर्स २६-ए, जवाहर नगर, दिल्ली
फोन : २३०४२

सम्पादकीय

समाज निर्माण कैसे हो और कौन करे ?

हमारा कांग्रेस-प्रशासन पाश्चात्य प्रणालियो के सांचे मे हमारी समाज-व्यवस्था के ढालने के यत्न मे सलग्न है जिनकी प्रवृत्ति भोग-प्रधान है। इन प्रणालियों ने जीवन का दृष्टिकोण सर्वथा भौतिक बनाकर आचार और विचार मे विश्रृखलता व्याप्त की हुई है जिनसे स्वय उनके पुरस्कर्त्ता और पृष्ठपोषक तग आए हुए हैं।

इन प्रणालियो का अपना कोई आधार नही है क्योकि ये अभी तक परीक्षणों के स्तर पर है। अतः इनकी वाह्य चमक-दमक से विमोहित होकर इन्हे अपनी प्रणालियो का आधार बनाना घातक है।

प्रसन्नता है कि कांग्रेस के कुछ कर्णधारों को अब नई प्रणाली के खतरों की अनुभूति होती प्रतीत होती है। श्री ढेवर महोदय उन्ही मे से एक हैं। ५ जून के ट्रिब्यून मे प्रकाशित अपने एक लेख में वह इन खतरो से सावधान रहने का परामर्श देते हुए चेतावनी देते हैं —"भारतवर्ष को दो मार्गों में से एक को चुनना है। एक तो वह है जो देशवासियों के स्वास्थ्य-रक्षा उनकी आर्थिक समृद्धि और आचार-विचार की पवित्रता के दायित्व को पूरा करे दूसरा वह है जिसपर देश को चलाकर कुछ सनकी बुद्धि जीवी लोग देश के वर्तमान और भविष्य को अंधकारमय बना रहे है।

जीवन की नई प्रणाली की अपरिपक्वता और उस के दुष्परिणामो की ओर सकेत करते हुए ढेवर महोदय आगे लिखते है—"जीवन की यह नई प्रणाली अभी भी भूलभूलैयो मे से गुजर रही है और परीक्षण की अवस्था मे जो भयकर भूलें होती है वे सब इस प्रणाली के माध्यम से हो रही है। यह प्रणाली अपनी प्रारभिक अवस्था मे होने के कारण घातक वृतियो यथा असहिष्णुता, अहकार, अत्याचार, अनाचार आदि को बढावा दे रही है"

एक ओर तो इस प्रणाली मे पालित-पोषित लोग इस से तग आकर इसके दुष्परिणामो से बचने के लिये विविध उपायो की खोज मे लगे हैं और दूसरी ओर हमारे देश के कर्णधार इसे वरदान समझकर इसे अपनाते है। कैसी बिडम्बना है ? इस प्रणाली से जिस असीमित तृष्णा का जन्म होता है उस पर विजय पाने की समस्या उन्हे व्यथित कर रही है। उन भारत वासियो को जो इन नवीन प्रणालियों को भारत के जीवन मे ओत-प्रोत करने की शीघ्रता मे संलग्न है उन लोगो के विचारों पर ध्यान देकर ठहर जाना चाहिए और सोच समझकर यह

निश्चय करना चाहिए कि उसमे क्या ग्राह्य है और क्या त्याज्य है ?

भारतीय प्रजा अपने जीवन-दर्शन की उपेक्षा वा उसके तिरस्कार को सहन न कर सकेगी जो उस संस्कृति की देन है जो जीवन के भौतिक और अभौतिक दोनों पार्श्वों को समन्वित करके जीवन के सर्वाङ्गीण विकास की योजना प्रस्तुत करती और जिसका आधार अकाट्य और सुदूर अतीत से परिवेष्टित है। इस सत्य को अंगीकार करते हुए श्री ढेवर महोदय लिखते है—"भारत के कुछ बुद्धिजीवी लोग उस निष्ठा के साथ खिलवाड करने की भयकर भूले कर रहे है जो भारतीय प्रजा के हृदयो मे अपने जीवन–दर्शन के प्रति विद्यमान है।"

मनुष्य मे पशुत्व और देवत्व दोनो तत्व होते है। और आहार, निद्रा, भय, मैथुन और लोभ यह बाते पशुओ और मनुष्यो मे समान रुप से पाई जाती है। ससार के लोगो पर जीवन के कठोर प्रशिक्षण से यह स्पष्ट होता रहा है कि पशुत्व के स्तर पर जीवन यापन करने से उसके देवत्व का विकास सभव नही होता-देवत्व के विकास के लिए उसे पशुत्व के स्तर से उचा उठना होता है। हमारे ऋषियो ने परिश्रम और अनुभव के आधार पर यह निश्चित किया कि मनुष्य को क्या करना चाहिए और क्या न करना चाहिए ? इसे उन्होने धर्म और अधर्म की सज्ञा प्रदान की। जो बाते एक मनुष्य के लिए धर्म और अधर्म है वे ही समस्त संसार के मनुष्यो के लिए धर्म और अधर्म है। उन्होने मनुष्य के विकास और व्यवहार की शुद्धता के लिए यम नियमो का विधान किया। पवित्रता (बाहरी और भीतरी) सतोष (सम्यक प्रसन्न होकर निरुद्यमी न रहकर यथा साध्य पुरुषार्थ करना हानि लाभ हर्ष या शोक न करना तप (कष्ट सेवन मे भी धर्मयुक्त कर्मों का अनुष्ठान) स्वाध्याय (पढना-पढाना) ईश्वर प्रणिधान (ईश्वर की भक्ति विशेष कर आत्मा को अर्पित रखना) इन पांच कर्तव्यो का नाम नियम और अहिंसा (बैर त्याग) सत्य (सत्यमानना सत्य बोलना और सत्य करना) अस्तेय (मन, बचन, कर्म मे चोरी का त्याग) ब्रह्मचर्य (उपस्थेन्द्रिय का संयम) इन पाच कर्तव्यो का नाम यम रखा।

दूसरे शब्दो मे यमनियमो को वैयक्तिक और सामाजिक नैतिकता कह सकते है जिसके विकास और प्रकाश के लिए दोनो का व्यवहार अनिवार्य है। कोई भी समाज, समुदाय या वर्ग चाहे वह राजनैतिक हो वा अन्य कोई हो, इन शिक्षाओ की सार्वभौमिकता से इन्कार नही कर सकता। हमारे पूर्वजो की ये शिक्षाए स्कूलीय पाठ्य पुस्तको से सम्बद्ध नही है अपितु ये शिक्षाए उनकी लाखो करोडो वर्षों की अनवरत तपस्या और और साधना का परिणाम था। हमारे ये पूर्वज वे थे जिन्होने भारतीत समाज का निर्माण किया था और हमारे लिए मूल्यवान सॉस्कृतिक मर्यादाए छोडी थी जिनसे अब भी समस्त मानव-जाति प्रकाश और प्रेरणा ग्रहण करके अमित लाभ उठाती है।

प्रश्न यह है कि देश के वर्तमान और भविष्य का निर्माण किन आदर्शों पर हो और किनके द्वारा हो ? आधुनिक प्रणाली मे कोई अच्छाई हो तो उसे ले लिया जाय और प्राचीन प्रणाली मे कोई त्रुटियॉं व्याप्त हो तो उन्हे दूर किया जाय। परन्तु भारत के त्याग पूर्ण जीवन-दर्शन को बदलने का यत्न कदापि न होना चाहिए और न प्राचीन संस्कृति को अग्राह्य बताने की धृष्टता होनी चाहिए। भारतीय प्रजा को यह बात सह्य न होगी सब प्रकार के द्वेष और पक्षपात से रहित देश हितैषी नन्नतमना त्यागपरायण महा मानव यह कार्य कर ही सकते हैं। सत्ता के अभिलाषी, स्वार्थी और अयोग्य व्यक्तियों

पर यह कार्य नही छोडा जा सकता नाही उनपर छोडा जा सकता है जो चरित्र के बलिदान पर देश को भौतिक स्वर्ग मे ले जाने का स्वप्न देखते है और नाही सिनेमाओ समाचार पत्रो और रेडियो की शिक्षाओ को सुधार की रामबाण औषधि मानें परन्तु उनका मस्तिष्क पर जो प्रभाव पडता है उसकी चिन्ता न करने वाले आराम तलब विलास प्रिय बुद्धिजीवियो एव उनमे धन बटोरने वाली कम्पनियो और एजेन्टो पर ही छोडा जा सकता है।

रघुनाथ प्रसाद पाठक

सम्पादकीय टिप्पणियाँ

ंजाबी की दशा पर रोना आता है ?

सहयोगी हिन्दुस्तान टाइम्स १४ जून के अक मे लिखता है "अधिक समय नही हुआ जब कि प जाब मे हिन्दी और पजाबी दोनो भाषाओ मे से किसी को भी राज्य की मान्यता प्राप्त न थी।समस्त क्षेत्रो मे उर्दू और अंग्रेजी का ही बोलबाला था। व्यक्ति और सस्थाए चुपचाप सरकारी सहायता की मॉग किए बिना ही हिन्दी और पजाबी के विकास का उपयोगी कार्य करते रहते थे आर्य समाज ने पजाब मे स्कूलो और कालेजो के जाल बिछाए हुये थे और उनके द्वारा उसने हिन्दी को इतना लोकप्रिय बनाया कि हिन्दी ने डिग्री कोर्स तक ऐच्छिक विषय का रूप ग्रहण कर लिया। सिक्खो की अपनी सस्थाओ ने भी पजाबी को उसी स्तर तक पहुंचाया। इन दोनो भाषाओ का सम्बन्ध किसी जाति या वर्ग के साथ न था। पजाब के हिन्दी लेखको मे सिख और हिन्दू दोनो ही सम्मिलित रहे हैं। पजाबी की उन्नति तो सभी वर्ग के लोगो ने की है जिसमे ईसाई और मुसलमान भी सम्मिलित है। पजाबी की लिपि की स्वतत्रता को विश्व विद्यालय के अधिकारियो तक ने एक सुनिश्चित तथ्य स्वीकार किया हुआ था। विद्यार्थियो को हिन्दी, गुरुमुखी या अरबी लिपी मे पजाबी लिखने की छूट थी।

दुर्भाग्य से विभाजन के पश्चात राजनीति के द्वारा वातावरण इतना दूषित हो गया कि साहित्य सेवी जन भी भाषा को राजनीतिक अस्त्र मानने लगे। इससे बुरी बात यह हुई कि भाषा के विकास की दिशा मे उनका जो दायित्व है उसे भी वे अगीकार नही करते। जलधर मे आयोजित अखिल भारतीय पजाबी सम्मेलन मे जो प्रस्ताव पारित हुए उनसे बडी दयनीय स्थिति सामने आ जाती है इस सम्मेलन के प्रस्तावो और उसमे हुए भाषणो से यह धारणा बनी कि पंजाबी के प्रेमी भीख मॉगने के अतिरिक्त अन्य कोई सामर्थ नही रखते है। जलंधर की इस सभा मे श्रोताओ ने एक केन्द्रीय मत्री से थोथा उपदेशऔर मुख्य मत्री से भाषा की उन्नति विषयक सरकारी विवरण सुना। पता नही राज्य के चुने हुए साहित्यकारो पर इनका क्या प्रतिक्रिया हुई

क्या वारिसशाह की भाषा की रक्षा और उन्नति अनशन करने वाले जनूनियों और चापलूस साहित्यकारों से हो जायगी ? पंजाबी के प्रेमी होने का दावा करने वालो ने इसकी जो दशा की है उस पर रोना आता है।

ईसाई मिशनरियों की शरारत

भारत की उप-परराष्ट्र मंत्री श्रीमती लक्ष्मी मेनन ने बम्बई मे गत तीन जून को विदेशी अखबारो द्वारा फैलाई गई इस अफवाह का कि फिजो नागा लैण्ड वापस आ गया है प्रतिवाद करते हुए एक महत्त्वपूर्ण तथ्य की अभिव्यक्ति की। उन्होने विदेशी ईसाई मिशनरियो की शरारतों पर प्रकाश डालते हुए कहा.—

' स्वाधीनता मिलने के बाद नागालैंड में जितने उपद्रव हुए वे मिशनरियों की शरारत के परिणाम थे। उन्हें ही अंग्रेजों के जमाने में उक्त क्षेत्रों में जाने की छूट थी। उन्होंने वहां के लोगों के दिलों में यह भावना भरने की कोशिश की कि नागा लोग भारतीयों से भिन्न हैं इसलिए उन्हें अपने प्रदेश को स्वतंत्र घोषित कर देना चाहिए, इन मिशनरियों ने नागाओं को अपनी प्राचीन संस्कृति से विमुख करने का यत्न किया। अपनी प्राचीन वेश-भूषा, नृत्य और संगीत से उन्हें विमुख कर पाश्चात्य वेश, पाश्चात्य संगीत और नृत्य का आदी बना दिया। उन लोगों ने भोले नागाओं से यह भी कहा कि उन्हें हिन्दुओं से न मिलना चाहिए। कारण यह है कि ये हिन्दू न गोमांस खाते हैं और न शराब पीते है।'

उपर्युक्त पंक्तियों से किसी रहस्य विशेष का उद्घाटन नही होता। आर्य समाज चिरकाल से इन शरारतो का भांडा फोड करता आ रहा है। श्रीमती मेनन द्वारा इन शरारतो पर प्रकाश का डाला जाना, केवल इतना महत्व रखता है कि सरकारी प्रवक्ता भी ईसाई मिशनरियो की धर्म, राष्ट्र और संस्कृति विरोधी प्रगतियो को सार्वजनिक रूप से प्रकट करने के लिए विवश हो गये है। परन्तु प्रश्न यह है कि हमारी धर्मनिरपेक्ष सरकार इस खतरे से बचने के लिए कोई पग उठाने की सोचती है या नही ? प्रकट रूप मे तो इस प्रकार के कोई संकेत नही मिलते है।

अनूठा आयोजन

इटली के एक ग्राम ने '१९६१ की सास' नाम की एक पुरस्कार प्रतियोगिता की आयोजना की है। सर्वश्रेष्ठ सास को १६ जुलाई को स्वर्ण-पदक दिया जायगा। जो वधुएं और जामाता अपनी सास के साथ रहते होंगे वे ही इस प्रतियोगिता के लिए अपने प्रत्याशी भेज सकेंगे। निस्सन्देह यह आयोजन अपने ढग का अनूठा और प्रेरणा दायक है। इससे सासुओं को अपने को अच्छा बनाने और सिद्ध करने की अमित प्रेरणा प्राप्त होगी।

—रघुनाथ प्रसाद पाठक

सार्वदेशिक सभा का वार्षिक निर्वाचन

निर्वाचन

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का वार्षिक साधारण अधिवेशन २५-६-६१ को दयानन्द भवन (रामलीला मैदान) नई दिल्ली मे श्री बा॰ पूर्णचन्द जी ऐडवोकेट सभा प्रधान की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। इस अधिवेशन मे बम्बई, बगाल बिहार, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, पंजाब, गुजरात, मध्य भारत, ईस्ट अफ्रीका, मौरीशस आदि आदि देश विदेश के १२५ सदस्यो ने भाग लिया जिसमे श्री स्वामी ध्रुवानन्द जी महाराज, श्री यश जी उपशिक्षा मत्री पजाब राज्य, श्री प्रि॰ सूर्यभानु जी, श्री सेठ प्रतापसिह शूरजी वल्लभदास, श्री डा॰ डी॰ राम जी, श्री आचार्य रामानन्द जी शास्त्री, श्री जगदेवसिह जी सिद्धान्ती, श्री मिहिर चन्द्र जी श्रीमती शकुन्तला जी गोयल, श्री स्वामी सत्यमुनि जी, श्री प्रकाशवीर जी शास्त्री एम॰ पी॰, श्री नरदेव जी स्नातक एम॰ पी॰, श्री आनन्द प्रिय जी, श्री चौ॰ बदलूराम जी, श्री लक्ष्मीदत्त जी दीक्षित, श्री प्रो॰ राम सिह जी, श्री प्रो॰ शेरसिह जी एम॰ एल॰ ए॰. श्री प्रि॰ महेन्द्र प्रताप जी शास्त्री, श्री वटकृष्ण जी बर्मन, श्री उमेशचन्द्र जी स्नातक सम्पादक आर्य मित्र, श्री ज्ञानी पिन्डीदास जी, श्री आचार्य प्रियव्रतजी, श्री प्रेमचन्द जी, शर्मा एम॰ एल॰ सी॰, श्री प॰ बुद्धदेव जी विद्यालकार, श्री देशराज जी चौधरी, श्री प॰ क्षितीश कुमार जी, श्री रघुवीर सिह जी शास्त्री, श्री वा॰ कालीचरण जी आदि आदिके नाम विशेष उल्लेखनीय है। अधिवेशन मे आगामी वर्ष के लिये पदाधिकारियों और अन्तरग सदस्यो का निर्वाचन हुआ तथा विविध कार्यों के लिए उपसमितिया नियुक्त हुई। आगामी वर्ष के लिए ३४८३४०) का बजट स्वीकृत हुआ। इसके अतिरिक्त गत वर्ष का कार्य विवरण और आय-व्यय का विवरण भी स्वीकृत हुआ।

अधिकारी

१ सर्व प्रथम प्रधान का निर्वाचन हुआ और श्री स्वामी ध्रुवानन्द जी महाराज प्रधान निर्वाचित हुए और सभा ने उन्हें शेष अधिकारियों का चुनाव कर देने का अधिकार दे दिया। श्री स्वामी जी के प्रस्ताव और सभा के सर्व सम्मत अनुमोदन पर निम्न लिखित अधिकारी चुने गए —

२. उपप्रधान (१) श्री सेठ प्रतापसिंह शूर जी वल्लभ दास बम्बई।
३. उपप्रधान (२) श्री डा॰ डी॰ राम जी वाईस चान्सलर पटना यूनि॰।
४. उपप्रधान (३) श्री मिहिरचन्द्र जी धीमान।
५ मंत्री श्री बा॰ कालीचरण जी आर्य।
६. उपमंत्री (१) श्री क्षितीश कुमार जी।
७. उपमंत्री (२) श्रीमती शकुन्तला जी गोयल।
८. कोषाध्यक्ष श्री प्रो॰ रामसिंह जी।
९. पुस्तकाध्यक्ष श्री रघुवीरसिंह जी शास्त्री।

अन्तरंग सदस्य

१ श्री बटकृष्ण जी बर्मन (बंगाल)
२ श्री डी॰ डी॰ पुरी जी (ईस्ट अफ्रीका)
३. श्री प्रतापचन्द जी पंडित (गुजरात)
४. श्री देशराज जी चौधरी (पंजाब)
५. श्री रामनाथ जी भल्ला (पंजाब)
६. श्री शिवचरण लाल जी गुप्त (राजस्थान)
७. श्री कान्तिलालमोहनलाल शर्मा (बम्बई)
७. श्री डा॰ महावीरसिंह जी (म॰ भारत)
९ श्री महात्मा आनन्द स्वामी जी आर्य (प्रादेशिक) सभा
१० श्री प्रेमचन्द जी शर्मा (उत्तर प्रदेश)
११ श्री बा॰ जगनन्दन लाल जी (उत्तर प्रदेश)
१२ श्री पं॰ नरेन्द्र जी (हैदराबाद)
१३ श्री घनश्यामसिंह जी गुप्त (म॰ भारत)
१४. श्री प्रकाशवीर जी शास्त्री (आजीवन सदस्य)
१५ श्री प॰ वासदेव जी शर्मा (बिहार)
१६ श्री विष्णुदेव मेघराज जी (मौरीशस)

हिन्दी रक्षा समिति का पुनर्गठन

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब और आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब ने अभी हाल में हिन्दी रक्षा समिति पंजाब का पुनर्गठन किया है। उसकी बैठक २५-६-६१ को दयानन्द भवन दिल्ली में हुई। श्री महात्मा आनन्द भिक्षु जी सर्व सम्मति से प्रधान निर्वाचित हुए।

समिति ने जुलाई मास में अम्बाले में हिन्दी रक्षा सम्मेलन करने का निश्चय किया है जिसमें पंजाब में हिन्दी को उचित स्थान दिलाने और पंजाबी क्षेत्र में मतदाता सूची को हिन्दी और पंजाबी दोनों भाषाओं में छपवाने पर विचार किया जायगा।

इस बैठक में २१ में से १३ सदस्य उपस्थित थे। चीफ इलैक्शनकमिश्नर ने अभी हाल में जो वक्तव्य दिया है उसपर समिति ने बड़ा रोष प्रकट किया।

समिति ने श्री वी. के. सुन्दरम से दिल्ली में भेंट करने के लिए ५ महानुभावों का एक शिष्ट मंडल भेजने का भी निश्चय किया है जिनसे वह चंडीगढ़ में आयोजित

प्रेस कान्फ्रेंस मे दिए गए उनके वक्तव्यो का स्पष्टीकरण प्राप्त करे जिसमे यह प्रकट किया गया है कि भारत सरकार पजाबी क्षेत्र मे मतदाताओं की सूची पंजाबी और हिन्दी दोनो भाषाओं मे छपाने मे असमर्थ है।

समिति ने इस विषय मे सरकार की सहायता करने की इच्छा व्यक्त की और यदि सरकार चाहेगी और अनुमति देगी तो समिति मतदाताओं की सूची हिन्दी मे छपवाने के लिए भी उद्यत होगी।

श्री प्रो शेरसिंह ने समिति को बताया कि इलैक्शन कमिश्नर का वक्तव्य बडा निराशाजनक है। हिन्दी-प्रेमी सर्वत्र उसकी निंदा कर रहे हैं। इस वक्तव्य से हिन्दी प्रेमियो के साथ बडा अन्याय होगा जिनकी संख्या पजाबी क्षेत्र मे बड़ी है।

इस बैठक मे जो आठ महानुभाव अनुपस्थित थे उनमे श्री स्वामी रामेश्वरानन्द जी, श्री वीरेन्द्र जी. एम एल. सी. श्री महात्मा देवीचन्द जी और प्रि. नारायणदास ग्रोवर भी हैं।

अन्य पदाधिकारी इसप्रकार निर्वाचित हुए :—

उप प्रधान	श्री प. बुद्धदेव जी विद्यालंकार
,,	,, पिंडीदास ज्ञानी
मन्त्री	,, डा हरिप्रकाश जी
उपमन्त्री	,, प्रो. वेदी राम ,,
कोषाध्यक्ष	,, श्री सन्तोषराज ,,

समिति ने यह सूचना भी अंकित की कि "सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा ने २४-६-६१ की अन्तरग के निश्चय । नुसार इस समिति को मान्यताप्रदान की है और इस समिति के मुकाबले मे जो दूसरी समिति बनाई गई है उसे अमान्य और अवैध घोषित किया है।"

जो दुराचार से पृथक् नही, जिसको शान्ति नही,
जिसका आत्मा योगी नही और जिसका शान्त नही,
वह संन्यास लेके भी प्रज्ञान से परमात्मा को प्राप्त नहीं होता।

—सत्यार्थ प्रकाशः

साहित्य समालोचना

निजजीवन वृत्त वनिका

मूल्य ७५ नए पैसे सजिल्द

५० नए पैसे अजिल्द

प्रकाशक—सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा,

दयानन्द भवन, राम लीला मैदान

नई दिल्ली-१

प्रस्तुत पुस्तक श्री स्वामी ब्रह्ममुनि जी परिव्राजक विद्यामार्त्तण्ड की आत्म-कथा है। स्वामी जी का जन्म एक अत्यन्त धनी परिवार मे हुआ था, प्रारंभिक शिक्षा मुस्लिम मौलवी द्वारा उर्दू मे हुई। आर्य समाज के सम्पर्क मे आने पर उन्होने विद्याध्ययन केलिए घर बार छोडा,। सम्पत्ति को लात मारी त्याग और सहिष्णुता का जीवन व्यतीत कर आर्य ग्रन्थो का अध्ययन और मनन किया। विवाह से मुंह मोडा। आज उनकी गणना आर्य समाज के उच्च कोटि के विद्वानों और साहित्य कारो में है। उन्हों ने अनेक उत्तम ग्रन्थ आर्य समाज को प्रदान किए हैं जिनमे से कई पर राजकीय पुरस्कार प्राप्त हुए हैं। वस्तुतः स्वामी जी का जीवन स्वनिर्मित और शिक्षा-प्रद है। उनकी इस छोटी सी आत्म-कथा से जीवन-निर्माण की अमित सामग्री उपलब्ध होती है।

उपनिषदों का सदेश

महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज की उपनिषदों की कथाओ का सग्रह

प्रकाशक—गोविन्द राम हासा नन्द ४४०८

नई सडक दिल्ली-६

मूल्य १)२५ नए पैसे

इस सग्रह मे श्री स्वामी जी महाराज की उपनिषदों की शिक्षाओं पर कही गई कथाए अंकित है। ये कथाए आर्य समाज रीडिंग रोड नई दिल्ली के वार्षिकोत्सव पर की गई थी और उनका टेप रिकार्ड ले लिया गया था। इन कथाओ को पढने से पाठको को अमित शान्ति और जीवन को उच्च और उपयोगी बनाने की प्रेरणा मिल सकती है।

संग्रह उपादेय है।

आर्य समाज की उन्नत्यर्थ कुछ निर्देश

पं० धर्मदेव विद्यामार्तण्ड
(देवमुनि वानप्रस्थ)
आनन्द कुटीर, ज्वालापुर

आर्य समाज की स्थापना महर्षि दयानन्द ने जिस उदात्तभावना से प्रेरित होकर की थी उसे आर्य समाज के षष्ठ नियम मे स्पष्टतया सूचित किया गया है जो निम्नलिखित है —

"ससार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।"

इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए आर्य समाजो ने देश विदेशो मे जो अद्भुत कार्य करके दिखाया है वह सर्वविदित है और उसके कारण आर्य समाज की कीर्ति बढी है। शिक्षाप्रसार, समाजसुधार, दलितोद्धार और वैदिक धर्म के प्रचारार्थ आर्य समाज ने इन लगभग ८६ वर्षो मे जो अत्यन्तप्रशमनीय कार्य किया है उस पर वह गर्व कर सकता है किन्तु यह खेद के साथ कहना पडेगा कि आर्य समाज की वर्तमान अवस्था सन्तोषजनक नही है। आर्य का अर्थ श्रेष्ठ, धर्मात्मा, सदाचारी, कर्तव्य-परायण व्यक्ति होना है जैसे कि **'आर्यव्रता विसृजन्तो अधिक्षमि'** (ऋग्वेद १०,६५,११)

कर्तव्यमाचरन्कार्यम्, अकर्तव्यमनाचरन् ।
तिष्ठतिप्रकृताचारे, स तु आर्य इतिस्मृत (व स्मृ.)

आर्य ईश्वर पुत्र (निरुक्त) पूज्य श्रेष्ठ, मान्य,, उदार चरित, शान्त चित्त, न्यायपथावलम्बी, सतत कर्तव्य-कर्मानुष्ठाता, धार्मिक, धर्मशील, (शब्द कल्पद्रुम, वाचस्पत्यवृहदभिधानादि सस्कृत कोष) इत्यादि से स्पष्ट है। ऐसे धर्मात्मा कर्तव्यपरायण व्यक्तियो का सगठन हो तभी सारे ससार का कल्याण हो सकता है। यह उदात्त भावना महर्षि दयानन्द के अन्दर विद्यमान थी। प्रश्न यह है कि क्या आर्यसमाजो के सब सदस्य—सब नही तो क्या ७५ प्रतिशत भी ऐसे ही श्रेष्ठ, धर्मात्मा, पूर्ण सदाचारी और कर्तव्यपरायण हैं? क्या उन के अन्दर

'कर्तव्यमाचरन्' इस श्लोक मे कहा हुआ आर्य का यह लक्षण कि जो कर्तव्यकर्म का सदा अनुष्ठान करने वाला हो और जो बडी से बडी आपत्ति और प्रलोभन के आने पर भी पापकर्म मे प्रवृत्त न हो, जो पूर्ण सदाचारी हो चरितार्थ होता है ? क्या आर्यों की बडी सख्या महर्षि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित इस परम धर्म का पालन करती है कि "वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढना पढाना सब आर्यों का परम धर्म है।" कितने आर्य है जो सन्ध्या हवन यज्ञ सस्कारादि को परिवार सहित उस श्रद्धा के साथ करते हैं जो सच्चे आस्तिको मे पाई जानी चाहिये ? क्या आर्यों मे परस्पर वह प्रेम और एकता की भावना है जिसका वेदो मे— —

सगच्छध्व संवदध्व स वो मनासि जानताम्।
समानी व आकूति समानाहृदयानि व:।

इत्यादि मन्त्रो द्वारा उपदेश किया गया है ? क्या अनेक आर्यसमाजो, सस्थाओ तथा प्रतिनिधि सभादि मे दलबन्दी के कारण आर्यसमाज के कार्य मे बाधा नही पड रही ? क्या आर्यों के जीवन आज उतने सत्यमय, प्रेममय और विश्वसनीय तथा अपने सिद्धान्तानुकूल है जितने होने चाहियें ? ऐसे आर्य कितने है जिनका पूरा परिवार आर्यजीवन बिताने वाला है ? ऐसे आर्य कितने है जो जात-पात की दलदल से बिल्कुल ऊपर निकले हुए हों और वर्णाश्रम धर्म का श्रद्धापूर्वक पालन करने वाले हो ? आज आर्य समाज मे प्रबल नेतृत्व और अनुशासनबद्धता की कितनी न्यूनता प्रतीत होती है।

इन सब दृष्टियो से देखते हुए यह कहना पड़ता है कि आर्यसमाज की वर्तमान अवस्था सन्तोषजनक नही है तथापि आर्यो के अन्दर उत्तम जीवन शक्ति विद्यमान है। वे यदि महर्षि दयानन्द के आदर्श और उनके वेदोक्त आदर्शों को अपने सन्मुख रखते हुए अपने जीवनो को सच्चा आर्य जीवन बनाने का यत्न करे तो अब भी कुछ बिगडा नही है। वे अब भी उठ सकते और संसार के आगे उच्च जीवन का आदर्श स्थापित कर सकते है।

अत सामाजिक क्षेत्र मे दीर्घकालीन अनुभव के आधार पर आर्य समाज की उन्नति के लिए मेरे निर्देश सक्षेप से निम्न हैं—

(१) प्रत्येक नरनारी को अपना जीवन सच्चा आर्यजीवन बनाने का अधिक से अधिक यत्न करना चाहिए और इसके लिए वास्तविक सन्ध्योपासना और वेदों के स्वाध्याय की ओर विशेष ध्यान देना चाहिए आर्य के उपर्युक्त लक्षणो को जीवन मे चरितार्थ करने का सदा ध्यान रखना चाहिये।

(२) आर्य समाज की वास्तविक उन्नति असभव है जबतक आर्यों का पारिवारिक जीवन भी वैदिक आदर्शानुसार न हो। अत इस ओर अत्यधिक ध्यान देने की आवश्यकता है कि देवियो और कुमार कुमारियो मे वैदिक धर्म के प्रति प्रेम उत्पन्न हो। पारिवारिक सत्सङ्गो के आयोजन से पर्याप्त लाभ हो सकता है। समस्त परिवार को आर्य बनाना प्रत्येक आर्य सदस्य को अपना कर्तव्य समझना चाहिए।

(३) कुमार कुमारियो के अन्दर वैदिक भावनाओ को जागृत करने के लिए सब आर्य समाजों मे आर्यकुमार सभाओ की स्थापना करनी चाहिए और उनको सेवा करने, भाषणशक्ति को बढ़ाने तथा धर्मशिक्षा प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिये। कुमारियो के लिये पृथक् आर्यकुमारी सभाओ का आयोजन किया जा सकता है।

(४) उत्तम साहित्य के प्रकाशन की व्यवस्था

(शेष पृष्ठ २१० पर)

वेदों में गणित विद्या

स्वामी सेवकानन्द सरस्वती, एम० ए०

यजुर्वेद -- "एका च मे तिस्रश्च......च मे एकादश"
अर्थात् १, ३, ५, ७, ९, ११ .. ...

इसी तरह "चतस्रश्च मे अष्टौ.........च मे चत्वारिंशत"

अर्थात् ४, ८, १२, १६, २० २४, २८, ३२, ३६, ४० इन दोनो क्रम मे सीधे जाने से जोड़ना और उल्टे आने से घटाना सिखाया गया पहिली मे २ जोडे और दूसरी मे ४. इसप्रकार, ३, ४ ५ ६ आदि जोड़ने मे कई प्रकार के क्रम बनाना चाहिये।

३ को जोडते जाने मे

१, ४, ७, १०, १३, १६, १९ . म राशि तक
४ से १, ५, ९, १३, १७, २१, २५ ..म तक
"च" को जोडते जाने मे

१, च+१, २च+१, ३च+१, ४च+१...,म तक अब परीक्षण मे हम ऐसी किसी भी सीरीज का एक दम योग फल का फार्मूला निकाल कर काम मे ला सकते है

(१) योग $= १+२+३+४+५+ --- $ "म, अन्तिम

$= \frac{म(म+१)}{२}$

उदाहरण . $१+२+३+ --- २१$

योग $= \frac{२१(२१+१)}{२} = \frac{२१ \times २२}{२} = २१ \times ११$

$= २३१$

(२) अगर क्रम हो $१+३+५+७ --- म$

तब योग $= म^2$

उदाहरण $१+३+५+७$ का योग $= म^2 = ४^2$
$= १६$

(३) इसी तरह अगर क्रम हो $१^2+२^2+३^2+४^2 --- म^2$

तब योग $= \frac{म(म+१)(२म+१)}{६}$

(४) अगर क्रम हो $१^3+२^3+३^3+४^3 --- म^3$

तब योग $= \left(\frac{म(म+१)}{२}\right)^2$

(५) अगर क्रम हो $१^2+३^2+५^2+७^2+९^2+ --- म^2$

तब योग $= \frac{म}{३}(४म^2-१)$

वेद मे गुणा का अर्थ बार बार जोडना और बाकी का बार बार घटाना जैसे $४ \times ३ = ४+४+४ = १२$

$८ \div ४ = २$, ८ मे से ४ दो बार घटेगा

$५ \div ०$ का उत्तर बडा कठिन है बडे बडे चकराते हैं परन्तु वेद के अनुसार ५ मे से ० घटाते चले जाईये, अनन्त बार करने पर भी ५ ही रहेगा, अत. $\frac{5}{0}$ = अनन्त।

५रु० × ४रु० वैदिक रीति से यह हो नही सकता परन्तु आज कल भी सिवाय मूर्खों के कोई विद्वान नही कर सकता, ५ इन्च × ४ इन्च = २० वर्ग इन्च।

मगर ५रु० × ४रु० = २० वर्ग रुपया, जो असत्य

और निरर्थक है ५रु० × ४रु० = ५रु० + ५रु० + ५रु० + ५रु० = २० रु० सत्य है।

आर्य भाइयो को स्पष्ट हुआ कि पाश्चात्य देश के विद्वानो ने कठिन परिश्रम करके गणित का विकास किया परन्तु हम तो अर्थ ही समझने मे लगे हुए है जो आज तक भी समझ मे नही आया।

इसी प्रकार दशमलव और आवर्त्त दशमलव निकाल सकते है।

३ = ३३३३ अनन्त स्थान तक
माना कि म = ३३३—अनन्त स्थान तक
∵ १० म = ३ ३३३—अनन्त तक घटाया
∴ ९ म = ३, ∴ म = $\frac{3}{9}$ = $\frac{1}{3}$

—x—

बीज गणित

१ + च = ३ ∴ (१ + च)—१ = ३ — १ ∴ च = २	बराबर मे बराबर जोडें, घटावे, गुणा करे अथवा भाग देवे हर दशा मे नतीजा वही रहेगा। ये ४ नियम स्वय सिद्ध है

इस प्रकार समीकरण निकालना सिखाया।

इन्ही मे तरह तरह के समीकरण, सिमल्टेनियस, क्वाड्रेटिक आदि के सवाल बना सकते हैं ऐसे ही फेक्टर भी बनाये जाते है १६ = ४^2; ८ = २^3, इस तरह वर्ग मूल धन मूल बन सकते है।

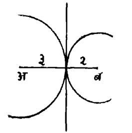
वेदो मे हर विद्या के सकेत मात्र है। कठिन परिश्रम के बिना कोई विकास नही हो सकता - परन्तु हम लोग तो सकेत मात्र को भी नही समझे फिर आगे कैसे बढ सकते थे। तोता रटाई से कुछ उन्नति नही हो सकी और न हो रही है।

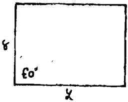
रेखा गणित

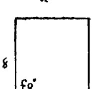
(१, २, ३); (२, ३, ५), (२, ७, ९), (२, ९, ११)
(४, ८, १२), (४, १२, १६) (४, १६, २०),
(४, ३०, २८)

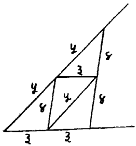
इन ऊपर वाली सख्याओ से कोई त्रिभुज नही बन सकेगा त्रिभुज के लिये २ भुजाओ का जोड हमेशा तीसरी से बडा होना चाहिये।

हर एक मे २ वृत्त बनेगे * बीच मे स्पर्श रेखा होगी, इसी प्रकार लम्ब डाल सकते है।



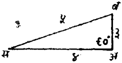


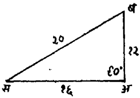


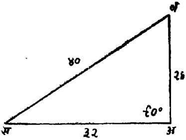


चारो त्रिभुज (३, ४, ५) के बराबर है और समकोण त्रिभुज है। इससे क्षेत्र फल का ज्ञान होता है और कई सिद्धान्त निकाले जाते है।

इनही अंको से पाइथा गोरस का नियम निकलता है।



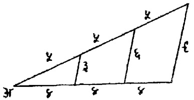




हमेशा समकोण त्रिभुज बनेगा और $३^2 + ४^2 = ५^2$ $१२^2 + १६^2 = ४००$, $२४^2 + ३२^2 = १६००$ सदा होगा ९०° का कोण बनाने का नियम वेदो ने बताया है इसी के अनुसार आज भी इंजिनियर काम करते है।

पहिली शकल मे फीते की लबाई १२ लेकर अ के पास वाली कील से ब होते हुए स तक उसी अनुपात मे करना चाहिये। दूसरी शकल मे फीते की लबाई ४८ और तीसरी मे ९६ रख कर ९०° का कोण बनाया जाता है।

ट्रिगोनामेट्री



$\frac{३}{५} = \frac{६}{१०} = \frac{९}{१५}$ = साइन "अ"

$\frac{४}{५} = \frac{८}{१०} = \frac{१२}{१५}$ = कॉस "अ"

$\frac{३}{४} = \frac{६}{८} = \frac{९}{१२}$ = टेन "अ"

$\frac{४}{३} = \frac{८}{६} = \frac{१२}{९}$ = कॉट "अ"

$\frac{५}{३} = \frac{१०}{६} = \frac{१५}{९}$ = कासेक "अ"

$\frac{५}{४} = \frac{१०}{८} = \frac{१५}{१२}$ = सेक "अ"

इनके कई नियम भी निकलते हैं।

(१) $\text{साइन}^2\text{अ} + \text{कास}^2\text{अ} = १$

(२) $\text{सेक}^2\text{अ} = १ + \text{टेन}^2\text{अ}$

(३) $\text{कोसेक}^2\text{अ} = १ + \text{कॉट}^2\text{अ}$

(४) $\text{टेन अ} = \frac{\text{साइन अ}}{\text{कास अ}}$

(५) $\text{कॉट अ} = \frac{\text{कास अ}}{\text{साइन अ}}$

इस प्रकार स्पष्ट है कि वेदो मे सैकडो विद्याओ के केवल सकेत मात्र ही है, बिना परिश्रम के सारी विद्याओ का भडार बेकार ही पडा है।

पाश्चात्य देशो ने इन वेदो के बीजो का काफी विकास कर लिया है। अब इन्ही की खोज मे लगना निरर्थक है। फिर भी अभी तक लगभग सौ विद्या ऐसी है कि जिनका ससार को ज्ञान नही है। ऐसी दशा मे अब हम लोगो को उन विद्याओ का पूर्णतया अन्वेषण करके, परीक्षण और प्रयोग द्वारा, ससार के सामने वैज्ञानिक ढग से रखना चाहिये।

(पृष्ठ न २०६ का शेष)

इस समय अत्यन्त अपर्याप्त है। आर्य जगत के अधिक तर प्रकाशक व्यावसायिक दृष्टि से गल्प, उपन्यास, नाटकादि के प्रकाशन मे लग गये है। इसका परिणाम यह हो रहा है कि अनेक आर्य विद्वानो के ग्रन्थ चिरकाल तक उनके पास पडे रहते है क्योकि उनको कोई अच्छा प्रकाशक नही मिलता। उत्तम साहित्य के निर्माण मे लेखक को विशेष परिश्रम करना पडता है जो तभी सभव है जब आर्थिक चिन्ता से पर्याप्त मुक्त कर कर दिया जाए। उसके लिए उचित व्यवस्था का आर्य जगत् मे लगभग अभाव है जिसके कारण अनेक विद्वान् तपस्या और परिश्रम करके जो वेदादि विषयक ग्रन्थ तय्यार करते है वर्षो तक जनता उनसे लाभ उठा नही सकती। इस उत्तम साहित्य निर्माण और प्रकाशन के कार्य की ओर जबतक सार्वदेशिक सभा तथा प्रतिनिधि सभादि विशेष ध्यान न देंगी तबतक शिक्षित जनता मे और विदेशो मे प्रचार न हो सकेगा। ईसाइयो के अतिरिक्त श्री रामकृष्णमिशन और थियोसफिकल सोसाइटी ने जो साहित्य तय्यार किया है आर्य समाज का साहित्य उसकी अपेक्षा बहुत कम है। अंग्रेजी मे उच्चकोटि का साहित्य तो अभी बहुत ही कम है। सिवाय यजुर्वेद के अन्य वेदो का अंग्रेजी मे शुद्ध अनुवाद भी अभी तक हमारे पास नही है।

(६) वेद प्रचार के नाम से जो प्रचार किया जाता है उसमे वस्तुत वेद का प्रचार नाम मात्र का होता है। इधर उधर की बाते और राजनैतिक आलोचनाए ही उसमे अधिक होती है। उसे सच्चे अर्थों मे वेद-प्रचार बनाने और तदर्थ विद्वान्, सदाचारी तपस्वी विद्वानो के सहयोग ग्रहण करने की आवश्यकता है। धर्मप्रचार की वर्तमान प्रणाली मे परिवर्तन की भी बडी भारी आवश्यकता है। किन्तु उसके विषय मे आर्य विद्वानो और कार्यकर्त्ताओ को मिलकर गम्भीरता मे विचार करके उत्तम योजना बनानी चाहिये।

(७) इस समय देश मे जो भ्रष्टाचार, दुराचार, तथा नैतिक पतन सर्वत्र दृष्टिगोचर हो रहे हैं उनको दूर करने के लिए एक अत्यन्त संगठित प्रबल सदाचार अभियान को चलाने की आवश्यकता है।

नवम आर्य महासम्मेलन के अवसर पर

१७-१८ मई को हुए प्रमुख आर्यों के सम्मेलन में

सभा प्रधान बा० पूर्णचन्द जी का

उद्घाटन भाषण

आर्य समाज की गतिविधि पर विचार करने और उसकी आन्तरिक दशा को अधिक सुदृढ़ और संगठित बनाने के लिए बड़ी गंभीरता से विचार करने की आवश्यकता है। प्रमुख आर्यों का सम्मेलन बुलाने का विचार १६५६ से सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अंतरंग सभा के सन्मुख विचाराधीन रहा है। सबसे पहले यह विचार २-८-५६ की अंतरंग सभा के सन्मुख आया। सम्मेलन बुलाना निश्चय हुआ और रूपरेखा बनाने का आदेश प्रधान सभा को दे दिया गया।

२६-११-५६ की अंतरंग सभा में यह विषय पुनः प्रविष्ट हुआ और निश्चय हुआ कि सम्मेलन बुलाया जाय और जो प्रश्न विचारणीय है उनकी रूप-रेखा स्वीकार हुई और वह सम्मति के लिए प्रान्तीय सभाओं को भेजी गई और समाचार पत्रों में प्रकाशित हुई। उन प्रश्नों के सम्बन्ध में कुछ सम्मतियाँ प्राप्त हुईं। मार्च ६० में निश्चय हुआ कि यह सम्मेलन स्वर्ण जयन्ती और नवम् आर्य महासम्मेलन के अवसर पर बुलाया जाय। उपरोक्त निश्चय के आधार पर यह सम्मेलन बुलाया गया है। आर्य समाज की आन्तरिक गतिविधि को समझने के लिए निम्नलिखित दृष्टिकोण सन्मुख रखना हितकर होगा:—

१- आर्य समाज के आरंभिक काल में संघर्ष अधिक और आकर्षण कम था। (अ) तत्कालीन सरकार की ओर

से आर्य समाज को सन्दिग्ध दृष्टि से देखा गया। (ब) जन्म सूचक जातियों की ओर से भी विरोध हुआ। (स) दूसरे मतवालों से भी संघर्ष और मतभेद अधिक हुआ। उस समय के आर्य समाज के कार्यकर्ताओं ने उपरोक्त तीनों परिस्थितियों का सामना किया और उन कठिनाइयों को सुलझाया। परिणाम स्वरुप आर्य समाज के प्रवेश में किसी प्रकार का भय और सकोच का स्थान नहीं रहा। इस के साथ साथ आर्यसमाजों में आकर्षण अधिक हुआ बड़ी बड़ी संस्थाए खोली गई जिनके लाखों और हजारों के बिजट बनने लगे। संस्थाओं के प्रबन्ध के सम्बन्ध में अधिकार प्राप्ति की भावना भी प्रबल हुई। इस आकर्षण के कारण आर्य समाज में सदस्यों का प्रवेश अधिक होने लगा। आरम्भ में बहुधा सिद्धान्त प्रेम और समाज सुधार के प्रेम के कारण स्वय अपनी रुचि से सदस्य बनते थे। मेरा अनुभव है कि जोव स्वय रुचि से बनते है वह आर्य समाज को बनाते हैं। जो केवल दलबन्दी या सख्या वृद्धि के कारण बनाये जाते है, उनमें से बनाने वाले कम बिगाडने वाले अधिक होते है। इस प्रकार जब प्रवेश में वृद्धि हुई तो वार्षिक निर्वाचनों के अवसर पर और उससे पूर्व आर्य सभासदों की सूचि बनाने के अवसर पर कभी कभी दलबन्दी का रुप दृष्टि में आने लगा, और अब यह रोग बढते बढते एक उग्ररुप धारण करने लगा है। प्रजातन्त्र एक आकर्षक सिद्धान्त है आर्य समाज के नियमों में इस का समावेश है परन्तु केवल राजनीतिक जगत के अनुसार यदि प्रजातन्त्र आर्य समाज के अतर्गत प्रचलित रहा तो विशेष हानि होने की सभावना बनी रहेगी।

महर्षि ने प्रजातन्त्र के प्रचलित रुप से आर्य समाज को सुरक्षित रखने के लिए दो बातों पर विशेष बल दिया। (अ) सम्मति देने का अधिकार सदाचार के आधार पर दिया जाय। (ब) व्यवस्थापिका सम्मति दस धार्मिक विद्वानों की माननीय होनी चाहिए सौ मूर्खों की नहीं।

दुर्भाग्य से जब से सख्या-वृद्धि की ओर ध्यान गया है, महर्षि की दोनों चेतावनियों की ओर ध्यान नहीं दिया जा सका है और इसी लिए आर्य समाज की दशा आन्तरिक दृष्टि से विचारणीय और चिन्ताजनक प्रतीत होती है। इस परिस्थिति के निराकरण के लिए यह आवश्यक है कि आर्य समाज की आन्तरिक परिस्थिति के सम्बन्ध में निम्न-लिखित आधारों पर कार्य किया जाय —

(क) आर्य समाज में प्रवेश जिसमें न केवल सदस्य बनना परन्तु आर्य सभासद होना और अधिकारी बनना भी सम्मलित समझा जाय। (ख) प्रचार की विधि जिसमें सा-प्ताहिक सत्सग और वार्षिक उत्सवों की व्यवस्था और प्रचार की शैली भी सम्मलित समझी जायगी। (ग) प्रबन्ध इस में अभिप्राय आर्य समाज के अतर्गत संस्थाओं के प्रबन्ध से है। इनमें से प्रत्येक पर कुछ विचार बिन्दु सम्मेलन के सन्मुख रखना आवश्यक है।

प्रवेश के सम्बन्ध में :--

(अ) केवल संख्या-वृद्धि के लिए प्रवेश की प्रणाली को तुरन्त बन्द कर दिया जाय। जो स्वय अपनी रुचि से बनें उनके लिए आर्य समाज का द्वार सदैव खुला रहना चाहिए। (ब) जो दो वर्ष सदस्य रह चुका हो और जो उपस्थिति और चन्दे का नियम पालन करता हो, सदाचार सम्बन्धी नियम को लक्ष्य में रखकर आर्य सभासद् बनाये जाय। एक वर्ष आर्य सभासद् रहने के पश्चात् उसे अधि-कारी बनने का दिया जाय और आर्य समाज के प्रधान और मन्त्री बनने के लिए ३ वर्ष की अवधि रखी जाय। प्रवेश के सम्बन्ध में विचार करते समय यह भी आवश्यक है कि केवल सख्या बढाने पर ध्यान न दिया जाय आवश्यकतानु-सार सभासद् को सभासद् के अधिकार से वंचित करने का अधिकार और सभासदों से पृथक करना भी आवश्यक है। अनुशासन के आधार पर जो सभासद् मर्यादा-उल्लघन

करें उनके सम्बन्ध में कार्यवाही किया जाना आवश्यक माना जायेगा। सभ्यों के सम्बन्ध में यदि कोई सदस्य अकेला या कुछ को साथ ले कर विज्ञापन छापे जिससे आर्य समाज की बदनामी होने की सम्भावना हो या अदालत में मुकदमेबाजी करे या अखबारों में अपमानजनक लेख प्रकाशित कराये, उसका या उनका इस प्रकार का व्यवहार मर्यादा के प्रतिकूल समझा जाय और उनको सभासदी के अधिकार में वंचित करने पर विचार किया जाय।

इसी प्रसंग में यह भी स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि स्थानिक, प्रान्तीय और सार्वदेशिक स्तर पर न्याय सभाओं की व्यवस्था नियम पूर्वक की जाय, जिससे कलह या मतभेद उत्पन्न होने पर आर्य समाज के झगड़े घर में ही निपट जायें, अदालतों और अखबारों के द्वार न खटखटाने पड़ें।

प्रचार की विधि

प्रचार की विधि के सम्बन्ध में निम्नलिखित बातों पर ध्यान रखने की आवश्यकता है। (अ) वेदी की पवित्रता अर्थात् आर्य समाज की वेदी से केवल आर्य समाज के और वैदिक धर्म के सिद्धान्तों का प्रचार हो किसी राजनीतिक या साम्प्रदायिक दल के अनुकूल या प्रतिकूल वेदी का प्रयोग कदापि नहीं होना चाहिए। आर्य समाज की वेदी से सार्वजनिक रूप से आलोचना नहीं होनी चाहिए। प्रबन्ध सम्बन्धी शिकायतों पर केवल अंतरंग सभा विचार करे या आर्य सभासदों को बुलाकर विचार किया जाय। यह भी आवश्यक है कि उपदेश या व्याख्यान पूर्व निश्चित विषयों पर हों और एक दिन में जो व्याख्यान हों वह एकसे मिलते विषयों पर हों। भजन और भाषणों में भी कोई समन्वय लाने का यत्न होना चाहिए। सार्वदेशिक सभा का जो निश्चय कार्यक्रम के सम्बन्ध में हो चुका है वह संलग्न है।

प्रबन्ध

प्रबन्ध के विषय में विचार करते समय संस्थाओं की व्यवस्था पर विचार करना होगा। (अ) संस्थाओं का प्रबन्ध किस प्रकार हो कि उनका प्रभाव आर्य समाज के प्रचार की शैली पर न पड़े।

आर्य समाज के अधिकारों को सुरक्षित रखते हुए पृथक रूप से ट्रस्ट बनाने या रजिस्ट्री कराने पर विचार किया जा सकता है।

वर्तमान संस्थाओं के सम्बन्ध में प्रान्तीय सभाओं से निरीक्षण कराना चाहिए और यदि कोई संस्था उपयोगी न हो और केवल भार रूप हो उसको बन्द करने में संकोच नहीं होना चाहिए। कभी कभी अनुपयोगी संस्थाओं को किसी न किसी रूप में चलते रहने देने में आर्य समाज के गौरव को क्षति पहुंचती है। नवीन संस्थाओं को खोलने समय प्रान्तीय सभाओं की स्वीकारी आवश्यक मानी जाय।

केवल वही संस्थाएं चलती रहें या नवीन रूप में स्थापित हों जिनके सबन्ध में प्रान्तीय सभा का निश्चय चलाने या स्थापना के पक्ष में हो।

यह भी निवेदन कर देना आवश्यक है, जो प्रश्न सम्मति के लिए भेजे गए थे उनको भी तीन विभागों में विभाजित समझा जाय अर्थात् प्रवेश, प्रचार और प्रबन्ध और जो जो प्रश्न प्रवेश के सम्बन्ध के हैं, उनपर एक साथ विचार किया जाय। जो प्रचार के सम्बन्ध के हैं, उन पर एक साथ विचार किया जाय और जो प्रबन्ध सम्बन्धी हैं उन पर एक साथ विचार किया जाय। मेरी सम्मति में प्रश्न एक व दो व पांच और ११ प्रवेश सम्बन्धी है। प्रश्न संख्या ३, ४, ६, ७, ८, ९ व १० प्रचार सम्बन्धी है। प्रश्न संख्या १२, १३ प्रबन्ध सम्बन्धी है।

यह १३ प्रश्न सम्मतियों के लिए प्रान्तीय सभाओं को और विशेष व्यक्तियों को भेजे गए थे। उनके सम्बन्ध में जो उत्तर प्राप्त हुए हैं विश्लेषण की दृष्टि से एक चित्र विचारार्थ प्रस्तुत है।

नारियों का धनाधिकार

उपहार मे धन मिलता है, वह भी उसी का है। इस प्रकार का धन "स्त्री धन" कहा गया है। प्राचीन काल मे कोई-कोई शुल्क लेकर कन्या का विवाह करते थे, ऐसे विवाह प्राय क्षत्रियो मे ही होते थे। वह शुल्क कन्या को ही दिया जाता था। शुल्क की शर्त केवल वरपक्ष की शक्ति और वैभव को समझने के लिये लगायी जाती थी। यह शुल्क कही धन के रूप मे और कही पराक्रम के रूप मे चुकाना पडता था। आज भी बहुत सी जातियो मे कन्या के लिये जेवर लाने की शर्त करके व्याह किये जाते है। यह "स्त्री धन" स्त्री अपनी इच्छा के अनुसार सत्कार्य मे लगाती थी

स्मृतियों का विधान

श्री विद्याधर

हिन्दू-समाज मे स्त्री और पुरुष एक प्राण, दो देह माने जाते है, उनका स्वार्थ, उनका स्वत्व और उनका अधिकार एक होता है। पति सम्पति का और स्त्री का स्वामी है तो पत्नी भी पति के सर्वस्व की तथा उसके हृदय की भी स्वामिनी है। पुरुष गृहस्वामी होने के साथ ही बाहर काम करने वाला श्रमिक भी है, किन्तु स्त्री पुरुष की समस्त सम्पदा पर एकमात्र अधिकार रखनेवाली घर की रानी है। अत भारतीय नारी को जो आदर और सम्मान प्राप्त है, वह अन्यत्र दुर्लभ है। पति के धन पर तो समान अधिकार है ही हिन्दू-नारी की कुछ ऐसी सम्पत्ति भी होती है, जिस पर केवल उसी का व्यक्तिगत अधिकार होता है।

विवाहिता कन्या अथवा वधू को जो जवाहरात और सुवर्ण आदि के गहने मायके तथा ससुराल से मिलते हैं, उनपर वह स्वतन्त्र अधिकार रखती है, वह केवल उसी की सम्पत्ति है। उसके सिवा भी जो समय-समय पर पिता-माता, भाई, सास, ससुर पति एव अन्य गुरुजनो से उसको

स्त्री की मृत्यु के पश्चात् वह धन उसके पुत्र-पुत्रियो को मिलता था। सन्तान न होने पर अन्य निकटतम सम्बन्धी को प्राप्त होता था।

नारी को जीवन-निर्वाह के लिये मिला हुआ धन भी स्त्री-धन है, ऐसा महर्षि देवल का मत हैं। मिताक्षरा में स्त्री धन की सीमा और विस्तृत है। स्त्री को उत्तराधिकार मे प्राप्त धन, उसकी खरीदी हुई सम्पत्ति, बटवारे मे मिला हुआ धन, विवाह मे प्राप्त और अपने अधिकार मे आया हुआ धन-इन सबको "स्त्री-धन" कहा जाता है—

"रिक्थक्रयसविभा गपरिग्रहाधिममप्राप्तमेतव् स्त्री धनम्"
(मिताक्षरा)

मनुजी का मत है कि "स्त्री-धन" का व्यय करने के पूर्व नारी के लिये पति की सम्मति ले लेना परम आवश्यक है। कात्यायन कहते है—स्त्री-धन दो प्रकार का है।

सौदायिक और असौदायिक—पिता, माता, भ्राता और पति के द्वारा प्राप्त धन सौदायिक है, शेष असौदायिक है। सौदायिक धन पर नारी का पूर्ण अधिकार है, परन्तु असौदायिक धन का वह केवल उपभोग कर सकती है। नारद के मत मे सौदायिक धन के अन्तर्गत भी जो अचल सम्पत्ति है, उसे स्त्री बेच नही सकती। अधिकांश धर्म-शास्त्रों का ऐसा ही मत है। मिताक्षरा के लेखक विज्ञानेश्वर का मत है कि पति की मृत्यु के बाद विधवा उसके धन की पूर्णरूपेण स्वामिनी बन जाती है। याज्ञवल्क्य के मत से विधवा को यह भी अधिकार है कि वह सम्पत्ति अपनी कन्या को दे सके। मिताक्षरा का यह भी कथन है कि सम्मिलित परिवार मे किसी पुरुष की मृत्यु होने पर उसकी सम्पत्ति का पूरा उत्तराधिकार उसके पुत्रो को ही नही प्राप्त है तो नारी को कैसे प्राप्त हो सकता है ? इन्ही सब बातों पर विचार करके प्रिवीकौंसिल ने फैसला दिया था कि—"स्त्री उत्तराधिकार मे प्राप्त हुई सम्पत्ति को स्त्री-धन होने पर भी, बेच नही सकती, वह उसके पति के अन्य उत्तराधिकारियो को ही मिलेगी। देवल का कथन है कि यदि पति स्त्री-धन को खर्च करे तो उसे सूद के साथ पुन: नारी को लौटा दे। पति के सिवा दूसरे किसी को स्त्री-धन स्पर्श करने का भी अधिकार नही है। याज्ञवल्क्य के मत से यदि दुर्भिक्ष मे, धर्मकार्य में अथवा रोग की दशा मे पति स्त्री-धन का उपयोग करे तो उसे वह लौटाने को बाध्य नही है। कात्यायन कहते है, यदि पति ने उस समय इस शर्त पर धन को लिया हो कि लौटा देंगे, तो उसे अनुकूल समय पर अपने वचन का पालन करना चाहिये। पति बिना लौटाये ही मर जाय तो पुत्रो को ऋण समझ कर उसे स्वयं लौटाने का प्रयत्न करना चाहिये। कात्यायन का यह भी मत है कि असती अथवा दुराचारिणी स्त्री "स्त्री-धन" को पाने की अधिकारिणी नही है।

स्त्री की मृत्यु होने पर उसके धन की अधिकारिणी कन्या मानी गयी है। विवाहिता की अपेक्षा अविवाहिता का अधिक अधिकार है। विवाहिताओं मे भी जो दरिद्र हो, उसका विशेष अधिकार है। मनुजी के मत में स्त्री का निधन हो जाने पर उसके धन को पुत्र और स्त्री बराबर बाट ले। पुत्री का पुत्र (दौहित्र) भी नाना के धन का उत्तराधिकारी माना गया है। वसिष्ठ-धर्म-सूत्र मे दौहित्री को नही, पुत्री को ही पिता का वास्तविक प्रतिनिधि बताया गया है। महाभारत, बृहस्पति-स्मृति और नारदस्मृति के अनुसार पुत्र के अभाव में पुत्री ही धन की अधिकारिणी है, परिवार का दूसरा कोई व्यक्ति नही। अविवाहिता कन्याओ को भाई के रहने पर भी धन का भाग प्राप्त होता था (ऋग्वेद)। कौटिल्य-अर्थशास्त्र के अनुसार भाई के रहते हुए बहिन का पिता के धन पर अधिकार नही है। परन्तु शुक्राचार्य उस दशा मे भी अधिकार मानते है। विष्णु और नारद के मतमें यह अधिकार केवल अविवाहिता को है। याज्ञवल्क्य के मतानुसार प्रत्येक भाई धन का चतुर्थांश देकर बहिनका विवाह कर दे, ऐसा विधान है। देवल के मत से विवाह मे जितना आवश्यक हो उतना ही धन लगाना चाहिये। आपस्तम्ब, कुलूकभट्ट, गौतम, विष्णु तथा याज्ञवल्क्य आदि की राय मे संतान हीन विधवा पति के धन की उत्तराधिकारिणी मानी गयी। कौटिल्य ने केवल उसके भरण-पोषण तक ही अधिकार माना है। बृहस्पति केवल चल सम्पत्ति मे और दक्ष चल-अचल दोनों सम्पत्तियो मे उसका अधिकार स्वीकार करते है। जीमूतवाहन की भी यही राय है। याज्ञवल्क्य के मत मे वही विधवा पति के धन की उत्तराधिकारिणी है, जिसका पति परिवार से अलग हो गया हो। परन्तु बृहस्पति और जीमूतवाहन संयुक्त परिवार मे भी उसके इस अधिकार को अक्षुण्ण मानते हैं। इस बात मे प्राय सभी स्मृतिकार एक मत है कि विधवा का उसके जीवन-काल तक पति के धन पर अधिकार है, वह उसे बेच नही सकती। हा, दान और

(शेष पृष्ठ २१७ पर)

साम्प्रदायिकता का एकमात्र इलाज आर्य समाज

सिकन्दराबाद के ६० वें वार्षिकोत्सव पर दिए गये भाषण का सार

कुँवर सुखलाल जी, आर्य मुसाफिर

साम्प्रदायिकता केवल आर्य समाज द्वारा ही दूर की जा सकती है।

सरकार को साम्प्रदायिक पार्टियो की पीठ न ठोक कर साम्प्रदायिकता का बीज नष्ट करने का ठेका आर्य समाज के सुपुर्द करना चाहिए। जनता को आर्य समाज के संगठन को दृढ करना चाहिए।

स्वामी जी ने तो आर्य समाज को जन्म ही इस महायोजना के अन्तर्गत दिया था। उन्होने सब सम्प्रदायों के अन्य नेताओ की बैठको मे वेद की सत्यता को स्वीकार करने की प्रार्थना की। ईश्वरीय ज्ञान की पुस्तक वेद भारत की जनता के सामने लाने का प्रयत्न स्वामी जी ने किया किन्तु आर्य समाज बना कर भारत का कल्याण करते हुए वेदो का ज्ञान फैलाने तथा सत्य को प्रकाश मे लाने के लिये पूज्य स्वामी जी ने भारत की भटकी हुई जनता को "सत्यार्थ प्रकाश" द्वारा ज्ञान मार्ग पर लगाने की कोशिश की।

नेता कहते है आर्य समाज झगडालू है। बताओ आर्य समाज ने कब झगडा किया। जो जिसके गुण नही जानता वह उसकी निन्दा करता है तो उसका बुरा नहीं मानना चाहिये। भीलनी, मोती माणिक को पत्थर का टुकडा समझ फेक देती है और रत्तिया सभाल संभाल कर रखती है। क्यो? उसकी योग्यता ही इतनी है। वह मोतियो की कीमत नही जानती। एक रुमाल है, किसी को सफेद,

किसी को काला, नीला, और हरा नजर आया। क्यों? चार तरह के चारो ने चश्मे चढाये हुये थे। साम्प्रदायिकता के चश्मे वालो ने आर्य समाज को झगडालू कहा। हम झगडालू नही पर झगडालू से नजर आते है। क्यो? इसलिये आर्य समाज का दिल दिमाग हरकत मे ताजा है। यकीन न हो तो आर्य समाजी बनकर देखो। न भूत पास आए न चुडैल, न शखिनी न डकिनी, मुल्ला, पादरी सबका भय दूर। आर्य समाज ऐसी संस्था है "नभूतो न भविष्यति"। हम इसलिए झगडालू से लगते है क्योकि रेल, जेल सब जगह सक्रिय रहते है। आर्य समाजी गलत चीज देखकर रुक नही सकता।

एक पादरी ने कहा खुदा ने पहले दिन जमीन बनाई दूसरे दिन आकाश, तीसरे दिन वनस्पति और चौथे दिन सूर्य। सबने कहा सत्य वचन महाराज। वही एक आर्य भी खडा था। उसने कहा जब सूर्य चौथे दिन बना तब पहिले तीन दिन कैसे बन गये। सूर्य बिना तो दिन हो ही नही सकता। इसे सुन पादरी कहता है आर्य समाज झगडालू है। क्या यही झगडालू की व्याख्या है।

आर्य समाज मे और प्लेग की बीमारी मे लोग कोई फर्क नही मानते। प्लेग सबसे पहिले बम्बई मे फैला और आर्य समाज भी सबसे पहिले बम्बई में स्थापित हुआ। प्लेग चूहों से शुरू होती है। ऋषि को भी ज्ञान हुआ चूहों से। नेता आता है तो सफाई शुरु होती है। यदि चूहे मरने शुरू होजाय फौरन सफाई शुरू हो जाएगी। प्लेग आते ही सफाई शुरू होती है। आर्य समाज भी सफाई का संदेश लेकर आया है। इस कूडे कचरे को व्यवहार से, पुस्तकों से, मन से दूर करने के लिए दयानन्द तूफान और आंधियो मे आया। उसने विष के घूट पिए। लोग गाली देते थे, मजाक करते थे वह आ रहे है महाशय जी यही आर्य है आर्य।

यदि सभी प्रश्नो का, शकाओ का सही समाधान चाहिये तो आर्य समाज ही ऐसा है जो सबका उचित समाधानकारक तर्क शुद्ध वेदहित उत्तर दे सकता है। आर्य समाज का द्वार सबके लिए सदा खुला है।

साम्प्रदायिकता इतनी क्यो फैली है इसे रोकने के लिये क्या करना चाहिए यह केवल आर्य समाज ही जानता है।

[पृष्ठ २१५ का शेषांश]

धर्म करने मे उसके लिये कोई रुकावट नही है। कही-कही पुत्र की सम्पत्तिपर विधवा का नहीं, उसकी माता का अधिकार माना गया है। यह बात संयुक्त परिवार के लिये ही है और वह भी पुत्र यदि के न रहने पर ही। याज्ञवल्क्य ने यह भी लिखा है कि यदि नृशंस और अत्याचारी पति के दुर्व्यवहार से सती-साध्वी पत्नी का उसके साथ रहना असम्भव हो जाय तो पति की सम्पत्ति का एक तिहाई भाग उसे पृथक् रहकर निर्वाह करने के लिये मिल जाना चाहिये।

संस्था-परिचय

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय
हाथरस

आर्य-समाज के प्रचार और ऋषि दयानन्द के आदेशानुसार गुरुकुल-परम्परा मे श्री सेठ मुरलीधर जी हाथरस के सात्विक दान से इस संस्था का निर्माण हुआ। गुरुकुल हाथरस अलीगढ रोड पर नगर की हलचलो से दूर और स्वास्थ्यप्रद स्थान मे है।

आर्य जगत के आदरणीय नेता स्व० श्री नारायण स्वामी जी महाराज ने गुरुकुल का उद्‌घाटन किया था और जीवन पर्य्यन्त वे कुलपति रहे। प्रसिद्ध आर्य-महिला माता लक्ष्मीदेवी जी ने इस संस्था को वर्तमान रूप दिया, संस्था की उन्नति मे उन्होने अपने ो सर्वात्मना समर्पण कर दिया था। इसके अतिरिक्त आर्यसमाज के सभी उच्चकोटि के नेताओ का संस्था को सहयोग और आशीर्वाद प्राप्त रहा है। आर्यजगत् के आशीर्वाद से संस्था की रजत-जयन्ती मनाई जा चुकी है। निकट भविष्य मे शीघ्र ही स्वर्ण जयन्ती मनाने की योजना है।

संस्था मे भारत के सभी प्रान्तों की कन्याये शिक्षा प्राप्त कर रही है। थाईलैण्ड, अफ्रीका की कन्याये भी गुरुकुल में है। इस महगाई के युग मे भी गुरुकुल की शिक्षा आरम्भ मे अन्त तक निःशुल्क है। १४ वर्षीय पाठ्यक्रम समाप्त करने के पश्चात् कन्याओ को शिरोमणी उपाधि दी जाती है। गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन की पाठविधि के अनुसार अधिकारी और शिरोमणि परीक्षा मे उत्तीर्ण करने पर स्नातिकाये भारत के कई विश्वविद्यालयो की स्नातकोत्तर (एम०ए०) परीक्षा मे सम्मिलित हो सकती है।

ब्रह्मचारिणियो के भोजन व्यय के लिए कक्षा १ से ६ तक २५), २ से १० तक २७) और ११ से १४ तक ३१) रुपया मासिक सरक्षको से प्राप्त किया जाता है। भोजन के अतिरिक्त निवास, प्रकाश, सरक्षण आदि की भी सुविधा-

ये इसी शुल्क मे दी जाती है । प्रवेश के समय चार मास का शुल्क अग्रिम लिया जाता है ।

ब्रह्मचारिणियो का प्रवेश जौलाई मास मे शिक्षा-सत्र आरम्भ होने पर किया जाता है । जो सरक्षक अपनी कन्याओं को गुरुकुल-शिक्षा की सुविधाओ से लाभान्वित कराना चाहे वे गुरुकुल कार्यालय से पत्र-व्यवहार कर अपनी कन्या के लिये स्थान सुरक्षित करावे ।

आज भारत मे स्त्री शिक्षा के नाम पर जो कुछ हो रहा है उसमे अपनी कन्याओ की रक्षा करने और उन्हे भारतीय आदर्श नारी का रुप देने के लिये गुरुकुल सर्वोत्तम साधन है । अब तक सस्था मे १५० स्नातिकाये बन चुकी है और १५० कन्याये समुचित शिक्षा प्राप्त कर रही है । गुरुकुल आश्रम-पद्धति का लाभ उठाकर शिक्षा के साथ साथ आधुनिक दूषित वातावरण से माता-पिता अपनी कन्याओ की रक्षा भी कर सकते है ।

शिक्षा के पुनीत कार्य मे तीस वर्ष से अधिक समय से संलग्न इस सस्था की आर्थिक सहायता करना प्रत्येक आर्य बन्धु एव भारतीय नागरिक का कर्तव्य है । नि शुल्क शिक्षा के सहस्रो के बजट को जनता-जनार्दन की सहायता से ही पूर्ण किया जाता है। गुरुकुल को सहायता दानी महानुभाव अनेक प्रकार से कर सकते है ।

१—गुरुकुल शिक्षोन्नति के लिये छात्र-वृत्ति धन देकर

२—गुरुकुल विद्यालय भवन ।

३—गुरुकुल आश्रम-भवन ।

४—गुरुकुल वाटिका, गौशाला, कृषिशाला, शिल्पशाला आदि के निमित्त धन देकर सञ्चालको का उत्साह बढाकर और कन्याओ की शिक्षा मे सहायक बनकर धनीमानी पुण्य के भागी बन सकते है ।

नेताओं का आशीर्वाद

सस्था का राष्ट्रीय जीवन के साथ घनिष्ठ सम्पर्क रहा है । राष्ट्रीय आन्दोलन मे सस्था की ब्रह्मचारिणियो, शिक्षको, सञ्चालको, सब ने महत्वपूर्ण भाग लिया है । समय समय पर राष्ट्रीय नेताओं ने गुकुल पधार कर गुरुकुल को आशीर्वाद दिया है :—

१—मै इस सस्था को देखकर बहुत प्रसन्न हुआ । मैं प्रार्थना करता हूँ कि दिन-दिन इसकी उन्नति हो ।

—मदन मोहन मालवीय,

२—सासनी कन्या गुरुकुल देखकर मुझे बडी खुशी हुई । सस्था के कार्य मे हम बहुत प्रभावित हुए । मैं गुरुकुल की सफलता के लिये प्रार्थना करता हूँ

—वल्लभ भाई पटेल

३—इस गुरुकुल मे हमारी संस्कृति और सभ्यता के अनुरुप शिक्षा दी जाती है । इसे देखकर मुझे वास्तविक हर्ष हुआ ।

—गोविन्द वल्लभ पन्त

४—कन्या गुरुकुल देखकर मुझे बडी प्रसन्नता हुई । मै इसकी सफलता पर मुग्ध हूँ ।

—श्री प्रकाश (राज्यपाल बम्बई)

५—कन्या गुरुकुल की मै उत्तरोत्तर प्रगति चाहता हूँ। यहाँ कन्याओ को वैदिक-साहित्य का परिचय कराया जाता है।

—विनोवा

उपाधि मान्यताः—

१—गुरुकुल पाठ्य-क्रम की "शिरोमणि" स्नातिका परीक्षा उपाधि को आगरा, दिल्ली, उस्मानिया (आन्ध्र) गोरखपुर विश्व-विद्यालयो से सस्कृत, हिन्दी, दर्शन, राजनीति विषयो मे एम०ए० परीक्षा मे बैठने के लिये मान्यता प्राप्त है।

२—अधिकारी परीक्षोत्तीर्ण ब्रह्मचारिणी यू०पी०बोर्ड की इण्टर परीक्षा मे बैठ सकती है।

३—शिरोमणि परीक्षोत्तीर्ण स्नातिकाओ को यू०पी० व आन्ध्र राज्य मे इण्टर कक्षाओ तक हिन्दी व सस्कृत अध्यापन का अधिकार प्राप्त है।

सबको यह विदित ही है कि यह एक सार्वजनिक सस्था है और जनता के दान आदि पर ही इसका निर्वाह और सचालन होता है। हम प्रतिवर्ष उदार, **गुरुकुल** शिक्षा प्रेमी बंधुओ की सेवा मे **गुरुकुल** की आर्थिक आवश्यकताओ को रखते है क्योकि सस्था का कलेवर प्रतिवर्ष उन्नति को प्राप्त होता जा रहा है, अत आवश्यकताये बनी रहती है, परन्तु इस समय म गाई के कारण **गुरुकुल** का आर्थिक सकट बहुत बढ गया है और **गुरुकुल** की ख्याति, महत्ता और स्थिति को ध्यान मे रखते हुए सभी आवश्यकताओ की पूर्ति के लिए बाध्य रुप से अनिवार्य हो जाता है। इस समय **गुरुकुल** की विशेष आवश्यकताऐ निम्न मदो की पूर्ति के लिए है। आशा है प्रगतिशील उदार मनस्क दानी महानुभाव अपनी अपनी रुचि के अनुसार निम्नलिखित मदो मे से किसी या किन्ही की पूर्ति के लिए धन से सहायता करके शिक्षा जैसे पवित्र कार्य-सचालन मे हमारा हाथ बटावेगे और हमे उत्साहित करेगे।

५००००) विद्यालय भवन	५००००)सुरक्षित भण्डार
५००००) छात्रावास	५०००)व्यायामशाला
१५०००) औषधालय	१००००)पुस्तकालय
१००००) शिल्प-विभाग	५०००) गौशाला
३०००) अध्यापक अध्यापिकाओ के लिए परिवार गृह	१००००) भोजनालय
५०००) मुख्याधिष्ठात्री कार्यालय	१००००) वेदगद्दी के लिए
५०००) चित्रकला कमरा	१००००) अतिथिशाला
५०००) सगीत भवन	१००००) वाटिका फुलवाडी
१००००)बाल-शिक्षा	

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की स्वर्ण जयन्ती व आर्य महासम्मेलनो के अन्तर्गत

शिक्षा-सम्मेलन

सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा की स्वर्णजयन्ती तथा नवम-आर्य-महासम्मेलन के अन्तर्गत रामलीला मैदान, दिल्ली मे १८ मई १९६१ को विक्रम विश्वविद्यालय के उपकुलपति (वाइसचान्सलर) डा. गोवर्धनलाल जी दत्त की अध्यक्षता मे एक शिक्षा-सम्मेलन सम्पन्न हुआ जिसका उद्घाटन केन्द्रीय शिक्षा-मन्त्री माननीय डा के. एल. श्रीमाली ने किया। इसके सयोजक सार्वदेशिक विद्यार्य सभा के उपमन्त्री श्री प. धर्मवीर वेदालंकार थे जिन्हे श्री सत्यव्रत वेदालङ्कार एम. ए ने प्रशसनीय सहयोग दिया। हजारो की सख्या मे उपस्थित जन-समुदाय ने तुमुल जयघोष और तालियो की गडगडाहट मे बडे हर्ष के साथ डा. श्रीमाली के भाषण को सुना। सारे देश के अनेको शिक्षा-शास्त्रियो ने देश की भावी शिक्षाप्रणाली पर अपने विचार बहुत सुन्दर रूप मे व्यक्त किये। सम्मेलन मे शिक्षा विषयक आठ प्रस्ताव सर्वसम्मति मे पारित हुए। सम्मेलन हर प्रकार से बहुत सफल रहा।

(क) सम्मेलन के उद्घाटन-भाषण मे डा श्रीमाली ने शिक्षाविदो से माँग की कि वे देश की शिक्षाप्रणाली पर विचार करते हुए उन नैतिक, सास्कृतिक, धार्मिक तथा शैक्षणिक मूल्यो को न भूले जिन्हे स्वामी दयानन्द जैसे महान् ऋषियो ने अपने उपदेशो मे बताया है। महर्षिदयानन्द को श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हुए डा. श्रीमाली ने कहा की ऋषि दयानन्द ने उस समय हमे चेतना प्रदान की जब कि हमे उसकी सबसे अधिक जरूरत थी। उन्होने जो कुछ भी उपदेश दिये है उससे हमे सदा ही प्रेरणा मिलती रहेगी। उन्होने यह भी चेतावनी दी कि शिक्षा के क्षेत्र मे विदेशियो की अन्धाधुन्ध नकल हमारे लिए बहुत घातक सिद्ध होगी। वह तो हमे नही करना है पर हमे दूसरे देशो की सस्कृतियो के अच्छे तत्व जरूर ही ग्रहण करने है और साथ ही अपनी सस्कृति एव शिक्षा प्रणाली के विशिष्ट तत्व दूसरे देशो को देने भी है। इस अवसर पर डा श्रीमाली ने यह भी घोषणा की कि भारत सरकार ने अब गुरुकुल विश्वविद्यालय कागडी को भी दूसरे विश्वविद्यालयो की ही तरह उपाधिया देने का नियमित अधिकार प्रदान करने का निश्चय कर लिया है जिसका चारो तरफ से जनता ने बहुत स्वागत किया।

(ख) इसके उपरान्त शिक्षा सम्मेलन के अपने अध्यक्षीय भाषण में डा. जी. एल. दत्त ने कहा कि प्रजातन्त्र के इस युग मे ससार मे ऐसी शिक्षा की आवश्यकता है जिसमे कल्पना, सहानुभूति और बौद्धिक शिक्षा आदि का पुट अधिक होना चाहिये, जिससे हमारे भावी नागरिक अपने देश की तथा सारे संसार की अच्छी सेवा कर सके। आपने कहा कि योग्य नागरिक निर्माण करने के लिए हमारे पास वेदो के द्वारा प्रदत्त ढाँचा उपलब्ध है जिससे विद्यार्थी विवेकशील, कर्मठ, स्नेहशील व धार्मिक बन सकते है। अपने बालको को तेजी से बदलते हुए युग के अनुकूल बनाने के लिए साहित्य और विज्ञान दोनो का अध्ययन कराना आवश्यक है। आपने अध्यापको को समुचित वेतन देने की भी मांग की और इस बात पर बल दिया कि छात्रो को उनके चारित्रिक व नैतिक उत्थान के लिए धार्मिक शिक्षा देनी आवश्यक है

(ग) इस सम्मेलन मे जिन शिक्षाशास्त्रियो ने भाषण दिये उन मे सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री पूर्णचन्द जी ऐडवोकेट, प्रो. सत्यव्रत जी उपकुलपति गुरुकुल विश्वविद्यालय कागडी, ससद् सदस्य श्री नरदेव जी स्नातक मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल वृन्दावन, बडोदा आर्य कन्या महाविद्यालय के श्री प आनन्दप्रिय जी, डा. हरिदत्त जी अध्यक्ष हिन्दी-सस्कृत विभाग, कानपुर डा सूर्यदेव जी अजमेर, श्री प. धर्मदेव जी (देवमुनि जी) विद्यामार्तण्ड, आचार्य विश्वश्रवा: जी, प्रिन्सिपल ईश्वरदास जी मा० केदारनाथ जी, श्रीमती सावित्रीदेवी आचार्य एम०ए० मिर्जापुर, श्रीमती शकुन्तला देवी गोयल, मेरठ, आचार्य राजेन्द्रनाथ जी, आचार्य भगवानदेव जी, प्रिन्सिपल हरिश्चन्द्रजी तथा प्रिन्सिपल महेन्द्रप्रताप जी शास्त्री, श्री प० भीमसेन जी विद्यालकार, डा० विजयेन्द्र, जी स्नातक दिल्ली विश्वविद्यालय आदि के नाम विशेषतया उल्लेखनीय है। प्रादेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा के प्रधान प्रिन्सिपल सूरजभान जी, डी० ए० वी० कालेज जालन्धर ने भी इसमे भाग लिया।

प्रमुख आर्यों के सम्मेलन का प्रस्ताव

इस सम्मेलन ने १३ अत्यन्त आवश्यक विषयो पर गम्भीर विचार किया और इस निष्कर्ष पर पहुचा कि इन विचारो की पृष्ठभूमि मे इन प्रश्नो का किस प्रकार और किस सीमा तक हल किया जा सकता है और वह कहा तक क्रियान्वित किया जा सकता है इसको नियमित रूप से करने के लिए एक छोटी सी समिति बनाई जाय जो सारी बातो को समस्त पहलुओ से देखकर अपना प्रतिवेदन सभा को प्रस्तुत करे।

यह प्रस्ताव श्रीयुत नवनीतलाल जी ऐडवोकेट ने प्रस्तुत किया जिसका समर्थन श्रीयुत मिहिर चन्द्र जी धीमान्, श्री प भगवान स्वरूप जी, श्री कविराज हरनामदास जी, आचार्य प्रियव्रत जी, श्रीयुत उग्रसेन लेखी और श्री जगीलाल जी ने किया। सम्मति लेने पर प्रस्ताव सर्व सम्मति से पारित हुआ।

यह भी निश्चय हुआ कि समिति की नियुक्ति का अधिकार सम्मेलन के प्रधान श्रीयुत घनश्यामसिह जी गुप्त को दिया जाय। यह समिति तीन मास के भीतर भीतर अपना प्रतिवेदन सार्वदेशिक सभा को भेज देवे।

इस निश्चय के अनुसार श्रीयुत घनश्यामसिह जी गुप्त ने निम्नलिखित सज्जनो की समिति नियुक्त कर दी है —

१ श्री रघुवीर सिह जी शास्त्री
२. श्री प्रो. शेरसिह जी एम. ए.
३. श्री प्रिंसिपल सूर्यभानु जी
४ श्री लाला व्रजलाल जी
५ श्री पं प्रकाशवीर जी शास्त्री
६ श्री लक्ष्मीदत्त जी दीक्षित

नवम आर्य महासम्मेलन में पारित शोक प्रस्ताव

यह नवम आर्य महासम्मेलन आर्यसमाज और आर्य जाति के निम्नलिखित, नेताओं विद्वानो, तथा अन्य उत्साही कार्यकर्त्ताओं के निधन पर दुःख प्रकाशित करते हुए आर्य समाज तथा आर्यजाति के प्रति की गई उनकी सेवाओ के लिए श्रद्धांजलि अर्पित करता और परमात्मा से दिवंगत आत्माओ की शान्ति के लिए प्रार्थना करता है —

१ श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज
२. श्री स्वामी सत्यानन्द जी महाराज
३. श्री स्वामी आत्मानन्द जी महाराज
४. श्री स्वामी वेदानन्द जी तीर्थ
५ श्री स्वामी त्यागानन्द जी
६. श्री स्वामी कर्मानन्द जी
७ श्री स्वामी विश्वेश्वरानन्द जी
८. श्री प० इन्द्र विद्यावाचस्पति जी
९. श्रीमती माता लक्ष्मीदेवी जी
१०. श्री दीवान हर विलास जी शारदा

११. श्री बा० व्रजेन्द्र स्वरूप जी
१२. श्री पं० शान्ति स्वरूप जी
१३. श्री डा० सुखदेव जी तनेजा
१४. श्री बलीराम जी
१५ श्री प्रो० घीसूलाल जी
१६. श्री चौ० जयदेव सिंह जी
१७. श्री रामदत्त जी शुक्ल
१८. श्री बा० गजाधर प्रसाद जी
१९. श्री प० अवध बिहारी लाल जी
२०. श्री प० अमीचन्द जी विद्यालंकार
२१ श्री गोपाल जी बी०ए
२२. श्री प० शंकरदत्त जी
२३ श्री प० रामगोपाल जी विद्यालंकार
२४ श्री प० रामचन्द्र शर्मा
२५. श्री प० विजयशंकर जी
२६. श्री गोविन्दराम हासानन्द
२७. श्री सूर्यदत्त जी
२८ श्री विद्याभास्कर रामावतार
२९. श्री बंशीलाल जी व्यास
३० श्री हरनामदास कपूर
३१. श्री सेठ दीपचन्द जी पोद्दार
३२. श्रीमती यशोदा देवी जी
३३. श्रीमती जयदेवी जी
३४. प० बस्ती राम जी
३५ महाराज हरि सिंह
३६. श्री मामराम सिंह जी
३७. श्री मोहन लाल पोद्दार वानप्रस्थी
३८. श्री ब्रह्मदेव नारायण सिंह ऐडवोकेट पटना
३९. श्री प० जयदेव जी मीमांसातीर्थ
४० अजीत सिंह सत्यार्थी
४१ प्रि० साँईदास जी
४२ राजमाता शाहपुरा
४३. स्वामी चन्द्रानन्द जी
४४ स्वामी सेवकानन्द जी
४५. श्री यदुवंशी सहाय जी
४६ श्री सत्यपाल जी
४७. श्री ज्ञानचन्द जी एडवोकेट
४८. श्रीमती मनोरमादेवी जी
४९. श्री इन्द्रदेव जी
५० श्री लक्ष्मी चन्द जी
५१ श्री प० विष्णुमित्र जी
५२ श्री मती रमाबाई जी

(ख) हुतात्माओं के प्रति श्रद्धांजलि

यह नवम आर्यमहासम्मेलन हिन्दी सत्याग्रह आन्दोलन के हुतात्मा श्री सुमेरसिंह जी तथा अन्य हुतात्माओं के प्रति अपनी श्रद्धाजलि प्रस्तुत करता हुआ आर्य धर्म और संस्कृति की रक्षार्थ किए गए उनके त्याग और बलिदान को आदर की दृष्टि से देखता है।

विकासवाद

एक विशेष दृष्टिकोण से

श्री पूर्णचन्द

विकासवाद पश्चिमी विज्ञान का एक महत्वपूर्ण अंग है। संसार की समस्याओं का समाधान वहाँ के बहुत से विज्ञान व तत्वज्ञान वाले इस सिद्धान्त के आधार पर सुलझाने का प्रयत्न करते है। इस सिद्धान्त या वाद को समझने के लिये हमे संसार या जगत को अपने सन्मुख रखना होगा।

जड़ और चेतन जगत

ससार दो भागो मे विभाजित दृष्टिगोचर होता है। एक जड जगत और दूसरा चेतन जगत।

जड और चेतन जगत में मुख्यतः भेद "जीवन" का है। विकासवाद के वह पोषक जो केवल प्रकृति या मैटर को ही एक अनादि सत्ता मानते है उनके सन्मुख सबसे पहिला प्रश्न यह है कि जड जगत से चेतनता या जीवन या जीव की उत्पत्ति किस प्रकार से हुई। उनका कहना है कि प्रकृति या मैटर मे शक्ति या गति स्वयमेव या बाह्य सघर्ष से उत्पन्न हो जाती है और वह शक्ति विकसित होने पर जीव या चेतनता का रुप धारण कर लेती है। उनकी सम्मति मे जीव कोई पृथक अनादि सत्ता नही है। वह केवल प्रकृति मे परिवर्तित और विकसित रुप है। यह सिद्धान्त आज तक किसी भी परीक्षण से सिद्ध नही हुआ है। क्रियात्मक चेतनता जड जगत मे स्वयमेव केवल प्राकृतिक कारणो से उत्पन्न होती हुई कही दिखाई नही देती। केवल थोडा सा परिवर्तन हो जाना या विशेष प्रभाव की गति उत्पन्न हो जाने से किसी जड पदार्थ को चेतनता की पदवी प्रदान नही कर सकता। अनेक समस्याये ऐसे जडवादियों के लिए सुलझाने के लिये उपस्थित रहती है। विकास को समझने के लिए हमे जड जगत और चेतन जगत दोनो को अपने सामने रखना होगा और उनमे जो मौलिक भेद हे उनको भी समझना होगा।

सारे जगत में एक चक्र

जड जगत और चेतन जगत मे भी एक चक्र चलता हुआ दिखाई देता है वह चक्र उत्पत्ति वृद्धि, और नाश का है।

हम जड जगत मे देखते है कि एक पहाड का पत्थर बहुत छोटा होता है और वही पत्थर जलवायु और सूर्य के ताप से बहुत बडा हो जाता है, फिर वही पत्थर उसी जल और वायु के सघर्ष से अपने स्थान से हिलकर गिरकर चकनाचूर हो जाता है और उसका रुप बिलकुल परिवर्तित हो जाता है। वृक्ष जगत मे भी वही दृष्य सामने है। बीज बोया गया, अकुर निकला, छोटा पेड बना, पेड बढा, डाल, फल वा फूल से लदा, और फिर खडे २ सूख गया और गिरकर या आधी के प्रभाव से गिरकर अपने रुप को परिवर्तित कर लेता है। इसी प्रकार चेतन जगत मे भी वही चक्र दिखाई दे रहा है। पशुओ प..यो और मनुष्यो मे यह क्रम बराबर निर्विवाद रुप से पाया जाता है। उत्पत्ति होती है, फिर उत्पत्ति के पश्चात वृद्धि आरम्भ होती है। वृद्धि में विकास होता है और वृद्धि मे विकास हो जाने पर ऐसे कारण उपस्थित हो जाते हैं या वृद्धि रुक जाती है। न केवल वृद्धि रुक जाती है परन्तु ह्रास आरम्भ हो जाता है और एक समय ऐसा आता है कि इस वृद्धि और विकास का बिलकुल अत होकर नाश का रुप सामने आ जाता है। चेतन जगत में इसको जन्म वृद्धि और मृत्यु के रुप में हम समझ सकते है।

उत्पत्ति क्या है

इस चक्र को समझने के लिये इसके आरम्भिक रुप को समझ लेना परमावश्यक है। विकासवाद का सीधा सम्बन्ध उत्पत्ति की प्रक्रिया से है।

विकासवाद का आविष्कार डार्विन के द्वारा हुआ और डार्विन ने अपनी पुस्तक का नाम "The Origin of Specie" अर्थात भिन्न भिन्न प्रकार की योनियों की उत्पत्ति रखा। उत्पत्ति समझने के लिये जरा गहराई मे जाना होगा।

उत्पत्ति और गर्भ

उत्पत्ति का सीधा सम्बन्ध "गर्भ" की रुपरेखा से है। उत्पत्ति का प्रत्यक्ष रुप सामने आने से पूर्व एक दशा उसकी ऐसी होती है जो हमारी आखो के सामने प्रत्यक्ष नही होती। उस दशा का नाम "गर्भ" है। गर्भ का अर्थ है "जो दिखाई न दे"।

गर्भ कब और कैसे धारण होता है इसका प्रत्यक्ष नही हो पाता जब उत्पत्ति का सूक्ष्म रुप अपने सामने आता है तब ही से उत्पत्ति का ज्ञान या मान होने लगता है। उत्पत्ति की प्रक्रिया को समझने के लिये फिर बडी समस्या हमारे सन्मुख खडी हो जाती है जो जड और चेतन जगत के भेद समझने के समय सामने आई थी। उत्पत्ति का अर्थ यदि यह है कि किसी पूर्व से उपस्थित सत्ता ने विशेष कारणो से नवीन रुप धारण किया है या विशेष परिस्थिति मे प्रवेश किया है तो फिर वही प्रश्न उपस्थित होगा कि वह पूर्व से स्थिति रखने वाली सत्ता क्या थी और उसकी क्या विशेषतायें थी। इस उपस्थिति की समस्या को समझने के लिये यदि हम शरीर और जीव के सम्बन्ध को समझने का यत्न करे तो बडा न्याय होगा।

शरीर और जीव

शरीर और जीव का सम्बन्ध हम इस प्रकार समझ सकते है जैसे मकान और मकान मे रहने वाला शरीर गृह या मकान के स्थान पर है और जीव उस मकान मे रहने वाले के समान है।

जीव को कार्य करने का क्षेत्र चाहिये । ज्ञान प्राप्त करने के साधन चाहिये और ज्ञान और कार्य के प्रभाव और परिणाम को प्राप्त करने के लिये विशेष परिस्थिति चाहिये। शरीर आत्माओ को कार्य करने के लिये ज्ञान की उपस्थिति के लिए और उनका फल भोगने के लिये प्राप्त होते है। शरीर की दृष्टि से ऊपर का चक्र दिखाई देता है अर्थात उत्पत्ति, वृद्धि और नाश का। उत्पत्ति से पूर्व और नाश के पश्चात हर शरीर मे एक चेतन शक्ति जो दिखाई देती है वह उपस्थित नही रहती है। वह स्थान परिवर्तन करके या गति करके कही चली जाती है। यदि शरीर और जीव के इस सम्बन्ध को हम यदि समझ रखे तो विकास बाद के सिद्धान्त को हम आसानी से समझ सकेंगे।

चेतन जगत में भिन्न २ रूप

चेतन जगत में शरीर की दृष्टि से हमे भिन्न भिन्न रूप दिखाई देते है।

क—सब से पहले वृक्ष जगत हमारे सामने आता है इसमे विशेषता यह है कि इनका सिर नीचे और पैर उपर हैं। वृक्षो मे जल और खाद, नीचे से लिया जाता है। और उसके ही कारण उसका विकास होता है।

ख—वृक्षो से हम ऊपर या आगे चले तो मछलियाँ पक्षी हमारे सन्मुख आयेगे। मछली और पक्षियो मे जल में तैरने और हवा मे उडने की शक्ति है उनके शरीर का ढाँचा विशेष प्रकार का बना हुआ है।

ग—पशुओ मे अनेक प्रकार हैं। परन्तु हम उन्हे समझने के लिए दो मुख्य विभागो में विभाजित कर सकते हैं।

दो पैर वाले और चार पैर वाले। चार पैर वाले पशु है। या जानवर है और दो पैर वाला पशु या जानवर केवल मनुष्य ही हैं। चार पैर वालो में कुछ ऐसे भी पशु है जिनमे पैर बिलकुल नही हैं। इनको रेपटाइलस (reptiles) या पेट के बल रेंगने वाले जन्तु कहा जाता है। पैरो का होना या न होना चेतन जगत मे एक विभाजन का प्रमुख आधार है। अर्थात नीचे सिर और ऊपर पैर होना वृक्ष योनि है। बिलकुल पैर न होना, रेंगने वाले जन्तु (reptiles) है। दो पैरो के साथ पर होना शक्ति होना पक्षी हैं।

जिनके हाथ पैर बराबर है वह चार पैर वाले कहलाते है। वह चौपाये हैं और उनकी सीधी गिनती पशुओ और जानवरो मे है। जिनके हाथ छोटे और पैर बडे है वह खडा हो सकता है। मनुष्य शरीर की यह विशेषता है।

मनुष्य या बन्दर—

पशुओ मे बन्दर या वानर ऐसा पशु है जो आवश्यकता होने पर दो पैर पर खडा हो कर थोडी देर के लिए आवाज निकाल सकता है। इस प्रवृत्ति मे समानता को देख कर विकासवाद वाले वानर को मनुष्य का पूर्वज मानते है। अभिप्राय केवल यह प्रतीत होता है कि मनुष्य और वानर के शरीर की निर्माण व्यवस्था मे कुछ अधिक समानता है और इस समानता को देखकर वानर को मनुष्य का पूर्वज कहने का अवसर मिल जाता है। वास्तविक परिस्थिति क्या है अब यह समझ लेना आवश्यक है। इस समस्या को समझने के लिए जो कठिनाइया सामने आती है उनको सुलझाने का यत्न होना चाहिए।

१—विकास के आरम्भ और अन्त के लिए किसी एक स्थाई सत्ता का मानना आवश्यक है, जो भिन्न भिन्न परिस्थितियों में से गुजरता हुआ अपना स्थाई रूप और स्थान रखता हो। शरीरों के सम्बन्ध मे ऊपर लिखा

चक्र और उसका प्रत्येक अंग नाश या मृत्यु सदैव अपने सम्मुख रखना चाहिए। शरीर मे विकास होने के पूर्व यह आवश्यक है कि कोई ऐसी स्थाई सत्ता हो जो शरीर के नाश के साथ नाश को प्राप्त न हो और शरीर के नाश के बाद दूसरे रूप मे प्रविष्ट हो सके यदि नाश या मृत्यु अन्तिम पटाक्षेप या Dropscene है तो फिर विकास का प्रश्न ही नही रहता। यदि कोई विद्यार्थी प्रारम्भिक श्रेणी से लेकर एम.ए तक अपने ज्ञान मे विकास प्राप्त करता जावे तो हम कह सकेगे कि उसका ज्ञान विकसित हुआ। यदि हर श्रेणी मे उत्तीर्ण होने के पश्चात उसकी सत्ता परिवर्तित हो जाये तो विकास का प्रश्न नही होगा। सदैव एक नवीन सत्ता की उपलब्धि का प्रश्न सम्मुख रहेगा जिसका आगे मे और पीछे से सम्बन्ध न हो।

२—विकास के समझने मे दूसरी कठिनाई यह है कि यदि कोई स्थाई सत्ता नही मानी जाती है तो विकास कैसा? विकासवाद वालो का कहना है कि वाह्य परिस्थितियो के प्रभाव से शरीरधारियो को कष्ट या दुःख प्रतीत होता है उनमे Struggle for existence या जीवन सघर्ष होता है तो उस सघर्ष के कारण उनमे उस कष्टमय परिस्थिति से वचने के लिए परिश्रम करना पड़ता है और उस परिश्रम के परिणाम स्वरूप कुछ उस कठिनाई से बच जाते हैं, और एक नवीन रूप उनको प्राप्त होता है जिसको विकसित रूप कहा जाता है। यदि कोई स्थाई सत्ता न होगी तो फिर वही प्रश्न होगा कि कठिनाई किसको थी, कठिनाई किसकी दूर हुई और मुक्ति किसको प्राप्त हुई

३—एक कठिनाई यह भी है कि हम वर्तमान मे भी यह देखते है कि सब श्रेणियो की योनिया उपस्थित है। वृक्ष भी है, मछलियाँ और छिपकलिया भी है, सर्प भी है चौपाये भी है और दो पैर वाले मनुष्य भी। यदि सर्व प्रकार की योनिया एक साथ उपस्थित हैं तो किसी एक योनि का परिवर्तित हो कर दूसरी योनि का रूप धारण करना आवश्यक प्रतीत नही होता। केवल परिणाम यह निकाला जा सकता है कि आवश्यकता के अनुसार सदैव सर्व प्रकार की योनिया उपस्थित रहती हैं उनमे स्थाई सता जीव का प्रवेश आवश्यकतानुसार या कर्मो के आधार पर होता रहता है।

४—कए यह भी कठिनाई है कि मनुष्य को भी अपने वर्तमान रूप मे अनेक कठिनाइया है। मनुष्य से अच्छी कोई योनि दिखाई नही देती और न आगे इस प्रकार के विकास की आवश्यकता है जहा मनुष्य का रूप बदल कर ऐसा रूपधारण हो जिसे अधिक विकसित कह सके इसके साथ ही विज्ञान ने अपनी खोज से ऐसे भी प्रमाण उपस्थित और उपलब्ध कर लिये है जिनसे यह सिद्ध होता है कि अति प्राचीन काल मे भी मनुष्य अपने वर्तमान रूप मे बल्कि उसमे भी अधिक बलिष्ठ और विशाल रूप मे विद्यमान था जो पिछली शताब्दियो की खोपडिया मिली है या अन्य चिन्ह मिले हैं उनसे यह सिद्ध होता है कि अति प्राचीन काल मे भी मनुष्य अपने रूप मे उपस्थित था। आजकल सभ्य जगत मे अनेक ऐसे व्यक्ति है जिन्हे मूछ रखने से ग्लानि है। और वह वर्षो तक इनको कटाते रहते है फिर भी आजतक उत्पत्ति इस रूप मे देखने मे नही आई कि मूछो से छुटकारा मिल सके।

अन्त मे यह विचारना है कि विज्ञान का विकास सम्बन्धी सिद्धान्त रोचक अवश्य है इसका सम्बन्ध प्राणी जगत के अवलोकन से है। इसका आरम्भ मैलथस (malthous) प्रसिद्ध अर्थशास्त्री के इस सिद्धान्त से हुआ कि खाने वाले अधिक और खाद्य सामग्री सीमित है खाने वालो मे खाद्य पदार्थों की प्राप्ति के सम्बन्ध मे सघर्ष स्वाभाविक है इसका ही नाम struggle for existence है जो अपने बल और पुरुषार्थ से पर्याप्त खाने की सामग्री को प्राप्त कर लेता है और प्रत्येक जीवन की रक्षा कर सकता है इसका नाम

"survival" है। जिस स्थान मे कोई प्राणी रहता है उसका नाम "environment" है। जन्म से लेकर मरण के बीच की जो अवधि है उसका नाम आयु है। प्रत्येक प्राणी के लिए विकास और अविकास का प्रश्न व्यक्तिगत आधार पर समझा जा सकता है। सारे जगत मे विकास का सिद्धान्त न सिद्ध हो सकता है और न उसके सिद्ध होने की आवश्यकता है। प्राणियो की शरीर रचना मे जो समानता है उसका अभिप्राय यह है कि इसका निर्माता और निमित कारण कोई ऐसी महान शक्ति है जो अनादि जीवो को कर्म का क्षेत्र और भोग प्राप्त करने के लिए और ज्ञान को उपलब्धि के भिन्न भिन्न प्रकार के शरीरो की रचना का निमित होता है और उन प्राणियो के उपयोग के लिए भिन्न भिन्न प्रकार के पदार्थो को रचना है और रचना की प्रक्रिया के साथ साथ, उसकी न्याय व्यवस्था भी प्रचलित रहती है अर्थात प्राणियो को उनके पुरुषार्थ अथवा कर्मो के अनुसार रचित पदार्थ कम या अधिक मात्रा मे उपलब्ध होते रहते है। यदि निवासवाद को उपरोक्त दृष्टि से समझा जावे तो नास्तिकपन के भावो का निराकरण होगा और अज्ञेयवाद का भी अन्त होगा। चेतन और जड जगत को सामूहिक रूप से अपने सम्मुख रख कर यदि स्वाध्याय करना होगा तो विकास भी सम्मुख रहेगा। विकास के साधन भी सम्मुख होगे और ह्रास के कारणो मे बचने का अवसर मिलेगा।

ब्रह्माकुमारी आन्दोलन

शिवदयालु आर्य

ब्रह्माकुमारी नाम का यह एक सम्प्रदाय भारत वर्ष के उत्तरीय भाग में लगभग २० वर्षों से प्रचलित है । इस सम्प्रदाय की लगभग ६० शाखाएं विभिन्न नगरों एवं उपनगरों में आज दिन चल रही हैं। इस सम्प्रदाय की यह एक विशेषता है कि सब प्रकार का कार्य नारियों द्वारा ही होता है। प्रत्येक शाखा की मुख्य प्रचारिका नारी ही है। पहले यह संस्था ओ३म् मण्डली के नाम से सिन्ध में प्रचलित थी।

नाम—अब इस संस्था का नाम ब्रह्मकुमारी प्रसिद्ध है। संस्था के प्रवर्तक त्रिमूर्ति ब्रह्मा के प्रति आत्म समर्पण करने के कारण सर्व साधिकाएं एवं प्रचारिकाएं ब्रह्म कुमारी कहाती है। कैथालिक ईसाईयों में कुमारिकाएं नन्स कहाती हैं और सब अविवाहिता (वरजिन्स) होती है। इसी प्रकार इस सम्प्रदाय में भी यथा सम्भव प्रचारिकाएं अविवाहिता ही होती है। वैसे विवाहिता नारियां पति को त्यागकर अथवा पति द्वारा त्यागी जाकर भी इस सम्प्रदाय में साधिकाएं बनती और कुमारी कहाती हैं। इस सम्प्रदाय के नरों को ब्रह्मकुमार कहते हैं भले ही वह विवाहित क्यों न हो। पति-पत्नी दोनों भी साथ साथ दीक्षित होकर कुमार कुमारी कहाते हैं।

प्रवर्तक—इस सम्प्रदाय के प्रवर्तक दादा लेखराज जी है जो कभी सिन्ध में ओ३म् मण्डली के प्रवर्तक थे। कहा जाता है कि उन पर किसी युवती को अपहरण करने का अभियोग चला और वह दण्डित किये गये। वहां से निकल कर अथवा निकाले जाकर इन्होंने यहां भारत

मे आकर आबू पर्वत पर अपना मठ बनाया और ब्रह्मकुमारी नामक सम्प्रदाय की रचना की। आज दिन आबू ही इनकाकेन्द्र स्थान है।

आबू से समय २ पर यह विज्ञप्तियो द्वारा अपने विचारो का प्रचार करते है। यह विज्ञप्तियां मुरलिया कहाती है। इस नामकरण का रहस्य क्या है यह पता नही चलता। विज्ञप्तियो की भाषा अत्यन्त निम्न कोटि की अशुद्ध हिन्दी रहती है जिससे पता चलता है कि प्रवर्तक का ज्ञान अत्यन्त साधारण है और वेद शास्त्र, उपनिषद, व दर्शनादि मे इनकी लेशमात्र भी गति नही है। सम्भवत: इसीलिये आपने इस सम्प्रदाय को आर्य धर्म सस्कृति से सर्वथा अलिप्त एव अछूता रक्खा है। इन मुरलियो का सग्रह ही ब्रह्म-गीता नाम से प्रसिद्ध है और यह ही इनका धर्म ग्र थ माना जाता है। भारतवर्ष के शैव, शाक्त, वैष्णव, लिगायत सिख आदि सब सम्प्रदायो के प्रवर्तको ने वेद, उपनिषद, गीता आदि को माना है और उनको परम ज्ञान ग्रन्थ माना है ब्रह्म समाज प्रार्थना-समाज तथा थियोसौफिस्ट सम्प्रदाय मे गीता आदि को मानते है किंतु राधा स्वामी, साधमत, सहनशाही मत, हसदेव मत की भान्ति इस सम्प्रदाय ने इस विश्व वन्द्य आर्य ज्ञान को तिलाजलि देकर निराला अनार्य मार्ग ग्रहण किया है।

संगठन—इस मत के प्रवर्तक अपने को त्रिमूर्ति ब्रह्मा कहते है और परमात्मा जिसको शिव नाम से पुकारते हैं उसका प्रतिनिधि अथवा अवतार बतलाते है। यथार्थ में इनका यह त्रिमूर्तित्व ईसाइयो के पवित्र पुत्र पिता, पवित्र पुत्र एवं पवित्रात्मा का सम्मिलित रूप ही है और इसी कारण इनको परम पिता होलीफादर के नाम से पुकारा जाता है। प्रबन्ध की दृष्टि से इस सम्प्रदाय की प्रत्येक शाखा का प्रमुख पिता जी कहलाता है और प्रचारिका श्रद्धामाता अथवा देवता-बहिन कहाती है। यह पिता जी भी ईसाईयो के रेवरेन्ड फादर, श्रद्धा माता रेवरेन्ड मदर एव देवता बहिन होली सिसटर का अनुकरण मात्र है।

ब्रह्म कुमार एवं ब्रह्म कुमारियाँ परस्पर सब भाई एव बहिन कहाते है जैसे ईसाई सगठन मे सब प्रचारक प्रचारिकाओं को ब्रादर्स एव सिस्टर पुकारा जाता है। जो परस्पर पति-पत्नी है वह भी ब्रह्म कुमारी चक्र मे परस्पर भाई बहिन शब्दो का प्रयोग करते हैं। पति को भाई एव पत्नि को बहिन पुकारना भारतीय मर्यादा के सर्वथा विरुद्ध है। चोली पन्थी चक्र के अन्दर बाहिर के रिश्ते नाते त्याग कर सब परस्पर शिव एव पार्वती बन जाते है इसी प्रकार यह शाखा स्थान पर भाई बहिन और वाहिर फिर ज्यों के त्यो पति पत्नी रूप में व्यवहार करते है।

इस पंथ के होली फादर दादा लेखराज ब्रह्म कुमारियो के साथ आलिगन करते, उनके अधरामृत का पान करते है और इस कार्य को वह स्वय तथा सम्प्रदाय के सब व्यक्ति पाप शून्य मानते है। ब्रह्म कुमारियाँ यह समझती है कि वह तो परम पिता है और अपनी पुत्रियो के साथ सच्चा पितृतुल्य प्रेम मात्र करते है।

यह व्यवहार अथवा आचरण भी आर्य-संस्कृति के अनुसार सर्वथा दूषित एव निन्दनीय है । पर-नारी का स्पर्श स्पष्ट पाप माना गया है फिर आलिगन एव मुख का अधर चुम्बन को तो स्पष्ट व्यभिचार की कोटि मे गिना गया है। आर्य सस्कृति मे तो एक वर्ष की बालिका का भी पिता या भाई द्वारा मुख चुम्बन निषिद्ध है। पिता आदि उसके सिर को सूंघ सकते है अथवा उसके हाथ वा पाव का ही केवल चुम्बन कर सकते है। मुख चुम्बन निश्चय कामुकता का द्योतक है और आयुर्वेद की दृष्टि से आयु का क्षय करने वाला है।

इस सम्प्रदाय ने पग पग पर ईसाईयत का अनुकरण

किया है। अत सम्भव हो सकता है कि उनके उद्गम स्थान यूरोप की इन्होंने यहाँ भी नकल की हो।

ईसाइयो की भाति इस सम्प्रदाय मे भी प्रसाद वितरण किया जाता है। जिस प्रकार कैथालिक एव प्रोटैस्टैट ईसाई पादरी रविवार को पूजा की समाप्ति पर शैम्पियन अथवा द्राक्षारस मे भिगोई हुई रोटी के टुकडे चर्च मे उपस्थित भक्तो के मुखो मे अपने हाथ से डालता है उसी प्रकार इनके सत्सगो मे श्रद्धा माता अथवा देवता बहिन आदि कुमारिया अपने हाथ से लड्डू पेडादि प्रसाद डालती है और भक्त लोग अपने को कृतकृत्य समझते है।

साधना—इस सम्प्रदाय मे प्रतिदिन प्रात काल ब्रह्म मुहूर्त मे साधना-सत्र लगता है। सब ब्रह्मकुमार एव कुमारिया मुख्य प्रचारिका की आँखो से अपलक रहकर निहारते है। प्रचारिका एक विशेष प्रकार का सुर्मा लगाकर बारी बारी से सबकी ओर निहारती है। यह सुर्मा इनकी ममोहन क्रिया मे सहायक होता है। सात दिन की साधना द्वारा ही यह नारायण पन्थ की भाँति साधकों को ब्रह्म का साक्षात्कार कराती है। ब्रह्म साक्षात् का यह दावा नितान्त मिथ्या एव पाखण्ड है। जैसे किसी नारायण पन्थी को आज तक नारायण का साक्षात् नही हुआ इसी प्रकार किसी ब्रह्मकुमार, कुमारी की तो बात क्या दादा लेखराज तक को ब्रह्म साक्षात् नही हुआ। वैसे उनके ब्रह्म साक्षात् करण का तो प्रश्न ही नही उठता जब वह स्वय ब्रह्मा के रूप के ब्रह्म बने बैठे है।

जिस समय तक नेत्र अपना व्यापार करते रहेंगे और अपने विषय रूप मे सलग्न रहेंगे, ध्यान-योग की सिद्धित्रि-काल मे भी असम्भव है। 'बाहिर के पट बन्द कर अन्दर के पट खोल' की किसी सन्त की उक्ति के अनुसार जब मानव मन की इन्द्रियो के विषयों से उपरत कर लेगा और प्राणायाम प्रत्याहार एव धारणा द्वारा आत्मस्थ कर लेगा तब ही ध्यान सिद्धि होना सम्भव है। यह आखो से आखो का मिलाना योग-साधना का उपहास करना है। रसिक कुमारो को पन्थ की ओर आकर्षित करने का यह एक साधन भले ही हो किन्तु योग-साधन का मार्ग तो निश्चित नही है।

मान्यताएं—दादा लेखराज राम कृष्ण की भाँति इस चतुर्युगी की समाप्ति वेला मे अपने को शिव का अवतार बताते है और वृद्ध शरीर मे अपने को अवतरित हुआ मानते हैं। यह अवतारवाद का ढोग हिन्दुओ की भ्रान्त धारणा का अनुचित लाभ उठाना मात्र है। इनके इस अवतारवाद मे न कोई युक्ति है न प्रमाण नाही ज्ञान एव विज्ञान से इस वाद का लेश मात्र सम्पर्क है। ईसा-मसीह की भाँति जो अपने को मानव पुत्र कहते कहते अन्त मे स्वय ब्रह्म बन बैठा यह दादा लेखराज जो एक साधारण मानव पुत्र के स्थान पर ससार की आखो मे धूल झोकने के लिये ब्रह्म बन बैठा।

यह दावा निरा पाखण्ड है और आश्चर्य इस बात का है कि मूर्ख अज्ञानी जन ही केवल इस पाखन्ड के शिकार नही पढे लिखे व्यक्ति भी इस विज्ञान मानवता एवं बुद्धि वाद के युग मे ऐसे पाखन्ड के शिकार बन बैठते है।

इनके मतानुसार एक चतुर्युगी ५००० वर्षों का केवल होता है और प्रत्येक सतयुग, त्रेता, द्वापर एव कलियुग की अवधि १२५० वर्ष की निर्धारित की गई है। युगकाल का इनकी यह कल्पना भी भारतीय शास्त्र के सर्वथा बिरुद्ध मनमानी कपोल कल्पना है। दादा लेखराज का वाक्य ब्रह्म वाक्य माना जाता है चाहे वह कितना भी तर्कशून्य प्रमाण शून्य नि:सार हो। प्रत्येक ब्रह्मकुमार एव कुमारी आख मीच कर उसको मानता

है और ईसाई मुसलमानो की भांति उसपर तर्क करना कुफ्र मानते है।

मतान्धता एव अन्धविश्वास का यह २०वी सदी का नूतन सस्करण मात्र ही समझना चाहिए।

इनके मतानुसार अब शीघ्र ही प्रलय होने वाली है जैसे कि ईसाई मिशनरी निरन्तर प्रचार करते है। प्रलय से पूर्व जो दादा लेखराज की शरण मे आजावेगे उनको तो वह अपने ब्रह्मधाम मे सकुशल पहुचा देगे और जब पुन सृष्टि रचना होगी तो वह ही उनके परम साधक होगे और शेष सब मानव जो ईमान नही लावेगे वह नष्ट हो जावेगे। ईसाइयो का कहना है जो प्रभु यशु मसीह की शरण मे आजायेगे उनको क्यामत (प्रलय) के दिन वह स्वर्ग (हैवन) मे स्थान देगे और शेष सबको दौजख की धधकती आग मे सदा के लिये धकेल दिया जावेगा।

इनकी यह मान्यता भी निरी ईसाइयत की नकल है। अभी करोडो वर्ष तक प्रलय काल के उपस्थित होने का प्रश्न ही नही। प्रलय होने पर भी जीवात्मा नष्ट होने वाले नही। वह तो अजर और अमर है।

सीमित कर्मो का फल असीमित हो यह भी इनकी तर्क शून्य मान्यता है। मानव अपने अच्छे बुरे कर्मो के अनुसार ही सब दुख भोगने वाला है कि पीर पैगम्बर, गुरु अवतार या ऋषि को प्रभु के इस नियम मे दखल देने का अधिकार नही। ईसा, मूसा, मुहम्मद, लेखराज आदि पर ईमान लाने से न किसी की मुक्ति होने वाली है और न प्रलय काल मे स्वर्ग या ब्रह्म धाम की प्राप्ति।

मुक्ति की प्राप्ति के लिए सत्य-ज्ञान की उपासना एवं यौगिक साधना का अनुष्ठान अनिवार्य है। पन्थाई गुरुओ झूठे अवतारो व बनावटी खुदाई के ठेकेदारो द्वारा मुक्ति की प्राप्ति भारी भ्रम है।

दादा लेखराज ने भी ईसाइयो के हैवन मुसलमानो की जन्नत गौकुलीये गौसाईयो के गौलोक, शैवो के कैलाश शाक्तो के श्री० लोक की भांति ब्रह्म लोक की अनोखी कल्पना की है।

हम दादा लेखराज व उनके चेलो से पूछना चाहते है कि वे यह बतावे कि उनका यह ब्रह्म लोक कहाँ है इस पृथ्वी लोक से कितना दूर है। इस सौर्य मडली के अन्दर है वा बाहिर। वह आग्नेय है या पार्थिव। वहा जन्नत वा हैवन की भांति कौन कौन से भोग पदार्थ उपलब्ध है।

सक्षेप मे यह सम्प्रदाय आर्य धर्म संस्कृति का स्पष्ट विरोधी एक सम्प्रदाय है। आर्यपरम्पराओ एव मर्यादाओ का उलघन कर पग पग पर ईसाइयो का अनुकरण करना इनका लक्ष्य है। अतः प्रत्येक आर्य हिन्दू संस्कृति के प्रेमी को इससे सतर्क रहना चाहिये।

ब्रह्माकुमारियों

का

जीवन

हिन्दुस्तान २२-६-६१

महोदय—दिल्ली के एक हिन्दी दैनिक [हिन्दुस्तान नही] में एक सज्जन का एक पत्र प्रकाशित हुआ है, जिस के द्वारा उन्होंने हापुड मे ब्रह्माकुमारियो के विरूद्ध चल रहे आन्दोलन का खन्डन किया है तथा ब्रह्माकुमारियो की संस्था का औचित्य सिद्ध करने का प्यास किया है। मेरे ख्याल मे पत्र-लेखक महोदय को वस्तु-स्थिति का ज्ञान नही है। इस कुमारी संस्था की कक्षाओ मे मैं नियमित रूप से कुछ समय तक जाती रही हूं। अपने इसी अनुभव के आधार पर मैं सर्वसाधारण का जानकारी के लए निम्न विचार प्रगट कर रही हु

ब्रह्माकुमारियो के रहन-सहन के शानदार तरीकों को देखकर कोइ भी उन्हे सादा जीवन व्यतीत करने वाली नही बतला सकता। हापुड मे आन्दोलन के फलस्वरूप मकान बदलते समय वहाँ केवल तीन परिचारिकाओ का सामान पाच खचाखच भरे बैल ठेलो मे लद सका। उनके केन्द्र पर बिजली के कई रौडे, कितने ही रगो के रगीन बलबो, बिजली पन्खो दरवाजो पर शानदार परदो फर्शो पर कीमती नई दरियो गलीचो चांदनीयो का होना उनके सादे जीवन का प्रतीक भला कैसे हो सकता है? परिचारिकाओ द्वारा पहनने के लिये कीमती रेशमी वस्त्र आंखो मे मोहन काजल बालो में सुगन्धित तेल मुख, पर क्रीम व आधनिक प्रसाधनों का अंधाधुन्ध प्रयोग क्या उन की सादगी का प्रमाण है क्या सन्यासियों का रहन महन इस प्रकार का होता है?

हा यदि इस प्रकार का जीवन सादा कहा जा सकता है; अशलील फिलमी गानो की धुन पर नृत्य करना यदि ईश्वर भक्ति है सीधी सादी स्त्रियो को ठगकर उनसे धर्मके नामपर रूपया जेवरात मगाना और पति पत्नी के पवित्र सम्बन्ध को अपवित्र बताना पारिवारिक जीवन मे फूट डालना ही आदर्शजीवन का उपदेश देना है तो फिर पाखन्ड ठगी क्या होते है?

कोठीगेट
(हापुड) —कुन्देशकुमारी शर्मा

स्वर्ण जयन्ती के विशिष्ट उपहार

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने स्वर्ण जयन्ती और आर्य महासम्मेलन के पुण्य अवसर पर निम्नलिखित ७ अलभ्य पुस्तकें प्रकाशित की है :—

(१) सार्वदेशिक सभा का ५२ वर्षीय संक्षिप्त इतिहास

इस पुस्तक में सभा के जन्म-काल से लेकर १९६० तक की प्रमुख ... भी प्रगतियों का तथ्यपूर्ण संक्षिप्त विवरण दिया गया है जिससे न केवल सभा के ही अपितु आर्य समाज के शृंखलाबद्ध इतिहास का सहज ही परिज्ञान हो जाता है। मूल्य ७५ नये पैसे।

(२) सार्वदेशिक सभा के निर्णय

इस पुस्तक में सभा की स्थापनाकाल अर्थात् १९०८ से लेकर १९६० तक के वे सभी महत्त्वपूर्ण निर्णय दिए गए ... नको जानना प्रत्येक आर्य सभासद् के लिए अनिवार्य है। निस्सन्देह इस में आर्यजनों और आर्य समाजों के पथ-प्रदर्शन के लिए अलभ्य प्रचुर सामग्री विद्यमान है। मूल्य लागत मात्र ७५ नये पैसे।

(३) आर्य महासम्मेलनों के प्रस्ताव

इस संग्रह में आर्य महासम्मेलनों के समस्त प्रस्ताव अंकित है। प्रत्येक सम्मेलन के स्थान समय और प्रधान आदि के उल्लेख के साथ साथ उसकी पृष्ठ भूमि भी लिखदी गई है। इस प्रकार यह संग्रह बड़ा उपयोगी बन गया है। पृष्ठ १२१ मूल्य ६० नये पैसे।

(४) आर्य महासम्मेलनों के अध्यक्षीय भाषण

इस समय तक आर्य महासम्मेलनों के ९ अधिवेशन हुए है। इस पुस्तक में समस्त अध्यक्षीय भाषण अंकित है। प्रत्येक सम्मेलन के अध्यक्ष का चित्र और संक्षिप्त जीवन-परिचय भी दे दिया गया है। यत सभी अध्यक्ष आर्य समाज और देश के सार्वजनिक जीवन में उच्च और

विशिष्ट स्थान रखते है अत उनके भाषण मार्गदर्शन युक्त प्रचुर एव वरिष्ठ सामग्री से ओत-प्रोत है। लगभग २०० पृष्ठ की पुस्तक का मूल्य १) रु०।

(५) आर्य समाज परिचय

इस पुस्तक मे आर्य समाज के जानने योग्य सभी सामग्री एकत्र की गई है। पुस्तक मे महर्षि दयानन्द, सचित्र दयानन्द, दयानन्द भवन, बलिदान भवन सार्वदेशिक सभा के प्रथम कार्यालय, सभा के प्रधानो आर्य महासम्मेलनो के अध्यक्षो। हैदराबाद के हुतात्माओ, वैदिक तरु, ओ३म् ध्वज, आर्यमन्दिर आदि के अनेक चित्र दिए गए है। पुस्तक आर्ट पेपर पर छपी है। आकार प्रकार अत्यन्त भव्य और आकर्षक।

मूल्य लागत मात्र १)

(६) पाथ आव् परफेक्शन

यह पुस्तक अग्रेजी मे प्रकाशित की गई है जिसमे चरित्र-निर्माण और भ्रष्टाचार निरोधक अलभ्य सामग्री उपलब्ध होती है। इसके लेखक सभा प्रधान श्री बा० पूर्णचन्द्र जी एडवोकेट है। मूल्य ६० नये पैसे।

(७) यज्ञपद्धति

इस पुस्तक में धर्मार्य सभा द्वारा स्वीकृत और प्रचारित यज्ञ, सन्ध्या तथा साप्ताहिक सत्सग की पद्धतियाँ दी गई है। इस पुस्तक की गत ३ वर्ष से आर्यजगत मे प्रतीक्षा की जा रही थी। मूल्य ५० नये पैसे।

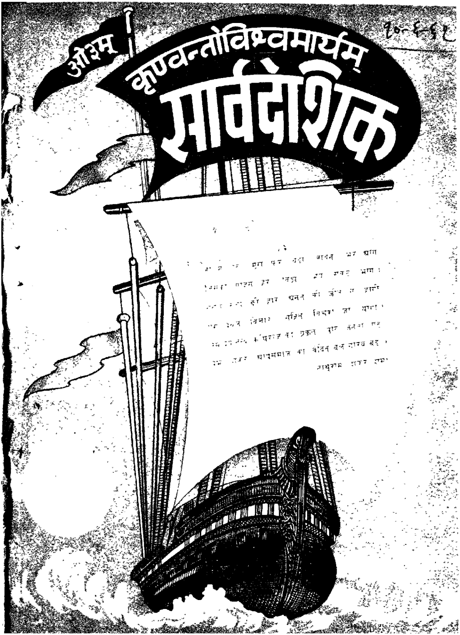
यह सभी पुस्तकें आकार प्रकार छपाई कागज आदि की दृष्टि से भी आकर्षक एवं उत्तम है। प्रत्येक आर्य सभासद के पास और आर्य समाज मे अवश्य रहनी चाहिएं।

आर्य जनों और आर्य समाजों को आर्डर में शीघ्रता करनी चाहिए।

मिलने का पता :—

सार्वदेशिक सभा पुस्तक भन्डार, दयानन्द भवन, नई दिल्ली—१

पुरी प्रिन्टर्स जवाहर नगर, दिल्ली मे मुद्रित व रघुनाथ प्रसाद जी पाठक मुद्रक और प्रकाशक के लिये सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द भवन, नई दिल्ली-१ से प्रकाशित।


ओ३म्
कृण्वन्तोविश्वमार्यम्
सार्वदेशिक

॥ ओ३म् ॥

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

वार्षिक मूल्य ६) विदेश मे वार्षिक ८) या १२ शिलिंग

वर्ष ३७] सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०६० जून १९६१ ज्येष्ठ २०१८ अंक ४

विषय-सूची

★ सम्पादक
रघुवीर सिंह शास्त्री, सभा मन्त्री

★ सहायक सम्पादक
रघुनाथप्रसाद पाठक

★ प्रकाशक व मुद्रक
रघुनाथप्रसाद पाठक

★ कार्यालय
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
दयानन्द भवन, नई दिल्ली
फोन २४७७१

★ मुद्रक
पुरी प्रिन्टर्स २६-ए, जवाहर नगर, दिल्ली
फोन २३०४२

सम्पादकीय

एक अपूर्व तथा मफल समारोह

गत १६ से २१ मई तक सभा की स्वर्ण जयन्ती तथा नवम आर्य महासम्मेलन पुरानी और नई दिल्की के बीच मे स्थित विशाल रामलीला मैदान मे सम्पन्न हुए। ६ दिन तक इस पुण्यस्थली पर आर्यों के सम्मेलन, यज्ञ-याग, भाषण-प्रवचन तथा विचार-विनिमय की भारी धूम रही। प्रत्येक कार्यवाही तथा गति विधि की अपनी विशेषता रही। देश-विदेश से आये लाखो आर्य नर नारी इस धार्मिक मेले मे एकत्र हुए। १६ तारीख की जो विशाल तथा प्रभावशाली जलूस निकला, उसके सम्बन्ध मे पत्रकारो, दिल्ली के पुराने निवासियो तथा उच्च सरकारी अधिकारियों तक का यह कहना है कि ऐसा भव्य तथा भारी जलूस दिल्ली के इतिहास मे यह पहला ही था। गोरक्षा सम्मेलन, कुमार सम्मेलन, शिक्षा सम्मेलन तथा महिला सम्मेलन आदि सभी सम्मेलनो मे जनता ने भारी रुचि एवं उत्साह से भाग लिया और उनमें अनेक महत्त्वपूर्ण निश्चय किये गये। विद्वत्सम्मेलन और प्रमुख आर्यों का सम्मेलन ये दो आयोजन तो और भी अधिक आकर्षण का केन्द्र रहे। देश भर के गण्यमान्य आर्य विद्वानो ने वेद तथा दर्शन के सम्बन्ध में अनेक खोजपूर्ण निबन्ध पढे और विचार विनिमय किया। प्रमुख आर्यों के सम्मेलन में आर्य जगत् के चुने हुए लगभग २०० व्यक्तियो ने भाग लिया और आर्यसमाज के आन्तरिक सघठन, प्रचार प्रणाली तथा भावी कार्यक्रम के सम्बन्ध मे गहरा मनन हुआ। प्रतिदिन उच्चकोटि के विद्वानो के सारगर्भित भाषण होते रहे और २० तथा २१ को नवम आर्य महासम्मेलन का खुला अधिवेशन हुआ।

सम्मेलन की सारी कार्यवाही बहुत शानदार रही। भव्य वेदि, तथा लाखो आर्य नर-नारियो द्वारा निनादित जय घोषों से गूंजता सभास्थल प्रत्येक दर्शक को तरगित कर रहे थे। जो प्रस्ताव इस सम्मेलन मे स्वीकृत हुए उनमें आर्य समाज के गौरव, चिन्ताशीलता तथा सक्रियता की पद-पद पर झलक मिलती है। अनेक महत्त्वपूर्ण समस्याओ के सम्बन्ध मे पूरा मन्थन किया गया और समूचे आर्य जगत्, राष्ट्र तथा मानव जाति का पथप्रदर्शन किया गया। साथ ही आर्य समाज एव वैदिक धर्म के प्रसार के लिए ठोस कार्यक्रम निश्चित किये गये। किसी भी दृष्टि से देखे यह समारोह बहुत ही अपूर्व, प्रभावपूर्ण तथा सफल रहा है। इस से आर्य समाज के सघठन की धाक बैठी है, सत्ता की छाप लगी है। धर्मानुराग तथा श्रद्धा का ठोस प्रदर्शन हुआ है। साथ ही आर्यों मे आत्मविश्वास बढा है, नयी चेतना तथा स्फूर्ति का सञ्चार हुआ है। जीवन एवं साम-

र्श का एक प्रदर्शन हुआ है। इसलिए यह स्वाभाविक ही है कि आर्य इस सफलता पर गद् गद् हो उठें, झूमने लगें और अपने आचार्य महर्षि दयानन्द द्वारा मानव जाति के प्रति किये गये उपकारों का ध्यान करके गौरवान्वित हो।

इसमे सन्देह नही कि इस समारोह के मार्ग मे अनेक कठिनाइया तथा विघ्नबाधायें भी रही। इस प्रकार की चेष्टाये भी चलती रहीं कि प्रथम तो सम्मेलन हो ही न पाये और यदि हो भी तो किसी अश मे भी सफल न हो सके। परन्तु सभा के अधिकारी "न्याय्यात्पथ प्रविचलन्ति पदं न धीरा" की उक्ति के अनुसार अविचलित भाव से रात-दिन लगे रहे। साथ ही आर्यजनता के दिन प्रतिदिन उमड़ते हुए आशीर्वाद तथा सहयोग का बल उन्हे भरपूर मात्रा मे मिला। परिणाम यह हुआ कि आर्य जनता का सहयोग रूपी सूर्य ज्यों-ज्यो शिखर पर चढ़ता गया त्यों-त्यों विरोध रूपी तमिस्रा गहरे गर्त मे गिरती चली गयी। इस पृष्ठभूमि तथा स्थिति मे खड़े होकर जब इस भव्य समारोह की सफलता आकी जाती है तो यही कहा जा सकता है—परमपिता परमात्मा की असीम अनुकम्पा, आर्यजनता के हार्दिक सहयोग तथा सभा के अधिकारियों एव कार्यकर्ताओ के परिश्रम का ही यह समुचित शुभ फल हम सब को देखने को मिला है। सचमुच सभी आर्य इस अपूर्व सफलता पर गर्व कर सकते हैं।

परमेश्वर हम आर्यों को शक्ति प्रदान करें ताकि इस स्पृहणीय सफलता से स्फूर्ति तथा उत्साह प्राप्त करके हम अपने लक्ष्य की दिशा मे और भी अधिक तीव्र गति से बढ़ सकें।

—रघुवीरसिह शास्त्री

सम्पादकीय टिप्पणियाँ

मानव की समानता

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ-प्रकाश में प्रतिपादित किया है कि संसार के समस्त मनुष्य शरीर के अवयवों और मानसिक भावनाओं इत्यादि की दृष्टि से एक जैसे हैं अवश्य जलवायु आदि की विभिन्नताओं के कारण उनकी आकृतियों में भेद पाया जाता है। कोई वर्ग जन्म, बुद्धि और भावनाओं की दृष्टि से अन्य वर्ग से उच्च है, यह कपोल कल्पना है। विज्ञान-वेत्ताओं और

समाज-शास्त्रियों ने भी इस कपोल कल्पना का खंडन करके यह दिखा दिया है कि मनुष्यों में ऊँच नीच का कोई भेद नहीं है। उनकी कृतियों और सफलताओं में जो भेद पाया जाता है वह वातावरण-जनित है। यह सब कुछ होते हुए भी सभ्यतम कहे जाने वाले वर्गों में नस्ल और जाति की उच्चता का पक्षपात अब भी विद्यमान है। उदार-शिक्षा भी इस पक्षपात को निर्मूल करने मे समर्थ नहीं जान पड रही है क्योंकि पक्षपात की यह भावना उस समय बद्धमूल हो जाती है जबकि मस्तिष्क अपरिपक्व अवस्था मे होता और आदतो का निर्माण होने लगता है।

अमेरिका ने अन्य देशों की अपेक्षा प्रजातन्त्रात्मक मर्यादाओं का अधिक दृढता से नियमन किया है। उसका सविधान उन लोगों के लिए प्रेरणादायक है जो मानव की समानता और मानवीय अधिकारों में विश्वास रखते है। इस पर भी अमेरिका के बहुत से लोगों के हृदयो पर नस्ल की उच्चता का पक्षपात छाया हुआ है और सफेद चमडी वालों की तुलना मे नीग्रो हेय समझा जाता है यद्यपि विधान की दृष्टि मे दोनो ही काले और गोरे समान है और समान अधिकारों की सुरक्षा की गारंटी भी विद्यमान है। यह तथ्य इस बात का सूचक है कि जिस बुराई की जड़ें बहुत गहरी चली जाती हैं उसका अन्त करना दुःसाध्य होता है। अलबामा मे अभी हाल में जो जातीय दगे हुए हैं और अमेरिकनों द्वारा उनमें नीग्रो लोगों पर जो भी अत्याचार हुए हैं, उनसे अमेरिका की सर्वत्र निन्दा हो रही है। अमेरिका की सरकार नीग्रो लोगों और उनके अधिकारों की रक्षा के लिए यत्नशील है। प्रसन्नता है वह अपने दायित्व को अनुभव करके नीग्रो के जान माल एवं संविधान की रक्षा के लिए कृत संकल्प है। इन दगों से उन लोगो का साहस बढता है जो काले और गोरों के पृथक्करण की दूषित नीति पर चल रहे हैं।

इन दगो के आधार पर कम्यूनिस्ट लोग प्रजातंत्र प्रणाली की बहुत निन्दा कर रहे है। जिन लोगो की आस्था मानवीय अधिकारो मे न हो। जो मानव के महत्त्व को अंगीकार न करते हों और जिनकी राजनैतिक प्रणाली मे समान मनुष्यो की आध्यात्मिक समानता को स्थान न मिलता हो उन्हे उन लोगों की आलोचना करने का कोई अधिकार नही है जो प्रजातंत्र के ध्वज को ऊँचा उठाए रखे हो परन्तु किन्ही अपरिहार्य कारणो से उसके प्रशस्त कार्य से भटक गए हों।

एक अश्लील प्रसार

नवभारत टाइम्स विचार प्रवाह के शीर्षक से २–६–६१ के अक मे लिखता है:—

स्व. डेविड हरबर्ट लारेन्स

बम्बई के अतिरिक्त प्रेसिडेंसी मजिस्ट्रेट श्री नसरुल्ला ने विश्वविख्यात ब्रिटिश उपन्यासकार स्व डेविड हरबर्ट लारेन्स के उपन्यास 'लेडी चैटरलीज लवर के' उस सस्करण को, जिसमे से आपत्तिजनक जंचने वाले अश निकाले नही गए हैं, अश्लील बताया है। पुस्तक की चर्चा के पूर्व लारेन्स की थोड़ी चर्चा आवश्यक है।

लारेंस की पहली तीन पुस्तकें क्रमशः १९११, १२ तथा १३ में निकलीं। उनके कारण उनकी मौलिकता की धाक तो जमी, किन्तु इस मौलिकता ने १९१५ में उनकी चौथी पुस्तक के प्रकाश में आते-आते उन्हें पुलिस के चक्कर में डाल दिया। कुछ समय तक ऐसा प्रतीत हुआ कि उनकी

शक्ति कुण्ठित हो गई, लेकिन वस्तुत. वे उस अवधि मे मानव-मन के विश्लेषण मे जुटे हुए थे। जीवन के अन्तिम वर्षों मे उनका अध्ययन सबसे अधिक काम-प्रवृत्ति से सम्बन्धित रहा। प्राकृतिक दृश्यों का वर्णन भी उनकी विशिष्टता थी। वे निराले कलाकार थे। उनमे एक दार्शनिक की दृष्टि भी थी। फिर भी उनकी सबसे बडी विशिष्टता उनके काम-प्रवृत्ति के विश्लेषण मे पाई जाती है।

लारेन्स की विशिष्टताओ को गिनाना कठिन है। उनमे असाधारण कोमलता थी, तो असाधारण कठोरता भी। कवि थे, किन्तु बर्ताव मे यदा-कदा अत्यन्त अभद्र भी हो सकते थे। वे सदा यह प्रचार करते रहे कि प्रत्येक व्यक्ति को जीवन अपनी मान्यताओ के अनुसार बनाना चाहिए लेकिन दूसरो पर अपनी मान्यताएँ लादने को अति व्यग्र भी रहते थे। उनमे जो ये परस्पर-विरोधी तत्व थे, उनसे उनमे महान् लेखक बनने में बाधा नही आई, क्योकि उनके शब्दो मे "हम अपना रोग पुस्तको के माध्यम से निकालते हैं।" लारेस और अन्य लेखको मे अन्तर यह रहा कि अन्य लेखक पुस्तक को रोग निकालने का नही, ढकने का माध्यम बनाते हैं।

प्रेम और कामसम्बन्ध, दोनों के मेल मे विश्वास तो लारेंस करते थे, किन्तु साथ ही इनमें मेल की एक सीमा तक ही सहन कर पाते थे। दोनों के बीच जिस सीमारेखा को बनाने की चेष्टा उन्होंने की, उसका अस्तित्व व्यवहार मे नही, वरन् कल्पना में ही मिल सकता है। उन्होने अपने उपन्यासो के माध्यम से यह याद दिलाने का यत्न किया कि यदि मनुष्य सावधान न हुआ, तो मस्तिष्क द्वारा गढे गये दायरे उसकी कल्पनाशीलता को नष्ट कर देंगे। वे स्तिष्क के विरोधी नहीं थे, किन्तु यह मानते थे कि उसे शरीर की मांग को दबाने का हक नहीं।

लेडी चेटरलीज लवर

भारत जैसे देश में, जहा शरीर के दावों को, इसकी मांगों को दबाने को आदर्श माना जाता है, जीवन भर आदर्शों से लोहा लेनेवाले लारेन्स की पुस्तक 'लेडी चैटरलीज लवर" का अश्लील घोषित किया जाना आश्चर्यजनक नही। जापान जैसे देश मे भी जहा युद्धोत्तरकालीन अमरीकी सम्पर्क ने काम सम्बन्ध-विषयक पौर्वात्य आदर्शो की जड पर गहरा आघात किया है, सर्वोच्च न्यायालय ने निर्णय किया कि उक्त पुस्तक का कलात्मक पहलू काफी पुष्ट होने पर भी वह अश्लील है। उसे अश्लील इस आधार पर बताया गया कि "लज्जा हरेक युग, जाति, देश और सभ्यता के लोगो मे पायी जाती है, किन्तु उस पुस्तक मे उसे ढोंग बताया गया है। लेखक ने काम बर्ताव का जो विस्तृत विवरण दिया है, वह मानव-प्रकृति के लज्जा-सम्बन्धी आधारभूत तत्व के विरुद्ध है। उसकी कला चाहे कितनी उत्कृष्ट हो, वह पुस्तक को अश्लील घोषित किये जाने से बचा नही सकती।"

ब्रिटिश कानून के अनुसार अश्लील वह साहित्य है, जिससे उन लोगो का जिन पर अनैतिक प्रभाव पड़ सकता है और वे उसे पढ सकते हैं, मस्तिष्क कलुषित तथा भ्रष्ट होने की आशका हो। अमरीका मे जब यह प्रश्न उठा कि उक्त पुस्तक अश्लील है या नही, तो पोस्टमास्टर जेनरल ने, जिन्हे अश्लील किताबो के डाक से जाने पर रोक लगाने का अधिकार है, उस पर रोक लगा दी। जब सर्वोच्च न्यायालय के सामने यह प्रश्न गया, तब उसने निर्णय किया कि लारेन्स के विचार किसी को बुरे लगें अथवा अच्छे, अमरीकी विधान उन्हे अपने विचारो की अभिव्यक्ति की छूट देता है।

मध्यम मार्ग

अमरीका में भी यह प्रश्न पूछा जाने लगा है कि जो

विधान नागरिकों तथा उनके बच्चों के मस्तिष्क की अनैतिक प्रभावों से रक्षा नहीं कर सकता, वह क्या दोषपूर्ण नहीं है। दूसरी ओर यह प्रश्न है कि क्या नागरिकों तथा उनके बच्चों को अनैतिक प्रभाव से बचाने के नाम पर सरकार विचारों की अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता पर प्रहार नहीं कर सकती।

'लेडी चैटरलीज लवर' के बारे में बम्बई के न्यायालय का जो उपर्युक्त निर्णय है, वह उन लोगों को आश्चर्य में न डालेगा जो नयी दिल्ली के एक न्यायालय के इस निर्णय से परिचित हैं कि खजुराहो के चित्र अश्लील है।

विद्रोही फकीर

हिन्दुस्तान —

पिछले कुछ वर्षों से आर्य समाज के क्षेत्रों में इस बात की चर्चा रही है कि १८५७ के स्वातन्त्र्य-युद्ध में महर्षि दयानन्द क्या कर रहे थे? यद्यपि इस सम्बन्ध में निश्चय पूर्वक कुछ नहीं कहा जा सकता तथापि यह निर्विवाद है कि महर्षि दयानन्द देश प्रेम की भावना से ओत-प्रोत थे। अम्बाले के श्री दीवान अलख धारी जी के एक लेख से जो समाचार पत्रों में छपा है इस भावना पर उदात्त प्रकाश पड़ता है। उनके लेख का सार इस प्रकार है —

ऋषि दयानन्द ने कलकत्ता में कुछ दिन भाषण दिए थे। कभी-कभी कलकत्ता के एक प्रमुख पादरी विशाल सभा की अध्यक्षता करते थे। वह ऋषि दयानन्द के इस्लाम और ईसाइयत के सम्बन्ध में अगाध ज्ञान को देख कर विस्मित हो जाते थे। उन्हें इस बात पर आश्चर्य होता था कि अरबी और अंग्रेजी न जानते हुए भी उन धर्मों की इन्हें कितनी गहरी जानकारी है।

कलकत्ता के उस पादरी से तत्कालीन वाइसराय लार्ड नॉर्थब्रुक ने स्वामीजी की विलक्षण प्रतिभा की बात सुनकर उनसे मिलने की इच्छा प्रकट की। स्वामीजी ने उनसे दुभाषिए के जरिए बातचीत की। इस बातचीत से ऋषि दयानन्द के हृदय की देशभक्ति पूर्ण प्रदीप्त भावना प्रकट होती है। लॉर्ड नार्थब्रुक ने इस बातचीत का विवरण इंडिया आफिस को भेजते हुए लिखा था कि सरकार को 'विद्रोही फकीर' पर सतर्कतापूर्ण दृष्टि रखनी चाहिए। इंडिया आफिस को भेजे गये विवरण के अनुसार यह बातचीत निम्न प्रकार हुई थी.—

वाइसराय—मुझे बताया गया है कि आप अन्य धर्मों पर जो कटु प्रहार करते हैं उनसे हिन्दुओं और मुसलमानों में आप के प्रति विरोध भाव पैदा हो गया है। क्या आपको भय है कि आप पर कोई आक्रमण करेंगे? विशेष रूप से मैं यह पूछना चाहता हूँ कि क्या आपको हमारी सरकार की ओर से किसी प्रकार के संरक्षण की आवश्यकता है?

ऋषि दयानन्द—मुझे इस राज्य में अपने विश्वास के अनुसार प्रचार करने की पूरी स्वाधीनता है, मुझे अपने ऊपर किसी के द्वारा आक्रमण का किसी प्रकार का भय नहीं है।

वाइसराय—पंडित दयानन्द, यदि ऐसी बात है तो क्या आप इस देश को ब्रिटिश शासन द्वारा दिए गए शांति और सुख के वरदान के सम्बन्ध में अपनी प्रशंसा के कुछ उद्गार प्रकट करेंगे और अपने उपदेशों के साथ की जाने वाली प्रार्थनाओं के समय भारत पर ब्रिटिश शासन की स्थिरता बने रहने की चर्चा करेंगे?

दयानन्द—मैं किसी भी स्थिति में इस प्रकार के प्रस्ताव को स्वीकार नहीं कर सकता, क्योंकि यह मेरा दृढ़ विश्वास है कि मेरे देशवासियों के विकास के लिए और संसार के राष्ट्रों में सम्मानपूर्ण स्थान प्राप्त करने के लिए भारतवर्ष शीघ्र ही पूर्ण स्वाधीनता प्राप्त करे।

"मैं प्रतिदिन प्रातःसाय भगवान से प्रार्थना करते हुए यह मांगता हूँ कि वह दयालु भगवान मेरे देश को विदेशी शासन से शीघ्र ही मुक्त करे।"

लार्ड नार्थब्रुक ने तो इस स्पष्ट और निर्भीक उत्तर की कतई कल्पना भी नहीं की थी। उसने एकदम

बातचीत समाप्त कर दी। इस बातचीत ने वायसराय के हृदय में सन्देह उत्पन्न कर दिया तभी उन्होंने सरकार को इस विद्रोही फकीर से सावधान रहने की सलाह दी।

आर्य महा सम्मेलन कासंक्षिप्त परिचय

दिल्ली में रामलीला मैदान में १६ से २१ मई तक नवम् आर्य महा सम्मेलन बड़े समारोह के साथ सम्पन्न हुआ। सम्मेलन में सारे देश के आर्य बन्धु पधारे थे। विदेशों के प्रतिनिधि भी उपस्थित थे। सम्मेलन के अध्यक्ष आर्यजगत् के ख्याति प्राप्त महा नेता, कर्मठ आर्य संन्यासी पूज्य श्री स्वामी ध्रुवानन्द जी महाराज थे। स्वागताध्यक्ष श्री पूज्य आनन्दस्वामी जी थे।

१६ मई को प्रातः एक वृहद यज्ञ हुआ। उसके बाद पूज्य आनन्द स्वामी जी महाराज ने ध्वजारोहण किया। इसके बाद आर्य प्रदर्शिनी का उद्घाटन श्री जगजीवनराम जी रेल मन्त्री ने किया। दोपहर को पं० प्रियव्रत जी वेद वाचस्पति के सभापतित्व में विद्वत सम्मेलन की पहली बैठक हुई। इस सम्मेलन का उद्घाटन श्री पं० बुद्धदेव जी विद्यालंकार ने किया।

शाम को विद्वत सम्मेलन की दूसरी बैठक श्री पं० द्विजेन्द्रनाथ जी शास्त्री के सभापतित्व में हुई। रात्रि को गो कृष्यादि रक्षा सम्मेलन श्री आचार्य भगवानदेव जी के सभापतित्व में हुआ।

१७ मई को प्रातः यज्ञ के पश्चात् महात्मा आनन्द भिक्षु का प्रवचन हुआ। ८ से ११ बजे तक श्री नरदेव स्नातक एम० पी० के सभापतित्व में आर्यकुमार सम्मेलन हुआ। सम्मेलन का उद्घाटन श्री पं० आनन्दप्रिय जी बड़ौदा ने किया था। पुनः ८ से १० तक विद्वत् सम्मेलन की तीसरी बैठक श्री डा० हरिदत्त जी शास्त्री एकादश-तीर्थ की अध्यक्षता में हुई। इसका उद्घाटन श्री आचार्य वैद्यनाथ जी शास्त्री ने किया। इसके पश्चात् विद्वत्सम्मेलन की चौथी बैठक पं० ईश्वरचन्द्र जी दर्शनाचार्य के सभापतित्व में हुई।

मध्याह्नोत्तर प्रमुख आर्यों का सम्मेलन श्री घनश्यामसिंह जी गुप्त के सभापतित्व में हुआ। सम्मेलन का उद्घाटन सार्वदेशिक सभा के प्रधान माननीय श्री बा० पूर्णचन्द्रजी एडवोकेट ने किया। इस सम्मेलन के संयोजक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री रघुवीरसिंह जी शास्त्री थे। रात्रि को खुले पण्डाल में व्याख्यान हुए। पहला व्याख्यान प्रो० पं० सत्यव्रत जी सिद्धान्तालंकार गुरुकुल कांगड़ी का हुआ; विषय था वैदिक समाज व्यवस्था। दूसरा व्याख्यान श्री आचार्य वैद्यनाथ जी शास्त्री का हुआ, विषय वैदिक कर्म का वैज्ञानिक स्वरूप। तीसरा व्याख्यान श्री पं० बुद्धदेव जी विद्यालंकार का हुआ, आपका विषय था—समस्त ज्ञान का मूल स्रोत वेद। १८ तारीख को प्रातः यज्ञ के पश्चात् श्री स्वामी सत्यमुनि जी महाराज का प्रवचन हुआ।

८ से ११ बजे तक पंडाल में डा० गोवर्धनलाल दत्त उपकुलपति विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन के सभापतित्व में शिक्षा सम्मेलन हुआ। इस महत्वपूर्ण सम्मेलन का उद्घाटन केन्द्रीय शिक्षा मंत्री श्री कालूलाल जी श्रीमाली के करकमलों द्वारा हुआ। इसके साथ भी हाल में प्रमुख आर्यों का सम्मेलन भी हुआ। २॥ से ६ तक हाल में प्रमुख आर्यों का सम्मेलन हुआ। २॥ से ३ बजे तक आर्य महिला सम्मेलन श्रीमती सुशीला पंडित बड़ौदा की अध्यक्षता में हुआ। रात को पण्डाल में श्री आचार्य रामानन्द जी, प्रिंसीपल दीवानचन्द, श्री पं० रामचन्द्र जी देहलवी के व्याख्यान हुए।

१६ मई सन् १९६१ को

५ से ७ बजे तक यज्ञ तथा सामगान हुआ। ७ से ७॥ बजे तक आर्य जगत् के प्रसिद्ध कर्मकाण्डी श्री स्वामी ब्रह्मानन्द जी दण्डी एटा वालों का प्रवचन हुआ। ८ से १२

तक विषय निर्धारिणी समिति की बैठक पण्डाल मे हुई। ५ बजे से रात को ६ बजे तक शोभायात्रा (जुलूस) निकली।

दो मील लम्बी शोभा यात्रा
देश भर के आर्यसमाज शामिल

लगभग दो मील लम्बी शोभा यात्रा निकाली गयी, जो सम्मेलन स्थल से प्रारम्भ होकर लगभग पाँच मील लम्बे मार्ग से होती हुई पुनः सम्मेलन स्थल पर पहुँची। इसमें सब से आगे ओ३म् का ध्वज लिए नवयुवक और बाद मे समस्त भारत के आर्यसमाजो के दल चल रहे थे। राजस्थान के आर्य समाज के महिला एव पुरुष दल के सदस्य केसरिया बाना पहने हुए थे।

आर्य समाज के प्रमुख नेता एक रथ पर और कुछ टुकडियो मे चल रहे थे। "हिन्दी भाषा अमर रहे" "स्वामी दयानन्द की जय" "भारत माता की जय" आदि नारे लगाये जा रहे थे। चारो ओर केसरिया ध्वज दिखाई दे रहे थे। सारा मार्ग तोरणद्वारो से सजाया गया था। अजमेरी द्वार के पास जलूस को काफी देर के लिए रुक जाना भी पड़ा।

२१ मई रविवार

आर्य सम्मेलन हुआ। इसके सभापति श्री स्वामी ध्रुवानन्द जी महाराज थे। प्रातः ५ से ७ बजे तक यज्ञ तथा सामगान,, ७ से ११ तक खुला अधिवेशन हुआ। रात को खुला अधिवेशन होकर शाति पाठ के पश्चात् सम्मेलन समाप्त हुआ।

आर्य महिला सम्मेलन

स्वामी दयानन्द ने देश पर दो बड़े उपकार किये थे। उन्हें आज भी नही भुलाया जा सकता। एक काम तो उन्होने स्त्रियों को शिक्षा देने तथा दूसरा काम स्वदेशी आन्दोलन का चलाया था।

ये शब्द श्रीमती इन्दिरा गांधी ने आर्यमहिला सम्मेलन द्वारा रामलीला मैदान मे आयोजित एक विराट सभा में भाषण करते हुए कहे।

स्वदेशी आन्दोलन

श्रीमती गांधी ने देश की उन्नति के लिए आज भी स्वदेशी आन्दोलन को प्रोत्साहन देने की आवश्यकता पर बल दिया।

देश की समृद्धि के लिए देश के उद्योगो को बढ़ाना आवश्यक है।

स्वामी दयानन्द का कार्य तब तक चलाना चाहिए जब तक देश पूर्ण साक्षर नही हो जाय। केवल अक्षर ज्ञान को ही साक्षरता नही मानना चाहिए। स्त्रियाँ इस प्रकार की बने कि वे समाज मे अपना पुरुष के बराबर स्थान बनायें।

नौकरी के लिए नहीं

केवल नौकरी करने के लिए ही पढना आवश्यक है, यह मानकर नही चलना चाहिए। स्त्रियां पढ़ेंगी—लिखेंगी ताकि वे अपना घर-बार भली प्रकार संभाल सकेगी और अपने बच्चो को शिक्षा-दीक्षा भली प्रकार दे सकेंगी।

भेद-भाव

श्रीमती गांधी ने लडके-लड़कियो के भेद-भाव को दूर करके लड़कियो को भी पूर्ण शिक्षा देने पर बल दिया।

हिन्दू-सस्कृति एवं सभ्यता की सराहना करते हुए उन्होने कहा कि इस सभ्यता मे सबकी उन्नति और सबके हितचिंतन पर बल दिया गया है। इसी आदर्श पर चल-कर महिलाएँ समाज में उन्नत स्थान प्राप्त करे।

सुशीला पंडित का भाषण

श्रीमती सुशीला पंडित, आचार्या कन्या गुरुकुल बड़ौदा ने इस सम्मेलन की अध्यक्षता की। उन्होने अपने भाषण में स्त्रियों की शिक्षा पर बल दिया।

प्राचीन काल मे स्त्रियो के सम्मान तथा विशेष महत्व की चर्चा करते हुए श्रीमती सुशीला पडित ने स्त्रियो को दासी मात्र न बनने की सलाह दी।

श्रीमती रक्षा शरण ने अपने भाषण मे कहा कि आज भी केवल १३ प्रतिशत स्त्रियाँ साक्षर है। स्त्री समाज में

इस भयंकर निरक्षरता का निवारण करने के लिए जबर-दस्त प्रयत्न होना चाहिए।

तृतीय पचवर्षीय योजना में सरकार ने ११ करोड रुपया स्त्री शिक्षा एव शिक्षण संस्थाओ को अनुदान देने के लिए नियत किया है। स्त्रियाँ इस धनराशि का अपनी उन्नति मे उपयोग करें।

भारतीय परम्परा

सम्मेलन में रहन-सहन वेशभूषा-खान-पान आदि में भारतीय पद्धति अपनाने पर बल दिया गया।

इस कार्य के लिए स्त्री समाजो से बाल सभाओ का सगठन करके उनमे अच्छे सस्कार पैदा करने पर बल दिया गया।

एक ऐसा मजबूत आर्य महिला सगठन स्थापित करने पर भी एक प्रस्ताव मे बल दिया गया।

आर्य महिला सम्मेलन मे राष्ट्रभाषा हिन्दी के व्यवहार पर विशेष बल दिया गया।

युवक राष्ट्रद्रोही तत्त्वों के षड्यन्त्रों से सचेत रहें

आर्य कुमार सम्मेलन को चेतावनी

रामलीला मैदान मे आर्य कुमार सम्मेलन की अध्यक्षता ससद सदस्य श्री नरदेव स्नातक ने की एव उद्घाटन बड़ौदा के सुप्रसिद्ध आर्य नेता पण्डित आनन्द प्रिय ने किया।

एक प्रस्ताव के द्वारा यह निश्चय किया गया है कि अखिल भारतीय आर्य कुमार परिषद को सगठित किया जाए और इसका कार्य सचालन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत हो। सभा से यह भी अनुरोध किया गया कि वह परिषद को अपने नियन्त्रण मे लेकर कार्य आरम्भ कराए।

प्रस्ताव में कहा गया है कि वह भारत भर की आर्य समाजो को आदेश दे कि वह अपनी-अपनी शाखाओ के अन्तर्गत आर्य कुमार सभाएँ स्थापित करे जिससे नवयुवकों मे विशुद्ध आर्य भावनाओ का जागरण हो और देश के प्रति अपने दायित्वों को भली भांति निबाह सके। सरकार से भी माग की गयी है कि उसने बालकों की भलाई के लिए जो कोष रखा है उसमें से कुछ अश आर्य कुमार सभाओ को भी दिया जाए।

एक अन्य प्रस्ताव में आर्य कुमार, नवयुवको तथा आर्य कुमारियों को चेतावनी दी गई कि वह देशद्रोही तत्वो के राष्ट्रघातक प्रचार के प्रभाव से पृथक् रहे और ईश्वर भक्त बन कर राष्ट्र के प्रति अपने कर्तव्यो को पूर्ण करे।

श्री धर्मेन्दु ने उपस्थित जनता का धन्यवाद दिया। पण्डित आनन्द प्रिय ने सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए कहा स्वामी दयानन्द ने हमे वेदो के द्वारा बताए मार्ग पर चलने का निर्देश दिया है। हमे वेदो का विश्व मे प्रचार करना है। यही स्वामी दयानन्द का आदेश था। हमे युग गति के साथ ही चलना चाहिए।

आपने कहा कि आर्य कुमार सभाएँ देश मे बन जाएँ तो वह आर्य समाज के कार्य को गति दे सकेगी।

पण्डित आनन्द प्रिय ने युवको से यह भी अनुरोध किया कि वह असम और बगाल मे स्वामी दयानन्द का सन्देश पहुचाएँ। × × ×

—०—

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा आर्यसमाज का सबसे बड़ा संगठन है। उसका पिछले ५० वर्षों का इतिहास त्याग, देश भक्ति और लोकसेवा का इतिहास है। वेद-प्रचार, वैदिक संस्कृति तथा वैदिक मन्तव्यों के प्रसार के साथ-साथ शिक्षा प्रसार, अस्पृश्यता तथा जात-पात का निवारण, महिला-कल्याण, राष्ट्र निर्माण तथा स्वाधीनता आंदोलन इन सभी क्षेत्रों मे आर्य समाज ने उल्लेखनीय कार्य किए है। सार्वदेशिक सभा के अन्तर्गत भारत वर्ष मे १२ प्रॉतीय प्रतिनिधि सभाए, विदेशो मे स्थित ४ प्रतिनिधि सभाएं तथा ४००० आर्य समाजे हैं।

इनकी सेवाओं पर इसी से अच्छा प्रकाश पड़ सकता है कि भारत, नेपाल, अफ्रीका व ट्रीनीडाड मे आर्य वीर दल की ५४० शाखाएं हैं, जिनमे नवयुवक धर्म और व्यायाम की शिक्षा ग्रहण करते है।

है। उदाहरणार्थ १९१९ में धौलपुर राज्य में राज्य की ओर से आर्य समाज के दिन प्रतिदिन के कार्य मे जो बाधा उपस्थित की गई उसके खिलाफ जब अनुनय विनय सब बेकार रहे तो आर्य जगत् ने स्वामी श्रद्धानन्द के नेतृत्व मे बलिदान के मार्ग का आश्रय लिया और समस्या का सतोष-जनक समाधान प्राप्त किया।

१९३९ में हैदराबाद राज्य में आर्य समाज ने धार्मिक एवं नागरिक अधिकारो की रक्षा के लिए जो सुप्रसिद्ध सत्याग्रह किया और जिसकी गूंज लन्दन की पार्लियामेंट तक पहुंची उसका भी इसी सभा ने संचालन किया। इस सत्याग्रह में २५ वीर अमर पद को प्राप्त हुए और लगभग १२ हजार सत्याग्रहियों ने जेल यात्रा की। इस अभियान पर आर्य समाज का लगभग १० लाख रुपया व्यय हुआ। इस अग्नि परीक्षा में भी आर्य समाज सफल निकला।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के पचास वर्ष

२०० आर्यकुमार सभाएं, ३०० से अधिक कालेज, हाई स्कूल और २००० प्राथमिक विद्यालय, ६० गुरुकुल, २०० सस्कृत पाठशालाए, १२ से अधिक टैकनिकल सस्थाए व अनेक अनाथालय तथा वनिताश्रम और गोशालाएं हैं। आर्य समाज की शिक्षा संस्थाओं में २ लाख से अधिक छात्र शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं, जिन पर प्रति वर्ष १ करोड रुपया खर्च होता है।

इनके अतिरिक्त आर्य समाज के ३०० वाचनालय, पुस्तकालय, प्रेस व पत्र-पत्रिकाए हैं। लगभग एक हजार सन्यासी, व्याख्याता तथा भजनोपदेशक प्रचार कार्यों मे लगे हुए है।

विविध आन्दोलन

अनेक महत्वपूर्ण समस्याओं तथा विषम परिस्थितियों मे इस सभा ने आर्य जगत् का समय-समय पर नेतृत्व किया

आर्य वीरो ने बड़े-बड़े कष्टों और यातनाओ को सहन करके तथा प्राणो की बाजी लगा कर इस सत्याग्रह की जिस ढंग से पवित्रता स्थिर रखी थी उसे देख कर सत्याग्रह अस्त्र के आविष्कारक स्वय गाँधी जी भी बड़े प्रभावित और प्रसन्न हुए थे।

१६४६ मे सिंध की मुस्लिम लीगी सरकार ने अपने प्रांत मे सत्यार्थ प्रकाश के १४वे समुल्लास पर प्रतिबन्ध लगाकर आर्य समाज को चुनौती दी थी उसका भी सार्वदेशिक सभा ने सफलतापूर्वक सामना किया और विजय प्राप्त की।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात १६५७ मे पंजाब मे हिंदी पठन-पाठन और राजकीय कार्यों मे उसके प्रयोग की स्वतत्रता की रक्षा के लिए सरकार के अनुचित निर्णय के विरुद्ध आर्य समाज को कष्ट सहिष्णुता का मार्ग अपनाना पडा। इस आंदोलन का संचालन भी इस सभा ने ही किया। अभी तक समस्या के समाधान का यत्न किया जा रहा है और यदि समस्या का सन्तोषजनक समाधान न हुआ तो आर्य समाज को पुनः कर्तव्य मार्ग निर्धारित करना पड़ेगा।

१६२५ में इस सभा के तत्वावधान मे मथुरा मे महर्षि दयानन्द की जन्म शताब्दी महोत्सव मनाया गया जिसमें देश और विदेश के लगभग ४ लाख व्यक्ति सम्मिलित हुए थे।

१६३३ में अजमेर में दयानन्द निर्वाण अर्द्ध शताब्दी महोत्सव मनाया गया। इस महोत्सव मे भी लगभग १॥ लाख व्यक्ति सम्मिलित हुए थे।

१६६० में मथुरा मे दयानन्द दीक्षा शताब्दी महोत्सव मनाया गया। इस अवसर पर देश-विदेश के लगभग २ लाख व्यक्तियो ने एकत्र होकर महर्षि के चरणों में अपनी श्रद्धांजलि प्रस्तुत की। इसी अवसर पर राष्ट्रपति ने विरजानन्द वैदिक अनुसंधान भवन का उद्घाटन किया।

अन्य गतिविधियाँ

स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज के महान् बलिदान के पश्चात् ब्रिटिश नौकरशाही और मुस्लिम साम्प्रदायिकता के कुत्सित गठबंधन से आर्य समाज के लिए बडा भीषण समय उपस्थित हो गया था। आर्य समाज के अनेक चुने हुए कार्यकर्ता एक-एक करके मारे जाने लगे थे। यहाँ तक कि आर्य समाज का अस्तित्व भी संकट मे पड गया था। इन सब बाधाओ के निराकरणार्थ समस्त आर्य जगत को साथ रखने के इस उद्देश्य से इस सभा ने १६२७ मे दिल्ली में प्रथम आर्य महासम्मेलन का आयोजन किया उसके पश्चात अब तक इन महासम्मेलन के आठ अधिवेशन हो चुके हैं और नौवाँ अधिवेशन सभा के स्वर्ण जयन्ती महोत्सव के उपलक्ष मे २० और २१ मई को दिल्ली मे हुआ है। ये महासम्मेलन प्रायः विशेष समस्याओ के उपस्थित होने पर ही होते हैं। प्रसन्नता है प्रत्येक सम्मेलन का उद्देश्य सफल रहा।

धर्म व संस्कृति की रक्षा

गोरक्षा के आदोलन का सूत्रपात भी महर्षि दयानन्द ने ही किया और आर्य समाज सतत प्रयत्नशील रही है कि स्वतंत्र भारत मे गोवध निषिद्ध हो तथा गोरक्षा का कार्य अग्रसर हो।

ईसाईयों की राष्ट्र धर्म एवं संस्कृति विरोधिनी आपत्तिजनक प्रगतियों के निराकरणार्थ भी यह सभा प्रयत्नशील है। धन और प्रचारकों आदि के प्रचुर साधनों से सम्पन्न विदेशी ईसाई मिशन की प्रगतियों के निराकरण का कार्य सरल नहीं है फिर भी सभा अपने परिमित साधनों के अनुरूप छोटा नागपुर, बाँसबाड़ा, उड़ीसा, नेपाल आदि क्षेत्रो मे कार्य कर रही हैं। अनेक कार्यकर्ता वन पर्वतीय क्षेत्रो तथा जातियो मे काम कर रहे हैं। हजारों व्यक्ति हिन्दू धर्म मे वापस आ गए हैं और हजारों ही

(शेष पृष्ठ १८१ पर)

आर्य महासम्मेलनों के अध्यक्ष

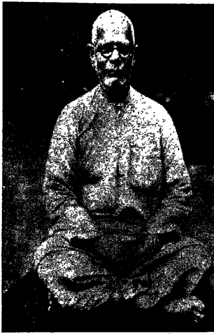


श्री महात्मा हंसराज जी

महात्मा हंसराज जी का जन्म जिला होशियारपुर अन्तर्गत बजवाडा ग्राम मे १९ अप्रैल १८६४ को हुआ था। १६ वर्ष की आयु मे गवर्नमेंट हाईस्कूल लाहौर से मैट्रिक करके कालेज मे प्रविष्ट हुए और १८८४ मे बी० ए० पास किया। १८८५ ई० मे डी० ए० वी० हाई स्कूल की लाहौर मे स्थापना हुई। लाला हंसराज जी उसके अवैतनिक हैडमास्टर बनाए गए। २ वर्ष बाद ही यह स्कूल उन्नत होकर कालेज बन गया। लाला जी इसके प्रिंसिपल नियुक्त हुए। १८८६ से १९११ तक २५ वर्ष पर्यन्त कालेज की निष्काम भाव से अवैतनिक सेवा करके और उसे न केवल पंजाब का ही अपितु समस्त भारत का मूर्धन्य कालेज बनाकर उसकी सक्रिय सेवा से स्वयं मुक्त हो गए। पंजाब मे आर्य समाज के हाई स्कूलों और कालेजों का इस समय जो जाल बिछा हुआ देख पडता है, मुख्यत. उसका प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष श्रेय श्री महात्मा हंसराज जी को प्राप्त है। जब वह लाहौर मे डी० ए० वी० हाई स्कूल के हैडमास्टर बनाए गए थे तब गवर्नमेंट हाई स्कूल के अंग्रेज हैडमास्टर ने व्यंग

पूर्वक कहा था, "यह मूर्ख पगड़ी वाला लड़का क्या हाई स्कूल चला सकेगा ?" परन्तु लाला जी ने अपनी योग्यता, प्रबन्धपटुता और कार्यकुशलता का परिचय देकर उनकी भ्रांति को निर्मूल कर दिया। इसके पश्चात् तो देश ने उन्हे आधुनिक पंजाब का निर्माता और उच्चकोटि का शिक्षा-शास्त्री कह कर उन्हे उनकी स्मृति को सम्मानित किया। वस्तुत: महात्मा जी एक बहुत ऊंची हस्ती थे।

स्कूल के दिनों में उन्हें श्री पं० गुरुदत्त जी और श्री लाला लाजपतराय जी का सहवास प्राप्त हुआ। आर्य समाज की ओर आकृष्ट हो जाने पर आर्य समाज लाहौर के ३८वे वार्षिकोत्सव पर उन्होंने अपने इस महान् व्रत की घोषणा की थी "मैं अपना समस्त जीवन आर्य समाज की वेदी पर अर्पित करता हूँ।" महात्मा जी ने आजन्म इस व्रत को निबाहा और बडी शान से निबाहा। इसके लिए लाला जी को बहुत त्याग करना पडा। अनेक कष्ट सहन करने पड़े, परन्तु उन्होने अपने त्याग और बलिदान की जो परम्परा कायम की, वह बेजोड है। उसने अनेक लोगो को प्रकाश दिया और प्रेरणा दी। उनका जीवन अत्यन्त सादा और अनुकरणीय रहा।



महात्मा हंसराज जी आर्य समाज के एक प्रमुख स्तम्भ थे। आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के सस्थापक और निर्माता थे। कालेज विभाग के आर्य समाजो का सचालन सूत्र जीवन-पर्यन्त उनके सुदृढ हाथो मे रहा। मलकानो की शुद्धि, गढवाल, बीकानेर के अकाल पीडितो की सहायता, कांगडा, क्वेटा और बिहार के भूकम्प-पीडितों की सेवा, मलाबार मे मुस्लिम आततायियो से पीडित और आतंकित हिंदुओ की रक्षा आदि उनके कार्य सदैव स्मरणीय रहेगे। उन्होने आर्यों के लिए ५ सस्कारो (सध्या, स्वाध्याय, साप्ताहिक सत्संग मे उपस्थिति, सेवा और सुदान) की व्यवस्था की। उन्होने महर्षि दयानन्द की अंग्रेजी जीवनी और धर्म-शिक्षा आदि की कई उत्तम पुस्तके प्रदान की।

वे जीवन-पर्यन्त प्र ाश प्रदान करते रहे और अन्त मे १५-११-१९३८ को महान् प्रकाश मे विलीन हो गए।

—

श्री महात्मा नारायण स्वामी जी

महात्मा नारायण स्वामी जी आर्य समाज के उच्चकोटि के नेताओं मे से थे।

सम्वत् १९२२ की माघ शुक्ल पंचमी को अलीगढ़ (उत्तर प्रदेश) मे उनका जन्म हुआ।

उनकी स्कूलीय शिक्षा नाममात्र हुई थी क्योंकि १८८६ मे पिता के आकस्मिक देहान्त के कारण वे स्कूल छोडने और परिवार के भरणपोषण के लिए किसी धन्धे मे लग जाने के लिए विवश हो गए थे। मुरादाबाद की कलक्टरी मे पेशकार की जगह मिली।

सत्यार्थप्रकाश और आर्य समाज के दस नियमों के अध्ययन आदि से वे आर्य समाज की ओर आकृष्ट हुए और वैयक्तिक जीवन को ऊंचा उठाने वाले कुछ नियमो और आदर्शों पर चलने का अभ्यास करके आर्य समाज के सदस्य बने और तन, मन, धन से आर्य समाज की सेवा की। उन्होंने अपने उच्च-चरित्र और सेवा-कार्य से आर्य समाज को खूब चमकाया। सरकारी क्षेत्रो मे, क्या मित्र और क्या विरोधी, उनकी ईमानदारी की मुक्त कंठ से प्रशंसा करते थे। उन्होंने रिश्वत के पैसे को हाथ न लगाया। मुरादाबाद के कलक्टर ने उनकी कार्य-कुशलता की प्रशसा करते हुए लिखा था He has a remarkable reputation for honesty. अर्थात् वे ईमानदारी के लिए बहुत प्रसिद्ध हैं।

मुरादाबाद मे आर्य समाज का भवन-निर्माण तथा कई सस्थाओ की स्थापना एंव उनका कार्य-सचालन करते हुए आर्य समाज के प्रति अपनी सेवाओ का क्षेत्र विस्तृत करते रहे। वहां से आर्यप्रतिनिधि सभा सयुक्त प्रान्त मे पहुच कर और उसके उच्चतम पदो पर रह कर उसकी स्थिति को सुदृढ किया। १८६७ मे उसकी नियमित रजिस्ट्री कराई। वर्षों पर्यन्त उसका कार्यालय अपने घर पर रखा। मुहर्रिक अखबार उर्दू मे निकलवाया, जो बाद में "हिन्दी में आर्यमित्र" के नाम से आरम्भ हुआ और अब तक आर्य जगत् का प्रमुख साप्ताहिक बना हुआ है।

१९१२ में गुरुकुल वृन्दावन का कार्य-संचालन हाथ में ले लेने पर सरकारी नौकरी कार्य मे बाधक प्रतीत हुई। उन्होंने नौकरी छोड़ दी। वह भी उस समय जब उनकी उन्नति तहसीलदार के पद पर होने वाली थी। इतना ही नही, पेन्शन के अधिकार को भी तिलाजलि दे दी। मित्रो ने इनवेलिड कह कर पेन्शन प्राप्त कर लेने की सलाह दी। यह सलाह रुचिकर प्रतीत न हुई। लगभग १० वर्ष तक गुरुकुल की सेवा करके और उसे राज-मार्ग पर डाल कर सन्यास लेने की तैयारी प्रारम्भ कर दी।

१९२० मे सन्यास ग्रहण किया और नैनीताल के निकट रामगढ के एकान्त पहाडी स्थान पर मुख्यत वर्षा ऋतु मे स्वाध्याय और साधना के निमित्त कुटिया बना ली।

सार्वदेशिक सभा के साथ उनका सम्बन्ध जीवन के अवसान तक बना रहा, कभी मन्त्री के रूप मे, कभी प्रधान के रूप मे। सभा को इस समय जा उन्नत और मूर्धन्य स्थान प्राप्त है, उसका बहुत बडा श्रेय श्री स्वामी जी को प्राप्त है। लगभग २० वर्ष तक आर्य समाज का भाग्य निर्माण उन्ही के हाथो मे रहा।

१९२५ मे मथुरा-शताब्दी का प्रबन्ध-भार सभा द्वारा उन्हे सौंपा गया। इसके सुप्रबन्ध से श्री स्वामी जी की प्रबन्ध-शक्ति और कार्य-कुशलता का मथुरा मे एकत्र हुए लगभग ४ लाख आर्य नर-नारियो का भव्य परिचय मिला। ४ लाख की भीड का बिना पुलिस की सहायता के प्रबन्ध करना और किसी दुर्घटना वा शिकायत का अवसर उपस्थित न होना साधारण बात न थी। मथुरा में एकत्र देश-विदेश के आर्य नर-नारियो ने उन्हे उसी समय अपना भावी नेता चुन लिया था।

आर्य समाज पर जब-जब आपत्ति आई, उसके निराकरण के लिए आर्य जगत् की दृष्टि उन पर गई। भले ही उस समय वह सभा के प्रधान थे या नही। इस प्रकार सभा मे वा उससे बाहर रहते हुए आर्य जगत् का नेतृत्व उनके हाथ में सुरक्षित रहा।

हैदराबाद राज्य मे जब राज्याश्रय प्राप्त मुस्लिम कट्टरता ने आर्य समाज का अस्तित्व समाप्त करने का दुष्प्रयास किया, चुने हुए निरपराध कार्यकर्ताओं को

पीडित, आतंकित करने, और उन्हे जेल मे डालने वा मारने का चक्र चला, जब आर्य समाज के जलूस, जल्से और व्याख्यान आदि रोके जाने लगे, उनके निराकरणार्थ सभा के निरन्तर ६ वर्ष के प्रयत्नो का कोई फल न निकला और जब आर्य समाज धर्म तथा अपने अधिकारो की रक्षा के लिए १६३६ मे बलिदान का मार्ग अपनाने के लिए विवश हो गया तब उस धर्म युद्ध का नेतृत्व उन्होंने अपने हाथो मे लिया । स्वामी जी के नेतृत्व मे आर्य समाज इस अग्नि-परीक्षण मे कुन्दन बन कर निकला । १६४७ मे सिंध की मुस्लिमलीगी सरकार ने सत्यार्थप्रकाश के १४ वे समुल्लास पर अत्यन्त अवांछनीय प्रतिबन्ध लगा कर आर्य समाज को चुनौती दी । जब सभा की प्रार्थनाओ और लिखा-पढी पर कोई ध्यान न दिया गया और जब बलिदान के मार्ग का आश्रय लेने के अतिरिक्त दूसरा मार्ग न रहा तब स्वामी जी ने सत्याग्रह की घोषणा कर दी और अपने साथ आर्य समाज पर मिटने वाले स्वामी अभेदानन्द जी, श्री राजगुरु धुरेन्द्र जी शास्त्री, (स्वामी ध्रुवानन्द जी), श्री महात्मा खुशहालचन्द जी, (आनन्द स्वामी जी) श्री कुंवर चादकरण जी शारदा (म० चन्द्रानन्द) तथा श्री प० लक्ष्मीदत्त दीक्षित को लेकर कराची जा बैठे। यद्यपि वे उन दिनों अस्वस्थ थे । परमात्मा की कृपा से इस अभियान मे भी आर्य समाज की विजय हुई ।

श्री स्वामी जी बडे स्वाध्यायशील थे । उन्होने आत्म-दर्शन, मृत्युपरलोक, और उपनिषदो की टीकाएं आदि-आदि प्रचुर और मूल्यवान साहित्य प्रदान किया, जो अत्यन्त लोकप्रिय है । उनके व्याख्यानो और प्रवचनो को छोटे-बडे शिक्षित और अशिक्षित सभी बडे चाव और श्रद्धा से सुनते और प्रभावित होते थे ।

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश ने उनकी स्मृति के सम्मानस्वरूप अपने भवन का नाम "नारायण स्वामी भवन" रखा और रामगढ की आर्य-हिन्दू जनता ने उनके नाम पर एक हाई स्कूल खोला हुआ है ।

उन्होने अपने उदाहरण से यह दिखाया कि थोडी सी शिक्षा और साधारण स्थिति का व्यक्ति स्वाध्याय, चरित्रबल, समाज-सेवा और परिश्रम से ऊंची से ऊंची स्थिति प्राप्त कर सकता और समाज का अमित हित कर सकता है।

अक्तूबर १६४७ मे कैंसर रोग से बरेली मे उनका देहान्त हुआ ।

श्री आचार्य रामदेव जी

आचार्य रामदेव जी का जन्म ३१ जुलाई १८८१ ई० को ग्राम बजवाडा (होशियारपुर) मे हुआ था । बचपन



का नाम रामदास था। महात्मा हसराज जी का जन्म-स्थान भी यही ग्राम था। वे आचार्य रामदेव जी के मौसेरे भाई थे। एफ० ए० तक की शिक्षा डी० ए० वी० कालेज लाहौर मे प्राप्त की फिर प्राइवेट रूप से बी० ए० की परीक्षा पास की। कुछ समय तक आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के अग्रेजी मुख-पत्र 'आर्य पत्रिका' के सम्पादकीय विभाग मे काम किया। तत्पश्चात् जालन्धर छावनी के विक्टर हाई स्कूल मे हैड मास्टरी की। १९०५ मे ट्रेनिग कालेज लाहौर से ट्रेन्ड हुए और जीद राज्य मे स्कूलो के इन्स्पेक्टर नियत हुए। इस स्थान का चार्ज लेने से दो दिन पूर्व ही महात्मा मुन्शीराम जी का तार पाकर उनसे मिलने गुरुकुल कागडी गए और महात्मा जी के अनुरोध पर गुरुकुल कागडी को जीवनदान करके गुरुकुल के ही हो गए।

१९१७ मे महात्मा मुन्शीराम जी सन्यास लेकर गुरुकुल से चले गए और आचार्य का कार्य इन्होने सभाला। अनेक वर्षो तक गुरुकुल के आचार्य और मुख्याधिष्ठाता दोनो का दायित्व भी निभाया। गुरुकुल कन्या देहरादून की स्थापना कराई और १९२५ से १९३९ तक अर्थात् निधन काल तक वही रहे। १९३५ में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान चुने गए और सभा के अर्द्ध-शताब्दी महोत्सव का सफल प्रबन्ध किया। कई वर्षों तक सार्वदेशिक सभा के उपप्रधान रहे। गुरुकुल कागडी के आधुनिक स्वरूप मे आचार्य जी का प्रमुखतम हाथ रहा।

श्री आचार्य जी हिन्दी और अंग्रेजी के प्रौढ़ लेखक, वक्ता और विद्वान् थे। उनकी टक्कर का व्याख्याता और विद्वान् विरला ही होगा। देश और विदेश के विद्वानों मे उनका उच्च स्थान था। उन की अग्रेजी मासिक पत्रिका "वैदिक मेगजीन" ने देश और विदेश के अनेक विद्वानों को आर्य समाज और उसके सिद्धान्तो की ओर आकृष्ट किया था। उनके लेखो और प्रयत्नो से आर्य समाज के बाहर के विद्वानो मे आर्य समाज और उसके सिद्धान्तो के विषय मे व्याप्त भ्रान्तियाँ दूर हुई थी।

गुरुकुल कागडी और कन्या गुरुकुल देहरादून के शैक्षणिक और आर्थिक स्तर की उच्चता के लिए अपने स्वास्थ्य और परिवार के हितो के बलिदान पर भी कोई प्रयत्न उठा न रखा था। राजनैतिक क्षेत्र मे भी कार्य किया, जेल गए, परन्तु आर्य समाज और गुरुकुल ही उनकी प्रगतियो के मुख्य केन्द्र रहे। वह आर्य समाज के सिद्धान्तो पर दृढ रहते और उनके विषय मे किसी समझौते के लिए तैयार न होते थे। दिसम्बर १९३९ मे कन्या गुरुकुल देहरादून मे उनका देहान्त हुआ।

श्री हरि माधव अणे

अणे, माधव श्री हरि—बी० ए० एल० एल० बी०



मराठी और संस्कृत के गम्भीर विद्वान्, कांग्रेस के पुराने नेता, कुशल धाराशास्त्री, सम्प्रति लोक सभा के सदस्य हैं।

२६ अगस्त सन् १८८० ई० को बरार अन्तर्गत यवतमाल जिले के वर्णा नामक स्थान में जन्म हुआ।

वादा और नागपुर में शिक्षा हुई। बी० ए० एल० एल० बी० करने के बाद १६०७ में यवतमाल में वकालत आरम्भ की। इसके साथ ही सार्वजनिक कार्यों में भी योगदान करना आरम्भ किया। होमरूल आन्दोलन में प्राणपण से योगदान किया और यवतमाल जिले में सभी जिलों की अपेक्षा अधिक सदस्य बनाए। तिलक और केलकर जब शिष्ट मंडल लेकर इंग्लैंड जाने लगे तो केसरी और होमरूल लीग का उत्तरदायित्व स्वीकार करने के लिए इन से विनती की थी इसी से यह पता चलता है कि वे स्व० तिलक के कितने विश्वस्त साथी थे।

लोकमान्य तिलक द्वारा स्थापित कांग्रेस डिमोक्रेटिक पार्टी ने माटफोर्ड-शासन-सुधार को 'कार्यान्वित करने, लड़ाई की पूर्व तैयारी के रूप में देश में मजदूरों और मतदाताओं के संघ गठित करने और किसानों का संगठन करने का निश्चय किया। विदेशों में सहानुभूति प्राप्त करने की व्यवस्था की गई। लेकिन इसी बीच लोकमान्य तिलक चल बसे। १ अगस्त, १६२० को कलकत्ते में काँग्रेस का विशेष अधिवेशन हुआ, जिसने तिलक पक्ष के विरोध के बावजूद भी सरकार के साथ असहयोग करने का प्रस्ताव बहुमत से पास किया।

श्री अणे असहयोग के विरुद्ध थे यद्यपि आपने असहयोग के प्रति विरोध प्रदर्शित किया फिर भी खादी-प्रचार, मद्यपान-निषेध आदि रचनात्मक कार्य-क्रम के प्रति सहमति प्रदर्शित कर अपने मित्रों के सहयोग से उक्त कार्यक्रम के प्रचार के लिए जोरों से आन्दोलन शुरू किया और वकालत त्याग दी।

१६२६ में लाहौर कांग्रेस अधिवेशन में पूर्ण स्वतन्त्रता के ध्येय की घोषणा की गई। काँग्रेस अध्यक्ष पं० नेहरू ने आदेश दिया कि काँग्रेस पदाधिकारीधारा-सभाओं से इस्तीफे दे दें। श्री अणे को उक्त आदेश नहीं जंचा। उन्होंने विदर्भ प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष पद और आल इंडिया काँग्रेस कमेटी की सदस्यता से इस्तीफा दे दिया। लेकिन जब महात्मा गान्धी ने दण्डी यात्रा आरम्भ की तो आपने असेम्बली की सदस्यता से इस्तीफा दे दिया और काँग्रेस की युद्ध-परिषद में शामिल हुए।

नमक-सत्याग्रह के समय उन्होंने इस कारण जंगल सत्याग्रह की कल्पना की थी कि बरार से समुद्र निकट नहीं था और जब्त साहित्य पढ़ने मात्र से सरकार पर कुछ भी चोट न पड़ती। प्रान्त भर में जंगल सत्याग्रह का प्रचार किया और जंगल कमेटियों का जाल बिछा दिया। १० जुलाई १६३० को पुसद गांव से ८ मील की दूरी पर सरकारी जंगल में वृक्ष काट कर कानून को भंग किया। चोरी के जुर्म में आपको ६ महीने की सजा मिली। इस नवीन ढंग से कानून भंग करने के लिए काँग्रेस वर्किंग कमेटी ने उनका अभिनन्दन किया। यही नहीं भारत भर में सत्याग्रह की इस नई प्रणाली के अवलम्बन के लिए उन्हें बाहवाही मिली। आप कांग्रेस वर्किंग कमेटी में लिए गए। बंगाल में कांग्रेस निर्वाचन का निर्णय देने के लिए उभय पक्षों ने इन को पंच माना। गान्धी—इर्विन संधि की बातचीत के समय परामर्श के लिए इन्हें दिल्ली बुलाया गया और १६३३ में यह कांग्रेस अध्यक्ष पद पर बिठाए गए।

असहयोग के समय कांग्रेस की धारणा का विरोध करते हुए भी वैयक्तिक दृष्टि से इन्होंने उसके (कांग्रेस के) सभी आदेशों का सम्यकरूपेण पालन किया। पहले आज्ञा पालन और बाद में विरोध—आप की नीति रही है। केवल साम्प्रदायिक निर्णय के विषय में प्रारम्भ से ही कांग्रेस की धारणा का विरोध किया और साम्प्रदायिक निर्णय के सम्बन्ध में काँग्रेस की धारणा का प्रबल विरोध करने के लिए कांग्रेस नेशनलिस्ट पार्टी की स्थापना

की। इस मामले मे प० मालवीय इनके सहकारी थे। इन्हो ने चुनाव मे कॉंग्रेस के उम्मीदवारो के विरोध मे अपने पक्ष के उम्मीदवारो को भी खड़ा किया। बाद में जब पंडित जवाहरलाल नेहरू जेल से छूट कर बाहर आए और उन्होंने असंदिग्ध शब्दो मे साम्प्रदायिक निर्णय का विरोध किया तो यह प्रकरण समाप्त हुआ।

१९४१ मे ये वायसराय की शासन-परिषद के सदस्य चुने गए थे। लेकिन जब महात्मा गान्धी ने आगाखां पैलेस मे २१ दिन का उपवास किया तो तुरन्त शासन-परिषद से इस्तीफा दे दिया। १९४३ मे ये सीलोन मे भारत सरकार के एजेन्ट नियुक्त किए गए।

इनके भाषण पाण्डित्यपूर्ण होते है। इनके कंठ से शब्द नही निकलते, वरन् उत्कृष्ट साहित्य निकलता है जो निस्सदेह सस्कृत ग्रन्थो के मथन से उद्गारित रत्नो से मडित रहता है। आप स्वतन्त्र विचारो के महान् राजनीतिज्ञ हैं और अपने विचार इके की चोट प्रकट करने मे कभी भी सकोच नही करते।

जुलाई १९४० से जनवरी १९४८ तक भारत की विधान निर्मात्री परिषद के सदस्य रहे। १२ जनवरी १९४८ को बिहार के गवर्नर नियुक्त किए गए।

महाराष्ट्र सदा से प्राचीनता का पुजारी रहा है। वेदादि सच्छास्त्रो मे उसकी अगाध श्रद्धा रही है। आर्य समाज जैसी संस्था मे इस प्रकार के बुद्धिजीवी वर्ग की रुचि होना सवभाविक था। फिर मोपला विद्रोह आदि के अवसर पर दक्षिण के जन-साधारण की जो सेवा आर्य समाज ने की, उसके परिणामस्वरूप आर्य समाज असहाय एवं दलितो के प्रहरी एव रक्षक के रूप मे प्रसिद्ध हो गया। अणे स्वय लोकमान्य थे। वे आर्य समाज जैसी लोकसेवी संस्था से कैसे दूर रह सकते थे जब सार्वदेशिक सभा ने इन से शोलापुर कांग्रेस का अध्यक्ष पद स्वीकार करने की प्रार्थना की तो इन्होने उसे सहर्ष स्वीकार कर अपने हृदय की विशालता का भव्य परिचय दिया था। वस्तुत सभा का यह चुनाव बड़ा हितकारी सिद्ध हुआ। उनकी प्रतिभा और प्रभाव से हैदराबाद सत्याग्रह मे बहुत बड़ी प्रेरणा और शक्ति मिली।

श्री डा० श्यामाप्रसाद मुखर्जी

डा० श्यामाप्रसाद मुखर्जी बगाल के चोटी के नेताओं मे से एक थे। बड़े विद्वान् और निस्पृह जन-सेवक थे। उनका व्यक्तित्व बहुत ऊंचा था। देश के बहुत अच्छे वक्ताओं मे उनकी गणना होती थी। हिन्दू धर्म और



सभ्यता के अनन्य प्रेमी थे। कांग्रेस को उन्होंने अपने लिए उपयुक्त इसलिए नही पाया कि वह हिन्दू-हितों की उपेक्षा करती और मुसलमानो एवं पाकिस्तान को खुश करने की नीति का अवलम्बन करती है। वे हिन्दू महासभा के प्रमुख नेता और जनसंघ नामक नई राजनीतिक पार्टी के जन्मदाता थे।

स्व० डा० श्यामा प्रसाद जी प्रकांड शिक्षा-शास्त्री स्व० श्री आशुतोष मुकर्जी के सुपुत्र थे। पिता के समान ही यशस्वी रहे। जुलाई १६०१ में कलकत्ता मे जन्म हुआ। एम०ए० बी० एल० परीक्षाएं पास करके इंग्लैंड गए और वहां से बैरिस्टर बनकर १६२७ में भारत लौटे। कलकत्ता हाई कोर्ट मे प्रैक्टिस प्रारभ की और अल्पकाल मे ही सफल बैरिस्टर सिद्ध हुए। बंगाल धारा सभा के सदस्य निर्वाचित होने पर सार्वजनिक कार्यों में भाग लेना आरभ किया। १६३४ से १६३८ तक कलकत्ता विश्व विद्यालय के उपकुलपति और १६४१ से १६४२ तक बगाल सरकार के अर्थ मंत्री रहे। १६४६ के आम चुनाव में केन्द्रिय धारा सभा के निर्विरोध सदस्य चुने गए। भारतीय गणराज्य के मंत्री भी रहे। १६५२ के आम चुनाव मे कांग्रेसी उम्मीदवार को हजारो वोटो से हराकर भारतीय लोक सभा के सदस्य चुन लिए जाने पर यह सिद्ध हो गया था कि बगाल में उन्हे बडी लोकप्रियता प्राप्त थी।

काश्मीर मे हिन्दू हितो की रक्षार्थ सत्याग्रह करके जेल गए और वहीं संदिग्ध परिस्थितियो मे उनका देहान्त हुआ।

निस्सन्देह वह उच्चकोटि के देश-भक्त थे। जन-सेवा के लिए उन्होंने बड़ा त्याग किया था।

देश की स्वाधीनता, शिक्षा-प्रसार, समाज-सुधार एव प्राचीन सस्कृति के पुनरुद्धार के लिए किए गये आर्य समाज के महान् कार्य से वे अत्यन्त प्रभावित थे। यही कारण था कि वे आर्य समाजी न होते हुए भी आर्य समाज के न केवल प्रशंसक ही रहे अपितु आवश्यकता पड़ने पर उसके कार्यों मे हाथ भी बंटाते रहे।

श्रीयुत घनश्याम सिंह जी गुप्त

श्रीयुत् गुप्त जी राजनैतिक और आर्य सामाजिक दोनों ही क्षेत्रो मे बडे प्रसिद्ध और लोक प्रिय हैं। दोनो क्षेत्रो मे उनकी सेवाएं अत्यधिक मूल्यवान् रही हैं।

श्री गुप्त जी का जन्म २२ दिसम्बर सन् १८८५ई० में दुर्ग (मध्य प्रदेश) मे हुआ। ये जमीदारी उन्मूलन के पूर्व मालगुजार थे। श्री गुप्त जी अपनी सेवाओ के लिए समस्त मध्य प्रदेश प्रान्त और भारत मे प्रसिद्ध



हैं। वह १९२५ से १९२८ तक दुर्ग की नगरपालिका कमेटी के प्रधान, १९३१ से १९३४ तक डिस्ट्रिक्ट-कौंसिल दुर्ग के चेयरमैन, कुछ वर्षों तक दुर्ग कोग्राप-रेटिव कौंसिल के चेयरमैन, १९२३-२६ तक मध्य प्रदेश लैजिस्लेटिव कौंसिल के सदस्य, १९२६ से १९२९ तक मध्य प्रदेश लैजिस्लेटिव कौंसिल मे कांग्रेस पार्टी और विरोधी पक्ष के नेता, १९३१ से १९३६ तक ग्राल इन्डिया कांग्रेस कमेटी के सदस्य, १९३४ से १९३७ तक केन्द्रिय धारा सभा के सदस्य तथा १९३७ से १९५२ तक मध्य प्रदेश की धारा सभा के अध्यक्ष रहे। उनकी निष्पक्षता, न्याय-प्रियता और सनुलित वाणी की सर्वदा प्रशसा हुई है।

भारत के सविधान की हिंदी अनुवाद समिति के अध्यक्ष रहे। संवैधानिक और कानूनी शब्दावली के हिन्दी पर्याय बनाने का कार्य भी उनके सुपुर्द रहा। मध्य प्रदेश राज्य सरकार ने उस प्रदेश मे ईसाई पादरियो की गतिविधि का निरीक्षण करके रिपोर्ट देने के लिए श्रीयुत् नियोगी जी की अध्यक्षता मे जो कमेटी बनाई थी, गुप्त जी उसके भी सक्रिय सदस्य थे।

श्री गुप्त जी का आर्य समाज के साथ बचपन से ही गहरा सम्बन्ध है। वह प्रारम्भ में १९०८ से १९१० तक गुरुकुल कागडी मे गणित और विज्ञान के प्राध्यापक रहे। उसके पश्चात् दुर्ग मे वकालत की। वे किसी भी क्षेत्र मे रहे आर्य समाज को सर्वोपरि रखते हैं। १९११ में जातपात को तोडकर विवाह करने मे उन्होने एक अच्छा उदाहरण प्रस्तुत किया था।

श्री गुप्त जी वर्षों पर्यन्त सार्वदेशिक सभा के सदस्य, उपप्रधान और प्रधान रहे। केन्द्रीय धारा सभा मे आर्य-विवाह-ऐक्ट को पारित कराने मे उन्होने जो यत्न और परिश्रम किया और इस प्रकार जो सेवा की उससे समस्त आर्य जगत् उनका ऋणी है।

हैदराबाद सत्याग्रह का धर्म-युद्ध उनके प्रधानत्व में हुआ था। इसकी सफलता के लिए उन्होंने जो दौड-धूप की, उच्च क्षेत्रों मे जो यत्न किया और अपने प्रभाव को जिस कुशलता से प्रयुक्त किया वह ऐतिहासिक महत्व रखता है। सभव है जब श्री गुप्त जी अपनी आत्म-कथा लिखें या उनकी वृहत् जीवनी लिखी जाय उस पर विस्तार से प्रकाश पडे। इस समय इतना ही कहा जा सकता है कि श्री गुप्त जी ने इस कार्य पर अपने को मिटाया हुआ था। आर्य-समाज उनकी इस सेवा को कभी भुला न सकेगा।

श्री गुप्त जी चिरकाल-पर्यन्त आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य प्रदेश के प्रधान रहे और उस प्रान्त के आर्य सामाजिक जगत् के प्रमुख रहे। आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य प्रदेश को लाखों की सम्पत्ति दिलाने का श्रेय उन्हें प्राप्त है।

पंजाब में भाषा की स्वतंत्रता के आन्दोलन का संचालन सार्वदेशिक सभा ने उनके सुपुर्द किया हुआ है जिसके सम्यक् समाधान के लिए वह अपने ढग से प्रयत्नशील हैं। आर्य जनता का उनपर पूर्ण विश्वास है।

श्री गुप्त जी बडे सहृदय और मिष्टभाषी है। वे अधिक से अधिक शिष्ट और विनम्र हैं फिर भी सिद्धान्त पर कभी नही झुकते चाहे इसके लिए उन्हे यश मिले या अपयश।

श्री विनायकराव जी बार.-ऐट.-ला.

हैदराबाद राज्य की सामाजिक तथा राजनैतिक चेतना का इतिहास, आर्य समाज के कार्य का उल्लेख न करने से अपूर्ण रह जायगा और हैदराबाद में आर्य समाज का इतिहास प० विनायकराव जी तथा उनके स्व० पिता केशवराव जी के कार्यों के उल्लेख के बिना अधूरा रह जाएगा। स्व० केशवराव जी हैदराबाद की जन-जाग्रति तथा राजनैतिक चेतना के जनक रहे हैं, जिनकी सरकार पर धाक और जनता पर प्रभाव था। पं० विनायकराव

जी अपने पिता के वस्तुत: योग्य उत्तराधिकारी सिद्ध हुए। पिता से विरासत मे पाये हुए नेतृत्व को पं० विनायकराव जी ने बहुत अच्छे ढंग से निभाया। जनता के हृदयो पर राज्य किया। विरोधी रहते हुए भी निजामी हुकूमत ने आपकी बात पर विश्वास प्रकट किया।

पं० विनायकराव जी का मूल निवास-स्थान महाराष्ट्र के परभणी जिले मे कोरट नाम का ग्राम था। इसी से आपके परिवार को "कोरटकर" कहा जाता है। किन्तु विनायकराव जी का जन्म अपने ननिहाल कलम्ब जिला उस्मानाबाद (महाराष्ट्र) मे सन् १८६५ की ३ फरवरी



को हुआ। आपकी प्रारम्भिक शिक्षा ज्यो-त्यो घर ही मे ही हुई। आठ वर्ष की आयु में स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने आपके पिता से गुरुकुल के लिए माँग लिया। माता को सूचना दिये बिना विनायकराव जी सन् १६०४ मे गुरुकुल भेज दिये गये। सन् १६१६ मे वे विद्यालंकार की उपाधि से विभूषित होकर हैदराबाद लौटे। उसके पश्चात् आपने पूना के एक कृषि कालेज मे अध्ययन किया। किन्तु शीघ्र ही इगलैंड चले गये और १६३२ ई० मे एल० एल० बी तथा बार-एट- ला की उपाधि से विभूषित होकर स्वदेश लौटे। कट्टर पन्थियो ने आपको इस समुद्र-यात्रा के कारण, आपके सामाजिक बहिष्कार का प्रयत्न किया किन्तु इसका आपके जीवन पर कोई प्रभाव नही हुआ।

१६२५ से १६३३ तक आप अपनी वकालत मे लगे रहे। पिता की छत्र-छाया मे आपने अपने दिन बिताये। आर्य समाज के कार्यो में भाग लेते रहे किन्तु गौण रूप मे। किन्तु श्री केशवराव जी के स्वर्गवास के उपरान्त जहा आप पर पारिवारिक कार्यो का बोझ आ पड़ा, वहाँ आप पर आर्यसमाज के कार्यों का दायित्व भी आ पडा। १६३३ मे सर्वसम्मति से आप आर्य प्रतिनिधि सभा हैदराबाद के प्रधान चुने गये और १६५० तक निरन्तर इस पद पर सर्वसम्मति से आरूढ रहे।

१६३७ ई० मे हैदराबाद मे आर्य समाज का सत्याग्रह आन्दोलन चला। विनायक राव जी इस समय आर्य समाज के केन्द्र-बिन्दु थे। सबसे पहले आर्य समाजियो पर झूठे मुकदमे चले। उस समय आर्य समाजियों की ओर से काम करने वाले वकीलो की आवश्यकता थी। सरकार का आतंक ऐसा था कि सामान्य वकील इस कार्य के लिए आगे नही बढता था। जहाँ कोई वकील नही मिलता था, वहाँ पं० विनायकराव जी खड़े हो जाते थे। राज्य भर मे आपको जाना पड़ता था। उनके इस साहसपूर्ण कार्य ने अनेक वकीलो को प्रेरणा दी कि सार्वजनिक कार्यकर्त्ताओ की ओर से मुकदमे लड़ें। पं० विनायकराव जी के इस कार्य से उनकी अपनी

वकालत बैठती गई आपका साधन टूटता गया। किन्तु सामाजिक कार्यों और मुकदमो मे भाग लेना उन्होने बन्द नही किया। आर्यसमाज के सत्याग्रह के पश्चात् भी मुकदमे चलते रहे। उनमे प्राय प० विनायकराव जी ही वकील रहा करते थे। कहने की आवश्यकता नही कि ऐसे मुकदमो मे आप जहाँ फीस नही लेते थे वहा आवश्यकता पड़ने पर जेब से भी खर्च करते थे। इसके कारण जनता में आप अत्यन्त लोकप्रिय हो गये। १९३९ के पश्चात् तो आपने पेशे के रूप मे वकालत को त्याग दिया। किन्तु मिनिस्टर बनने तक सार्वजनिक मुकदमो से आपको छुटकारा नही मिला। इसमे उन्हे आनन्द भी मिलता था। इस साहसपूर्ण कार्य को देख कर ही हैदराबाद के मदान्ध मुसलमानो के ३० हजार के एक जमघट ने सन् १९३७ मे आपके निवास-स्थान को घेर लिया था। किन्तु किसी को फाटक के भीतर घुसने का साहस न हो सका। इसका नेतृत्व एक स्थानीय एडवोकेट ने किया था।

सत्याग्रह के दिनो मे हैदराबाद की हुकूमत ने अपने भूतपूर्व हिन्दू प्रधान मन्त्री सर किशन प्रसाद के नाम से एक वक्तव्य प्रकाशित करके आर्य समाज और उसके आन्दोलन का विरोध किया। उसका उत्तर हैदराबाद शहर की एक सार्वजनिक सभा मे ही पं० विनायकराव जी ने इतने कड़े शब्दो मे दिया था कि स्वय उन्हें विश्वास हो गया कि हुकूमत गिरफ्तार कर लेगी। जुलाई १९३९ मे आप आठवे सर्वाधिकारी के रूप मे २००० हैदराबादी सत्याग्रहियो के साथ सत्याग्रह करने के लिए अहमदनगर पहुचे थे कि हैदराबाद राज्य ने समझौता कर लिया।

१९४२ ई० में प्रथम हैदराबाद राज्य आर्य सम्मेलन उदगीर के आप सभापति चुने गए। वह एक अभूतपूर्व घटना थी। १९४६ मे चतुर्थ सम्मेलन के अवसर पर गुलबर्गा मे सशस्त्र पुलीस के एक दल ने क्लेक्टर और डी० एस० पी० की उपस्थिति मे पं० विनायकराव जी, प० गरणपत शास्त्री जी तथा प० नरेन्द्र जी पर घातक आक्रमण किया। उस दुर्घटना से आपका जीवित रह जाना एक चमत्कार ही था। किन्तु इस आतक से आप विचलित नहीं हुए। दूसरे वर्ष ही वरगल आर्य सम्मेलन में जनता ने आपको ही पुनरपि सभापति चुना।

आतकवाद से आपको दबाना कठिन जानकर निजामी हुकूमत ने आपको मोहजाल मे फास कर जनान्दोलन से पृथक् करने का भी यत्न किया। आपको न्याय-विभाग के एक उच्च पद को स्वीकार करने के लिए कहा गया। उसके उत्तर मे आपने तत्कालीन प्रधान मन्त्री को एक सख्त पत्र लिखते हुए कहा कि जबकि जनता के महत्वपूर्ण कार्यकर्त्ता जेलो मे बन्द हैं, जनता के मूलभूत अधिकारियो को सरकार ने अपने काले कानूनों द्वारा जकड़ रखा है तथा राज्य की बहुसख्यक जनता के लिए राज्य एक कारागार से बढ कर नही, ऐसी दशा मे वे राजकीय पद स्वीकार करना अपनी आत्मा की हत्या और अपने स्वाभिमान के विरुद्ध समझते है।

सन् १९४८ के कांग्रेसी आन्दोलन मे भी आपका बडा भाग रहा है। ऐसे समय जबकि लगभग सभी राजनैतिक नेता जेलो मे या राज्य से बाहर थे, आपने हैदराबाद मे रह कर वकीलो का एक सगठन बनाया और उसकी अध्यक्षता स्वीकार करके लायकअली के वक्तव्यो का ऐसा भण्डाफोड किया कि पुलिस कार्यवाही के एक सप्ताह पूर्व हुकूमत ने आपको जेल मे बन्द कर दिया।

१९५० मे आप को राज्य का मन्त्री-पद दिया गया, जिस पर आप १९५६ की प्रान्त पुनर्रचना तक रहे। १९५६ के चुनाव मे आप लोकसभा के लिए चुने गये और इस समय आप ससद्-सदस्य है।

अपने पिता की स्मृति मे आपने हैदराबाद मे केशव स्मारक विद्यालय तथा केशव स्मारक कन्या विद्यालय की स्थापना की। दोनो हिन्दी माध्यम और तेलगू माध्यम के अच्छे विद्यालयों मे से हैं। इस समय आप हिन्दी प्रचार के इतिहास का एक उल्लेखनीय कार्य कर रहे हैं। हिन्दी

कैमारी (कराची) नगर की सडकों, गलियो इत्यादि मे सत्यार्थ-प्रकाश का प्रवचन किया उस पर भाषण दिए और बिकवाया। सिंध सरकार ने इन कार्यों पर प्रतिबन्ध लगाया हुआ था। इन्होने ५-६ दिन ऐसा किया। सत्यार्थप्रकाश की नीलामी कराई। एक सज्जन ने १ प्रति २५०) मे क्रय करली थी। सत्याग्रह के प्रवचन बिक्री आदि करने का सिंध की गवर्नमेंट को नियमित नोटिस दिया परन्तु उक्त गवर्नमेन्ट ने कोई कार्यवाही न की तब सत्याग्रह बन्द कर दिया गया।

लगभग ५ वर्ष तक (१६५०-५५ तक) श्री राजगुरु जी सार्वदेशिक सभा के प्रधान रहे। इस काल में उन्होने सभा की आर्थिक स्थिति बहुत दृढ की और आर्य जगत् मे उसके नेतृत्व को बहुत प्रशस्त किया।

१६५५ मे सन्यास लिया और श्री धुरेन्द्र शास्त्री जी से स्वामी ध्रुवानन्द जी बन गए। उनके सन्यास-प्रवेश का समारोह जो साधु आश्रम मे हुआ था वह देखने योग्य था। इस समारोह मे स्वामी जी के सैकड़ो बडे बडे भक्तो के अतिरिक्त आर्य समाज के बड़े बड़े विद्वान् नेता राज्य के उच्च कर्मचारी और राज्यो के मन्त्री भी सम्मिलित हुए थे।

१६५६ के जुलाई मास में श्री स्वामी जी वैदिक धर्म के सन्देश के प्रसार और व्यवस्था करने के महान् कार्य पर विदेश गये। वहा वे अपने कार्य मे पूर्ण सफल हुए और १२ अप्रैल १६६१ को भारत लौटे। सार्वदेशिक सभा की प्रार्थना पर आर्य सभा मोरीशस की सुव्यवस्था तथा उसको हर प्रकार से उन्नत और दृढ करने का जो कार्य निरन्तर ३।। वर्ष वहा बैठ कर और विघ्न-बाधाओ पर विजय प्राप्त करके किया वह ऐतिहासिक महत्व रखता है। मोरीशस के अतिरिक्त श्री स्वामी जी ने पूर्वी अफ्रीका के केनिया, युगान्डा, टागानिका, जजीबार चारो भागो मे, दक्षिण रोडेशिया और मेडागास्कर मे भी सफल प्रचार कार्य किया। श्री स्वामी जी की आर्य समाज और सार्व-देशिक सभा के प्रति की गई मूल्यवान सेवाओ के आदर स्वरूप आर्य समाज ने उन्हे सार्वदेशिक सभा की स्वर्ण जयन्ती महोत्सव और नवम् आर्य महासम्मेलन का प्रधान चुन कर अपने एक बहुत बडे कर्त्तव्य का पालन किया है।

श्री स्वामी जी महर्षि दयानन्द के तपस्वी भिक्षु हैं। आर्य समाज को उन पर गर्व है। वे आर्य समाज की शोभा हैं।

मेरा मन्तव्य

मैं अपना मन्तव्य उसी का जानता हूँ कि जो तीन काल में सब को एक सा मानने योग्य है। मेरा कोई नवीन कल्पना वा मतमतान्तर चलाने का लेशमात्र भी अभिप्राय नहीं है किन्तु जो सत्य है उसको मानना-मनवाना और जो असत्य है उसको छोड़ना और छुडवाना मुझको अभीष्ट है। यदि मैं पक्षपात करता तो आर्यावर्त मे प्रचरित मतो में से किसी एक मत का आग्रही होता किन्तु जो जो आर्यावर्त वा अन्य देशों में अधर्म युक्त चाल चलन है उनका स्वीकार और जो धर्मयुक्त बाते हैं उनका त्याग नहीं करता न करना चाहता हूँ क्यो कि ऐसा करना मनुष्य धर्म से बहि है।

—महर्षि दयानन्द

ओ३म् संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम् ।
देवा भागं यथापूर्वे संजानाना उपासते ॥

नवम सार्वदेशिक आर्य महासम्मेलन, दिल्ली के सभापति श्री स्वामी ध्रुवानन्द जी सरस्वती का अध्यक्षीय भाषण

महिलाओ और सज्जनो !

आज मुझे इस महासम्मेलन का अध्यक्ष-पद प्रदान कर, मेरे कमजोर कन्धो पर भारी भार रखा गया है । जैसी आपकी इच्छा और आज्ञा, आपके आदेशानुसार, मैं इस कर्त्तव्य-पालन मे प्रवृत्त होता हूं । आशा है कि मेरे साथ आपका पूर्ण सहयोग रहेगा। जैसा कि आपको ज्ञात है, मैं पांच वर्ष पूर्व विदेश मे वैदिक धर्म प्रचारार्थ गया था। आज इतने दिनो पश्चात् इस महासम्मेलन मे, आप सबके दर्शन करके मुझे परम प्रसन्नता हो रही है ।

महर्षि और आर्य समाज

भारत की भयंकर अवस्था और प्रतिकूल परिस्थिति में, महर्षि दयानन्द का प्रादुर्भाव हुआ। महर्षि के तप-त्याग-पूत पवित्र जीवन और विशाल व्यक्तित्व का सारे देश पर प्रभाव पडा और उनकी विमल विचार-धारा सर्वत्र प्रवाहित हुई। यदि उस पतनोन्मुखी परिस्थिति मे महर्षि द्वारा प्रचार-कार्य न हुआ होता तो आज देश, जाति—आर्यजाति— की कितनी दुरवस्था होती, इसका अनुमान भी बडा दुखद और भयकर है । हम क्या है ? हमारा धर्म और राष्ट्र कितना गौरवशाली है ? हमारे साहित्य मे कैसी कल्याण-मयी भावनाए भरी हुई हैं ? हमारा पुनरुत्थान या अभ्युदय किस प्रकार हो सकता है ? इत्यादि प्रश्नो की मीमासा करते हुए, महर्षि ने देश और जाति-उद्धार के अनेक अमोघ उपाय बताये। सामाजिक कुरीतियों दूर करने की ओर सर्व-साधारण का ध्यान आकृष्ट किया। सर्वप्रथम पराधीन भारत को स्वतन्त्र होने का सन्देश ऋषि ने ही दिया और बताया कि विदेशी राज्य कितना ही अच्छा क्यो न हो, परन्तु वह स्वराज्य की समता नही कर सकता । सच तो यह है कि यदि महर्षि न हुए होते तो न वेद शास्त्रों को संरक्षण प्राप्त होता और न आर्य (हिन्दू) जाति तथा राष्ट्र की रक्षा हो पाती। महर्षि ने 'बाबा वाक्यम प्रमाणम्' की निर्मल नीति का मान-मर्दन कर वैदिक विभूति के अटल आधार पर बुद्धिवाद-युक्त एव तर्क-सम्मत सद्धर्म का प्रचार-प्रसार किया। देववाणी (सस्कृत) और भारतीय भाषा (हिन्दी) की अनिवार्यता पर बल दिया। स्वधर्म, स्वसाहित्य, स्वदेश,

स्वसंस्कृति, स्वसभ्यता, स्ववेश-भूषा आदि की ओर प्रशस-नीय प्रवृत्ति उत्पन्न की और प्राचीन भारतीय भावनाओं को प्रोत्साहन दिया। धार्मिकता, नैतिकता, सच्चरित्रतादि से तो महर्षि का जीवन ओत-प्रोत ही था।

महर्षि दयानन्द ने भद्र भावनाओं के प्रचारार्थ, ८६ वर्ष पूर्व बम्बई मे सर्वप्रथम आर्य-समाज की स्थापना की। फिर तो छोटे-बडे सैकडों नगरो और ग्रामो मे आर्य-समाज स्थापित हुए और उन्होने प्रचार-कार्य मे यथेष्ठ सफलता प्राप्त की। उस समय आर्यों के वैयक्तिक जीवन और सच्चरित्रता का प्रभाव भी सर्वसाधारण जनता पर खूब पडा। आर्य-समाज समष्टि ने अपने विरोधियों का सामना भी बडे साहस और शान्ति-सहिष्णुता के साथ किया। कितने ही आर्य-वीरो को तो इस धर्म-सघर्ष मे अपने अमूल्य प्राणो की आहुतियाँ तक देनी पड़ी। परन्तु फिर भी प्रचार-कार्य में अणुमात्र भी न्यूनता या शिथिलता का प्रवेश न हो पाया। सब कार्य बडे उत्साह से सफलता-पूर्वक सम्पन्न होते रहे।

आर्य-समाज ने अपने सस्थापक महर्षि दयानन्द जी के आदेशानुसार अन्ध-विश्वास, अस्पृश्यता, बिरादरीवाद, सम्प्रदायवाद आदि को नष्ट करने के लिए उचित आयोजन किये। विधर्मियो को भी आर्य-जाति मे प्रविष्ट होने का अवसर दिया। आर्य-समाज द्वारा गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को क्रियान्वित देख देशी-विदेशी सभी विचारक, विद्वान् और शिक्षा-शास्त्री मन्त्रमुग्ध से हो गये। अभिप्राय यह है कि आर्य-समाज ने अपने संस्थापक के आदेशानुसार वे समस्त कार्य किये जिनकी देश, और समाज-कल्याण के लिए अत्यन्त आवश्यकता थी।

आज हमारा भारत स्वतन्त्र है। उसमे स्वराज्य की स्थापना हो चुकी है। इस 'स्वतन्त्रता' और स्वराज्य का बीज-वपन भी महर्षि दयानन्द ही कर गये थे। महात्मा गाँधी तथा अन्य नेताओं ने तो ऋषि द्वारा बोए बीज को अपने प्रशंसनीय प्रयत्न द्वारा पल्लवित, पुष्पित और फलित बनाने में यथेष्ठ सहायता प्रदान की। इसे मैं ही नहीं कहता. देश के अन्य अनेक राजनैतिक नेता भी ऐसा ही मानते हैं। हमारे महामान्य राष्ट्रपति श्री राजेन्द्रप्रसाद जी ने मथुरा मे, दयानन्द दीक्षा शताब्दी के पुण्य-पर्व पर, अपने अभिभाषण मे ऐसे ही भद्र भाव व्यक्त किये थे।

आर्य-समाज सकीर्णता का घोर विरोधी रहा है। उसने मत-पन्थों, सम्प्रदायवाद, जाति-पाँति, छूआ-छूत आदि को देश के लिए सदैव अहितकारी समझा। वह जन्म-मूलक बिरादरीवाद मे विश्वास नही करता। उसकी वर्ण-व्यवस्था गुण कर्मों के आधार पर है अर्थात् जिस व्यक्ति मे जिस की योग्यता हो वह उसी मे परिगणित किया जाए। इस प्रकार गुण-कर्म के आधार पर एक ब्राह्मण-कुमार शूद्र और शूद्र-बालक ब्राह्मण बन सकता है। इस दिशा मे आर्य-समाज ने प्रचार तो पर्याप्त किया परन्तु यह भावना स्वयं आर्य-समाजियों मे भी अभी बहुत ही कम क्रियान्वित हो पायी है। इधर सजग-सचेष्ट होकर आगे बढ़ने की आवश्यकता है।

सज्जनो, परम प्राचीन सभ्यता-संस्कृति के आधार पर भारत के नव-निर्माण मे आर्य-समाज का बहुत बडा हाथ रहा है। आज आप आँखे पसार कर अवलोकन कीजिए कि अब कही विधवा-विवाह का विरोध है और न पहली सी छुआछूत ही दिखाई देती है। दलितोद्धार के लिये तो सभी ओर से समर्थन प्राप्त हो रहा है। देश के बड़े-बडे विद्वानों विचारकों और शिक्षा-शास्त्रियो का कथन है कि परीक्षोत्तीर्ण होने के लिये कुछ पुस्तकों की सामग्री मस्तिष्क मे ठू स लेने का नाम ही शिक्षा नही है और न किसी भाषा विशेष में पारगत होना मात्र शिक्षा की पूर्णता कही जा सकती है। शिक्षा वह है जिससे शारीरिक, मानसिक और आत्मिक उन्नति द्वारा मानवता का उदय और विकास हो। इस बात को महर्षि दयानन्द सरस्वती जी बहुत पहले कह गए हैं और इस धारणा के आधार पर गुरुकुल-शिक्षा प्रणाली का प्रचार किया गया था।

महर्षि दयानन्द ने समाज का विभाजन गुण-कर्मानुसार

वर्ण-व्यवस्था के आधार पर किया और मानव-जीवन को आश्रम व्यवस्था के रूप में विभक्त किया अर्थात् मनुष्य को शतायु मानकर, उसके जीवन के पच्चीस वर्ष ब्रह्मचर्यपूर्वक अध्ययन के लिए २५ वर्ष गृहस्थाश्रम के लिए, २५ वर्ष वानप्रस्थ और २५ वर्ष सन्यास के लिए रखे गए। वानप्रस्थ सर्वथा निःस्वार्थ होकर अध्यापन एवं प्रचार कार्य करते थे। सन्यासी का कार्य परमात्मा चिन्तन और सबके सुधार-उद्धार के लिए उपदेश देना था। अभिप्राय यह कि महर्षि के आदेशानुसार सन्तति-प्रजनन और सम्पत्ति-संग्रह के लिए केवल गृहस्थाश्रम था। सो गृहस्थ को भी नित्य-प्रति पंचयज्ञ करने पड़ते थे, जिनमें परोपकार अर्थात् प्राणिमात्र के प्रति भद्र भावना भरी रहती थी। कोई किसी का धन अपहरण न करे और प्रजनन-शक्ति सीमित हो, ऐसी स्थिति में दुराचार, रिश्वत, धूर्तता, बेईमानी का तो कोई स्थान ही नहीं हो सकता था। कामुकता-पूरक सन्तति की भरमार ही कहां थी जो सन्तान-निरोधक कृत्रिम साधनों की बात सोचनी पड़ती। आवश्यकता इस बात की है कि हम स्वयं महर्षि-प्रदर्शित वर्ण-व्यवस्था और आश्रम-व्यवस्था को अपनावें और दूसरों से भी इसी पथ का अनुयायी बनने के लिये कहें तो निश्चय ही देश, जाति और समाज का महान् कल्याण हो। जिस कार्य को हम स्वयं नहीं कर रहे उसे दूसरों से कराने का हमें क्या अधिकार है? फिर ऐसे थोथे उपदेश को कोई मानेगा भी क्यों?

आर्य समाज के संघटन को सुदृढ़ और समुचित बनाने के लिए सभा समितियों की आवश्यकता हुई। सदस्यगणों ने विधि-विधानानुसार अपने अपने समाज से प्रधानादि अधिकारी और अंतरंग सभासद चुने। ये चुनाव मतदान द्वारा हुए। जिसको अधिक मत प्राप्त हुए वही अधिकारी या अंतरंग सभासद बन गया। ऐसे चुनावों के समय सर्वथा और सर्वदा सद्भावना होती थी। खेद है कि कुछ दिनों से चुनावों में पद-लोलुपता और अधिकार-लिप्सा-जन्य विरोध-विग्रह की मलिन मनोवृत्ति दिखाई देने लगी है जो शीघ्रातिशीघ्र दूर होनी चाहिए। प्रत्येक आर्य कार्य-कर्त्ता, चाहे उसे कोई पद मिले या न मिले, संलग्नता-पूर्वक सोत्साह सेवा-कार्य करता रहे यही आर्य समाज की पुरानी परिपाटी है, जो बराबर बनी रहनी चाहिए। इसके लिए सात्विक सेवा-भावना को हमें अपने हृदयों में स्थान देना पड़ेगा। येन-केन-प्रकारेण 'वोट' बटोर कर पद-प्राप्ति-जन्य स्वार्थ-सिद्धि का नाम सफलता या सद्भावना नहीं है।

मानवता और धर्म-तत्व

आज ज्ञान और विज्ञान का युग बताया जाता है। निश्चय ही इस युग में भौतिक विज्ञान ने बड़ी उन्नति की है। प्राकृतिक उत्थान के आधार पर, मनुष्य बड़ी बड़ी उपाधियों से अलंकृत होकर न जाने क्या क्या बन गया है, फिर भी आज सबसे न्यूनता या हीनता मानवता की है अर्थात् मनुष्य और तो सब कुछ है, परन्तु वस्तुतः वह मनुष्य या मानव नहीं है। मनुष्य कौन? सुनिए :—

विद्या विलास मनसो धृत शील शिक्षा
सत्यव्रता रहितमानमलापहारा
संसार दुःख दलनेन सुभूषिता ये
धन्या नरा विहित कर्म परोपकारा ॥

इसी भाव को किसी कवि ने राष्ट्रभाषा में इस प्रकार व्यक्त किया है :—

विद्या के विलास में निमग्न रहता है मन,
शिक्षा और शील का महत्व अपनाया है।
धारण किया है सत्यव्रत बड़ी दृढ़ता से,
मान, मद, मल जिसको न कभी भाया है।
लोक दुःख दूर करने में सुख पाना रहा,
पर उपकारों बन संकट मिटाया है।
करके विहित कर्म सुयश कमाया सदा,
धन्य ऐसा धीर-वीर मानव कहाया है।

इसी सम्बन्ध मे ये चार पंक्तियां भी देने योग्य हैं :—

त्याग-तपस्या से पवित्र परिपुष्ट हुआ जिसका तन है,
भद्र भावना भरा, स्नेह सयुक्त शुद्ध जिसका मन है।
होता व्यय नित्यप्रति परहित मे जिसका शुचि सचित धन है,
वही व्यक्ति सच्चा मानव है धन्य उसी का जीवन है।

अन्य भाषाओ के विद्वानों ने भी 'मानवता' की परिभाषाएं इसी प्रकार की हैं। सबका उल्लेख यहा कर सकना कठिन है। उर्दू के महाकवि मीर ने तो यहाँ तक कहा है :—

मीर साहब गर फरिश्ता हो तो हो,
आदमी होना मगर दुश्वार है।

यही कारण है कि आज बलवान, श्रीमान्, विद्वान्, उपाधिधारी, उच्चाधिकारी आदि तो बहुत हैं, परन्तु वास्तविक मनुष्यो की सख्या अति न्यून दिखायी देती है। मानवता के लिए अध्यात्म या धर्म-तत्वो की आवश्यकता है। इनमे आत्मिक उन्नति होती और मन शिव-सकल्प-युक्त बनता है। जब मन मे पवित्रता तथा आत्मा मे विशुद्धता होती है, तभी कार्य-कलाप मे शुचिता-सरलता समाती है और यह शुचिता ही मानवता है। दुर्लभ मानवता आत्मिक अभ्युत्थान के बिना सम्भव नही और आत्मिक उत्थान धर्म-तत्वों के बिना असम्भव है।

अब तनिक सोचिए तो सही कि मानवता के लिए धर्माचरण की कितनी अधिक आवश्यकता है। मैं पहिले ही निवेदन कर चुका हूँ कि साम्प्रदायवाद या मत-मतान्तर का नाम धर्म नही है। जो लोग मत-साम्प्रदायो को धर्म समझते हैं, वे वास्तविकता से कोसों दूर हैं। धर्म के मूल तत्व तो विश्व भर के लिए हैं। उनमे भाषा, प्रान्त, देश प्रदेश के कारण कोई व्यवधान या अन्तर नही पड़ता। वैदिक धर्म इन्ही तत्वो का आदि स्रोत है। इसलिए महर्षि दयानन्द जी सरस्वती ने उनके प्रचार-प्रसार पर बल दिया और एतदर्थ आर्य समाज की स्थापना की। अतः आर्य समाज का मुख्य कर्तव्य है कि वह वैदिक धर्म प्रचार के लिए अधिकाधिक प्रयत्न करे। साम्प्रदायवाद तो युक्ति-विहीन संकीर्ण पोच परम्पराओ का पोषक है। वह अन्ध विश्वास का जनक और गुरुडम का गढ होने के अतिरिक्त और कुछ नही है। बिरादरीवाद भी सकुचित साम्प्रदायवाद की ही एक सकीर्ण शाखा है। प्रान्तवाद की तुच्छ भावनाएं भी कभी प्रशसनीय नही कही जा सकती अर्थात् ऐसी कल्पनाए कि वह पजाबी, बगाली. मदरासी या उत्तर प्रदेशवासी है। इन संकीर्णताओ से भी समाज में भिन्नता की भित्ति खडी होती है। हमारे शास्त्रो मे तो विश्वबन्धुत्व का समस्त उपदेश और कल्याणकारी सदेश दिया गया है। उस मे भारतीयता या अभारतीयता का कोई भेदभाव नही है।

हम भारतवर्ष में रहते हैं, अतएव हमारा कर्तव्य है कि सर्वप्रथम विश्व धर्म का प्रचार अपने घर मे करे। स्वदेश को धार्मिक बनाएं और स्वय धर्मधारी मानव बने। ईसाई, मुसलमान आदि विधर्मी समुदाय, राजनैतिक दृष्टिकोण से भारतीय शिखा-सूत्र-धारियो को बहका फुसला और भाँति-भाति के प्रलोभन देकर, अपना दल बल बढ़ा रहे है। उन्हे इस अनौचित्य से रोकना-टोकना आर्य समाज का मुख्य कर्तव्य होना चाहिए, क्योकि आगे चल कर इस प्रकार की कुनीति से राष्ट्रोन्नति के मार्ग मे भयकर बाधाएं उत्पन्न हो सकती हैं। आर्यावर्त (हिंदुस्तान) अरबिस्तान या इग्लिस्तान का रूप धारण कर सकता है। हिन्दू जाति या भारतीयता के मार्ग मे, सम्प्रदायों की भाति ही जाति-पाँति अथवा बिरादरियो ने भी बड़ी कटुता उत्पन्न कर दी है। इस ओर भी आर्य समाज को विशेष ध्यान देकर, उचित उद्योग करना पडेगा। परन्तु दुःख तो इस बात का है कि स्वय आर्य सामाजिक जन इस भयंकर रोग से अपना पीछा नही छुडा पाए। सबसे पहले स्वयं हमें बिरादरीवाद के दम्भ-दैत्य का मान-मर्दन करने के लिए दृढ़तापूर्वक अग्रसर होना पड़ेगा।

धर्म की महत्ता

कितने आश्चर्य की बात है कि भ्रमवश, सम्प्रदायों या मतो को धर्म मान लिया गया है और धर्म का नाम लेने या सुनने मे हमारे बड़े बडे नेता और प्रणेता आग-बबूला होकर, मु ह मटकाते और आँखे चढाने लगते है। स्वराज्य-प्राप्त, स्वतन्त्र भारत मे धर्म का कहीं नाम तक नही लिया जाता। धर्महीन सेकूलर सरकार कानून बनाने पर तो करोडों रुपया व्यय कर रही है, परन्तु धर्म का नाम भी उसे सहन नही होता, जबकि महात्मा गाँधी ने स्पष्ट लिखा है :—

"मेरे नजदीक धर्मविहीन राजनीति कोई चीज नही है। धर्म के मानी वहमो या गतानुगतित्व का धर्म नही, द्वेष करने वाला और लडने वाला धर्म नही बल्कि विश्व-व्यापी सहिष्णुता का धर्म। धर्मशून्य राजनीति सर्वथा त्याज्य है। मैं धर्म भिन्न राजनीति की कल्पना भी नही कर सकता। वास्तव में धर्म तो हमारे हर काम मे व्यापक होना चाहिए। धर्म का अर्थ कट्टर पन्थ नही, वह विश्व-धर्म है।"

जो बात महर्षि दयानन्द अस्सी-नब्बे वर्ष पूर्व लिख गए, उसकी ओर महात्मा गाँधी ने भी अपनी इन पक्तियो द्वारा कितना सुन्दर सकेत किया है। स्वराज्य क्या है, इस सम्बन्ध मे महात्मा गाँधी कहते हैं :—

"स्वराज्य का अर्थ है, अन्न-वस्त्र की बहुतायत। यह इतनी होनी चाहिए कि किसी को भी भूखा-नंगा न रहना पड़े। एक बालिका भी घोर अन्धकार मे, निर्भयता के साथ घूम-फिर सके। स्वराज्य का अर्थ है, अस्पृश्यता का नाश। स्वराज्य वह है जिसमें स्त्रियाँ, माताए और बहने समझी जाए तथा ऊच-नीच का भेद-भाव दूर होकर सब समानतापूर्वक अर्थात् भाई-बहन की भावना से बर्ताव करे। स्वराज्य में नीच से नीच और ऊचे से ऊचे आदमी को बढ़ने का अवसर मिलना चाहिये। स्वराज्य मे शिक्षाविधि मानसिक व्यायाम या दिमागी अय्याशी न होकर, मानव विकास मे सहयोग, लोक-सेवा और सदाचार की भावना हो।

महात्मा गाधी ने स्वराज्य की जैसी कलित-कल्पना की है, वह धर्महीन राजनीति द्वारा कभी क्रियान्वित नहीं हो सकती। उसको व्यावहारिक बनाने के लिए धर्म का पूर्ण प्रश्रय लेना पड़ेगा। ऐसा किये बिना इस दिशा मे कदापि सफलता प्राप्त नही हो सकती। महर्षि दयानन्द ने तो अपने सुप्रसिद्ध ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश मे पूरा एक समुल्लास (अध्याय) राज-धर्म पर लिखकर राजनीति मे धर्म की प्रधानता घोषित की है। उसी दिशा में महात्मा गाँधी का भी सुदृढ एव समुचित समर्थन है।

भाइयो, आर्यसमाज अब तक प्रचलित राजनीति से पृथक् रहा, रहना भी चाहिये था क्योकि प्रचलित राज-नीति दल-बन्दियो अर्थात् पार्टीबाजियों का नाम है। इसमे सत्ताप्राप्ति के लिए ही सारी शक्तिया लगाई जा रही हैं। धार्मिक मत सम्बन्धी दलो की तो अब बहुत कम पूछ-गछ है, परन्तु हा, राजनैतिक सम्प्रदायवाद पूरे रूप में प्रत्यक्ष दिखाई दे रहा है। जगह-जगह झगडे-झंझट हो रहे है। सत्ता प्राप्ति के लिए अनेक उचितानुचित प्रयत्न किये जा रहे हैं।

भारत की स्वतन्त्रता-प्राप्ति मे सामुदायिक रूप से आर्यसमाज का भले ही हाथ न रहा हो, परन्तु आर्य भाई-बहनो ने व्यक्तिगत रूप से इस सग्राम मे सोत्साह भाग लिया, कारागारों मे कष्ट सहे और बलिदान भी दिये। आज देश स्वतन्त्र है, स्वराज्य (सरकार) स्थापित है, परन्तु सर्वसाधारण जनता निरन्तर लकीर की फकीर बनी हुई है। जनता द्वारा निर्वाचित प्रतिनिधि देश के विधायक और शासक हैं, परन्तु जनता आज भी गुलाम बनी हुई है। अपने चुने प्रतिनिधियों को अभिनन्दन-पत्र भेंट करना और उनके स्वागत सत्कार मे दक्षता दिखाना

ही उसका सबसे बड़ा कर्तव्य रह गया है। ऐसी दशा मे दलबन्दी से दूर रह कर आर्यसमाज को सैद्धान्तिक राजनीति-पथ पर अविलम्ब अग्रसर होने की आवश्यकता है। अर्थात् महर्षि दयानन्द और महात्मा गाधी के आदेशानुसार आर्यसमाज को राजनीति मे धर्म के मूल तत्व सम्मिलित करने पर बल देना चाहिए। नैतिकता अथवा सदाचरण के बिना नागरिक जीवन कभी विमल और विशुद्ध नही बन सकता। नैतिकता का अर्थ है धर्म को आचार या क्रिया मे परिणित करना। इसी को अंग्रेजी मे 'मारेलिटी' (Morality) और फारसी मे 'अखलाक' कहते हैं। धर्म-प्रधान भारत मे राजनीति को धर्म से शून्य कर देना बडे दुख और आश्चर्य की बात है। ऐसी परिस्थिति मे सुखमूल स्वराज्य की स्थापना कैसे सम्भव हो सकती है? मैं तो यही निवेदन करूँगा कि आर्य जनता और विशेषकर आर्य युवक-युवतियाँ इस क्षेत्र मे अग्रसर हों और अनुभवी सुयोग्य एव वयोवृद्ध आर्य नेताओ के नेतृत्व मे, राजनीति को धर्ममय बनाने का उद्योग करें अर्थात् सर्वसाधारण नागरिको को महर्षि दयानन्द और महात्मा गाधी की विचारधारा के अटल आधार पर इस विषय की व्याख्या एवं विवेचना करते हुए सारी बाते जनता को बतावे। स्वतन्त्र भारत मे जनता के क्या कर्तव्य और अधिकार है, राजनीति से धर्म का सम्बन्ध क्यो आवश्यक है, धर्म-प्रचार के बिना भ्रष्टाचार कदापि दूर नही हो सकता, सुराज्य किस प्रकार सम्भव हो सकता है, जनता स्वतन्त्र होकर भी अन्न-वस्त्र के लिए क्यो दुखी है—इत्यादि बातो पर केवल धार्मिक दृष्टि से विचार करना, आर्यसमाज के इस प्रचार की विशेषता होनी चाहिए। नागरिकों की भावनाएं ऊची होने से ही उनकी वाणी बलवती और विशद् बन सकेगी। इस समय ऐसे ही शिक्षण की बड़ी आवश्यकता है। उत्तरोत्तर बढ़ती हुई भ्रष्टाचारिता अथवा अपराध-प्रवृत्ति की रोकथाम केवल कानूनी कोडों से नही होगी, उसके लिए धर्म, सदाचार अथवा नैतिकता के सात्विक सिद्धान्तों को क्रियान्वित करना पड़ेगा। जिन लोगों का यह कथन है कि आर्यसमाज राजनीति मे न पडे, उनसे मैं सहमत हूँ, परन्तु आर्यसमाज को धर्ममय बनाने का प्रयत्न तथा नैतिकता और सदाचार प्रसार-प्रचार का कार्य तो राजनैतिक पचड़े में पड़ना नही कहा जा सकता। सैद्धान्तिक राजनीति के मौलिक तत्वो के महत्व को समझना और गणतन्त्र की विशद्, विमल और विस्तृत व्याख्या करना तो प्रचलित राजनीति मे प्रवेश करना नही है। यदि ऐसी बात होती तो महर्षि दयानन्द अपने सत्यार्थप्रकाश मे इस विषय पर इतना बल क्यो देते?

इस धर्म-प्रचार में तो वे आर्य भाई-बहन भी निर्भयतापूर्वक भाग ले सकते हैं, जिनका सरकारी सेवा-वृत्ति से परोक्ष या प्रत्यक्ष सम्बन्ध है, क्योकि यह प्रचार-विधि रचनात्मक अथवा मण्डनात्मक हो ी, खण्डनात्मक नही। राजनीति को धर्ममय बनाने और जन-जीवन मे नैतिकता, नागरिकता की भव्य भावना भरने से जहा मानवता का विकास-प्रकाश होगा वहा सर्वसाधारण की ज्ञान-वृद्धि और सुख-समृद्धि मे भी सहायता मिलेगी। सबसे बड़ा लाभ यह होगा कि आर्य समाज का भारतीय जनता के साथ पुन: सम्पर्क स्थापित हो जायगा अर्थात् इस धर्म-प्रचार-पद्धति द्वारा जनता पुनः आर्यसमाज के समीप आ जायगी और अपने हिताहित की बातें बडे ध्यानपूर्वक सुने-समझेगी। ये बाते चुनाव लडने वाले राजनैतिक सम्प्रदायो द्वारा कैसे सुनने को मिल सकती है? वहा तो वोट बटोरने पर ही व्याख्यानो का मुख्य लक्ष्य रहता है। जनता ही क्यों आर्यसमाज के इस प्रचार से शासन को भी पर्याप्त बल मिलेगा। अन्तर इतना ही है कि शासन जिस कार्य को कानूनी कोडों से करना चाहता है, उसी को आर्यसमाज उपदेशामृत पिलाकर करेगा।

ग्रामों में पंचायती राज्य तो हो गया, परन्तु चुनावों के कारण बिरादरी-विद्वेष को विष बहुत बढ़ गया है।

इस विद्वेष को शान्त करना तथा ग्राम-सम्बन्धी बातें बताना आर्यसामाजिक प्रचार-क्षेत्र के अन्तर्गत ही होगा। आर्यसमाज का यह प्रचार-कार्य छोटे-बड़े सभी ग्रामों और नगरों में होना चाहिए। बड़े शहरों मे तो विविध 'वार्ड' और मुहल्ले एतदर्थ चुने जा सकते हैं। मुझे स्मरण है कि सन् १९२३ ई० मे शुद्धि-आन्दोलन प्रचार के लिए, अमर शहीद श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज की अध्यक्षता मे एक छोटी-सी समिति बनी थी, फिर तो उसका देश-व्यापी विराट् रूप हो गया। सारी हिन्दू जनता ने उस आन्दोलन का क्रियात्मक रूप से सबल समर्थन किया और कार्य-संचालन के लिए जन-धन के ढेर लग गये। यही स्थिति इस प्रस्तावित प्रचार-कार्य की भी हुए बिना न रहेगी, ऐसा मेरा विश्वास है। शुद्धि-आन्दोलन मे तो हिन्दू ही हमारे साथ थे परन्तु इस धर्म-प्रचारक और नैतिकता-प्रसारक आन्दोलन को तो ईसाई-मुसलमान भी आदर की दृष्टि से देखेंगे, क्योंकि उसमे सारी जनता का हित होगा।

आर्य समाज और राष्ट्र के महान् नेता अमर शहीद श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने सन् १९२५ ई० मे जो भविष्यवाणी की थी, मेरी सम्मति मे, अब उसकी पूर्ति का समय आ गया है। पूज्य स्वामी जी के शब्द इस प्रकार हैं:—

"जहाँ धार्मिक और सामाजिक उन्नति-क्षेत्र में भारतीय प्रजा को दयानन्द के पीछे चल कर ही कल्याण-मार्ग सूझा वहाँ राजनीतिक क्षेत्र में भी करोड़ों भारत-वासियो को ऋषि दयानन्द के बतलाए मार्ग पर ही चलना पड़ेगा।"

ऋषि दयानन्द और महात्मा गाँधी, दोनों का इस दिशा मे एक ही मार्ग है अर्थात् राजनीति मे धर्म का प्रवेश यानी धर्ममय राजनीति। महात्मा जी ने स्पष्ट कहा है कि धर्म के बिना तो मैं राजनीति की कल्पना भी नहीं कर सकता। ऐसी स्थिति में आर्य समाज जो धर्म-प्रचार करेगा, उससे ऋषि दयानन्द और महात्मा गाँधी दोनों महापुरुषो का आदेश पालन हो सकेगा। कौन नही जानता कि भारतीय स्वतन्त्रता अस्त्र-शस्त्रो के हिंसात्मक आधार पर प्राप्त नही हुई, प्रत्युत् सत्य, अहिंसा और तप-त्याग की धर्म-ध्रुवता ही उसकी जननी है। जिन धर्म-तत्वो द्वारा देश मे स्वराज्य स्थापित हुआ, उन्ही के आधार पर वह अनुकूल और मगलमूल बन सकता है। स्वराज्य तो हो गया पर सुराज्य की आवश्यकता अभी बराबर बनी हुई है। इसकी प्राप्ति भी धर्म द्वारा ही सम्भव है, अन्य प्रकार नही।

भाइयो, मैं गत पाँच वर्षों से विदेश मे था, वहाँ मैंने अपनी गति-मति के अनुसार धर्म-प्रचार और शांति-सद्भावना स्थापित करने के लिए पूर्ण प्रयत्न किया। इस कार्य मे मुझे सफलता भी प्राप्त हुई। मेरे पीछे मेरे देश मे दो बड़े कार्य हुए—पंजाब मे हिन्दी सत्याग्रह और मथुरा मे दयानन्द दीक्षा शताब्दी समारोह। मुझे हर्ष है कि दीक्षा शताब्दी समारोह बडी सफलता से सम्पन्न हुआ परन्तु पजाब की हिन्दी-समस्या अभी हल नही हो पाई। हिन्दी के शांतिपूर्ण अहिंसात्मक सत्याग्रह मे आर्य वीरों ने बड़े उत्साहपूर्वक क्रियात्मक भाग लिया और कई वीरों ने तो अपने प्राणों की आहुतिया तक दीं। हिन्दी भारत की राष्ट्र भाषा घोषित हो चुकी है। उसके पढने वाले और बोलने वालो की संख्या सब भाषा-भाषियो से बढ-चढ कर है। कितने आश्चर्य और दुःख की बात है कि पंजाब सरकार द्वारा राष्ट्रभाषा हिन्दी की अवहेलना की जा रही है, उसे उचित स्थान नही दिया जा रहा है। पंजाब के हिन्दी विरोधियो को भली-भाति समझ लेना चाहिए कि वे अपने इस अनुचित उद्योग में, शत-प्रतिशत असफल होंगे और हिन्दी उद्यान निरन्तर फूलता-फलता तथा लहलहाता रहेगा।

इस समय विविध भाषाओं में आर्य साहित्य प्रकाशित करने की बडी आवश्यकता है। इसके लिए एक बड़ा प्रकाशन-भवन स्थापित होना चाहिए। वेद-शास्त्रो के आधार पर जितने ही सरल सुबोध एव महत्वपूर्ण ग्रन्थ

प्रकाशित होंगे, उतना ही आर्य समाज का प्रचार और गौरव बढ़ेगा। भारतीय विभिन्न भाषाओं में तो ऐसे ग्रन्थरत्न प्रकाशित किये ही जाएं, विदेशी भाषाओं में भी इस प्रकार के साहित्य की बडी आवश्यकता है। उच्च-कोटि के साप्ताहिक तथा मासिक विचार-पत्रों के प्रकाशन से भी यथेष्ट लाभ हो सकेगा। वाणी द्वारा प्रचार करने वालों की सख्या वृद्धि करने के विचार से एक वक्तव्य-कला विद्यालय की भी स्थापना हो, साथ ही पत्रकार विद्यालय की भी। इन दोनों विद्यालयों की स्थापना से वक्ताओं एव लेखकों के निर्माण में बडी सहायता मिलेगी। आर्य वीर दल सार्वदेशिक सभा के अन्तर्गत है ही। इससे भी सेवा-कार्य और प्रचार में बडी सहायता मिल रही है। इस दल की शाखाएं ही प्रत्येक आर्य समाज और आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत होनी चाहिए। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा तो आर्य समाजों की शिरोमणि सभा है, उससे ऐसे समस्त आर्य वीर दलों का वैधानिक सबध रहेगा।

कुछ काल पूर्व आर्य कुमार सभाओं और प्रान्तीय तथा भारतीय आर्य कुमार परिषदों का भी सुदृढ संघटन था। नवोदित आर्य विद्यार्थी इन सभाओं और परिषदों में सोत्साह भाग लेते थे। मेरी अभिलाषा और प्रार्थना है कि विद्यालयों तथा महाविद्यालयों के आर्य छात्र इन मृतप्राय सभाओं तथा परिषदों को पुनर्जीवित करें जिससे उनके द्वारा नवयुवकों में धार्मिक भावनाओं की समुचित स्थापना हो सके। आर्य समाज को कितने ही तरुण सेवक आर्य कुमार सभाओं ने ही दिये जो कालान्तर में सुप्रसिद्ध आर्य नेता बने। छात्र ही नहीं छात्राओं को भी आर्य कुमार सभाओं और परिषदों की स्थापना करनी चाहिये।

हमारा एक वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर में है। मैं चाहता हूँ कि ऐसे आश्रम प्रत्येक जिले में नहीं तो प्रत्येक कमिश्नरी में अवश्य स्थापित होने चाहिए। इन आश्रमों में कार्य निवृत्त-आर्य वयोवृद्ध प्रवास करें और सर्वात्मना वैदिक धर्म प्रचार कार्य में प्रवृत्त हों। ऐसे आश्रमों की संज्ञा वैदिक आश्रम भी हो सकती है। आर्य जगत में विचारशील विद्वानों और अनुभवी एव कुशल कार्यकर्ताओं की कमी नहीं है। हां, उनकी शक्तियों के प्रयोग के लिये समुचित साधन सोचना पडेगा। मेरी सम्मति में यह साधन वैदिक आश्रमों की स्थापना के अतिरिक्त और क्या हो सकता है।

प्रत्येक आर्य समाज के साप्ताहिक अधिवेशन बडी शांति तथा सफलता से होने चाहिये। इसी प्रकार सोत्साह वार्षिकोत्सव भी मनाये जाय। स्थानीय मेलों पर भी प्रचार हो। सब आर्य भाई-बहन सपरिवार बडी श्रद्धा से समाजों के साप्ताहिक अधिवेशनों और उत्सवों में सम्मिलित हों। आर्य महिला सभाओं की स्थापना की जाये। पारिवारिक कुरीतियों और सामाजिक बुराइयों को नष्ट करने पर पूरा ध्यान दिया जाये। सज्जनो, एक निवेदन और करके मैं अपना वक्तव्य समाप्त करता हूँ। आर्य समाज ने अपने अधीन अनेक सभा-सस्थाओं को जन्म दिया है। इन सभा-सस्थाओं द्वारा विविध क्षेत्रों और विभिन्न दिशाओं में सफलतापूर्वक कार्य सम्पन्न हुए हैं और साथ ही सस्थावाद-जन्य पद-लोलुपता भी बढी है। जैसा कि मैं प्रारम्भ में ही कह चुका हूँ कि यदि पद-लोलुपता या अधिकार-लिप्सा की कुप्रवृत्ति शीघ्र ही नष्ट न की गयी तो उसका विषैला प्रभाव बडा विघातक सिद्ध होगा और आर्य समाज की प्रगति में रोडा रूप बन जाएगा। इस दिशा में सबको भव्य-भावना के साथ सात्विक सेवावृत्ति के पुण्य-पथ पर अग्रसर होना चाहिए। पदाधिकारी बन कर ही सेवा-कार्य किया जा सकता है, इसे मैं नहीं मानता। संघटन की दृष्टि से सभा, समाज, समिति या सस्था के लिए पदाधिकारी अवश्य आवश्यक हैं। ये पद अधिकांश या सब सदस्य जिसे चाहे उसे प्रसन्नतापूर्वक प्रदान करें। दलबन्दी की भावना बिल्कुल न हो। शेष सब सदस्यगण बिना पदों के ही सहर्ष और

सोत्साह सेवा करते रहें। छीना-झपटी, वाद-विवाद या विग्रह-वैमनस्य की कोई आवश्यकता नहीं है। आशा है, मेरी यह विनम्र विनती अवश्य स्वीकार की जायगी। ऐसा करने से निश्चय ही आर्यसमाज का वातावरण शान्त, शुद्ध एवं सात्विक बनेगा और सर्वत्र सफलता देवी के दिव्य दर्शन होंगे। हमारा सामाजिक जीवन सार्वदेशिक सभा के संघठन का समादर करने से ही सुस्थिर एवं सुदृढ़ होगा, अतएव हमारे लिए इस महान् सभा की मान-मर्यादा की रक्षा और प्रतिष्ठा करना प्रमुख कर्तव्य है।

महिलाओं और सज्जनों, आपने मेरा वक्तव्य बड़े शान्त भाव से श्रवण किया, इस कृपा के लिए मैं अपना आभार प्रकट करता हुआ और अपनी त्रुटियों के लिए क्षमा मांगता हुआ अपना भाषण समाप्त करता हूं।

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया.।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग्भवेत् ॥

सभा के पचास वर्ष

(पृष्ठ १५८ का शेष)

व्यक्ति ईसाई बनने से बच गए हैं। सभा ने दोनों आंदोलनों के सम्बन्ध में उपयोगी साहित्य छपवा कर लाखो की संख्या मे वितरित कराया है।

प्रचार-कार्य

सभा ने मदरास, असम और विदेश में आर्य समाज के सिद्धांतों तथा हिन्दी प्रचार की भी व्यवस्था की हुई है। वहाँ की भाषाओं में आर्य समाज सम्बन्धी अन्य साहित्य भी पर्याप्त मात्रा में छप चुका है। मदरास आदि प्रांतों में आर्य समाज बड़े आदर की दृष्टि से देखा जाता है।

विदेश के उपनिवेशों तथा ब्रिटिश गायना, डच गायना, ट्रीनीडाड, मौरीशस, फिजी, पूर्वी और दक्षिणी अफ्रीका मे समाज का कार्य बढ रहा है। हिन्दी प्रचार के पठन-पाठन की ओर लोगों की रुचि बढ रही है। कुरीतियों का निवारण हो रहा है। इन उपनिवेशों में विशाल समाज मन्दिरों संस्थाओं इत्यादि के रूप में करोडों रुपयों की सम्पत्ति विद्यमान है।

सभा के अपने ३ विशाल भवन दिल्ली में हैं। मुख्य कार्यालय इस समय दयानन्द भवन (रामलीला मैदान के समक्ष) नई दिल्ली में है। इनका मूल्य लगभग ७-८ लाख है। सभा को आर्य जगत के विद्वानों, सन्यासियों व समाज-सेवियों सभी का सहयोग प्राप्त है।

—रघुवीर सिंह शास्त्री, सभा मन्त्री

ओ३म्

ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव यद्भद्रं तन्न आसुव । ऋ० ॥

नवम

सार्वदेशिक आर्य

महासम्मेलन, दिल्ली

(१९६१ ई०)

के

स्वागताध्यक्ष

श्री महात्मा आनन्द स्वामी जी सरस्वती

का

स्वागत भाषण

श्री सभापति महोदय, श्रद्धेय स्वामी ध्रुवानन्द जी महाराज सरस्वती, मेरी प्यारी माताओ तथा सज्जनो !

बड़े हर्ष से आप सब का स्वागत करता हूं। यात्रा की अनेक कठिनाइयाँ सहन करके आप सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के इस नवम आर्य महासम्मेलन में पधारे हैं। यह महासम्मेलन किसी एक प्रान्त, प्रदेश या देश का सम्मेलन नहीं है बल्कि यह सर्वभौम सम्मेलन है। जहाँ मैं हर्षभरे हृदय से आपका स्वागत कर रहा हूँ वहां दुख भरे मन से यह भी कहना चाहता हूँ कि इस धरती पर रहने वाला मानव गहन गम्भीर समस्याओं की दलदल मे फस गया है, इन उलझनो को सुलझाने के लिए इस दुनियां के विद्वान् भरसक प्रयत्न कर रहे हैं, परन्तु अभी तक एक भी उलझन सुलझ नहीं पाई अपितु उलझनें और अधिक बढ गई हैं।

कारण यह कि पत्तों को पानी दिया जा रहा है, जड़ को पकडा नहीं जा रहा, दुनिया के लोग केवल शरीर को मुख्य स्थान दे रहे हैं और आत्मा को सर्वथा भुलाया जा रहा है। चाहिए यह था कि शरीर के साथ आत्मा के भी उत्थान का प्रयत्न किया जाता। आज से लगभग एक सौ वर्ष पूर्व जगद्गुरुदेव दयानन्द जी महाराज सरस्वती ने बिगड़ती दुनियाँ के सुधार के लिए शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति का मार्ग बतला दिया था, परन्तु

दुनिया का दुर्भाग्य कि उसने भगवान दयानन्द के आदेश को नही सुना। आप सबको मिलकर इस सम्मेलन द्वारा ऊंचे स्वर से कहना है कि "दुनिया के लोगो ! थम जाओ, सुनो तुम जिधर जा रहे हो वह सर्वनाश का मार्ग है, विश्वप्रेम की ज्वाला अपने हृदय मे प्रज्वलित करो और वेद के आदेश—'अज्येष्ठासो अकनिष्ठास एते सं भ्रातरो वा वृधुः सौभगाय' को समक्ष रखते हुए न किसी को बडा न किसी को छोटा समझो अपितु आपस मे भाइयो की तरह मिलकर सौभाग्य-सुख शान्ति के लिए आगे बढो।" भयंकर युद्ध की तैयारिया हो रही है। क्या ही अच्छा हो कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से एक शिष्ट-मण्डल युद्ध की तैयारियां करने वाले देशों मे जाकर उन्हे वेद-आदेश बतलाये ! कोई सुने या न सुने आर्य समाज को यह तो सन्तोष होगा कि उसने अपना कर्तव्य पूर्ण कर दिया।

यह तो हुई सार्वभौमिक उलझन को सुलझाने की बात। अब भारत तथा देश के भिन्न-भिन्न प्रान्तो की समस्याए है। आज से पचास वर्ष पूर्व जब सार्वदेशिक सभा की स्थापना हुई थी, तब इतनी भयकर समस्याए सामने नही थी जितनी अब आकर खडी हो गई हैं।

स्वराज्य प्राप्ति के पश्चात् भारतवासियों को आर्य-धर्म ही से नही आर्य संस्कृति, भारतीय सस्कृति से भी पृथक् करने के लिए बडे दलबल के साथ विदेशियों ने कार्य प्रारम्भ कर दिया है। बम्बई में ५५ लाख रुपये का एक भवन बन चुका है। जहा ईसाई प्रचारक भारी संख्या मे तैयार किये जा रहे हैं, जो भारत में सभी भाषाओं में विदेशी रीति-नीति का प्रचार करेंगे। इस सम्मेलन के द्वारा ऐसे पठित युवकों तथा युवतियों का आवाहन होना चाहिए जो अपने जीवन इस विदेशी उलझन को सुलझाने मे लगा दें।

एक बडी समस्या आचारहीनता की सामने उपस्थित हैं। क्या कोई राष्ट्र इस प्रकार से उभर सकता है? आर्यसमाज को इधर अब अधिक ध्यान देना होगा। भारत सरकार तो भवन-निर्माण करती चली जाये और आर्यसमाज चरित्र-निर्माण के कार्य को सभाल ले।

एक और समस्या गोहत्या की है। स्वराज्य के पश्चात् गोहत्या कम नही हुई अपितु बढ गई है। गोरक्षा के लिये कोई पग उठाना ही होगा।

भारत की अखण्डता को खण्डित करने के लिए भाषाओं का विवाद बुरी तरह उठ खडा हुआ है। बडी कठिनाई से भारत सरकार ने हिन्दी भाषा को राष्ट्रभाषा स्वीकार किया, परन्तु कही-कही इस राष्ट्रभाषा को प्रान्तीय बोलियों तथा भाषाओ के नीचे दबाया जारहा है, जो किसी भी प्रकार से उचित नही। भारत फिर टुकडे-टुकड़े हो जायगा यदि भारत की सारी युनिवर्सिटियो मे पठन-पाठन का माध्यम हिन्दी न हुआ। इसकी ओर भी आपको उदारता से विचार करके इस उलझन को सुलझाना होगा।

और भी कितनी ही समस्याएं हैं, उनपर भी आप विचार करेंगे, परन्तु एक भयकर समस्या अपने ही घर की है। हमारी जो शक्तिया संसार की शान्ति के तथा भारत के विरोधियो के सुधार मे लगनी चाहिए उनका ह्रास आपस के सघर्ष से हो रहा है। यह फूट भयकर रोग है जो सब का नाश कर देता है। देव दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश के दसम समुल्लास मे कितने मार्मिक शब्दों मे लिखा है कि :—

"विदेशियों के आर्यावर्त मे राज्य होने के कारण आपस की फूट, मतभेद, ब्रह्मचर्य का सेवन करना...आदि कुकर्म है...देखो, आपस की फूट से कौरव-पाण्डव और यादवों का सत्यानाश हो गया, सो तो हो गया परन्तु अब

तक भी वही रोग पीछे लगा है। न जाने यह भयंकर राक्षस कभी छूटेगा या आर्यों को सब सुखों से छुड़ाकर दुःख-सागर मे डुबा मारेगा ? उसी दुष्ट दुर्योधन-गौत्र हत्यारे, स्वदेश विनाशक नीच के दुष्ट मार्ग मे आर्य लोग अब तक भी चलकर दुःख बढ़ा रहे हैं। परमेश्वर कृपा करे कि यह राज-रोग हम आर्यों मे से नष्ट हो जाये"।

आओ, आर्य महासम्मेलन के इस पुण्य-पर्व पर हम सब हृदय मे प्रतिज्ञा करे कि आर्यसमाज के गौरव को तथा आर्यसमाज की एकता को हानि पहुंचाने वालों का साथ नहीं देंगे और सबके साथ हिल मिल कर देव दयानन्द के तप-त्याग और बलिदान पर खड़े आर्यसमाज की रक्षा करेंगे और आर्यसमाज के मुख्य उद्देश्य वेद-प्रचार ही में अपना तन-मन-धन अर्पण करते रहेंगे।

एक बार फिर आपका स्वागत करता हूँ—और आप सबके कल्याण के लिए परमात्मा से शुभकामना करता हूं।

ओ३म् तत्सत्

२० मई १९६१ —आनन्द स्वामी सरस्वती

—:oOo:—

नवम आर्य महासम्मेलन के 'प्रस्ताव'

देश विदेश के सम्पूर्ण आर्य जगत की सर्वोच्च संस्था सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के स्वर्ण जयन्ती महोत्सव के अवसर पर सभा के तत्वावधान में आयोजित नवम आर्य महासम्मेलन आर्य समाज के विचार, नीति एव कार्यक्रम कुछ आवश्यक विषयो के सम्बन्ध में घोषित करना उचित समझता है :—

विश्व शान्ति

ससार के विभिन्न राष्ट्रो मे आतंक और अशान्ति का जो वातावरण देखा जा रहा है, और मानव समाज के सहार करने वाले विविध अस्त्र-शस्त्रों का जो निर्माण और सचय किया जा रहा है, उसका मूल कारण इस सम्मेलन की राय में यह है कि मानव समाज का जो संघटन विविध देशों में है, उसका आधार प्रायश : अधिभौतिक (मैटीरियलिस्टिक) है। मनुष्य समाज का दृष्टिकोण केवल ऐहिक सुखों की प्राप्ति की ओर ही केन्द्रित रहता है और प्रायः सभी देशों के शासनाधिकारी अपने अपने देश के आर्थिक विकास एवं प्रसार के निमित्त दूसरे देशो के हितों की उपेक्षा और अवहेलना करने वाली राष्ट्रिय स्पर्धा की भावनाओं से प्रेरित होते हुए अपनी नीति को निर्धारित करते हैं, जिसका अनिवार्य परिणाम विश्वकलह और विश्व अशान्ति का बीजारोपण है।

मानव समाज ने आपको ऋग्वेद के शब्दो मे जिन 'कृत्रिमाणि भीक्षा' अर्थात् स्वोत्पादितभय (सेल्फ क्रियेटिड फीयर्स) का शिकार बना लिया है। उनसे बचने और विश्व शान्ति की स्थापना के लिए इस सम्मेलन की सम्मति मे दो उपाय हैं:—

एक तो ऋग्वेद में प्रतिपादित विश्व मानुषता (वर्ल्ड सिटीजनशिप) के आधार पर सार्वभौम चक्रवर्ती राज्य (वर्ल्ड गवर्नमैन्ट) की स्थापना और दूसरा यह मार्ग है

जिसे ऋषि मुनियो ने अपनी दिव्य दृष्टि एवं वैदिक ज्ञान से ढूंढ निकाला था, अर्थात मानव समाज का संघटन अधिभौतिक आधार पर न रहकर उसकी आधार शिला आध्यात्मिक हो, जो मनुष्य के केवल स्थूल शरीर और उसकी आवश्यकताओ की पूर्ति पर ही दृष्टि न रखता हो, अपितु मनुष्य के आत्मा और उसके विकास पर भी दृष्टि रखता हो।

भारत शासन की इस इच्छा तथा यत्न की कि विश्व मे शान्ति रहे, यह सम्मेलन सराहना करता है, यद्यपि उनकी कई कार्य प्रणालियो का समर्थन नही किया जा सकता।

पारित २०-५-६१

प्रस्तावक— प्रि० महेन्द्र प्रताप शास्त्री
अनुमोदक— सेठ प्रताप सिह जी शास्त्री
सेठ कृष्ण लाल पोदार

भारतीय सीमाओं पर अतिक्रमण

भारत की निर्विवाद सीमाओं पर जो अतिक्रमण हुए है और हो रहे हैं उन के प्रतिकार के लिये अभी तक कोई ऐसा पग नही उठाया गया है जो सफल दृष्टि गोचर हो। करोडों भारतीय जनता की भावना है कि इसके प्रतिकार के लिये भारत शासन कोई सुदृढ पग उठाये। कहने की आवश्यकता नहीं कि भारत की सीमा को अक्षुण्ण रखने के लिये उस प्रकार का पग जब कभी भी और जहा भी भारत शासन उठावे तो प्रत्येक आर्य नर -नारी आबाल बृद्ध हर प्रकार के बलिदान के लिये सन्नद्ध रहेगा।

पारित २०-५-६१

प्रस्तावक— श्री मेहर चन्द धीमान
अनुमोदक—स्वामी सत्यमुनि जी

अखण्ड शक्ति सम्पन्न केन्द्रीय शासन

भारत की परतन्त्रता को समाप्त करने और स्वराज्य लाने के लिये वातावरण पैदा करने में और उन कमजोरियों और कुरीतियो को जिनके कारण परतन्त्रता आयी, दूर करने मे ऋषि दयानन्द और आर्य समाज का बड़ा हाथ रहा और आर्य पुरुषों ने उसके लिये जो बलिदान दिये, वह भी बहुत सराहनीय थे। अत. ऐसे राज्य शासन की पद्धति होना, जैसे कि प्रान्तो को राज्यों का रूप देना, जिससे जनता मे विच्छेदक मनोवृति (फिसीफरेस टेंडेंसी) को प्रोत्साहन मिले और देश एव राज्य के मध्य विभक्ति निष्ठा (डिवाईडिड लायलटी) हो, यह देखकर इस सम्मेलन को खेद होना स्वाभाविक है।

इस सम्मेलन की निश्चित सम्मति है कि भारत के भावी विभाजन की सम्भावना को भाषावाद और प्रदेश-वाद तथा प्रदेशो के सीमा सम्बन्धी आदि अनेक अत्यन्त कटु विवादो को सदा के लिये दूर करने का एक ही उपाय है और वह यह है कि भारत की राज्य पद्धति अखण्ड शक्ति सम्पन्न केन्द्रीय शासन ही हो।

प्रस्तावक—श्री घनश्याम सिंह गुप्त
अनुमोदक—श्री नरदेव स्नातक

जातिवाद और सम्प्रदायवाद

आर्य समाज जन्ममूलक जातिवाद और सम्प्रदायवाद का सदा से विरोधी रहा है। वास्तव में यथोचित और क्रियात्मक रूप से इन पर किसी ने कुठार चलाया तो वह आर्य समाज है। परन्तु खेद है कि अब इन कुरीतियों को कुछ नये ढग से प्रोत्साहन मिलने लगा है। प्रायः देखा जाता है कि राजनैतिक दलो तथा अन्य संगठनों द्वारा भी इनको किसी न किसी प्रकार से बढ़ावा मिलता है ताकि चुनाव में विजय प्राप्त की

जा सके। यह सम्मेलन सभी राजनैतिक दलों तथा अन्य संगठनों से आग्रह करता है कि वे राष्ट्रहित में ऐसी संकीर्ण भावनाओं से दूर रहें।

प्रस्तावक—प० वासुदेव शर्मा
अनुमोदक—वटकृष्ण वर्मा

शिक्षा सम्बन्धी

शिक्षा के क्षेत्र में आर्य समाज की धारणा है कि:—

१—उच्च से उच्च शिक्षा पाने का सभी नरनारी को अपनी योग्यता, क्षमता और विशेषताओं की परिधि के भीतर, समान अधिकार और अवसर मिलना चाहिये।

२—छात्र छात्राओं का सह शिक्षण अवांछनीय है।

३—यह सम्मेलन आर्यशिक्षणालयो के संचालको से निवेदन करता है कि वह अपने शिक्षाक्रम में शिल्प तथा गोकृष्यादि के शिक्षण की विशेष व्यवस्था करे।

४—भारत के भावी नागरिकों का नैतिक स्तर गिरने न पावे इसके लिए यह आवश्यक है कि बालक और बालिकाओं को उनके शिक्षाकाल में धार्मिक शिक्षा दी जाए। शासकीय और अर्ध शासकीय विद्यालयों में धार्मिक शिक्षा असाम्प्रदायिक हो यह भारत की वर्तमान शासन पद्धति की मांग है।

इस सम्मेलन की राय में असाम्प्रदायिक धार्मिक शिक्षा वेदों के आधार पर ही हो सकती है। वेदो के निर्माणकाल के बारे में आर्यसमाज और विशाल हिन्दू समाज की राय को छोड़ भी दिया जाय तो इसमे ससार के सभी विद्वान सहमत हैं कि मनुष्य समाज का सबसे प्रथम ग्रन्थ ऋग्वेद है जिसने मनुष्य को प्रथम मानव बनाया और क्योंकि मनुष्य समाज सम्प्रदायों में विभक्त नहीं हुआ था।

देश मे आर्य समाज की जो अनेक शिक्षण संस्थाएं हैं इस सम्मेलन की यह भी इच्छा है कि उनका आपस में सम्बन्ध स्थापित किया जावे। इसके लिए यह आवश्यक प्रतीत होता है, कि एक विशिष्ट विश्वविद्यालय की स्थापना हो। इस निमित्त सार्वदेशिक सभा की विद्यार्य सभा ने जो एक प्रारूप बनाया है उसकी चर्चा आर्य जगत में की जाये और आर्य विद्वानों द्वारा उसके अध्ययन के पश्चात उचित और आवश्यक सशोधन के साथ इसे अधिनियमित करने का यत्न किया जाय।

प्रस्तावक—लक्ष्मीदत्त जी दीक्षित
अनुमोदक—प्रिंसिपल ईश्वर दास जी

समाज सुधार

आर्य समाज ने समाज सुधार के क्षेत्र में जो कार्य किए हैं, वे जगत् विख्यात हैं। उनकी विस्तार से तो चर्चा करना आवश्यक नही। इतना कह देना पर्याप्त है कि जहाँ आर्य समाज ने विद्याध्ययन, मन्दिर प्रवेश तथा वैदिक धर्म का अनुयायी होने के लिए मनुष्यमात्र के समान अधिकार का प्रतिपादन किया है, वहाँ उसने निरर्थक छुआछूत, स्त्री जाति को पर्दे के भीतर बन्द रखना दहेज प्रथा आदि अनेक सामाजिक कुरीतियो के विरुद्ध भी सफल संघर्ष किया है।

परन्तु इस सम्मेलन को इस बात का खेद है कि जहां पुरानी कुरीतियाँ प्राय: दम तोड रही हैं वहाँ नई कुरीतियाँ आ रही हैं और समाज को दूषित कर रही हैं। उदाहरणार्थ "स्त्रियों के पहनावे में अमर्यादित बेपर्दगी का आना, विवाहादि सामाजिक समारोहों मे होनेवाली फिजूल खर्ची, अश्लील चल चित्र तथा विज्ञापन, सहशिक्षा, सांस्कृतिक कार्य क्रमो के नाम पर भद्दे ढंग के नृत्य आदि इस प्रकार की नई कुरीतियाँ हैं जिनका हटाया जाना

अत्यन्त आवश्यक है। आर्य समाज को और विशाल हिन्दु समाज को इस ओर ध्यान देना होगा।

प्रस्तावक:—श्रीमती अक्षय कुमारी
अनुमोदक:—श्रीमती किरणमयी देवी

भाषा सम्बन्धी विचार

भारत के संविधान मे भाषा सम्बन्धी जो प्रावधान (अनुच्छेद ३४३ से ३५२ तक) है उनकी यह सम्मेलन सराहना करता है विशेषकर जहाँ हिन्दी को केन्द्र की राज्य भाषा घोषित किया गया है।

इस सम्मेलन की राय में हिन्दी और भारत की अन्य प्रादेशिक भाषाओ के बीच किसी भी प्रकार की प्रतिद्वन्दिता किंवा सघर्ष के लिए कोई उचित कारण नही है। वास्तव में इनका हिन्दी के साथ अनन्य सम्बन्ध है, एक के विकास में दूसरे का विकास निहित है। भारत की प्रादेशिक भाषाओ का विकास इष्ट और वाछनीय है।

हिन्दी की प्रतिद्वन्दिता यदि किसी से है तो वह अंग्रेजी भाषा से है जो कि अंग्रेजो के शासनकाल मे राज्यसत्ता के बल पर लादी गई थी और जिससे भारत की सभी भाषाओं को कई अवश्यक क्षेत्रो मे कुंठित कर दिया है। उस मे भी अंग्रेजी भाषा के बहिष्कार की भावना कदापि नहीं है। देश के प्रबन्ध शासन विधान शिक्षा आदि क्षेत्रो में अंग्रेजी के स्थान पर हिन्दी और यथास्थान प्रादेशिक भाषाओ का प्रयोग किया जावे। विज्ञान आदि विषयों के (पोस्ट ग्रेजुऐट) स्नातकोत्तर अध्ययन के लिए अथवा वाह्य जगत के उ ी प्रहार के ससर्ग के लिए अंग्रेजी भाषा के अध्यन या प्रयोग पर किसी प्रकार का विरोध नही हो सकता है। शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी भाषा बनी रहे यह असह्य है, और विद्या के प्रसार में बाधक है। बालकों की प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा उनकी मातृभाषा में हो, और मातृभाषा का निर्धारण वे स्वयं अथवा उनके संरक्षक करें यही उचित और स्वाभाविक है। यह अनुभव जन्य तथ्य है कि किसी भी भाषा को बलात् ठूसना उस भाषा के प्रति घृणा उत्पन्न करना है।

लिपी और वर्णमाला के सम्बन्ध मे कुछ कहना आवश्यक प्रतीत होता है। भारत के प्राय सभी प्रादेशिक भाषाओ के अक्षरो की वर्णमाला एक ही समान है और यह ब्राह्मी वर्णमाला अत्यन्त युक्ति युक्त और वैज्ञानिक है इस वर्णमाला को ससार की सर्वाधिक जनसख्या की वर्णमाला होने का सौभाग्य प्राप्त है। यह बात लिपि के बारे मे नही कही जा सकती। भारत मे प्रादेशिक भाषा भेद के साथ लिपी भेद भी है। हिन्दी और मराठी की लिपि मे जो पहिले भेद था वह अब नही रहा, दोनों की लिपि एक ही हो गई है। देवनागरी, बगाली, गुजराती, गुरमुखी, उडिया आदि ये लिपियाँ प्राय: एक समान हैं और अनुकूल वातावरण मे इनका समन्वय होना कठिन नही हैं।

राष्ट्रपति जी द्वारा नियोजित खेर कमेटी के उस प्रतिवेदन से यह सम्मेलन सहमत है कि भारत की सभी भाषाओं के लिए देवनागरी लिपि ऐच्छिक कर दी जाये। साथ ही सरकार से यह भी अनुरोध करता है कि रोमन अंकों के स्थान में देवनागरी अकों का ही प्रचलन स्वीकार किया जाय।

प्रस्तावक:—श्री रघुवीरसिंह जी शास्त्री
अनुमोदक:—प्रो० शेर सिंह जी

वैदिक धर्म मनुष्यमात्र के लिए

आर्य समाज सदा इस बात का पोषक रहा है कि प्रत्येक व्यक्ति को धार्मिक भावना से प्रेरित होकर धर्म मत परिवर्तन की स्वतंत्रता चाहिये और इसी सिद्धान्त के अनुसार उसने पवित्र वैदिक धर्म का द्वार

मनुष्य मात्र के लिये खोला यद्यपि इसके लिये उसे अपने ही लोगों के साथ भी संघर्ष करना पड़ा । हर्ष का विषय है कि इसे अब वैदिक धर्मावलम्बी भाई (अन्य हिन्दू भाई) भी मानने लगे हैं । आशा है इस कार्य के लिए वेद के मानने वाले सभी भाई अधिक ध्यान देंगे और अधिक उत्साह से काम करेंगे ।

प्रस्तावकः—मेहर चन्द धीमान्

अनुमोदकः—आचार्य प्रियव्रत

विदेशी ईसाई मिशनरियों का अनुचित व्यवहार

मध्य प्रदेश शासन द्वारा नियुक्त नियोगी समिति और मध्य भारत द्वारा नियुक्त रेगे समिति के प्रतिवेदनो से यह स्पष्ट सिद्ध हो गया है कि ईसाई मिशनरियो द्वारा विशेष कर विदेशी मिशनरियों द्वारा पहाडी और जगली इलाको मे विदेश से आये हुए करोडो रुपये के व्यय से जो धर्म परिवर्तन का कार्य किया जा रहा है इसके पीछे केवल सच्ची धार्मिक भावना नही है अपितु इनकी ये गति विधियाँ राजनैतिक हेतु से ईसाइयो की सख्या वृद्धि के लिए है और इसमे ऐसे तरीको का अवलम्बन किया गया है जिन्हे किसी भी अंश मे राष्ट्रीय दृष्टि से उचित नही कहा जा सकता । इससे भारत की सुरक्षा पर जो भयावह प्रभाव पड रहा है उसकी भी चेतावनी उन प्रतिवेदनों मे विद्यमान है ।

आर्य समाज को तो इस प्रकार अनुचित कार्यवाहियों का पहिले से ज्ञान था और वह साधारण जनता को और यदाकदा शासको को भी सचेत करता रहा ।

जो सज्जन यह कहते है कि संसार की प्रगति मे वह समय आ गया है जब कि किसी राष्ट्र की सुरक्षा पर वहाँ के निवासियों की धार्मिक भावना का कोई प्रभाव नहीं पडता उनसे यह सम्मेलन सहमत नहीं है । अब भी संसार के अनेक राज्यों का निर्माण और स्थिति धार्मिक भावना के आधार पर है ।

यह सम्मेलन आशा करता है कि इन सब बातो की ओर भारत शासन और भारतीय जनता समुचित ध्यान देंगे । यह सम्मेलन जहाँ इस दिशा मे कार्य करने वाले सब संगठनों से अनुरोध करता है कि वे अपना सारा पुरुषार्थ सयुक्त करें वहाँ विशाल हिन्दू समाज से राष्ट्रक्षा के इस पवित्र कार्य मे पूरी शक्ति से जुट जाने की अपील करता है ।

सरकार को भी ऐसी व्यवस्था करनी चाहिए कि विदेशी ईसाई मिशनरियों को विदेश से मिलने वाला धन सरकार द्वारा प्राप्त हो और उसी के नियन्त्रण मे खर्च हो ।

प्रस्तावकः—घनश्याम सिंह गुप्त

अनुमोदकः—सेठ जुगल किशोर बिड़ला

पंजाब की भाषा समस्या

जो सज्जन यह कहते हैं कि सारा पंजाब एक भाषी राज्य है और सारे पजाब की एक ही भाषा है अर्थात् पजाबी है, उनकी इस बात को यह सम्मेलन सर्वथा तथ्य के प्रतिकूल समझता है ।

हरयाणा और पहाडी क्षेत्र की भाषा पूर्णरूप से हिन्दी है । और जालन्धर आदि की हिन्दी और पजाबी दोनो ही भाषाये हैं । इस प्रकार लगभग ७० प्रतिशत की भाषा होने के कारण हिन्दी ही पजाब की मुख्य भाषा है ।

आर्यसमाज ने अपना सत्याग्रह शासन के उच्चाधिकारियों द्वारा घोषित सद्भावना के उत्तर में पूर्ण सद्भावना का प्रदर्शन करके स्थगित किया था । हमारे

पक्ष के औचित्य को मान कर ही शासन ने दो शिक्षा शास्त्रियों की सद्भावना समिति नियुक्त की जिसके प्रतिवेदन पर विचार करने तथा भाषा-समस्या के समाधान के लिए गाडगिल समिति नियुक्त की गई। इस समिति की कुछ बैठकें भी हुई परन्तु खेद है कि इस समिति का कार्य भी प्राय समाप्त ही हुआ दीखता है।

पजाबी क्षेत्र मे हिन्दी को उसका उचित स्थान नही दिया जा रहा है। सरकार ने पंजाबी भाषा को गुरमुखी लिपि के साथ बाँध दिया है। इसलिए यह सम्मेलन जिला स्तर तक शासन की भाषा के सम्बन्ध मे पजाब सरकार द्वारा पास किये गए विधेयक का विरोध करता है। जहा तक कि उसका सम्बन्ध पंजाबी क्षेत्र से है यह सम्मेलन उसी सदर्भ मे हाई कोर्ट के आदेश जिसके अनुसार पंजाबी क्षेत्र मे सब काम पजाबी भाषा तथा गुरुमुखी लिपि मे होगा उसका भी प्रबल विरोध करता है। अत: पजाबी के साथ शासन का काम पजाबी क्षेत्र मे हिन्दी मे भी होना चाहिये। पजाबी भाषा के प्रयोग के लिए शिक्षा तथा शासन मे गुरुमुखी और देवनागरी प्रत्येक स्तर पर ऐच्छिक विषय कर दी जाय।

हिन्दी क्षेत्र की क्षेत्रीय समिति ने दिनाँक ४ मई १६६० को सर्वसम्मति से यह निश्चय किया कि उस क्षेत्र मे पजाबी के पठन-पाठन की अनिवार्यता हटा दी जाये। इस पर भी कोई आचरण नही किया गया यद्यपि इसके लिए न केवल पजाब शासन अपितु राज्यपाल का भी नियम के अनुसार विशेष उत्तरदायित्व है। यह क्षेत्रीय योजना की पक्षपात पूर्ण अवहेलना है जो शासन की बार बार घोषित नीति के विरुद्ध है।

तीन वर्ष से अधिक की अवधि मे भी यह कार्य पूर्णरूप से सफल नहीं हुआः इसका मुख्य कारण यह है कि यह प्रश्न सास्कृतिक और शैक्षणिक स्तर पर व्यवहृत नही किया जा रहा है बल्कि राजनैतिक स्तर पर निबटाया जा रहा है। आर्यसमाज तो विशुद्ध साँस्कृतिक और धार्मिक सस्था होने के करण अपना कार्यक्रम उसी परिधि के भीतर ही बना सकता है और वह स्थिति सार्वदेशिक भाषा स्वातत्र्य समिति की भी है। सरकार के रवैये से यह स्पष्ट है कि पजाब की भाषा समस्या का समाधान अब राजनैतिक स्तर पर ही हो सकेगा।

राजनैतिक क्षेत्र मे तो शक्ति का स्रोत वोट है और वही शक्ति हिन्दी प्रेमियो को काम मे लानी होगी। अत: प्रत्येक हिन्दी प्रेमी यह ध्यान रखे कि आगामी चुनाव मे यह अपना वोट उसी व्यक्ति को दे जिससे यह आशा हो कि वह पजाब मे भाषा स्वातँत्र्य की प्राप्ति तथा हिन्दी को उसका उचित स्थान दिलाने के लिए प्रयत्नशील होगा।

प्रस्तावक.—प्रो० शेरसिंह जी
अनुमोदक—ज्ञानी पिडी दास
लाला रामगोपाल

साहित्य प्रकाशन

महर्षि दयानन्द के स्वीकार पत्र मे अंकित आदेश के अनुसार साहित्य प्रकाशित करना प्रचार का एक प्रमुख साधन है। नवम् आर्य महासम्मेलन की सम्मति मे यह अत्यन्त आवश्यक है कि वैदिक धर्म और आर्य समाज के प्रचार के लिये देश और विदेश की सब भाषाओ में सस्ता और उपयोगी साहित्य प्रकाशित कराने की योजना बनाई जाय और साहित्य प्रकाशन द्वारा महर्षि के सन्देश को सारे भारत मे और अन्य देशों मे भी पहुंचाने का यत्न किया जाये। यह सम्मेलन यह आवश्यक समझता है कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा एक पृथक साहित्य प्रकाशन विभाग की स्थापना करे और उसके लिये एक

लाख रुपया एकत्रित करने का यत्न किया जाये और कार्य आरम्भ किया जाये।

(क) आर्य समाज के सिद्धान्तो के सम्बन्ध मे जो खण्डनात्मक साहित्य प्रकाशित हुआ है उसको एकत्र किया जाये और उन पुस्तको के उत्तर विद्वानो द्वारा लिखा कर प्रकाशित कराये जायें।

(ख) ऐसी पुस्तके जिन से वेदो की मान्यता और प्राचीन सॉस्कृतिक और धार्मिक भावनाओ पर आघात पहुचता है जैसे वेद अपौरुषेय नही है और केवल कुछ हजार वर्षों के बने हुए हैं उनका भी उत्तर लिखवा कर प्रकाशित कराया जाये।

(च) प्रचलित पश्चिमी विज्ञान और तत्त्वज्ञान में जो आध्यात्मिक विचार-धारा पर आघात किया गया है और जिससे भौतिकवाद और नास्तिकवाद की नई वृद्धि होती है उनके निराकरण के लिये भी उपयोगी और अच्छा साहित्य प्रकाशित कराया जाये।

प्रस्तावकः—यश, उप शिक्षा मन्त्री,
पजाब राज्य

अनुमोदकः—आचार्य विश्वश्रवा
लाला रामगोपाल

चरित्र-निर्माण

प्रचलित भ्रष्टाचार एव अनैतिकता को दृष्टि मे रखते हुए यह सम्मेलन आर्यों और आर्य समाजों से अनुरोध करता है कि वह चरित्र निर्माण के सम्बन्ध मे क्रियात्मक कार्यक्रम बनाकर कार्य प्रारम्भ करें। चरित्र निर्माण सम्बन्धी प्रतिज्ञा पत्रों पर हस्ताक्षर करें और करायें और जनता की मनोवृत्ति को सुधारने का प्रयत्न करे। उससे स्वराज्य प्राप्ति के साथ साथ हमारा जनता के साथ अधिक घनिष्ठ सम्पर्क स्थापित हो सकेगा और सुराज्य की संभावना भी हो सकेगी।

जिस प्रकार आर्य समाज ज्ञान और मान की रक्षा के लिए सदैव प्रयत्नशील रहा है उसी प्रकार नैतिक उत्थान के लिए प्रयत्नशील होना आवश्यक है। उपरी लिखित प्रस्ताव मे निर्दिष्ट विचारधारा को क्रियात्मक रूप देने के लिए यह सम्मेलन भारतीय सरकार के रेडियो विभाग, सिनेमा कम्पनियो, समाचार कम्पनियो और समाचार पत्रो विशेषत आर्य समाजियों द्वारा सचालित समाचार पत्रो के सचालको से निवेदन करता है कि वह नैतिक पतन को उत्तेजना देने वाले अश्लील चित्रो आदि का प्रकाशन न किया करे।

प्रचलित भ्रष्टाचार अनैतिकता को दृष्टि में रखते हुए यह नवम आर्य महासम्मेलन व्यवसाय मे लगे हुए नागरिको से अनुरोध करता है कि वे खाने पीने की चीजों और औषधियो मे मिलावट की कुप्रथा, कम मापने कम, तोलने की कुटेव और खोटे सिक्के के उपयोग की दूषित मनोवृत्ति को परित्याग करके ईमानदारी से अपने व्यवसाय को और व्यवसाय द्वारा राष्ट्रहित की नीति को लक्ष्य मे रखे केवल स्वार्थसिद्धि को नही।

न्यायालयों मे जो नागरिक भाग लेते हैं या जिनको वहाँ जाने की आवश्यकता होती है उन्हे रिश्वत देने व लेने के अपराध से बचे रहने का पूरा प्रयत्न करते रहना चाहिए और शपथ की महत्ता को लक्ष्य में रख कर ईश्वर को न्यायकारी और व्यापक मानकर पाप से बचने का प्रयत्न करना चाहिए।

भारत में जो नागरिक सरकारी या अन्य नौकरियों में हैं उनको निम्नलिखित सेवा सूत्र पचशील पर ध्यान रखना चाहिए :—

सेवा—सूत्र
[पंचशील]

सद्भावना (ईमानदारी)

१. उत्कोच (घूस रिश्वत) त्याग

२. पक्षपात-निर्मूलन

३. कर्तव्य पालन

४. प्रवंचकता एवं असत्य भाषण त्याग

५. आदेश पालन और अनुशासन

व्यवहार कुशलता (कार्यक्षमता)

१. आशु कार्यकारिता

२. विशुद्धता

३. यथा तथ्य (ज्यों का त्यों)

४. विनयशीलता

५. समय निष्ठा

१—राजनीतिक जगत में वोट के महत्व को लक्ष्य में रखकर ईमानदारी से वोट का प्रयोग होना चाहिए और यह बात ध्यान में रखनी चाहिए कि वोट राष्ट्र की सम्पत्ति है इसका दुरुपयोग आपत्ति है। महर्षि दयानन्द की इस भावना का कि समति का अधिकार केवल सदाचारी को ही देना चाहिए बलपूर्वक प्रचार किया जाय।

"महाजनो येन गतः सपन्था" के सिद्धान्तानुसार यह सम्मेलन इस स्थिति मे निश्चित करता है कि नेतृवर्ग नैतिकता इत्यादि को अंगीकार कर भारत के कोने कोने में स्थित आर्य समाजों को चरित्र और नैतिकता की शिक्षा मे प्रोत्साहित करेंगे।

प्रस्तावकः—पूर्णचन्द
अनुमोदक —महात्मा आनन्द स्वामी

व्यायाम शालाएं

नवम आर्य महासम्मेलन का निश्चित मत है कि आर्य समाज के छठे नियम की पूर्ति के लिए प्रत्येक आर्य समाज कम से कम एक व्यायाम शाला अवश्य खोले तथा शारीरिक उन्नति के अर्थ अपने सदस्यों एवं सम्बन्धित नवयुवको को सदाचार पूर्वक व्यायाम करने की प्रेरणा करे।

प्रस्तावक—रणञ्जय सिंह
अनुमोदक—आनन्द प्रिय
बडोदा

चिकित्सा

यह सम्मेलन भारत सरकार से आग्रहपूर्वक प्रार्थना करता है कि वह आयुर्वेदीय चिकित्सा को ही राष्ट्रीय चिकित्सा पद्धति के रूप में स्वीकार करे उसे सब प्रकार से प्रोत्साहित करे।

प्रस्तावकः—आचार्य भगवान देव
अनमोदक—कविराज हरनाम दास बी०ए०,
समर्थकः—वैद्य मूलचन्द

साप्ताहिक सार्वदेशिक के ग्राहक बनिये !

* भविष्य में जो महान् कार्य आर्यसमाज करने जा रहा है उनके लिए यह आवश्यक समझा गया कि सार्वदेशिक सभा का अपना एक प्रभावशाली पत्र हो, अतः गंभीरतापूर्वक यह निश्चय किया गया है कि इसे स्थाई कर दिया जाए।

* पत्र की उपयोगिता बढ़ाने के लिए इसकी पृष्ठ संख्या भी ८ के स्थान पर १२ की जा रही है और मूल्य १२ नये पैसे, वार्षिक ६) पूर्ववत ही रखा गया है।

* अब यह आर्य जनता के हाथ में है कि वह इसे भली भांति संम्भाले और भारी संख्या में ग्राहक बना कर इसे आत्मनिर्भर बनाएं।

* आर्य समाजें प्रति सप्ताह १० प्रति कम से कम मगाएं। इसके लिए उन्हें केवल ४) मासिक देना पड़ेगा। २० प्रति प्रति सप्ताह मंगाने वालों को केवल ७) मासिक देना होगा। इस प्रकार आर्य समाजें अपने-अपने क्षेत्र में बहुत थोड़े से व्यय में प्रभावशाली प्रचार कर सकेंगी।

* हमारी प्रार्थना है कि इन पंक्तियों को पढ़ने के साथ ही ६) मनिआर्डर द्वारा आज ही भेजिए ! और अपने परिचित इष्टमित्रों को भी ग्राहक बनाकर अपने कर्त्तव्य का पालन कीजिए—

विनीत

रघुवीर सिंह शास्त्री

मन्त्री

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

सार्वदेशिक सभा पुस्तक भंडार का

पुस्तकों का सूची-पत्र

निम्न प्रकाशन नेट मूल्य पर दिये जायेंगे।

१. ऋग्वेद संहिता	१०)
२. अथर्ववेद संहिता	८)
३. यजुर्वेद संहिता	४)
४. सामवेद संहिता	४)
५ सत्यार्थ प्रकाश	२।)
६. ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका	२॥)
७. संस्कार विधि	१।)
८. आर्याभिविनय	॥।)
९. पंचमहायज्ञविधि:	२०)
१. सिन्धी सत्यार्थप्रकाश	१)२०
१. कन्नड सत्यार्थप्रकाश	३।)
१२. मराठी सत्यार्थप्रकाश	१।=)
१३. कर्त्तव्य दर्पण सजिल्द	॥≡)
१४. वैदिक ज्योति	५)२५
१५. पंच महायज्ञ विधि भाष्यम्	५)

निम्न पुस्तकों पर निम्न प्रकार कमीशन दिया जायगा :

१०) से २५) रु० तक १२½%
२५) से ऊपर २५०) तक २०%
२५०) से ऊपर १०००) तक २५%
१०००) से ऊपर २०००) तक ३०%
२०००) से ऊपर ३३⅓%

श्री स्वामी ब्रह्ममुनि कृत

१. यम पितृ परिचय	२)
२ वैदिक ज्योतिष शास्त्र	१॥)
३. वैदिक राष्ट्रीयता	।)
४ वैदिक ईशवन्दना	।=॥)
५. वैदिक योगामृत	॥=)
६. दयानन्द दिग्दर्शन	॥।)
७ वेदों में दो बडी वैज्ञानिक शक्तियां	॥।)
८. निज जीवनवृत्त वनिका अजिल्द	)५०
" " सजिल्द	)७५
९. वृहत् विमान शास्त्र सजिल्द	१०)
१०. बाल जीवन सोपान "	१॥=)
११ छान्दोग्य उपनिषद् कथा	३)
१२. दार्शनिक अध्यात्म तत्व	१॥)
१३ वेदान्त दर्शनम् (संस्कृत मे)	३)
१४. वैदिक वन्दन	५)

श्री महात्मा नारायण स्वामी कृत

१५. योग रहस्य	१।)
१६. मृत्यु और परलोक	१।)
१७. विद्यार्थी जीवन रहस्य	॥=)
१८. प्राणायाम विधि	≡)

१९. उपनिषदें :—
ईश ।=) केन ।।) कठ ।।) प्रश्न ।=)
मुन्डक ≡) माण्डूक्य ।) एतरेय ।)
तैत्तिरीय १)

२०. बृहदारन्यकोपनिषद्	३)

श्री पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय कृत

२१. आर्योदय काव्यम् पूर्वार्द्ध	१॥)
२२. " उत्तरार्द्ध	१॥)
२३. वैदिक संस्कृति	१।)
२४. मुक्ति से पुनरावृत्ति	।=)

२५ आर्यसमाज और सनातनधर्म ।=)
२६ आर्यसमाज की नीति ।=)

श्री पं इन्द्र विद्यावाचस्पति कृत

२७ आर्यसमाज का इतिहास सजिल्द (प्रथम भाग) ४)
२८ ,, ,, (द्वितीय भाग) ५)
२९ आर्यवीर दल बौद्धिक शिक्षण ।=)

श्री रघुनाथप्रसादजी पाठक कृत

३० आर्य जीवन गृहस्थ धर्म ॥=)
३१ कथा माला ॥।)
३२ सन्तति निग्रह १।)
३३ नया संसार ≡)
३४ आदर्श गुरु शिष्य ।-)

श्री पं० धर्मदेव जी विद्यामार्तण्ड कृत

३५. स्त्रियों का वेदाध्ययन अधिकार १।)
३६ भक्ति कुसुमाञ्जली ॥)
३७ हमारी राष्ट्र भाषा व लिपि ।-)

श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द कृत

३८ आर्य समाज के महाधन २॥)
३९ वेद की इयत्ता १॥)

श्री लाला ज्ञानचन्द कृत

४० धर्म और उसकी आवश्यकता १)
४१ वर्ण व्यवस्था का वैदिक रूप १॥)
४२ इजहारे हकीकत (उर्दू मे) ॥=)
४३ सत्य निर्णय १॥)

विविध

४४ अरब मे मेरे सात साल (प० रुचिराम जी) १)
४५. विरजानन्द प्रकाश (भीमसेन शास्त्री) २)
४६ वेद रहस्य (ले० महात्मा नारायण स्वामी) २)५०

पं मदन मोहन विद्यासागर कृत

४७ जन कल्याण का मूल मन्त्र ॥)
४८ संस्कार महत्व ॥।)
४९ वेदो की अन्त साक्षी का महत्व ॥=)
५० आर्य घोष ॥)
५१ आर्य स्तोत्र ॥)

अन्य विद्वानों कृत

५२ स्वाध्याय संदोह (स्वा वेदानन्द तीर्थ) ४)
५३ स्वराज्य दर्शन (प० लक्ष्मीदत्त दीक्षित) १)
५४ राजधर्म (महर्षि दयानन्द सरस्वती) ॥)
५५ भूमिका प्रकाश (संस्कृत मे)
(प० द्विजेन्द्रनाथ शास्त्री) १॥)
५६ एशिया का वेनिस (स्वा० सदानन्द) ॥।)
५७ दयानन्द सिद्धान्त भास्कर
(श्री कृष्णचन्द्र विरमानी) १॥)
५८ भजन भास्कर (संग्रहकर्त्ता प० हरिशंकर शर्मा
कविरत्न) १॥।)
५९ सनातन शुद्धिशास्त्र (गोविन्द प्रकाश शास्त्री) २)
६० आर्य डाइरेक्टरी १।)
६१ सार्वदेशिक सभा का २७ वर्षीय कार्य विवरण
अजिल्द २)
६२ आर्य पर्व पद्धति (प० भवानी प्रसाद कृत) १।)

पं० राजेन्द्र (अतरौली) कृत

६३ ऋषि दयानन्द के पुण्य संस्मरण १ ३७
६४ गीता विमर्श ॥।)

ईसाई प्रचार निरोध साहित्य

६५ ईसाई षड्यन्त्र ।)

सार्वदेशिक सभा पुस्तक भण्डार, दयानन्द भवन, नई दिल्ली—१.

रजिस्टर्ड नं० डी-५१

प्रचार करने योग्य ट्रैक्ट

	मूल्य प्रति	सैकड़ा
१ आर्यसमाज के मन्तव्य	)०३ प्रति	४)
२. शंकासमाधान	)०३ ,,	३)
३ पूजा किसकी	)०३ ,,	२)५०
४ आर्यसमाज	)०३	२)५०
५ ऋग्वेद में देवृकामा या देवकामा	)०३ ,,	४)
६ गोकरुणानिधि	)०३ ,,	४)
७ गोहत्या क्यों ?	)१२	१०)
८ चमड़े के लिए गोवध	)१२	१५)
९ पञ्चमहायज्ञविधि	)२५	१५)
१० मांसाहार घोर पाप	)१५	१०)
११ दशनियम व्याख्या	)०६ ,,	३)५०
१२ तीर्थ और मोक्ष	)०६	३)५०
१३ ग्रहण और दान	)०६ ,,	३)५५
१४ भारतवर्ष में जाति भेद	)०६ ,,	३)५०
१५ वैदिक राष्ट्र धर्म	)२० ,,	१५)
१६ प्रजापालन	)०५	४)
१७ नारायण स्वामी जी की संक्षिप्त जीवनी	)०५	४)
१८ सत्यार्थप्रकाश की रक्षा में	)०५ ,,	४)
१९ मुर्दों को क्यों जलाना चाहिए	)०५ ,,	४)
२० आर्यसमाज के नियमोपनियम	)०६ ,,	३)५०
२१ आदर्श गुरु शिष्य	)२५	२०)

ENGLISH PUBLICATIONS

1. Introduction to the Commentary on Vedas 2.8.-
2. Kenopanishat (Translation by Pt Ganga Prasad ji M A) - 4 -
3. Kathopanishat (Pt Ganga Prasad M A Rtd Chief Judge) 1 4
4. Aryasamaj & International Aryan League (Pt Ganga Prasad ji Upadhyaya M A - 1,-
5. Truth Bed Rocks of Aryan Culture (Rai Sahib Thakur Datt Dhawan) - 8 -
6. A Case of Satyarth Prakash in Sind (S Chandra) 1 8 -
7. In Defence of Satyarth Prakash (Prof Sudhakar M A) - 2 -
8. Tributes to Rishi Dayanand & Satyarth Prakash (Pt Dharma Deva ji Vidyavachaspati) -/8/-
9. Political Science (Mahrishi Dayanand Saraswati - 8 -
10. Elementary Teachings of Hinduism (Ganga Prasad Upadhyaya M A) -.8 -
11. Life after Death 1 4 -
12. Philosophy of Dayanand 10 -
13. Agnihotra (Dr Satya Prakash) 2 8-
91. Daily Prayer of An Arya (Shri Narain Swami) - 8 -
15. The Constitution of Arya Samaj 0 n P

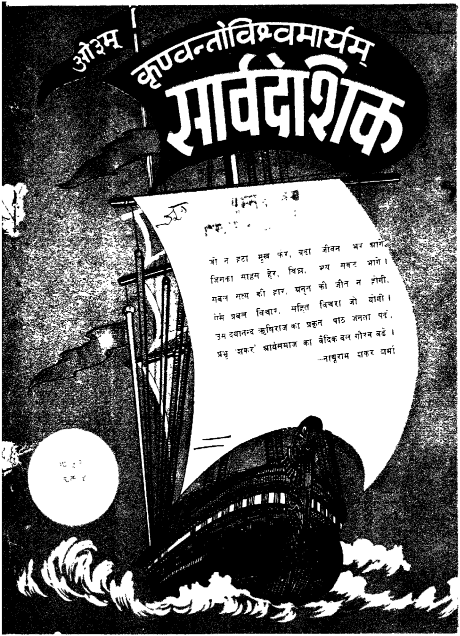
नोट -(१) आर्डर के साथ २५ प्रतिशत चौथाई धन अग्रिम रूप में भेजें।

(२) अपना पूरा पता डाकखाना तथा स्टेशन के नाम सहित साफ साफ लिखें

(३) विदेश में यथासम्भव बैंक पोस्टल आर्डर द्वारा आना चाहिए।

व्यवस्थापक **सार्वदेशिक सभा पुस्तक भंडार, दयानन्द भवन, नई दिल्ली--१**

पुरी प्रिन्टर्स जवाहर नगर दिल्ली में मुद्रित व रघुनाथ प्रसाद जी पाठक मुद्रक और प्रकाशक के लिये सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दयानन्द भवन, नई दिल्ली-१ से प्रकाशित।


ओ३म्
कृण्वन्तोविश्वमार्यम्
सार्वदेशिक
जो न हटा मुख फेर, बढ़ा जीवन भर आगे,
जिसका साहस हेर, विघ्न, भय संकट भागे।
सबल सत्य की हार, अनृत की जीत न होगी,
ऐसे प्रबल विचार, सहित विचरा जो योगी।
उस दयानन्द ऋषिराज का प्रकृत पाठ जनता पढ़े,
प्रभु 'शंकर' आर्यसमाज का वैदिक बल गौरव बढ़े।
—नाथूराम शंकर शर्मा

॥ ओ३म् ॥

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

वार्षिक मूल्य ६)　　　　विदेश मे वार्षिक ८) या १२ शिलिंग

वर्ष ३७]　　सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०६०　　जून १९६१ ज्येष्ठ २०१८　　अंक ४

विषय-सूची

★ सम्पादक
रघुवीर सिंह शास्त्री, सभा मन्त्री

★ सहायक सम्पादक
रघुनाथप्रसाद पाठक

★ प्रकाशक व मुद्रक
रघुनाथप्रसाद पाठक

★ कार्यालय
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
दयानन्द भवन, नई दिल्ली
फोन . २४७७१

★ मुद्रक
पुरी प्रिन्टर्स २६-ए, जवाहर नगर, दिल्ली
फोन २३०४२

सम्पादकीय

एक अपूर्व तथा सफल समारोह

गत १६ से २१ मई तक सभा की स्वर्ण जयन्ती तथा नवम आर्य महासम्मेलन पुरानी और नई दिल्ली के बीच मे स्थित विशाल रामलीला मैदान में सम्पन्न हुए। ६ दिन तक इस पुण्यस्थली पर आर्यों के सम्मेलन, यज्ञ-याग, भाषण-प्रवचन तथा विचार-विनिमय की भारी धूम रही। प्रत्येक कार्यवाही तथा गति विधि की अपनी विशेषता रही। देश-विदेश से आये लाखों आर्य नर नारी इस धार्मिक मेले मे एकत्र हुए। १६ तारीख की जो विशाल तथा प्रभावशाली जलूस निकला, उसके सम्बन्ध मे पत्रकारों, दिल्ली के पुराने निवासियों तथा उच्च सरकारी अधिकारियों तक का यह कहना है कि ऐसा भव्य तथा भारी जलूस दिल्ली के इतिहास मे यह पहला ही था। गोरक्षा सम्मेलन, कुमार सम्मेलन, शिक्षा सम्मेलन तथा महिला सम्मेलन आदि सभी सम्मेलनो मे जनता ने भारी रुचि एवं उत्साह से भाग लिया और उनमे अनेक महत्त्वपूर्ण निश्चय किये गये। विद्वत्सम्मेलन और प्रमुख आर्यों का सम्मेलन ये दो आयोजन तो और भी अधिक आकर्षण का केन्द्र रहे। देश भर के गण्यमान्य आर्य विद्वानों ने वेद तथा दर्शन के सम्बन्ध में अनेक खोजपूर्ण निबन्ध पढ़े और विचार विनिमय किया। प्रमुख आर्यों के सम्मेलन में आर्य जगत् के चुने हुए लगभग २०० व्यक्तियों ने भाग लिया और आर्यसमाज के आन्तरिक संघठन, प्रचार प्रणाली तथा भावी कार्यक्रम के सम्बन्ध मे गहरा मनन हुआ। प्रतिदिन उच्चकोटि के विद्वानों के सारगर्भित भाषण होते रहे और २० तथा २१ को नवम आर्य महासम्मेलन का खुला अधिवेशन हुआ।

सम्मेलन की सारी कार्यवाही बहुत शानदार रही। भव्य वेदि तथा लाखों आर्य नर-नारियो द्वारा निनादित जय घोषों से गूंजता सभास्थल प्रत्येक दर्शक को तरंगित कर रहे थे। जो प्रस्ताव इस सम्मेलन मे स्वीकृत हुए उनमे आर्य समाज के गौरव, चिन्ताशीलता तथा सक्रियता की पद-पद पर झलक मिलती है। अनेक महत्त्वपूर्ण समस्याओं के सम्बन्ध मे पूरा मन्थन किया गया और समूचे आर्य जगत्, राष्ट्र तथा मानव जाति का पथप्रदर्शन किया गया। साथ ही आर्य समाज एवं वैदिक धर्म के प्रसार के लिए ठोस कार्यक्रम निश्चित किये गये। किसी भी दृष्टि से देखें यह समारोह बहुत ही अपूर्व, प्रभावपूर्ण तथा सफल रहा है। इस से आर्य समाज के सघठन की धाक बैठी है, सत्ता की छाप लगी है। धर्मानुराग तथा श्रद्धा का ठोस प्रदर्शन हुआ है। साथ ही आर्यों में आत्मविश्वास बढा है, नयी चेतना तथा स्फूर्ति का सञ्चार हुआ है। जीवन एवं साम-

र्ष का एक प्रदर्शन हुआ है। इसलिए यह स्वाभाविक ही है कि आर्य इस सफलता पर गद् गद् हो उठे, झूमने लगे और अपने आचार्य महर्षि दयानन्द द्वारा मानव जाति के ति किये गये उपकारो का ध्यान करके गौरवान्वित हो।

इसमे सन्देह नही कि इस समारोह के मार्ग मे अनेक कठिनाइया तथा विघ्नबाधाये भी रही। इस प्रकार की ष्टाये भी चलती रही कि प्रथम तो सम्मेलन हो ही न ाये और यदि हो भी तो किसी अंश में भी सफल न हो के। परन्तु सभा के अधिकारी "न्याय्यात्पथ प्रविचलन्ति दं न धीरा" की उक्ति के अनुसार अविचलित भाव से त-दिन लगे रहे। साथ ही आर्यजनता के दिन प्रतिदिन बढते हुए आशीर्वाद तथा सहयोग का बल उन्हे भरपूर त्रा मे मिला। परिणाम यह हुआ कि आर्य जनता का सहयोग रूपी सूर्य ज्यो-ज्यो शिखर पर चढता गया त्यो-त्यो विरोध रूपी तमिस्रा गहरे गर्त मे गिरती चली गयी। इस पृष्ठभूमि तथा स्थिति मे खड़े होकर जब इस भव्य समारोह की सफलता आकी जाती है तो यही कहा जा सकता है—परमपिता परमात्मा की असीम अनुकम्पा, आर्य जनता के हार्दिक सहयोग तथा सभा के अधिकारियो एव कार्यकर्ताओ के परिश्रम का ही यह समुचित शुभ फल हम सब को देखने को मिला है। सचमुच सभी आर्य इस अपूर्व सफलता पर गर्व कर सकते है।

परमेश्वर हम आर्यों को शक्ति प्रदान करे ताकि इस स्पृहणीय सफलता से स्फूर्ति तथा उत्साह प्राप्त करके हम अपने लक्ष्य की दिशा मे और भी अधिक तीव्र गति से बढ़ सके।

—रघुवीरसिह शास्त्री

सम्पादकीय टिप्पणियाँ

मानव की समानता

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ-श मे प्रतिपादित किया है कि ससार के समस्त मनुष्य र के अवयवों और मानसिक भावनाओ इत्यादि की दृष्टि से एक जैसे हैं अवश्य जलवायु आदि की विभिन्नताओं के कारण उनकी आकृतियों मे भेद पाया जाता है। कोई वर्ग जन्म, बुद्धि और भावनाओ की दृष्टि से अन्य वर्ग से उच्च है, यह कपोल कल्पना है। विज्ञान-वेत्ताओं और

समाज-शास्त्रियो ने भी इस कपोल कल्पना का खडन करके यह दिखा दिया है कि मनुष्यो में ऊँच नीच का कोई भेद नही है। उनकी कृतियो और सफलताओ मे जो भेद पाया जाता है वह वातावरण-जनित है। यह सब कुछ होते हुए भी सभ्यतम कहे जाने वाले वर्गो मे नस्ल और जाति की उच्चता का पक्षपात अब भी विद्यमान है। उदार-शिक्षा भी इस पक्षपात को निर्मूल करने मे समर्थ नही जान पड रही है क्योकि पक्षपात की यह भावना उस समय बद्धमूल हो जाती है जबकि मस्तिष्क अपरिपक्व अवस्था मे होता और आदतो का निर्माण होने लगता है।

अमेरिका ने अन्य देशो की अपेक्षा प्रजातत्रात्मक मर्यादाओ का अधिक दृढता से नियमन किया है। उसका सविधान उन लोगो के लिए प्रेरणादायक है जो मानव की समानता और मानवीय अधिकारो मे विश्वास रखते है। इस पर भी अमेरिका के बहुत से लोगों के हृदयो पर नस्ल की उच्चता का पक्षपात छाया हुआ है और सफेद चमडी वालो की तुलना मे नीग्रो हेय समझा जाता है यद्यपि विधान की दृष्टि मे दोनो ही काले और गोरे समान हैं और समान अधिकारो की सुरक्षा की गारंटी भी विद्यमान है। यह तथ्य इस बात का सूचक है कि जिस बुराई की जडे बहुत गहरी चली जाती हैं उसका अन्त करना दुःसाध्य होता है। अलबामा मे अभी हाल मे जो जातीय दगे हुए है और अमेरिकनो द्वारा उनमे नीग्रो लोगों पर जो भी अत्याचार हुए है, उनसे अमेरिका की सर्वत्र निन्दा हो रही है। अमेरिका की सरकार नीग्रो लोगों और उनके अधिकारो की रक्षा के लिए यत्नशील है। प्रसन्नता है वह अपने दायित्व को अनुभव करके नीग्रो के जान माल एव सविधान की रक्षा के लिए कृत सकल्प है। इन दगो से उन लोगो का साहस बढता है जो काले और गोरों के पृथक्करण की दूषित नीति पर चल रहे हैं।

इन दगो के आधार पर कम्यूनिस्ट लोग प्रजातत्र प्रणाली की बहुत निन्दा कर रहे है। जिन लोगों की आस्था मानवीय अधिकारो मे न हो। जो मानव के महत्त्व को अगीकार न करते हो और जिनकी राजनैतिक प्रणाली मे समान मनुष्यो की आध्यात्मिक समानता को स्थान न मिलता हो उन्हे उन लोगों की आलोचना करने का कोई अधिकार नही है जो प्रजातत्र के ध्वज को ऊँचा उठाए रखे हो परन्तु किन्ही अपरिहार्य कारणो से उसके प्रशस्त कार्य से भटक गए हो।

एक अश्लील प्रसार

नवभारत टाइम्स विचार प्रवाह के शीर्षक से २-६-६१ के अक मे लिखता है —

स्व. डेविड हरबर्ट लारेन्स

बम्बई के अतिरिक्त प्रेसिडेंसी मजिस्ट्रेट श्री नसरुल्ला ने विश्वविख्यात ब्रिटिश उपन्यासकार स्व डेविड हरबर्ट लारेन्स के उपन्यास 'लेडी चैटरलीज लवर के' उस सस्करण को, जिसमे से आपत्तिजनक जचने वाले अश निकाले नहीं गए हैं, अश्लील बताया है। पुस्तक की चर्चा के पूर्व लारेन्स की थोडी चर्चा आवश्यक है।

लारेंस की पहली तीन पुस्तकें क्रमश: १९११, १२ तथा १३ में निकली। उनके कारण उनकी मौलिक ता की धाक तो जमी, किन्तु इस मौलिकता ने १९१५ मे उनकी चौथी पुस्तक के प्रकाश मे आते-आते उन्हे पुलिस के चक्कर मे डाल दिया। कुछ समय तक ऐसा प्रतीत हुआ कि उनकी

शक्ति कुण्ठित हो गई, लेकिन वस्तुतः वे उस अवधि मे मानव-मन के विश्लेषण मे जुटे हुए थे। जीवन के अन्तिम वर्षों मे उनका अध्ययन सबसे अधिक काम-प्रवृत्ति से सम्बन्धित रहा। प्राकृतिक दृश्यों का वर्णन भी उनकी विशिष्टता थी। वे निराले कलाकार थे। उनमें एक दार्शनिक की दृष्टि भी थी। फिर भी उनकी सबसे बड़ी विशिष्टता उनके काम-प्रवृत्ति के विश्लेषण मे पाई जाती है।

लारेन्स की विशिष्टताओं को गिनाना कठिन हैं। उनमें असाधारण कोमलता थी, तो असाधारण कठोरता भी। वे कवि थे, किन्तु बर्ताव मे यदा-कदा अत्यन्त अभद्र भी हो सकते थे। वे सदा यह प्रचार करते रहे कि प्रत्येक व्यक्ति को जीवन अपनी मान्यताओ के अनुसार बनाना चाहिए लेकिन दूसरो पर अपनी मान्यताएँ लादने को अति व्यग्र भी रहते थे। उनमे जो ये परस्पर-विरोधी तत्व थे, उनसे उनमे महानु लेखक बनने मे बाधा नही आई, क्योकि उनके शब्दो मे "हम अपना रोग पुस्तको के माध्यम से निकालते हैं।" लारेंस और अन्य लेखको मे अन्तर यह रहा कि अन्य लेखक पुस्तक को रोग निकालने का नही, ढकने का माध्यम बनाते हैं।

प्रेम और कामसम्बन्ध, दोनों के मेल में विश्वास तो लारेंस करते थे, किन्तु साथ ही इनमे मेल की एक सीमा तक ही सहन कर पाते थे। दोनो के बीच जिस सीमारेखा को बनाने की चेष्टा उन्होंने की, उसका अस्तित्व व्यवहार में नही, वरन् कल्पना मे ही मिल सकता है। उन्होने अपने उपन्यासो के माध्यम से यह याद दिलाने का यत्न किया कि यदि मनुष्य सावधान न हुआ, तो मस्तिष्क द्वारा गढ़े गये दायरे उसकी कल्पनाशीलता को नष्ट कर देंगे। वे स्तिष्क के विरोधी नहीं थे, किन्तु यह मानते थे कि उसे शरीर की माग को दबाने का हक नही।

लेडी चेटरलीज लवर

भारत जैसे देश मे, जहा शरीर के दावों को, इसकी मांगो को दबाने को आदर्श माना जाता है, जीवन भर आदर्शों से लोहा लेनेवाले लारेन्स की पुस्तक 'लेडी चैटरलीज लवर' का अश्लील घोषित किया जाना आश्चर्यजनक नही। जापान जैसे देश मे भी जहा युद्धोत्तरकालीन अमरीकी-सम्पर्क ने काम सम्बन्ध-विषयक पौर्वात्य आदर्शों की जड पर गहरा आघात किया है, सर्वोच्च न्यायालय ने निर्णय किया कि उक्त पुस्तक का कलात्मक पहलू काफी पुष्ट होने पर भी वह अश्लील है। उसे अश्लील इस आधार पर बताया गया कि "लज्जा हरेक युग, जाति, देश और सभ्यता के लोगो मे पायी जाती है, किन्तु उस पुस्तक मे उसे ढोंग बताया गया है। लेखक ने काम बर्ताव का जो विस्तृत विवरण दिया है, वह मानव-प्रकृति के लज्जा-सम्बन्धी आधारभूत तत्व के विरुद्ध है। उसकी कला चाहे कितनी उत्कृष्ट हो, वह पुस्तक को अश्लील घोषित किये जाने से बचा नही सकती।"

ब्रिटिश कानून के अनुसार अश्लील वह साहित्य है, जिससे उन लोगो का जिन पर अनैतिक प्रभाव पड़ सकता है और वे उसे पढ़ सकते है, मस्तिष्क कलुषित तथा भ्रष्ट होने की आशंका हो। अमरीका मे जब यह प्रश्न उठा कि उक्त पुस्तक अश्लील है या नही, तो पोस्टमास्टर जेनरल ने, जिन्हे अश्लील किताबो के डाक से जाने पर रोक लगाने का अधिकार है, उस पर रोक लगा दी। जब सर्वोच्च न्यायालय के सामने यह प्रश्न गया, तब उसने निर्णय किया कि लारेन्स के विचार किसी को बुरे लगें अथवा अच्छे, अमरीकी विधान उन्हें अपने विचारों की अभिव्यक्ति की छूट देता है।

मध्यम मार्ग

अमरीका में भी यह प्रश्न पूछा जाने लगा है कि जो

विधान नागरिकों तथा उनके बच्चो के मस्तिष्क की अनैतिक प्रभावो से रक्षा नही कर सकता, वह क्या दोषपूर्ण नही है। दूसरी ओर यह प्रश्न है कि क्या नागरिको तथा उनके बच्चो को अनैतिक प्रभाव से बचाने के नाम पर सरकार विचारों की अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता पर प्रहार नही कर सकती।

'लेडी चैटरलीज लवर' के बारे मे बम्बई के न्यायालय का जो उपर्युक्त निर्णय है, वह उन लोगो को आश्चर्य मे न डालेगा जो नयी दिल्ली के एक न्यायालय के इस निर्णय से परिचित है कि खजुराहो के चित्र अश्लील है।

विद्रोही फकीर

हिन्दुस्तान —

पिछले कुछ वर्षों से आर्य समाज के क्षेत्रो मे इस बात की चर्चा रही है कि १८५७ के स्वातन्त्र्य-युद्ध मे महर्षि दयानन्द क्या कर रहे थे? यद्यपि इस सम्बन्ध मे निश्चय पूर्वक कुछ नहीं कहा जा सकता तथापि यह निर्विवाद है कि महर्षि दयानन्द देश प्रेम की भावना से ओत-प्रोत थे। अम्बाले के श्री दीवान अलख धारी जी के एक लेख से जो समाचार पत्रो मे छपा है इस भावना पर उदात्त प्रकाश पड़ता है। उनके लेख का सार इस प्रकार है.—

ऋषि दयानन्द ने कलकत्ता में कुछ दिन भाषण दिए थे। कभी-कभी कलकत्ता के एक प्रमुख पादरी विशाल सभा की अध्यक्षता करते थे। वह ऋषि दयानन्द के इस्लाम और ईसाइयत के सम्बन्ध मे अगाध ज्ञान को देख कर विस्मित हो जाते थे। उन्हें इस बात पर आश्चर्य होता था कि अरबी और अंग्रेजी न जानते हुए भी उन धर्मों की इन्हे कितनी गहरी जानकारी है।

कलकत्ता के उस पादरी से तत्कालीन वाइसराय लार्ड नॉर्थब्रुक ने स्वामीजी की विलक्षण प्रतिभा की बात सुनकर उनसे मिलने की इच्छा प्रकट की। स्वामीजी ने उससे दुभाषिए के जरिए बातचीत की। इस बातचीत से ऋषि दयानन्द के हृदय की देशभक्ति पूर्ण प्रदीप्त भावना प्रकट होती है। लॉर्ड नार्थब्रुक ने इस बातचीत का विवरण इंडिया आफिस को भेजते हुए लिखा था कि सरकार को 'विद्रोही फकीर' पर सतर्कतापूर्ण दृष्टि रखनी चाहिए। इंडिया आफिस को भेजे गये विवरण के अनुसार यह बातचीत निम्न प्रकार हुई थी.—

वाइसराय—मुझे बताया गया है कि आप अन्य धर्मों पर जो कटु प्रहार करते है उनसे हिन्दुओ और मुसलमानों मे आप के प्रति विरोध भाव पैदा हो गया है। क्या आपको भय है कि आप पर कोई आक्रमण करेगे? विशेष रूप से मैं यह पूछना चाहता हूँ कि क्या आपको हमारी सरकार की ओर से किसी प्रकार के सरक्षण की आवश्यकता है?

ऋषि दयानन्द—मुझे इस राज्य मे अपने विश्वास के अनुसार प्रचार करने की पूरी स्वाधीनता है, मुझे अपने ऊपर किसी के द्वारा आक्रमण का किसी प्रकार का भय नही है।

वाइसराय—पडित दयानन्द, यदि ऐसी बात है तो क्या आप इस देश को ब्रिटिश शासन द्वारा दिए गए शाति और सुख के वरदान के सम्बन्ध मे अपनी प्रशंसा के कुछ उद्गार प्रकट करेगे और अपने उपदेशो के साथ की जाने वाली प्रार्थनाओं के समय भारत पर ब्रिटिश शासन की स्थिरता बने रहने की चर्चा करेगे?

दयानन्द—मैं किसी भी स्थिति मे इस प्रकार के प्रस्ताव को स्वीकार नही कर सकता, क्योकि यह मेरा दृढ विश्वास है कि मेरे देशवासियो के विकास के लिए और ससार के राष्ट्रो मे सम्मानपूर्ण स्थान प्राप्त करने के लिए भारतवर्ष शीघ्र ही पूर्ण स्वाधीनता प्राप्त करे।

"मैं प्रतिदिन प्रातः-साय भगवान से प्रार्थना करते हुए यह मांगता हूँ कि वह दयालु भगवान मेरे देश को विदेशी शासन से शीघ्र ही मुक्त करे।"

लार्ड नार्थब्रुक ने तो इस स्पष्ट और निर्भीक उत्तर की कतई कल्पना भी नही की थी। उसने एकदम

बातचीत समाप्त कर दी। इस बातचीत ने वायसराय के हृदय में सन्देह उत्पन्न कर दिया तभी उन्होंने सरकार को इस विद्रोही फकीर से सावधान रहने की सलाह दी।

आर्य महा सम्मेलन कासंक्षिप्त परिचय

दिल्ली में रामलीला मैदान में १६ से २१ मई तक नवम् आर्य महा सम्मेलन बड़े समारोह के साथ सम्पन्न हुआ। सम्मेलन में सारे देश के आर्य बन्धु पधारे थे। विदेशों के प्रतिनिधि भी उपस्थित थे। सम्मेलन के अध्यक्ष आर्यजगत् के ख्याति प्राप्त महा नेता, कर्मठ आर्य संन्यासी पूज्य श्री स्वामी ध्रुवानन्द जी महाराज थे। स्वागताध्यक्ष श्री पूज्य आनन्दस्वामी जी थे।

१६ मई को प्रातः एक बृहद यज्ञ हुआ। उसके बाद पूज्य आनन्द स्वामी जी महाराज ने ध्वजारोहण किया। इसके बाद आर्य प्रदर्शिनी का उद्घाटन श्री जगजीवनराम जी रेल मन्त्री ने किया। दोपहर को पं० प्रियव्रत जी वेद वाचस्पति के सभापतित्व में विद्वत सम्मेलन की पहली बैठक हुई। इस सम्मेलन का उद्घाटन श्री पं० बुद्धदेव जी विद्यालंकार ने किया।

शाम को विद्वत सम्मेलन की दूसरी बैठक श्री पं० द्विजेन्द्रनाथ जी शास्त्री के सभापतित्व में हुई। रात्रि को गो कृष्यादि रक्षा सम्मेलन श्री आचार्य भगवानदेव जी के सभापतित्व में हुआ।

१७ मई को प्रातः यज्ञ के पश्चात् महात्मा आनन्द भिक्षु का प्रवचन हुआ। ८ से ११ बजे तक श्री नरदेव स्नातक एम० पी० के सभापतित्व में आर्यकुमार सम्मेलन हुआ। सम्मेलन का उद्घाटन श्री पं० आनन्दप्रिय जी बड़ौदा ने किया था। पुनः ८ से १० तक विद्वत् सम्मेलन की तीसरी बैठक श्री डा० हरिदत्त जी शास्त्री एकादश-तीर्थ की अध्यक्षता में हुई। इसका उद्घाटन श्री आचार्य वैद्यनाथ जी शास्त्री ने किया। इसके पश्चात् विद्वत्सम्मेलन की चौथी बैठक पं० ईश्वरचन्द्र जी दर्शनाचार्य के सभापतित्व में हुई।

मध्याह्नोत्तर प्रमुख आर्यों का सम्मेलन श्री घनश्यामसिंह जी गुप्त के सभापतित्व में हुआ। सम्मेलन का उद्घाटन सार्वदेशिक सभा के प्रधान माननीय श्री बा० पूर्णचन्द्रजी एडवोकेट ने किया। इस सम्मेलन के संयोजक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री रघुवीरसिंह जी शास्त्री थे। रात्रि को खुले पण्डाल में व्याख्यान हुए। पहला व्याख्यान श्री० प्रो० सत्यव्रत जी सिद्धान्तालंकार गुरुकुल कांगड़ी का हुआ, विषय था वैदिक समाज व्यवस्था। दूसरा व्याख्यान श्री आचार्य वैद्यनाथ जी शास्त्री का हुआ, विषय वैदिक कर्म का वैज्ञानिक स्वरूप। तीसरा व्याख्यान श्री पं० बुद्धदेव जी विद्यालंकार का हुआ, आपका विषय था—समस्त ज्ञान का मूल स्रोत वेद। १८ तारीख को प्रातः यज्ञ के पश्चात् श्री स्वामी सत्यमुनि जी महाराज का प्रवचन हुआ।

८ से ११ बजे तक पंडाल में डा० गोवर्धनलाल दत्त उपकुलपति विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन के सभापतित्व में शिक्षा सम्मेलन हुआ। इस महत्त्वपूर्ण सम्मेलन का उद्घाटन केन्द्रीय शिक्षा मंत्री श्री कालूलाल जी श्रीमाली के करकमलों द्वारा हुआ। इसके साथ भी हाल में प्रमुख आर्यों का सम्मेलन भी हुआ। २॥ से ६ तक हाल में प्रमुख आर्यों का सम्मेलन हुआ। २॥ से ३ बजे तक आर्य महिला सम्मेलन श्रीमती सुशीला पंडित बड़ौदा की अध्यक्षता में हुआ। रात को पण्डाल में श्री आचार्य रामानन्द जी, प्रिंसीपल दीवानचन्द, श्री पं० रामचन्द्र जी देहलवी के व्याख्यान हुए।

१६ मई सन् १६६१ को

५ से ७ बजे तक यज्ञ तथा सामगान हुआ। ७ से ७॥ बजे तक आर्य जगत् के प्रसिद्ध कर्मकाण्डी श्री स्वामी ब्रह्मानन्द जी दण्डी एटा वालों का प्रवचन हुआ। ८से १२

तक विषय निर्धारिणी समिति की बैठक पण्डाल में हुई। ५ बजे से रात को ६ बजे तक शोभायात्रा (जुलूस) निकली।

दो मील लम्बी शोभा यात्रा
देश भर के आर्यसमाज शामिल

लगभग दो मील लम्बी शोभा यात्रा निकाली गयी, जो सम्मेलन स्थल से प्रारम्भ होकर लगभग पाँच मील लम्बे मार्ग से होती हुई पुन सम्मेलन स्थल पर पहुँची। इसमे सब से आगे ओ३म् का ध्वज लिए नवयुवक और बाद मे समस्त भारत के आर्यसमाजो के दल चल रहे थे। राजस्थान के आर्य समाज के महिला एव पुरुष दल के सदस्य केसरिया बाना पहने हुए थे।

आर्य समाज के प्रमुख नेता एक रथ पर और कुछ टुकडियो मे चल रहे थे। "हिन्दी भाषा अमर रहे" "स्वामी दयानन्द की जय" "भारत माता की जय" आदि नारे लगाये जा रहे थे। चारो और केसरिया ध्वज दिखाई दे रहे थे। सारा मार्ग तोरणद्वारों से सजाया गया था। अजमेरी द्वार के पास जलूस को काफी देर के लिए रुक जाना भी पड़ा।

२१ मई रविवार

आर्य सम्मेलन हुआ। इसके सभापति श्री स्वामी ध्रुवानन्द जी महाराज थे। प्रात ५ से ७ बजे तक यज्ञ तथा सामगान,, ७ से ११ तक खुला अधिवेशन हुआ। रात को खुला अधिवेशन होकर शाति पाठ के पश्चात् सम्मेलन समाप्त हुआ।

आर्य महिला सम्मेलन

स्वामी दयानन्द ने देश पर दो बडे उपकार किये थे। उन्हें आज भी नही भुलाया जा सकता। एक काम तो उन्होने स्त्रियो को शिक्षा देने तथा दूसरा काम स्वदेशी आन्दोलन का चलाया था।

ये शब्द श्रीमती इन्दिरा गाधी ने आर्यमहिला सम्मेलन द्वारा रामलीला मैदान मे आयोजित एक विराट सभा में भाषण करते हुए कहे।

स्वदेशी आन्दोलन

श्रीमती गाधी ने देश की उन्नति के लिए आज भी स्वदेशी आन्दोलन को प्रोत्साहन देने की आवश्यकता पर बल दिया।

देश की समृद्धि के लिए देश के उद्योगो को बढाना आवश्यक है।

स्वामी दयानन्द का कार्य तब तक चलाना चाहिए जब तक देश पूर्ण साक्षर नही हो जाय। केवल अक्षर ज्ञान को ही साक्षरता नही मानना चाहिए। स्त्रियाँ इस प्रकार की बनें कि वे समाज मे अपना पुरुष के बराबर स्थान बनाये।

नौकरी के लिए नहीं

केवल नौकरी करने के लिए ही पढना आवश्यक है, यह मानकर नही चलना चाहिए। स्त्रियाँ पढेंगी—लिखेंगी ताकि वे अपना घर-बार भली प्रकार संभाल सकेंगी और अपने बच्चो को शिक्षा-दीक्षा भली प्रकार दे सकेंगी।

भेद-भाव

श्रीमती गाधी ने लडके-लडकियो के भेद-भाव को दूर करके लडकियो को भी पूर्ण शिक्षा देने पर बल दिया।

हिन्दू-संस्कृति एवं सभ्यता की सराहना करते हुए उन्होने कहा कि इस सभ्यता मे सबकी उन्नति और सबके हितचिंतन पर बल दिया गया है। इसी आदर्श पर चलकर महिलाएँ समाज मे उन्नत स्थान प्राप्त करे।

सुशीला पडित का भाषण

श्रीमती सुशीला पडित, आचार्या कन्या गुरुकुल बडौदा ने इस सम्मेलन की अध्यक्षता की। उन्होने अपने भाषण मे स्त्रियो की शिक्षा पर बल दिया।

प्राचीन काल मे स्त्रियो के सम्मान तथा विशेष महत्व की चर्चा करते हुए श्रीमती सुशीला पडित ने स्त्रियो को दासी मात्र न बनने की सलाह दी।

श्रीमती रक्षा शरण ने अपने भाषण में कहा कि आज भी केवल १३ प्रतिशत स्त्रियाँ साक्षर हैं। स्त्री समाज मे

इस भयंकर निरक्षरता का निवारण करने के लिए जबरदस्त प्रयत्न होना चाहिए।

तृतीय पंचवर्षीय योजना मे सरकार ने ११ करोड रुपया स्त्री शिक्षा एवं शिक्षण संस्थाओं को अनुदान देने के लिए नियत किया है। स्त्रियाँ इस धनराशि का अपनी उन्नति मे उपयोग करे।

भारतीय परम्परा

सम्मेलन मे रहन-सहन वेशभूषा-खान-पान आदि मे भारतीय पद्धति अपनाने पर बल दिया गया।

इस कार्य के लिए स्त्री समाजो से बाल सभाओं का संगठन करके उनमे अच्छे संस्कार पैदा करने पर बल दिया गया।

एक ऐसा मजबूत आर्य महिला संगठन स्थापित करने पर भी एक प्रस्ताव मे बल दिया गया।

आर्य महिला सम्मेलन मे राष्ट्रभाषा हिन्दी के व्यवहार पर विशेष बल दिया गया।

युवक राष्ट्रद्रोही तत्त्वों के षड्यन्त्रों से सचेत रहें

आर्य कुमार सम्मेलन को चेतावनी

रामलीला मैदान मे आर्य कुमार सम्मेलन की अध्यक्षता संसद सदस्य श्री नरदेव स्नातक ने की एवं उद्घाटन बडौदा के सुप्रसिद्ध आर्य नेता पण्डित आनन्द प्रिय ने किया।

एक प्रस्ताव के द्वारा यह निश्चय किया गया है कि अखिल भारतीय आर्य कुमार परिषद को संगठित किया जाए और इसका कार्य संचालन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत हो। सभा से यह भी अनुरोध किया गया कि वह परिषद को अपने नियन्त्रण में लेकर कार्य आरम्भ कराए।

प्रस्ताव में कहा गया है कि वह भारत भर की आर्य समाजो को आदेश दे कि वह अपनी-अपनी शाखाओं के अन्तर्गत आर्य कुमार सभाएँ स्थापित करे जिससे नवयुवकों में विशुद्ध आर्य भावनाओं का जागरण हो और देश के प्रति अपने दायित्वो को भली भाति निबाह सकें। सरकार से भी मांग की गयी है कि उसने बालकों की भलाई के लिए जो कोष रखा है उसमें से कुछ अंश आर्य कुमार सभाओं को भी दिया जाए।

एक अन्य प्रस्ताव मे आर्य कुमार, नवयुवको तथा आर्य कुमारियों को चेतावनी दी गई कि वह देशद्रोही तत्वों के राष्ट्रघातक प्रचार के प्रभाव से पृथक् रहे और ईश्वर भक्त बन कर राष्ट्र के प्रति अपने कर्तव्यो को पूर्ण करे।

श्री धर्मेन्दु ने उपस्थित जनता का धन्यवाद दिया। पण्डित आनन्द प्रिय ने सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए कहा स्वामी दयानन्द ने हमे वेदो के द्वारा बताए मार्ग पर चलने का निर्देश दिया है। हमे वेदो का विश्व में प्रचार करना है। यही स्वामी दयानन्द का आदेश था। हमे युग गति के साथ ही चलना चाहिए।

आपने कहा कि आर्य कुमार सभाएँ देश में बन जाएँ तो वह आर्य समाज के कार्य को गति दे सकेंगी।

पण्डित आनन्द प्रिय ने युवको से यह भी अनुरोध किया कि वह असम और बंगाल मे स्वामी दयानन्द का सन्देश पहुचाएँ। × × ×

—०—

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा आर्यसमाज का सबसे बड़ा संगठन है। उसका पिछले ५० वर्षों का इतिहास त्याग, देश भक्ति और लोकसेवा का इतिहास है। वेद-प्रचार, वैदिक संस्कृति तथा वैदिक मन्तव्यों के प्रसार के साथ-साथ शिक्षा प्रसार, अस्पृश्यता तथा जात-पात का निवारण, महिला-कल्याण, राष्ट्र निर्माण तथा स्वाधीनता आंदोलन इन सभी क्षेत्रो मे आर्य समाज ने उल्लेखनीय कार्य किए हैं। सार्वदेशिक सभा के अन्तर्गत भारत वर्ष मे १२ प्रांतीय प्रतिनिधि सभाए, विदेशों मे स्थित ४ प्रतिनिधि सभाए तथा ४००० आर्य समाजे हैं।

इनकी सेवाओं पर इसी से अच्छा प्रकाश पड सकता है कि भारत, नेपाल, अफ्रीका व ट्रीनीडाड मे आर्य वीर दल की ५४० शाखाए हैं, जिनमे नवयुवक धर्म और व्यायाम की शिक्षा ग्रहण करते है।

है। उदाहरणार्थ १९१५ मे धौलपुर राज्य मे राज्य की ओर से आर्य समाज के दिन प्रतिदिन के कार्य मे जो बाधा उपस्थित की गई उसके खिलाफ जब अनुनय विनय सब बेकार रहे तो आर्य जगत् ने स्वामी श्रद्धानन्द के नेतृत्व मे बलिदान के मार्ग का आश्रय लिया और समस्या का सतोषजनक समाधान प्राप्त किया।

१९३९ मे हैदराबाद राज्य में आर्य समाज ने धार्मिक एवं नागरिक अधिकारो की रक्षा के लिए जो सुप्रसिद्ध सत्याग्रह किया और जिसकी गूंज लन्दन की पार्लियामेंट तक पहुची उसका भी इसी सभा ने सचालन किया। इस सत्याग्रह मे २५ वीर अमर पद को प्राप्त हुए और लगभग १२ हजार सत्याग्रहियो ने जेल यात्रा की। इस अभियान पर आर्य समाज का लगभग १० लाख रुपया व्यय हुआ। इस अग्नि परीक्षा में भी आर्य समाज सफल निकला।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के पचास वर्ष

२०० आर्यकुमार सभाएं, ३०० से अधिक कालेज, हाई स्कूल और २००० प्राथमिक विद्यालय, ६० गुरुकुल, २०० संस्कृत पाठशालाए, १२ से अधिक टैकनिकल सस्थाएं व अनेक अनाथालय तथा वनिताश्रम और गोशालाएं हैं। आर्य समाज की शिक्षा सस्थाओं मे २ लाख से अधिक छात्र शिक्षा प्राप्त कर रहे है, जिन पर प्रति वर्ष १ करोड़ रुपया खर्च होता है।

इनके अतिरिक्त आर्य समाज के ३०० वाचनालय, पुस्तकालय, प्रेस व पत्र-पत्रिकाए है। लगभग एक हजार सन्यासी, व्याख्याता तथा भजनोपदेशक प्रचार कार्यों मे लगे हुए हैं।

विविध आन्दोलन

अनेक महत्वपूर्ण समस्याओं तथा विषम परिस्थितियों मे इस सभा ने आर्य जगत् का समय-समय पर नेतृत्व किया

आर्य वीरो ने बडे-बडे कष्टो और यातनाओ को सहन करके तथा प्राणो की बाजी लगा कर इस सत्याग्रह की जिस ढ ग से पवित्रता स्थिर रखी थी उसे देख कर सत्याग्रह अस्त्र के आविष्कारक स्वय गाँधी जी भी बडे प्रभावित और प्रसन्न हुए थे।

१६४६ मे सिंध की मुस्लिम लीगी सरकार ने अपने प्रांत मे सत्यार्थ प्रकाश के १४वे समुल्लास पर प्रतिबन्ध लगाकर आर्य समाज को चुनौती दी थी उसका भी सार्वदेशिक सभा ने सफलतापूर्वक सामना किया और विजय प्राप्त की।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात १६५७ मे पजाब मे हिंदी ाठन-पाठन और राजकीय कार्यो मे उसके प्रयोग की स्वतंत्रता की रक्षा के लिए सरकार के अनुचित निर्णय के वरुद्ध आर्य समाज को कष्ट सहिष्णुता का मार्ग अपनाना डा। इस आंदोलन का संचालन भी इस सभा ने ही किया। ाभी तक समस्या के समाधान का यत्न किया जा रहा है ौर यदि समस्या का सन्तोषजनक समाधान न हुआ तो ार्य समाज को पुनः कर्तव्य मार्ग निर्धारित करना ड़ेगा।

१६२५ मे इस सभा के तत्वावधान मे मथुरा मे र्षि दयानन्द की जन्म शताब्दी महोत्सव मनाया गया समें देश और विदेश के लगभग ४ लाख व्यक्ति सम्मित हुए थे।

१६३३ मे अजमेर मे दयानन्द निर्वाण अर्द्ध शताब्दी ोत्सव मनाया गया। इस महोत्सव मे भी लगभग १॥ ख व्यक्ति सम्मिलित हुए थे।

१६६० में मथुरा मे दयानन्द दीक्षा शताब्दी महोत्सव या गया। इस अवसर पर देश-विदेश के लग- २ लाख व्यक्तियों ने एकत्र होकर महर्षि के चरणो मे ी श्रद्धांजलि प्रस्तुत की। इसी अवसर पर राष्ट्रपति ारजानन्द वैदिक अनुसंधान भवन का उद्‌घाटन किया।

अन्य गतिविधियाँ

स्वतन्त्रता प्राप्ति से पूर्व श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज के महान् बलिदान के पश्चात् ब्रिटिश नौकरशाही और मुस्लिम साम्प्रदायिकता के कुत्सित गठबधन से आर्य समाज के लिए बडा भीषण समय उपस्थित हो गया था। आर्य समाज के अनेक चुने हुए कार्यकर्ता एक-एक करके मारे जाने लगे थे। यहाँ तक कि आर्य समाज का अस्तित्व भी सकट मे पड गया था। इन सब बाधाओ के निराकरणार्थ समस्त आर्य जगत को साथ रखने के इस उद्देश्य से इस सभा ने १६२७ मे दिल्ली मे प्रथम आर्य महासम्मेलन का आयोजन किया उसके पश्चात अब तक इन महासम्मेलन के आठ अधिवेशन हो चुके है और नौवाँ अधिवेशन सभा के स्वर्ण जयन्ती महोत्सव के उपलक्ष मे २० और २१ मई को दिल्ली मे हुआ है। ये महासम्मेलन प्राय. विशेष समस्याओ के उपस्थित होने पर ही होते है। प्रसन्नता है प्रत्येक सम्मेलन का उद्देश्य सफल रहा।

धर्म व संस्कृति की रक्षा

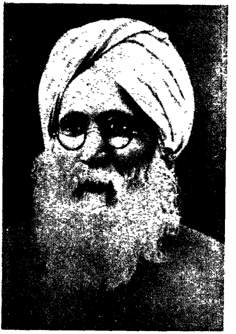
गोरक्षा के आदोलन का सूत्रपात भी महर्षि दयानन्द ने ही किया और आर्य समाज सतत प्रयत्नशील रहा है कि स्वतन्त्र भारत मे गोवध निषिद्ध हो तथा गोरक्षा का कार्य अग्रसर हो।

ईसाईयो की राष्ट्र धर्म एव संस्कृति विरोधिनी आपत्तिजनक प्रगतियो के निराकरणार्थ भी यह सभा प्रयत्नशील है। धन और प्रचारकों आदि के प्रचुर साधनो से सम्पन्न विदेशी ईसाई मिशन की प्रगतियो के निराकरण का कार्य सरल नहीं है फिर भी सभा अपने परिमित साधनो के अनुरूप छोटा नागपुर, बाँसबाडा, उडीसा, नेपाल आदि क्षेत्रों मे कार्य कर रही हैं। अनेक कार्यकर्ता वन पर्वतीय क्षेत्रो तथा जातियों मे काम कर रहे हैं। हजारो व्यक्ति हिन्दू धर्म में वापस आ गए हैं और हजारों ही

(शेष पृष्ठ १८१ पर)

आर्य महासम्मेलनों के अध्यक्ष

श्री महात्मा हंसराज जी



महात्मा हंसराज जी का जन्म जिला होशियारपुर अन्तर्गत बजवाडा ग्राम में १९ अप्रैल १८६४ को हुआ था। १६ वर्ष की आयु में गवर्नमेंट हाईस्कूल लाहौर से मैट्रिक करके कालेज में प्रविष्ट हुए और १८८४ में बी० ए० पास किया। १८८५ ई० में डी० ए० वी० हाई स्कूल की लाहौर में स्थापना हुई। लाला हंसराज जी उसके अवैतनिक हैडमास्टर बनाए गए। २ वर्ष बाद ही यह स्कूल उन्नत होकर कालेज बन गया। लाला जी इसके प्रिंसिपल नियुक्त हुए। १८८६ से १९११ तक २५ वर्ष पर्यन्त कालेज की निष्काम भाव से अवैतनिक सेवा करके और उसे न केवल पंजाब का ही अपितु समस्त भारत का मूर्धन्य कालेज बनाकर उसकी सक्रिय सेवा से स्वयं मुक्त हो गए। पंजाब में आर्य समाज के हाई स्कूलों और कालेजों का इस समय जो जाल बिछा हुआ देख पड़ता है, मुख्यतः उसका प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष श्रेय श्री महात्मा हंसराज जी को प्राप्त है। जब वह लाहौर में डी० ए० वी० हाई स्कूल के हैडमास्टर बनाए गए थे तब गवर्नमेन्ट हाई स्कूल के अंग्रेज हैडमास्टर ने व्यंग

पूर्वक कहा था, "यह मूर्ख पगडी वाला लड़का क्या हाई स्कूल चला सकेगा ?" परन्तु लाला जी ने अपनी योग्यता, प्रबन्धपटुता और कार्यकुशलता का परिचय देकर उनकी भ्रांति को निर्मूल कर दिया। इसके पश्चात् तो देश ने उन्हे आधुनिक पंजाब का निर्माता और उच्चकोटि का शिक्षा-शास्त्री कह कर उन्हे उनकी स्मृति को सम्मानित किया। वस्तुतः महात्मा जी एक बहुत ऊंची हस्ती थे।

स्कूल के दिनों में उन्हें श्री पं० गुरुदत्त जी और श्री लाला लाजपतराय जी का सहवास प्राप्त हुआ। आर्य समाज की ओर आकृष्ट हो जाने पर आर्य समाज लाहौर के १८वें वार्षिकोत्सव पर उन्होंने अपने इस महान् व्रत की घोषणा की थी "मैं अपना समस्त जीवन आर्य समाज की वेदी पर अर्पित करता हूँ।" महात्मा जी ने आजन्म इस व्रत को निबाहा और बड़ी शान से निबाहा। इसके लिए लाला जी को बहुत त्याग करना पडा। अनेक कष्ट सहन करने पड़े, परन्तु उन्होने अपने त्याग और बलिदान की जो परम्परा कायम की, वह बेजोड है। उसने अनेक लोगो को प्रकाश दिया और प्रेरणा दी। उनका जीवन अत्यन्त सादा और अनुकरणीय रहा।



महात्मा हंसराज जी आर्य समाज के एक प्रमुख स्तम्भ थे। आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के संस्थापक और निर्माता थे। कालेज विभाग के आर्य समाजो का संचालन सूत्र जीवन-पर्यन्त उनके सुदृढ हाथो मे रहा। मलकानो की शुद्धि, गढवाल, बीकानेर के अकाल पीडितो की सहायता, कागडा, क्वेटा और बिहार के भूकम्प-पीडितों की सेवा, मलाबार मे मुस्लिम आततायियो से पीडित और आतंकित हिंदुओ की रक्षा आदि उनके कार्य सदैव स्मरणीय रहेगे। उन्होने आर्यों के लिए ५ संस्कारो (संध्या, स्वाध्याय, साप्ताहिक सत्संग मे उपस्थिति, सेवा और सुदान) की व्यवस्था की। उन्होने महर्षि दयानन्द की अंग्रेजी जीवनी और धर्म-शिक्षा आदि की कई उत्तम पुस्तके प्रदान की।

वे जीवन-पर्यन्त प्रकाश प्रदान करते रहे और अन्त मे १५-११-१९३८ को महान् प्रकाश मे विलीन हो गए।

श्री महात्मा नारायण स्वामी जी

महात्मा नारायण स्वामी जी आर्य समाज के उच्चकोटि के नेताओं में से थे।

सम्वत् १९२२ की माघ शुक्ल पंचमी को अलीगढ़ (उत्तर प्रदेश) में उनका जन्म हुआ।

उनकी स्कूलीय शिक्षा नाममात्र हुई थी क्योंकि १८८६ मे पिता के आकस्मिक देहान्त के कारण वे स्कूल छोडने और परिवार के भरणपोषण के लिए किसी धन्धे मे लग जाने के लिए विवश हो गए थे। मुरादाबाद की कलक्टरी मे पेशकार की जगह मिली।

सत्यार्थप्रकाश और आर्य समाज के दस नियमो के अध्ययन आदि से वे आर्य समाज की ओर आकृष्ट हुए और वैयक्तिक जीवन को ऊंचा उठाने वाले कुछ नियमो और आदर्शों पर चलने का अभ्यास करके आर्य समाज के सदस्य बने और तन, मन, धन से आर्य समाज की सेवा की। उन्होने अपने उच्च-चरित्र और सेवा-कार्य से आर्य समाज को खूब चमकाया। सरकारी क्षेत्रो मे, क्या मित्र और क्या विरोधी, उनकी ईमानदारी की मुक्त कठ से प्रशंसा करते थे। उन्होने रिश्वत के पैसे को हाथ न लगाया। मुरादाबाद के कलक्टर ने उनकी कार्य-कुशलता की प्रशसा करते हुए लिखा था He has a remarkable reputation for honesty. अर्थात् वे ईमानदारी के लिए बहुत प्रसिद्ध हैं।

मुरादाबाद मे आर्य समाज का भवन-निर्माण तथा कई सस्थाओं की स्थापना एव उनका कार्य-सचालन करते हुए आर्य समाज के प्रति अपनी सेवाओ का क्षेत्र विस्तृत करते रहे। वहा से आर्यप्रतिनिधि सभा सयुक्त प्रान्त मे पहुच कर और उसके उच्चतम पदो पर रह कर उसकी स्थिति को सुदृढ किया। १८६७ मे उसकी नियमित रजिस्ट्री कराई। वर्षों पर्यन्त उसका कार्यालय अपने घर पर रखा। मुहरिक अखबार उर्दू मे निकलवाया, जो बाद में "हिन्दी मे आर्यमित्र" के नाम से आरम्भ हुआ और अब तक आर्य जगत् का प्रमुख साप्ताहिक बना हुआ है।

१६१२ में गुरुकुल वृन्दावन का कार्य-संचालन हाथ में ले लेने पर सरकारी नौकरी कार्य में बाधक प्रतीत हुई। उन्होंने नौकरी छोड़ दी। वह भी उस समय जब उनकी उन्नति तहसीलदार के पद पर होने वाली थी। इतना ही नही, पेन्शन के अधिकार को भी तिलांजलि दे दी। मित्रो ने इनवेलिड कह कर पेन्शन प्राप्त कर लेने की सलाह दी। यह सलाह रुचिकर प्रतीत न हुई। लगभग १० वर्ष तक गुरुकुल की सेवा करके और उसे राज-मार्ग पर डाल कर सन्यास लेने की तैयारी प्रारम्भ कर दी।

१६२० मे संन्यास ग्रहण किया और नैनीताल के निकट रामगढ के एकान्त पहाडी स्थान पर मुख्यत वर्षा ऋतु मे स्वाध्याय और साधना के निमित्त कुटिया बना ली।

सार्वदेशिक सभा के साथ उनका सम्बन्ध जीवन के अवसान तक बना रहा, कभी मन्त्री के रूप मे, कभी प्रधान के रूप मे। सभा को इस समय जा उन्नत और मूर्घन्य स्थान प्राप्त है, उसका बहुत बडा श्रेय श्री स्वामी जी को प्राप्त है। लगभग २० वर्ष तक आर्य समाज का भाग्य निर्माण उन्ही के हाथो मे रहा।

१६२५ मे मथुरा-शताब्दी का प्रबन्ध-भार सभा द्वारा उन्हें सौंपा गया। इसके सुप्रबन्ध से श्री स्वामी जी की प्रबन्ध-शक्ति और कार्य-कुशलता का मथुरा मे एकत्र हुए लगभग ४ लाख आर्य नर-नारियों का भव्य परिचय मिला। ४ लाख की भीड का बिना पुलिस की सहायता के प्रबन्ध करना और किसी दुर्घटना वा शिकायत का अवसर उपस्थित न होना साधारण बात न थी। मथुरा में एकत्र देश-विदेश के आर्य नर-नारियो ने उन्हे उसी समय अपना भावी नेता चुन लिया था।

आर्य समाज पर जब-जब आपत्ति आई, उसके निराकरण के लिए आर्य जगत् की दृष्टि उन पर गई। भले ही उस समय वह सभा के प्रधान थे या नही। इस प्रकार सभा मे वा उससे बाहर रहते हुए आर्य जगत् का नेतृत्व उनके हाथ मे सुरक्षित रहा।

हैदराबाद राज्य मे जब राज्याश्रय प्राप्त मुस्लिम कट्टरता ने आर्य समाज का अस्तित्व समाप्त करने का दुष्प्रयास किया, चुने हुए निरपराध कार्यकर्ताओं को

पीडित, आतंकित करने, और उन्हे जेल मे डालने वा मारने का चक्र चला, जब आर्य समाज के जलूस, जल्से और व्याख्यान आदि रोके जाने लगे, उनके निराकरणार्थ सभा के निरन्तर ६ वर्ष के प्रयत्नो का कोई फल न निकला और जब आर्य समाज धर्म तथा अपने अधिकारो की रक्षा के लिए १९३९ मे बलिदान का मार्ग अपनाने के लिए विवश हो गया तब उस धर्म युद्ध का नेतृत्व उन्होने अपने हाथो मे लिया । स्वामी जी के नेतृत्व मे आर्य समाज इस अग्नि-परीक्षण मे कुन्दन बन कर निकला । १९४७ मे सिंध की मुस्लिमलीगी सरकार ने सत्यार्थप्रकाश के १४ वे समुल्लास पर अत्यन्त अवांछनीय प्रतिबन्ध लगा कर आर्य समाज को चुनौती दी । जब सभा की प्रार्थनाओ और लिखा-पढी पर कोई ध्यान न दिया गया और जब बलिदान के मार्ग का आश्रय लेने के अतिरिक्त दूसरा मार्ग न रहा तब स्वामी जी ने सत्याग्रह की घोषणा कर दी और अपने साथ आर्य समाज पर मिटने वाले स्वामी अभेदानन्द जी, श्री राजगुरु धुरेन्द्र जी शास्त्री, (स्वामी ध्रुवानन्द जी), श्री महात्मा खुशहालचन्द जी, (आनन्द स्वामी जी) श्री कुंवर चादकरण जी शारदा (म० चन्द्रानन्द) तथा श्री प० लक्ष्मीदत्त दीक्षित को लेकर कराची जा बैठे। यद्यपि वे उन दिनो अस्वस्थ थे । परमात्मा की कृपा से इस अभियान मे भी आर्य समाज की विजय हुई ।

श्री स्वामी जी बडे स्वाध्यायशील थे । उन्होने आत्म-दर्शन, मृत्युपरलोक, और उपनिषदो की टीकाएं आदि-आदि प्रचुर और मूल्यवान साहित्य प्रदान किया, जो अत्यन्त लोकप्रिय है । उनके व्याख्यानों और प्रवचनो को छोटे-बडे शिक्षित और अशिक्षित सभी बडे चाव और श्रद्धा से सुनते और प्रभावित होते थे ।

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश ने उनकी स्मृति के सम्मानस्वरूप अपने भवन का नाम "नारायण स्वामी भवन" रखा और रामगढ की आर्य-हिन्दू जनता ने उनके नाम पर एक हाई स्कूल खोला हुआ है ।

उन्होने अपने उदाहरण से यह दिखाया कि थोडी सी शिक्षा और साधारण स्थिति का व्यक्ति स्वाध्याय, चरित्रबल, समाज-सेवा और परिश्रम से ऊंची से ऊंची स्थिति प्राप्त कर सकता और समाज का अमित हित कर सकता है ।

अक्तूबर १९४७ मे केसर रोग से बरेली मे उनका देहान्त हुआ ।

श्री आचार्य रामदेव जी

आचार्य रामदेव जी का जन्म ३१ जुलाई १८८१ ई० को ग्राम बजवाडा (होशियारपुर) मे हुआ था । बचपन



का नाम रामदास था। महात्मा हसराज जी का जन्म-स्थान भी यही ग्राम था। वे आचार्य रामदेव जी के मौसेरे भाई थे। एफ० ए० तक की शिक्षा डी० ए० वी० कालेज लाहौर में प्राप्त की फिर प्राइवेट रूप से बी० ए० की परीक्षा पास की। कुछ समय तक आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के अग्रेजी मुख-पत्र 'आर्य पत्रिका' के सम्पादकीय विभाग में काम किया। तत्पश्चात् जालन्धर छावनी के विक्टर हाई स्कूल मे हैड मास्टरी की। १६०५ मे ट्रेनिग कालेज लाहौर से ट्रेन्ड हुए और जीद राज्य मे स्कूलो के इन्स्पैक्टर नियत हुए। इस स्थान का चार्ज लेने से दो दिन पूर्व ही महात्मा मुन्शीराम जी का तार पाकर उनसे मिलने गुरुकुल कागडी गए और महात्मा जी के अनुरोध पर गुरुकुल कागडी को जीवनदान करके गुरुकुल के ही हो गए।

१६१७ मे महात्मा मुन्शीराम जी सन्यास लेकर गुरुकुल से चले गए और आचार्य का कार्य इन्होने सभाला। अनेक वर्षों तक गुरुकुल के आचार्य और मुख्याधिष्ठाता दोनो का दायित्व भी निभाया। गुरुकुल कन्या देहरादून की स्थापना कराई और १६२५ से १६३६ तक अर्थात् निधन काल तक वही रहे। १६३५ मे आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के प्रधान चुने गए और सभा के अर्द्ध-शताब्दी महोत्सव का सफल प्रबन्ध किया। कई वर्षों तक सार्वदेशिक सभा के उपप्रधान रहे। गुरुकुल कांगड़ी के आधुनिक स्वरूप मे आचार्य जी का प्रमुखतम हाथ रहा।

श्री आचार्य जी हिन्दी और अग्रेजी के प्रौढ़ लेखक, वक्ता और विद्वान् थे। उनकी टक्कर का व्याख्याता और विद्वान् विरला ही होगा। देश और विदेश के विद्वानो में उनका उच्च स्थान था। उन की अग्रेजी मासिक पत्रिका "वैदिक मेगजीन" ने देश और विदेश के अनेक विद्वानों को आर्य समाज और उसके सिद्धान्तो की ओर आकृष्ट किया था। उनके लेखो और प्रयत्नो से आर्य समाज के बाहर के विद्वानो मे आर्य समाज और उसके सिद्धान्तो के विषय मे व्याप्त भ्रान्तियाँ दूर हुई थी।

गुरुकुल कागडी और कन्या गुरुकुल देहरादून के शैक्षणिक और आर्थिक स्तर की उच्चता के लिए अपने स्वास्थ्य और परिवार के हितो के बलिदान पर भी कोई प्रयत्न उठा न रखा था। राजनैतिक क्षेत्र मे भी कार्य किया, जेल गए, परन्तु आर्य समाज औ रगुरुकुल ही उनकी प्रगतियो के मुख्य केन्द्र रहे। वह आर्य समाज के सिद्धान्तो पर दृढ रहते और उनके विषय मे किसी समझौते के लिए तैयार न होते थे। दिसम्बर १६३६ मे कन्या गुरुकुल देहरादून मे उनका देहान्त हुआ।

श्री हरि माधव अणे

अणे, माधव श्री हरि—बी० ए० एल० एल० बी०



मराठी और संस्कृत के गम्भीर विद्वान्, कांग्रेस के पुराने नेता, कुशल धाराशास्त्री, सम्प्रति लोक सभा के सदस्य हैं।

२६ अगस्त सन् १८८० ई० को बरार अन्तर्गत यवतमाल जिले के वणो नामक स्थान मे जन्म हुआ।

चादा और नागपुर मे शिक्षा हुई। बी० ए० एल० एल० बी० करने के बाद १६०७ मे यवतमाल मे वकालत आरम्भ की। इसके साथ ही सार्वजनिक कार्यों मे भी योगदान करना आरम्भ किया। होमरूल आन्दोलन में प्राणपण से योगदान किया और यवतमाल जिले मे सभी जिलो की अपेक्षा अधिक सदस्य बनाए। तिलक और केलकर जब शिष्ट मडल लेकर इंग्लैंड जाने लगे तो केसरी और होमरूल लीग का उत्तरदायित्व स्वीकार करने के लिए इन से विनती की थी इसी मे यह पता चलता है कि वे स्व० तिलक के कितने विश्वस्त साथी थे।

लोकमान्य तिलक द्वारा स्थापित कांग्रेस डिमोक्रेटिक पार्टी ने माटफोर्ड-शासन-सुधार को कार्यान्वित करने, लडाई की पूर्व तैयारी के रूप मे देश मे मजदूरो और मतदाताओ के सघ गठित करने और किसानो का सगठन करने का निश्चय किया। विदेशो मे सहानुभूति प्राप्त करने की व्यवस्था की गई। लेकिन इसी बीच लोकमान्य तिलक चल बसे। १ अगस्त, १६२० को कलकत्ते मे कांग्रेस का विशेष अधिवेशन हुआ, जिसने तिलक पक्ष के विरोध के बावजूद भी सरकार के साथ असहयोग करने का प्रस्ताव बहुमत से पास किया।

श्री अणे असहयोग के विरुद्ध थे यद्यपि आपने असहयोग के प्रति विरोध प्रदर्शित किया फिर भी खादी-प्रचार, मद्यपान-निषेध आदि रचनात्मक कार्य-क्रम के प्रति सहमति प्रदर्शित कर अपने मित्रो के सहयोग से उक्त कार्यक्रम के प्रचार के लिए जोरो से आन्दोलन शुरू किया और वकालत त्याग दी।

१६२६ में लाहौर कांग्रेस अधिवेशन मे पूर्ण स्वतन्त्रता के ध्येय की घोषणा की गई। कांग्रेस अध्यक्ष पं० नेहरू ने आदेश दिया कि कांग्रेस पदाधिकारीधारा-सभाओं से इस्तीफे दे दें। श्री अणे को उक्त आदेश नहीं जंचा। उन्होंने विदर्भ प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष पद और आल इंडिया कांग्रेस कमेटी की सदस्यता से इस्तीफा दे दिया। लेकिन जब महात्मा गान्धी ने दण्डी यात्रा आरम्भ की तो आपने असेम्बली की सदस्यता से इस्तीफा दे दिया और कांग्रेस की युद्ध-परिषद मे शामिल हुए।

नमक-सत्याग्रह के समय उन्होंने इस कारण जंगल सत्याग्रह की कल्पना की थी कि बरार से समुद्र निकट नही था और जब्त साहित्य पढ़ने मात्र से सरकार पर कुछ भी चोट न पडती। प्रान्त भर मे जगल सत्याग्रह का प्रचार किया और जगल कमेटियो का जाल बिछा दिया। १० जुलाई १६३० को पुसद गाव से ८ मील की दूरी पर सरकारी जगल मे वृक्ष काट कर कानून को भग किया। चोरी के जुर्म मे आपको ६ महीने की सजा मिली। इस नवीन ढंग से कानून भग करने के लिए कांग्रेस वकिंग कमेटी ने उनका अभिनन्दन किया। यही नही भारत भर मे सत्याग्रह की इस नई प्रणाली के अवलम्बन के लिए उन्हे वाहवाही मिली। आप कांग्रेस वकिंग कमेटी मे लिए गए। बगाल मे कांग्रेस निर्वाचन का निर्णय देने के लिए उभय पक्षो ने इन को पंच माना। गान्धी—इर्विन सधि की बातचीत के समय परामर्श के लिए इन्हे दिल्ली बुलाया गया और १६३३ मे यह कांग्रेस अध्यक्ष पद पर बिठाए गए।

असहयोग के समय कांग्रेस की धारणा का विरोध करते हुए भी वैयक्तिक दृष्टि से इन्होंने उसके (कांग्रेस के) सभी आदेशो का सम्यकरूपेण पालन किया। पहले आज्ञा पालन और बाद मे विरोध—आप की नीति रही है। केवल साम्प्रदायिक निर्णय के विषय में प्रारम्भ से ही कांग्रेस की धारणा का विरोध किया और साम्प्रदायिक निर्णय के सम्बन्ध मे कांग्रेस की धारणा का प्रबल विरोध करने के लिए कांग्रेस नेशनलिस्ट पार्टी की स्थापना

की। इस मामले मे प० मालवीय इनके सहकारी थे। इन्होंने चुनाव मे कॉंग्रेस के उम्मीदवारो के विरोध मे अपने पक्ष के उम्मीदवारो को भी खडा किया। बाद मे जब पडित जवाहरलाल नेहरू जेल से छूट कर बाहर आए और उन्होने असदिग्ध शब्दो मे साम्प्रदायिक निर्णय का विरोध किया तो यह प्रकरण समाप्त हुआ।

१९४१ मे ये वायसराय की शासन-परिषद के सदस्य चुने गए थे। लेकिन जब महात्मा गान्धी ने आगाखा पैलेस मे २१ दिन का उपवास किया तो तुरन्त शासन-परिषद से इस्तीफा दे दिया। १९४३ मे ये सीलोन मे भारत सरकार के एजेन्ट नियुक्त किए गए।

इनके भाषण पाण्डित्यपूर्ण होते हैं। इनके कठ से शब्द नही निकलते, वरन् उत्कृष्ट साहित्य निकलता है जो निस्सदेह सस्कृत ग्रन्थो के मथन से उद्गारित रत्नो से मडित रहता है। आप स्वतन्त्र विचारों के महान् राजनीतिज्ञ हैं और अपने विचार डके की चोट प्रकट करने मे कभी भी सकोच नही करते।

जुलाई १९४० से जनवरी १९४८ तक भारत की विधान निर्मात्री परिषद के सदस्य रहे। १२ जनवरी १९४८ को बिहार के गवर्नर नियुक्त किए गए।

महाराष्ट्र सदा से प्राचीनता का पुजारी रहा है। वेदादि सच्छास्त्रो मे उसकी अगाध श्रद्धा रही है। आर्य समाज जैसी सस्था मे इस प्रकार के बुद्धिजीवी वर्ग की रुचि होना सवभाविक था। फिर मोपला विद्रोह आदि के अवसर पर दक्षिण के जन-साधारण की जो सेवा आर्य समाज ने की, उसके परिणामस्वरूप आर्य समाज असहाय एवं दलितों के प्रहरी एव रक्षक के रूप मे प्रसिद्ध हो गया। अणे स्वयं लोकमान्य थे। वे आर्य समाज जैसी लोकसेवी संस्था से कैसे दूर रह सकते थे जब सार्वदेशिक सभा ने इन से शोलापुर काग्रेस का अध्यक्ष पद स्वीकार करने की प्रार्थना की तो इन्होने उसे सहर्ष स्वीकार कर अपने हृदय की विशालता का भव्य परिचय दिया था। वस्तुत सभा का यह चुनाव बडा हितकारी सिद्ध हुआ। उनकी प्रतिभा और प्रभाव से हैदराबाद सत्याग्रह मे बहुत बडी प्रेरणा और शक्ति मिली।

श्री डा० श्यामाप्रसाद मुखर्जी

डा० श्यामाप्रसाद मुखर्जी बगाल के चोटी के नेताओं मे से एक थे। बडे विद्वान् और निस्पृह जन-सेवक थे। उनका व्यक्तित्व बहुत ऊचा था। देश के बहुत अच्छे वक्ताओ मे उनकी गणना होती थी। हिन्दू धर्म और



सभ्यता के अनन्य प्रेमी थे। कांग्रेस को उन्होंने अपने लिए उपयुक्त इसलिए नहीं पाया कि वह हिन्दू-हितों की उपेक्षा करती और मुसलमानों एवं पाकिस्तान को खुश करने की नीति का अवलम्बन करती है। वे हिन्दू महासभा के प्रमुख नेता और जनसंघ नामक नई राजनीतिक पार्टी के जन्मदाता थे।

स्व० डा० श्यामा प्रसाद जी प्रकांड शिक्षा-शास्त्री स्व० श्री आशुतोष मुकर्जी के सुपुत्र थे। पिता के समान ही यशस्वी रहे। जुलाई १९०१ में कलकत्ता में जन्म हुआ। एम०ए० बी० एल० परीक्षाएं पास करके इंग्लैंड गए और वहाँ से बैरिस्टर बनकर १९२७ में भारत लौटे। कलकत्ता हाई कोर्ट में प्रैक्टिस प्रारंभ की और अल्पकाल में ही सफल बैरिस्टर सिद्ध हुए। बंगाल धारा सभा के सदस्य निर्वाचित होने पर सार्वजनिक कार्यों में भाग लेना आरंभ किया। १९३४ से १९३८ तक कलकत्ता विश्व विद्यालय के उपकुलपति और १९४१ से १९४२ तक बंगाल सरकार के अर्थ मंत्री रहे। १९४६ के आम चुनाव में केन्द्रिय धारा सभा के निर्विरोध सदस्य चुने गए। भारतीय गणराज्य के मंत्री भी रहे। १९५२ के आम चुनाव में कांग्रेसी उम्मीदवार को हजारों वोटों से हराकर भारतीय लोक सभा के सदस्य चुन लिए जाने पर यह सिद्ध हो गया था कि बंगाल में उन्हें बड़ी लोकप्रियता प्राप्त थी।

काश्मीर में हिन्दू हितों की रक्षार्थ सत्याग्रह करके जेल गए और वहीं संदिग्ध परिस्थितियों में उनका देहान्त हुआ।

निस्सन्देह वह उच्चकोटि के देश-भक्त थे। जन-सेवा के लिए उन्होंने बड़ा त्याग किया था।

देश की स्वाधीनता, शिक्षा-प्रसार, समाज-सुधार एवं प्राचीन संस्कृति के पुनरुद्धार के लिए किए गये आर्य समाज के महान् कार्य से वे अत्यन्त प्रभावित थे। यही कारण था कि वे आर्य समाजी न होते हुए भी आर्य समाज के न केवल प्रशंसक ही रहे अपितु आवश्यकता पड़ने पर उसके कार्यों में हाथ भी बटाते रहे।

श्रीयुत घनश्याम सिंह जी गुप्त

श्रीयुत गुप्त जी राजनैतिक और आर्य सामाजिक दोनों ही क्षेत्रों में बड़े प्रसिद्ध और लोक प्रिय हैं। दोनों क्षेत्रों में उनकी सेवाएं अत्यधिक मूल्यवान् रही हैं।

श्री गुप्त जी का जन्म २२ दिसम्बर सन् १८८५ई० में दुर्ग (मध्य प्रदेश) में हुआ। ये जमीदारी उन्मूलन के पूर्व मालगुजार थे। श्री गुप्त जी अपनी सेवाओं के लिए समस्त मध्य प्रदेश प्रान्त और भारत में प्रसिद्ध



हैं। वह १९२५ से १९२८ तक दुर्ग की नगरपालिका कमेटी के प्रधान, १९३१ से १९३४ तक डिस्ट्रिक्ट-कौंसिल दुर्ग के चेयरमैन, कुछ वर्षों तक दुर्ग कोआप॰ रेटिव कौंसिल के चेयरमैन, १९२३-२६ तक मध्य प्रदेश लैजिस्लेटिव कौंसिल के सदस्य, १९२६ से १९२६ तक मध्य प्रदेश लैजिस्लेटिव कौंसिल मे कांग्रेस पार्टी और विरोधी पक्ष के नेता, १९३१ से १९३६ तक आल इन्डिया कांग्रेस कमेटी के सदस्य, १९३४ से १९३७ तक केन्द्रिय धारा सभा के सदस्य तथा १९३७ से १९५२ तक मध्य प्रदेश की धारा सभा के अध्यक्ष रहे। उनकी निष्पक्षता, न्याय-प्रियता और सनुलित वाणी की सर्वदा प्रशसा हुई है।

भारत के सविधान की हिंदी अनुवाद समिति के अध्यक्ष रहे। सवैधानिक और कानूनी शब्दावली के हिन्दी पर्याय बनाने का कार्य भी उनके सुपुर्द रहा। मध्य प्रदेश राज्य सरकार ने उप प्रदेश मे ईसाई पादरियो की गतिविधि का निरीक्षण करके रिपोर्ट देने के लिए श्रीयुत् नियोगी जी की अध्यक्षता मे जो कमेटी बनाई थीत गुप्त जी उसके भी सक्रिय सदस्य थे।

श्री गुप्त जी का आर्य समाज के साथ बचपन से ही गहरा सम्बन्ध है। वह प्रारम्भ में १९०८ से १९१० तक गुरुकुल कागडी मे गणित और विज्ञान के प्राध्यापक रहे। उसके पश्चात् दुर्ग मे वकालत की। वे किसी भी क्षेत्र मे रहे आर्य समाज को सर्वोपरि रखते हैं। १९११ मे जातपात को तोड़कर विवाह करने मे उन्होने एक अच्छा उदाहरण प्रस्तुत किया था।

श्री गुप्त जी वर्षों पर्यन्त सार्वदेशिक सभा के सदस्य, उपप्रधान और प्रधान रहे। केन्द्रीय धारा सभा में आर्य-विवाह-ऐक्ट को पारित कराने मे उन्होने जो यत्न और परिश्रम किया और इस प्रकार जो सेवा की उससे समस्त आर्य जगत् उनका ऋणी है।

हैदराबाद सत्याग्रह का धर्म-युद्ध उनके प्रधानत्व में हुआ था। इसकी सफलता के लिए उन्होने जो दौड-धूप की, उच्च क्षेत्रो में जो यत्न किया और अपने प्रभाव को जिस कुशलता से प्रयुक्त किया वह ऐतिहासिक महत्व रखता है। सभव है जब श्री गुप्त जी अपनी आत्म-कथा लिखें या उनकी वृहत् जीवनी लिखी जाय उस पर विस्तार से प्रकाश पडे। इस समय इतना ही कहा जा सकता है कि श्री गुप्त जी ने इस कार्य पर अपने को मिटाया हुआ था। आर्य-समाज उनकी इस सेवा को कभी भुला न सकेगा।

श्री गुप्त जी चिरकाल-पर्यन्त आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य प्रदेश के प्रधान रहे और उस प्रान्त के आर्य सामाजिक जगत् के प्रमुख रहे। आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य प्रदेश को लाखों की सम्पत्ति दिलाने का श्रेय उन्हे प्राप्त है।

पंजाब में भाषा की स्वतंत्रता के आन्दोलन का सचालन सार्वदेशिक सभा ने उनके सुपुर्द किया हुआ है जिसके सम्यक् समाधान के लिए वह अपने ढग से प्रयत्नशील हैं। आर्य जनता का उनपर पूर्ण विश्वास है।

श्री गुप्त जी बडे सहृदय और मिष्टभाषी है। वे अधिक से अधिक शिष्ट और विनम्र हैं फिर भी सिद्धान्त पर कभी नही झुकते चाहे इसके लिए उन्हे यश मिले या अपयश।

श्री विनायकराव जी बार.-ऐट.-ला.

हैदराबाद राज्य की सामाजिक तथा राजनैतिक चेतना का इतिहास, आर्य समाज के कार्य का उल्लेख न करने से अपूर्ण रह जायगा और हैदराबाद मे आर्य समाज का इतिहास पं० विनायकराव जी तथा उनके स्व० पिता केशवराव जी के कार्यो के उल्लेख के बिना अधूरा रह जाएगा। स्व० केशवराव जी हैदराबाद की जन-जाग्रति तथा राजनैतिक चेतना के जनक रहे हैं, जिनकी सरकार पर धाक और जनता पर प्रभाव था। प० विनायकराव

जी अपने पिता के वस्तुतः योग्य उत्तराधिकारी सिद्ध हुए। पिता से विरासत में पाये हुए नेतृत्व को पं० विनायकराव जी ने बहुत अच्छे ढंग से निभाया। जनता के हृदयों पर राज्य किया। विरोधी रहते हुए भी निजामी हुकूमत ने आपकी बात पर विश्वास प्रकट किया।

पं० विनायकराव जी का मूल निवास-स्थान महाराष्ट्र के परभणी जिले में कोरट नाम का ग्राम था। इसी से आपके परिवार को "कोरटकर" कहा जाता है। किन्तु विनायकराव जी का जन्म अपने ननिहाल कलम्ब जिला उस्मानाबाद (महाराष्ट्र) में सन् १८६५ की ३ फरवरी



को हुआ। आपकी प्रारम्भिक शिक्षा ज्यों-त्यों घर ही में ही हुई। आठ वर्ष की आयु में स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने आपके पिता से गुरुकुल के लिए माँग लिया। माता को सूचना दिये बिना विनायकराव जी सन् १६०४ में गुरुकुल भेज दिये गये। सन् १६१६ में वे विद्यालकार की उपाधि से विभूषित होकर हैदराबाद लौटे। उसके पश्चात् आपने पूना के एक कृषि कालेज में अध्ययन किया। किन्तु शीघ्र ही इंगलैंड चले गये और १६२२ ई० में एल० एल० बी तथा बार-एट- ला की उपाधि से विभूषित होकर स्व-देश लौटे। कट्टर पन्थियों ने आपको इस समुद्र-यात्रा के कारण, आपके सामाजिक बहिष्कार का प्रयत्न किया किन्तु इसका आपके जीवन पर कोई प्रभाव नहीं हुआ।

१६२५ से १६३३ तक आप अपनी वकालत में लगे रहे। पिता की छत्र-छाया में आपने अपने दिन बिताये। आर्य समाज के कार्यों में भाग लेते रहे किन्तु गौण रूप में। किन्तु श्री केशवराव जी के स्वर्गवास के उपरान्त जहां आप पर पारिवारिक कार्यों का बोझ आ पड़ा, वहाँ आप पर आर्यसमाज के कार्यों का दायित्व भी आ पड़ा। १६३३ में सर्वसम्मति से आप आर्य प्रतिनिधि सभा हैदराबाद के प्रधान चुने गये और १६५० तक निरन्तर इस पद पर सर्वसम्मति से आरूढ़ रहे।

१६३७ ई० में हैदराबाद में आर्य समाज का सत्याग्रह आन्दोलन चला। विनायक राव जी इस समय आर्य समाज के केन्द्र-बिन्दु थे। सबसे पहले आर्य समाजियों पर झूठे मुकदमे चले। उस समय आर्य समाजियों की ओर से काम करने वाले वकीलों की आवश्यकता थी। सरकार का आतंक ऐसा था कि सामान्य वकील इस कार्य के लिए आगे नहीं बढ़ता था। जहाँ कोई वकील नहीं मिलता था, वहाँ प० विनायकराव जी खड़े हो जाते थे। राज्य भर में आपको जानाप डता था। उनके इस साहसपूर्ण कार्य ने अनेक वकीलों को प्रेरणा दी कि सार्वजनिक कार्यकर्त्ताओं की ओर से मुकदमे लड़ें। पं० विनायकराव जी के इस कार्य से उनकी अपनी

वकालत बैठती गई आपका साधन टूटता गया। किन्तु सामाजिक कार्यों और मुकदमों में भाग लेना उन्होंने बन्द नहीं किया। आर्यसमाज के सत्याग्रह के पश्चात् भी मुकदमे चलते रहे। उनमे प्रायः प० विनायकराव जी ही वकील रहा करते थे। कहने की आवश्यकता नहीं कि ऐसे मुकदमो मे आप जहाँ फीस नही लेते थे वहा आवश्यकता पड़ने पर जेब से भी खर्च करते थे। इसके कारण जनता मे आप अत्यन्त लोकप्रिय हो गये। १९३९ के पश्चात् तो आपने पेशे के रूप मे वकालत को त्याग दिया। किन्तु मिनिस्टर बनने तक सार्वजनिक मुकदमो से आपको छुटकारा नही मिला। इसमे उन्हे आनन्द भी मिलता था। इस साहसपूर्ण कार्य को देख कर ही हैदराबाद के मदान्ध मुसलमानो के ३० हजार के एक जमघट ने सन् १९३७ मे आपके निवास-स्थान को घेर लिया था। किन्तु किसी को फाटक के भीतर घुसने का साहस न हो सका। इसका नेतृत्व एक स्थानीय एडवोकेट ने किया था।

सत्याग्रह के दिनो मे हैदराबाद की हुकूमत ने अपने भूतपूर्व हिन्दू प्रधान मन्त्री सर किशन प्रसाद के नाम से एक वक्तव्य प्रकाशित करके आर्य समाज और उसके आन्दोलन का विरोध किया। उसका उत्तर हैदराबाद बाहर की एक सार्वजनिक सभा मे ही पं० विनायकराव जी ने इतने कडे शब्दो मे दिया था कि स्वय उन्हे विश्वास हो गया कि हुकूमत गिरफ्तार कर लेगी। जुलाई १९३९ में आप आठवे सर्वाधिकारी के रूप मे २००० हैदराबादी सत्याग्रहियो के साथ सत्याग्रह करने के लिए अहमदनगर पहुचे थे कि हैदराबाद राज्य ने समझौता कर लिया।

१९४२ ई० मे प्रथम हैदराबाद राज्य आर्य सम्मेलन उदगीर के आप सभापति चुने गए। वह एक अभूतपूर्व घटना थी। १९४६ मे चतुर्थ सम्मेलन के अवसर पर गुलबर्गा मे सशस्त्र पुलीस के एक दल ने क्लेक्टर और डी० एस० पी० की उपस्थिति मे पं० विनायकराव जी, पं० गरणपत शास्त्री जी तथा प० नरेन्द्र जी पर घातक आक्रमण किया। उस दुर्घटना से आपका जीवित रह जाना एक चमत्कार ही था। किन्तु इस आतक से आप विचलित नहीं हुए। दूसरे वर्ष ही वरगल आर्य सम्मेलन मे जनता ने आपको ही पुनरपि सभापति चुना।

आतकवाद से आपको दबाना कठिन जानकर निजामी हुकूमत ने आपको मोहजाल मे फास कर जनान्दोलन से पृथक् करने का भी यत्न किया। आपको न्याय-विभाग के एक उच्च पद को स्वीकार करने के लिए कहा गया। उसके उत्तर मे आपने तत्कालीन प्रधान मन्त्री को एक सख्त पत्र लिखते हुए कहा कि जबकि जनता के महत्वपूर्ण कार्यकर्त्ता जेलो में बन्द है, जनता के मूलभूत अधिकारियों को सरकार ने अपने काले कानूनों द्वारा जकड रखा है तथा राज्य की बहुसख्यक जनता के लिए राज्य एक कारागार से बढ कर नही, ऐसी दशा मे वे राजकीय पद स्वीकार करना अपनी आत्मा की हत्या और अपने स्वाभिमान के विरुद्ध समझते है।

सन् १९४८ के कांग्रेसी आन्दोलन मे भी आपका बडा भाग रहा है। ऐसे समय जबकि लगभग सभी राजनैतिक नेता जेलो मे या राज्य से बाहर थे, आपने हैदराबाद मे रह कर वकीलो का एक सगठन बनाया और उसकी अध्यक्षता स्वीकार करके लायकअली के वक्तव्यो का ऐसा भण्डाफोड किया कि पुलिस कार्यवाही के एक सप्ताह पूर्व हुकूमत ने आपको जेल मे बन्द कर दिया।

१९५० मे आप को राज्य का मन्त्री-पद दिया गया, जिस पर आप १९५६ की प्रान्त पुनर्रचना तक रहे। १९५६ के चुनाव मे आप लोकसभा के लिए चुने गये और इस समय आप ससद्-सदस्य है।

अपने पिता की स्मृति मे आपने हैदराबाद मे केशव स्मारक विद्यालय तथा केशव स्मारक कन्या विद्यालय की स्थापना की। दोनो हिन्दी माध्यम और तेलगू माध्यम के अच्छे विद्यालयो मे से हैं। इस समय आप हिन्दी प्रचार के इतिहास का एक उल्लेखनीय कार्य कर रहे हैं। हिन्दी

माध्यम से आर्टस कालेज की स्थापना मे आप इस समय जुटे हुए हैं। यह दक्षिण भारत के अहिन्दी प्रदेशों का सबसे प्रथम हिन्दी माध्यम का कालेज है। इसी प्रकार आप हैदराबाद के सर्व प्रथम हिन्दी साप्ताहिक आर्य-भानु के सस्थापक और सम्पादक थे। इसकी प्रगति के लिए आप सम्मेलनो मे "हाकर" के रूप मे अखबार तक बेचते रहे हैं। आप स्थानीय हिन्दी प्रचार सभा के वर्षों तक अध्यक्ष रहे हैं। आप एक अच्छे कथाकार हैं। "चाबुक" आपकी कथाओं का संग्रह हैं। आपने म० गान्धी और अब्राहम लिकन की जीवनियों पर दो पुस्तके भी लिखी हैं।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा से आप का वर्षों से सम्पर्क है। आप सभा की अन्तरग के सदस्य और उपप्रधान रह चुके है। आप १९५१ मे आर्य महासम्मेलन, मेरठ के सभापति चुने गये थे। इसी प्रकार १९५७ मे अखिल बग-आसाम आर्य सम्मेलन कलकत्ता के भी आप सभापति रह चुके हैं। इस समय भी आप आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य दक्षिण के अध्यक्ष है।

प० विनायकराव जी का जीवन सीधा-सादा और स्वभाव अत्यन्त सरल है। स्वभाव मे विनोद, सौहार्द तथा विशालता है। आप एक विश्वासपात्र मित्र, कुशाग्र बुद्धि वकील, नियन्त्रण प्रिय नेता, सच्चरित्र तथा कर्तव्य-परायण नागरिक है। आपके हृदय मे ईश्वर पर अगाध श्रद्धा, धर्म के प्रति अत्यन्त आस्था तथा दृष्टिकोण मे एक विशेष उदारता है। आर्य समाजी होने के कारण राज्य के मुस्लिम अधिकारी और जनता आपको अकारण ही अपना विरोधी और शत्रु समझती रही, किन्तु निकट सम्पर्क मे आने के पश्चात् कितने ही बडे बडे मुस्लिम नेताओ और अधिकारियो ने यह स्वीकार किया कि उन्होने श्री विनायकराव जी को समझने मे प्रारम्भ से गलती की है।

इस समय रोग-ग्रस्त होने से आपकी शारीरिक स्थिति अच्छी नहीं। फिर भी सार्वजनिक कार्यों में आप निरन्तर भाग लेते रहते हैं।

श्री स्वामी ध्रुवानन्द जी सरस्वती

श्रीयुत् स्वामी ध्रुवानन्द जी (राजगुरु श्री धुरेन्द्र शास्त्री जी) महाराज का जन्म पानी गांव (मथुरा) मे हुआ था।



संस्कृत के अध्ययन के लिए उत्कंठा जाग्रत हो जाने और इसकी पूर्ति मे घर वालों के बाधक बन जाने पर लगभग २३ वर्ष की आयु में एक दिन रात्रि को चुपचाप घर से भाग निकले और आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान

द्वारा सचालित मथुरा के विरजानन्द आश्रम में पहुच गए। आश्रम के अध्यक्ष ने उन्हें सस्कृत पढने की अनुमति देदी। पढाई के बदले मे अवैतनिक रूप में इन्हे आश्रम के विद्यार्थियों के भोजन बनाने का कार्य सौपा गया। जब श्री स्वामी सर्वदानन्द जी महाराज आश्रम के अध्यक्ष बनकर गए और उन्होने इनकी पढाई की परीक्षा ली तो बडे प्रसन्न हुए और इन्हे भोजन बनाने के कार्य से मुक्त कर दिया। श्री स्वामी जी के चले जाने और नए अध्यक्ष के आ जाने पर विद्यार्थियो और अध्यक्ष के मध्य संघर्ष हो गया जिसके फल स्वरूप आश्रम टूट गया। वहा से वे रग जी की बगिया मे स्थित वृन्दावन के ऋषिकुल में पढने के लिए चले गए। परन्तु सैद्धान्तिक मत-भेद होने के कारण वहाँ अधिक समय तक रहना न हो सका और घर चले गए। श्री स्वामी सर्वदानद जी महाराज को इसकी सूचना दी गई। वे सूचना पाकर इनके घर गए और इनकी माता जी को यह आश्वासन देने पर कि इन्हे साधु न बनाया जायगा अपने साथ साधु आश्रम (अलीगढ) मे ले आए और उनकी पढाई का समुचित प्रबंध कर दिया।

१९१८ मे ये शास्त्री परीक्षा देने के लिए मुलतान चले गए। १९१९ मे पजाब विश्वविद्यालय की शास्त्री परीक्षा उत्तीर्ण करली।

इसके पश्चात् महाराजा कालेज जयपुर मे कुछ नव्य-न्याय पढकर काशी चले गए। वहाँ दर्शनो का अध्ययन किया।

१९२३ मे अखिल भारती- हिन्दू शुद्धि सभा की ओर से तहसील माठ मे शुद्धि कार्य के अध्य- के रूप मे काम किया। यह कार्य सम्पन्न करने के उपरान्त आर्य प्रतिनिधि सभा बिहार-बगाल द्वारा सचालित गुरुकुल वैद्यनाथ धाम मे १९२६ से १९२८ तक आचार्य पद पर रहकर शिक्षण कार्य किया। शाहपुराधीश ने इनकी कर्मठता और कार्य कुशलता की प्रशसा सुनकर श्रीयुत् युवराज सुदर्शनदेव जी को धर्म शिक्षा पढाने के कार्य पर नियुक्त करके शाहपुरा बुला लिया। राजाधिराज उम्मेदसिंह जी पर इनके आचार-विचार का इतना प्रभाव पडा कि एक विशेष दरबार में इन्हे 'राजगुरु' की उपाधि से अलंकृत किया। इससे पूर्व स्व० श्रीयुत् राजा अवधेश सिंह जी कालाकाँकर नरेश को वैदिक धर्म की दीक्षा दी और उन्हे आर्य समाज का भक्त बनाया। इसके पश्चात् नजरगज, पूर्निया, बिजुआ, झालावाड और देवास जूनियर आदि नरेशो को आर्य समाज की ओर आकृष्ट किया।

१९३९ मे हैदराबाद आर्य-सत्याग्रह मे श्री राजगुरु जी ने चतुर्थ सर्वाधिकारी के रूप मे १५०० सत्याग्रहियो के साथ सत्याग्रह किया और सत्याग्रह की समाप्ति तक जेल मे रहे। इस अवसर पर सारे उत्तर प्रदेश का भ्रमण करके विपुल धनराशि सत्याग्रह के कोष मे जमा कराई। जब वह जेल मे थे तभी उत्तर प्रदेश के आर्य समाजो ने उनकी मूल्यवान सेवाओ के आदर स्वरूप उन्हे सर्व सम्मति से आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का प्रधान निर्वाचित किया। जेल से छूटकर आने पर १९४० मे भारतवर्षीय आर्य कुमार परिषद् के इन्दौर सम्मेलन की अध्यक्षता की। इनके पदकाल मे आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश ने बडी उन्नति की।

जब सिन्ध की मुस्लिमलीगी गवर्नमेंट ने सत्यार्थप्रकाश पर प्रतिबन्ध लगा कर आर्य समाज को चुनौती दी और सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने उस चुनौती को स्वीकार कर सत्याग्रह का निश्चय करके स्व० महात्मा नारायण स्वामी जी को उसके संचालन का पूर्ण अधिकार दे दिया तो श्री स्वामी जी अपने साथ जिन ३ महानुभावो को लेकर कराची मे बैठे थे उनमे से एक श्री राजगुरु जी थे।

श्री महात्मा नारायण स्वामी जी ने सिंध सत्याग्रह का प्रथम सर्वाधिकारी इन्हे ही मनोनीत किया और इन्होंने जान पर खेलने वाले परखे हुए सत्याग्रहियों के साथ

कैमारी (कराची) नगर की सड़कों, गलियों इत्यादि मे सत्यार्थ-प्रकाश का प्रवचन किया उस पर भाषण दिए और बिकवाया। सिंध सरकार ने इन कार्यों पर प्रतिबन्ध लगाया हुआ था। इन्होंने ५-६ दिन ऐसा किया। सत्यार्थप्रकाश की नीलामी कराई। एक सज्जन ने १ प्रति २५०) मे क्रय करली थी। सत्याग्रह के प्रवचन बिक्री आदि करने का सिंध की गवर्नमेंट को नियमित नोटिस दिया परन्तु उक्त गवर्नमेन्ट ने कोई कार्यवाही न की तब सत्याग्रह बन्द कर दिया गया।

लगभग ५ वर्ष तक (१९५०-५५ तक) श्री राजगुरु जी सार्वदेशिक सभा के प्रधान रहे। इस काल मे उन्होने सभा की आर्थिक स्थिति बहुत दृढ की और आर्य जगत् में उसके नेतृत्व को बहुत प्रशस्त किया।

१९५५ मे सन्यास लिया और श्री धुरेन्द्र शास्त्री जी से स्वामी ध्रुवानन्द जी बन गए। उनके सन्यास-प्रवेश का समारोह जो साधु आश्रम मे हुआ था वह देखने योग्य था। इस समारोह मे स्वामी जी के सैकडो बडे बडे भक्तो के अतिरिक्त आर्य समाज के बडे बडे विद्वान् नेता राज्य के उच्च कर्मचारी और राज्यो के मन्त्री भी सम्मिलित हुए थे।

१९५९ के जुलाई मास में श्री स्वामी जी वैदिक धर्म के सन्देश के प्रसार और व्यवस्था करने के महान् कार्य पर विदेश गये। वहा वे अपने कार्य मे पूर्ण सफल हुए और १२ अप्रैल १९६१ को भारत लौटे। सार्वदेशिक सभा की प्रार्थना पर आर्य सभा मौरीशस की सुव्यवस्था तथा उसको हर प्रकार से उन्नत और दृढ करने का जो कार्य निरन्तर ३॥ वर्ष वहां बैठ कर और विघ्न-बाधाओं पर विजय प्राप्त करके किया वह ऐतिहासिक महत्व रखता है। मोरीशस के अतिरिक्त श्री स्वामी जी ने पूर्वी अफ्रीका के केनिया, युगान्डा, टागानिका, जजीबार चारो भागो मे, दक्षिण रोडेशिया और मेडागास्कर मे भी सफल प्रचार कार्य किया। श्री स्वामी जी की आर्य समाज और सार्व-देशिक सभा के प्रति की गई मूल्यवान सेवाओ के आदर स्वरूप आर्य समाज ने उन्हे सार्वदेशिक सभा की स्वर्ण जयन्ती महोत्सव और नवम् आर्य महासम्मेलन का प्रधान चुन कर अपने एक बहुत बड़े कर्त्तव्य का पालन किया है।

श्री स्वामी जी महर्षि दयानन्द के तपस्वी भिक्षु हैं। आर्य समाज को उन पर गर्व है। वे आर्य समाज की शोभा हैं।

मेरा मन्तव्य

मैं अपना मन्तव्य उसी का जानता हूँ कि जो तीन काल में सब को एक सा मानने योग्य है। मेरा कोई नवीन कल्पना वा मतमतान्तर चलाने का लेशमात्र भी अभिप्राय नहीं है किन्तु जो सत्य है उसको मानना-मनवाना और जो असत्य है उसको छोड़ना और छुड़वाना मुझको अभीष्ट है। यदि मैं पक्षपात करता तो आर्यावर्त मे प्रचरित मतों में से किसी एक मत का आग्रही होता किन्तु जो जो आर्यावर्त वा अन्य देशों मे अधर्म युक्त चाल चलन है उनका स्वीकार और जो धर्मयुक्त बातें हैं उनका त्याग नही करता न करना चाहता हूँ क्यों कि ऐसा करना मनुष्य धर्म से बहि है।

—महर्षि दयानन्द

ओ३म् संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम् ।
देवा भागं यथापूर्वे संजानाना उपासते ।।

नवम सार्वदेशिक आर्य महासम्मेलन, दिल्ली के सभापति श्री स्वामी ध्रुवानन्द जी सरस्वती का अध्यक्षीय भाषण

महिलाओ और सज्जनो !

आज मुझे इस महासम्मेलन का अध्यक्ष-पद प्रदान कर, मेरे कमजोर कन्धो पर भारी भार रखा गया है । जैसी आपकी इच्छा और आज्ञा, आपके आदेशानुसार, मैं इस कर्त्तव्य-पालन मे प्रवृत्त होता हूं । आशा है कि मेरे साथ आपका पूर्ण सहयोग रहेगा। जैसा कि आपको ज्ञात है, मैं पांच वर्ष पूर्व विदेश मे वैदिक धर्म प्रचारार्थ गया था। आज इतने दिनो पश्चात् इस महासम्मेलन मे, आप सबके दर्शन करके मुझे परम प्रसन्नता हो रही है ।

महर्षि और आर्य समाज

भारत की भयंकर अवस्था और प्रतिकूल परिस्थिति में, महर्षि दयानन्द का प्रादुर्भाव हुआ। महर्षि के तप-त्याग-पूत पवित्र जीवन और विशाल व्यक्तित्व का सारे देश पर प्रभाव पडा और उनकी विमल विचार-धारा सर्वत्र प्रवाहित हुई। यदि उस पतनोन्मुखी परिस्थिति में महर्षि द्वारा प्रचार-कार्य न हुआ होता तो आज देश, जाति—आर्यजाति— की कितनी दुरवस्था होती, इसका अनुमान भी बडा दु:खद और भयकर है । हम क्या है ? हमारा धर्म और राष्ट्र कितना गौरवशाली है ? हमारे साहित्य मे कैसी कल्याण-मयी भावनाएं भरी हुई है ? हमारा पुनरुत्थान या अभ्युदय किस प्रकार हो सकता है ? इत्यादि प्रश्नो की मीमासा करते हुए, महर्षि ने देश और जाति-उद्धार के अनेक अमोघ उपाय बताये। सामाजिक कुरीतियाँ दूर करने की ओर सर्व-साधारण का ध्यान आकृष्ट किया। सर्वप्रथम पराधीन भारत को स्वतन्त्र होने का सन्देश ऋषि ने ही दिया और बताया कि विदेशी राज्य कितना ही अच्छा क्यो न हो, परन्तु वह स्वराज्य की समता नहीं कर सकता । सच तो यह है कि यदि महर्षि न हुए होते तो न वेद शास्त्रों को संरक्षण प्राप्त होता और न आर्य (हिन्दू) जाति तथा राष्ट्र की रक्षा हो पाती। महर्षि ने 'बाबा वाक्यम प्रमाणम्' की निर्मल नीति का मान-मर्दन कर वैदिक विभूति के अटल आधार पर बुद्धिवाद-युक्त एवं तर्क-सम्मत सद्धर्म का प्रचार-प्रसार किया। देववाणी (सस्कृत) और भारतीय भाषा (हिन्दी) की अनिवार्यता पर बल दिया। स्वधर्म, स्वसाहित्य, स्वदेश,

स्वसंस्कृति, स्वसभ्यता, स्ववेश-भूषा आदि की ओर प्रशंसनीय प्रवृत्ति उत्पन्न की और प्राचीन भारतीय भावनाओं को प्रोत्साहन दिया। धार्मिकता, नैतिकता, सच्चरित्रतादि से तो महर्षि का जीवन ओत-प्रोत ही था।

महर्षि दयानन्द ने भद्र भावनाओं के प्रचारार्थ, ८६ वर्ष पूर्व बम्बई में सर्वप्रथम आर्य-समाज की स्थापना की। फिर तो छोटे-बड़े सैकड़ों नगरो और ग्रामों मे आर्य-समाज स्थापित हुए और उन्होने प्रचार-कार्य मे यथेष्ठ सफलता प्राप्त की। उस समय आर्यों के वैयक्तिक जीवन और सच्चरित्रता का प्रभाव भी सर्वसाधारण जनता पर खूब पड़ा। आर्य-समाज समष्टि ने अपने विरोधियो का सामना भी बड़े साहस और शान्ति-सहिष्णुता के साथ किया। कितने ही आर्य-वीरो को तो इस धर्म-सघर्ष में अपने अमूल्य प्राणो की आहुतियाँ तक देनी पड़ीं। परन्तु फिर भी प्रचार-कार्य में अणुमात्र भी न्यूनता या शिथिलता का प्रवेश न हो पाया। सब कार्य बड़े उत्साह से सफलता-पूर्वक सम्पन्न होते रहे।

आर्य-समाज ने अपने सस्थापक महर्षि दयानन्द जी के आदेशानुसार अन्ध-विश्वास, अस्पृश्यता, बिरादरीवाद, सम्प्रदायवाद आदि को नष्ट करने के लिए उचित आयोजन किये। विधर्मियो को भी आर्य-जाति मे प्रविष्ट होने का अवसर दिया। आर्य-समाज द्वारा गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को क्रियान्वित देख देशी-विदेशी सभी विचारक, विद्वान् और शिक्षा-शास्त्री मन्त्रमुग्ध से हो गये। अभिप्राय यह है कि आर्य-समाज ने अपने सस्थापक के आदेशानुसार वे समस्त कार्य किये जिनकी देश, और समाज-कल्याण के लिए अत्यन्त आवश्यकता थी।

आज हमारा भारत स्वतन्त्र है। उसमें स्वराज्य की स्थापना हो चुकी है। इस 'स्वतन्त्रता' और स्वराज्य का बीज-वपन भी महर्षि दयानन्द ही कर गये थे। महात्मा गाँधी तथा अन्य नेताओं ने तो ऋषि द्वारा बोए बीज को अपने प्रशसनीय प्रयत्न द्वारा पल्लवित, पुष्पित और फलित बनाने में यथेष्ठ सहायता प्रदान की। इसे मैं ही नहीं कहता. देश के अन्य अनेक राजनैतिक नेता भी ऐसा ही मानते हैं। हमारे महामान्य राष्ट्रपति श्री राजेन्द्रप्रसाद जी ने मथुरा मे, दयानन्द दीक्षा शताब्दी के पुण्य-पर्व पर, अपने अभिभाषण में ऐसे ही भद्र भाव व्यक्त किये थे।

आर्य-समाज सकीर्णता का घोर विरोधी रहा है। उसने मत-पन्थो, सम्प्रदायवाद, जाति-पाँति, छुआ-छूत आदि को देश के लिए सदैव अहितकारी समझा। वह जन्म-मूलक बिरादरीवाद मे विश्वास नही करता। उसकी वर्ण-व्यवस्था गुण कर्मों के आधार पर है अर्थात् जिस व्यक्ति मे जिस की योग्यता हो वह उसी मे परिगणित किया जाए। इस प्रकार गुण-कर्म के आधार पर एक ब्राह्मण-कुमार शूद्र और शूद्र-बालक ब्राह्मण बन सकता है। इस दिशा मे आर्य-समाज ने प्रचार तो पर्याप्त किया परन्तु यह भावना स्वय आर्य-समाजियो में भी अभी बहुत ही कम क्रियान्वित हो पायी है। इधर सजग-सचेष्ट होकर आगे बढने की आवश्यकता है।

सज्जनो, परम प्राचीन सभ्यता-संस्कृति के आधार पर भारत के नव-निर्माण मे आर्य-समाज का बहुत बडा हाथ रहा है। आज आप आँखे पसार कर अवलोकन कीजिए कि अब कही विधवा-विवाह का विरोध है और न पहली सी छुआछूत ही दिखाई देती है। दलितोद्धार के लिये तो सभी ओर से समर्थन प्राप्त हो रहा है। देश के बडे-बडे विद्वानों विचारको और शिक्षा-शास्त्रियो का कथन है कि परीक्षोत्तीर्ण होने के लिये कुछ पुस्तको की सामग्री मस्तिष्क मे ठूस लेने का नाम ही शिक्षा नही है और न किसी भाषा विशेष मे पारगत होना मात्र शिक्षा की पूर्णता कही जा सकती है। शिक्षा वह है जिससे शारीरिक, मानसिक और आत्मिक उन्नति द्वारा मानवता का उदय और विकास हो। इस बात को महर्षि दयानन्द सरस्वती जी बहुत पहले कह गए हैं और इस धारणा के आधार पर गुरुकुल-शिक्षा प्रणाली का प्रचार किया गया था।

महर्षि दयानन्द ने समाज का विभाजन गुण-कर्मानुसार

वर्ण-व्यवस्था के आधार पर किया और मानव-जीवन को आश्रम व्यवस्था के रूप में विभक्त किया अर्थात् मनुष्य को शतायु मानकर, उसके जीवन के पच्चीस वर्ष ब्रह्मचर्यपूर्वक अध्ययन के लिए २५ वर्ष गृहस्थाश्रम के लिए, २५ वर्ष वानप्रस्थ और २५ वर्ष सन्यास के लिए रखे गए। वानप्रस्थ सर्वथा नि:स्वार्थ होकर अध्यापन एवं प्रचार कार्य करते थे। सन्यासी का कार्य परमात्मा चिन्तन और सबके सुधार-उद्धार के लिए उपदेश देना था। अभिप्राय यह कि महर्षि के आदेशानुसार सन्तति-प्रजनन और सम्पत्ति-सग्रह के लिए केवल गृहस्थाश्रम था। सो गृहस्थ को भी नित्य-प्रति पंचयज्ञ करने पडते थे, जिनमें परोपकार अर्थात् प्राणिमात्र के प्रति भद्र भावना भरी रहती थी। कोई किसी का धन अपहरण न करे और प्रजनन-शक्ति सीमित हो, ऐसी स्थिति मे दुराचार, रिश्वत, धूर्तता, बेईमानी का तो कोई स्थान ही नहीं हो सकता था। कामुकता-पूरक सन्तति की भरमार ही कहाँ थी जो सन्तान-निरोधक कृत्रिम साधनों की बात सोचनी पडती। आवश्यकता इस बात की है कि हम स्वय महर्षि-प्रदर्शित वर्ण-व्यवस्था और आश्रम-व्यवस्था को अपनावें और दूसरो से भी इसी पथ का अनुयायी बनने के लिये कहें तो निश्चय ही देश, जाति और समाज का महान् कल्याण हो। जिस कार्य को हम स्वय नही कर रहे उसे दूसरों से कराने का हमे क्या अधिकार है? फिर ऐसे थोथे उपदेश को कोई मानेगा भी क्यो?

आर्य समाज के संघटन को सुदृढ और समुचित बनाने के लिए सभा समितियों की आवश्यकता हुई। सदस्यगणो ने विधि-विधानानुसार अपने अपने समाज से प्रधानादि अधिकारी और अंतरंग सभासद चुने। ये चुनाव मतदान द्वारा हुए। जिसको अधिक मत प्राप्त हुए वही अधिकारी या अंतरंग सभासद बन गया। ऐसे चुनावों के समय सर्वथा और सर्वदा सद्भावना होती थी। खेद है कि कुछ दिनों से चुनावों में पद-लोलुपता और अधिकार-लिप्सा-जन्य विरोध-विग्रह की मलिन मनोवृत्ति दिखाई देने लगी है जो शीघ्रातिशीघ्र दूर होनी चाहिए। प्रत्येक आर्य कार्य-कर्त्ता, चाहे उसे कोई पद मिले या न मिले, सलग्नता-पूर्वक सोत्साह सेवा-कार्य करता रहे यही आर्य समाज की पुरानी परिपाटी है, जो बराबर बनी रहनी चाहिए। इसके लिए सात्विक सेवा-भावना को हमे अपने हृदयो में स्थान देना पडेगा। येन-केन-प्रकारेण 'वोट' बटोर कर पद-प्राप्ति-जन्य स्वार्थ-सिद्धि का नाम सफलता या सद्भावना नही है।

मानवता और धर्म-तत्व

आज ज्ञान और विज्ञान का युग बताया जाता है। निश्चय ही इस युग मे भौतिक विज्ञान ने बडी उन्नति की है। प्राकृतिक उत्थान के आधार पर, मनुष्य बडी बडी उपाधियो से अलंकृत होकर न जाने क्या क्या बन गया है, फिर भी आज सबसे न्यूनता या हीनता मानवता की है अर्थात मनुष्य और तो सब कुछ है, परन्तु वस्तुतः वह मनुष्य या मानव नही है। मनुष्य कौन? सुनिए :—

विद्या विलास मनसो धृत शील शिक्षा
सत्यव्रता रहितमानमलापहारा
ससार दु:ख दलनेन सुभूषिता ये
धन्या नरा विहित कर्म परोपकारा ॥

इसी भाव को किसी कवि ने राष्ट्रभाषा मे इस प्रकार व्यक्त किया है :—

विद्या के विलास मे निमग्न रहता है मन,
शिक्षा और शील का महत्व अपनाया है।
धारण किया है सत्यव्रत बडी दृढता से,
मान, मद, मल जिसको न कभी भाया है।
लोक दु:ख दूर करने मे सुख पाता रहा,
पर उपकारो बन संकट मिटाया है।
करके विहित कर्म सुयश कमाया सदा,
धन्य ऐसा धीर-वीर मानव कहाया है।

इसी सम्बन्ध में ये चार पंक्तियां भी देने योग्य हैं :—

त्याग-तपस्या से पवित्र परिपुष्ट हुआ जिसका तन है,
भद्र भावना भरा, स्नेह संयुक्त शुद्ध जिसका मन है।
होता व्यय नित्यप्रति परहित में जिसका शुचि संचित धन है,
वही व्यक्ति सच्चा मानव है धन्य उसी का जीवन है।

अन्य भाषाओं के विद्वानों ने भी 'मानवता' की परिभाषाएं इसी प्रकार की हैं। सबका उल्लेख यहां कर सकना कठिन है। उर्दू के महाकवि मीर ने तो यहाँ तक कहा है :—

मीर साहब गर फरिश्ता हो तो हो,
आदमी होना मगर दुश्वार है।

यही कारण है कि आज बलवान, श्रीमान्, विद्वान्, उपाधिधारी, उच्चाधिकारी आदि तो बहुत हैं, परन्तु वास्तविक मनुष्यों की संख्या अति न्यून दिखायी देती है। मानवता के लिए अध्यात्म या धर्म-तत्वों की आवश्यकता है। इनमें आत्मिक उन्नति होती और मन शिव-संकल्पयुक्त बनता है। जब मन में पवित्रता तथा आत्मा में विशुद्धता होती है, तभी कार्य-कलाप में शुचिता-सरलता समाती है और यह शुचिता ही मानवता है। दुर्लभ मानवता आत्मिक अभ्युत्थान के बिना सम्भव नहीं और आत्मिक उत्थान धर्म-तत्वों के बिना असम्भव है।

अब तनिक सोचिए तो सही कि मानवता के लिए धर्माचरण की कितनी अधिक आवश्यकता है। मैं पहिले ही निवेदन कर चुका हूँ कि साम्प्रदायवाद या मत-मतान्तर का नाम धर्म नहीं है। जो लोग मत-सम्प्रदायों को धर्म समझते हैं, वे वास्तविकता से कोसों दूर हैं। धर्म के मूल तत्व तो विश्व भर के लिए हैं। उनमें भाषा, प्रान्त, देश प्रदेश के कारण कोई व्यवधान या अन्तर नहीं पड़ता। वैदिक धर्म इन्हीं तत्वों का आदि स्रोत है। इसलिए महर्षि दयानन्द जी सरस्वती ने उनके प्रचार-प्रसार पर बल दिया और एतदर्थ आर्य समाज की स्थापना की। अतः आर्य समाज का मुख्य कर्तव्य है कि वह वैदिक धर्म प्रचार के लिए अधिकाधिक प्रयत्न करे। साम्प्रदायवाद तो युक्ति-विहीन संकीर्ण पोच परम्पराओं का पोषक है। वह अन्ध विश्वास का जनक और गुरुडम का गढ़ होने के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। बिरादरीवाद भी संकुचित साम्प्रदायवाद की ही एक संकीर्ण शाखा है। प्रान्तवाद की तुच्छ भावनाएं भी कभी प्रशंसनीय नहीं कही जा सकतीं अर्थात् ऐसी कल्पनाएं कि वह पंजाबी, बंगाली मदरासी या उत्तर प्रदेशवासी है। इन संकीर्णताओं से भी समाज में भिन्नता की भित्ति खड़ी होती है। हमारे शास्त्रों में तो विश्वबन्धुत्व का समस्त उपदेश और कल्याणकारी संदेश दिया गया है। उस में भारतीयता या अभारतीयता का कोई भेदभाव नहीं है।

हम भारतवर्ष में रहते हैं, अतएव हमारा कर्तव्य है कि सर्वप्रथम विश्व धर्म का प्रचार अपने घर में करें। स्वदेश को धार्मिक बनाएं और स्वयं धर्मधारी मानव बनें। ईसाई, मुसलमान आदि विधर्मी समुदाय, राजनैतिक दृष्टिकोण से भारतीय शिखा-सूत्र-धारियों को बहका फुसला और भाँति-भाँति के प्रलोभन देकर, अपना दल बल बढ़ा रहे हैं। उन्हें इस अनौचित्य से रोकना-टोकना आर्य समाज का मुख्य कर्तव्य होना चाहिए, क्योंकि आगे चल कर इस प्रकार की कुनीति से राष्ट्रोन्नति के मार्ग में भयंकर बाधाएं उत्पन्न हो सकती हैं। आर्यावर्त (हिंदुस्तान) अरबिस्तान या इंग्लिस्तान का रूप धारण कर सकता है। हिन्दू जाति या भारतीयता के मार्ग में, सम्प्रदायों की भांति ही जाति-पाँति अथवा बिरादरियों ने भी बड़ी कटुता उत्पन्न कर दी है। इस ओर भी आर्य समाज को विशेष ध्यान देकर, उचित उद्योग करना पड़ेगा। परन्तु दुःख तो इस बात का है कि स्वयं आर्य सामाजिक जन इस भयंकर रोग से अपना पीछा नहीं छुड़ा पाए। सबसे पहले स्वयं हमें बिरादरीवाद के दम्भ-दैत्य का मान-मर्दन करने के लिए दृढ़तापूर्वक अग्रसर होना पड़ेगा।

धर्म की महत्ता

कितने आश्चर्य की बात है कि भ्रमवश, सम्प्रदायो या मतो को धर्म मान लिया गया है और धर्म का नाम लेने या सुनने मे हमारे वडे बडे नेता और प्रणेता आग-बबूला होकर, मुह मटकाते और आँखे चढाने लगते हैं। स्वराज्य-प्राप्त, स्वतन्त्र भारत मे धर्म का कहीं नाम तक नही लिया जाता। धर्महीन सेकूलर सरकार कानून बनाने पर तो करोडों रुपया व्यय कर रही है, परन्तु धर्म का नाम भी उसे सहन नही होता, जबकि महात्मा गाँधी ने स्पष्ट लिखा है :—

"मेरे नजदीक धर्मविहीन राजनीति कोई चीज नही है। धर्म के मानी वहमो या गतानुगतित्व का धर्म नहीं, द्वेष करने वाला और लडने वाला धर्म नही वल्कि विश्व-व्यापी सहिष्णुता का धर्म। धर्मशून्य राजनीति सर्वथा त्याज्य है। मै धर्म भिन्न राजनीति की कल्पना भी नही कर सकता। वास्तव मे धर्म तो हमारे हर काम मे व्यापक होना चाहिए। धर्म का अर्थ कट्टर पन्थ नही, वह विश्व-धर्म है।"

जो बात महर्षि दयानन्द अस्सी-नब्बे वर्ष पूर्व लिख गए, उसकी ओर महात्मा गाँधी ने भी अपनी इन पक्तियो द्वारा कितना सुन्दर सकेत किया है। स्वराज्य क्या है, इस सम्बन्ध मे महात्मा गाँधी कहते हैं :—

"स्वराज्य का अर्थ है, अन्न-वस्त्र की बहुतायत। यह इतनी होनी चाहिए कि किसी को भी भूखा-नगा न रहना पडे। एक बालिका भी घोर अन्धकार मे, निर्भयता के साथ घूम-फिर सके। स्वराज्य का अर्थ है, अस्पृश्यता का नाश। स्वराज्य वह है जिसमे स्त्रियाँ, माताए और बहने समभी जाए तथा ऊच-नीच का भेद-भाव दूर होकर सब समानतापूर्वक अर्थात् भाई-बहन की भावना से बर्ताव करें। स्वराज्य मे नीच से नीच और ऊचे से ऊचे आदमी को बढ़ने का अवसर मिलना चाहिये। स्वराज्य मे शिक्षाविधि मानसिक व्यायाम या दिमागी अय्याशी न होकर, मानव विकास में सहयोग, लोक-सेवा और सदाचार की भावना हो।

महात्मा गाधी ने स्वराज्य की जैसी कलित-कल्पना की है, वह धर्महीन राजनीति द्वारा कभी क्रियान्वित नहीं हो सकती। उसको व्यावहारिक बनाने के लिए धर्म का पूर्ण प्रश्रय लेना पडेगा। ऐसा किये बिना इस दिशा मे कदापि सफलता प्राप्त नही हो सकती। महर्षि दयानन्द ने तो अपने सुप्रसिद्ध ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश मे पूरा एक समुल्लास (अध्याय) राज-धर्म पर लिखकर राजनीति मे धर्म की प्रधानता घोषित की है। उसी दिशा मे महात्मा गाँधी का भी सुदृढ एव समुचित समर्थन है।

भाइयो, आर्यसमाज अब तक प्रचलित राजनीति से पृथक् रहा, रहना भी चाहिये था क्योकि प्रचलित राज-नीति दल-बन्दियो अर्थात् पार्टीबाजियो का नाम है। इसमे सत्ताप्राप्ति के लिए ही सारी शक्तिया लगाई जा रही है। धार्मिक मत सम्बन्धी दलो की तो अब बहुत कम पूछ-गछ है, परन्तु हा, राजनैतिक सम्प्रदायवाद पूरे रूप मे प्रत्यक्ष दिखाई दे रहा है। जगह-जगह भगडे-भभट हो रहे है। सत्ता प्राप्ति के लिए अनेक उचितानुचित प्रयत्न किये जा रहे है।

भारत की स्वतन्त्रता-प्राप्ति मे सामुदायिक रूप से आर्यसमाज का भले ही हाथ न रहा हो, परन्तु आर्य भाई-बहनो ने व्यक्तिगत रूप से इस सग्राम मे सोत्साह भाग लिया, कारागारों मे कष्ट सहे और बलिदान भी दिये। आज देश स्वतन्त्र है, स्वराज्य (सरकार) स्थापित है, परन्तु सर्वसाधारण जनता निरन्तर लकीर की फकीर बनी हुई है। जनता द्वारा निर्वाचित प्रतिनिधि देश के विधायक और शासक है, परन्तु जनता आज भी गुलाम बनी हुई है। अपने चुने प्रतिनिधियो को अभिनन्दन-पत्र भेट करना और उनके स्वागत-सत्कार मे दक्षता दिखाना

हो उसका सबसे बड़ा कर्तव्य रह गया है। ऐसी दशा मे दलबन्दी से दूर रह कर आर्यसमाज को सैद्धान्तिक राजनीति-पथ पर अविलम्ब अग्रसर होने की आवश्यकता है। अर्थात् महर्षि दयानन्द और महात्मा गांधी के आदेशानुसार आर्यसमाज को राजनीति मे धर्म के मूल तत्व सम्मिलित करने पर बल देना चाहिए। नैतिकता अथवा सदाचरण के बिना नागरिक जीवन कभी विमल और विशुद्ध नही बन सकता। नैतिकता का अर्थ है धर्म को आचार या क्रिया मे परिणित करना। इसी को अंग्रेजी मे 'मारेलिटी' (Morality) और फारसी मे 'अखलाक' कहते हैं। धर्म-प्रधान भारत मे राजनीति को धर्म से शून्य कर देना बड़े दुख और आश्चर्य की बात है। ऐसी परिस्थिति मे सुखमूल स्वराज्य की स्थापना कैसे सम्भव हो सकती है? मैं तो यही निवेदन करूंगा कि आर्य जनता और विशेषकर आर्य युवक-युवतियाँ इस क्षेत्र मे अग्रसर हों और अनुभवी सुयोग्य एवं वयोवृद्ध आर्य नेताओं के नेतृत्व मे, राजनीति को धर्ममय बनाने का उद्योग करें अर्थात् सर्वसाधारण नागरिकों को महर्षि दयानन्द और महात्मा गाधी की विचारधारा के अटल आधार पर इस विषय की व्याख्या एव विवेचना करते हुए सारी बाते जनता को बतावे। स्वतन्त्र भारत मे जनता के क्या कर्तव्य और अधिकार हैं, राजनीति से धर्म का सम्बन्ध क्यो आवश्यक है, धर्म-प्रचार के बिना भ्रष्टाचार कदापि दूर नही हो सकता, सुराज्य किस प्रकार सम्भव हो सकता है, जनता स्वतन्त्र होकर भी अन्न-वस्त्र के लिए क्यों दुखी है— इत्यादि बातों पर केवल धार्मिक दृष्टि से विचार करना, आर्यसमाज के इस प्रचार की विशेषता होनी चाहिए। नागरिकों की भावनाएं ऊंची होने से ही उनकी वाणी बलवती और विशद् बन सकेगी। इस समय ऐसे ही शिक्षण की बडी आवश्यकता है। उत्तरोत्तर बढ़ती हुई भ्रष्टाचारिता अथवा अपराध-प्रवृत्ति की रोकथाम केवल कानूनी कोडों से नहीं होगी, उसके लिए धर्म, सदाचार अथवा नैतिकता के सात्विक सिद्धान्तों को क्रियान्वित करना पड़ेगा। जिन लोगो का यह कथन है कि आर्यसमाज राजनीति मे न पडे, उनसे मैं सहमत हूँ, परन्तु आर्यसमाज को धर्ममय बनाने का प्रयत्न तथा नैतिकता और सदाचार प्रसार-प्रचार का कार्य तो राजनैतिक पचड़े मे पड़ना नही कहा जा सकता। सैद्धान्तिक राजनीति के मौलिक तत्वों के महत्व को समझना और गणतन्त्र की विशद्, विमल और विस्तृत व्याख्या करना तो प्रचलित राजनीति मे प्रवेश करना नही है। यदि ऐसी बात होती तो महर्षि दयानन्द अपने सत्यार्थप्रकाश मे इस विषय पर इतना बल क्यो देते?

इस धर्म-प्रचार मे तो वे आर्य भाई-बहन भी निर्भयतापूर्वक भाग ले सकते हैं, जिनका सरकारी सेवा-वृत्ति से परोक्ष या प्रत्यक्ष सम्बन्ध है, क्योकि यह प्रचार-विधि रचनात्मक अथवा मण्डनात्मक होगी, खण्डनात्मक नहीं। राजनीति को धर्ममय बनाने और जन-जीवन मे नैतिकता, नागरिकता की भव्य भावना भरने से जहा मानवता का विकास-प्रकाश होगा वहां सर्वसाधारण की ज्ञान-वृद्धि और सुख-समृद्धि मे भी सहायता मिलेगी। सबसे बडा लाभ यह होगा कि आर्य समाज का भारतीय जनता के साथ पुन: सम्पर्क स्थापित हो जायगा अर्थात् इस धर्म-प्रचार-पद्धति द्वारा जनता पुनः आर्यसमाज के समीप आ जायगी और अपने हिताहित की बातें बड़े ध्यानपूर्वक सुने-समझेगी। ये बातें चुनाव लड़ने वाले राजनैतिक सम्प्रदायो द्वारा कैसे सुनने को मिल सकती है? वहा तो वोट बटोरने पर ही व्याख्यानो का मुख्य लक्ष्य रहता है। जनता ही क्यों आर्यसमाज के इस प्रचार से शासन को भी पर्याप्त बल मिलेगा। अन्तर इतना ही है कि शासन जिस कार्य को कानूनी कोडों से करना चाहता है, उसी को आर्यसमाज उपदेशामृत पिलाकर करेगा।

ग्रामों में पंचायती राज्य तो हो गया, परन्तु चुनावों के कारण बिरादरी-विद्वेष का विष बहुत बढ़ गया है।

इस विद्वेष को शान्त करना तथा ग्राम-सम्बन्धी बातें बताना आर्यसामाजिक प्रचार-क्षेत्र के अन्तर्गत ही होगा। आर्यसमाज का यह प्रचार-कार्य छोटे-बड़े सभी ग्रामों और नगरों में होना चाहिए। बड़े शहरों में तो विविध 'वार्ड' और मुहल्ले एतदर्थ चुने जा सकते हैं। मुझे स्मरण है कि सन् १९२३ ई० में शुद्धि-आन्दोलन प्रचार के लिए, अमर शहीद श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज की अध्यक्षता में एक छोटी-सी समिति बनी थी, फिर तो उसका देश-व्यापी विराट् रूप हो गया। सारी हिन्दू जनता ने उस आन्दोलन का क्रियात्मक रूप से सबल समर्थन किया और कार्य-संचालन के लिए जन-धन के ढेर लग गये। यही स्थिति इस प्रस्तावित प्रचार-कार्य की भी हुए बिना न रहेगी, ऐसा मेरा विश्वास है। शुद्धि-आन्दोलन में तो हिन्दू ही हमारे साथ थे परन्तु इस धर्म-प्रचारक और नैतिकता-प्रसारक आन्दोलन को तो ईसाई-मुसलमान भी आदर की दृष्टि से देखेंगे, क्योंकि उसमें सारी जनता का हित होगा।

आर्य समाज और राष्ट्र के महान् नेता अमर शहीद श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने सन् १९२५ ई० में जो भविष्यवाणी की थी, मेरी सम्मति में, अब उसकी पूर्ति का समय आ गया है। पूज्य स्वामी जी के शब्द इस प्रकार हैं:—

"जहाँ धार्मिक और सामाजिक उन्नति-क्षेत्र में भारतीय प्रजा को दयानन्द के पीछे चल कर ही कल्याण-मार्ग सूझा वहाँ राजनीतिक क्षेत्र में भी करोड़ों भारत-वासियों को ऋषि दयानन्द के बतलाए मार्ग पर ही चलना पड़ेगा।"

ऋषि दयानन्द और महात्मा गाँधी, दोनों का इस दिशा में एक ही मार्ग है अर्थात् राजनीति में धर्म का प्रवेश यानी धर्ममय राजनीति। महात्मा जी ने स्पष्ट कहा है कि धर्म के बिना तो मैं राजनीति की कल्पना भी नहीं कर सकता। ऐसी स्थिति में आर्य समाज जो धर्म-प्रचार करेगा, उससे ऋषि दयानन्द और महात्मा गाँधी दोनों महापुरुषों का आदेश पालन हो सकेगा। कौन नहीं जानता कि भारतीय स्वतन्त्रता अस्त्र-शस्त्रों के हिंसात्मक आधार पर प्राप्त नहीं हुई, प्रत्युत् सत्य, अहिंसा और तप-त्याग की धर्म-ध्रुवता ही उसकी जननी है। जिन धर्म-तत्वों द्वारा देश में स्वराज्य स्थापित हुआ, उन्हीं के आधार पर वह अनुकूल और मंगलमूल बन सकता है। स्वराज्य तो हो गया पर सुराज्य की आवश्यकता अभी बराबर बनी हुई है। इसकी प्राप्ति भी धर्म द्वारा ही सम्भव है, अन्य प्रकार नहीं।

भाइयो, मैं गत पाँच वर्षों से विदेश में था, वहाँ मैंने अपनी गति-मति के अनुसार धर्म-प्रचार और शांति-सद्भावना स्थापित करने के लिए पूर्ण प्रयत्न किया। इस कार्य में मुझे सफलता भी प्राप्त हुई। मेरे पीछे मेरे देश में दो बड़े कार्य हुए—पंजाब में हिन्दी सत्याग्रह और मथुरा में दयानन्द दीक्षा शताब्दी समारोह। मुझे हर्ष है कि दीक्षा शताब्दी समारोह बड़ी सफलता से सम्पन्न हुआ परन्तु पंजाब की हिन्दी-समस्या अभी हल नहीं हो पाई। हिन्दी के शाँतिपूर्ण अहिंसात्मक सत्याग्रह में आर्य वीरों ने बड़े उत्साहपूर्वक क्रियात्मक भाग लिया और कई वीरों ने तो अपने प्राणों की आहुतियां तक दीं। हिन्दी भारत की राष्ट्र भाषा घोषित हो चुकी है। उसके पढ़ने वाले और बोलने वालों की संख्या सब भाषा-भाषियों से बढ़-चढ़ कर है। कितने आश्चर्य और दुःख की बात है कि पंजाब सरकार द्वारा राष्ट्रभाषा हिन्दी की अवहेलना की जा रही है, उसे उचित स्थान नहीं दिया जा रहा है। पंजाब के हिन्दी विरोधियों को भली-भांति समझ लेना चाहिए कि वे अपने इस अनुचित उद्योग में, शत-प्रतिशत असफल होंगे और हिन्दी उद्यान निरन्तर फूलता-फलता तथा लहलहाता रहेगा।

इस समय विविध भाषाओं में आर्य साहित्य प्रकाशित करने की बड़ी आवश्यकता है। इसके लिए एक बड़ा प्रकाशन-भवन स्थापित होना चाहिए। वेद-शास्त्रों के आधार पर जितने ही सरल सुबोध एवं महत्वपूर्ण ग्रन्थ

प्रकाशित होंगे, उतना ही आर्य समाज का प्रचार और गौरव बढ़ेगा। भारतीय विभिन्न भाषाओं में तो ऐसे ग्रन्थरत्न प्रकाशित किये ही जाएं, विदेशी भाषाओं मे भी इस प्रकार के साहित्य की बडी आवश्यकता है। उच्च-कोटि के साप्ताहिक तथा मासिक विचार-पत्रो के प्रकाशन से भी यथेष्ट लाभ हो सकेगा। वाणी द्वारा प्रचार करने वालो की सख्या वृद्धि करने के विचार से एक वक्तव्य-कला विद्यालय की भी स्थापना हो, साथ ही पत्रकार विद्यालय की भी। इन दोनो विद्यालयो की स्थापना से वक्ताओ एव लेखको के निर्माण मे बडी सहायता मिलेगी। आर्य वीर दल सार्वदेशिक सभा के अन्तर्गत है ही। इससे भी सेवा-कार्य और प्रचार मे बडी सहायता मिल रही है। इस दल की शाखाएं ही प्रत्येक आर्य समाज और आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत होनी चाहिए। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा तो आर्य समाजो की शिरोमणि सभा है, उससे ऐसे समस्त आर्य वीर दलो का वैधानिक सबध रहेगा।

कुछ काल पूर्व आर्य कुमार सभाओ और प्रान्तीय तथा भारतीय आर्य कुमार परिषदो का भी सुदृढ संघटन था। नवोदित आर्य विद्यार्थी इन सभाओ और परिषदो मे सोत्साह भाग लेते थे। मेरी अभिलाषा और प्रार्थना है कि विद्यालयो तथा महाविद्यालयो के आर्य छात्र इन मृतप्राय सभाओ तथा परिषदो को पुनर्जीवित करे जिससे उनके द्वारा नवयुवकों मे धार्मिक भावनाओ की समुचित स्थापना हो सके। आर्य समाज को कितने ही तरुण सेवक आर्य कुमार सभाओ ने ही दिये जो कालान्तर मे सुप्रसिद्ध आर्य नेता बने। छात्र ही नही छात्राओं को भी आर्य कुमार सभाओ और परिषदो की स्थापना करनी चाहिये।

हमारा एक वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर मे है। मैं चाहता हूँ कि ऐसे आश्रम प्रत्येक जिले मे नहीं तो प्रत्येक कमिश्नरी में अवश्य स्थापित होने चाहिए। इन आश्रमों में कार्य निवृत्त-आर्य वयोवृद्ध प्रवास करें और सर्वात्मना वैदिक धर्म प्रचार कार्य मे प्रवृत्त हो। ऐसे आश्रमो की सज्ञा वैदिक आश्रम भी हो सकती है। आर्य जगत मे विचारशील विद्वानो और अनुभवी एवं कुशल कार्यकर्ताओ की कमी नहीं है। हा, उनकी शक्तियो के प्रयोग के लिये समुचित साधन सोचना पड़ेगा। मेरी सम्मति मे यह साधन वैदिक आश्रमो की स्थापना के अतिरिक्त और क्या हो सकता है।

प्रत्येक आर्य समाज के साप्ताहिक अधिवेशन बड़ी शाति तथा सफलता से होने चाहिये। इसी प्रकार सोत्साह वार्षिकोत्सव भी मनाये जाय। स्थानीय मेलो पर भी प्रचार हो। सब आर्य भाई-बहन सपरिवार बडी श्रद्धा से समाजों के साप्ताहिक अधिवेशनो और उत्सवों मे सम्मिलित हो। आर्य महिला सभाओ की स्थापना की जाये। पारिवारिक कुरीतियो और सामाजिक बुराइयो को नष्ट करने पर पूरा ध्यान दिया जाये। सज्जनो, एक निवेदन और करके मैं अपना वक्तव्य समाप्त करता हूँ। आर्य समाज ने अपने अधीन अनेक सभा-सस्थाओ को जन्म दिया है। इन सभा-सस्थाओ द्वारा विविध क्षेत्रों और विभिन्न दिशाओ मे सफलतापूर्वक कार्य सम्पन्न हुए हैं और साथ ही सस्थावाद-जन्य पद-लोलुपता भी बढी है। जैसा कि मैं प्रारम्भ मे ही कह चुका हूँ कि यदि पद-लोलुपता या अधिकार-लिप्सा की कुप्रवृत्ति शीघ्र ही नष्ट न की गयी तो उसका विषैला प्रभाव बड़ा विघातक सिद्ध होगा और आर्य समाज की प्रगति में रोडा रूप बन जाएगा। इस दिशा मे सबको भव्य-भावना के साथ सात्विक सेवावृत्ति के पुण्य-पथ पर अग्रसर होना चाहिए। पदाधिकारी बन कर ही सेवा-कार्य किया जा सकता है, इसे मैं नही मानता। सघटन की दृष्टि से सभा, समाज, समिति या संस्था के लिए पदाधिकारी अवश्य आवश्यक हैं। ये पद अधिकांश या सब सदस्य जिसे चाहे उसे प्रसन्नतापूर्वक प्रदान करें। दलबन्दी की भावना बिल्कुल न हो। शेष सब सदस्यगण बिना पदों के ही सहर्ष और

सोत्साह सेवा करते रहें। छीना-झपटी, वाद-विवाद या विग्रह-वैमनस्य की कोई आवश्यकता नहीं है। आशा है, मेरी यह विनम्र विनती अवश्य स्वीकार की जायगी। ऐसा करने से निश्चय ही आर्यसमाज का वातावरण शान्त, शुद्ध एवं सात्विक बनेगा और सर्वत्र सफलता देवी के दिव्य दर्शन होंगे। हमारा सामाजिक जीवन सार्वदेशिक सभा के संघठन का समादर करने से ही सुस्थिर एव सुदृढ़ होगा, अतएव हमारे लिए इस महान् सभा की मान-मर्यादा की रक्षा और प्रतिष्ठा करना प्रमुख कर्तव्य है।

महिलाओं और सज्जनों, आपने मेरा वक्तव्य बड़े शान्त भाव से श्रवण किया, इस कृपा के लिए मैं अपना आभार प्रकट करता हुआ और अपनी त्रुटियों के लिए क्षमा मांगता हुआ अपना भाषण समाप्त करता हूं।

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग्भवेत्॥

सभा के पचास वर्ष

(पृष्ठ १५८ का शेष)

व्यक्ति ईसाई बनने से बच गए हैं। सभा ने दोनो आंदोलनों के सम्बन्ध मे उपयोगी साहित्य छपवा कर लाखो की संख्या मे वितरित कराया है।

प्रचार-कार्य

सभा ने मदरास, असम और विदेश में आर्य समाज के सिद्धांतो तथा हिन्दी प्रचार की भी व्यवस्था की हुई है। वहाँ की भाषाओ मे आर्य समाज सम्बन्धी अन्य साहित्य भी पर्याप्त मात्रा में छप चुका है। मदरास आदि प्रांतों मे आर्य समाज बड़े आदर की दृष्टि से देखा जाता है।

विदेश के उपनिवेशों तथा ब्रिटिश गायना, डच गायना, ट्रीनीडाड, मौरीशस, फिजी, पूर्वी और दक्षिणी अफ्रीका में समाज का कार्य बढ रहा है। हिन्दी प्रचार के पठन-पाठन की ओर लोगों की रुचि बढ रही है। कुरीतियों का निवारण हो रहा है। इन उपनिवेशों में विशाल समाज मन्दिरों संस्थाओ इत्यादि के रूप में करोड़ों रुपयों की सम्पत्ति विद्यमान है।

सभा के अपने ३ विशाल भवन दिल्ली में हैं। मुख्य कार्यालय इस समय दयानन्द भवन (रामलीला मैदान के समक्ष) नई दिल्ली में है। इनका मूल्य लगभग ७-८ लाख है। सभा को आर्य जगत के विद्वानों, सन्यासियों व समाज-सेवियों सभी का सहयोग प्राप्त है।

—रघुवीर सिंह शास्त्री, सभा मन्त्री

ओ३म्

ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि
परासुव यद्भद्रं तन्न आसुव । ऋ० ॥

नवम
सार्वदेशिक आर्य
महासम्मेलन, दिल्ली
(१९६१ ई०)
के
स्वागताध्यक्ष

श्री महात्मा आनन्द स्वामी जी सरस्वती
का
स्वागत भाषण

श्री सभापति महोदय, श्रद्धेय स्वामी ध्रुवानन्द जी महाराज सरस्वती, मेरी प्यारी माताओ तथा सज्जनो !

बड़े हर्ष से आप सब का स्वागत करता हूं। यात्रा की अनेक कठिनाइयाँ सहन करके आप सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के इस नवम आर्य महासम्मेलन में पधारे हैं। यह महासम्मेलन किसी एक प्रान्त, प्रदेश या देश का सम्मेलन नहीं है बल्कि यह सर्वभौम सम्मेलन है। जहाँ मैं हर्षभरे हृदय से आपका स्वागत कर रहा हूँ वहां दुख भरे मन से यह भी कहना चाहता हूँ कि इस धरती पर रहने वाला मानव गहन गम्भीर समस्याओं की दलदल मे फस गया है, इन उलझनों को सुलझाने के लिए इस दुनियां के विद्वान् भरसक प्रयत्न कर रहे है, परन्तु अभी तक एक भी उलझन सुलझ नहीं पाई अपितु उलझने और अधिक बढ गई हैं।

कारण यह कि पत्तों को पानी दिया जा रहा है, जड़ को पकड़ा नही जा रहा, दुनिया के लोग केवल शरीर को मुख्य स्थान दे रहे हैं और आत्मा को सर्वथा भुलाया जा रहा है। चाहिए यह था कि शरीर के साथ आत्मा के भी उत्थान का प्रयत्न किया जाता। आज से लगभग एक सौ वर्ष पूर्व जगद्गुरुदेव दयानन्द जी महाराज सरस्वती ने बिगड़ती दुनियाँ के सुधार के लिए शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति का मार्ग बतला दिया था, परन्तु

दुनिया का दुर्भाग्य कि उसने भगवान दयानन्द के आदेश को नही सुना। आप सबको मिलकर इस सम्मेलन द्वारा ऊंचे स्वर से कहना है कि "दुनिया के लोगो! थम जाओ, सुनो तुम जिधर जा रहे हो वह सर्वनाश का मार्ग है, विश्वप्रेम की ज्वाला अपने हृदय मे प्रज्वलित करो और वेद के आदेश—'अज्येष्ठासो अकनिष्ठास एते सं भ्रातरो वा वृधुः सौभगाय' को समक्ष रखते हुए न किसी को बडा न किसी को छोटा समझो अपितु आपस मे भाइयो की तरह मिलकर सौभाग्य-सुख शान्ति के लिए आगे बढो।" भयकर युद्ध की तैयारियां हो रही हैं। क्या ही अच्छा हो कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से एक शिष्ट-मण्डल युद्ध की तैयारियां करने वाले देशो मे जाकर उन्हें वेद-आदेश बतलाये! कोई सुने या न सुने आर्य समाज को यह तो सन्तोष होगा कि उसने अपना कर्तव्य पूर्ण कर दिया।

यह तो हुई सार्वभौमिक उलझन को सुलझाने की बात। अब भारत तथा देश के भिन्न-भिन्न प्रान्तो की समस्याए हैं। आज से पचास वर्ष पूर्व जब सार्वदेशिक सभा की स्थापना हुई थी, तब इतनी भयंकर समस्याएं सामने नहीं थी जितनी अब आकर खड़ी हो गई हैं।

स्वराज्य प्राप्ति के पश्चात् भारतवासियों को आर्य-धर्म ही से नही आर्य संस्कृति, भारतीय संस्कृति से भी पृथक् करने के लिए बड़े दलबल के साथ विदेशियों ने कार्य प्रारम्भ कर दिया है। बम्बई मे ५५ लाख रुपये का एक भवन बन चुका है। जहा ईसाई प्रचारक भारी संख्या मे तैयार किये जा रहे हैं, जो भारत में सभी भाषाओं में विदेशी रीति-नीति का प्रचार करेंगे। इस सम्मेलन के द्वारा ऐसे पठित युवकों तथा युवतियों का आवाहन होना चाहिए जो अपने जीवन इस विदेशी उलझन को सुलझाने मे लगा दें।

एक बड़ी समस्या आचारहीनता की सामने उपस्थित हैं। क्या कोई राष्ट्र इस प्रकार से उभर सकता है? आर्यसमाज को इधर अब अधिक ध्यान देना होगा। भारत सरकार तो भवन-निर्माण करती चली जाये और आर्यसमाज चरित्र-निर्माण के कार्य को संभाल ले।

एक और समस्या गोहत्या की है। स्वराज्य के पश्चात् गोहत्या कम नहीं हुई अपितु बढ गई है। गोरक्षा के लिये कोई पग उठाना ही होगा।

भारत की अखण्डता को खण्डित करने के लिए भाषाओं का विवाद बुरी तरह उठ खडा हुआ है। बडी कठिनाई से भारत सरकार ने हिन्दी भाषा को राष्ट्रभाषा स्वीकार किया, परन्तु कही-कही इस राष्ट्रभाषा को प्रान्तीय बोलियों तथा भाषाओ के नीचे दबाया जारहा है, जो किसी भी प्रकार से उचित नही। भारत फिर टुकडे-टुकड़े हो जायगा यदि भारत की सारी युनिवर्सिटियो मे पठन-पाठन का माध्यम हिन्दी न हुआ। इसको और भी आपको उदारता से विचार करके इस उलझन को सुलझाना होगा।

और भी कितनी ही समस्याए हैं, उनपर भी आप विचार करेंगे, परन्तु एक भयकर समस्या अपने ही घर की है। हमारी जो शक्तिया ससार की शान्ति के तथा भारत के विरोधियो के सुधार मे लगनी चाहिए उनका ह्रास आपस के संघर्ष से हो रहा है। यह फूट भयकर रोग है जो सब का नाश कर देता है। देव दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश के दसम समुल्लास मे कितने मार्मिक शब्दों में लिखा है कि :—

"विदेशियों के आर्यावर्त मे राज्य होने के कारण आपस की फूट, मतभेद, ब्रह्मचर्य का सेवन करना...आदि कुकर्म है...देखो, आपस की फूट से कौरव-पाण्डव और यादवों का सत्यानाश हो गया, सो तो हो गया परन्तु अब

तक भी वही रोग पीछे लगा है। न जाने यह भयंकर राक्षस कभी छूटेगा या आर्यों को सब सुखों से छुड़ाकर दुःख-सागर मे डुबा मारेगा ? उसी दुष्ट दुर्योधन-गौत्र हत्यारे, स्वदेश विनाशक नीच के दुष्ट मार्ग मे आर्य लोग अब तक भी चलकर दु:ख बढ़ा रहे हैं। परमेश्वर कृपा करे कि यह राज-रोग हम आर्यों मे से नष्ट हो जाये"।

आओ, आर्य महासम्मेलन के इस पुण्य-पर्व पर हम सब हृदय मे प्रतिज्ञा करें कि आर्यसमाज के गौरव को तथा आर्यसमाज की एकता को हानि पहुंचाने वालों का साथ नहीं देंगे और सबके साथ हिल मिल कर देव दयानन्द के तप-त्याग और बलिदान पर खड़े आर्यसमाज की रक्षा करेंगे और आर्यसमाज के मुख्य उद्देश्य वेद-प्रचार ही में अपना तन-मन-धन अर्पण करते रहेंगे।

एक बार फिर आपका स्वागत करता हूँ—और आप सबके कल्याण के लिए परमात्मा से शुभकामना करता हूं।

ओ३म् तत्सत्

२० मई १९६१ —आनन्द स्वामी सरस्वती

—:oOo:—

सार्वदेशिक में विज्ञापन के रेट्स

	एक बार	तीन बार	छः बार	बारह बार
पूरा पृष्ठ २०×३० / ८	३०)	८०)	१२०)	२००)
आधा ,, ,,	२०)	५०)	८०)	१२०)
चौथाई ,, ,,	१२)	३०)	५०)	८०)
१/८ ,, ,,	८)	२०)	३०)	५०)

नवम आर्य महासम्मेलन के 'प्रस्ताव'

देश विदेश के सम्पूर्ण आर्य जगत की सर्वोच्च संस्था सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के स्वर्ण जयन्ती महोत्सव के अवसर पर सभा के तत्वावधान में आयोजित नवम आर्य महासम्मेलन आर्य समाज के विचार, नीति एवं कार्यक्रम कुछ आवश्यक विषयों के सम्बन्ध में घोषित करना उचित समझता है :—

विश्व शान्ति

संसार के विभिन्न राष्ट्रों में आतंक और अशान्ति का जो वातावरण देखा जा रहा है, और मानव समाज के संहार करने वाले विविध अस्त्र-शस्त्रों का जो निर्माण और संचय किया जा रहा है, उसका मूल कारण इस सम्मेलन की राय में यह है कि मानव समाज का जो संघटन विविध देशों में है, उसका आधार प्रायश: अधि-भौतिक (मैटीरियलिस्टिक) है। मनुष्य समाज का दृष्टिकोण केवल ऐहिक सुखों की प्राप्ति की ओर ही केन्द्रित रहता है और प्रायः सभी देशों के शासनाधिकारी अपने अपने देश के आर्थिक विकास एवं प्रसार के निमित्त दूसरे देशों के हितों की उपेक्षा और अवहेलना करने वाली राष्ट्रिय स्पर्धा की भावनाओं से प्रेरित होते हुए अपनी नीति को निर्धारित करते हैं, जिसका अनिवार्य परिणाम विश्वकलह और विश्व अशान्ति का बीजारोपण है।

मानव समाज ने आपको ऋग्वेद के शब्दों में जिन 'कृत्रिमाणि भीक्षा' अर्थात् स्वोत्पादितभय (सेल्फ क्रियेटिड फीयर्स) का शिकार बना लिया है। उनसे बचने और विश्व शान्ति की स्थापना के लिए इस सम्मेलन की सम्मति में दो उपाय हैं:—

एक तो ऋग्वेद में प्रतिपादित विश्व मानुषता (वर्ल्ड सिटीजनशिप) के आधार पर सार्वभौम चक्रवर्ती राज्य (वर्ल्ड गवर्नमैन्ट) की स्थापना और दूसरा यह मार्ग है

जिसे ऋषि मुनियो ने अपनी दिव्य दृष्टि एवं वैदिक ज्ञान से ढुढ निकाला था, अर्थात मानव समाज का सघटन अधिभौतिक आधार पर न रहकर उसकी आधार शिला आध्यात्मिक हो, जो मनुष्य के केवल स्थूल शरीर और उसकी आवश्यकताओ की पूर्ति पर ही दृष्टि न रखता हो, अपितु मनुष्य के आत्मा और उसके विकास पर भी दृष्टि रखता हो।

भारत शासन की इस इच्छा तथा यत्न की कि विश्व में शान्ति रहे, यह सम्मेलन सराहना करता है, यद्यपि उनकी कई कार्य प्रणालियो का समर्थन नही किया जा सकता।

पारित २०-५-६१

प्रस्तावक— प्रि० महेन्द्र प्रताप शास्त्री
अनुमोदक— सेठ प्रताप सिंह जी शास्त्री
सेठ कृष्ण लाल पोदार

भारतीय सीमाओं पर अतिक्रमण

भारत की निर्विवाद सीमाओं पर जो अतिक्रमण हुए हैं और हो रहे हैं उन के प्रतिकार के लिये अभी तक कोई ऐसा पग नहीं उठाया गया है जो सफल दृष्टि गोचर हो। करोड़ों भारतीय जनता की भावना है कि इसके प्रतिकार के लिये भारत शासन कोई सुदृढ पग उठाये। कहने की आवश्यकता नही कि भारत की सीमा को अक्षुण्ण रखने के लिये उस प्रकार का पग जब कभी भी और जहा भी भारत शासन उठावे तो प्रत्येक आर्य नर नारी आबाल बृद्ध हर प्रकार के बलिदान के लिये सन्नद्ध रहेगा।

पारित २०-५-६१

प्रस्तावक— श्री मेहर चन्द श्रीमान
अनुमोदक—स्वामी सत्यमुनि जी

अखण्ड शक्ति सम्पन्न केन्द्रीय शासन

भारत की परतन्त्रता को समाप्त करने और स्वराज्य लाने के लिये वातावरण पैदा करने में और उन कमजोरियो और कुरीतियो को जिनके कारण परतन्त्रता आयी, दूर करने मे ऋषि दयानन्द और आर्य समाज का बडा हाथ रहा और आर्य पुरुषो ने उसके लिये जो बलिदान दिये, वह भी बहुत सराहनीय थे। अतः ऐसे राज्य शासन की पद्धति होना, जैसे कि प्रान्तो को राज्यो का रूप देना, जिससे जनता मे विच्छेदक मनोवृति (फिसीफरेस टेडेंसी) को प्रोत्साहन मिले और देश एवं राज्य के मध्य विभक्ति निष्ठा (डिवाइडिड लायलटी) हो, यह देखकर इस सम्मेलन को खेद होना स्वाभाविक है।

इस सम्मेलन की निश्चित सम्मति है कि भारत के भावी विभाजन की सम्भावना को भाषावाद और प्रदेशवाद तथा प्रदेशो के सीमा सम्बन्धी आदि अनेक अत्यन्त कटु विवादो को सदा के लिये दूर करने का एक ही उपाय है और वह यह है कि भारत की राज्य पद्धति अखण्ड शक्ति सम्पन्न केन्द्रीय शासन ही हो।

प्रस्तावक—श्री घनश्याम सिंह गुप्त
अनुमोदक—श्री नरदेव स्नातक

जातिवाद और सम्प्रदायवाद

आर्य समाज जन्ममूलक जातिवाद और सम्प्रदायवाद का सदा से विरोधी रहा है। वास्तव में यथोचित और क्रियात्मक रूप से इन पर किसी ने कुठार चलाया तो वह आर्य समाज है। परन्तु खेद है कि अब इन कुरीतियो को कुछ नये ढग से प्रोत्साहन मिलने लगा है। प्रायः देखा जाता है कि राजनैतिक दलों तथा अन्य संगठनों द्वारा भी इनको किसी न किसी प्रकार से बढ़ावा मिलता है ताकि चुनाव में विजय प्राप्त की

जा सके। यह सम्मेलन सभी राजनैतिक दलों तथा अन्य संगठनों से आग्रह करता है कि वे राष्ट्रहित में ऐसी संकीर्ण भावनाओं से दूर रहें।

प्रस्तावक—पं० वासुदेव शर्मा
अनुमोदक—वटकृष्ण वर्मा

शिक्षा सम्बन्धी

शिक्षा के क्षेत्र में आर्य समाज की धारणा है कि—

१—उच्च से उच्च शिक्षा पाने का सभी नरनारी को अपनी योग्यता, क्षमता और विशेषताओं की परिधि के भीतर, समान अधिकार और अवसर मिलना चाहिये।

२—छात्र छात्राओं का सह शिक्षण अवांछनीय है।

३—यह सम्मेलन आर्यशिक्षणालयो के संचालकों से निवेदन करता है कि वह अपने शिक्षाक्रम में शिल्प तथा गोकृष्यादि के शिक्षण की विशेष व्यवस्था करे।

४—भारत के भावी नागरिकों का नैतिक स्तर गिरने न पावे इसके लिए यह आवश्यक है कि बालक और बालिकाओ को उनके शिक्षाकाल में धार्मिक शिक्षा दी जाए। शासकीय और अर्ध शासकीय विद्यालयो मे धार्मिक शिक्षा असाम्प्रदायिक हो यह भारत की वर्तमान शासन पद्धति की माँग है।

इस सम्मेलन की राय में असाम्प्रदायिक धार्मिक शिक्षा वेदों के आधार पर ही हो सकती है। वेदो के निर्माणकाल के बारे में आर्यसमाज और विशाल हिन्दू समाज की राय को छोड़ भी दिया जाय तो इसमें संसार के सभी विद्वान संहमत हैं कि मनुष्य समाज का सबसे प्रथम ग्रन्थ ऋग्वेद है जिसने मनुष्य को प्रथम मानव बनाया और जबकि मनुष्य समाज सम्प्रदायों में विभक्त नहीं हुआ था।

देश में आर्य समाज की जो अनेक शिक्षण संस्थाएं हैं इस सम्मेलन को यह भी इच्छा है कि उनका आपस में सम्बन्ध स्थापित किया जावे। इसके लिए यह आवश्यक प्रतीत होता है, कि एक विशिष्ट विश्वविद्यालय की स्थापना हो। इस निमित्त सार्वदेशिक सभा की विद्यार्य सभा ने जो एक प्रारूप बनाया है उसकी चर्चा आर्य जगत में की जाये और आर्य विद्वानों द्वारा उसके अध्ययन के पश्चात उचित और आवश्यक सशोधन के साथ इसे अधिनियमित करने का यत्न किया जाय।

प्रस्तावक—लक्ष्मीदत्त जी दीक्षित
अनुमोदक—प्रिंसिपल ईश्वर दास जी

समाज सुधार

आर्य समाज ने समाज सुधार के क्षेत्र मे जो कार्य किए हैं, वे जगत् विख्यात है। उनको विस्तार से तो चर्चा करना आवश्यक नहीं। इतना कह देना पर्याप्त है कि जहाँ आर्य समाज ने विद्याध्ययन, मन्दिर प्रवेश तथा वैदिक धर्म का अनुयायी होने के लिए मनुष्यमात्र के समान अधिकार का प्रतिपादन किया है, वहाँ उसने निरर्थक छुआछूत, स्त्री जाति को पर्दे के भीतर बन्द रखना दहेज प्रथा आदि अनेक सामाजिक कुरीतियो के विरुद्ध भी सफल संघर्ष किया है।

परन्तु इस सम्मेलन को इस बात का खेद है कि जहां पुरानी कुरीतियाँ प्रायः दम तोड़ रही हैं वहाँ नई कुरीतियाँ आ रही हैं और समाज को दूषित कर रही हैं। उदाहरणार्थ "स्त्रियो के पहनावे में अम्मर्यादित बेपर्दगी का आना, विवाहादि सामाजिक समारोहों मे होनेवाली फिजूल खर्ची, अश्लील चल चित्र तथा विज्ञापन, सहशिक्षा, सांस्कृतिक कार्य क्रमो के नाम पर भद्दे ढंग के नृत्य आदि इस प्रकार की नई कुरीतियाँ हैं जिनका हटाया जाना

अत्यन्त आवश्यक है। आर्य समाज को और विशाल हिन्दु समाज को इस ओर ध्यान देना होगा।

प्रस्तावकः—श्रीमती अक्षय कुमारी
अनुमोदक.—श्रीमती किरणमयी देवी

भाषा सम्बन्धी विचार

भारत के संविधान मे भाषा सम्बन्धी जो प्रावधान (अनुच्छेद ३४३. से ३५२ तक) है उनकी यह सम्मेलन सराहना करता है विशेषकर जहाँ हिन्दी को केन्द्र की राज्य भाषा घोषित किया गया है।

इस सम्मेलन की राय में हिन्दी और भारत की अन्य प्रादेशिक भाषाओं के बीच किसी भी प्रकार की प्रतिद्वन्दिता किंवा संघर्ष के लिए कोई उचित कारण नही है। वास्तव में इनका हिन्दी के साथ अनन्य सम्बन्ध है, एक के विकास मे दूसरे का विकास निहित है। भारत की प्रादेशिक भाषाओं का विकास इष्ट और वाछनीय है।

हिन्दी की प्रतिद्वन्दिता यदि किसी से है तो वह अंग्रेजी भाषा से है जो कि अंग्रेजों के शासनकाल में राज्यसत्ता के वल पर लादी गई थी और जिससे भारत की सभी भाषाओं को कई अवश्यक क्षेत्रो मे कुंठित कर दिया है। उस मे भी अंग्रेजी भाषा के बहिष्कार की भावना कदापि नही है। देश के प्रबन्ध शासन विधान शिक्षा आदि क्षेत्रो में अंग्रेजी के स्थान पर हिन्दी और यथास्थान प्रादेशिक भाषाओं का प्रयोग किया जावे। विज्ञान आदि विषयों के (पोस्ट ग्रेजुऐट) स्नातकोत्तर अध्ययन के लिए अथवा वाह्य जगत के उसी प्रहार के संसर्ग के लिए अंग्रेजी भाषा के अध्यन या प्रयोग पर किसी प्रकार का विरोध नही हो सकता है। शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी भाषा बनी रहे यह असह्य है, और विद्या के प्रसार मे बाधक है। बालकों की प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा उनकी मातृभाषा में हो, और मातृभाषा का निर्धारण वे स्वयं अथवा उनके संरक्षक करें यही उचित और स्वाभाविक है। यह अनुभव जन्य तथ्य है कि किसी भी भाषा को बलात् ठूसना उस भाषा के प्रति घृणा उत्पन्न करना है।

लिपी और वर्णमाला के सम्बन्ध मे कुछ कहना आवश्यक प्रतीत होता है। भारत के प्रायः सभी प्रादेशिक भाषाओं के अक्षरो की वर्णमाला एक ही समान है और यह ब्राह्मी वर्णमाला अत्यन्त युक्ति युक्त और वैज्ञानिक है इस वर्णमाला को ससार की सर्वाधिक जनसंख्या की वर्णमाला होने का सौभाग्य प्राप्त है। यह बात लिपि के बारे मे नहीं कही जा सकती। भारत मे प्रादेशिक भाषा भेद के साथ लिपी भेद भी है। हिन्दी और मराठी की लिपि में जो पहिले भेद था वह अब नही रहा, दोनों की लिपि एक ही हो गई है। देवनागरी, बगाली, गुजराती, गुरमुखी, उड़िया आदि ये लिपियाँ प्रायः एक समान हैं और अनुकूल वातावरण में इनका समन्वय होना कठिन नही हैं।

राष्ट्रपति जी द्वारा नियोजित खेर कमेटी के उस प्रतिवेदन से यह सम्मेलन सहमत है कि भारत की सभी भाषाओं के लिए देवनागरी लिपि ऐच्छिक कर दी जाये। साथ ही सरकार से यह भी अनुरोध करता है कि रोमन अंकों के स्थान मे देवनागरी अंकों का ही प्रचलन स्वीकार किया जाय।

प्रस्तावकः—श्री रघुवीरसिंह जी शास्त्री
अनुमोदकः—प्रो० शेर सिंह जी

वैदिक धर्म मनुष्यमात्र के लिए

आर्य समाज सदा इस बात का पोषक रहा है कि प्रत्येक व्यक्ति को धार्मिक भावना से प्रेरित होकर धर्म मत परिवर्तन की स्वतंत्रता चाहिये और इसी सिद्धान्त के अनुसार उसने पवित्र वैदिक धर्म का द्वार

मनुष्य मात्र के लिये खोला यद्यपि इसके लिये उसे अपने ही लोगो के साथ भी संघर्ष करना पड़ा। हर्ष का विषय है कि इसे अब वैदिक धर्मावलम्बी भाई (अन्य हिन्दू भाई) भी मानने लगे है। आशा है इस कार्य के लिए वेद के मानने वाले सभी भाई अधिक ध्यान देंगे और अधिक उत्साह से काम करेंगे।

प्रस्तावक:—मेहर चन्द धीमान्

अनुमोदक:—आचार्य प्रियव्रत

विदेशी ईसाई मिशनरियों का अनुचित व्यवहार

मध्य प्रदेश शासन द्वारा नियुक्त नियोगी समिति और मध्य भारत द्वारा नियुक्त रेगे समिति के प्रतिवेदनो से यह स्पष्ट सिद्ध हो गया है कि ईसाई मिशनरियों द्वारा विशेष कर विदेशी मिशनरियों द्वारा पहाडी और जगली इलाको मे विदेश से आये हुए करोडो रुपये के व्यय से जो धर्म परिवर्तन का कार्य किया जा रहा है इसके पीछे केवल सच्ची धार्मिक भावना नही है अपितु इनकी ये गति विधियाँ राजनैतिक हेतु से ईसाइयो की संख्या वृद्धि के लिए है और इसमे ऐसे तरीकों का अवलम्बन किया गया है जिन्हे किसी भी अ श मे राष्ट्रीय दृष्टि से उचित नही कहा जा सकता। इससे भारत की सुरक्षा पर जो भयावह प्रभाव पड रहा है उसकी भी चेतावनी उन प्रतिवेदनों मे विद्यमान है।

आर्य समाज को तो इस प्रकार अनुचित कार्यवाहियो का पहिले से ज्ञान था और वह साधारण जनता को और यदाकदा शासको को भी सचेत करता रहा।

जो सज्जन यह कहते है कि संसार की प्रगति मे वह समय आ गया है जब कि किसी राष्ट्र की सुरक्षा पर वहाँ के निवासियों की धार्मिक भावना का कोई प्रभाव नही पड़ता उनसे यह सम्मेलन सहमत नही है। अब भी ससार के अनेक राज्यों का निर्माण और स्थिति धार्मिक भावना के आधार पर है।

यह सम्मेलन आशा करता है कि इन सब बातो की ओर भारत शासन और भारतीय जनता समुचित ध्यान देंगे। यह सम्मेलन जहाँ इस दिशा मे कार्य करने वाले सब सगठनों से अनुरोध करता है कि वे अपना सारा पुरुषार्थ सयुक्त करे वहाँ विशाल हिन्दू समाज से राष्ट्र रक्षा के इस पवित्र कार्य मे पूरी शक्ति से जुट जाने की अपील करता है।

सरकार को भी ऐसी व्यवस्था करनी चाहिए कि विदेशी ईसाई मिशनरियो को विदेश से मिलने वाला धन सरकार द्वारा प्राप्त हो और उसी के नियन्त्रण मे खर्च हो।

प्रस्तावक:—घनश्याम सिंह गुप्त

अनुमोदक —सेठ जुगल किशोर बिडला

पंजाब की भाषा समस्या

जो सज्जन यह कहते है कि सारा पजाब एक भाषी राज्य है और सारे पजाब की एक ही भाषा है अर्थात् पजाबी है, उनकी इस बात को यह सम्मेलन सर्वथा तथ्य के प्रतिकूल समझता है।

हरयाणा और पहाड़ी क्षेत्र की भाषा पूर्णरूप से हिन्दी है और जालन्धर आदि की हिन्दी और पजाबी दोनों ही भाषाये है। इस प्रकार लगभग ७० प्रतिशत की भाषा होने के कारण हिन्दी ही पजाब की मुख्य भाषा है।

आर्यसमाज ने अपना सत्याग्रह शासन के उच्चाधिकारियो द्वारा घोषित सदभावना के उत्तर मे पूर्ण सद्भावना का प्रदर्शन करके स्थगित किया था। हमारे

पक्ष के औचित्य को मान कर ही शासन ने दो शिक्षा शास्त्रियों की सद्भावना समिति नियुक्त की जिसके प्रतिवेदन पर विचार करने तथा भाषा-समस्या के समाधान के लिए गाडगिल समिति नियुक्त की गई। इस समिति की कुछ बैठकें भी हुई परन्तु खेद है कि इस समिति का कार्य भी प्राय: समाप्त ही हुआ दीखता है।

•

पंजाबी क्षेत्र मे हिन्दी को उसका उचित स्थान नही दिया जा रहा है। सरकार ने पंजाबी भाषा को गुरुमुखी लिपि के साथ बाँध दिया है। इसलिए यह सम्मेलन जिला स्तर तक शासन की भाषा के सम्बन्ध मे पंजाब सरकार द्वारा पास किये गए विधेयक का विरोध करता है। जहां तक कि उसका सम्बन्ध पंजाबी क्षेत्र से है यह सम्मेलन उसी संदर्भ मे हाई कोर्ट के आदेश जिसके अनुसार पंजाबी क्षेत्र मे सब काम पंजाबी भाषा तथा गुरुमुखी लिपि मे होगा उसका भी प्रबल विरोध करता है। अत: पंजाबी के साथ शासन का काम पंजाबी क्षेत्र मे हिन्दी मे भी होना चाहिये। पंजाबी भाषा के प्रयोग के लिए शिक्षा तथा शासन मे गुरुमुखी और देवनागरी प्रत्येक स्तर पर ऐच्छिक विषय कर दी जाय।

हिन्दी क्षेत्र की क्षेत्रीय समिति ने दिनांक ४ मई १६६० को सर्वसम्मति से यह निश्चय किया कि उस क्षेत्र मे पंजाबी के पठन-पाठन की अनिवार्यता हटा दी जाये। इस पर भी कोई आचरण नही किया गया यद्यपि इसके लिए न केवल पंजाब शासन अपितु राज्यपाल का भी नियम के अनुसार विशेष उत्तरदायित्व है। यह क्षेत्रीय योजना की पक्षपात पूर्ण अवहेलना है जो शासन की बार बार घोषित नीति के विरुद्ध है।

तीन वर्ष से अधिक की अवधि में भी यह कार्य पूर्णरूप से सफल नही हुआ। इसका मुख्य कारण यह है कि यह प्रश्न सांस्कृतिक और शैक्षणिक स्तर पर व्यवहृत नही किया जा रहा है बल्कि राजनैतिक स्तर पर निबटाया जा रहा है। आर्यसमाज तो विशुद्ध सांस्कृतिक और धार्मिक संस्था होने के कारण अपना कार्यक्रम उसी परिधि के भीतर ही बना सकता है और वह स्थिति सार्वदेशिक भाषा स्वातंत्र्य समिति की भी है। सरकार के रवैये से यह स्पष्ट है कि पंजाब की भाषा समस्या का समाधान अब राजनैतिक स्तर पर ही हो सकेगा।

राजनैतिक क्षेत्र में तो शक्ति का स्रोत वोट है और वही शक्ति हिन्दी प्रेमियो को काम में लानी होगी। अत प्रत्येक हिन्दी प्रेमी यह ध्यान रखे कि आगामी चुनाव मे यह अपना वोट उसी व्यक्ति को दे जिससे यह आशा हो कि वह पंजाब मे भाषा स्वातंत्र्य की प्राप्ति तथा हिन्दी को उसका उचित स्थान दिलाने के लिए प्रयत्नशील होगा।

प्रस्तावक.—प्रो० शेरसिंह जी
अनुमोदक—ज्ञानी पिंडी दास
लाला रामगोपाल

साहित्य प्रकाशन

महर्षि दयानन्द के स्वीकार पत्र मे अंकित आदेश के अनुसार साहित्य प्रकाशित करना प्रचार का एक प्रमुख साधन है। नवम् आर्य महासम्मेलन की सम्मति में यह अत्यन्त आवश्यक है कि वैदिक धर्म और आर्य समाज के प्रचार के लिये देश और विदेश की सब भाषाओं मे सस्ता और उपयोगी साहित्य प्रकाशित कराने की योजना बनाई जाय और साहित्य प्रकाशन द्वारा महर्षि के सन्देश को सारे भारत में और अन्य देशों में भी पहुंचाने का यत्न किया जाये। यह सम्मेलन यह आवश्यक समझता है कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा एक पृथक साहित्य प्रकाशन विभाग की स्थापना करे और उसके लिये एक

लाख रुपया एकत्रित करने का यत्न किया जाये और कार्य आरम्भ किया जाये।

(क) आर्य समाज के सिद्धान्तों के सम्बन्ध में जो खण्डनात्मक साहित्य प्रकाशित हुआ है उसको एकत्र किया जाये और उन पुस्तकों के उत्तर विद्वानो द्वारा लिखा कर प्रकाशित कराये जायें।

(ख) ऐसी पुस्तकें जिन से वेदो की मान्यता और प्राचीन सांस्कृतिक और धार्मिक भावनाओ पर आघात पहुंचता है जैसे वेद अपौरुषेय नही है और केवल कुछ हजार वर्षों के बने हुए हैं उनका भी उत्तर लिखवा कर प्रकाशित कराया जाये।

(च) प्रचलित पश्चिमी विज्ञान और तत्त्वज्ञान मे जो आध्यात्मिक विचार-धारा पर आघात किया गया है और जिससे भौतिकवाद और नास्तिकवाद की नई वृद्धि होती है उनके निराकरण के लिये भी उपयोगी और अच्छा साहित्य प्रकाशित कराया जाये।

प्रस्तावकः—यश, उप शिक्षा मन्त्री,
पंजाब राज्य

अनुमोदकः—आचार्य विश्वश्रवा
लाला रामगोपाल

चरित्र-निर्माण

प्रचलित भ्रष्टाचार एवं अनैतिकता को दृष्टि मे रखते हुए यह सम्मेलन आर्यों और आर्य समाजो से अनुरोध करता है कि वह चरित्र निर्माण के सम्बन्ध में क्रियात्मक कार्यक्रम बनाकर कार्य प्रारम्भ करे। चरित्र निर्माण सम्बन्धी प्रतिज्ञा पत्रों पर हस्ताक्षर करें और कराये और जनता की मनोवृत्ति को सुधारने का प्रयत्न करे। उससे स्वराज्य प्राप्ति के साथ साथ हमारा जनता के साथ अधिक घनिष्ठ सम्पर्क स्थापित हो सकेगा और सुराज्य की सभावना भी हो सकेगी।

जिस प्रकार आर्य समाज ज्ञान और मान की रक्षा के लिए सदैव प्रयत्नशील रहा है उसी प्रकार नैतिक उत्थान के लिए प्रयत्नशील होना आवश्यक है। उपरी लिखित प्रस्ताव में निर्दिष्ट विचारधारा को क्रियात्मक रूप देने के लिए यह सम्मेलन भारतीय सरकार के रेडियो विभाग, सिनेमा कम्पनियो, समाचार कम्पनियो और समाचार पत्रों विशेषतः आर्य समाजियो द्वारा संचालित समाचार पत्रो के संचालकों से निवेदन करता है कि वह नैतिक पतन को उत्तेजना देने वाले अश्लील चित्रो आदि का प्रकाशन न किया करे।

प्रचलित भ्रष्टाचार अनैतिकता को दृष्टि मे रखते हुए यह नवम आर्य महासम्मेलन व्यवसाय मे लगे हुए नागरिको से अनुरोध करता है कि वे खाने पीने की चीजों और औषधियो में मिलावट की कुप्रथा, कम मापने कम, तोलने की कुटेव और खोटे सिक्के के उपयोग की दूषित मनोवृत्ति को परित्याग करके ईमानदारी से अपने व्यवसाय को और व्यवसाय द्वारा राष्ट्रहित की नीति को लक्ष्य मे रखे केवल स्वार्थसिद्धि को नही।

न्यायालयों मे जो नागरिक भाग लेते हैं या जिनको वहाँ जाने की आवश्यकता होती है उन्हे रिश्वत देने व लेने के अपराध से बचे रहने का पूरा प्रयत्न करते रहना चाहिए और शपथ की महत्ता को लक्ष्य में रख कर ईश्वर को न्यायकारी और व्यापक मानकर पाप से बचने का प्रयत्न करना चाहिए।

भारत मे जो नागरिक सरकारी या अन्य नौकरियों में हैं उनको निम्नलिखित सेवा सूत्र पंचशील पर ध्यान रखना चाहिए :—

सेवा—सूत्र [पंचशील]

सद्‌भावना (ईमानदारी)

१. उत्कोच (घूस रिश्वत) त्याग

२. पक्षपात-निर्मूलन

३. कर्तव्य पालन

४. प्रवचकता एवं असत्य भाषण त्याग

५. आदेश पालन और अनुशासन

व्यवहार कुशलता (कार्यक्षमता)

१. आशु कार्यकारिता

२. विशुद्धता

३. यथा तथ्य (ज्यो का त्यों)

४. विनयशीलता

५. समय निष्ठा

१—राजनीतिक जगत में वोट के महत्व को लक्ष्य में रखकर ईमानदारी से वोट का प्रयोग होना चाहिए और यह बात ध्यान मे रखनी चाहिए कि वोट राष्ट्र की सम्पत्ति है इसका दुरुपयोग आपत्ति है। महर्षि दयानन्द की इस भावना का कि समति का अधिकार केवल सदाचारी को ही देना चाहिए बलपूर्वक प्रचार किया जाय।

"महाजनो येन गत सपन्था" के सिद्धान्तानुसार यह सम्मेलन इस स्थिति मे निश्चित करता है कि नेतृवर्ग नैतिकता इत्यादि को अंगीकार कर भारत के कोने कोने में स्थित आर्य समाजो को चरित्र और नैतिकता की शिक्षा मे प्रोत्साहित करेंगे।

प्रस्तावकः—पूर्णचन्द
अनुमोदक—महात्मा आनन्द स्वामी

व्यायाम शालाएं

नवम आर्य महासम्मेलन का निश्चित मत है कि आर्य समाज के छटे नियम की पूर्ति के लिए प्रत्येक आर्य समाज कम से कम एक व्यायाम शाला अवश्य खोले तथा शारीरिक उन्नति के अर्थ अपने सदस्यो एव सम्बन्धित नवयुवको को सदाचार पूर्वक व्यायाम करने की प्रेरणा करे।

प्रस्तावक—रणञ्जय सिह
अनुमोदक—आनन्द प्रिय
बडोदा

चिकित्सा

यह सम्मेलन भारत सरकार से आग्रहपूर्वक प्रार्थना करता है कि वह आयुर्वेदीय चिकित्सा को ही राष्ट्रीय चिकित्सा पद्धति के रूप में स्वीकार करे उसे सब प्रकार से प्रोत्साहित करे।

प्रस्तावकः—आचार्य भगवान देव
अनमोदकः—कविराज हरनाम दास बी०ए०,
समर्थकः—वैद्य मूलचन्द

★ ओ३म् ध्वज ★

ओ३म् ध्वजों के लिए आर्य जनता की मांग की पूर्त्यर्थ सभा ने स्वयं ओं ध्वज निर्माण का कार्य अपने हाथ में ले लिया है और उसने शुद्ध खादी के निम्न डिजाइनों के ओंध्वज निर्माण करा लिए हैं। उनको लागत मूल्य पर आर्य जनता को पहुंचाने का सभा ने निश्चय किया है। अतः आर्य जनता को उन्हे तत्काल मंगाकर अपने समाज मन्दिरों और आर्य संस्थाओं पर लगाने चाहिएं।

ओ३म् ध्वज २७ इंच ×४०॥ इंच मूल्य २॥)
ओ३म् ध्वज ३६ इंच ×५४ इंच „ ५)
ओ३म् ध्वज ४५ इंच ×७०॥ इंच „ ६)

मंगाने की दशा में १) अगाऊ भेज देवें।

व्यवस्थापक—सार्वदेशिक सभा पुस्तक भंडार, दयानन्द भवन, नई दिल्ली-१

श्रीयुत स्व० पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति के ग्रन्थ

१	मेरे पिता	...	मूल्य	४-००
२.	सरला की भाभी	...	,,	२-००
३.	आत्म बलिदान	...	,,	३-००
४.	जमींदार	...	,,	२-००
५.	महर्षि दयानन्द जीवनी	...	,,	२-००
६	सम्राट रघु	...	,,	१-२५
७	स्वराज्य और चरित्रनिर्माण	...	,,	१-२५
८.	स्वतन्त्र भारत की रूपरेखा	...	,,	१-५०
९.	दिल्ली के स्मरणीय बीस दिन	...	,,	०-५०
१०.	चिकित्सा के चक्रव्यूह	...	,,	०-५०
११.	नौकर शाही जेल के अनुभव	...	,,	१-००
१२.	सरला सजिल्द	...	,,	३-५०
१३.	वक्तृत्व कला की प्रगति	...	,,	१-२५

मिलने का पता :—

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द भवन, नई दिल्ली-१.

साप्ताहिक सार्वदेशिक के ग्राहक बनिये !

* भविष्य में जो महान् कार्य आर्यसमाज करने जा रहा है उनके लिए यह आवश्यक समझा गया कि सार्वदेशिक सभा का अपना एक प्रभावशाली पत्र हो, अतः गंभीरतापूर्वक यह निश्चय किया गया है कि इसे स्थाई कर दिया जाए।

* पत्र की उपयोगिता बढ़ाने के लिए इसकी पृष्ठ संख्या भी ८ के स्थान पर १२ की जा रही है और मूल्य १२ नये पैसे, वार्षिक ६) पूर्ववत ही रखा गया है।

* अब यह आर्य जनता के हाथ में है कि वह इसे भली भांति संम्भाले और भारी संख्या में ग्राहक बना कर इसे आत्मनिर्भर बनाएं।

* आर्य समाजें प्रति सप्ताह १० प्रति कम से कम मंगाएं। इसके लिए उन्हें केवल ४) मासिक देना पड़ेगा। २० प्रति प्रति सप्ताह मंगाने वालों को केवल ७) मासिक देना होगा। इस प्रकार आर्य समाजें अपने-अपने क्षेत्र में बहुत थोड़े से व्यय में प्रभावशाली प्रचार कर सकेंगी।

* हमारी प्रार्थना है कि इन पंक्तियों को पढ़ने के साथ ही ६) मनिआर्डर द्वारा आज ही भेजिए ! और अपने परिचित इष्टमित्रों को भी ग्राहक बनाकर अपने कर्त्तव्य का पालन कीजिए—

विनीत

रघुवीर सिंह शास्त्री

मन्त्री

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

२५ आर्यसमाज और सनातनधर्म ।=)

२६ आर्यसमाज की नीति ।=)

श्री पं इन्द्र विद्यावाचस्पति कृत

२७ आर्यसमाज का इतिहास सजिल्द (प्रथम भाग) ४)

२८ ,, ,, (द्वितीय भाग) ५)

२९ आर्यवीर दल बौद्धिक शिक्षण ।=)

श्री रघुनाथप्रसादजी पाठक कृत

३० आर्य जीवन गृहस्थ धर्म ॥=)

३१ कथा माला ॥।)

३२ सन्तति निग्रह १।)

३३ नया संसार ≡)

३४ आदर्श गुरु शिष्य ।–)

श्री पं० धर्मदेव जी विद्यामार्तण्ड कृत

३५. स्त्रियों का वेदाध्ययन अधिकार १।)

३६ भक्ति कुसुमाञ्जली ॥)

३७ हमारी राष्ट्र भाषा व लिपि ।–)

श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द कृत

३८ आर्य समाज के महाधन २॥)

३९ वेद की इयत्ता १॥)

श्री लाला ज्ञानचन्द कृत

४० धर्म और उसकी आवश्यकता १)

४१ वर्ण व्यवस्था का वैदिक रूप १॥)

४२ इजहारे हकीकत (उर्दू में) ॥=)

४३ सत्य निर्णय १॥)

विविध

४४ अरब में मेरे सात साल (पं० रुचिराम जी) ।)

४५ विरजानन्द प्रकाश (भीमसेन शास्त्री) २)

४६ वेद रहस्य (ले० महात्मा नारायण स्वामी) २)५०

पं मदन मोहन विद्यासागर कृत

४७ जन कल्याण का मूल मन्त्र ॥)

४८ संस्कार महत्व ॥।)

४९ वेदों की अन्त साक्षी का महत्व ॥=)

५० आर्य घोष ॥)

५१ आर्य स्तोत्र ॥)

अन्य विद्वानों कृत

५२ स्वाध्याय संदोह (स्वा वेदानन्द तीर्थ) ४)

५३ स्वराज्य दर्शन (पं० लक्ष्मीदत्त दीक्षित) १)

५४ राजधर्म (महर्षि दयानन्द सरस्वती) ॥)

५५ भूमिका प्रकाश (संस्कृत में)
(पं० द्विजेन्द्रनाथ शास्त्री) १॥)

५६ एशिया का वेनिस (स्वा० सदानन्द) ॥।)

५७ दयानन्द सिद्धान्त भास्कर
(श्री कृष्णचन्द्र विरमानी) १॥)

५८ भजन भास्कर (संग्रहकर्ता पं० हरिशंकर शर्मा कविरत्न) १॥।)

५९ सनातन शुद्धिशास्त्र (गोविन्द प्रकाश शास्त्री) २)

६० आर्य डाइरेक्टरी १।)

६१ सार्वदेशिक सभा का २७ वर्षीय कार्य विवरण
सजिल्द २)

६२ आर्य पर्व पद्धति (पं० भवानी प्रसाद कृत) १।)

पं० राजेन्द्र (अतरौली) कृत

६३ ऋषि दयानन्द के पुण्य संस्मरण १ ३७

६४ गीता विमर्श ॥।)

ईसाई प्रचार निरोध साहित्य

६५ ईसाई षड्यन्त्र ।)

सार्वदेशिक सभा पुस्तक भण्डार, दयानन्द भवन, नई दिल्ली—१.

पुरी प्रिन्टर्स जवाहर नगर दिल्ली में मुद्रित व रघुनाथ प्रसाद जी पाठक मुद्रक और प्रकाशक के लिये सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द भवन, नई दिल्ली-१ से प्रकाशित।


ओ३म्
कृण्वन्तोविश्वमार्यम्
सार्वदेशिक
श्री
स्वामी
ध्रुवानंद
जी
महाराज
वर्ष ३९
अंक २

॥ ओ३म् ॥
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

वार्षिक मूल्य ६) विदेश से वार्षिक ८) या १२ शिलिङ्ग

वर्ष ३७] सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०६० अप्रैल १९६१ वैशाख २०१८ [अक २

विषय-सूची

● सम्पादक
रघुवीरसिंह शास्त्री, सभा मन्त्री

● सहायक सम्पादक
रघुनाथप्रसाद पाठक

● प्रकाशक व मुद्रक
रघुनाथ प्रसाद पाठक

● कार्यालय
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द भवन, नई दिल्ली
फोन . २४७७१

● मुद्रक
पुरी प्रिन्टर्स २६-ए, जवाहर नगर, दिल्ली
फोन २३०४२

सार्वदेशिक

सम्पादकीय

यह निर्णायक अवसर

१६ मई से २१ मई तक दिल्ली मे सार्वदेशिक सभा का स्वर्ण जयन्ती महोत्सव व नवम आर्य महासम्मेलन होने जा रहा है। यह क्यो हो रहा है, इस पर मैं पिछले अंक मे प्रकाश डाल चुका हूँ। इन पंक्तियो द्वारा तो मैं समस्त आर्य जगत् से केवल यह कहना चाहता हूँ कि यह सम्मेलन और महोत्सव निर्णायक अवसर है, इस बात का कि दयानन्द के भव्य स्वप्नो का क्या बने ? गौतम, कणाद पतजलि, दयानन्द आदि ऋषि-मुनियो और राम कृष्ण से महापुरुषो का देश भारत, आज जो चारित्रिक, बौद्धिक, मानसिक दृष्टि से पतित होता जा रहा है उस का क्या बने ?

मेरा निवेदन है कि भावना के प्रवाह मे बहकर नही, अपितु तथ्यो की पृष्ठ-भूमि पर बैठ विचार कीजिए कि क्या हम देव दयानन्द की पाखण्ड-खण्डिनी-विजय पताका को अपने देश मे भी लहरा सके ? क्या अज्ञान के वातावरण मे वैदिक-ज्ञान का प्रकाश हम फैला सके, मत-वाद-जाति-भेदो के दुर्गम गढ़ों को गिराने मे क्या हम सफल हुए ? भौतिकवाद और नास्तिकता का सर्वग्रासी प्रवाह रोकने के लिये हमने क्या कुछ किया ?

बन्धुगण, इन प्रश्नो पर एकान्त मे बैठ विचार करने स हमे स्वय अपनी स्थिति का ज्ञान होगा, किन्तु निराश होने से तो काम चलेगा नही, यह तो सर्वस्व की समाप्ति होगी। अत सीधा मार्ग यह है कि महर्षि दयानन्द के लाखो शिष्य एक साथ बैठकर, एक स्वर मे यह घोषित करें कि वेद और दयानन्द के मार्ग पर ससार को चलाने के लिये हम सभी कुछ अर्पित कर देंगे।

बहुत ही गम्भीरतापूर्वक विचार कर हम इस निश्चय पर पहुँचे हैं कि युग संघर्ष मे सफलता के लिये आर्यसमाज को अग्नि परीक्षा दे कर, वेद का सन्देश धरती पर, अपने देश के प्रत्येक नागरिक के हृदय पर, अंकित करना होगा। मेरा प्रत्येक आर्य से सीधा प्रश्न है कि वह इस अग्नि-परीक्षा के लिये तैयार है या नही ? और . . साथ ही जो तैयार हो उन से, जिन्हे प्यार हो दयानन्द से, यह कहना चाहता हूँ कि वे आए साथ, और एक बार मिलकर उठाए हम सभी वह ध्वजा, जो ऋषि ने आर्य समाज की स्थापना करते हुए लहराई थी।

इसी ध्वजा को सबल, सफल रूप मे लहराने के लिए प्रत्येक आर्य से, लक्ष्य की सफलता के इच्छुक व्यक्ति से मैं सार्वदेशिक सभा की ओर से, आर्य महासम्मेलन व स्वर्ण जयन्ती महोत्सव को सफल बनाने की प्रार्थना करता हूँ।

मेरा निवेदन है कि आर्य समाज इस सम्मेलन के पश्चात् जिस महान् रचनात्मक कार्य को करने जा रहा

है उस कार्यक्रम के प्रारम्भिक व्यय के लिए सभाने स्वर्ण-जयन्ती निधि में पांच लाख रुपए संग्रह की अपील की है। यह राशि सम्पूर्ण आर्य जगत् के लिए बहुत थोडी है। यदि एक आर्य परिवार कम ये कम १०) भी दे तो १५ दिन मे यह मांग पूरी हो सकती है। मैं समझता हूँ कि संगठन और आर्य समाज के सामूहिक बल को प्रगट करने के लिए यह आवश्यक है कि इन पंक्तियो को पढने के साथ ही प्रत्येक आर्य परिवार चाहे वह कितना ही निर्धन क्यो न हो, तुरन्त कम से कम दस रुपए और अधिक जितने भी वह भेज सके स्वर्ण-जयन्ती निधि के लिए भेज दें। आर्य जगत् ने एक साथ लगकर ३० अप्रैल तक यह राशि पूर्ण कर, १६ से २१ मई तक दिल्ली नवम आर्य महासम्मेलन मे लाखो की संख्या मे एकत्रित हों, भावी कार्यक्रम पर विचार कर, आगे बढने की घोषणा करनी है।

आर्य समाज ने निश्चय करना है कि भावी युग वैदिक युग होगा, दयानन्द के स्वप्न पूरे होगें, और केवल आर्य समाज के सदस्य ही नही अपितु सारा विश्व आर्य समाज के प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द की जय-जयकार करेगा।

आर्यजन, जागो, उठो, नये उत्साह से, आशा और विश्वास से नये युग के स्वर्णिम प्रभात की तैयारी में लग जावो। यह मेरा सार्वदेशिक सभा की ओर से आप को सादर निमन्त्रण है।

रघुवीरसिंह शास्त्री

अभिनन्दन

श्रीयुत पूज्य स्वामी ध्रुवानन्द जी महाराज पूर्वीय अफ्रीका, मारीशस और मडागास्कर में निरंतर ४ वर्ष तक सफल प्रचार और समाजो की सुव्यवस्था करके ८ अप्रैल को भारत लौट रहे हैं। हम समस्त आर्य जगत् और सार्वदेशिक-परिवार की ओर से उनका हार्दिक अभिनन्दन करते हैं। स्वामी जी महाराज हवाई जहाज से बम्बई पहुँचेंगे। वहाँ वे श्री सेठ प्रताप सिंह शूर जी (कच्छ फंसलअपेरा हाऊस के सामने बम्बई ४) के निवास स्थान पर लगभग ८ दिन रहेगे। वहाँ से दिल्ली, कलकत्ता और पटना जाने का कार्यक्रम है। २३-४-६१ को सार्वदेशिक सभा की अन्तरग रखी गई है। उसमे श्री स्वामी जी महाराज सम्मिलित होगे।

●

सम्पादकीय टिप्पणियाँ

चरित्र-निर्माण

सहयोगी 'माडर्न रिव्यू' मार्च के अंक में 'जबलपुर' के शीर्षक से चरित्र-निर्माण की आवश्यकता पर निम्न प्रकार प्रकाश डालता है—

"स्वतन्त्रता के इस काल में हम अपने नेताओं के इस आशय के व्याख्यान और उपदेश सुनते आ रहे हैं कि जीवन-स्तर को ऊंचा किया जाय। परन्तु इस विषय पर हमने एक भी शब्द नही सुना कि अपने विचारों, भावनाओं और कृतियो में सुधार किया जाय। स्वतन्त्रता से पूर्व हमारे नेता सादा जीवन और उच्च विचार की प्रेरणा दिया करते थे। वर्तमान में स्थिति यह है कि न तो हमारा जीवन-स्तर ऊंचा हुआ है और न हमने

उच्च विचार का ही मार्ग अपनाया है। सत्य यह है कि हममे से उन लोगो मे जिनमे सुधार की क्षमता है भौतिक और मानसिक जीवन की विशुद्धता का अभाव है। हमारे व्यापारी और व्यापारी वर्ग ईमानदारी' की यह धारणा रखते हैं कि धोखा देना, छल-कपट करना मिलावट करना, कम तोलना, झूठ बोलना और अपने साथियो का दोलन करना बहुत बडी व्यापारिक योग्यता है। जो व्यक्ति उनके घृणित कार्यों का अनुकरण नही करते वे लोग उनको घृणा की दृष्टि से देखते हैं। हमारे यहाँ गुण्डे और डाकू हैं जो हृदय से गु डा गर्दी और समाज विरोधी कार्यवाहियो की उत्कृष्टता मे आस्था रखते हैं। उनके पुरखा लोगो को गला घोट कर मार देते थे और उनका अग भग करके देवी की भेंट चढा देते थे। वे इस दुष्कृत्य को धार्मिक कृत्य समझते थे। कानून को तोडने वाली वर्तमान पीढी उनसे अच्छी नही है क्योंकि वे भी यह समझते और अनुभव करते हैं कि निर्दोष व्यक्तियो की हत्या करने, जख्मी करने और उन्हे आतकित करने मे वे एक बड सामाजिक और राजनीतिक कर्त्तव्य को पूरा कर रहे हैं।

जिनके हाथो में आज शासन की बागडोर है वे महात्मा गाँधी के अनुयायी कहे जाते हैं। क्या वे यह अनुभव करते हैं कि उन्होने गलत प्रकार के पुरुषो और स्त्रियों को आगे की पक्ति मे लाकर जिनके हाथो मे लोगो के भौतिक और सामाजिक विकास का कार्य सौंपा हुआ है, थोड से ही काल मे भारतीय विचार सरणी और सस्कृति को रसातल तक पहुँचा दिया है, स्थूल और सामान्य रूप में भारत मे कायदे कानून हैं जो यत्र-तत्र पतित नेताओ और शासको की सुविधाओ के अनुसार प्रचलित होते हैं। परन्तु नगरों तथा ग्रामो के गलियारों मे न ऐसा कोई कानून है न कायदा, जिससे सफाई, सुरक्षा, समाज विरोधी तत्वो और अव्यवस्थित जीवन की गारटी मिल सके। आसाम और जबलपुर की दुर्घटनाओ का एक मन्त्री कारण सभवत हमारे नेता राजनैतिक भाषायी वा धार्मिक बताएँ परन्तु सत्य यह है कि स्वतन्त्र भारत मे हमारे नैतिक स्तर के गिर जाने और राज्य तथा राजनैतिक दलो द्वारा गलत व्यक्तियो को महत्व प्रदान कर दिये जाने से ही बहुत अश तक इस प्रकार की दुर्घटनाएँ सभव होती है। आवश्यकता इस बात की है कि उन सास्कृतिक, तथा राजनैतिक शक्तियो के पुनर्विकास के लिए जिन्होने किसी समय भारत को महान् बनाया था पच वा दशवर्षीय योजनाएँ बनाई जायें।"

आर्य समाज को चेतावनी

उत्तर प्रदेश राज्य के गृहमन्त्री श्रीयुत चौधरी चरणसिंह जी ने १७ मार्च को आर्य समाज स्थापना दिवस के अवसर पर लखनऊ जिला उप प्रतिनिधि सभा द्वारा आयोजित सभा मे भाषण देते हुए आर्य समाज को एक चेतावनी दी और कहा, "आर्य समाज ने देश की बडी सेवा की है। उसने निश्चय ही विजय प्राप्त करली है, पर अपने जीवन मे स्वय अमल नही किया। आर्य समाज मे आज से ४० वर्ष पूर्व जो जीवन था वह आज दिखाई नही देता। अब ऐसा आर्य समाज नहीं रहा जो जन-साधारण को अपनी ओर आकृष्ट कर सके। हम अपने बच्चो को भी आर्य नही बना सके। हमारा जात-पात मे अभी पूरा अमल है, चाहे विश्वास न हो। जन्म-गत जाति ही सारे कष्टो की जड है। अगर आर्य समाज कुछ कर सके तो अच्छा है अन्यथा कुछ वर्षों मे वह समाप्त हो जायगा।"

चौधरी साहब की इस चेतावनी मे बहुत कुछ सचाई है। आर्य समाज के सिद्धान्त सत्य पर आश्रित है अत: वे अटल हैं। जब तक आर्य समाज का आदर्शवाद उज्ज्वल है और सदैव स्थिर रहेगा अत आर्य समाज की समाप्ति का प्रश्न ही नही उठता। हमारा कर्त्तव्य यह है कि हम आर्य समाज की शिक्षाओ को अपने आचरण मे लाने का

सदैव यत्न करते रहें ।

उन्होंने हिन्दू समाज की कृतघ्नता की ओर संकेत करते हुए यह ठीक ही कहा कि "हिन्दू समाज और उसके नेता बडे कृतघ्न हैं कि वे ऋषि दयानन्द का उपकार नही मानते और उनका नाम लेने में सकोच करते हैं।" हिन्दू समाज में कांग्रेस के वे कर्णधार भी सम्मिलित हैं जो महर्षि दयानन्द को भारत के परमोद्धारक के गौरव से वंचित रखने का असफल एवं कुत्सित यत्न करते हैं।

श्री चौधरी साहब ने महर्षि के उपकारों पर विशद प्रकाश डालते और आर्य समाज के साथ अपने सम्बन्धों की चर्चा करते हुए कहा, 'आनेवाला इतिहास श्री स्वामी दयानन्द जी के कार्यों की उपेक्षा न कर सकेगा। आज सुधार के जितने काम दीखते हैं उनमे ९० फी सदी श्री स्वामी जी के बताए हुए हैं। उनके उपकार इतने हैं कि वे गिनाये नही जा सकते। मैं राजनीति मे काम करता हूँ इसलिए उतना साफ और पवित्र नही रहा जितना आर्य समाज का काम करते समय था। जब मैं गाजियाबाद में था वकालत के साथ आर्य समाज और राजनैतिक क्षेत्र में काम करता था तो सोचा करता था कि एम० एल० ए० होकर लखनऊ रहूँगा तो प्रति रविवार को आर्य समाज मे जाया करूंगा। पर यहाँ आकर राजनीति के चक्कर मे पड़ गया और अब समय नही निकाल पाता कि समाज मे पहुँच सकूँ।"

चौधरी साहब अपनी चारित्रिक शुद्धि, कार्य कुशलता और प्रशासकीय योग्यता के लिए सुप्रसिद्ध हैं जिसका बहुत कुछ श्रेय आर्य समाज को प्राप्त है। आर्य समाज को इस बात पर हर्ष होना चाहिये कि उसने देश को ऐसा सुयोग्य कार्यकर्त्ता दिया जिसके कारण आर्य समाज का गौरव स्थिर है। चौधरी साहब ने गाजियाबाद में रहते हुए आर्य समाज की जो सेवाएँ की हैं वे भुलाई न जासकेंगी। वे आर्य समाज को अपना और आर्य समाज उन्हें अपना समझता है। उन्होने अपने बच्चो का विवाह जन्म गत जात-पात को तोड़कर किया। और एक अच्छा आदर्श उपस्थित किया है। आर्य समाज की उनके चरित्र पर कितनी अच्छी और उनके हृदय पर राजनीति की कितनी अवाछनीय छाप पड़ी इसका किंचित आभास उनकी इस मनोव्यथा से मिल जाता है कि "मैं राजनीति में काम करता हूँ इसलिए साफ और पवित्र न रहा जितना आर्य समाज का काम करते समय था।" संभव है राजनीति में काम करने वाले अन्य आर्य बन्धुओ का भी ऐसा ही अनुभव हो परन्तु जिस साहस से चौधरी साहब ने इस सत्य की अभिव्यक्ति की है वह साहस उनमे से बहुतो मे न हो।

प्रेम-पत्र

पंजाब विश्वविद्यालय को हायर सेकेन्डरी परीक्षा के हिन्दी पंजाबी के एक प्रश्न पत्र के विषय में पंजाब के लोकमत में एक बडी हलचल उत्पन्न हो गई है। २२ मार्च को राज्य की विधान सभा मे भी उसकी चर्चा हुई। प्रश्न पत्र का प्रश्न इस प्रकार है :—

प्रश्न नं. ३—अपनी प्रेमिका को अथवा प्रेमी को एक रोष पत्र लिखें कि माता पिता नहीं मान रहे अतएव विवाह सभव नहीं।

अथवा

"अपने प्रदेश के शिक्षा मन्त्री को एक रोष पत्र लिखें कि जिसमे आपके स्कूल के मुख्याध्यापक की जियादतियों का वर्णन हो।"

प्रश्न बनाने वाले ने प्रश्न का ऐसा विषय क्यों चुना यह समझ में आने वाली बात नहीं है। विश्वविद्यालय के अधिकारियों को इस बात का कड़ा नोटिस लेना चाहिए जिससे भविष्य में इस प्रकार की अक्षम्य भूलें न हों।

विद्यार्थियों के हाथो में ऐसी पुस्तकें ही जानी चाहिएं जो उनके समक्ष उच्चादर्श और उच्च भावनाएं प्रस्तुत करें खेद है राम, कृष्ण, सीता, सावित्री, दयानन्द और गांधी के देश मे चारित्रिक ह्रास की ऐसी आंधी चल रही है। और बालक बालिकाओं को पतन की ओर अग्रसर किया जा रहा है।

तम्बाकू पीने वाले ध्यान दें

अमेरिका के सुप्रसिद्ध विज्ञानवेत्ता डा० लीनस पीलिंग ने जो नोवल पुरस्कार विजेता हैं टोरन्टो में २२ मार्च को बताया कि जो व्यक्ति दिन भर मे सिगरेट की एक डिब्बी पीता है उसकी आयु ८ वर्ष और जो दो डिब्बियां पीता है उसकी १८ वर्ष कम हो जाती है। एक सिगरेट के पीने में जितना समय लगता है सापेक्ष दृष्टि से उससे तिगुना समय आयु का कम हो जाता है।

अच्छी माताएँ बनना आवश्यक—

स्त्री का हृदय माता बनने पर ही फलता-फूलता है। उसका सब से बडा दायित्व यह है कि वह समाज को सुयोग्य सन्तान प्रदान करें।

स्त्री शिक्षा का उद्देश्य यह है कि स्त्रिया अच्छे परिवारो और अच्छे बच्चो के निर्माण मे समर्थ हो सकें।

श्री राजगोपालाचार्य ने अम्बाला छावनी के आर्य कन्या कालेज में आयोजित एक सभा मे भाषण देते हुए उपर्युक्त तथ्यो पर विशद प्रकाश डाला और लडकियो को सम्बोधित करते हुए कहा —

"हमारी आज की लड़कियां व्यास और बाल्मीकि के काल की लड़कियों से अधिक सुखी नहीं हैं। सुख और प्रसन्नता पढ़ाई लिखाई से भिन्न वस्तु हैं। यदि तुम किसी स्कूल या कालेज में पढ़ रही हो तो यह मत समझो कि तुम माता न बनोगी। पढ़ाई की समाप्ति पर यदि तुम परिवार का निर्माण न करोगी तो तुम सुखी न रह सकोगी।"

परिवार और बच्चों से ही मनुष्य का विकास होता है। भारत में विवाह की पवित्रता बनी हुई है इसीलिए यहां का नैतिक स्तर अन्य देशों की तुलना मे अधिक आभायुक्त है। हमारी लड़कियों में विवाह से अरुचि भी व्यापक रूप मे व्याप्त नही है परन्तु इस नियम का अपवाद भी है। प्राचीन काल मे अनेक ब्रह्म वादिनी देवियां हो गई हैं जो आत्मिक-विकास और विद्वत्ता मे पुरुषों से बढ़ी चढ़ी थीं और जिन्होंने आजन्म ब्रह्मचारिणी रहकर स्त्रीत्व को चमकाया और अपना जीवन लोक-सेवा के अर्पण रखा। श्री राजगोपालाचार्य ने इस अपवाद की चर्चा करते हुए कहा—**"इन दिनों अध्यापिकाएं और डाक्टरनियां ही इस नियम की अपवाद हो सकती हैं परन्तु समाज में इनकी संख्या कम रहती है।"**

एक दिन नैपोलियन ने एक देवी से पूछा 'फ्रास के बच्चों की सुशिक्षा के लिए क्या होना चाहिए' उस देवी ने उत्तर दिया "लडकियों का अच्छी माताएँ बनाना आवश्यक है" इस उत्तर से नैपोलियन बडे प्रभावित हुए और कहा "एक शब्द मे यही शिक्षा-प्रणाली सर्वोत्तम है।"

उलमाओं का विरोध

कराची का ६ मार्च का समाचार है कि पाकिस्तान की महिला संस्थाएँ पारिवारिक कानून से सम्बद्ध उस आदेश का स्वागत कर रही हैं जो पाकिस्तान सरकार द्वारा अभी हाल में प्रचारित किया गया है और जो विवाह एवं तलाक से सम्बन्ध रखने वाले महिलाओं के अधिकारों

के मामलों को प्रशासित करेगा। उल्माओं के संघ ने इस आदेश का प्रबल विरोध किया है और इस अध्यादेश को स्थगित करने की मांग की है।

इस अध्यादेश मे अनेक बातो का परिपालन आवश्यक ठहराया गया है। पतियों के लिए यह अनिवार्य होगा कि वे दूसरी स्त्री के साथ विवाह करने से पूर्व पहली पत्नी की अनुमति प्राप्त करें और उपेक्षिता वा परित्यक्ता पत्नियों के निर्वाह की व्यवस्था करें। तलाक देते ही पुरुष किसी दूसरी स्त्री से वा स्वय तलाक शुदा पत्नी से पुनः विवाह कर लेता था। इस अध्यादेश ने पुरुष की इस स्वतंत्रता मे कमी करदी है।

गत ४ मार्च को लगभग २०० महिलाओं का एक जलूस निकला जिसका आयोजन पाकिस्तान महिला सघ ने किया था। यह जलूस राष्ट्रपति अयूबखाँ को धन्यवाद देने और उन्हे माला पहनाने के लिए उनके निवास स्थान तक गया।

उल्मा सघ के प्रमुख ने एक वक्तव्य मे कहा कि "हमारे सघ की यह सम्मति है कि यह अध्यादेश शरीयत के विरुद्ध है। कानून के विशेषज्ञों और समाज सेवियो की सिफारिश पर इस नए कानून को प्रचलित करना समय से पूर्व की बात होगी।"

राष्ट्रपति अयूब का यह पग साहसिक और स्वागत योग्य है। देखना यह है कि मुस्लिम कट्टरता के ववंडर मे यह अडिग खडा रह सकेगा या नही।

गांधी भक्त उत्तर दें

डा० प्रभाकर माचवे का एक लेख 'विश्वज्योति' के महापुरुषांक मे प्रकाशित हुआ है जिसका शीर्षक है 'अमेरिका और गांधी जी'। डा० प्रभाकर कई वर्ष तक गांधी आश्रम मे रह चुके हैं और गांधी जी के सिद्धान्तों के पोषक हैं। इस समय वे अमेरिका मे 'गांधी और भारतीय पुनर्जागरण' नामक कोर्स पढाते हैं। वहाँ गाधी जी का नाम जादू की तरह काम करता है। प्रत्येक सामान्य अमेरिकन विशेषत. बूढे और प्रौढ जो गत महा-युद्ध में से गुजर चुके हैं इस नाम से प्रभावित है। कुछ नवयुवक हैं जो संशयशील हैं और अहिंसा के मार्ग को असभव, अव्यवहार्य कुछ सनकियो का कोरा आदर्शवाद मानते हैं। एक मेडीकल डाक्टर ने 'सर्वोदय' का एक अक जेब से निकालकर माचवे महोदय के सामने रखा और पूछा—"अब गाधी जी के मार्ग का हिन्दुस्तान मे क्या हाल है" । वहा प्रायः छोटे बड़े जवान और बूढे उनसे कुछ प्रश्नो का समाधान मागा करते हैं। कई प्रश्नों का उत्तर वे टाल मटोल ढग से दे देते है क्योकि उनके ठीक उत्तर उनके पास नही होते। उन्होंने कुछ प्रश्न विचारवान पाठको और गाधी मार्ग के उपासकों के समक्ष समाधान के लिए रक्खे हैं जो इस प्रकार हैं—

(१) भारत मे यत. समझदार ईसाई मतावलम्बी ब्रिटिश सरकार थी जिसमे लिबरल दल के शासक भी थे इसलिए अहिंसा सफल हुई। हिटलर वा स्टालिन या ऐसे ही किसी तानाशाह के आगे गाधी की अहिंसा कैसे चलती ?

(२) गाधी की अहिंसा मानने वाला भारत देश सेना पर कितना खर्च करता है और चीन के हिमालयीन आक्रमण के समय भारत सेनाएँ सन्नद्ध क्यों करता है ?

(३) गाधी जी का चरखा और हस्तोद्योग भारी स्टील मिलों (इस्पात कारखाने) और विराट बिजली केन्द्र और औद्योगीकरण के सामने कैसे टिकेगा ?

(४) गांधी का सन्तति निरोध के विषय मे मत और नेहरू

सरकार की इस विषय मे कृति मे परस्पर विरोध है, यह क्यों ?

(५) बिनोवा भावे को पजाब मे जहा देहातों की आर्थिक हालत सुधर रही है कोई समर्थन नही मिला ऐसा किंग्जली मार्टिन का "न्यू स्टेट्स मैन एण्ड नेशन" मे लेख छपा था तो क्या गाधी-मार्ग केवल एक दरिद्रनारायण वाली अवस्था का ही मार्ग है या सार्वजनीन, सार्वकालिक मार्ग है ?

(६) गाधी जी को यदि सचमुच भारत मानता होता तो सन् ४७-४८ मे भारत-विभाजन के समय जो साम्प्रदायिक दगे, रक्तपात हुआ (एक अमेरिकन विशेषज्ञ ने बताया १२ मिलियन अर्थात डेढ करोड लोग दोनो ओर से मिला कर मारे गए) यह क्यो कर ?

(७) गाधी जी की तरह सब भारतीय शाकाहारी कैसे हो सकते है—अमेरिका में जो हिन्दू विद्यार्थी भी हैं वे सब गोमांस और सब तरह के मास खाते ही हैं, पशु-नस्ल सुधार के एक भारतीय उच्चाधिकारी यहा जेनेटिक्स-विज्ञान कान्फ्रेंस में भाषण देने आये थे। उन्होंने बताया कि देश के दूध न देने वाले पशुओं को खत्म करना ही होगा और भारत मे मासाहार बढ रहा है।

(८) गांधी जी के ब्रह्मचर्य के विचार और भारतीय विद्यार्थियो का अमेरिका आदि देशो मे आचरण इनमें कोई एकरूपता नही—अत वह भी एक 'मिडिवियल मौरेलिटी' का चिन्ह है।

टंकारा ट्रस्ट

आर्य जनता को विदित ही है कि महर्षि दयानन्द जी की जन्म-भूमि टंकारा में उनका उपयुक्त स्मारक स्थापित एवं संचालित करने के लिए श्रीयुत सेठ नानजी भाई कालिदास महता के डेढ लाख के दान से टंकारा ट्रस्ट अस्तित्व मे आया था। ट्रस्ट के प्रधान जस्टिस मेहरचन्दजी महाजन हैं। ट्रस्ट ने टकारा में एक विशाल महल क्रय कर लिया है जिसमे ट्रस्ट का कार्यालय स्थापित है और जिसे स्मारक की प्रगतियो का केन्द्र बनाया गया है मार्च मास के तीसरे सप्ताह मे धनसग्रहार्थ श्री जस्टिस महोदय बम्बई, सूरत बडोदा, आदि स्थानों पर गए और उन्होंने नकद और वचन के रूप मे लगभग ७५ हजार एकत्र किया। श्री महाजन जी एक प्रेस वक्तव्य मे कहते हैं :—

"भारत में नैतिकता का ह्रास द्रुत गति से हो रहा है। भौतिक और आर्थिक उपलब्धियाँ जितनी मात्रा मे प्राप्त हो रही हैं उनसे कही अधिक मात्रा मे आचारिक उपलब्धियाँ नष्ट हो रही हैं। अत इस ह्रास को रोकने के लिए पग उठाना ही होगा।"

संस्कृत और धर्म ग्रन्थो मे प्रतिष्ठित प्राचीन संस्कृति और सभ्यता का पोषकएवं धर्म पर आश्रित शैक्षणिक आधार बनाने से ही यह कार्य सपन्न हो सकता है। 'पुनः वेदों की ओर मुडो।' यह थी स्वामी दयानन्द की प्रधान शिक्षा जिसका प्रसार और प्रचार उन्होने अब से ७० वर्ष पूर्व किया था। इसी शिक्षा से हम नैतिक विपदा से बच सकते हैं। जब स्वामी जी का प्रादुर्भाव हुआ था उस समय हमारा देश शताब्दियो पर्यंत अंग्रेजों और मुस्लिम शासको द्वारा प्रशासित होता रहा था। उन्होंने 'स्वराज्य' और दलितों के उत्थान की प्रेरणा की। उन्होंने कहा कि समस्त मानव एक ही परमात्मा की सन्तान हैं और उसकी दृष्टि में समान हैं। उन्होने स्त्रियों की स्थिति को ऊँचा किया। लाखों हिन्दू अपने धर्म का परित्याग करके ईसाई मुसलमान बन रहे थे। उन्होंने इस धर्म परिवर्तन की बाढ़ को रोका और कहा कि आर्य धम में स्वयं शुद्धि एवं धर्म्म परिवर्तन करने का विधान है। उन्होने एक ही राष्ट्र भाषा अपनाने की शिक्षा दी,

स्वदेशी का प्रचार किया, और भारत की मूल्यवान् बपौती संस्कृत भाषा के पुनरुद्धार का अनुरोध किया। महर्षि की शिक्षाओं के अत्यन्त व्यवस्थित रूप मे प्रसार और प्रचार की अत्यावश्यकता है और यह कार्य उनकी जन्मभूमि टंकारा में एक ऐसे स्मारक के निर्माण से संभव हो सकता है जो महान महर्षि के अनुरूप हो, जो संस्कृत अनुसधान और उसके पुनरुज्जीवन का केन्द्र हो जहां धर्मों एव भाषाओ का तुलनात्मक एवं प्राचीन धर्म शास्त्रों का अध्ययन हो। महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट ने यह महान् कार्य अपने हाथ मे लिया है। मौर्वी के महाराज का टकारा स्थित महल क्रय कर लिया गया है। संस्कृत अनुसधान भाषा और उपदेशक कालेजो का सचालन आरम्भ करके दयानन्द यूनिवर्सिटी की स्थापना का कार्य अभी शेष है जहां से प्रशिक्षित होकर विद्वान लोग ससार के कोने कोने में घूमकर महर्षि का सन्देश प्रसारित कर सके। महर्षि के मन्तव्यानुसार वेद मानव मात्र की बपौती है। यह सन्देश भारत से ही प्रसारित होना है। इस यूनिवर्सिटी के निर्माणार्थ कम से कम १ करोड़ रुपए की आवश्यकता है परन्तु १० लाख की पूंजी से यह कार्य आरम्भ कर देने की योजना है। ट्रस्ट प्रत्येक भारतीय से इस कार्य में अपना भाग देने की प्रार्थना करता है।

अनमेल विवाह

श्रीमती चन्द्रवती जी लखनपाल ने अनमेल विवाहो को रोकने के उद्देश्य से राज्य-सभा के समक्ष एक प्रस्ताव उपस्थित किया था जिसमें मांग की गई थी कि विवाह करने वाले जिन स्त्री पुरुषों की आयु में १५ वर्ष से अधिक का अन्तर हो उनके विवाह कानूनन रोक दिए जाएँ। प्रस्ताव का उद्देश्य बडा पवित्र था। इसके पारित हो जाने से समाज-सुधारकों को अपने कार्य में सहायता मिलती परन्तु खेद है यह पारित न हो सका। परन्तु क्या उन्हें यह समझकर सन्तोष करना चाहिए कि लोकमत के पर्याप्त जागृत हुए बिना इस प्रकार के अधिनियम निष्क्रिय बने रहते और कभी कभी उनसे लाभ के स्थान मे हानि भी हो जाती है। अनमेल विवाहों का मुख्य कारण अमर्यादित दहेज और जाति विरादरियों को संकुचित क्षेत्र ही हैं। इन कारणो के दूर होने से स्त्रियों का अपने जीवन साथियो के चुनाव मे हाथ होने और उन की स्थिति के उच्च और सम्मान दर्जा बनने से ही समस्या का समाधान संभव हो सकता है। महिला सगठनो और अन्य समाज सुधारक व्यक्तियो एव सस्थाओं के सतर्क एवं क्रियाशील बनने, और अनमेल विवाहों को न होने देने का यत्न करते रहने से बहुत कुछ सफलता मिल सकती है।

माता लक्ष्मी देवी जी

कन्या गुरुकुल हाथरस की संचालिका श्रीमती माता लक्ष्मी देवी जी के निधन से आर्य समाज में एक बहुत बड़ा अभाव अनुभव किया जायगा। आर्य समाज विशेषत. नारी उद्धार की दिशा में की गई उनकी सेवाएं सदैव स्मरणीय रहेंगी। कन्या गुरुकुल हाथरस उनका मानस पुत्र था यदि यह कह दिया जाय तो इसमे अत्युक्ति न होगी। इस गुरुकुल पर उनका सर्वस्व अर्पित रहा और इसकी उन्नति और अभिवृद्धि के लिए उन्होंने कौनसा त्याग था जो नही किया। उसके ममत्व अध्यवसाय और एकान्त निष्ठा से सिंचित गुरुकुल सासनी का मृत प्रायः पौधा आज एक हरे भरे वृक्ष के रूप मे हम सबके सामने खड़ा है। माता जी निरन्तर कई वर्ष तक सार्वदेशिक सभा की अन्तरंग सदस्या रहीं। आर्य जगत् का कर्तव्य है कि उनके गुरुकुल को हरा भरा रखने के लिए कोई प्रयत्न उठाए रखे। माता जी तो चली गई परन्तु उनकी सुखद स्मृति में शेष रह गई हैं जो निश्चय ही प्रेरणा दायिनी बनी रहेंगी। परमात्मा से प्रार्थना है कि वह दिवंगत आत्मा को सद्गति प्रदान करें।

रघुनाथप्रसाद पाठक

धर्मनिरपेक्ष राज्य और समाजवादी शासन के गुण-दोष

श्री मगलदेव शास्त्री

धर्मनिरपेक्ष राज्य :—

१ धर्मनिरपेक्ष राज्य (Secular State किसी एक धर्म या सम्प्रदाय को अपना धर्म नही मानता है।

२—उसके कानून, सविधान और उद्देश्य किसी एक विशेष धर्म के (सम्प्रदाय के) आधार पर नही बनाए गए हैं।

३—वह अपने सब नागरिको को समान समझता है और सब के लिए समान कानून बनाता है।

४—धर्मनिरपेक्ष राज्य की सीमा के अन्दर रहने वाले, सब नागरिको के साथ सरकार समान व्यवहार करती है।

५—धर्मनिरपेक्ष राज्य की, नीति का आधार, विवेक, उदारता और न्याय है।

६—वह अपनी नीति को सम्प्रदाय के सकुचित दायरे मे नही बांधता है।

७—उसने साम्प्रदायिक नीति को उखाड फेकने का निश्चय कर लिया है।

८—ऐसे राज्य का कोई नागरिक अपने राज्य पर पक्ष पात का दोष नहीं लगा सकता है।

९—ससार के कल्याणार्थ ही धर्मनिरपेक्ष राज्य की स्थापना की गई है।

धर्मनिरपेक्ष राज्य की शासन नीति समाज-वादी नीति है।

भारतीय शासन समाजवाद के सिद्धान्तों पर किया जा रहा है। समाज-वाद के सिद्धान्तानुसार धर्मनिरपेक्ष राज्य के कार्य निम्नलिखित हैं :—

(अ) उत्पादन और वितरण के सब साधनो को व्यक्तिगत अधिकार क्षेत्र से हटाकर राज्य के नियन्त्रण मे लाना।

(आ) व्यक्तिगत लाभ की परवाह न करना, केवल सामाजिक सेवा को (या सामूहिक स्वार्थ को) ही ध्येय समझना।

(इ) उत्पादन की सीमा का निर्णय व्यक्ति के लाभ पर आश्रित न रखना, बल्कि समाज की आवश्यकता पर निश्चित करना।

(ई) समाज-वाद के सिद्धान्तानुसार राज्य का कार्य-क्षेत्र सीमित नहीं होना चाहिये।

(उ) शिक्षा, सामाजिक सुधार, व्यापार, कलाकृति और उत्पादनादि सभी प्रकार के कार्य राज्य को ही करने चाहिए।

(ऊ) क्योंकि समाज-वाद सामूहिक हित का प्रति-पालक और रक्षक है।

टिप्पणी :—संक्षेप मे कहें तो यों कह सकते हैं कि जनता की आर्थिक, नैतिक और संवैधानिक आवश्यकताओं की पूर्ति का दायित्व-समाजवादी शासन के ही ऊपर आधारित है।

समाजवाद की मौलिकतायें—

१—समाजवाद, आज तक की सब असमानताओं को मिटाने का पक्षपाती है।

२—वह सबसे पहले आर्थिक असमानताओं को दूर करना चाहता है, क्योंकि उसके विचारानुसार जीवन के अन्य क्षेत्रों मे जो असमानतायें पाई जाती हैं वे सब इसी आर्थिक असमानता के कारण है।

३—वह समाज मे शोषक और शोषित का भेद मिटाना चाहता है।

४—वह समाज के प्रत्येक व्यक्ति को काम देने का दावा करता है, और समाज से गरीबी और बेकारी सदा के लिये मिटाना चाहता है।

५—समाज-वाद सभी प्रकार के संघर्ष संसार से दूर करना चाहता है।

६—उसकी यह दृढ़ धारणा है कि उपरोक्त सिद्धान्त को कार्यान्वित करने से स्वार्थ, परार्थ मे परिणत (बदल जायगा) हो जायगा।

७—ऊंच, नीच, छोटे, बड़े का अन्तर जाता रहेगा। अस्तु

टिप्पणी :—उपरोक्त सात (७) समाज-वाद के मूल सूत्र हैं, यह इतने चित्ताकर्षक और विमोहक हैं कि सर्व साधारण मनुष्य इधर आकर्षित हुए बिना नहीं रह सकता है। इन्ही उपरोक्त कारणों से समाजवाद का संसार में बोलबाला है। जिन-जिन देशों मे गरीब-अमीर, ऊंच-नीच का भेदभाव है उन उन देशों की जनता समाज-वादी सिद्धान्तों का समादर करती है।

धर्मनिरपेक्ष राज्य की समाजवादी नीति के दोष—

समाजवादी आर्थिक नीति में कहा गया है कि उत्पादन और वितरण के सब साधनों को व्यक्तिगत अधिकार क्षेत्र से हटाकर राज्य के नियन्त्रण मे लाना। इसमें व्यक्तिगत सम्पत्ति को स्थान नहीं दिया गया है। व्यक्तिगत सम्पत्ति मे जो लाभ हो सकते हैं वह निम्न प्रकार है —

(१) व्यक्तिगत सम्पत्ति से मनुष्य, निश्चिन्तता और स्वतन्त्रता का अनुभव करता है।

(२) सम्पत्ति या धन के अभाव मे मनुष्य चिन्ताग्रस्त तो रहता ही है साथ ही साथ अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये उसे अपनी इच्छा के विरुद्ध काम करने पड़ते हैं जिससे उसकी व्यक्तिगत स्वतन्त्रता मे बाधा आती है।

(३) सदाचारी एव उन्नत जीवन व्यतीत करने के लिए मनुष्य के पास सम्पत्ति का होना आवश्यक है। आर्थिक अभावों से पीडित मनुष्य मे बहुत समय तक दृढता एव स्वतन्त्रता नहीं रह सकती। उसे अर्थ प्राप्ति के लिए विवश होकर अपनी आत्मा के विरुद्ध भी कार्य करने होते है।

(४) सम्पत्ति की व्यवस्था मनुष्य को गम्भीर बनाती है एव राज्य को स्थायित्व प्रदान करती है। सम्पत्तिवान्, व्यक्ति देश मे उथल-पुथल या क्रान्ति के सदैव विरोधी होते हैं। वे सदैव राज्य की सरकार को शक्तिशाली और स्थायी बनाने मे पूर्ण सहयोग प्रदान

करते हैं।

(५) सम्पत्तिवान् मनुष्य को अपनी आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए सदैव लगा रहना नही पड़ता है। उसके पास बहुत-सा समय कला एव साहित्य की सेवा में व्यतीत करने के लिए बना रहता है। बहुत से सम्पत्तिवान् मनुष्य अपने जीवन का बडा भाग साहित्य ऐव कला की साधना मे लगाते देखे गये हैं।

(६) सम्पत्ति प्रथा मनुष्य मे साहस एव उत्साह का संचार करती है। लाभ की आशा मनुष्य को नए नए औद्योगिक साहस करने की प्रेरणा प्रदान करती है। यदि व्यक्तिगत-सम्पत्ति प्रधान न हो तो मनुष्य केवल उतना ही कार्य करेगा जितने से उसकी आवश्यकताओं की पूर्ति हो जावे। ऐसी स्थिति मे व्यक्ति और राष्ट्र दोनो की आर्थिक स्थिति को धक्का लगता है।

(७) निजी सम्पत्ति को बढाने के विचार से प्रत्येक मनुष्य अपनी आय मे से कुछ न कुछ बचाने का प्रयत्न करता है और इस भाँति राष्ट्रीय सपत्ति की वृद्धि हो जाती है।

(८) निजी सम्पत्ति की प्रथा रचनात्मक कार्यों के लिए तथा वैज्ञानिक खोजो के लिए उपयुक्त वातावरण तैयार करती है। भूखे रहकर बिरले ही व्यक्ति रचनात्मक कार्य मे प्रवृत्त हो सकता है।

समाजवादी शासन नीति के कुछ दोष :—

(१) समाजवादी शासन नीति के कारण नागरिक व्यक्ति राज्य का दास बन जाएगा, उसकी स्वतन्त्र इच्छा का नितान्त ह्रास हो जाएगा।

(२) निजी सम्पत्ति के अभाव मे उसमें कार्य करने की क्षमता और उत्साह नही रह जाएगा जिसके कारण आर्थिक विकास मे बाधाए पडेंगी।

(३) जब "राज्य" अपने हाथों में उत्पादन, वितरण, शिक्षा, समाज-सुधार, देश का सब व्यापार कला-कृति आदि सब कार्यों को ले लेगा तब प्रजा के हाथों मे क्या कार्य शेष रह जायेगा ? और राज्य के लिए भी इतने अधिक कार्य करना असम्भव हो जायेगा।

(४) जब प्रजा के करने योग्य व्यापारादि कार्य राज्य करेगा तो प्रजा मे बेकारी बढना अनिवार्य हो जाएगा जिसे राज्य दूर करने का दावा करता है।

(५) फिर व्यापारादि से जो राष्ट्र को लाभ होगा उस लाभ को प्रजा के हित में राज्य कर्मचारी लगाएंगे, और वितरण करेंगे इसकी गारन्टी क्या होगी ?क्या राज्य के कर्मचारी स्वार्थवश अपना हित साधन न करके प्रजाहित करेंगे ? मुझे तो वर्तमान दशा देखते हुए विश्वास नही होता। यदि ऐसा हुआ होता तो भ्रष्टाचार अनाचार, काला बाजार, कभी का दूर हो गया होता और हमारा राज्य राम-राज्य बन गया होता, किन्तु अभी तक हमे न तो प्रजा की गरीबी और बेकारी दूर होती दिखाई दे रही है और न बढ़ता हुआ भ्रष्टाचार ही। इस लिए मेरा राष्ट्र के कर्णधारो से विनम्र निवेदन है कि वे प्रजा के करने योग्य व्यापार आदि कार्यों को अपने नियन्त्रण मे न लेकर प्रजा को ही करने दें; और राष्ट्र की रक्षा, शान्ति व्यवस्था, तथा न्याय विभाग, और अन्तर्राष्ट्रीय कार्य तथा यातायात को ही अपने हाथ मे रखे। न्याय विभाग को शासन मुक्त रक्खें। शिक्षा को राष्ट्रोपयोगी, सुलभ और अनिवार्य करें। ज्ञान-विज्ञान और आधुनिकतम अणु-विज्ञान की वृद्धि करें। राष्ट्र को स्वरक्षा मे सक्षम बनायें। साम्प्रदायिकता, जातिगत भेदभाव, ऊच, नीच की प्रवृत्ति का उन्मूलन भी आवश्यक है। भाषा विवाद का निराकरण और पचमागियों का निरीक्षण राष्ट्रद्रोहियो से सावधान रहने की भी अत्यावश्यकता है। पदलोलुपता, पारस्प-

[शेष पृष्ठ ६० पर]

अनुवादक —माधवचन्द्र पाठक

देश-प्रेम

(१)

दीवान हर विलास शारदा कृत हिन्दू सुपीरियारिटी का धारावाहिक अनुवाद

"जिस व्यक्ति ने अपने से कभी यह न कहा हो कि यह मेरी मातृ भूमि है उसकी आत्मा मृत प्रायः होती है"

स्काट—

अपने देश के प्रति सभी सभ्य व्यक्तियों का स्वाभाविक अनुराग होता है। हिन्दुओ के गीतो मे निरन्तर मातृभूमि का गुणगान किया जाता रहा है। हिन्दुओ में मातृभूमि के प्रति प्रेम की भावना कितनी उग्र थी इसका प्रमाण शुद्ध वा अशुद्ध रूप मे केवल इसी बात से मिल जाता है कि अपने पतन के काल मे जब राजनैतिक दूरदर्शिता उनके मानसिक क्षितिज मे धूमिल हो चुकी थी तब भी हिन्दुओं ने यह व्यवस्था कर दी थी कि कोई व्यक्ति इस पावन भूमि की पवित्र सीमाओ से बाहर न जाय और इसी भूमि मे रहने और मरने से स्वर्ग की प्राप्ति हो सकेगी। यह बात प्राय. सर्व विदित है कि इस समय भी राजपूत का यह मूल-मत्र है कि देश के लिए हाथ मे तलवार लिए हुए मर जाने से उच्चतम गति प्राप्त होती है। कर्नल टाड कहते हैं कि **"देश का नाम अब भी राजपूत के हृदय में चामत्कारिक शक्ति का संचार कर देता है। यदि उसके सामने उसकी पत्नी और देश का नाम लिया जाय तो आदर के साथ लिया जाना चाहिए अन्यथा उसकी तलवार तत्काल म्यान से बाहर आ जायगी।"[1]**

राणा प्रताप और ठाकुर दुर्गादास जैसे श्रेष्ठ देश-भक्तो की खोज के लिए यूनान, रोम और वर्तमान वा मध्यकालीन योरुप के इतिहास-ग्रन्थों की छानबीन करना व्यर्थ है। देश-प्रेम, वीरता और आत्म-सम्मान ये तीनो गुण इन दोनो वीरो मे अनुकरणीय रूप मे मूर्तिमान थे। राणा प्रताप ने एशिया के महानतम सम्राट अकबर की दुर्दान्त सैन्यशक्ति से लोहा लिया जबकि उसकी सेना मे मुट्ठी भर राजपूत थे और अकबर को प्रताप के देश-वासियों यथा कुशवाहो, राठौरो और मेवाड के निकट-वर्ती अनेक रजवाडों की सैनिक सहायता एव मत्रणा प्राप्त थी। प्रताप निरन्तर पच्चीस वर्ष तक अकबर के साथ युद्ध मे प्रवृत्त रहे और देश-भक्ति एव वीरता के इतिहास में अनुपम ख्याति प्राप्त करके अमर-पद को प्राप्त हुए। कर्नल टाड कहते हैं—"**प्रताप को एक प्राचीन घराने की ख्याति और उपाधि उत्तराधिकार मे प्राप्त हुई थी परन्तु उनका राज्य, राजधानी और साधन-सम्पन्नता से विहीन था। उनके हितु-बान्धव आपत्तियों से हताश हो चुके थे इस पर भी उनमें अपनी जाति की उच्च भावना विद्यमान थी। वे चित्तौड़ के पुनरुद्धार एवं अपने घराने की प्रतिष्ठा और शक्ति की पुनर्स्थापना का स्वप्न लिया करते थे। विचक्षण मुगल (अकबर) उनके विरुद्ध कमर कस के खड़ा था। प्रताप के अपने बन्धु-बान्धव जिनकी धमनियों में उनके पूर्वजों का रक्त बहता था, उनके विरुद्ध युद्ध में शत्रु के सहायक बन गए थे। मारवाड़, अम्बर, बीकानेर और उनके पक्के**

१. टाड-राजस्थान वा. २ पृ ४२६

साथी बूंदी के राजा ने अकबर का साथ दिया और स्वेच्छा-चारिता को बढ़ावा दिया। यहां तक ही नहीं उनके अपने भाई सागर जी ने भी उनसे किनारा किया। इस पर भी आपत्ति की गुरुता ने प्रताप की दृढ़ता को दृढ़ कर दिया जिन्होंने 'अपनी माँ के दूध को सार्थक करने का व्रत लिया हुआ था और जिसे अन्त तक निभाया भी। उन्होंने २५ वर्ष तक अकेले मुगल साम्राज्य के संयुक्त प्रयत्नों का सामना किया, कभी मैदान में मुगल सेना का विनाश करते हुए, कभी एक पर्वत से दूसरे पर्वत पर छिपते हुए, पर्वतों के घास-पात से परिवार का पेट पालते हुए, भयंकर हिंस्र जन्तुओं और असभ्य लोगों के मध्य दूध पीते अमरसिंह का पालन-पोषण करते हुए जो उनकी वीरता और प्रतिशोध की भावना का उपयुक्त उत्तराधिकारी था। उनकी यह भावना कि बाप्पा रावल का पुत्र नश्वर मानव के समक्ष सिर नहीं झुका सकता दृढ़ और अकाट्य थी और इसी भावना के वशीभूत हो उन्होंने ऐसे प्रत्येक सुझाव को घृणा पूर्वक ठुकरा दिया जिससे इस भावना पर आँच आती थी अथवा जिसमें तातार के साथ विवाह सम्बन्ध करके परिवार को सुरक्षित बनाने की गिरावट की गन्ध आती थी यद्यपि वह तातार महामहिम और प्रताप शाली था।"[2]

कर्नल टाड कहते हैं "जो व्यक्ति अधिक अनुकूल परिस्थितियों में राज्यों की गति विधि को प्रभावित करते हैं उन्हे उस भावना की उग्रता को अपने लक्ष्य मे रखना चाहिए जिससे प्रेरित हुआ एक सम्राट् संसार के महान्-तम शक्ति-शाली साम्राज्य के विरुद्ध खड़े हुए एक छोटे से राज्य के साथ युद्ध मे प्रवृत्त हुआ हो जिसकी सेनाए फारस की सेनाओं की तुलना मे, जो यूनान की स्वतन्त्रता का अपहरण करने के लिए भेजी जाती रही थी, अधिक विशाल और अधिक प्रशिक्षित एव सुसज्जित थी। यदि मेवाड के पास यूनान जैसे वीर योद्धा होते तो न तो यूनान के पोलपानस के युद्ध मे और न १० सहस्र योद्धाओं के मैदान छोड भागने से उनसे अधिक विशद एव घटना पूर्ण विविध कारनामे ऐतिहासिक गवेषणा के लिए प्राप्त न हुए होते जो विविध आपत्तियों मे ग्रस्त मेवाड के जाज्व-ल्यमान शासन ने कर दिखाए। अदम्य शौर्य, सम्मान को विशद बनाए रखने वाला अटूट धैर्य, निष्ठा मे परिपूर्ण अध्यवसाय जिन पर कोई भी देश गर्व कर सकता है ये तीन गुण एक ओर थे और ऊंची उड़ान भरती हुई महत्वाकांक्षा, शासन करने का चातुर्य, असीमित साधन-सम्पन्नता और मजहबी जोश दूसरी ओर थे फिर भी ये सब एक अजेय मन पर विजय प्राप्त करने मे समर्थ न हुए। अरावली पर्वत में कोई ऐसी घाटी न बची थी जो प्रताप के गौरव पूर्ण कारनामों से पवित्र न हुई हो। यह कारनामा या तो वीरतापूर्ण विजय थी या गौरवपूर्ण पराजय। हल्दी घाटी मेवाड़ की थर्मापाली थी।"[3]

कर्नल टाड के शब्दों मे "प्रताप के अन्तिम क्षण" उनके समस्त जीवन की व्याख्या करते देख पडे। उन्होंने कार्थेजिया के वीर नायक के समान अपने उत्तराधिकारी से देश की स्वतन्त्रता के शत्रुओं से नित्य संघर्ष करते रहने का वचन लेना चाहा परन्तु प्रताप को वह आल्हादपूर्ण आश्वासन न मिला जो न्यूमिडियन हेमिलकार को मिला था। प्रताप को अपना अन्त निराशा के मेघों से आच्छादित देख पडा। उनको भय था कि उनका पुत्र अमर उनकी कीर्ति को निकृष्ट

२—टाड-राजस्थान वा. १, पृ. ३४०

३—भारत की थर्मा पाली (हल्दी घाटी) का क्या वर्णन किया जाय ? २० सहस्र मनुष्यो के समक्ष ५ सौ आग के पुतले ! क्या नैपोलियन के इतिहास मे इससे अधिक ज्वलन्त कोई साहसिक घटना अंकित है ?

राजस्थान वा १ पृ ८०.

विलासिता पर बलि चढा देगा। इस अन्तिम दृश्य से खिचे हुए चित्र ने महाराणा के प्रति सहानुभूति जागृत कर दी। मरणासन्न वीर एक साधारण झोपड़ें मे पडा है! सुख और दु ख के अनेक साथी अपने प्रिय महाराणा के अन्त की प्रतीक्षा मे उनके पलग के चारो ओर खड़े हैं। मानसिक पीडा की एक कराहट सालुम्बरा के सरदार को विचलित कर देती है। वह पूछते है..."**आपकी आत्मा को क्या चीज बाँध रही है जो प्राण शान्ति पूर्वक नहीं निकल रहे हैं?**" यह सुनकर महाराणा करवट बदलते और कहते है..."**यह आत्मा आश्वासन चाहती है कि मेरा देश तुर्कों के हवाले न किया जायेगा।**" मृत्यु के मुख मे पडे हुए महाराणा ने एक घटना का वर्णन किया जिसमे उनके मन मे अपने पुत्र अमरसिंह के सम्बन्ध मे आशका उत्पन्न हो रही थी। वे इसी लिए दु खी थे कि अमरसिंह अपने सुख और विलास के निमित्त अपने तथा देश के प्रति हुए अत्याचारो और अपकारो को भुला देगा।

पिशोला (झील) के तट पर प्रताप और उनके सरदारो ने कुछ झोपड़े डाले थे (उदयपुर के महल का भावी स्थान) जिनमे वर्षा के काल मे वे शरण लिया करते थे। एक दिन राज कुमार अमर यह भूल गए कि झोपडा नीचा है फलत उसकी छत मे लगे हुए बास मे उनकी पगडी उलझ गई और वह दूर तक खिची चली गई। इस पर अमरसिंह झुझला गया। महाराणा को अमरसिंह की भाव भगी देखकर अपार दु ख हुआ और उनके मन मे यह बात बैठ गई कि उनका पुत्र अमरसिंह देशोद्धार के मार्ग मे आने वाली विषमताओ और कठिनाइयो को सहन न करेगा। मरणासन्न महाराणा ने कहा.. "ये झोपडे बड़े बड़े महलो और विशाल अट्टालिकाओ मे परिणत हो जायेंगे जिनसे विलासिता और सुख का व्यामोह उत्पन्न होगा। इस व्यामोह के उत्पन्न हो जाने पर विलासिता जन्य अनेक खराबिया अपना रग दिखायेंगी और इन पर मेवाड़ की स्वतन्त्रता की बलि चढ जायगी जिसकी रक्षा और प्राप्ति के लिए हमने अपना रक्त बहाया है। मेरे सरदारो! क्या तुम भी अमरसिंह का अनुसरण करके विलासी बन जाओगे।" उन सरदारो ने हाथ उठाकर और बाप्पा रावल के सिहासन की शपथ लेकर प्रतिज्ञा की कि न तो हम स्वय विलासी होगे और न अमरसिंह को विलासी बनने देगे। जब तक मेवाड़ की स्वतत्रता प्राप्त न कर ली जायगी तब तक महल भी न बनने दिए जायेगे। यह सुनते ही प्रताप सतुष्ट हो गए और उनके प्राण पखेरू उड गए।[1]

दुर्गादास और राठौरो के सम्बन्ध में राजपूताने के श्रेष्ठ इतिहासकार कहते है..."आओ हम सन् १७३७ से लेकर जब काबुल मे जसवन्त सिंह की मृत्यु हुई थी और अजित को शत्रु के चगुल से बचाया गया था, ३० वर्ष के काल की राठौरों की गतिविधियो का सिंहावलोकन करे जो निरतर सघर्ष मे व्यतीत हुआ था। सघर्ष के काल मे राठौरो के चरित्र मे जैसी दृढ देश-भक्ति देखने को मिलती है वैसी अन्य देशो के इतिहास मे खोज करने पर भी न मिल सकेगी। इस काल मे कदाचित ही कोई सरदार चारपाई पर पडकर मरा होगा। जो व्यक्ति यह समझते हैं कि हिन्दू योद्धा देश-भक्ति से शून्य होता है उन्हे इस ३० वर्षीय युद्ध के विवरण को पढकर और अन्य देशो के इतिहास के साथ उसकी तुलना करके उन्नतमना राजपूतों के साथ न्याय करना चाहिए। यह विवरण जिसकी स्वाभाविकता उसका सर्वोत्तम प्रमाण है, प्रगाढ देश-भक्ति और निरलेप राजभक्ति का उत्तम रिकार्ड है। यह वह समय था जब इन आदर्शों का बलिदान करने पर लोग अत्याचारी राजा द्वारा राज्य के उच्चतम पदो से पुरस्कृत हुआ करते थे। इस प्रकार

१—टाड-राजस्थान वा १ पृ ३४८, ३४९

शेष पृष्ठ ५७ पर

महर्षि - जीवन

शंका-समाधान

कौनसा धर्म सच्चा है ?

शाहजहाँपुर में एक जिज्ञासु ने महाराज से पूछा "कौनसा धर्म सच्चा है ?" महाराज ने कहा,—संसार मे अनेक मत फैल रहे है। मतवादियों पर विश्वास कर जिज्ञासु के लिए सत्य जानना कठिन है। जिससे पूछो वही अपने पन्थ को सच्चा और दूसरों को झूठा बताता है। इसपर महाराज ने दृष्टान्त दिया कि एक जिज्ञासु किसी तत्वदर्शी पंडित के पास जाकर कहने लगा कि 'मुझे वह सच्चा धर्म बताइए जिसके आराधन से मेरा कल्याण हो। मुझे परमधाम की उपलब्धि हो।"

तत्वदर्शी महात्मा ने उसे कहा—'चलो आपको सद्धर्म का बोध कराएँ।' वे उसे एक मतवादी के पास ले गए। उन्होंने उस मतवादी से पूछा 'सत्यधर्म कौनसा है?' उस पन्थाई पुरुष ने अपने मत की मुक्त कंठ से प्रशसा की और दूसरे मतो की निन्दा मे जमीन आसमान एक कर दिया। इस प्रकार वह जिज्ञासु सभी मतवादियो के पास गया। सभी अपने उठने-बैठने की रीति को, अपनी उपासना की पद्धति को और अपने धर्म-मन्दिरो को धर्म बताते रहे। प्रत्येक ने अपने ही तीर्थों का यशगान किया। अपनी ही देवमूर्तियों को उत्तम बताया। अपने ही धर्म चिन्हो को, बहिरङ्ग साधनो को अपने महापुरुषो के वाक्यो को 'धर्म' प्रदर्शित किया और अपने से भिन्न मतों की प्रत्येक बात की भरपेट निन्दा की।

प्रत्येक मतवादी की नवीन धारणा, नवीन पद्धति, नूतन धर्म-चिन्ह, नई मूर्तिया और भिन्न तीर्थ देख और सुनकर उस जिज्ञासु का जी घबरा उठा। अन्त मे वह तत्त्वदर्शी महात्मा की सेवा मे उपस्थित होकर सच्चे धर्म की जिज्ञासा करने लगा। उस महात्मा ने जिज्ञासु को कहा 'सत्य वह है जिस पर सबकी एक सी साक्षी हो। इसी प्रकार धर्म के जिन कर्मो को सब मतवादी स्वीकार करे उनमे कोई ननु-नच न करे—वही सच्चा धर्म है। उसी को मानो। किसी एक मत के आडम्बर मे न फसो।

वह साधारण धर्म्म जिसमे कोई मतवादी किन्तु परन्तु नही कर सकता यह है—**'एक तो परमेश्वर का विश्वास और उसकी उपासना, दूसरे जैसा भाव और ज्ञान भीतर हो उसी का वाणी द्वारा प्रकाश करना और उसी के अनुसार आचरण करना। तीसरे जितेन्द्रिय रहना, चौथे किसी के अधिकार और वस्तु को न छीनना, पाँचवें निर्बलों और दीनों पर दया करना।'** यह साधारण धर्म्म ऐसा है इसमे किसी भी मतावलम्बी का नकार नही है। यही धर्म कल्याणकारी और मोक्ष दाता है।"

गोरक्षा और दान

बरेली मे एक व्याख्यान मे गोरक्षा के लाभ वर्णन करते हुए महाराज ने कहा—"गोहत्या से बडी हानि हो रही है परन्तु खेद है राजपुरुष इसपर कोई ध्यान नहीं

देते। जो लोग दान करते हैं वे हानि-लाभ को नहीं सोचते । भोले-भाले भाई समझ लेते हैं कि गो-संकल्प करने मे वैतरणी पार हो जायेंगे। वे छार जाते हैं और गौ पुरोहित देवता के आगन मे खूटे मे बंधी रहती है, प्रत्युत बारबार कई स्थानो मे संकल्प कराई जाती है । बहुत से ऐसे भी कुल-कपूत है जो उसे तुरन्त कसाई के हाथ बेच डालते हैं।

अन्न-जल का दान कोई भी भूखा-प्यासा मिले उसे दे देना चाहिए। ऐसा दान पहले अपने दीन-दुखी पड़ोसी को देना चाहिए। पास के रहने वाले का दरिद्र दूर करने मे सच्ची अनुकम्पा और उदारता का प्रकाश होता है इससे वाह वाह नही मिलती इसलिए अभिमान को भी अवकाश नही मिलता।

पास के दु खी को देखकर ही दया और सहानुभूति आदि हार्दिक भाव प्रकट होते हैं जो पास के दीन दुखियो पर दया तो नही दिखाता परन्तु दूसरे लोगो के लिए उनका प्रकाश करता है उसे दयावान और सहानुभूति प्रकाशक नही कह सकते। ऐसे मनुष्य का दान बाहर का दिखावा और ऊपर का आडम्बर है। दान आदि की वृत्तियो का विकास दीपक की ज्योति की भांति पास से दूर तक फैलना उचित हैं। जो निर्धन जल और अन्नादि का दान नही कर सकते वे दूसरो को क्या दे ? ऐसे लोग अपने पड़ोसी आदि को कष्ट और क्लेश मे सहायता दे, निर्बलो का पक्ष करे, विपत्ति और आधि-व्याधि ग्रस्त-जनो की सेवा करे। पर-पीडितो और-व्याकुल मनुष्यो मे प्रेम करे। उन्हे मीठे वचनो से शान्ति दे। ये सब दान हैं और आत्मा से सम्बन्ध रखने वाले दान हैं ऐसे दान नित्य प्रति निर्धन जन भी कर सकते है।"

आर्य भाषा

हरिद्वार मे एक सज्जन ने निवेदन किया 'यदि आप अपनी पुस्तको का अनुवाद कराके फारसी अक्षरो मे छपवा दे तो पजाबादि प्रान्तो मे जो लोग नागरी अक्षर नही जानते उनको आर्य धर्म के जानने मे बड़ी सुविधा हो जाय।

महाराज ने उत्तर दिया—"अनुवाद तो विदेशियो के लिए हुआ करता है। नागरी के अक्षर थोड़े दिनो मे सीखे जा सकते हैं। आर्य भाषा का भी सीखना कोई कठिन काम नही है। फारसी और अरबी के शब्दो को छोड़कर ब्रह्मावर्त की सभ्य भाषा ही आर्य-भाषा है। यह अति कोमल और सुगम है। जो इस देश मे उत्पन्न होकर अपनी भाषा के सीखने मे कुछ परिश्रम नहीं करता उससे और क्या आशा की जा सकती है ? उसमे धर्म की लगन है इसका भी क्या प्रमाण? आप तो अनुवाद की सम्मति देते है परन्तु दयानन्द के नेत्र तो वह दिन देखना चाहते हैं कि जब काश्मीर से कन्या कुमारी तक और अटक से कटक तक नागरी अक्षरो का ही प्रचार होगा। मैंने आर्यावर्त भर मे भाषा का ऐक्य सम्पादन करने के लिए अपने सकल ग्रन्थ आर्यभाषा मे लिखे और प्रकाशित किए हैं।"

शंकराचार्य का परकाया प्रवेश सत्य है या नहीं ?

सहारनपुर मे कर्नल अल्काट ने पूछा 'सुना है शकराचार्य अपने कलेवर से आत्मा को निकालकर परकाया मे प्रवेश कर जाते थे। इसमे आपकी क्या सम्मति है ?'

स्वामी जी ने उत्तर दिया "शकराचार्य का पर-काया-प्रवेश करना एक ऐतिहासिक विषय है। उसके सत्यासत्य मे कुछ नही कहा जा सकता। हां इतना मैं दिखा सकता हूँ कि चाहे जिस अंग मे अपनी सारी जीवन-शक्ति को केन्द्रित करदू । इसमे शेष सारा शरीर जीवन-शून्य हो जायगा। परकाया प्रवेश तो इसके आगे एक पाव मात्र ही है।"

नमस्ते का महत्त्व

मुरादाबाद मे श्रीइन्द्रमन जी ने स्वामी जी से निवेदन किया—"आप परस्पर नमस्ते कहने का आदेश देते हैं,

परन्तु हमने पहले 'जयगोपाल' शब्द चलाया था और फिर 'परमात्मा जीते' कहना प्रारम्भ कर दिया। पहले शब्दों पर ही लोगों ने बहुत से कटाक्ष किए थे अब यदि नया 'नमस्ते' शब्द चलाया तो लोग हमारी खिल्ली उडाने लग जायेंगे। वैसे भी देखें तो मेल-मिलाप में 'परमात्मा जीते' ऐसा कहना बहुत ही उचित है। छोटा बड़े को 'नमस्ते' करता अच्छा लगता है परन्तु पिता पुत्र को, स्वामी नौकर को और राजा अपने चपरासी को 'नमस्ते' कहे यह बात शोभा नही देती।"

स्वामी जी ने कहा—"इन्द्रमन जी! अभिमानी पुरुष बड़ा नही होता। बडा वही है जिसने अपने अहङ्कार को जीता। जो वास्तव में बड़े हैं वे अपने बड़प्पन को आप प्रकट नहीं किया करते। हमारे पूर्वजों में जितने भी ऋषि महर्षि और राजे महाराजे हुए हैं उनमें से एक ने भी अपने मुख से अपनी बडाई नही जताई। 'नमस्ते' का अर्थ पाव पडना नही है। इसका अर्थ यह है—सम्मान सत्कार। सभी ऊच-नीच और छोटे-बडे मेल-मिलाप मे सम्मान-सत्कार के भागी हैं। सर्वत्र होता भी ऐसा ही है। अच्छा आप ही अपने अन्त:करण से कहें कि जब कोई मनुष्य आपके आवास पर आता है उस समय आपके हृदय मे क्या भाव उत्पन्न होता है?" इसपर इन्द्रमन जी मौन साधे रहे। तब स्वामी जी ने फिर कहा—"महाशय! इस बात को सभी जान लेते हैं कि जब कोई पूज्य और प्रतिष्ठित मनुष्य घर पर आ जाता है तो उसे देखकर झुककर सम्मान देने को मन करता है। पुत्र से प्यार करने का भाव उत्पन्न होता है। नौकर चाकरों को अन्न-जल और आइए और बैठिए आदि शब्दों से सत्कृत करने की हृदय प्रेरणा करता है।

"ऊपर कहे सब भावों का प्रकाश 'नमस्ते' से तो हो जाता है परन्तु उस समय परमेश्वर का नाम लेना असङ्गत है, आत्मगत भावों के विपरीत है। जो भाव भीतर हो उसी को बाहर प्रकाशित करना शोभा देता है। पुरातन काल मे लोग 'नमस्ते' ही कहा करते थे। यह शब्द वेदों मे भी अनेक बार आया है। आर्यजनों मे इसी का प्रचार होना चाहिए।"

देश-प्रेम

पृष्ठ ५४ का शेष

के प्रबल प्रलोभनो मे अडिग रहना कठिन होता था। यद्यपि इस बात की पुष्टि करने वाले उदाहरण बहुत कम मिलते हैं तथापि उनसे उस जाति की विशेषताए अति भव्य रूप में समुपस्थित हो जाती हैं जो प्रलोभनो द्वारा आत्मसात करने के प्रयासों को घृणा की दृष्टि से देखती थी। वीरवर दुर्गादास का उदाहरण कितना उच्च है जिनमे राजपूती गौरव के सभी तत्त्व मूर्तिमान थे–वीरता, राजनिष्ठा और घोर आपत्तियों और विकट परिस्थितियों से आक्रान्त रहने पर भी बुद्धिमत्ता से युक्त जीवन की पवित्रता आदि वे गुण हैं जो उन्हे उस सम्मान के अधिकारी बनाते हैं जो आज भी उनके प्रति लोगो के हृदय मे विद्यमान है। उनके समक्ष जो प्रलोभन रखे गए वे वस्तुत: अपरिहार्य्य थे। न केवल धन-सम्पत्ति का ही लुभावना प्रलोभन उनके सामने रखा गया जिस पर स्वय वह और उनके सहस्रो बन्धु बान्धव लात मार देते अपितु शक्ति और प्रतिष्ठा के प्रतीक 'पंचहजारी' के उच्च पद पर प्रतिष्ठित किए जाने की बात भी उनके समक्ष रखी गई जिस पर प्रतिष्ठित हो जाने पर वह निम्न पद से ऊँचे उठकर अन्य राजाओ और अमीरों की श्रेणी में जा विराजते।

बहुत समय से इस सम्बन्ध में पर्याप्त चर्चा चल रही है। कुछ सज्जन ऋषि दयानन्द के अक्षर अक्षर को सत्य मानते हैं उनमें एक मैं भी हूँ परन्तु विचार करना यह है कि ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका मे जहाँ जहाँ भाष्यार्थ लिखा है वह ऋषि दयानन्द द्वारा ही हस्त लिखित हैं अथवा अन्य किसी द्वारा। संस्कृत और भाष्यार्थ मे महान् अन्तर है, विद्वान लोग इस पर विचार करेंगे। ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका में जहाँ पर उक्त विषय का प्रतिपादन किया है वहाँ भी संस्कृत और भाष्यार्थ में उत्पन्न विरोध है जिसके कारण सृष्टि की आयु गणना का विषय काफी चर्चा का बन गया है।

णस्ते ह्यासन्।" जहाँ ऋषि ने कल्प संवत् लिखा वहाँ किसी कारणवश संधि काल का जोड़ना छूट गया है क्योंकि ऋषि दयानन्द मनुस्मृति और सूर्यसिद्धान्त दोनों को प्रमाण ग्रन्थ मानते हैं। मनुस्मृति मे कल्प की काल गणना युगात्मक (सहस्रयुग) है। धर्म ग्रन्थ के लिए इतना ही पर्याप्त है परन्तु ज्योतिषग्रन्थ सूर्यसिद्धान्त युगात्मक और ससन्धि मन्वन्तरात्मक दोनों प्रकार की गणना विस्तारपूर्वक वर्णन करता है। मनुस्मृति में यह नहीं बताया है कि इतने मन्वन्तर व्यतीत हो गये क्योंकि मनुस्मृति भी सृष्टि के आदि काल का ग्रन्थ है उसमे कल्प की आयुगणना का सिद्धान्त है कितना समय व्यतीत हो गया इसके लिए

सृष्टि की आयुगणना और ऋषि दयानन्द

इन्द्रदेव आयुर्वेदरत्न, विद्यावाचस्पति

वेदानामुत्पत्तौ कियंति वर्षाणि व्यतीतानि ? अत्रोच्यते १६६०८५२६७६ वर्षाणि व्यतीतानि। सप्तसप्तितमोयं संवत्सरो वर्त्तते इति वेदितव्यम्। एतावन्त्येव वर्षाणि वर्तमान कल्पसृष्टेश्चेति ॥

यहाँ वेदों की उत्पत्ति और वर्तमान कल्पसृष्टि की एक ही आयु मानी है। सृष्टि से केवल मानव सृष्टि मान ले तो ऐसा उचित नही क्योकि यहाँ कल्प शब्द पड़ा हुआ है। कल्प का आरम्भ उसी समय माना जायेगा जिस समय भगवान ने इस कल्प को रचने के लिये प्रथम ईक्षण लिया। आगे भूमिका मे दिये मनु के उद्धरण से भी यह बात स्पष्ट है। तथा ऋषि दयानन्द सृष्टि के आदि में ही मानव उत्पत्ति मानते हैं यथा—"सृष्ट्यादौ मनुष्य देहधारि-

प्रामाणिक ग्रन्थ सूर्यसिद्धान्त है जिसमे लिखा है कि—

कल्पादस्माच्च मनवः षड् व्यतीता ससन्धयः।
वैवस्वतस्य च मनोर्युगानां त्रिघनो गतः ॥२२॥
अष्टाविंशद् युगादस्माद् यातं तत्कृतं युगम्।
अतःकालं प्रसंख्याय संख्यामेकत्र पिण्डयेत् ॥२३॥

इस वर्तमान कल्प में से ६ मन्वन्तर संधियों सहित बीत गए हैं और इस वर्तमान वैवस्वत नामक सप्तम् मन्वन्तर के ७१ महायुगों में से पूरे २७ चतुर्युग बीत गए हैं ॥२२॥ और अठ्ठाईसवी चतुर्युगी में से सतयुग पूरा बीत गया है अब काल की सख्या करने के लिए इस २८ वी चतुर्युगी के कृतयुग तक के बीते हुए वर्षों को एक स्थान में योग करे ॥२३॥ सू० सि० प्रथमाध्याय।

इसके अनुसार सूर्यसिद्धान्त का रचनाकाल कल्प

के आदि से १९७०७८४००० सौर वर्ष आता है

इसमे गत त्रेता युग १२९६०००

,, द्वापर युग ८६४०००

,, कलि सवत् ५०६१ जोड़े

योग १९७२९४९०६१ कल्प संवत्

मानव संवत् और वेद संवत्—

गृहर्क्ष देव दैत्यादि सृजतोऽस्य चराचरम् ।
कृताद्रिवेदा दिव्याब्दाः शतघ्ना वेधसोगताः ।।२४।।
सू० सिद्धान्ते

कल्प के आरम्भ से ईश्वर को ग्रह नक्षत्र देव दैत्य आदि चराचर की सृष्टि करते हुये ४७४०० दिव्य वर्ष बीत गये। ३६० वर्षों का एक दिव्य वर्ष होता है (सूर्यसिद्धान्त प्रथ० श्लो. १४) अत. कल्प के आदि से चराचर की उत्पत्ति तक ४७४००×३६०=१७०६४००० सौर वर्ष व्यतीत हुये।

इस को उक्त कल्पकाल मे से घटाने पर १९५५८८५०६१ वेद सवत् अथवा मानव संवत् है। ऋषि दयानन्द को भी यही काल अभिमत है। ऋषि के मस्तक मे कल्प सवत् मे से सृष्टि रचनाकाल (१७०६४०००) को घटाने की धारणा थी उसको न घटाकर सधिकाल घट गया। जिससे वेद सवत् मे अन्तर आ गया।

१५ संधिकाल—

युगानां सप्तति सैका मन्वन्तरमिहोच्यते।
कृताब्दसंख्या तस्यान्ते सन्धि प्रोक्तो जलप्लवः ।।१८
ससन्धयस्ते मनवः कल्पे ज्ञेया चतुर्दशः।
कृतप्रमाणः कल्पादौ संधिः पञ्चदशः स्मृतः ।।१९।।

७१ युगों का एक मन्वन्तर होता है और मन्वन्तर के अन्त में सतयुग के वर्ष परिमाण के बराबर संधि का परिमाण है। इस सधिसमय सारी पृथ्वी जल से भर जाती है। १४ मन्वन्तर का एक कल्प होता है इसमे १४ अन्त की सधि भी होती है और एक आदि संधि सतयुग के वर्ष परिमाण के बराबर होती है। अर्थात एक कल्प मे १४ मन्वन्तर और १५ संधियां होती हैं।

इत्थं युग सहस्रेण भूत संहार कारकः।
कल्पो ब्राह्ममहः प्रोक्त शर्वरी तस्य तावती ।।२०।। सू०सि

पूर्वोक्त प्रकार से १००० युग का कल्प होता है अर्थात् ७१×१४=९९४ युग और १५ संधि×सतयुग काल=६ युग कुल १००० युग। जिसके अन्त में सब भूत=चराचर का नाश हो जाता है। यही कल्प ब्रह्म का एक दिन है। उतनी ही रात्रि होती है।

प्रत्येक मन्वन्तर के अन्त मे जब जलप्लव होता है तो भूमि के जलमग्न होने के लिये भी और पुनः जल से बाहर आने मे भी काफी समय चाहिये इसी काल को सूर्यसिद्धान्त मे सधिकाल कहा है। ईक्षण से लेकर जलप्लव अर्थात् भूमि निकलने तक एक संधि की आवश्यकता है इसके पश्चात् कल्प के अन्त में जलप्लव से लेकर कार्य का कारण मे अदर्शन होने तक अर्थात् प्रलयारम्भ तक एक संधिकाल की आवश्यकता है। इस प्रकार १५ संधियाँ प्रत्यक्ष सिद्ध हैं। यदि ऋषि दयानन्द को संधियाँ अभीष्ट न होती तो मन्वन्तर गणना के काल को न लेते और केवल मनुस्मृति के आधार पर वेद संवत् गणना कर देते। जब पौराणिक संकल्प के आधार पर वेद सवत् सिद्ध किया तो क्या पौराणिक जगत् सूर्यसिद्धान्त को नहीं मानता। पुराण में साफ लिखा है—नारद पुराण पूर्वभागद्वितीय पाद मे—

मनुः कृताब्द सहिता युगानामेक सप्तति।
विर्वेविनं स्यविप्रेन्द्र मनवस्तुचतुर्दश ।।६३।।

हे ब्रह्मन्। कृताब्द सहित (एक सतयुग अधिक) इकहत्तर युग का एक मन्वन्तर होता है। ब्रह्मा जी के एक दिन में चौदह मनु होते हैं।। संकल्प तो मन्वन्तर गणना के सिद्धान्त पर है अतः संकल्प के अनुसार कल्प

सवत् उक्त प्रकार से ही सिद्ध है।

संकल्प—

"ब्राह्मणो द्वितीय प्रहरार्द्धे" मे प्रहरार्द्ध की कोई तुक नहीं। सूर्यसिद्धान्त में लिखा है—

परमायु शतं तथा होरात्र संख्यया।
आयुषोर्द्धमितं तस्य शेष कल्पोयमदिमः ।।२१।।

ब्रह्मा की परमायु १०० वर्ष की है इस आयु का आधा भाग बीत गया है और अवशिष्ट आयु के कल्पों में से यह वर्तमान पहला कल्प है इसके अनुसार उपरोक्त संकल्प मे 'ब्राह्मणो द्वितीय परार्द्धे' होना चाहिये। विद्वज्जन विचार करें।

भूमि का उत्पत्तिकाल—

सूर्यसिद्धान्त के प्रथमाध्याय में १४ वे श्लोक से यह स्पष्ट है कि—

(१) सृष्टि दो प्रकार की है चर और अचर। दोनों की उत्पत्ति मे उक्तकाल का निर्देश किया है। अन्य ऋषियों का भी यही सिद्धान्त है कि प्रथ मअचर सृष्टि हुई फिर चर सृष्टि। ऋषि दयानन्द ने भी तस्माद्वा'''इत्यादि प्रमाण देते हुए अपने ग्रन्थो में लिखा कि अचर सृष्टि के बाद चर सृष्टि हुई।

(२) दूसरी बात यह भी सिद्ध है कि सूर्योत्पत्ति पहले हो चुकी थी उसके पश्चात् भूमि की उत्पत्ति हुई क्योंकि सूर्योत्पत्ति के बिना वर्ष गणना नहीं हो सकती है। सूर्य के चारो ओर भूमि की एक परिक्रमा का नाम वर्ष है। परन्तु उक्त काल गणना (१७०६४०००) कल्प के आदि से मानव उत्पत्ति तक है इसी मध्य में सूर्य भूमि इत्यादि सभी की उत्पत्ति हुई तो कैसे सिद्ध हो कि कल्प के आदि से इतने वर्षों के बाद भूमि की उत्पत्ति हुई।

सूर्यसिद्धान्त मत से सतयुग प्रमाण एक जलप्लव होता है। यह सृष्टि के आरम्भ मे भी ईक्षण के पश्चात् भूमि के उत्पन्न होने से पहिले हुआ। भूमि उस जल में से निकली अतः कल्प आरम्भ से

१७२८००० वर्ष के पश्चात् भूमि की उत्पत्ति हुई और उसके बाद
२३७६००० वर्ष औषधियो के उत्पन्न होने तक समय व्यतीत हुआ। फिर
१२९६०००० वर्ष अर्थात् तीन युग मानव उत्पत्ति तक व्यतीत हुये इस प्रकार
१७०६४००० वर्ष के पश्चात् मानव उत्पत्ति हुई।

धर्मनिरपेक्ष राज्य''''''

[पृष्ठ ५१ का शेष]

रिक फूट, अनैतिकता का भी अवसान करना ही चाहिए। और भी अनेक ऐसे ही राष्ट्रोपयोगी कार्य राज्य के प्रमुख कार्य हैं जिन्हें करना चाहिये। हमारे परमोपयोगी कार्य पंचवर्षीय योजनायें भी तो उपेक्षणीय नहीं है। योजनाओं में अपव्यय न होना चाहिये। प्रजा की गाढी कमाई को राष्ट्रहित में ही व्यय किया जाये स्वार्थ में नही। यदि मेरे उपरोक्त सुझावों को राष्ट्र के हितैषी स्वीकार करके कार्यान्वित करेंगे तो समाजवादी शासन निर्दोष होकर प्रजा के लिए वरदान सिद्ध होगा। मैं आशा करता हूं कि मेरा विनम्र निवेदन अरण्य रोदन न होकर शासनोपयोगी सिद्ध होकर कल्याणकारक होगा।

मानुषी सृष्टि और वेद संवत्

श्री वैद्य कृपाराम शास्त्री

भारत भर के विद्यालयों में अठा हवीं सदी के लिए इतिहास पढाये जाते हैं, क्योंकि ये इतिहास उन ईसाई लेखकों के लिखे हुये हैं, जो सृष्टियुत्पत्ति को ४४०० ईस्वी पूर्व मान कर चले, साथ ही आर्य गौरव भारत प्रेम से भारतीयो को दूर करना भी इनका ध्येय था, इसलिये ये सृष्टियुत्पत्ति और वेद प्रादुर्भाव को ७ हजार वर्ष के भीतर ही समाप्त किये बैठे हैं।

शोक से लिखना पडता है, कि आज देश को स्वतन्त्र हुये १३ वर्ष हो चुके हैं, फिर भी भारत सन्तति के मनो को पतित करने वाला वही विष भारत सन्तानो को पिलाया जा रहा है, २ अरब वर्ष पुरानी आर्य सम्यता को ७ हजार वर्ष में ही खेचा जा रहा है, सारी विद्याओ के आविष्कर्ता, आर्य सम्यो को असम्य जगली बताया जा रहा है।

सत्य प्रेमियो! आप इस सत्य पक्ष के लिये आन्दोलन करें, और शिक्षा विभाग को सत्य पक्ष पर आरूढ करें।

सत्य हेतु लिख रहा हूँ, ध्यान दे।

प्रथम हेतु संसार के संवत और वंशावलियों द्वारा निर्णय :—

आर्य सम्वत्—१९६०८५३०६० वर्ष सकल्पानुसार सम्य विद्वान आर्यों के प्रत्येक पर्व संस्कार शुभ कार्य के आरम्भ मे संकल्प पढ़ा जाता है। वैवस्वत मन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे ५०६० कलि सम्वत्सरे अमुक मासे अमुक तिथौ एतत्कार्यक्रियते प्रत्येक यज्ञ, राज्याभिषेक दान तीर्थ स्नान कन्यादान आदि मे भी बाप दादा कुल गोत्र शाखा वेद उच्चारण कर सृष्टि सम्वत् मास दिन उच्चारण कर कृत्य करना, अनिवार्य है देखो यजुर्वेद० । ।६।४०। अर्थ=मैं या हम आज इस सृष्टि सम्वत् मेइस कार्य में लगे हैं। इस सकल्पानुसार ६ मन्वन्तर बीत चुके हैं, इन ६ मन्वन्तरो की प्रसिद्ध प्रसिद्ध वशावली आर्य इतिहास मे मौजूद हैं, सातवाँ वैवस्वत मन्वन्तर चल रहा है, उसका यह २७वाँ कलियुग है, ६ पूर्व मन्वन्तरो की वशावलियाँ आज रही तक की वश परम्परा आर्यों के कण्ठस्थ चली आ है, इस वैवस्वत मन्वन्तर का सम्वत् १२०५३-३६० है, सृष्टि का सम्वत् आर्यो ने ही याद रखा, और स्थानो पर इस मन्वन्तर मे जैसे जैसे आर्य सम्यता पहुँची, वे सब सम्वत् इसी मन्वन्तर के हैं, परन्तु ७ हजार वर्ष वाले सिद्धान्त की तो धज्जियाँ उड जाती हैं। भारत से ही आर्यों की पहली धारा चीन गई, फिर खता, चाल्डिया, फारस, स्कन्देनेविया मिस्र काल्डिया वैवोलोविया इत्यादि

२ चीनी सम्वत्, ६६००२४६० वर्ष चीन के पहले बादशाह से हकीम कनफशस उनके मुकन्निन तक जो मसीह से ५०० वर्ष प्रथम हुआ है, देखो वदी हिन्दुस्तान पृ० ६ छपी कलकत्ता सन् १८७४ ईस्वी

३ खताई सम्वत्—८८८४०३३३ वर्ष—देखो नफायसु

फसूल तारीख खताई व आईन अकबरी पृष्ठ २७२ छपी कलकत्ता सन् ६७ व तारीख वदी हिन्दुस्तान पृष्ठ १० छपी कलकत्ता १८७४ ईस्वी

४. चाल्डियन सम्वत् ,—२१५००००० वर्ष पृथ्वी की उत्पत्ति का वर्ष दूसरा ज्योतिष विषयक वर्ष ४७०००० ।

५ काल्डिया सम्वत्,—१५१९६० वर्ष, काल्डिया के लोग अपने पहले पुरुषा को मसीह से डेढ लाख वर्ष प्रथम हुआ मानते हैं ।

६. फारसी सम्वत्—१८९९६० वर्ष=फारस वाले अपने पहले बादशाह से जरदुस्त तक बादशाहों की पीढ़ियाँ ईसा से १८४९७० गिनते हैं, जरदुस्त ईसा से ३००० वर्ष पूर्व हुआ है अतः तीनों संख्याओं का ऊपर का जोड़ १८९९६० फारसी सम्वत् है ।

७. आर्यों के फिनेशिया जाने पर फिनेशियन सम्वत्,—३०००० वर्ष

८. इजिप्ट सम्वत् २८६१४ आर्यों के इजिप्ट जाने पर या मिस्री सम्वत् २७६१४ पहले के हजार वर्ष पीछे मैनस बादशाह से बडे सिकन्दर तक २५३८० बड़े सिकन्दर को हुआ २३१४ जोड २७६१४ का इतिहास उपस्थित है ।

९-१० कलियुगी सम्वत् युधिष्ठिरी सम्वत् ३ नूह सम्वत् ५०६० वर्ष इस कलियुग के प्रथम दिन से

देखो—१ आईने अकबरी छपी कलकत्ता पृष्ठ २६६—१८६७ ई०

„ २ राजावली ज्योतिष ग्रन्थ माधवाचार्य कृत वंशावलियो सहित तथा देखो हरिश्चन्द्र चन्द्रिका पृष्ठ ८७—९०

„—३ रिसाला दहिली सोसायटी जिल्द १ पृष्ठ २८-२९-१८७२ ई० सर विलियम मोर द्वारा प्रशस्ति (शिला लेखों) अनुसन्धा ग्राम सोथर बूंदी राज्य ।

„—४ वृहत्संहिता वराहमिहिर कृत युधिष्ठिर काल मे सप्तर्षि मघा मे थे, यह वैज्ञानिक तथ्य है ५०६० पहले ही थे।

„—५ देखो गयासुल्लुगात रदीफ १ पृष्ठ ३२५ सन् ७१ ईस्वी ।

„—६ महर्षि कृत वशावलियाँ वर्ष मास दिन सहित

पुनः देखो युधिष्ठर से पूर्व प्रसिद्ध चक्रवर्त्ती राजाओं की चन्द्रवंश सूर्यवश की वंशावलियाँ स्वायम्भव मनुपर्यन्त=मनुस्वायम्भवो ऽब्रवीत् (मनुस्मृति मनु के पुत्र पौत्र आदि ।)

दूसरा हेतु—पदार्थ विद्या विज्ञान

मित्रो ! पाश्चात्य विद्वानो के अधूरे अनुसन्धान समय २ पर बदलते रहे, आगे आने वालों ने पिछलों का खडन किया, और अन्तमे सचाई तक आ लगे ।

१ **२ से ४ करोड़ वर्ष तक**

१८६१ ईस्वी मे लार्ड केलविन ने पृथ्वी के मूल की पिघली अवस्था को देखकर यह आका, परन्तु रेडियो सक्रिय सिद्धान्त को न समझा ।

२ **१० करोड़ वर्ष**

सर विलियम टामसन धरती का ठडी हो कर वनस्पति योग्य होने को मानते हैं, देखो सिक्रेट डाक्टर्न जिल्द २ पृष्ठ ६६४।

३. **५० करोड़ वर्ष**

प्रोफेसर रीड इस अवस्था को मानते हैं, देखो उनका व्याख्यान १८७६ ईस्वी लिवरपूल ज्योलोजीकल सोसायटी में ।

४. **१ अरब वर्ष**

प्रोफेसर निकलती अरब्ब ज्यालोजिस्ट उत्तम अनुसन्धानों से नियत करते हैं, देखो वर्ल्ड लाईफ पृष्ठ १८० ।

५ २ अरब वर्ष तक

अनुसन्धान जीटर मशीन इंगलैंड १९६० ईस्वी

कथन—सूर्य की वर्तमान तापमान अवस्था की उत्पत्ति आज से २ अरब वर्ष पूर्व हुई थी।

नोट—यह स्मरण रखिए कि यही तापमान अवस्था मनुष्योत्पत्ति की ठीक है, और प्रथमावस्था के ही मनुष्यों को वेद ज्ञान भी अनिवार्य है, सब अहले कुतब यही मानते हैं, अतः संकल्पानुसार वेद सम्वत् शुद्ध है।

६ सृष्टि स्थिति ४३२ करोड़ वर्ष तथा वेद प्रादुर्भाव २ अरब वर्ष के समीप

प्रसिद्ध ऐतिहासिक आनरेबिल इन्फिन्सटन बहादुर साहेब भूतपूर्व गवर्नर बम्बई निर्णय देते हैं, कि जो समय ब्रह्मा का १ दिन नियत किया गया है, वह ज्योतिष विद्या के आधार पर स्थित हुआ है नोडिज और इम्पायजर का १ चक्र जो हिन्दुओ के ज्योतिषानुसार ४ अरब ३२ करोड़ वर्ष मे पूरा होता है, ब्रह्मा का १ दिन है, नोडिज पदतल सूर्य वृत्त के उन बिन्दु या स्थानो को कहते हैं, कि जहा किसी ग्रह की गति विधि का परिधि का कटाव होता है, और रासवजनव इम्पायजर सितारे के उन दो स्थानो को कहते हैं कि जो आदिकाल मे अत्यन्त निकट और महादूर समझे जाते थे अर्थात् शीर्षतल और पदतल (देखो सारा सौर चक्र और समझो) तारीख हिन्दुस्तान पृष्ठ २५६ बा-३। १८६६ ई० छपा अलीगढ।

नोट—यह चक्र अब आधे के समीप आ चुका है, ४३२ करोड वर्ष पर ही समाप्त हो जावेगा। सूर्य ताप और सौर ग्रहों की इसी वर्तमान अवस्था मे वनस्पति पशु मनुष्य की उत्पत्ति निश्चित निभ्रान्त सिद्धान्त है, क्योंकि जीटर मशीन के अनुसन्धान ने सूर्य की इसी तापमान अवस्था का समर्थन कर दिया है, यह अवस्था ही मनुष्य की उत्पत्ति की ठीक है, और ईश्वरीय ज्ञान वेद भी उस ही समय आवश्यक है, क्योंकि स्वाभाविक ज्ञान से मनुष्य उन्नत होता तो अफरीका के मरुस्थल वाले और भेडिये से पले उन्नत हो जाते।

तीसरा हेतु ज्योतिष विद्या नितान्तसत्यनिर्भ्रान्त निर्णय

बन्धुवर्ग—जैसे बाईबल कुरान मनुष्योत्पत्ति व वेदो के प्रादुर्भाव काल बताने में असमर्थ हैं वैसे ही पाश्चात्य विज्ञान भी ठीक ठीक वर्ष मास दिन घड़ी पल विपल (निमेष) बताने मे असमर्थ है, विज्ञान केवल अनुमान लगा सकता है, यदि किसी की आयु जानना हो तो और उस का जन्म पत्र हो तो उससे स्पष्ट प्रतीत हो जावेगा यह उस तारीख उस दिन ३ बज कर १७ मिनट पर दुपहर पीछे जनवरी १८६० मे पैदा हुआ था, यदि हम इस जन्म पत्र पर विश्वास न कर के उसे डाक्टरो को दिखावे, फिर उसकी आयु निश्चित करें तब भिन्न २ डाक्टरों की भिन्न भिन्न सम्मति कितना हास्यास्पद कांड होगा, हा जन्म कुण्डली न हो तो विवश हमे डाक्टरी अनुमान का ही सहारा लेना पड़ेगा, पर भोले भाईयों, आर्यों के पास तो वेदों को कुण्डली मौजूद है जिसका अनुसरण हिन्दुओं पारसियो स्कन्देनेवियनो बेबिलोनियनो ने भी किया है, इस कुण्डली के सच्चा होने के भी प्रमाण पढिये।

साक्षी १—पादरी बिल्टली साहेब तहकीकात एशिया जिल्द ४ पृष्ठ १५२ आर्यों ने चन्द्र सूर्य नक्षत्रों का हिसाब ईसा से १४४२ वर्ष पूर्व जान लिया था।

साक्षी २—कजसेनी वेजी फिलीपेड साहिबान अपनी बनाई तारीखे हिन्द बा० १ अध्याय ३ पृष्ठ २३९-

२४४ पर लिखते हैं, कि ईसा से ३ हजार वर्ष पहले ही आर्यों ने ज्योतिष के सत्य हिसाब जान लिए थे।

साक्षी ३—प्रोफेसर बालसन कलब्रुक का इण्डियन एलजेबरा पृष्ठ ४०८ व ४०० व इडम्बरा रिव्यू जिल्द ३६ पृष्ठ पर लिखते हैं। ज्योतिष के अनुसन्धानों में बीजगणित का बरताव जो कि आर्यों ने ही किया है, गणित विद्या मे दशमलव भी इन्हीं की रचना है देखो तारीख हिन्दुस्तान पृष्ठ २४६

नोट—सूर्य सिद्धान्त जो कि २१६५०६० वर्ष का बना हुआ है, रेखागणित बीजगणित अंकगणित बताता है उसके रचनाकाल के श्लोक कलि ५०६० का सम्वत् ऊपर दिया है।

कल्पादस्माच्च मनवः षड् व्यतीताः ससन्धयः।२२
वैवस्वतस्य च मनोर्युगानां त्रिघनो गतः।
अष्टाविंशाद्युगादस्माद्यातमेतत्कृतं युगम्।
अतः कालं प्रसंख्याय संख्यामेकत्र पिंडयेत्॥

अधिकार

अर्थ—६ मन्वन्तर सन्धि सहित पूरे बीत चुके २७ चतुर्युग भी और २८ वे कृतयुग के पूरा बीतने पर यह ग्रन्थ लिखा जा रहा है। है न कुण्डली साफ—याद रहे सूर्य सिद्धान्त ने वेदादि शास्त्रो के प्रमाण लेकर ही सब विद्याओ का निरूपण किया है, यहा तक कि शतपथ आदि व श्रीराम का जिनको हुए ८६६०६० वर्ष या इससे अधिक हुए या उनसे पीछे का वर्णन नही है कितना प्रामाणिक ग्रन्थ है इसे सोचिये और भी पुष्टि

पुष्टि १—अस्मिन्कृत्युगस्यान्ते सर्वे मध्य गताग्रहाः;
अर्थ—इस सतयुग के अन्त मे सब ग्रह मध्य गत थे मेषादि राशियां तुल्य थी। गणना कर लो प्यारे। गौरांग ज्योतिषी की साक्षी।

पुष्टि २ साक्षी १—

योरुप का प्रसिद्ध ज्योतिषी वेली थ्याजोष्ठ ग्रोफ दी हिन्दूज बाई कोट बार नेस्ट जेरना पेज ३२ पर लिखता है कि कलियुग का आरम्भ ३१०२ ई० पूर्व २० फरवरी को २ बजकर २७ मिनट ३० सेकेन्ड पर हुआ था, हो गये वर्ष घडी पल विपल ठीक सिद्ध कलि आरम्भ को।

अब पूरा कल्प भी पढ़िये

पुष्टि ३ साक्षी २—

प्रसिद्ध ऐतिहासिक आनरेबल इनफिन्स्टन बहादुर गवर्नर बम्बई तारीख हिन्द पृष्ठ २५६ बा० तीसरा छपी १८६६ ई० मे सृष्टि की आयु ४३२ करोड का सही निर्णय ज्योतिषचक्र के अनुसार देते हैं।

सावधान—वास्तव मे प्रत्येक कलियुग के आरम्भ मे सब ग्रहयुति मे होते हैं ४+३+२+१=१० कलिकी ही चतुर्युगी है। शास्त्रों वेदो मे इसी को युग कहा है एक हजार युग अर्थात् ४३२ करोड वर्ष की सृष्टि है देखो अथर्व वेद ८।१।२१

शतं तेऽयुतं हायान्द्वे युगे त्रीणि चत्वारि कृण्मः

अर्थ—४३२०००००० यह सृष्टि वर्षों की संख्या है जब वेद ने निर्णय दे दिया, तब वेद के व्याख्यान कर्त्ता ऋषियो ने वेदानुसार ही यह हिसाब इस प्रकार प्रजा मे प्रचलन कर दिया जो आदिकाल से सकल्प रूप मे चला आ रहा है।

(क्रमशः)

प्राचीन भारत में स्त्रियों की शिक्षा

श्री इन्द्र एम. ए.

प्राचीन भारत में शिक्षा प्राप्ति का अर्थ था गुरु के पवित्र चरणों में बैठकर वेदों तथा अन्य सच्छास्त्रों का अध्ययन करना। क्या प्राचीन भारत मे वेदों तथा अन्य लौकिक विद्याओं के पढ़ने का स्त्रियों को अधिकार' प्राप्त था? ऐसा प्रतीत होता है कि वैदिक काल मे पुरुषों के समान ही स्त्रियों को वेदाध्ययन का अधिकार था। यदि यह बात न होती तो हमें स्थान-स्थान पर वेद प्रचार कार्य में संलग्न अनेक सुप्रसिद्ध देवियों के नामों का उल्लेख न मिलता। वे न केवल वेद मन्त्रो की व्याख्या ही करती थीं अपितु ऋत्विजों के समान यज्ञ भी कराती थी। लोपामुद्रा, ममता और विश्ववारा आदि-आदि अनेक ऋत्विकाएँ हो गई हैं।

ब्रह्मचर्य का ठीक-ठीक अर्थ जानने वालो को विदित है कि प्राचीन भारत में ब्रह्मचर्य का अर्थ एकमात्र संयम के व्रत का परिपालन ही न था अपितु वेद-वेदाङ्ग के अध्ययन के लिये दीक्षित होना भी था। ब्रह्मचर्याश्रम में प्रविष्ट होते समय बालक का उपनयन संस्कार होता था। इस संस्कार के पश्चात् विद्यार्थी वेद का नियमित अध्ययन प्रारभ कर देता था। वेदारभ उसके ब्रह्मचर्य जीवन का आवश्यक अंग होता था।

वैदिक और उत्तरकालीन साहित्य में ऐसी पर्याप्तिसाक्षी उपलब्ध है, जिससे स्पष्ट है कि पुरुषों के साथ ही स्त्रियाँ भी ब्रह्मचर्य व्रत धारण किया करती थी। (अथर्ववेद १७-७-३०)। दूसरे शब्दो में लड़कियों को अध्ययन और ज्ञान-विज्ञान की प्राप्ति का समान अवसर मिलता था। गुरुकुलों में ब्रह्मचारिणियाँ अपने आचार्यों के परिवारों मे रहतीं और ब्रह्मचारियों के साथ शिक्षा प्राप्त किया करती थी। उदाहरणार्थ रामायण काल में ऐत्रेयी का उल्लेख मिलता है जो लव और कुश के साथ बाल्मीकि के आश्रम मे वेदाध्ययन किया करती थी (उत्तर राम चरित) आश्वलायन गृह सूत्र (समानम ब्रह्मचर्यामि) में बताया गया है कि ब्रह्मचर्याश्रम पुरुष और स्त्री दोनों के लिए समान रूप से आवश्यक है। अथर्ववेद के अनुसार ब्रह्मचर्याश्रम की समाप्ति के पश्चात् ही कन्या विवाह की अधिकारिणी होती है। (अथर्ववेद ११-३-१८)

यज्ञोपवीत धारण करने के सम्बन्ध मे जो विद्याध्ययन प्रारंभ करने का चिन्ह माना जाता था हमारा कथन यह है कि स्त्रियों को भी इसके धारण करने का अधिकार था।

गोभिल गृह सूत्र मे कहा गया है कि अच्छे वस्त्र तथा यज्ञोपवीत धारण की हुई कन्या को पुरोहित यज्ञ वेदी पर लाए और मन्त्र का उच्चारण करे (११-१-१६)। पारस्कर मे भी उन स्त्रियो का उल्लेख है जो यज्ञोपवीत धारण करती और वेदाध्ययन करती थी 'स्त्रिया उपनीता अनुपनीताश्च।' हरित स्मृति मे प्राचीन काल का उल्लेख करते हुए कहा गया है कि दो प्रकार की स्त्रियाँ थी—पहली वे जो वेदाध्ययन मे निरत रहती थीं और दूसरी वे जो छोटी आयु मे विवाहित हो जाने पर गृहस्थ मे पड जाती थी। प्रथम प्रकार की स्त्रियों का सामान्यतया उपनयन सस्कार होता था और वे यज्ञोपवीत धारण करती थी—"**द्विविधा स्त्रियो ब्रह्मवादिन्या सद्योवधवश्च।**"

जिनकी यह मान्यता है कि वेद काल मे स्त्रियो के लिए वेदपाठ वर्जित था वे सूत्र साहित्य के उन साहित्य स्थलो का खंडन न कर सकेगे जिनमे कहा गया है कि कतिपय धार्मिक अनुष्ठानो को करते समय स्त्रियाँ मन्त्रोच्चारण करें "**इमाम् मन्त्रम् पत्नी पठेत।**"

उसी साहित्य मे ऐसे प्रमाण विद्यमान है जिनसे सिद्ध होता है कि स्त्रियाँ भी पुरुषों के समान आध्यात्मिक और लौकिक ज्ञान-विज्ञान मे निष्णात होती थी। आपस्तम्ब गृह सूत्र मे गृहस्थ के कर्त्तव्यो विषयक सम्वाद के अन्त मे कहा गया है वे समस्त वर्णों के स्त्री पुरुषो से जाने जा सकते हैं। (आपस्तम्ब ११-२६-१५) आपस्तम्ब मे अनेक स्थलो पर 'आचार्य' शब्द का उल्लेख मिलता है जिसका अमरकोश मे अर्थ यह बताया गया है— वह जो स्वत. वेद मन्त्रों का अर्थ करने मे समर्थ हो।"

गुरु पत्नी के लिए आचार्यानी शब्द प्रयुक्त होता है जिसके लिए नियम से विदुषी देवी होना आवश्यक नही होता परन्तु 'आचार्य' के लिए ऐसा होना अनिवार्य होता है। 'आचार्य' शब्द उस समाज-व्यवस्था का द्योतक है जिसमे स्त्रियो को आत्म-अभिव्यक्ति और आत्म-विकास के समान अवसर प्राप्त रहते थे। सूत्र साहित्य मे उपाध्याय शब्द भी व्यवहृत हुआ है जो 'उपाध्यायिनी' शब्द से नितान्त भिन्न है। इससे भी स्पष्ट है कि प्राचीन भारत मे स्त्रियो की धार्मिक स्थिति उच्च थी और वे आध्यात्मिक प्रचारकों और अध्यापको के रूप मे सम्मानित होती थीं। आर्यों के हृदयो मे स्त्रियो के प्रति इतना अधिक आदरभाव था कि उन्होंने विद्या को 'सरस्वती' के रूप मे मूर्तिमान किया।

उपनिषदो के काल की शिक्षा विधि की ऊहापोह करने पर हृदय आनन्द विभोर हो उठता है। राज सभाओ का चित्र जो ब्रह्मविद्या के गूढ प्रश्नो पर विचार और विवाद करके संसार की जटिलताओ का समाधान प्राप्त करने के लिए हुआ करती थी और जिनमे स्त्रियाँ भी भाग लेती थी यह निश्चय करने के लिए पर्याप्त है कि उन दिनो स्त्रियो की स्थिति उच्च थी।

राजर्षि जनक जो इन धार्मिक सभाओ की व्यवस्था किया करते थे स्वय ब्रह्मविद्या मे निष्णात थे।

ऋत्विजों को दिये जाने वाले अनेक उपहारों मे १ सहस्र गऊओ के भेट की कथा सुप्रसिद्ध है जिनके प्रत्येक सींग मे स्वर्ण मुद्राएँ बँधी हुई थी। ब्राह्मणो को सबोधित करते हुए जो दूरस्थ राज्यो से सभा मे भाग लेने के लिए आए हुए थे राजा जनक ने कहा "हे पूज्य महानुभावो! आप में जो सबसे अधिक ज्ञानवान हो वह इन गऊओ को हाँक कर ले जाय।" इस चेतावनी का उत्तर देने का किसी को साहस न हुआ अन्त मे याज्ञवल्क्य ने अपने एक शिष्य को गऊओं को हाँक ले जाने के लिए कह दिया। इस पर सभा मे रोष छा गया। जनक की ऋत्विका अश्वला ने उठकर याज्ञवल्क्य को कहा 'क्या आप वास्तव में हम सबसे बुद्धिमान् हैं? इस प्रश्न का उत्तर याज्ञवल्क्य ने बडी चतुराई से यह दिया 'मैं सबसे अधिक बुद्धिमान् को प्रणाम करता हूँ परन्तु मैं इन गऊओं को लेना चाहता हूँ।

यह था संकेत जो विनम्र ढग से दिया गया था। इसका अभिप्राय यह था कि वैदिक कर्मकांड के सिद्धान्तों के

सम्बन्ध में उनसे प्रश्न करके उनकी विद्वत्ता की परीक्षा कर ली जाय। आठ विद्वानों ने याज्ञवल्क्य से सवाद किया और इस तत्ववेत्ता ने उनके प्रश्न का उत्तर देकर उन्हे दो बार चुप कर दिया। उन्ही मे एक गार्गी थी जिसने ऋषि को चक्कर में डाल दिया था। ऐसा प्रतीत होता है कि गार्गी आयु और सामाजिक स्थिति की दृष्टि से याज्ञवल्क्य के सदृश थी और संभवत. एक ही आश्रम मे उनके साथ पढी थी। पडित सीतानाथ तत्व भूषरण (उपनिषदो का थीइज्म अर्थात् आस्तिकवाद पृ० २०) ने उपनिषदो के 'आस्तिकवाद' विषयक अपने व्याख्यान मे उपर्युक्त विवरण देने के उपरान्त यह सम्मति प्रकट की थी कि प्राचीन भारत मे स्त्रियों और पुरुषों की सह-शिक्षा प्रचलित थी। (इस सह शिक्षा का रूप आजकल जैसा न रहा होगा, इस विषय मे प्रामाणिक अनुसन्धान की आवश्यकता है—सपादक सार्वदेशिक) गार्गी की विद्वत्ता के सम्बन्ध मे कुछ उदाहरण दिए जाते हैं। वह याज्ञवल्क्य से कहती है "हे याज्ञवल्क्य काशी या विदेह के किसी भी योद्धा का पुत्र जिस प्रकार धनुष की प्रत्यचा ठीक करके और अपने हाथ मे शत्रुनाशक बारण लेकर युद्ध के लिए सन्नद्ध होता है इसी प्रकार मैं २ प्रश्नो को लेकर आपसे युद्ध करने के लिए खडी हुई हूँ। मेरे इन प्रश्नो का उत्तर दो।"

(बृहदारण्यक)

"जो द्यौ से ऊपर है, जो पृथ्वी से नीचे है, जो इस द्यौ और पृथ्वी के मध्य मे है जिसको भूत, वर्तमान और भविष्यत् कहते हैं वह किसमें ओतप्रोत है ?"

इसका उत्तर याज्ञवल्क्य ने दिया कि वह—आकाश में ओतप्रोत है।

इस स्थान पर हमें उत्तर पर विशेष रूप से विचार नहीं करना है। गार्गी ने दूसरा प्रश्न यह किया कि 'आकाश किसमें ओत प्रोत है ?" इस प्रकार अनेक प्रश्न किए। गार्गी के तर्क से तंग आकर याज्ञवल्क्य कह उठे हे गार्गी और प्रश्न मत कर।" इस पर गार्गी ने अपना सवाद बन्द कर दिया।

उपनिषद काल मे दूसरी ब्रह्मवादिनी देवी स्वय याज्ञवल्क्य की पत्नी मैत्रेयी थी। इनकी २ पत्नियाँ थी—मैत्रेयी, कात्यायिनी। मैत्रेयी का रुझान अध्यात्म विद्या की ओर और कात्यायिनी का रुझान घरगृहस्थ के धधो की ओर था।

जब याज्ञवल्क्य वानप्रस्थाश्रम मे प्रवेश करने लगे तो उन्होने दोनो पत्नियो को अपनी सम्पत्ति बाटने का प्रस्ताव किया। मैत्रेयी की रुचि सासारिक सम्पदा मे न थी उसे इस बात का दु.ख था कि मैंने इस समय तक भी अपने पतिदेव से अध्यात्म विषय पर कुछ नही सीखा। जब उसे कहा गया कि सम्पत्ति का अमुक भाग उसे मिलेगा तो उसने बडी सरलता से पूछा 'स्वामिन' ! यदि समस्त ससार की सम्पदा मुझे मिल जाय तो क्या मुझे अमृत प्राप्त हो जायगा ? (बृहदारण्यक)

याज्ञवल्क्य ने उत्तर दिया "इससे तुम्हारा जीवन धनियों जैसा हो जाएगा। परन्तु धन से अमरत्व की प्राप्ति की कोई आशा नही है (बृहदारण्यक) इस पर मैत्रेयी ने कहा "जिस धन से मुझे अमरत्व न मिलेगा उसे लेकर मैं क्या करूंगी ? 'कृपया मुझे अमरत्व की शिक्षा प्रदान करें।' (बृहदारण्यक)

याज्ञवल्क्य अपनी प्रियपत्नी के इस उत्तर से बहुत प्रसन्न हुए और कहा 'तुमने अपने प्रति मेरे प्रेम को बढा दिया है।" पडित सीतानाथ तत्त्व भूषरण उपर्युक्त चित्र खीचने के बाद प्रश्न करते हैं कि "वर्तमान काल की कितनी पत्नियाँ ऐसा उत्तर दे सकेगी ? कितनी अपने पतियो से ऐसा प्रश्न कर सकेगी और कितने पतिदेव अपनी पत्नियो द्वारा इस प्रकार सम्बोधित होने के योग्य होंगे ?(उपनिषदो का आस्तिकवाद पृष्ठ २५)

यह विवरण इस बात के स्पष्टीकरण के लिए पर्याप्त है कि उपनिषत् काल में उच्चतम शिक्षा की प्राप्ति के लिए स्त्रियो को पुरुषों जैसी सुविधाएँ प्राप्त थीं। उन

दिनों व्यक्ति के लिए ब्रह्म विद्या में निष्णात हो जाना उच्चतम अध्ययन माना जाता था। इस दिशा में स्त्रियाँ पुरुषों से पीछे न रहती थी और कभी-कभी तो वे पुरुषो को भी पीछे छोड देती थीं। ब्रह्मवादिनी महिलाओं की संख्या भी कम न थी जिनकी एक अपूर्ण सूची अब भी सुरक्षित है। यद्यपि इन देवियों की साहित्यिक प्रगतियो का विस्तृत विवरण उपलब्ध नही है तथापि उनके नामो का उल्लेख उन दिनो की उच्च सामाजिक स्थिति का पर्याप्त प्रमाण है जिसमे स्त्रियो को उच्च ब्रह्मज्ञान की उपलब्धि और बुद्धि के चमत्कारों के प्रदर्शन का अधिकार प्राप्त था।

काव्य-काल में भी स्त्रियों का आध्यात्मिक विकास उपेक्षित नही देख पडता है। रामायण में आता है कि कौशल्या मंत्रवित् अर्थात् वेदविद्या मे निष्णात थी (रामायण काड २-२०-७५) बाली की पत्नी तारा के लिए भी इसी विशेषण का प्रयोग किया गया है और इस बात का सूचक है कि उन दिनो महिलाओ को वेदाऽध्ययन कराया जाता था। (रामायण किष्किन्धा काड १६-१२) सुलभा ने जो प्रसिद्ध ब्रह्मवादिनी थी राजा जनक को अपना जीवन-परिचय देते हुए कहा था "मैंने अपना समस्त जीवन वेद शास्त्रो के अध्ययन मे लगाया हुआ है और इसीलिए मैंने विवाह न करने का निश्चय किया है" (महा भारत-शान्ति पर्व ३२१-८३)

महाभारत मे द्रौपदी को 'पडिता' कहा गया है महाभारत वन पर्व अ २७) और युधिष्ठिर के साथ उनका जो सुप्रसिद्ध सवाद हुआ था उससे तो वह बडी ज्ञानवती और विदुषी देख पडती हैं।

परन्तु महाभारत के सुविख्यात विद्वान सी वी. वैद्य की सम्मति मे यह सब अद्भुत चमत्कार था। द्रौपदी ने स्वय यह माना है कि उन्होने अपने पिता के घर पर एक ऋषि से विद्या पढ़ी थी।

ज्यो ज्यो हम आगे बढ़ते हैं त्यो २ हमे यह देख पड़ता है कि स्त्रियों की अध्यात्म जिज्ञासा को अधिक महत्व न दिया जाता था और वे क्रियात्मक रूप से आत्म-विकास के अवसरो से वंचित रहती थीं। परन्तु बाल-विवाह की विनाशकारिणी प्रथा के प्रचलित हो जाने से स्त्रियो की बौद्धिक शक्तिया बाल्यकाल में ही कुण्ठित हो जाती थी। बचपन मे ही विवाह हो जाने से उन्हे पढ़ने लिखने का अवसर ही कहाँ मिल सकता था? वस्तुतः धर्म्मशास्त्रो के युग मे विद्यार्थिनिया प्राय. लुप्त हो गई प्रतीत होती है। स्मृति साहित्य में इस प्रकार के गुरुकुलों का उल्लेख नही मिलता जहाँ कन्याए शिक्षा प्राप्त करती हो।

सत्य यह है कि स्त्रियो के प्रति पुरुषों में आदर-भावना बहुत कम हो गई थी। वे मनोरंजन की वस्तु बना दी गई थी। उनका कार्य सन्तानोत्पत्ति मात्र ही रह गया प्रतीत होता था। लोगो की भावना यह बन गई थी कि विवाह टाला नही जा सकता शिक्षा टाली जा सकती है। वेद शास्त्र का अध्ययन, उपनयन संस्कार, धार्मिक अनुष्ठान, यज्ञ इत्यादि यह सब उनके पतियों के लिये रह गया था। सँध्या वदन और अग्निहोत्र के विकल्प मे घर के धधे ही उनके लिए रह गए थे। याज्ञवल्क्य के मतानुसार विवाह के समय वह क्वारी तथा रूपवती होनी चाहिए और पति के गोत्र की तथा पति कुल की सातवी पीढी तक की न होनी चाहिए। (याज्ञवल्क्य १-५१) परन्तु इस बात का यहाँ उल्लेख नही है कि वह भी सुशिक्षिता और योग्य होनी चाहिये, शुक्राचार्य ने भी स्त्री की शिक्षा को विवाह की शर्त नहीं बताया है। (शुक्र ३-१७३) हरित ने भी अपनी स्मृति मे स्त्री शिक्षा को भूतकाल की वस्तु बताया है। (हरित स्मृति) अवश्य ही उन्होने बड़ी आयु की कन्याओं की शिक्षा की इस शर्त पर अनुमति दी है कि उन्हें स्वय माता-पिता, भाई वा अन्य कोई सम्बन्धी घर पर पढ़ाए।

(शेष पृष्ट ७७ पर)

आर्यसमाज के इतिहास निर्माता

—रघुनाथप्रसाद पाठक

आर्य समाज के प्रसिद्ध निर्माताओं और हुतात्माओं के अतिरिक्त आर्य समाज के प्रसार, प्रचार और यश-संवर्द्धन में उन व्यक्तिओं का भी हाथ रहा है जिनकी सामाजिक और आर्थिक स्थिति ऊंची न थी परन्तु जिन्होंने आर्य समाज के इतिहास के निर्माण मे विशद योग दिया है। खेद है कि उन निर्माताओं से सम्बद्ध प्रचुर ऐतिहासिक सामग्री लेखबद्ध न होने से विस्मृति के गर्त मे विलीन हो गई है फिर भी जो सामग्री उपलब्ध है उसके परिशीलन से विदित होता है कि अपनी स्वाध्याय शीलता-चारित्रिक विशुद्धता सिद्धान्त-प्रियता निस्वार्थ जन-सेवा रूढियों एव कुरीतियो के निवारण मे तत्परता, सहिष्णुता और धर्म-प्रेम से उन्होने इतना कार्य कर दिखाया जो अनेक उपदेशक, समाज सेवी और सस्थाए भी नही कर पाती। उनके त्याग और बलिदान का मूल्याकन परिस्थितियो तथा इस तथ्य को लक्ष्य मे रखकर करना चाहिये कि मनुष्य बडी २ बातो मे तो त्याग दिखा सकता है परन्तु छोटी २ बातों मे बिरले ही त्याग दिखा पाते हैं जिनकी समता नहीं हो पाती।

आगे की पंक्तियो मे हम आर्य समाज के मूक इतिहास निर्माताओ के कुछ उदाहरण प्रस्तुत करते हैं।

१. आर्य चौकीदार

बिजनौर मे एक चौकीदार थे। वे रात को पहरा देते समय यह आवाज लगाया करते थे "पाँच हजार वर्ष के सोने वालो जागो।" जब लोग उनसे इस आवाज का अभिप्राय पूछते तो वे प्रत्येक से अभिप्राय बताने की १।) फीस ले लिया करते थे। कुछ दिनों के बाद जब जिज्ञासुओ के पास वैदिक प्रेस अजमेर से सत्यार्थ प्रकाश की प्रतियाँ पहुँच जाती थी तब वे कहते थेकि "इस ग्रन्थ को पढकर मेरी आवाज का अभिप्राय समझ लोगे।" इस प्रकार उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश की सैकड़ो प्रतियाँ लोगों तक पहुँचाई और उन्हें आर्य समाज की ओर आकृष्ट किया।

२. आर्य पल्लेदार

बिजनौर मे एक आर्य पल्लेदार थे। प्रत्येक को उनकी ईमानदारी पर विश्वास था। बाजार से सौदा खरीदकर लोग उसे पल्लेदार के सुपुर्द करके निश्चिन्त हो जाते थे और सामान ठीक और सुरक्षित रूप मे उनके घर पहुँच जाया करता था।

३. आर्य दुकानदार

स्वामी दर्शनानन्द जी के नगर में एक बजाज था और वह आर्य था। आर्य समाज में आने और सन्यास लेने से पूर्व जब वह कृपाराम के नाम से सम्बोधित होते थे वह उस दूकान से कपड़ा लेने गए। उसने एक बात कह दी। कृपाराम ने कम देना चाहा। बजाज ने कहा मैं आर्य हूं झूठ नहीं बोलता। वह दूकान से चले आए और

एक दूसरे आदमी को भेजा। वह बजाज परीक्षा मे पास रहा। कृपाराम जी ने सोचा जिस आर्य समाज में ऐसे धर्मात्मा पुरुष हैं उसे अवश्य देखना चाहिए। अन्त मे वह आर्य बन गए।

४. आर्योपदेशक

नगीना (बिजनौर) मे एक मोखासिह आर्य थे। जिस मकान मे वह रहते थे उस मकान से उनके पौराणिक रिश्तेदारों ने बाहर निकाल दिया परन्तु उन्होंने आर्य समाज में आना जाना नही छोडा। उन्हें अनेक प्रकार के कष्ट दिये परन्तु वह अविचलित रहे। अन्त में पोप लोगो ने उनके ७ वर्ष के लडके को जहर के पेडे खिला कर मार दिया। प्रिय पुत्र की नृशसहत्या भी उन्हें सत्पथ से विचलित न कर सकी। बालक की मृत्यु के ८ दिन बाद ही उन्होंने रामलीला के बडे मेले मे आर्य समाज और गोरक्षा पर व्याख्यान दिया।

५. आर्य सदस्य

सुलतानपुर (कपूरथला) के निवासी तथा आर्य समाज फीरोजपुर के सदस्य श्री प. कृपाराम जी ने अपनी पुत्री का विवाह वैदिक विधि से करने का निश्चय किया। विरोधियो ने उन दिनो जनता में यह भ्रान्त धारणा फैलाई हुई थी कि आर्य समाजी केवल रूमाल बदलवा कर विवाह करा देते हैं। उन्होंने महात्मा मु शीराम जी से मिलकर आर्य विवाह पद्धति के विषय मे अपना सतोष कर लिया था। जब पौराणिक पंडितो ने सस्कार विधि की क्रिया सुनी तो अपनी पद्धति से मिलाकर उसे बहुत उत्तम बताया। इस विवाह की धूम शहर भर मे मची हुई थी। स्त्रियाँ वैदिक रीति से विवाह को देखने के लिये उत्सुक थी। जब वेदी तय्यार हो गई और वर को बुलाने के लिए आदमी भेजा गया तभी एक शराबी वेश्यागामी गिरधर ब्राह्मण एक बडी भीड लेकर कृपाराम के घर आ धमका और लगा ऊधम मचाने। पं. कृ राम ने पुलिस की सहायता माँगी परन्तु उसने कोई सहायता न की क्योकि वह पहले से ही विरोधियों से मिली हुई थी। लगभग २ बजे गिरधर स्वय अपने गुन्डे साथियों के साथ चला गया। लडके के चाचा ने वैदिक पद्धति से विवाह करने से साफ इन्कार कर दिया और बहाना किया कि बिना नाई के हम कदापि न जाएंगे। विरोधियों के डराने धमकाने पर नाई धीवर आदि लोग पं. कृपाराम के घर काम करने न गए थे। प. कृपाराम स्वय वर को बुलाने गए परन्तु लडके के चाचा ने नवग्रह पूजन की हठ की। प. कृपाराम ने कहा अगर नवग्रह की पूजा पर आपका इसरार (हठ) है तो मैं हरगिज शादी न करूंगा। प. कृपाराम की शान्ति और उनके त्याग का अनुमान वे लगा सकते हैं जिन्होने उनको गिरधारी की गालियो का शान्ति पूर्वक उत्तर देते और अपनी माता तथा बहिन के करुए क्रन्दन पर भी अपनी प्रतिज्ञा पर दृढ देखा था। जब ५ बजने का समय हुआ आर्य भाई लाचार वापस आ गए। दिन चढने पर कुछ और ही गुल खिला हुआ था। लडके वाले चलने को तय्यार और शहर वाले उन्हे रोकने पर उतारू। परन्तु फिर भी प. कृपाराम ने हिम्मत न हारी। कुल जेवर उनके वापस कर दिये तब तो शहर के ब्राह्मणो और क्षत्रियो ने आकर जबरदस्ती पं कृपाराम के मकान पर अपना अधिकार जमा लिया। पं कृपाराम की मा और बहन विरोधियो को बुलाकर अपने दूसरे भाई के द्वारा विवाह करने पर तुल गई। परन्तु प कृपाराम ने अपने हाथ से न नवग्रह पूजन आदि किया न कन्यादान किया। अपने सत्य को ऊचा रक्खा। विवाह संस्कार के मध्य एक ऐसी घटना हुई जिसने स्पष्ट कर दिया कि सत्य का बीज जहाँ बोया जाय वहाँ अवश्य प्रभाव होता है। **पं. कृपाराम की पुत्री ने जिसका विवाह हो रहा था नवग्रह की पूजा से साफ इन्कार कर दिया** पं. कृपाराम जी को तो अलग कर दिया गया था परन्तु अब बिरादरी की अक्ल भी चक्कर मे आ गई। यदि लडकी को भी अलग कर देते तो विवाह किसके साथ होता? लाचार पडितों ने फतवा

दे दिया कि यदि लडकी पूजन न करे तो कोई हर्ज नही है। इसके बाद कुल कार्यवाही विधि पूर्वक होती रही। बिरादरी ने धोखे से प कृपाराम को इस कार्यवाही मे सम्मिलित करने का यत्न किया परन्तु वे अपनी प्रतिज्ञा पर दृढ रहे किसी काम मे शरीक न हुए।

६ आर्य नवयुवक

लाला सालिग्राम जालधर के बहुत बडे रईस थे। उनके विचार सनातन धर्मी थे। उनका पुत्र देवराज आर्य समाजी बन गया। वह केवल समाज का मन्त्री ही नही बना वह समाजी भजन भी बनाता और गाता था। पिता ने उसके धार्मिक विचारो पर रुष्ट होकर उसे घर से निकल जाने की आज्ञा दी। महर्षि का सच्चा शिष्य शाही जायदाद को लात मार कर ब्रह्म के लिए चल खडा हुआ। धर्मात्मा पुत्र के इस प्रकार चले जाने से पिता का दिल पिघल गया। उन्होने एक आदमी को उसे वापस लाने को दौडा दिया। उस आदमी ने धर्मपरायण देवराज को कलकत्ते के बदरगाह पर ब्रह्मा के जहाज पर चढते हुए जा पकडा। विनयी युवक जालधर मे वापस आकर पूरे उत्साह से धर्म की सेवा मे लग गया और पिता की ओर से उसके कार्य मे कभी बाधा न डाली गई। बाद मे यही नवयुवक कन्या महा विद्यालय जालधर के सस्थापक 'लाला देवराज' के नाम मे प्रख्यात हुआ।

७. निर्भीक समाज-सेवी

प हरनाम सिह नामक एक आर्य जिला करनाल के बहान् खेडी नामक ग्राम मे प्रचार कर रहे थे कि एक ११ वर्ष की लडकी का विवाह ६५ वर्ष के वृद्ध से होने का समाचार मिला। लडकी तथा उसकी माता इस विवाह के विरुद्ध थी। उन्होंने द्वार बन्द कर लिया और बरातियो को खाली हाथ लौटना पडा। पडित जी ने अपने व्याख्यान मे हवा ऐसी बाध दी थी कि जनता इस विवाह के विरुद्ध हो गई। लडके वालो ने अवसर पाकर इन्हें लाठियो से पीटा परन्तु वे अपने विरोधी आन्दोलन से नही हटे। फिर उन्होने घूस द्वारा अपने वश मे करना चाहा इस पर भी दाँव न चला। वह अनमेल विवाह न हुआ।"

८. आर्य कर्मचारी

प भगवानदीन मिश्र (उत्तर प्रदेश) के सम्बन्ध मे यह रिपोर्ट दर्ज की गई कि यह आर्य समाज के सभासद हैं इस कारण सन्देहास्पद हैं। केहरी के कलक्टर ने अपने नोट में लिखा था—'असाधारण योग्यता का सरकारी कर्मचारी है जो अपने कार्य को खूब जानता और करता है परन्तु उस पर षडयन्त्रकारी होने का सन्देह किया जाता है। आर्य समाज का उत्साही और क्रियाशील मेम्बर है। जब मिश्र जी को उन्नति देकर तहसीलदार बनाने का समय आया तब इस प्रकार के निर्मूल नोटो के आधार पर उनकी उन्नति को रोक दिया गया। आपने जब एक बार कुछ समय का अवकाश माँगा तो यह शर्त लगा दी गई कि अवकाश के दिनो मे कोई व्याख्यान न देना होगा। प भगवान दीन जी को यह अन्याय बहुत अखरने लगा और अन्त मे १९ वर्ष की सरकारी नौकरी के बाद १८९८ मे नौकरी का परित्याग करके अथवा सारा समय आर्य समाज की सेवा मे अर्पित कर दिया।

९ आर्य सैनिक

गुलाबचन्द एक सिक्ख रेजीमेन्ट मे लेखक था। वह 'कर्त्तव्यपरायण सत्यप्रिय और परिश्रमी था।' परन्तु साथ ही अधिकारियो को उत्तर देने मे निर्भीक भी था। उसे नौकरी से इसलिए पृथक कर दिया गया। कि वह आर्य समाजी था और उससे सम्बन्ध तोडने के लिए उद्यत न हुआ था।

१०. आर्य समाजी का अप्रत्यक्ष आदर

एक मुसलमान जमादार ने एक युरोपियन लेफ्टीनेन्ट को विवाद मे हरा दिया इसकी शिकायत हुई और मुसलमान को डाटकर कहा गया—'तुम आर्य समाजी हो।' उसने उत्तर दिया—'मैं तो मुसलमान हूँ।' अधिकारी ने उसे और डाटा और कहा'—'तुम मुसलमान आर्य समाजी हो।"

सार्वदेशिक विद्यार्य सभा—

आर्य विश्वविद्यालय ऐक्ट का प्रारूप

१—इस विश्वविद्यालय में समस्त भारत की आर्य समाज द्वारा संचालित संस्थायें सम्मिलित हो सकेंगी। इसमें सम्मिलित होने पर वर्त्तमान विश्वविद्यालयों से उनका सम्बन्ध न रहेगा और प्राप्त सुविधायें समाप्त समझी जायेंगी।

२—प्रत्येक जाति तथा धर्म के नरनारी इसमे सम्मिलित हो सकेंगे।

३—सरकार को निरीक्षण तथा जाँच का अधिकार होगा।

४—निम्नलिखित अधिकारी होंगे—(१) चान्सलर, (२) प्रो० चान्सलर, (३) वाईस चान्सलर, (४) रैक्टर (५) ट्रेज़रर (६) होस्टिलों के वार्डन, (७) रजिस्ट्रार, (८) फैकल्टियों के डीन, (९) प्रौक्टर, (१०) अन्य नियुक्त अधिकारी।

५—सार्वदेशिक सभा द्वारा नियुक्त विशिष्ट व्यक्ति प्रथम चान्सलर ३ वर्ष के लिये नियत होगा, तत्पश्चात् ५ वर्ष के लिये कोर्ट द्वारा चान्सलर का निर्वाचन हुआ करेगा [११-(१)]।

६—प्रो० चान्सलर, चान्सलर द्वारा नियुक्त होगा। ऐकैडेमिक कौंसिल द्वारा निर्वाचित। सात के समूह में से ३ को एक्जीक्यूटिव कौंसिल चुनेगी। इन तीन में से एक को चान्सलर चुनेगा।

सार्वदेशिक द्वारा निर्मित गुरुकुल विश्वविद्यालय संगठन उप-समिति में २९-१-६१ को श्री घनश्यामसिंह जी गुप्त द्वारा प्रस्तुत एवं सम्पुष्ट

[आर्यसमाज के शिक्षा शास्त्रियों से निवेदन है कि वे इस योजना के सम्बन्ध में अपने विचार शीघ्र ही सार्वदेशिक विद्यार्य सभा दिल्ली दयानन्द भवन रामलीला मैदान दिल्ली के पते पर भेजने की कृपा करें।

—सम्पादक]

७—प्रथम वाइस चान्सलर तीन वर्षों के लिये चान्सलर द्वारा नियुक्त होगा तत्पश्चात् कोर्ट द्वारा तीन वर्षों के लिये निर्वाचित होगा जिसे चान्सलर सम्पुष्ट करेगा। यह वैतनिक हो सकता है।

८—वाईसचान्सलर कोर्ट एक्जीक्यूटिव तथा ऐकेडेमिक कौंसिल की मीटिंग का संयोजन करेगा। वह एक्जीक्यूटिव के आदेशों का पालन करेगा।

९—रैक्टर एक वैतनिक अधिकारी होगा जो तीन वर्ष के लिये वाइस चान्सलर के परामर्श पर चान्सलर द्वारा नियुक्त होगा।

१०—ट्रेजरर (कोषाध्यक्ष) एक्जीक्यूटिव द्वारा निर्वाचित तीन नामों में से कोर्ट द्वारा नियुक्त होगा।

११—रजिस्ट्रार कोर्ट, एक्जीक्यूटिव तथा ऐकेडेमिक कौंसिल का सैक्रेट्री होगा।

१२—निम्नलिखित समितियाँ होंगी—

(१) कोर्ट, (२) एक्जीक्यूटिव काउन्सिल, (३) एकेडेमिक काउन्सिल, (४) कमेटी आफ रेफरेंन्स, (५) फैकल्टियाँ, (६) अन्य समितियाँ जो नियमानुसार नियुक्त की जावें।

१३—कोर्ट के सदस्य निम्न प्रकार से होंगे

क्लास—१ एक्स Ex-officio—

(१) चान्सलर, (२) प्रौ० चान्सलर, (३) वाइस चान्सलर, (४) रैक्टर, (५) ३ सदस्य सम्मिलित संस्थाओं द्वारा निर्वाचित प्रतिनिधि, (६) तीन सदस्य केन्द्रीय सरकार के प्रतिनिधि,

(७) अ—दो प्रतिनिधि दयानन्द एजूकेशन सोसायटी (कानपुर)

आ—एक सदस्य गुरुकुल कागड़ी का प्रतिनिधि

इ—एक सदस्य गुरुकुल वृन्दावन का प्रतिनिधि

ई—एक सदस्य सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली का प्रतिनिधि

(८) एक्जीक्यूटिव और एकेडेमिक कौंसिल के सदस्य

(९) कोषाध्यक्ष

(१०) सम्बन्धित कालेजों के प्रिंसिपल

(११) यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर और रीडर

(१२) स्टैच्यू द्वारा नियुक्त

क्लास २—जीवन सदस्य

(१३) पिछले वाइस चान्सलर

(१४) शिक्षा अथवा आर्यसमाज के प्रति की गई सेवाओं के आधार पर चान्सलर द्वारा नियुक्त

क्लास ३—अन्य सदस्य

(१५) स्नातकों के प्रतिनिधि

(१६) दानदाताओं के प्रतिनिधि

(१७) स्वीकृत संस्थाओ के मनोनीत प्रतिनिधि

(१८) कोर्ट की सिफारिश पर चान्सलर द्वारा नियुक्त

(१९) प्रोफेसरों और रीडरों के अतिरिक्त अन्य अध्यापकों के प्रतिनिधि

(२०) जीवन सदस्यों के अतिरिक्त चान्सलर द्वारा मनोनीत अन्य सदस्य

१४—कोर्ट की बैठक वार्षिक होगी अथवा २५ प्रतिशत सदस्यों की प्रार्थना पर बुलाई जा सकेगी।

१५—एक्जीक्यूटिव और एकेडेमिक कौंसिल का विधान स्टेच्यूटस द्वारा निश्चित किया जायगा।

१६—कमेटी आफ रेफरेन्स में कोर्ट द्वारा निर्वाचित (एक्जीक्यूटिव से भिन्न) १३ व्यक्ति तथा वाइस

चान्सलर और ट्रेजरर होंगे।

१७—प्रथम स्टेट्यूटस और आर्डिनेन्स बनाने के लिये विशेष कमेटी बनाई जायगी।

१८—प्रथम वाइस चान्सलर को प्रथम एक्जीक्यूटिव तथा ऐकेडेमिक कौंसिल आदि बनाने का तथा नियुक्तियों का अधिकार होगा।

१९—सम्बद्ध सस्थाये अपने आंतरिक प्रबन्ध मे स्वतन्त्र तथा अपनी सम्पत्ति की स्वामिनी होंगी।

२०—यह विश्वविद्यालय आर्यसमाज की शिक्षा नीतियो को व्यावहारिक रूप देने और शिक्षा सिद्धान्तों को प्रचारित करने क कार्य करेगा।

प्रारूप प्रस्तुत कर्त्ता
हस्ताक्षर--
घनश्यामसिंह गुप्त

हस्ताक्षर—

१ मंगलदेव शास्त्री अध्यक्ष उपसमिति
२ वीरेन्द्र शास्त्री, सयोजक उपसमिति
३. धर्मवीर, वेदालकार
४. विनायकराव, विद्यालंकार
५. भीमसेन विद्यालकार
६. सूर्यकान्त शास्त्री एम० ए०
८ आचार्य प्रियव्रत

गुरुकुलीय विश्वविद्यालय संगठन उपसमिति की आस्था रिपोर्ट

१ उपसमिति की नियुक्ति

आर्य जगत मे अनेक वर्षों से गुरुकुल आदि समस्त आर्य शिक्षा सस्थाओ को संगठन में आबद्ध कर एक विशाल विश्वविद्यालय बनाने की आवश्यकता का अनुभव किया जा रहा है। इस सबध मे कई आर्य महासम्मेलनों मे प्रस्ताव भी स्वीकृत हुए और आर्य-पत्रों मे समय-समय पर लेख भी प्रकाशित होते रहे हैं।

इस आवश्यकता को ध्यान मे रखकर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने समस्त आर्य शिक्षा संस्थाओं की प्रतिनिधि स्वरूप सार्वदेशिक विद्यार्य सभा का निर्माण किया और उसके उद्देश्यों मे सं० २ ख के रूप मे उपर्युक्त उद्देश्यों को भी सम्मिलित किया।

उक्त उद्देश्य की पूर्ति ही के लिए सार्वदेशिक विद्यार्य सभा ने २-३-५८ के प्रस्ताव द्वारा निम्नलिखित निश्चय किया।

गुरुकुल का व्यापक संगठन तथा विश्वविद्यालय

निर्माण की योजना बनाने के लिये निम्नलिखित सज्जनों की उपसमिति बनाई गई है।

(१) डा० मगलदेव शास्त्री एम० ए० डी० फिल० वाराणसी, अध्यक्ष

(२) आचार्य विश्वेश्वर जी गुरुकुल वृन्दावन

(३) आचार्य प्रियव्रत जी, गुरुकुल कागडी

(४) श्री महेन्द्र जी विद्यावाचस्पति

(५) श्री घनश्यामसिंह गुप्त, दुर्ग

(६) श्री भीमसेन विद्यालंकार, अम्बाला

(७) श्री डा० सूर्यकान्त एम० ए०, महाविद्यालय ज्वालापुर

(८) विनायक राव विद्यालंकार, हैदराबाद

(९) वीरेन्द्र शास्त्री एम० ए०, सयोजक

इस उपसमिति मे दिनाक २८-८-६० को कार्यकारिणी द्वारा स्वर्गीय श्री इन्द्र जी के स्थान पर श्री सत्यव्रत विद्यालकार तथा दशम सदस्य श्री धर्मवीर वेदालकार नियुक्त किये गये।

इस समिति की नियुक्ति को सार्वदेशिक सभा दिल्ली ने अपनी ३१-६-५८ ई० की बैठक मे सर्व सम्मति से संपुष्ट किया तथा पत्रो मे वक्तव्य भी प्रकाशित किया।

२. उपसमिति के अधिवेशन—

इस उपसमिति के ५ अधिवेशन हुए। प्रथम अधिवेशन दिल्ली में ७-६-५८ को हुआ, जिसमें निम्नलिखित विचारणीय विषय स्वीकृत हुए जिन्हे सार्वदेशिक विद्यार्य सभा ने स्वीकृत किया।

(१) आर्यसमाज द्वारा संचालित गुरुकुलों तथा अन्य शिक्षा संस्थाओं का संगठन किस रूप में किस प्रकार हो सकता है?

(२) यदि उक्त संगठन हो सकता है तो उसको चार्टर्ड विश्वविद्यालय का रूप दिया जा सकेगा या नहीं।

(३) यदि चार्टर्ड विश्वविद्यालय का रूप दिया जा सकता है तो उसकी क्या क्या आवश्यकताएँ होगी।

(४) यदि चार्टर्ड विश्वविद्यालय का रूप नहीं हो सकता तो उस सगठन का क्या रूप हो। यह भी निश्चय हुआ कि प्रश्नावली विशिष्ट व्यक्तियो तथा सस्थाओ के पास भेजकर उत्तर मँगाये जाये और उपसमिति अथवा उसके कुछ प्रतिनिधि आवश्यकतानुसार विशिष्ट व्यक्तियो से विचार विमर्श करे तथा शान्ति निकेतन जैसे कुछ विशिष्ट संस्थाओ को भी देखें।

द्वितीय अधिवेशन गुरुकुल कागड़ी मे २२-१०-५८ को हुआ जिसमे अन्य विषयो के साथ साथ प्रमुख गुरुकुल सस्थाओं के पारस्परिक सगठनो की सभावनाओ पर विचार किया गया।

तृतीय अधिवेशन दिल्ली मे दिनाक १-३-५९ को हुआ। यह अधिक महत्वपूर्ण था क्योकि इसमे एक विशिष्ट प्रस्ताव स्वीकृत हुआ, जिसका विवरण नीचे सुझवों के प्रसग मे दिया गया है।

चतुर्थ अधिवेशन मथुरा मे दयानन्द दीक्षा शताब्दी के अवसर पर दिनाक २४-१२-५९ को हुआ। इस अधिवेशन का महत्व यह था कि इसमे श्री घनश्यामसिह गुप्त जी भी उपस्थित थे, जो अभी तक किसी अधिवेशन मे सम्मिलित न हो सके थे और उपसमिति ने उनसे प्रार्थना की कि वे आर्य अथवा गुरुकुलविश्वविद्यालय के स्वरूप के विषय में अपना लिखित प्रतिवेदन प्रस्तुत करने की कृपा करे। उसी के फलस्वरूप उनसे आर्य विश्वविद्यालय की योजना प्राप्त हुई है।

पचम तथा अतिम अधिवेशन उपसमिति की आस्था की स्वीकृति के लिए दिल्ली में दिनाक २९-१-६१ को हुआ। क्योंकि सार्वदेशिक विद्यार्य सभा ने दिनांक २८-८-६०

के निश्चय के अनुसार साग्रह इस समिति के अब तक के कार्य के सम्बन्ध में संक्षिप्त व्याख्या शीघ्र ही माँगी है, ऐसी अवस्था में समिति का परिलक्षित कार्य पूरा न होने पर भी अब तक के कार्य की यह संक्षिप्त व्याख्या उपस्थित की गई है।

उपसमिति के पाँचों अधिवेशनों की कार्यवाही परिशिष्ट में देखी जा सकती है।

३. कार्यायोजन —

प्रश्नावली तैयार कर पत्रों में प्रकाशित की गई। साथ ही विशिष्ट व्यक्तियों तथा आर्य शिक्षा संस्थाओं के पास भेजी गई है, जिन में से लगभग ३२ व्यक्तियों तथा संस्थाओं से उत्तर प्राप्त हुए।

प्रश्नावली तथा प्राप्त उत्तरों के लिये परिशिष्ट देखिये

विभिन्न गुरुकुलीय संस्थाओं से विशेष रूप से अपेक्ष्य विवरण तथा सूचनाएँ प्राप्त की गईं।

४ परिसीमन :—

(१) ऐसा प्रतीत होता है कि आर्य सामाजिक शिक्षा संस्थाओं तथा व्यक्तियों ने इस उपसमिति के प्रति जैसा अनुराग दिखाना चाहिए था वैसा नहीं दिखाया। उत्तरों की कम संख्या इसका प्रमाण है। यही नहीं विभिन्न गुरुकुलीय संस्थाओं ने इस समिति की उपेक्षा करके लगभग ऐसे ही उद्देश्यों से अपनी अपनी समितियाँ भी बनाईं।

(२) इस उपसमिति को आर्य जगत् के शिक्षा विशेषज्ञों तथा विशिष्ट विचारकों से साक्ष्य के रूप में अथवा अन्यथा विमर्श करने का अवसर भी अब तक प्राप्त न हो सका है।

(३) शान्ति निकेतन, बिरला विद्या मन्दिर नैनीताल तथा आर्य समाज की ही विशिष्ट संस्थाओं गुरुकुल वृन्दावन आदि के विशेष निरीक्षण का भी अवसर नहीं मिल सका है।

उक्त परिसीमनों के कारण यह स्पष्ट है कि यह समिति अब तक जो कार्य कर सकी है उससे अधिक कार्य नहीं हो सकता था।

५—उपसमिति के सुझाव।

उपर्युक्त विवरण को दृष्टि में रखते हुए जो सामग्री और सूचनाएँ उपसमिति के पास है उनके आधार पर उपसमिति के सुझाव निम्न प्रकार है :—

१—(क) इस उपसमिति की सम्मति में आर्य समाज द्वारा सचालित गुरुकुलों तथा अन्य शिक्षा संस्थाओं का संगठन श्री घनश्यामसिंह गुप्त द्वारा प्रस्तुत आर्य विश्वविद्यालय ऐक्ट की योजना के कार्यान्वित होने से हो सकता है। यह उपसमिति योजना को सामान्य रूप में प्रमुख स्थान देती है। यह योजना यदि निर्दिष्ट रूप में अथवा किंचित् परिवर्तित रूप में कार्यान्वित हो जाती है तो इससे हमारी मुख्य समस्या का समाधान हो जावेगा और आर्य सामाजिक संस्थाओं के लिये एक बहुत बड़ी उपलब्धि होगी।

(ऐक्ट का प्रारूप परिशिष्ट में देखिये)

(ख) उपसमिति की सम्मति में यदि आर्य विश्वविद्यालय के स्थान पर गुरुकुल विश्वविद्यालय नाम रखा जाय तो अधिक अच्छा रहेगा।

(ग) गुप्त जी द्वारा प्रस्तुत ऐक्ट एफिलिएटिंग विश्वविद्यालय की दृष्टि से बनाया गया है। यदि उसमें केन्द्रीय दृष्टि से सफलता न प्राप्त हो सके तो उसको प्रान्तीय विश्वविद्यालय के रूप में स्वीकृत कराने का प्रयत्न किया जाना चाहिये।

२—यदि उपर्युक्त आर्य विश्वविद्यालय बनने में अपरिहार्य बाधाएँ उपस्थित हों तो यह समिति अपने तीसरे अधिवेशन दिनांक १-३-५६ में स्वीकृत निश्चय को दूसरे

सुझाव के रूप मे प्रस्तुत करती है जो निम्न प्रकार है—

"वर्तमान केन्द्रीय तथा प्रान्तीय विश्वविद्यालयों के विधानों को दृष्टि मे रखते हुए यही व्यावहारिक प्रतीत होता है कि सम्प्रति चार्टर्ड विश्वविद्यालय के रूप में एक स्थानीय गुरुकुल विश्वविद्यालय स्वीकृत कराया जाय और उसके लिये वर्तमान प्रमुख गुरुकुलीय संस्थाओ में विकास के वर्तमान स्तर तथा विकास की भावी सम्भावनाओ को देखकर किसी एक संस्था को चुन लिया जावे। अन्य गुरुकुलीय संस्थाएँ विश्वविद्यालय शिक्षा के लिये अपने अपने छात्रों को उक्त चार्टर्ड विश्वविद्यालय में भेजा करे।" भविष्य में यह भी प्रयत्न किया जाये कि उक्त स्थानीय गुरुकुल विश्वविद्यालय एफिलिएटिंग विश्वविद्यालय के रूप मे स्वीकृत हो सके। इस उपसमिति की दृष्टि मे ऐसी संस्था गुरुकुल कांगड़ी को ही माना जा सकता है।

३—चार्टर्ड विश्वविद्यालय के निर्माण कार्य को आगे बढाने के लिये विशिष्ट व्यक्तियो की एक उपसमिति सार्वदेशिक सभा द्वारा नियुक्त की जानी चाहिए जो ड्राफ्टबिल को निश्चित रूप देकर उसको सरकार द्वारा ऐक्ट के रूप मे स्वीकृत कराने का प्रयत्न करे। साथ ही सार्वदेशिक सभा को इस कार्य को आगे बढ़ाने के लिए स्थिर कार्यालय स्थापित करना चाहिये और व्यय के लिये पर्याप्त धनराशि भी स्वीकृत करनी चाहिये।

४—यदि उपर्युक्त सुझाव संख्या २ के अनुसार गुरुकुल कांगड़ी के विश्वविद्यालय बनने पर गुरुकुल वृन्दावन आदि अन्य संस्थाएँ विभिन्न कारणों से इसमें सम्मिलित न हो सके (कम से कम महाविद्यालय ज्वालापुर को तो उसमें अवश्य ही सम्मिलित होना चाहिए क्योंकि दोनों संस्थाएँ एक ही स्थान पर हैं और दोनों का कार्य एक दूसरे का पूरक है) तो उस दशा में इस उपसमिति की सम्मति में दो ही विकल्प हो सकते हैं—

(क) प्रथम यह है कि जो संस्थाएँ अपने को गुरुकुल कांगडी के समान एक स्वतंत्र विश्वविद्यालय के रूप मे स्वीकृत कराने में समर्थ समझती हों वे उसके लिये पूर्ण प्रयत्न करें।

(ख) जिन संस्थाओं मे यह सामर्थ्य न हो वे अपने गुरुकुलीय वैशिष्ट्य का संरक्षण करते हुए स्वप्रदेशीय विश्वविद्यालय से अपने को संबद्ध करा लें, क्योंकि आजकल की परिस्थिति मे प्रत्येक छात्र के भविष्य के पूर्ण विकास के लिये यह आवश्यक है कि गुरुकुलीय प्रमुख संस्थाओं में भी विश्वविद्यालयीय मुख्य विषयों का अध्ययन अध्यापन उसी स्तर पर हो।

हमारी सम्मति मे गुरुकुलीय वैशिष्ट्य ब्रह्मचर्याश्रम प्रणाली के आदर्शों पर शिक्षा-दीक्षा ब्रह्मचर्य, तपस्या, अनुशासन और गुरु शिष्य के मधुर संबंध मे निहित है।

प्राचीन भारत में······

[पृष्ठ ७६ का शेष]

सभवत: इस प्रकार के आदेशों के कारण ही मध्य युग के विश्वविद्यालयों में विद्यार्थिनियों का उल्लेख नहीं मिलता। तक्षशिला और नालन्दा के विद्या केन्द्रों में भी जहाँ सहस्रों लड़कों के पढ़ने का विवरण मिलता है। स्त्रियों की शिक्षा का कोई प्रबन्ध नही दीख पडता। बाद के काल मे विदुषी देवियों के अभाव का कारण यह प्रतीत होता है कि उन्हें धार्मिक अधिकारों से वंचित रक्खा जाता था और उनके आध्यात्मिक विकास पर ध्यान न दिया जाता था। फिर भी मेगस्थनीज़ ने अपने समय का विवरण देते हुए लिखा है कि अनेक स्त्रियाँ पुरुषों के साथ दर्शन शास्त्र का अध्ययन करती और विषय भोग से उपराम रहती थीं।

विविध समाचार

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में

नये बालकों का प्रवेश ।

गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय, हरिद्वार मे नये बालकों का प्रवेश वार्षिकोत्सव पर १० से १३ अप्रैल १९६१ तक वैशाखी के अवसर पर होगा। गुरुकुल की उपाधियों को सरकार और यूनिवर्सिटियो द्वारा मान्यता प्राप्त है। जो सज्जन अपने बालकों को गुरुकुल में प्रविष्ट कराना चाहते हों वे आचार्य गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय जिला सहारनपुर से नियमावली और प्रवेशार्थ प्रार्थना पत्र मंगा कर शीघ्र स्वीकृति प्राप्त कर लें। गुरुकुल काँगड़ी देश की प्रसिद्ध राष्ट्रीय संस्था है और देश के जनसाधारण तथा विद्वान, राष्ट्रीय नेताओ का इसे सहयोग और सहानुभूति प्राप्त है।

आचार्य

गुरुकुल कागड़ी विश्वविद्यालय

आर्य समाज शोलापुर

में

ऋषि-बोधोत्सव

आर्य समाज शोलापुर मे ऋषि-बोधोत्सव बड़े [illegible] गया। कार्यक्रम दो दिन रखा गया। १२ फरवरी को आन्ध्र-प्रदेश के राज्यपाल श्री भीमसेन सच्चर जी तथा उनकी धर्मपत्नी के भाषण हुये तथा उनको नगर की ओर से मान-पत्र दिये गये।

श्री सच्चर जी ने कहा :—

"आर्य समाज का कार्य स्वतन्त्रता के मिलने से पहले महान रहा पर अब तो आर्य समाज के कार्य की आवश्यकता और भी बढ़ गई है।

देश तथा संसार का भला आर्य समाजी तभी कर सकते हैं जब आर्य-समाज के ठीक मार्ग पर ही चलते रहे, विचलित होने से ध्यान दूसरी ओर हो जाता है तथा ठोस कार्य नहीं हो सकता।" प्रत्येक आर्य समाजी को आर्य समाज के सिद्धान्तों पर पूर्ण विश्वास होना चाहिये तथा क्रियात्मक जीवन में उन सिद्धान्तों को अब ओतप्रोत करना चाहिये।"

श्रीमती ललिता सच्चर जी ने कहा कि ऋषि दयानन्द भारत की गिरावट के पश्चात प्रथम महापुरुष थे जिन्होंने स्त्री जाति को ऊपर उठाया। उन्होंने कहा कि यह दुख की बात है कि भारत की बच्चियो मे निराशावाद आ रहा है तथा कुछ तो आत्महत्या कर लेती हैं जिसका कारण सामाजिक बुराई हैं जिनको उखाड़ने का प्रयत्न आर्य समाज को जारी रखना चाहिये। उन्होंने कहा दहेज की प्रथा के विरुद्ध आर्य समाजी माताओं तथा बहिनो को आन्दोलन करना चाहिये।

श्री बियानी जी ने सुन्दर भजन गाये।

दूसरे दिन १३ फरवरी को शोलापुर के जिला न्यायाधीश श्री माजिनकर जी की प्रधानता में सभा हुई। उन्होंने कहा कि ऋषि दयानन्द एक अनुपम नेता थे जिनका कार्य महान था। प्रिन्सिपल भगवान दास ने कहा

कि ऋषि दयानन्द का दृढ विश्वास हमारे लिये मार्ग-दर्शक होना चाहिये। प्रो० सोनायने जी ने कहा कि ऋषि दयानन्द ने भेद-भाव, छूआ-छूत मिटा दी थी तथा अपना राज्य स्थापन करने मे बहुत प्रयत्न किया। श्री बापूराव जी उस्मानाबाद के आर्य नेता हैं उन्होने कहा आर्य-समाजी भाषण कम कर दे तथा कर्म क्षेत्र मे कूद कर ऋषि का मिशन पूरा करे। जिला न्यायाधीश ने कहा कि भले ही स्वतन्त्र हो गये पर अभी भारत के नैतिक स्तर, सामाजिक स्तर, तथा राजनैतिक स्तर को बहुत ऊपर उठाना है। उन्होंने कहा अभी यह कहना कठिन है कि हमारा जन समूह एक राष्ट्र के दृष्टि-कोण से आगे बढा है। भाषा, धर्म तथा समाज की दृष्टि से देश के कोने कोने से आर्य समाज की ओर आशाये लग रही हैं। आर्य समाज ही राष्ट्र को बचा सकता है। उन्होंने कहा कि अभी अभी पहली बार सत्यार्थ प्रकाश पढने से यह पता चला कि ऋषि ने देश की प्रत्येक समस्या का हल इस पुस्तक में लिखा है। उन्होने दुख प्रकट किया कि हमारे राष्ट्रीय स्तर को नीचा करने वाले लोग हमारे मध्य मे अब भी हैं तथा आर्य समाज ही ऐसे भाइयों को मार्ग दिखा सकता हैं। उन्होंने राष्ट्रीय एकता पर बल दिया।

(प्रिंसिपल) **भगवान दास**

प्रधान

सार्वदेशिक सभा की विज्ञप्तियाँ

आर्य समाज विरोधी साहित्य

सार्वदेशिक सभा उस समस्त साहित्य का उत्तर लिखाने का आयोजन कर रही है जो आर्य समाज महर्षि-दयानन्द और आर्य समाज के सिद्धान्तों के विरुद्ध लिखा गया है। जिन सज्जनों को ऐसे साहित्य का ज्ञान हो वे कृपया उसका विवरण मिलने के पते सहित सभा को लिख भेजने का कष्ट करे। यदि किन्हीं सज्जन के पास ऐसी पुस्तकें वा साहित्य हो तो वे रजिस्टर्ड कवर में सभा को भेजने की कृपा करें। कार्य हो जाने पर वह साहित्य वापिस कर दिया जायगा वा आवश्यक होने पर मूल्य दे दिया जायगा।

रघुवीर सिंह शास्त्री

मंत्री

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

दयानन्द भवन

(राम लीला मैदान)

नई दिल्ली

विदेश प्रचार

अमेरिका

कुछ समय हुआ सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से श्रीयुत डा. एडवर्ड ए. डी. विट को जो दक्षिण अमेरिका के चिली नगर स्थित आक्सफोर्ड हाई स्कूल के संचालक हैं कुछ आर्य साहित्य भेजा गया था जिसे वे बड़े ध्यान से पढ़ रहे हैं। इस साहित्य को पढ़ने पर उनके हृदय पर जो छाप पड़ रही है उसका वर्णन उन्होंने सार्वदेशिक सभा को भेजे अपने एक पत्र में किया है जो नीचे प्रकाशित किया जाता है—सम्पादक

My Dear Aryan Brother,

I have just finished reading a most interesting book by Shri Ganga Prasad Upadhyaya entitled LIFE AFTER DEATH.

At the end of Shri Prasadji's book there are some short references to The Scriptures of the Arya Sâmaj. Finding myself very much in sympathy with yours ideals and work I will be very grateful if you send me more information regarding the Arya Samaj, also if there is a good biography written in English of Swami Dayananda.

I read English and Sanskrit, but I do not read any of the modern Hindi Vernaculars, may not even Hindi, although thanks to Sanskrit I can read the Devanagari Characters in which Hindi is written, and understand some words which are like Sanskrit or guess the meaning of others that have a certain resemblance with the sacred संस्कृत

How much would the complete works in English and Sanskrit of Swami Dayananda plus one or two of his best English Biographies come to in U.S A currency ?

How much the साम, अथर्व and यजु come to ? I already own the Rig Veda in the Original Sanskrit.

I congratulate you on the good work you do to save India from the Soul-destroying Semitic religions especially from the inroads of the most negative and brain shrinking of the semitic Religions idest "Christianism" or better style it Cretinism

An Arya who although born in a Roman Catholic 'milieu' refuses to be "Christianized" and wants to go to the pure source of all truth the Vedas. Thanking you beforehand. I remain yours faithfully.

Dr. Edward A. de Bittencourt
1885 Teniente Montt,
NUNOA SANTIAGO
CHILLI SOUTH AMERICA

26-1-61

प्रिय आर्य बन्धु !

मैंने अभी अभी श्रीयुत प गगाप्रसाद जी उपाध्याय कृत "लाईफ आफ्टर डैथ" नामक पुस्तक पढकर समाप्त की है जो बडी मनोरजक है।

इस पुस्तक के अन्त मे आर्य समाज के ग्रन्थो और उसके कार्यों का उल्लेख है। आपके आदर्शों और कार्यों के प्रति मेरी रुचि है अत यदि आप आर्य समाज से सम्बद्ध अधिकाधिक जानकारी देंगे तो मैं आपका बडा कृतज्ञ हूँगा। क्या श्री स्वामी दयानन्द जी की अग्रेजी जीवनी मिल सकेगी ?

मैं अग्रेजी और सस्कृत तो जानता हूँ परन्तु आधुनिक हिन्दी से निकली किसी लोक भाषा यहाँ तक कि हिन्दी को भी नही जानता हूँ। सस्कृत के प्रति आभार प्रदर्शित करता हुआ यह अवश्य कहूँगा कि मैं देवनागरी अक्षरो को पढ सकता हूँ जिनमे हिन्दी लिखी जाती है और सस्कृत निष्ठ कतिपय शब्दो को वा उनके अभिप्राय को समझ लेता हूँ।

स्वामी दयानन्द जी के सम... अग्रेजी और सस्कृत ग्रन्थों का साथ ही उनकी सर्वश्रेष्ठ अग्रेजी जीवनी का मूल्य डालर में क्या होगा ?

साम, अथर्व और यजुर्वेद का भी मूल्य लिखें। मूल संस्कृत मे ऋग्वेद मेरे पास है।

आप लोग आत्मा को नष्ट करने वाले सेमेटिक धर्म्मों से विशेषत मन को कुठित एव सकुचित बनाने वाले प्रतिगामी ईसाईमतवाद से जिसको मस्तिष्क विकार की सज्ञा देना अधिक उपयुक्त होगा भारत की रक्षा करने का जो सत्कार्य कर रहे हैं उसके लिए मैं आपको बधाई देता हूँ।

एक आर्य को जो रोमन कैथोलिक सम्प्रदाय मे उत्पन्न हुआ है अपने को ईसाई कहलाना अस्वीकार नही है और वह सत्य के मूल वेदो के विशुद्ध स्रोत पर जाने के लिए उत्कण्ठित है।

धन्यवाद — आपका
डा० एडवर्ड
ए डी विट
एन्कोट

★ ★ ★

मौरीशस

श्री रामलगन, मौरीशस से सार्वदेशिक सभा के मन्त्री को लिखते हैं —

आप सबने पूज्यवर श्री स्वामी ध्रुवानन्द जी महाराज को मौरीशस भेज कर मौरीशस के आर्य भाई और बहनों का महान उपकार किया है जिसके लिये मौरीशस के आर्य भाई व बहनें आप सबके आभारी है। श्री स्वामी ध्रुवानन्द जी महाराज आर्य जगत के सुदृढ नेता और शुभचिन्तक हैं। श्री स्वामी जी की कृपा से आर्य सभा के नियमो का सशोधन परिवर्तन हो गया और गवर्नमेन्ट ने स्वीकार भी कर लिया, दोनो सभाए एक हो गई, दोनो सभाओ का सम्मिलित निर्वाचन जैसा सब और स्वामी जी चाहते थे वैसा ही १८ दिसम्बर १९६० ई० को हो गया। ४४५ सदस्यो ने निर्वाचन मे भाग लिया था। सभा की (अनाथालय, श्रद्धानन्द प्रेस आदि का) उपसमितियो का भी निर्वाचन ७ जनवरी को हो गया है। वैदिक पुस्तकालय के लिए स्वामी जी ने ७१५१ रुपया एकत्रित करके सभा को दे दिया, कुर्सियो के लिए भी चार हजार से अधिक इकट्ठा करके सभा को दे दिया, आर्योदय पत्र की ग्राहक सख्या को ढाई तीन सौ से लगभग चौदह सौ कर दिया।

६ हजार से अधिक स्वामी जी की दक्षिणा का रुपया था वह सब सभा के लिए छोड गए। तारीख २२ जनवरी ६१ को आर्य भवन पौर्ट लुईस मे स्वामी ध्रुवानन्द जी महाराज का विदाई उत्सव बडी धूमधाम से हुआ था। सैंकडो व्यक्तियो ने अपनी अपनी सभा की ओर से को पुष्प हार पहनाया।

दो मुख्य और पाँच उनके सहायक सब मिलकर सात व्यक्तियो के अतिरिक्त मौरीशस भर के सब आर्य भाई और बहनो को अत्यन्त प्रसन्नता हो गई है यहाँ तक कि पिछले दिन कुछ पुराने कर्मनिष्ठ आर्य भाई सभा से उदासीन हो गए थे उनम से बहुत सभा मे आ गए और सभा के शुभचिन्तक बने। यह सब तपोधन स्वामी ध्रुवानन्द जी महाराज के प्रयत्न का सुन्दर फल है। पूज्य स्वामी ध्रुवानन्द जी महाराज रविवार तारीख १९ जनवरी ६१ ई० को प्रातःकाल साढे नौ बजे प्लेजास एरोड्रम पर उपस्थित हजारो मनुष्यो से अन्तिम भेंट करके मादागास्कर चले गए

ब्रह्मदेश

श्री पूज्यवर स्वामी आनन्द स्वामी सरस्वती जी अक्टूबर १५ ता० को रगून हवाई अड्डे पर पधारे। स्वागत के लिए फूलमाला आदि के साथ लगभग १५० आर्य हिन्दू भाई बहिन हवाई अड्डे पर उपस्थित थे। आर्य समाज रगून के प्रधान काशीनाथ राय, मन्त्री श्री धर्मवीर जी, श्री डा० ओ३म प्रकाश जी एम बी बी एस श्री डा सुन्दर लाल लूम्बा श्रीमती लूम्बा, श्रीमती सत्य-भाषिणी देवी साहित्यरत्न श्रीमती सावित्री तथा अनेक आर्य देवियाँ थी। आर्य गणमान्य व्यक्तियो मे श्री बी एल त्रिखा, श्री चोपडा, श्री चन्द्रदत्त जी, श्री प्रसिद्ध नारायण पाठक श्री ओ पी शोरी आदि मुख्य थे।

१२ मील का मार्ग तय कर स्वामी जी आर्य समाज मन्दिर मे पधारे। वहीं सब लोगो ने उनके दर्शन किये तथा स्वामी जी ने सबका परिचय प्राप्त किया। तत्-पश्चात् स्वामी जी को आर्य समाज मन्दिर मे ही एक विशेष कमरे मे स्थान दिया गया। प्रतिदिन रात्रि को ठीक ८-९ बजे तक स्वामी जी का प्रवचन 'मनुष्य जीवन गाथा' पर होता रहा। प्रवचन से पहले आधा घन्टे तक कीर्तन होता था जिसमे श्री गोपीराम जी तथा अन्य गीत व भजनकर्त्ता मुख्यतया भाग लेकर जनता को श्रद्धा विभोर कर देते रहे। समाज का हाल तथा गैलरी अच्छी तरह भर जाती रही। लगभग ६ सौ नर-नारियाँ भक्ति और श्रद्धा के साथ स्वामी जी से धर्म का लाभ उठाते रहे। दीवाली तथा ऋषि निर्वाण उत्सव पर स्वामी जी का विशेष प्रवचन हुआ तथा रविवार ता० १९ को आर्य समाज के सत्सग मे भी वेदोपदेश किया। इसके अलावा स्वामी जी प्रतिदिन भक्तो को दर्शन देते रहे तथा आयुर्वेदिक औषधि वितरण करते, शका समाधान तथा धर्म सम्बन्धी वार्तालाप भी करते रहे। भक्त स्त्री पुरुषो का ताँता दिन भर लगा रहता। बच्चे भी प्रेम से स्वामी जी के कृपा भाजन बने रहे। इतना ही नही कई रोगियो को स्वामी जी ने योग द्वारा लाभ भी पहुँचाया।

१५ दिनो तक रगून मे व्याख्यान हुए। इसी मे एक दिन गुरु-द्वारा मे गुरु नानक जन्म दिवस पर तथा डी ए वी स्कूल मे भी बच्चो को उपदेश दिया। तिनानजो तथा कमायुट कस्बे रगून से ७-८ मील की दूरी पर है—एक २ दिन इन दोनो स्थानो पर भी स्वामी जी ने अमृत वर्षा की। तिनानजो मे गुजराती तथा यू. पी के भाईयो ने कमायुट मे बंगाली भाईयो ने विशेष रूप से कार्यक्रम में भाग लिया। एक दिन प्रान्तीय ब्राह्मण महासभा की ओर से गान्धी मेमोरियल हाल में प्रवचन हुआ जिसमें लगभग एक हजार हिन्दू भाई बहन उपस्थित थे।

जियावाड़ी—

रंगून के बाद १४० मील की रेल यात्रा कर स्वामी जी ३ तीन दिन तक जियावाडी मे प्रचार के लिए पधारे। रंगून आर्य समाज के मन्त्री श्री धर्मवीर जी प्रचारक श्री चन्द्रदत्त जी, श्री रघुनाथ जी तथा रघुनन्दन जी भी आपके साथ जियावाडी पहुँचे।

जियावाडी क्षेत्र मे २५००० बिहार प्रान्त के भारतीय बसते हैं। ये किसान हैं। इन सीधे-सादे भाईयो ने अति श्रद्धा तथा प्रेम से स्वामी जी का फूल आदि से हार्दिक स्वागत किया तथा प्रतिदिन दोपहर के बाद ३-४ बजे तक प्रवचन श्रवण किया। सायकाल ज्ञान गोष्ठी भी होती रही। स्वामी जी बस्ती-बस्ती घूम-घूमकर उन लोगो को जागृत करते रहे। जियावाडी स्कूल मे भी स्वामी जी ने विद्यार्थियो को अपने विद्यालय की उन्नति, विद्याध्ययन तथा सच्चरित्रता पर बल एव धर्मनिष्ठा पर जोर दिया। माण्डले समाज के मन्त्री श्री कृष्णलाल जी, व मा श्री रामलाल जी गुलाटी स्वागतार्थ जियावाडी ही पहुँच गए एव स्वामी जी के साथ रेल द्वारा माण्डले प्रात: ६ बजे पहुँचे।

माण्डले

शहर रगून से ४०० मील उत्तर की ओर है। यहाँ आर्य हिन्दू भाईयो ने स्वागत के लिए एक जलूस निकाला। ४० मोटरो व जीपो मे आरूढ होकर शहर के विभिन्न मार्गों से होते हुए आर्य समाज मन्दिर पहुँचे। माण्डले मे १२ दिन तक "जीवन कैसे बिताएँ" विषय पर व्याख्यान हुए। दिन का भोजन एक २ आर्य परिवार के घर पर प्रीति भोज के रूप मे होता था। प्रीति भोज मे लगभग २००-२५० व्यक्ति शामिल होते रहे। व्याख्यान में ५००-६०० की उपस्थिति होती रही। इसी बीच स्वामी जी ने यहाँ के विशिष्ट फुगीयो से भेंट की, तथा उनसे उनके धर्म की चर्चा की। २५ नवम्बर साय ३॥ बजे से १ दिसम्बर प्रात तक एकान्त मे नायिकता धर्म स्थान में मौन व्रत लिया। इन दिनो स्वामी जी ने किसी व्यक्ति से बातचीत करना तथा देखना भी त्याग दिया। अकेले मे रहते, एक निर्दिष्ट स्थान पर नियत समय पर भोजन रख दिया जाता था। कुछ समय के पश्चात् स्वामी जी भोजन ले जाकर स्वय कर लेते।

लाश्यो

२ तथा ३ दिसम्बर को माण्डले गुरुद्वारे मे उपदेश दिये। तथा ६ दिसम्बर ६० को हवाई जहाज द्वारा लाश्यो पहुँचे। लाश्यो मॉडले से ८० मील है तथा शान स्टेट का एक मुख्य नगर और चीन-वर्मा व्यापार का मुख्य केन्द्र है। लाश्यो के हवाई अड्डे पर लाश्यो के हिन्दू आर्य ३२ जीप कारो के जुलूस मे स्वामी जी को शहर मे ले गए। दैनिक एक घण्टे कथा होती रही। उपस्थिति ५०० के लगभग होती रही। यहाँ के आर्य बन्धुवो ने आर्य समाज का नया भवन बनाने का निश्चय किया तथा स्वामी जी के हाथो शिलान्यास कराया एवम् ११ हजार रुपया थोडे मिन्टो मे ही एकत्र कर लिया। १५ दि० तक कथा करके १६ दि० के दिन मोगोक के लिये प्रस्थान किया। मोगोक का रास्ता कष्ट साध्य है। माडले मे थवेचिन तक इरावदी नदी मे स्टीम बोट द्वारा जाना पडता है। एक रात रास्ते मे ही बितानी पडती है तथा दूसरी रात थवेचिन मे रहकर प्रातः मोटर द्वारा ६० मील का पहाडी रास्ता मोगोक तक ले जाता है।

स्वामी जी सायकाल मोगोक पहुँचे। शहर के १४ मील इधर ही उनके स्वागतार्थ जनता की भीड थी। इसमे गोरखे नेपाली, शान, पजाबी, उत्तर प्रदेश आदि के भाई सब सम्मिलित थे। चालीस मोटरो को फूलो से सजाकर स्वागत करते हुए स्वामीजी को ४० जीप कारो के साथ नगर में ले गये। स्वामीजी ने कुल १० मिनट वहा प्रवचन द्वारा जनता को लाभान्वित किया। शहर से दूर सुरम्य

गुफा मे एक चीनी बौद्ध साधु रहता है। स्वामीजी उनसे भी मिले। उसे बर्मी सत्यार्थप्रकाश की एक प्रति भेंट की।

पुनः मांडले

मौगोक कथा समाप्त कर स्वामीजी २७ ता० को माण्डले पहुँच गये। माण्डले मे आर्य सम्मेलन ३१ दिसम्बर तथा पहली जनवरी ६१ को था। इसमे १३ जगहों से आर्य भाई पधारे थे। मान्डले केन्द्रिय शहर है, रंगून से भी ४०० मील है और मचीना से भी ४०० मील है। कुल ५६ प्रतिनिधि पधारे थे। सबके रहने व खाने आदि का प्रबन्ध मान्डले के भाईयों ने बडे प्रेम से किया। तीनो दिन सम्मिलित प्रीति भोजन हुआ। कभी किसी भाई के घर कभी किसी भाई के घर। इस सम्मेलन मे अनेक महत्वपूर्ण प्रस्ताव पारित हुए। स्वामी जी ने सम्मेलन मे पूर्ण रूप से भाग लिया।

श्वेबो

ता० ७ से १० तक स्वामीजी का व्याख्यान श्वेबो मे हुआ। प्रतिदिन ठाकुरवाडी मे सायकाल प्रवचन होता रहा। दिन मे गुरूद्वारा, आर्य समाज, डी. ए वी. स्कूल मे भी आध घन्टे के लगभग व्याख्यान हुए। व्याख्यान के विषय—ईश्वर विश्वास, आत्म विश्वास और भ्रातृ प्रेम पर था। श्वेबो मे वेड सयाडो नामक बौद्ध भिक्षु मौनी हैं, स्वामीजी ने इनसे योग चर्चा की। एक प्रति बर्मा सत्यार्थप्रकाश की भेंट की तथा एक तेडा (बौद्ध भिक्षुओं के धारण करने का गेरूआ वस्त्र) भी प्रदान किया।

मनेवा

१२-१-६१ को मनेवा पहुँचे। यह नगर मान्डले से उत्तर पश्चिम मे है। आर्य नर नारियो ने फूल मालाओं से खूब स्वागत किया। यहा भी भिक्षु उकुमा सयाडो मे मिले तथा पुनर्जन्म, आत्मा, चित्त वृत्ति की साधना आदि विषयो पर वार्तालाप किया। दूसरे दिन मोन्ये सयाडो (आयु ८६ वर्ष) से मिले। बर्मी सत्यार्थप्रकाश की एक प्रति भेंट की तथा ऋषि दयानन्द के बारे में बताया। सयाडो ने प्रसन्नता प्रकट की तथा बदले में मोन्हेफया के इतिहास की पुस्तक भेंट की।

मोहियान

मनेवा के कुछ दिन बाद माण्डले रहकर १८-१-६१ को मोहियान पहुँचे। इसी बीच मेम्यो घूमकर प्रचार कर आये। मोहियान स्टेशन पर आपका सैकडों भारतीयो तथा बर्मी और शान लोगों ने भव्य स्वागत किया। स्वामीजी पर "स्वर्ण छत्र" की छाया की गयी और शहर मे जलूस निकाला गया। ठाकुरवाडी मे उपदेश हुआ जिसका बर्मी अनुवाद भी सुनाया गया, बर्मी लोग भी हाथ जोडकर बैठे रहे। व्याख्यान का विषय 'मनुष्य चोला क्यो मिलता तथा निर्वाण कैसे प्राप्त होता है। श्री भगत सिंह सुन्दर, प्राञ्जल बर्मी में अनुवाद करते थे। स्वामीजी ने वहा स्कूल के अभाव पर खेद प्रकट करते हुए एक पाठशाला की आवश्यकता बतलाई कि अपने बाद बच्चे अपनी संस्कृति और सभ्यता को कैसे जानेंगे-उनकी शिक्षा का माध्यम तो बर्मी है. फलत उसी समय हिन्दी पाठशाला बनाने का निश्चय हो गया।

मचीना

१८-१९ मोहियान रहकर २० की साय मचीना रेल से पहुँचे। मचीना मे श्री ब्रह्मदत्त जी एडवोकेट के गृह पर स्वामीजी तथा उनके साथ जो ७ अन्य सज्जन माण्डले से गये थे निवास किया। ७॥ से ९ बजे तक रात्रि मे स्वामीजी का व्याख्यान 'आज की बिगडी दुनियां मे किस प्रकार रहना चाहिए' विषय पर हुआ। भारतीय स्कूल के हाल में यह व्याख्यानमाला ३ दिन तक चलती रही। उपस्थिति ३०० के लगभग होती

रही। सिक्ख, हिन्दू व गोरखा भाई अच्छी संख्या में थे। श्री ब्रह्मदत्त जी एडवोकेट श्री पाटदेवसिंह जी, श्री चरण दास जी आदि का उत्साह सराहनीय है। आर्य समाज के साप्ताहिक सत्संग पारिवारिक सम्मेलन तथा ठाकुरवाड़ी में महिला संघ द्वारा आयोजित सत्संग मे भी स्वामीजी ने उपदेश दिया।

भामो

ता० २५ जनवरी को स्वामीजी मोटर द्वारा भामो पहुँचे। भामो इरावदी नदी पर बसा शहर है। चीन से बहुत निकट है। रंगून से ७०० मील उत्तर में है। इस नदी मे भामो शहर तक स्टीम बोट चल सकते हैं। भामो मे भारतीय जनता बहुत थोड़ी है। रामजानकी मन्दिर के प्रांगण मे कथा एक सप्ताह तक हुई। उपस्थिति १५० तक होती रही। २९ ता० को विश्व शान्ति गायत्री महायज्ञ की २५०० आहुतिया दी गई तथा एक भोज हुआ जिसमे पाच सहस्त्र व्यक्तियो ने जाति के भेद भूल कर भोजन पाया।

कथा

३० को स्वामीजी कथा पहुँचे। यह शहर इरावदी नदी पर भामो से ५० मील दक्षिण मे है। यहा दो दिन तक कथा 'गायत्री के महत्व' पर हुई। २ फरवरी को नदी द्वारा ही मान्डले पहुँच गये। ३ फरवरी से १५ तक मान्डले मे व्याख्यान करते रहे।

टौंजी

माण्डले से हवाई जहाज द्वारा टौंजी पहुँचे हे हो के हवाई अड्डे पर स्वागत के लिए भीड इकट्ठी हो गई थी। श्री सरदार जसवत सिंह जी के निवास स्थान "नामक कुटिया" मे उतारा गया। १० दिन तक 'मानव जीवन की सफलता' पर कथा सत्यनारायण मन्दिर में हुई। उपस्थिति ४००—५०० होती रही। टौंजी गाधी मेमोरियल हाई स्कूल में स्वामी जी का भाषण हुआ तथा वहा पर उन्हें अभिनन्दन पत्र दिया गया। २६-२ को प्रातःकाल टौंजी गुरुद्वारे मे कथा कहकर दोपहर १ बजे कलौ पहुँचे।

कलौ

कलौ शहर टौंजी से कोई २० मील है। स्थानीय आर्य समाज मन्दिर में ठहरने की व्यवस्था की गई। साय ४॥ बजे समाज के साप्ताहिक सत्संग में व्याख्यान हुआ सायंकाल ८-९ बजे तक स्थानीय हाई स्कूल में "ईश्वर विश्वासी बन" विषय पर कथा हुई। उपस्थिति ३०० के लगभग थी। कलौ की यात्रा समाप्त कर श्री पूज्य स्वामीजी महाराज २८ को मान्डले पहुँचे।

पुनः मोगोक

३ मार्च को मौन व्रत के लिए मोगोक वायुयान द्वारा प्रस्थान किया, ४ मार्च प्रातः ६ बजे से मोगोक शहर से एक हजार फुट की ऊचाई पर नव-निर्मित कुटिया मे आठ दिन तक मौनव्रत रहा। ता० ११-३-६१ को प्रातःकाल ७ बजे से एक वृहत् सत्संग का आयोजन कर कुटिया के सामने वेद मन्त्रों के द्वारा हवन यज्ञ हुआ। पश्चात् स्वामीजी ने १०८ गायत्री मन्त्रो की आहुतियों के बाद अपना मौन व्रत खोल पूर्णाहुति स्वतः कराई। इसके बाद आर्य समाज मन्दिर मे प्रीति भोज हुआ जिसमे १२०० नर नारियो ने भाग लिया। १२ व १३ को मोगोक में अमृत वर्षा कर १४ को वायुयान द्वारा माण्डले पहुंचे। १५ ता० माण्डले नगर मे वृहत प्रीति भोजन की व्यवस्था थी जिसमें शहर के ३-४ हजार भाई बहनों ने भोजन ग्रहण किया—इस यात्रा में श्री चन्द्रदत्त जी साहित्यरत्न स्वामीजी के साथ साथ रहे। १८ मार्च १९६१ को पुनः रंगून पधारे तथा धर्मोपदेश का क्रम प्रारम्भ किया। १९ को प्रातः आ० स० के सत्संग में १०८ गायत्री की आहुतियो से उपदेश क्रम प्रारम्भ हुआ।

सायंकाल ८-९ तक उपनिषद तथा वेदों के आधार पर मनुष्य जीवन की समस्याओं का समाधान" कथा हुई।

डा० ओ३म् प्रकाश
मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा
बर्मा

★ ओ३म् ध्वज ★

ओ३म् ध्वजों के लिए आर्य जनता की मांग की पूर्त्यर्थ सभा ने स्वयं ओं ध्वज निर्माण का कार्य अपने हाथ में ले लिया है और उसने शुद्ध खादी के निम्न डिजाइनों के ओंध्वज निर्माण करा लिए हैं। उनको लागत मूल्य पर आर्य जनता को पहुंचाने का सभा ने निश्चय किया है। अतः आर्य जनता को उन्हे तत्काल मंगाकर अपने समाज मन्दिरों और आर्य संस्थाओं पर लगाने चाहिएं।

ओ३म् ध्वज २७ इंच × ४०॥ इंच मूल्य २॥)
ओ३म् ध्वज ३६ इंच × ५४ इंच „ ५)
ओ३म् ध्वज ४५ इंच × ७०॥ इंच „ ६)
मंगाने की दशा में १) अगाऊ भेज देवें।

व्यवस्थापक — सार्वदेशिक सभा पुस्तक भंडार, दयानन्द भवन, नई दिल्ली-१

सार्वदेशिक सभा का
वार्षिक अधिवेशन

सार्वदेशिक सभा का वार्षिक साधारण अधिवेशन २४ और २५ जून ६१
को
दिल्ली मे होगा।
सम्बद्ध महानुभाव
तथा
प्रान्तीय सभाएं अंकित कर लेवें
और ये दिन सभा के अधिवेशन के लिए खाली रखे।

मंत्री
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
दयानन्द भवन,
रामलीला मैदान, नई दिल्ली-१

सार्वदेशिक सभा पुस्तक भंडार की
पुस्तकों का सूची-पत्र

निम्न प्रकाशन नेट मूल्य पर दिये जायेंगे।

१. ऋग्वेद संहिता १०)
२. अथर्ववेद संहिता ८)
३. यजुर्वेद संहिता ४)
४. सामवेद संहिता ३)
५. सत्यार्थ प्रकाश २।)
६. ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका २॥)
७. संस्कार विधि १।)
८. आर्याभिविनय ।।।)
९. पंचमहायज्ञविधि:)२०
१०. सिन्धी सत्यार्थप्रकाश १)२०
११. कन्नड़ सत्यार्थप्रकाश ३।)
१२. मराठी सत्यार्थप्रकाश १।=)
१३. कर्त्तव्य दर्पण सजिल्द ।।≡)
१४. वैदिक ज्योति ५।)
१५. पंच महायज्ञ विधि भाष्यम् ५)

निम्न पुस्तकों पर निम्न प्रकार कमीशन दिया जायगा :

१०) से २५) रु० तक १२½%
२५) से ऊपर २५०) तक २०%
२५०) से ऊपर १०००) तक २५%
१०००) से ऊपर २०००) तक ३०%
२०००) से ऊपर ३३⅓%

श्री स्वामी ब्रह्ममुनि कृत

१. यम पितृ परिचय २)
२. वैदिक ज्योतिष शास्त्र १॥)
३. वैदिक राष्ट्रीयता ।)
४ वैदिक ईशवन्दना ।=)॥
५. वैदिक योगामृत ॥=)
६. दयानन्द दिग्दर्शन ।।।)
७ वेदों में दो बडी वैज्ञानिक शक्तियां ।।।)
८ निज जीवनवृत्त वनिका अजिल्द)५०
" " सजिल्द)७५
९ वृहत् विमान शास्त्र सजिल्द १०)
१०. बाल जीवन सोपान " १॥=)
११. छान्दोग्य उपनिषद् कथा ३)
१२. दार्शनिक आध्यात्म तत्व १॥)
१३ वेदान्त दर्शनम् (संस्कृत में) ३)
१४ वैदिक वन्दन ५)

श्री महात्मा नारायण स्वामी कृत

१५ योग रहस्य १।)
१६ मृत्यु और परलोक १।)
१७ विद्यार्थी जीवन रहस्य ।।=)
१८. प्राणायाम विधि ≡)
१९. उपनिषदें :—
ईश ।=) केन ।।) कठ ।।) प्रश्न ।=)
मुण्डक ≡) माण्डूक्य ।) एतरेय ।)
तैत्तिरीय १)
२०. बृहदारन्यकोपनिषद् ३)

श्री पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय कृत

२१. आर्योदय काव्यम् पूर्वार्द्ध १॥)
२२. " उत्तरार्द्ध १॥)
२३. वैदिक संस्कृति १।)
२४. मुक्ति से पुनरावृत्ति ।=)

२५ आर्यसमाज और सनातनधर्म ।=)

२६. आर्यसमाज की नीति ।=)

श्री पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति कृत

२७ आर्यसमाज का इतिहास सजिल्द (प्रथम भाग) ६)

२८. ,, ,, (द्वितीय भाग) ५)

२९ आर्यवीर दल बौद्धिक शिक्षण ।=)

श्री रघुनाथप्रसादजी पाठक कृत

३० आर्य जीवन गृहस्थ धर्म ॥=)

३१ कथा माला ॥)

३२ सन्तति निग्रह १।)

३३ नया संसार ≡)

३४ आदर्श गुरु शिष्य ।-)

श्री पं० धर्मदेव जी विद्यामार्तण्ड कृत

३५ स्त्रियों का वेदाध्ययन अधिकार १।)

३६ भक्ति कुसुमाञ्जली ॥)

३७. हमारी राष्ट्र भाषा व लिपि ।-)

श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द कृत

३८ आर्य समाज के महाधन २॥)

३९ वेद की इयत्ता १॥)

श्री लाला ज्ञानचन्द कृत

४० धर्म और उसकी आवश्यकता १)

४१ वर्ण व्यवस्था का वैदिक रूप १॥)

४२ इजहारे हकीकत (उर्दू में) ॥=)

४३ सत्य निर्णय १॥)

विविध

४४ अरब में मेरे सात साल (पं० रुचिराम जी) ।)

४५ विरजानन्द प्रकाश (भीमसेन शास्त्री) २)

४६ वेद रहस्य (ले० महात्मा नारायण स्वामी) २)५०

पं० मदन मोहन विद्यासागर कृत

४७ जन कल्याण का मूल मन्त्र ॥)

४८ संस्कार महत्व ॥)

४९ वेदों की अन्त साक्षी का महत्व ॥=)

५० आर्य घोष ॥)

५१ आर्य स्तोत्र ॥)

अन्य विद्वानों कृत

५२ स्वाध्याय संदोह (स्वा० वेदानन्द तीर्थ) ४)

५३ स्वराज्य दर्शन (पं० लक्ष्मीदत्त दीक्षित) १)

५४. राजधर्म (महर्षि दयानन्द सरस्वती) ॥)

५५ भूमिका प्रकाश (संस्कृत में)
(पं० द्विजेन्द्रनाथ शास्त्री) १॥)

५६ एशिया का वेनिस (स्वा० सदानन्द) ॥)

५७ दयानन्द सिद्धान्त भास्कर
(श्री कृष्णचन्द्र विरमानी) १॥)

५८ भजन भास्कर (संग्रहकर्त्ता पं० हरिशंकर शर्मा
कविरत्न) १॥)

५९ सनातन शुद्धिशास्त्र (गोविन्द प्रकाश शास्त्री) २)

६० आर्य डाइरेक्टरी १।)

६१ सार्वदेशिक सभा का २७ वर्षीय कार्य विवरण
सजिल्द २)

६२ आर्य पर्व पद्धति (पं० भवानी प्रसाद कृत) १।)

पं० राजेन्द्र (अतरौली) कृत

६३ ऋषि दयानन्द के पुण्य संस्मरण १ ३७

६४ गीता विमर्श ॥)

ईसाई प्रचार निरोध साहित्य

६५ ईसाई षड्यन्त्र ।)

पुरी प्रिन्टर्स जवाहर नगर, दिल्ली में मुद्रित व रघुनाथ प्रसाद जी पाठक मुद्रक और प्रकाशक के लिये
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द भवन, नई दिल्ली-१ से प्रकाशित।

रजिस्टर्ड नं० डी-५१

स्वर्ण जयन्ती निधि के लिये

पांच लाख रुपये की अपील

राष्ट्र की सर्वांगीण उन्नति के लिए आज प्रत्येक देशवासी चिन्तित हैं। बढ़ती हुई सांप्रदायिकता, प्रान्तीयता अज्ञान, अन्धविश्वास, जातिभेद और सामाजिक कुरीतियां हमारे राष्ट्रीय निर्माण में भारी रुकावट अनुभव की जा रही है। भारतीय गौरव और परम्परा पर नास्तिकता एवं पाश्चात्य शिक्षाप्रणाली का दूषित विष-प्रभाव निरन्तर प्रहार कर रहा है। पड़ोसी देश चीन-पाकिस्तान की आक्रामक गतिविधि का यह सक्रमणकाल और उस पर भी देश के युवक-शिक्षित वर्ग का विलासिता और भोग-साधनों की ओर रुझान, एक जटिल समस्या है। ऐसी विषम परिस्थितियों में आर्यसमाज ने सत्य, ज्ञान और मानवता की प्राण-प्रतिष्ठा व राष्ट्र की ज्वलन्त समस्याओं का समाधान कर स्वर्णिम भविष्य-निर्माण के लिए समस्त विनाशकारी तत्वों की समाप्ति का सकल्प धारण किया है।

आर्यसमाज इस सकल्प पूर्तिहेतु सहयोग के लिए प्रत्येक राष्ट्रभक्त का कर्म क्षेत्र में आवाहन करता है। लक्ष्य पूर्ति के लिए आर्यसमाज की योजना है कि —

१—प्रत्येक सम्भव प्रचार-साधनों का उपयोग कर जन-जन में आस्तिकता, सत्य ज्ञान, सदाचार और राष्ट्र-प्रेम का मन्त्र प्रसारित कर राम-कृष्ण-दयानन्द और ऋषि मुनियों के देश भारत को, यूरोप और पश्चिमी सभ्यता में ढालने का जो प्रवाह अत्यन्त वेग से बह रहा है, उसे रोकने के लिये प्रभावशाली पग उठाया जाए। साथ ही प्रांतीयता, भाषावाद और सांप्रदायिकता के भयङ्कर विष की समूल समाप्ति के लिए भी प्रयत्न किए जायें।

२—दीन और पिछड़े वर्ग में धन के बल पर विदेशी पादरियों द्वारा किए जा रहे बलात् धर्म-परिवर्तन व उनकी अराष्ट्रिय गतिविधियों को रोकने के लिए तीव्र अभियान किया जाए।

३—उक्त उद्देश्यों की पूर्ति के लिए सस्ता; आकर्षक साहित्य प्रत्येक भाषा में प्रकाशित किया जाय।

४—दक्षिण प्रदेश व विदेशों में वैदिक विचारधारा के प्रसार के लिए विशेष यत्न किया जाए।

राष्ट्र-वासियो! अगणित बलिदानों से प्राप्त स्वराज्य का सुफल प्राप्त करने के महान् रचनात्मक उद्देश्य की पूर्ति के लिए आर्यसमाज ने 'राष्ट्र-निर्माण-यज्ञ" को आरम्भ कर दिया है और इसे मूर्तरूप देने के लिए दिल्ली में १६ मई से २१ मई १९६१ तक सार्वदेशिक सभा के स्वर्णजयन्ती महोत्सव पर **नवम् आर्यमहासम्मेलन आयोजित किया गया है।** साथ ही इन महान् युग-निर्माण के आधार रचनात्मक कार्यों की पूर्ति के लिए सार्वदेशिक सभा ने देश के नागरिकों से ५ लाख रुपये की राशि १५ मई १९६१ तक सग्रह कर देने की प्रार्थना की है।

हमारी प्रार्थना है कि प्रत्येक आर्य परिवार कम से कम १०) और अधिक जो भी भेज सके इन पंक्तियों को पढ़ते ही सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द भवन, नई दिल्ली-१ को भेजने की कृपा करें।

भूलिए नहीं, नए युग का नया प्रभात आपको निमन्त्रण दे रहा है।

विनीत

पूर्णचन्द	**रघुवीरसिंह शास्त्री**	**देसराज चौधरी**	**लक्ष्मीदत्त दीक्षित**
प्रधान	मन्त्री	अध्यक्ष	सयोजक
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा		स्वर्ण-जयन्ती आर्य-महासम्मेलन-समिति	

(फोन २४७७१) दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली—१

संपादकीय

नवम आर्य महा सम्मेलन क्यों ?

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में १६ से २१ मई तक दिल्ली मे नवम आर्य सम्मेलन हो रहा है। यह स्वाभाविक है कि प्रत्येक आर्य के हृदय मे यह जिज्ञासा उत्पन्न होगी कि इस आयोजन की आवश्यकता क्यों की गई। अत: इन पंक्तियो द्वारा समस्त आर्य जनो के सहयोग का निमन्त्रण देते हुए मेरा निवेदन है कि :—

१—समस्त भूमण्डल आज विज्ञान की उन्नति से प्रभावित हो भौतिकवादी जीवन मीमासा को सत्य समझ, जीवन के सत्य को विस्मृत कर चुका है। युद्ध, घृणा, द्वेष, ईर्ष्या और प्रत्येक सभव प्रकार से भोग पूर्ति हो, मनुष्य के ज्ञान का अन्तिम लक्ष्य बन चुकी है। सत्य, न्याय और मानवता का अवशेष, अब केवल शब्दो मे ही शेष रह गया है और इस विचार धारा का परिणाम यह है कि भारत के राष्ट्रनायक भारत को भी यूरोप बना, भौतिकवाद के विष फल को अमृत समझ जन-जन मे वितरित कर निर्माण की आधार शिला रख रहे हैं। किन्तु सभी विचारशील इस प्रवाह प्रभाव से अत्यन्त चिन्तित हैं। और चाहते हैं कि प्रत्येक मूल्य पर भौतिकता के इस प्रवाह को रोका जाए। किन्तु यह नितान्त सत्य है कि अनैतिकता और भ्रष्टाचार की विध्वसकारी लहरो को रोक भौतिकवाद के विष की समाप्ति और आध्यात्मवाद के अमृत का प्रसार आर्य समाज के अतिरिक्त और कोई नहीं कर सकता।

इसलिए समस्त मानव जाति को भौतिकवादी [illegible] से मुक्ति दिला अध्यात्म-अमृतपान करा, [illegible] और भ्रष्टाचार का मूलोच्छेदन करने के [illegible] के उद्देश्य से यह नवम आर्य सम्मेलन किया [illegible] है।

प्रत्येक भारतीय को यह भली भाँति विदित है कि स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् से ही शासन की उदार नीति का अनुचित लाभ उठा विदेशी ईसाई पादरी भारत में अनेक अनैतिक उपायो का अवलम्बन ले, पिछड़ी जातियों की निर्धनता एव अज्ञानता के कारण राम और कृष्ण की सतानों को ईसाइयत का पाठ पढ़ा भारत की गौरवमयी परपरा संस्कृति और राष्ट्रियता का शत्रु बना रहे हैं। धन बल से उनके कुचक्र, आज राष्ट्र की एकता पर प्रबल प्रहार कर रहे हैं, परिणाम स्वरूप समस्त राष्ट्र हितैषियों के लिए उन के अनैतिक षड्यन्त्रकारी कार्य खुली चुनौती बन गए हैं और एक सीधा सा प्रश्न आज सभी के सम्मुख उपस्थित है कि अज्ञान व अराष्ट्रियता के प्रतिनिधि विदेशी पादरियो की कुचालो को सफल होने दिया जाए या अपने पूरे बल से उन के विनाश कारी कृत्यों की समाप्ति के लिए प्रबल पग उठाया जाए।

अतः देश के विभिन्न क्षेत्रों, (राजस्थान, उड़ीसा, मध्यप्रदेश, रांची, छोटानागपुर, नेपाल,) आदि में संलग्न विदेशी ईसाई शक्तियों की अराष्ट्रीय गतिविधियों को भारत भूमि से समाप्त करने का संकल्प समस्त राष्ट्र ग्रहण कर, कर्त्तव्य क्षेत्र में आर्य समाज के नेतृत्व में योग प्रदान करे, इस राष्ट्रीय मांग की पूर्ति के लिए अग्रसर होने हेतु यह नवम आर्य महासम्मेलन किया जा रहा है।

हमारी राष्ट्रीय समस्यायो मे भाषा समस्या ने जिस विषमता को उत्पन्न किया है वह एक गभीर प्रश्न है। पजाब में साम्प्रदायिक शक्तियों के प्रभाव से, भारत की राष्ट्र भाषा हिन्दी के प्रति जो व्यवहार किया जा रहा है उस की समाप्ति के लिए आर्य जनता हिन्दी रक्षा आन्दोलन चला कर अपनी शक्ति का प्रदर्शन कर चुकी है। किन्तु समस्या अभी अधूरी है। पजाब की बहुसख्यक जनता को अपनी मातृभाषा और देश की राष्ट्र भाषा पढ़ने से वचित रखना पजाब राज्य की नीति का अत्यन्त अवांछनीय पग है। अत: हम ने अत्यन्त गभीरता पूर्वक आर्य समाज के उत्तरदायित्व को अनुभव करते हुए पजाब के नागरिकों को उनके जन्म सिद्ध अधिकार प्रदान कराने का उपाय सोचना है।

अत: देश में बढ़ती हुई भाषा समस्या और पंजाब में हिन्दी के प्रश्न को सुलझाने के सामयिक प्रश्न पर आर्य [illegible] के भावी पग का निर्णय करने के उद्देश्य से यह [illegible] आर्य सम्मेलन आयोजित किया जा रहा है।

प्रचार के आधुनिकतम साधनों में सस्ते साहित्य का एक उल्लेखनीय स्थान है और यह आवश्यकता बहुत दिनों से अनुभव की जा रही थी कि देश की समस्त प्रांतीय व विदेशी भाषाओं में वैदिक विचार धारा को सरल रूप में अत्यन्त सस्ती किन्तु आकर्षक ढंग से प्रकाशित किया जाए। हम सभी समस्याओं पर वैदिक दृष्टिकोण संसार के सम्मुख सीधे शब्दों में रखें तो यह असम्भव है कि सत्य को जानकर भी कोई उसके प्रति आकर्षित न हो।

अतः योजना को विशाल स्तर पर मूर्त्त रूप देना और सफलता के साधन जुटाना इस सम्मेलन का विशेष उद्देश्य है। साथ ही ग्राम प्रचार और विदेश प्रचार की समस्यायें भी हमारे सम्मुख विद्यमान हैं। सभी आर्य रचनात्मक रूप में इन समस्याओं का हल खोजें और यह अत्यन्तावश्यक और भावी सफलता का आधार है।

कौन नहीं जानता कि पराधीन, दीन, अज्ञानता की गहरी नींद में ग्रस्त, भयत्रस्त, व्याकुल, आकुल, भारत के कोटि-कोटि मानवों के हृदयों मे, स्वतन्त्रता जीवन और ज्ञान की ज्योति जगमग करने का ऐतिहासिक क्रान्तिकारी काम महर्षि के उत्तराधिकारी आर्य समाज ने किया। समाज के क्रूर बंधनों मे बिलखती नारी जाति को मातृ शक्ति के रूप मे परमादरणीय स्थान दिला आर्य समाज ने युग निर्माण की आधार शिला रखी। जन्म गत जाति-पाँति के जर्जर पथ पर प्रहार कर उसने मानव समाज की एकता के मार्ग को प्रशस्त किया और हजारों वर्षों से सुप्त, लुप्त-प्रायः भारतीय को अजर-अमर धवल यश पताका को पुनः गौरव के साथ समस्त संसार के समक्ष उपस्थित किया।

किन्तु अब राष्ट्र और विश्व की नवीनतम परिस्थितियों मे आर्य समाज कैसे आगे बढ़े? यह एक गंभीरतम प्रश्न है जिस पर हमे एकत्र हो विचार करना है। दयानन्द के समस्त अनुयायी, आत्म निरीक्षण करें, अपने बल, संघटन और अनुशासन की समस्याओं पर विचार करे और निर्णय करें कि हमे भविष्य में क्या करना है?

अपने प्राणों की आहुति दे युग-प्रवर्तक देव दयानन्द ने जिस महान् क्रान्ति की आधार शिला रखी, रक्तदान दे, अमर शहीद लेखराम और श्रद्धानन्द ने जिस भवन का निर्माण आरम्भ किया और अनेकों वीर सपूतों ने अपने जीवन को होम कर जिस मार्ग को दीप्त किया, आज हमें निर्णय करना है कि उस मार्ग का क्या बने?

वैदिक ज्ञान के दिव्य मार्ग पर संसार चले, धरती स्वर्ग बने या वर्तमान विनाश की राह पर सभी को बढ़ते मृत्यु की गोद में अग्रसर होने दिया जाय?

आर्यो, कर्त्तव्य परीक्षा की घड़ी आ पहुंची है। देरी का समय नही जीवन मृत्यु दो में से एक मार्ग हमें चुनना ही होगा। इसीलिए महर्षि दयानन्द के महान लक्ष्य की पूर्ति के उपाय सोच, वैदिक विचार धारा प्रसार रूप क्रान्ति यज्ञ की सफलता हेतु यह नवम आर्य महासम्मेलन किया जा रहा है।

चारों ओर अज्ञान, मूर्तिपूजा नास्तिकता, अनाचार, अन्धविश्वास और गुरुडम फैल रहा है। अपने चारो ओर निगाह दौड़ाइये। आपको असत्य और विनाश के बादल सर्वत्र मडराते दिखाई पड़ेंगे। यह मत-वादों का बवंडर साम्प्रदायिकता का यह तांडव नर्तन घृणा, द्वेष और ईर्ष्या का साम्राज्य युद्ध की घन घोर उमडती धाराएं दानव सेनाएं, समस्त आर्य शक्तियो को चुनौती दे रही हैं।

प्रत्येक स्थल पुण्य-पाप, सत्य, असत्य, न्याय अन्याय और मानव दानव की युद्ध स्थली बन चुका है। अतः धरा पर सत्य न्याय, मानवता की प्राण प्रतिष्ठा कर दानवी शक्तियों की समाप्ति के उपाय सोच स्वर्णिम वैदिक युग निर्माण भावना के पावन उद्देशों से नवम आर्य महासम्मेलन किया जा रहा है।

आर्यों जागो! भूल जावें भेद-भावों को, निराशा दूर करो, दयानन्द की पाखंड-खंडिनी पताका तुम्हे पुकार रही है। सुनो यह पुकार और नवम आर्य महासम्मेलन में भाग ले धरती को आर्य बनाने के घोष को मूर्त रूप देने का निश्चय करो।

यह न भूलो कि धरती का भविष्य आप के हाथ में है। मानव जाति की रक्षा का भार आप के कन्धो पर है और ईश्वरीय ज्ञान वेद की ज्योति के प्रसार का उत्तरदायित्व आप को पुकार रहा है। यह पुकार सभी आर्यों को नवम आर्य सम्मेलन में पहुंचने का आवाहन कर रही है। निमंत्रण दे रही है।

हमारी प्रार्थना है कि देश विदेश में रहने वाला प्रत्येक आर्य, प्रत्येक स्थिति मे इस सम्मेलन में पहुचने का निश्चय करे।

धरती पर रहने वाले प्रत्येक मनुष्य के हृदय मे मन्दिर पर 'ओ३म्' की पावन पताका कैसे लहराई जाय, ताकि विश्व विजय का जो आदेश महर्षि ने हमें दिया था उसे पूर्ण कर हम ऋषि ऋण से उऋण हो सकें। लक्ष्य पूर्ति के लिए सभी को नवम आर्य महासम्मेलन में भाग लेने का हमारा निमन्त्रण है, स्वीकार कीजिए।

रघुवीरसिंह शास्त्री।

सम्पादकीय टिप्पणियाँ

शान्ति का उच्च आधार

समय २ पर तीसरे विश्व युद्ध की चर्चा होती है परन्तु इस समय स्थिति यह है कि न तो शान्ति है और न युद्ध है। ससार के घटना चक्र को बारीकी से देखने वालो का यह मत है कि महान् युद्ध न केवल अनिवार्य ही है अपितु वह सन्निकट है परन्तु इसके विपरीत लदन पेरिस, बर्लिन, और वाशिंगटन् के भाग्य विधाताओ को युद्ध का खतरा नही देख पडता।

१९५० मे जब विन्सटन चर्चिल से एक सम्वाददाता ने उनके ग्राम निवास-स्थान पर भेंट करके पूछा कि क्या विश्व युद्ध सन्निकट है तो उन्होने कहा था 'सकेत तो ऐसे मिल रहे हैं स्थिति भी सन् १९३० जैसी ही है जब हिटलर ससार विजय की तैयारी में व्यस्त था परन्तु उस समय मैं जानता था कि विश्व युद्ध होने ही वाला है परन्तु अब युद्ध मेरी हड्डियों में समाया हुआ नही है।"

आज के बौद्धि-निर्माता भी प्राय यही धारणा रखते प्रतीत होते हैं परन्तु उनकी हड्डियों में समाया हुआ युद्ध न होने का भाव उतना दृढ और विश्वसनीय नहीं है जितना श्रीयुत चर्चिल का था। फिर भी निकट भविष्य मे युद्ध के न छिडने के कई प्रबल हेतु प्रस्तुत किए जाते हैं।

गत मई मास मे पेरिस के असफल शिखर-सम्मेलन के अवसर पर श्रीक्रुश्चेव के यू० २ विमान विषयक आक्षेपों को सुनने के पश्चात् राष्ट्रपति आइजन हावर ने विनम्रता से उन्हें कहा सोवियत रूस ने भी तो गुप्तचरी का बहुत काम किया है।' इस पर क्रुश्चेव ने आग बबूला होकर और अपने दोनों हाथ उठाकर कहा परमात्मा मेरा साक्षी है मेरे हाथ साफ हैं और मेरा हृदय शुद्ध है। उनकी इस गर्वोक्ति मे कितनी सचाई हैं इसका अनुमान रूसद्वारा पोलैंड हगरी आदि की क्रान्तियों के निर्दय दमन और साम्यवाद के वर्चस्व की स्थापना के लिए की गई हिंसात्मक कार्यवाहियों से सहज ही लग जाता है। ऐसा लगता है मानो उनकी दृष्टि मे साम्यवादी प्रभुत्व के विस्तार के उच्च उद्देश्य के लिए होने वाला प्रत्येक अनाचार उच्च है यही मनोवस्था पूजीवादी और उपनिवेशवादी सत्तारूढ़ राजनीतिज्ञो की भी होती है।

पेरिस से विदा होते समय उन्होंने धमकी दी थी कि मैं बर्लिन जाकर जर्मन सन्धि पर हस्ताक्षर कर दूगा। उनकी धमकी विश्व युद्ध का सकेत लिए हुए थी। उस समय की मनोदशा और उनके क्रोधावेश से यह लगने लगा था कि तीसरा युद्ध शीघ्र ही छिडने वाला है परन्तु बर्लिन पहुँचकर उनका रौद्र रूप बदल गया और वे गभीर, शान्त विनम्र और कुशल राजनीतिज्ञ के रूप मे देख पडे। उन्होंने पूर्वी जर्मन के निराश साम्यवादियो की गोष्ठी मे घोषणा करदी कि ७ ८ महीने तक और प्रतीक्षा करली जाय। कहा जाता है कि पेरिस मे जनरल डिगाल ने उन्हे कह दिया था कि जर्मनी के मामले में आवश्यक होने पर पश्चिमी देश शस्त्र उठाने में कोई सकोच न करेंगे।

हिटलर और क्रुश्चेव मे एक महान अन्तर है और वह यह कि हिटलर कुछ दिनो मे ही ससार मे नाजीवाद का प्रसार करने के लिए उतावला था। क्रुश्चेव ससार में साम्यवाद का बोल बाला तो चाहते हैं परन्तु उतावल पन से नही। यह अन्तर युद्ध के निकट भविष्य मे न छिडने का भी एक कारण है। वे मानवता के सहार और सस्कृति के समूल विनाश से भी कुछ डरने प्रतीत होते हैं। वे आणविक युद्ध का खतरा भी मोल लेना नहीं चाहते। इसमे मानवीय भावना चाल वा अभी नही की नीति कोई भी कारण हो सकता है।

यू० २ की उडान से पूर्व सोवियत नेता इस बात से

निश्चिन्त थे कि उनके युद्ध आयुधों के भंडार का पता लगाना असम्भव है। जिनेवा में एक बार सोवियत के कुछ वैज्ञानिकों ने एक अमेरिकन वैज्ञानिक से कहा था हमें तुम्हारे युद्ध आयुधों के भंडार का पता है परन्तु तुम्हें हमारे भंडार का पता नहीं है" परन्तु यू० २ की उड़ान से यह निश्चिन्तता जाती रही है। इस समय अमेरिका को पता है कि वे भंडार कहाँ हैं? वह यह भी जानता है कि सोवियत हवाई प्रतिरक्षा अभेद्य नहीं है और यू० २ ने जो फिल्म लिए थे उनके आधार पर अमेरिकन बम वर्षक लक्ष्य पर पहुंच सकते हैं। क्रुश्चेव महोदय इस बात को जानते हैं। निकट भविष्य में विश्व युद्ध के न होने का यह दूसरा प्रबल हेतु है।

इस प्रकार इस समय पारस्परिक भय की शान्ति है और 'न शान्ति न युद्ध' की स्थिति न जाने कब तक बनी रहेगी। दुःख इस बात का है कि 'भय' के सिवा शान्ति का उच्च आधार नहीं मिल रहा है और भय की इस स्थिति के कारण अपराध भ्रष्टाचार और धन के अपव्यय का विषाक्त वातावरण व्याप्त हो रहा है। परमात्मा के भय से ही 'भय' की स्थिति समाप्त हो सकती और चक्रवर्ती राज्य की स्थापना से 'शान्ति' स्थापित हो सकती है। यही शान्ति का उच्च आधार है।

पैट्रिक लुमुम्बा

कांगो के भूतपूर्व प्रधान मंत्री लुमुम्बा और उनके दो साथियों की नृशंस हत्या ने राजनीति के नाम पर होने वाली हत्याओं की संख्या में वृद्धि करदी है। ऐसा लगता है मानो मजहब के नाम पर हुई या होने की तुलना में पीछे पड़ती जा रही हैं यद्यपि दोनों ही हेय हैं।

सत्य और न्याय की आवाज इस प्रकार की हत्याओं से बंद नहीं हुआ करती। लुमुम्बा देश-भक्त थे। वे अपने देश की स्वतन्त्रता प्राप्त कर लेने के पश्चात् उसके प्रसादों का लाभ उठाने के लिए देश को समर्थ बनाने के सत्प्रयत्न में संलग्न थे। उनकी हत्या कांगो की स्वतन्त्रता की रक्षा के लिए एक बहुत बड़ा आघात सिद्ध हो सकती है भले ही भावनाओं की उग्रता में उनके पथ-भ्रष्ट देशवासी इस बात को इस समय अनुभव न करें। उनकी हत्या से तात्कालिक प्रभाव यह पड़ा कि जो काम वह जीवित रह कर न कर पाए वह हो गया अर्थात् उनकी सरकार को कई राष्ट्रों ने मान्यता प्रदान करदी। निश्चय ही उनका बलिदान व्यर्थ न जायगा।

इस जघन्य कृत्य की सर्वाधिक उत्तरदायिता बेल्जियम के उपनिवेश वादियों पर है। बेल्जियम ने गत जून मास में कांगो को स्वतंत्रता देकर अपना प्रभुत्व समाप्त कर दिया था परन्तु वह अपने देश के उन लोगों की रक्षा के बहाना करके जो कांगो में रह गए थे पुनः आ धमका। जब संयुक्त राष्ट्र संघ ने कांगो में अपनी मनमानियां समाप्त कर देने का उसे आदेश दिया तब भी उसने वहीं जमे रहने का यत्न किया और प्राविधिक सहायता प्रदान करने का बहाना करके जम गया। इन महीनों में बेल्जियम के उपनिवेश वादियों के विरुद्ध हिंसा को भड़काने के अनेक गंभीर आक्षेप किए जाते रहे हैं जिसकी चरम सीमा निस्सहाय लुमुम्बा की हत्या के रूप में देख पड़ी है।

यों तो समस्त साम्राज्य एवं उपनिवेश वादियों ने अधीनस्थ प्रजा पर समय २ पर अनेक अत्याचार किए हैं परन्तु बेल्जियम के उपनिवेश वादियों के कांगो की प्रजा पर किए गए अत्याचार जघन्यता की दृष्टि से पराकाष्ठा को पहुंच गए थे। बेल्जियम के राजा के भाड़े के टट्टुओं के माध्यम से बेल्जियम ने कांगो को मूल निवासियों से शून्य करने के दुष्प्रयत्न में २३ वर्ष के काल में लगभग ८० लाख व्यक्तियों की हत्या करके जैसा कि क्रिश्चियन साइंस मौनीटर के श्री जौन बवेल ने बताया है अमानुषिक यातनाओं और जघन्य हत्याओं का भयंकर रिकार्ड छोड़ा है। यदि कांगो को स्वतंत्र करने के पश्चात् बेल्जियम का व्यवहार सम और मानवोचित रहता तो कांगो के लोग उसे भूल जाते। परन्तु वह तो वहां कांगो के निवासियों को एक दूसरे से लड़ाने और उनमें फूट डालने के प्रयत्न में लगा हुआ है। कांगो में इस समय तक शान्ति सम्भव नहीं देख पड़ती जब तक बेल्जियम वहां से नहीं हटता और अन्य बाहरी शक्तियां उसे दूषित राजनीति का मुहरा बनाना नहीं छोड़तीं।

उत्तम योजना

श्रीयुत देवव्रत जी धर्मेन्दु आर्योपदेशक (संस्थापक प्रान्तीय आर्यकुमार परिषद्) ने एक योजना प्रस्तुत की है और वह यह है कि देश के आर्यकुमारों को सार्वदेशिक पत्र ६) के बदले ४) वार्षिक शुल्क में दिया जाया करे। २) वार्षिक की कमी आर्यसमाजें वा अन्य आर्यकुमार प्रेमी सज्जन कर दिया करें। इस समय उन्होंने अपने पास से २५) चंदे के रूप में देने का संकल्प किया है जिससे २५ आर्यकुमार चंदे मे १) की छूट से लाभान्वित हो सकें। कोई अन्य सज्जन २५) देकर शेष चंदे की पूर्ति कर सकें तो अच्छा रहेगा।

इस समय जो २५ आर्यकुमार इस छूट से लाभ उठाना चाहे उन्हें किसी न किसी आर्यकुमार सभा का सदस्य होना चाहिए और इसके लिए उक्त कुमार सभा के मंत्री या प्रधान से लिखा कर देना चाहिए कि वह कुमार नियमित रूप से सदस्य हैं। इसके साथ ही उसे यह भी लिखना चाहिए कि वह 'सार्वदेशिक' पत्र को क्यों पढ़ना चाहता है। ४) अग्रिम रूप में भी भेजना चाहिए।

यह योजना 'आर्य समाज स्थापना दिवस' के उपलक्ष में क्रियान्वित की जा रही है।

आर्य समाज जालंधर की घटना

जालंधर के डिप्टी कमिश्नर ने आर्य समाज मंदिर जालंधर में आर्यों का प्रवेश वर्जित करके आर्य समाज को चुनौती दी थी। डिप्टी कमिश्नर की निषेधाज्ञा आर्यों के नागरिक एवं धार्मिक अधिकारो पर आघात था जिसके कारण न केवल पंजाब के ही अपितु समस्त भारत के आर्यों मे चिन्ता एवं व्यग्रता व्याप्त हुई। जालंधर के ६ प्रमुख आर्य नेताओ की गिरफ्तारी ने जले हुए पर नमक का कार्य किया। एक ओर तो शान्तिप्रिय आर्यों के अधिकारो पर कुठाराघात करके यह अन्याय किया गया और दूसरी ओर अकालियो द्वारा गुरुद्वाराओ जैसे धार्मिक स्थानों को हिंसात्मक कार्यवाही के गढ़ बन जाने दिया गया और धारा १४४ का उलंघन हो जाने दिया गया। इस पक्षपात पूर्ण कार्यवाही ने आर्यसमाज के प्रति किए गए अन्याय की गुरुता गैर आर्यसमाजियों पर भी अंकित कर दी। इस अनुचित कार्यवाही के प्रति रोष व्यक्त करते हुए अनेक तार और पत्र भेजकर आर्यों और आर्य समाजों ने सार्वदेशिक सभा से इस अन्याय का तत्काल प्रतिकार कराने की मांग की। सार्वदेशिक सभा ने आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से घटना का प्रामाणिक विवरण मांगा जो शीघ्र ही प्राप्त हुआ। इस पर सभा की ओर से राष्ट्रपति महोदय, प्रधान मंत्री श्री पं० जवाहरलाल जी नेहरू, केन्द्रीय गृह मंत्री श्री पं० गोविन्द वल्लभ पंत, पंजाब के राज्यपाल महोदय तथा मुख्य मंत्री श्री सरदार प्रताप सिंह कैरो को विशेष पत्र और तारें भेजकर अन्याय का प्रतिकार करने का अनुरोध किया गया इनमें से कुछ महानुभावो के उत्तर भी प्राप्त हुए। सरदार प्रतापसिंह कैरो ने १३-२-६१ को प्रेस प्रतिनिधियों की भेंट मे स्वीकार किया कि जालंधर के डिप्टी कमिश्नर ने आर्यसमाज मन्दिर अड्डा होशियारपुर जालंधर में प्रवेश वर्जित करने की भूल की थी। उन्होंने निषेधाज्ञा उठवा दी। सभा की दूसरी माग थी कि छहों आर्य नेताओं को भी अविलम्ब मुक्त करके उनके विरुद्ध चलाए जाने वाले अभियोग उठा लिए जाएं। हर्ष है कि आर्य नेता मुक्त हो गए हैं और अभियोग उठा लिए गए हैं। पंजाब के मुख्य मन्त्री श्री प्रताप सिंह कैरो ने खुले रूप में राज्य की भूल स्वीकार करके जहां नैतिक साहस और राजनैतिक दूरदर्शिता का परिचय दिया वहां एक अवांछनीय स्थिति और उससे उत्पन्न होने वाले संभावित परिणामो से भी राज्य को बचा लिया।

इस प्रसग में सहयोगी ट्रिब्यून (अम्बाला) का १६-२-६१ का अग्रलेख बड़ा महत्वपूर्ण है जिसका प्रासंगिक भाग इस प्रकार है:—

A MISTAKE

The Punjab Chief Minister admit'ed in a Press interview at Chandigarh that it was a mistake on the part of the District Magistrate of Jullundur to impose a ban on the entry of the people into the Arya Samaj Mandir, Adda Hoshiarpur. Whatever may be the purpose which prompted the District

Magistrate to issue the order. the ban itself caused great resentment not only among the Arya Samajists but also in other section of public opinion in the State. It was interpreted as an interference with the religious rights of a section of the community. The resentment was all the greater because the District Magistrate's order was considered to be discriminatory inasmuch as the Government never thought in terms of imposing restrictions on the entry of the people into gurdwaras, even though many Sikh temples used by the Akalis as centres for conducting the Punjabi Suba agitation. From the interview of Sardar Partap Singh Kairon it seems that the Punjab Government or the Chief Minister was not consulted by the District Magistrate prior to his issuing the said order. Obviously the District Magistrate acted on his own initiative; but he did not exercise his discretion properly or correctly. While admitting that the imposition of the ban was a mistake, Sardar Partap Singh Kairon tried in a way to justify the action of the District Magistrate. "I can understand the point of view of the District Magistrate", said the Chief Minister, "that he did it out of respect for the people, hoping that they may not fall into the clutches of the law while innocently going into the temple." Could not that purpose be served if the District Magistrate had explained to the public the implications of violating the general Prohibitory order under Section 144, Cr. P. C., and warning them of the consequences? Even he had, under a mistaken sense of duty, imposed a ban on the entry of the people into the Arya Samaj Mandir, was it necessary for him to make a display of the police outside the temple? Though the ban could not be justified on any ground fortunately it has been withdrawn and the cause of irritation and excitement has disappeared.

अर्थात् इस प्रतिबन्ध से न केवल आर्यों में ही अपितु गैर आर्य समाजियों में भी रोषव्याप्त हुआ। यह प्रतिबन्ध धार्मिक अधिकारों में हस्तक्षेप माना गया। यद्यपि डिपुटी कमिश्नर ने मुख्य मन्त्री से परामर्श किए बिना स्वयं अपने उत्तरदायित्व पर यह प्रतिबन्ध लगाया था तथापि उसने अपने विवेक का ठीक प्रयोग नहीं किया। मुख्य मन्त्री ने कहा है कि 'मैं डिपुटी कमिश्नर के दृष्टिकोण को समझता हूँ। वह यह नहीं चाहते थे कि समाज मन्दिर में जाने वाले निर्दोष लोग कानून की पकड़ में आ जायें।' यदि डिपुटी कमिश्नर जनता को निषेधाज्ञा (१४४ धारा) भंग करने के परिणामों से सावधान कर देते तो क्या उद्देश्य की पूर्ति न हुई होती? यदि उन्होंने कर्तव्य पालन की भ्रान्त धारणा के वशीभूत हो आर्य समाज मन्दिर में लोगों का प्रवेश रोका तो क्या समाज मन्दिर के बाहर पुलिस का प्रदर्शन करना उनके लिए आवश्यक था। जिस प्रतिबंध का किसी भी आधार पर समर्थन नहीं हो सकता था, प्रसन्नता है वह हटा लिया गया है।

जबलपुर कांड

जबलपुर के २ मुस्लिम गुंडों ने उषा भार्गव नामक एक कालेज की लड़की के साथ बलात्कार किया उस समय जब वह घर में अकेली थी और उसके माता पिता इलाहाबाद गए हुए थे। इस लड़की ने ग्लानि वश अपने कपड़ों पर तेल छिड़ककर आग लगा ली और मर गई। इस जघन्य कृत्य की जघन्यता तब और भी बढ गई जब जैसा कि समाचार पत्रों से विदित हुआ है मुस्लिम वर्ग ने भर्त्सना करने के बजाय हिन्दुओं पर आक्रमण किया जिसके फलस्वरुप साम्प्रदायिक आग भड़की जिसकी लपेट में न केवल जबलपुर का नगर ही अपितु आस पास के कई एक और नगर आये जिनमें बहुत से व्यक्ति आहत हुए अनेक मर गए सताए गए और लाखों की सम्पत्ति नष्ट हुई। कुमारी उषा तो नारीत्व के गौरव की रक्षा के लिए आत्म-सात और भव्य उदाहरण प्रस्तुत करके अमर हो गई। उसने अपने बलिदान से गुंडों के दुष्कृत्य की जघन्यता की कालिमा को संसार के समक्ष रखकर उसको धोने का अवसर दिया परन्तु खेद है कि गुंडों के वर्ग ने

उससे समुचित लाभ न उठाया। इस कांड की जांच करने का सरकारी आदेश हुआ है, यह अच्छा ही हुआ। इस प्रकार के कांडों की पुनरावृत्ति को रोकने के लिए हिन्दुओं, मुसलमानों और सरकार को सतर्क और सावधान रहना चाहिये।

बंगलोर में ऋषिबोधत्व

१३ फरवरी को आर्य समाज विश्वेश्वर पुरम बंगलोर सिटी में ऋषि बोधोत्सव बड़े समारोह से मनाया गया। सार्वजनिक सभा का प्रधानत्व मैसूर राज्य के उपगृह मन्त्री श्री बी० वसवलिंगप्पा महोदय ने किया। श्रीमती वी. पी. राव और कुमारी सुधाराव के ईश्वर भक्ति विषयक भजनों और बोधोत्सव सम्बन्धी सर्वश्री पंडित सुधाकर, रामचन्द्र चेटी और कुन्दनलाल आर्य के व्याख्यानों के पश्चात् प्रधान महोदय ने अपने अन्तिम भाषण में मूर्ति पूजा के प्रसार और मन्दिरों के निर्माण की आर्थिक पृष्ठ भूमि पर प्रकाश डालते हुए कहा कि जब तक वेदों में प्रतिपादित निराकार परमेश्वर की पूजा उपासना की ठीक विधि नहीं अपनाई जाती जिसका आर्य समाज के संस्थापक महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने प्रचार किया है तब तक मूर्ति पूजा और वशानुक्रम से मन्दिरों पर अधिकार तथा नए नए मन्दिरों का निर्माण रुक नहीं सकता।

प्रारम्भ में आर्य समाज के प्रधान श्री ऐन० आर० जंगमिहाने उपस्थित सज्जनों का स्वागत किया और अन्नड श्री वी० यन० वेंकोबा ने धन्यवाद दिया।

श्री सेठ दीपचन्द पोद्दार

कलकत्ता के पुराने, प्रसिद्ध और वयोवृद्ध आर्य नेता श्री सेठ दीपचन्द पोद्दार के निधन का समाचार अंकित करते हुए दुःख होता है। वे कलकत्ता में आर्य सामाजिक प्रगतियों के प्राण थे। उनकी थैली आर्यों और आर्य समाज के लिये खुली रहती थी। बाहर से कलकत्ता जाने वाले आर्य भाई उनके आतिथ्य का लाभ उठाते रहते थे। सेठजी ने आर्य समाज और उसकी संस्थाओं को लाखों रुपये दान में दिए। सेठजी का सौभाग्य था कि उनके पुत्र और अन्य परिजन आर्य समाज की मूल्यवान सेवा में लगे हुए हैं। वे स्वाध्यायशील और कर्म कांडी थे। उनका निधन वस्तुतः आर्य समाज की एक महती क्षति है। परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को सद्गति, और उनके परिवार तथा इष्ट मित्रों को इस दुःख को सहन करने की क्षमता प्रदान करें।

श्री मामराजसिंह

खतौली (मुजफ्फर नगर) निवासी श्रीयुत मामराजसिंहजी के निधन से आर्य समाज एक ऐसे महानुभाव से वंचित हो गया है जिसकी सेवाएं मूल्यवान रहीं। श्री मामराजसिंहको श्री स्वामीजी के अप्राप्त चित्रों तथा अनेक पत्रों को संग्रह करने का श्रेय प्राप्त रहा। पुस्तक रूप में स्वामीजी का जो पत्र व्यवहार सुलभ हुआ वह सर्वाधिक उन्ही के परिश्रम का परिणाम था।

उन्होंने गांव गांव और शहरों शहरों में अपने व्यय पर घूमकर और कई कई दिन कई२ सप्ताह और कई कई महीने एक एक स्थान पर रहकर उपयुक्त तथा अन्य सामग्री की खोज की और उसका संकलन किया। क्या यह काम कम परिश्रम और कम व्यय साध्य था? प्रभु दिवंगत आत्मा को सद्गति और उनके परिजनों को उनके वियोग को सहन करने की क्षमता प्रदान करे।

अजमेर जिले क्षेत्र में ईसाई प्रसार निरोध कार्य

अजमेर जिले के ग्रामों में मुख्यतया रावत राजपूतों की बस्तियों में जहाँ ईसाइयों के केन्द्र तथा अनेक स्कूल और औषधालय चलते हैं आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान की ओर से ईसाई प्रचार निरोध का कार्य द्रुत गति से हो रहा है। अनेक उपदेशक ग्रामों में घूम घूम कर काम कर रहे हैं। ४०-४० तथा ५०-५० गावों के मुखियों पंचों और पटेलों की पंचायतें कराके प्रचार व्यवस्था को अधिक उपयोगी तथा व्यवस्थित किया जा रहा है। अजमेर से १२ मील दूर लाडपुरा ग्राम में १ और २ अक्टोबर को बड़ा सम्मेलन किया गया। एक प्रीति भोज कराया गया। अनेक आर्य विद्वानों के भाषण हुए। भोज में ४०० रावत राजपूतों ने भाग लिया। इस ग्राम में जो ईसाइयों का गढ़ था अब केवल नाम मात्र का प्रभाव रह गया है। अजमेर से १० मील दूर गुलकड़ी ग्राम है। वहां के सभी रावत ईसाई बन चुके थे। घर घर ईसा मसीह की प्रार्थना होती थी। वहाँ ईसाई ५० वर्ष से अड्डा जमाए बैठे थे। १३ और १४ जनवरी को वहाँ आर्य समाज का प्रचार हुआ। इस प्रचार में २० गाँवों के लगभग २५० प्रतिनिधियों ने भाग लिया। अब वहाँ भी ईसाइयों का प्रभाव नाम मात्र का रह गया है। मैजिक लालटेन तथा ट्रैक्ट वितरण द्वारा भी प्रचार किया जा रहा है। इस सब कार्य के लिए संयोजक गण बधाई तथा प्रोत्साहन के अधिकारी हैं। —रघुनाथ प्रसाद पाठक

सार्वदेशिक पत्र के स्वामित्व तथा अन्य बातों का विवरण
फार्म ४

१.	प्रकाशन स्थान	—	दयानन्दभवन (रामलीला मैदान) नई दिल्ली १
२.	प्रकाशन का समय	—	प्रत्येक मास की १ तारीख
३.	प्रिंटर का नाम	—	रघुनाथप्रसाद पाठक
	राष्ट्रीयता	—	भारतीय
	पता	—	सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द भवन (रामलीला मैदान) नई दिल्ली १
४.	प्रकाशक का नाम	—	रघुनाथप्रसाद पाठक
	राष्ट्रीयता	—	भारतीय
	पता	—	सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दयानन्द भवन (रामलीला मैदान) नई दिल्ली १
५.	संपादक का नाम	—	१ मंत्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा—श्री रघुवीरसिंह शास्त्री २ सहायक—रघुनाथप्रसाद पाठक
	राष्ट्रीयता	—	भारतीय
	पता	—	सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा (रामलीला मैदान) दयानन्द भवन नई दिल्ली—१
६.	जो व्यक्ति पत्र के स्वामी हैं, भागीदार या हिस्सेदार हैं जो सम्पूर्ण पूंजी के १ प्रतिशत से अधिक हिस्से रखते हों उनके नाम व पते	—	सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा (रामलीला मैदान) दयानन्द भवन, नई दिल्ली १ (पत्र की स्वामिनी)

मैं—रघुनाथ प्रसाद पाठक इस लेखपत्र द्वारा घोषणा करता हूँ कि उपर्युक्त विवरण जहां तक मेरा ज्ञान या विश्वास है सही है।

दिनांक—२२-२-१९६१ प्रकाशक के हस्ताक्षर—रघुनाथप्रसाद पाठक

"दरिद्रता" (श्री महात्मा नारायण स्वामी जी की डायरी से)

जगतोत्पादक प्रभु ने मनुष्य को कदापि इसलिए नहीं पैदा किया कि वह दरिद्रता, निराशा और दासता का जीवन व्यतीत करे। जब मनुष्य अपने आलस्य, प्रमाद और निराशा से अपने को अत्यन्त दरिद्र बना लेता है तब प्रायः असम्भव हो जाता है कि वह फिर मनुष्यत्व के असली गुणों से विभूषित हो सके। मनुष्य का अनिवार्य पतन उसी क्षण से आरम्भ हो जाता है जब वह अपने को उस दुरवस्था के जो दुर्भाग्य से प्राप्त हो गई है, अनुकूल बनाता है। उसको चाहिए तो यह था कि उस दुर्भाग्य को अस्थिर और अनायासरूप से बीच में आया समझकर दूर कर देने के लिये जद्दो जहद करता परन्तु इसके विपरीत वह उसकी शरण ग्रहण करने में ही अपना सौभाग्य समझ रहा है। स्वयमेव दरिद्रता उतनी बुरी वस्तु नहीं है जितनी बुरी यह बात है कि उसके प्रभाव से मनुष्य अपने मस्तिष्क को प्रभावित होने दे और समझने लगे कि हम तो दरिद्र हैं, और दरिद्रता ही का जीवन व्यतीत करने के लिए पैदा किये गए हैं। यदि मनुष्य भीतर की दरिद्रता को दूर करदे तो उसका अनिवार्य फल यह होगा कि बाहर की दरिद्रता भी दूर हो जायेगी। यह जगत प्रसिद्ध सचाई है कि मानसिक परिवर्तन के अनुकूल शारीरिक परिवर्तन हो जाया करते हैं। गिरावट के विचार रखना गिरावट के व्यवहार करना मनुष्यों को उन्नति के पथ से विमुख कर देता है। दरिद्रता को एक विद्वान् ने मस्तिष्क से संबंधित एक प्रकार का रोग बतलाया है, इसलिए उस को दूर करने के लिए सबसे पहले उसका बहिष्कार मस्तिष्क ही से करना चाहिये अन्यों का दृष्टिकोण बदलने के लिये आवश्यक है कि मनुष्य पहले अपना दृष्टिकोण बदले।

(२) दरिद्रता का एक और मुख्य कारण यह होता है कि मनुष्य शिल्प, व्यापार, कृषि आदि आत्मावलम्बन के व्यवसायों की ओर से मुंह फेर कर दूसरों की सेवा और मजदूरी की वृत्ति से नाता जोड़ते हैं इस अन्तिम वृत्ति का आश्रय लेने से मनुष्यत्व के उच्च गुणों के ह्रास का सूत्रपात होकर मनुष्य गिरावट की अन्तिम सीढ़ी तक पहुँच जाता है। उसके भीतर से मौलिकता Originality का क्रमशः नाश होने लगता है। किसी नये काम के प्रारम्भ करने का साहस बाकी नहीं रहता, उसका व्यक्तित्व नष्ट हो जाता है, वह पूछ-ताछ करने के योग्य नहीं समझा जाता। मस्तिष्क के निरन्तर काम में लाने से मनुष्य के भीतर नई बातों के खोज निकालने और उस खोज निकालने की सामग्री के बहुतायत से जमा होने के साधन, स्वयमेव गेहूं के साथ घास की तरह उत्पन्न हो जाया करते हैं, परन्तु जब मनुष्य दूसरों के मस्तिष्कों के पीछे चलने वाला बन जाता है तब उसके भीतर यह साधन उत्पन्न ही नहीं होते। वह इस प्रकार आत्म-निर्माण की योग्यता से भी वंचित हो जाता है। दूसरों के प्लेन पर काम करते-करते अपनी तजवीजों, अपने पुरुषार्थ अपने कार्यक्रम पर भी उसे विश्वास बाकी नहीं रहता। सच तो यह है कि मनुष्य के भीतर चारित्र्य बल स्वतन्त्र मस्तिष्क होने ही से आया करता है। इसलिए दरिद्रता से बचने का उपाय और सर्वश्रेष्ठ उपाय यह है कि मनुष्य ऐसे व्यवसायों में लगें जो उसकी गुण-वृद्धि के साधक हों।

● ● ●

शिक्षा और दीक्षा

श्री बा० पूर्णचन्द्र जी

मनुष्य और अन्य पशुओं में विशेषत: बुद्धि का भेद है। मनुष्य के अन्दर बुद्धि अर्थात् ज्ञान प्राप्त करने की शक्ति है परन्तु यह बात ध्यान मे रखनी है कि मनुष्य स्वय कोई ज्ञान प्राप्त नही कर सकता है और वह दूसरो से ही ज्ञान प्राप्त करता है। दूसरों से प्राप्त किये हुए ज्ञान से ही विकास के लिए साधना कर सकता हैं। जिनसे ज्ञान मिलता है वे अध्यापक या गुरु कहलाते है। आदि गुरु परमात्मा है। सृष्टि की आदि मे परमात्मा द्वारा ऋषियों को ज्ञान का प्रादुर्भाव होता है और आदि गुरु से जो ज्ञान मिलता है उसका ही प्रचार और विस्तार चलता रहता है। जिनके द्वारा चलता है वे गुरु और आचार्य समझने चाहिए। जिनको मिलता है वे शिष्य और ब्रह्मचारी होते है। इस ज्ञान प्राप्ति का नाम ही शिक्षा है। शिक्षा और बुद्धि के विकास का सीधा सम्बन्ध है परन्तु मनुष्य की आन्तरिक परिस्थिति को लक्ष्य मे रखकर अन्त: करण चतुष्टय के अन्तर्गत बुद्धि केवल एक है मन चित्त और अहंकार इसके शेष तीन अंग अलग हैं और बुद्धि का जो सम्बन्ध मन चित्त और अहंकार से है उसको समझे बिना बुद्धि का प्रयोग समझ मे नही आ सकता और न उसका वास्तविक विकास ही हो सकता है।

मन मे संकल्प और विकल्प उठते हैं वे इच्छा और द्वेष का केन्द्र स्थान है। मन की ये क्रियाए जीवन का चिन्ह है। जीवन पर्यन्त मन में इच्छाएं और द्वेष उत्पन्न होते रहेंगे। बुद्धि मन के लिए है। बुद्धि के पथ प्रदर्शन के आधार पर मन में क्या इच्छा हो और किस बात की इच्छा न हो इसका निर्णय करना होगा। इच्छाएं और द्वेष और इनसे सम्बद्ध कर्म और व्यवहार मन पर प्रभाव डालते रहते हैं और उन प्रभावों का ही नाम संस्कार है। इन संस्कारों के समूह से मन का चित्त रूप प्रभावित होता है और इन्ही के आधार पर यह निश्चय होता है कि आत्मा मन द्वारा अपने सम्बन्ध में क्या भावना रखे। यदि आत्मा अपने को आध्यात्मिक दृष्टिकोण से देखने का अभ्यासी हो और अपने को केवल आत्मा के रूप में अनुभव कर सके और अपने को अपने शरीर और जगत के अन्य प्राणियों और पदार्थों से पृथक अनुभव कर सके तो आत्मा वास्तविक अर्थों मे आत्मिक उन्नति कर सकेगा। चित्त रूप मे उसके संस्कार भी पवित्र होगे और मन को इच्छाए और द्वेष भी मर्यादित रहेगे। इन सबसे ही शिक्षा की आवश्यकता और सफलता समझ में आ सकती है।

यदि शिक्षा केवल ज्ञान के लिये होगी और उसका सम्बन्ध कर्म से न होगा चरित्र से न होगा तो शिक्षा न केवल अधूरी अपितु भ्रम मूलक भी रहेगी। शिक्षा का और आचार का सीधा सम्बन्ध है। आचार: परमोधर्म: आचार को इसीलिए परमधर्म बताया गया है।

शिक्षा और अक्षर बोध

शिक्षा अक्षर बोध से आरम्भ होती है। अक्षर ज्ञान का आरम्भिक रूप है। अक्षर ईश्वर का भी विशेषण है। ईश्वर हर प्रकार के क्षर और क्षति से रहित है और वही एक अनादि और अटल अक्षर है। यदि अक्षर बोध से अक्षर बोध में सहायता मिलती रहे तो शिक्षा सहायक और पूर्ण होगी नहीं तो शिक्षा अपूर्ण समझी जायगी।

महर्षि दयानन्द जी ने इसी लक्ष्य की सिद्धि के लिए 'ईश्वर' को सब सत्य विद्या का आदि मूल बताया है। अक्षर ज्ञान या बोध यदि क्षर जगत् तक सीमित रहेगा और उसका सम्बन्ध केवल परिवर्तन शील नाशवान रचित पदार्थों तक रहेगा तो अक्षर बोध से क्षर जगत् का ज्ञान बढेगा और क्षय रोग में वृद्धि होगी। आजकल क्षय रोग का बडा विस्तार है जहाँ देखो टी० बी० के हस्पताल खुल रहे हैं और क्षय रोग में ग्रसित रोगियों की संख्या बढ रही है।

क्षय रोग की प्रसिद्ध औषधि

अमेरिका वालों ने क्षय रोग के लिए बी० सी० जी० का आविष्कार किया है। प्राचीनकाल से भारत में भी एक बी० सी० जी० का प्रचार रहा है जिसके प्रयोग से न केवल क्षय रोग की उत्पत्ति रुकेगी उससे उपचार भी हो जायगा और भविष्य मे उसके उत्पन्न होने की सम्भावना भी न रहेगी। प्राचीन बी० सी० जी० मे ३ भावनाये सम्मिलित हैं ब्रह्मचर्य पालन, चरित्र निर्माण और गुरु सेवा। यदि शिक्षा पाने वाले ब्रह्मचर्य के नियमों का पालन करते रहे, चरित्र-निर्माण पर ध्यान रखे और गुरुओ की सेवा में तत्पर रहे तो उसका शारीरिक स्वास्थ्य भी ठीक रहेगा मानसिक उत्पत्ति भी होती रहेगी और हृदय जगत की व्यवस्था भी ठीक रहेगी और वे हर प्रकार की उन्नति से लाभ उठाते रहेंगे।

शिक्षा और प्रतिज्ञा

शिक्षा और प्रतिज्ञा का घनिष्ठ सम्बन्ध है। यदि व्रत पालन का अभ्यास नही होगा तो शिक्षा पूरी नही हो सकती।

क्या पढना है और क्या नहीं पढना है? कब पढना है, कैसे पढना है पढने में किन नियमों का पालन करना है, किन बुराइयों से बचे रहना चाहिए इन सब पर ध्यान रखना होगा। जिस प्रकार शारीरिक भोजन के लिए स्वास्थ्य और स्वाद दोनों पर ध्यान देना आवश्यक है इसी प्रकार मानसिक भोजन में भी दोनों पर ही ध्यान देना होगा। यदि शारीरिक भोजन में स्वास्थ्य के नियमों का उल्लंघन करके केवल स्वाद के लिए हानिकर चटपटा भोजन किया जायेगा तो शारीरिक रोग होने की संभावना है। इसी प्रकार मनोरंजन और मनबहलाव के नाम पर यदि अनुचित साहित्य पढा जायेगा, कामोत्पादक चित्र, गायन और कविताओं की ओर ध्यान होगा, अनुचित रूप से उत्तेजना देने वाले उपन्यासों को पढा जाएगा तो यह सम्भव है मन बहलता रहे परन्तु यह अधिक सम्भव है कि मन बहलता-बहलता बिल्कुल भ्रम में पड़ जाएगा। मनोरंजन का अर्थ है मन का रंजन और मार्जन भी। आज कल गन्दे फिल्म गंदी कहानिया, नगे चित्र प्रचलित हैं। शिक्षित जगत वाले और विद्यार्थी भी उनकी ओर आकृष्ट है और केवल मनोरंजन की आड मे मन की दशा अव्यवस्थित होती जाती है। आग हौले-हौले सुलगती रहती है जिसका विस्फोट कभी जबलपुर के बल्वे के रूप में अमृतसर के दगे के रूप मे और दिल्ली के दरियागज के विवाद के रूप में समय समय पर होता रहता है।

शिक्षा और सफलता

शिक्षा और सफलता का भी घनिष्ट सम्बन्ध है। जो पढता है वह पास होना चाहता है। वह परीक्षा मे उत्तीर्ण होना चाहता है। पास होने वा उत्तीर्ण होने के लिये मर्यादाएं निश्चित हैं। यदि केवल पास होने की धुन मे परीक्षा देने वाले नियमों और मर्यादाओं से दूर होते जाय तो वे असली अर्थ में पास नही समझे जा सकते। पास का अर्थ है न केवल लक्ष्य तक पहुचना अपितु मर्यादा पूर्वक यात्रा के नियमो का पालन करते हुए लक्ष्य तक पहुचना। परीक्षा के लिए नियम पालन करना आवश्यक है। शिक्षको मे से परीक्षा के समय कुछ चौकीदार के रूप में यह देखने के लिए नियुक्त होते है कि परीक्षा देने वाले नियमो का पालन कर रहे हैं या नही। यदि ऐसी चौकीदारी से परीक्षा देने वाले असन्तुष्ट हो जाय और उनको हानि पहुंचाने की चेष्टा करें तो वह परीक्षा नहीं समझी जायगी, परीक्षा के स्थान में अनियमित जीवन समझा जायगा।

शिक्षा और अनुशासन

शिक्षा जगत् में अनुशासन की बहुत चर्चा है। अनुशासन हीनता की समस्या पर राजकीय स्तर पर भी विचार हो रहा है और अन्य विचारक भी इस पर मनन कर रहे हैं। अब शासन की भावना लाने के लिए शासन और अनुशासन के सम्बन्ध को समझ लेना आवश्यक है। संसार की व्यवस्था को मर्यादित रखने के लिए शासन अत्यावश्यक और अनिवार्य है। शासन द्वारा अंकुश होता है और उस अंकुश से मर्यादा स्थिर रहती है। शासन एक दृष्टि में अत्यन्त आवश्यक है और यह बात भी निर्विवाद है कि शासन हरेक को अप्रिय है। कोई दूसरे के शासन में रहना या चलना पसन्द नहीं करता। यदि संसार में शासन की व्यवस्था रहती है और शासन के अप्रिय अंकुश से बचे रहना है तो ससार में प्रत्येक व्यक्ति को अपने को अनुशासन में रखना सीखना होगा। सांसारिक यात्रा की सफलता के लिए यह देखा जाता है कि घोड़े पर लगाम लगती है, ऊंट पर नकेल हाथी पर अंकुश, मोटर में ब्रेक लगती है और जब तक यह ब्रेक और लगाम सुरक्षित रहती है उसी समय तक यात्रा भी सफल और सुरक्षित रहती है। इसी प्रकार यदि प्रत्येक नागरिक के अन्दर और विशेष रुप से नवयुवकों के अन्दर आन्तरिक अनुशासन सुरक्षित रहेगा तो उनका जीवन इस प्रकार व्यतीत हो सकेगा कि संसार मे शासन चलता रहेगा। उस शासन का उनके ऊपर कोई अनुचित प्रभाव नहीं होगा और वे स्वयं इस प्रकार अपना जीवन व्यतीत करेंगे कि बाहर के शासन की उनके लिए कम से कम आवश्यकता होगी।

अनुशासन और डिस्प्लिन के सम्बन्ध में डिसाइप्लिन की भावना है। भारत का प्राचीन पद्धति के अनुसार प्रारंभिक दीक्षा गुरु मत्र या गायत्री मंत्र से होती है और ईश्वर को गुरु मानकर जब बालक या बालिका दीक्षित हो जाय तो वह जीवन पर्यन्त ईश्वर के अनुशासन में रहने का अभ्यासी होगा और आन्तरिक अभ्यास के आधार पर उसके जीवन में अनुशासन रहेगा और बाहर के शासन के अनुचित प्रभाव से बचा रहेगा। यदि शिक्षा जगत् मे अनुशासन की भावना लानी है तो हृदय जगत की व्यवस्था करनी होगी।

हृदय जगत् की व्यवस्था

हृदय जगत की व्यवस्था न केवल राजनियम के आधार पर हो सकती है और न उसके लिए लोकनियम ही पर्याप्त है। मनुष्य रुपी साम्राज्य का हृदय जगत राजधानी है और इस राजधानी में ईश्वर रुपी सम्राट का साम्राज्य है। आत्मा मुख्य मत्री है और मन गृह मंत्री। अन्य ज्ञानेन्द्रियाँ और कर्मेन्द्रियाँ इस राज्य के भिन्न भिन्न अंग हैं। यदि हृदय जगत् या राजधानी मे ईश्वर रुपी सम्राट का साम्राज्य रहेगा तो सारे साम्राज्य मे मर्यादा रहेगी। यदि राजधानी पर विद्रोह है तो प्रान्त में अशान्ति होने में कोई आश्चर्य न होना चाहिए।

शपथ की महिमा

हृदय जगत् की व्यवस्था के लिए ईश्वर की सत्ता पर विचार करना अत्यंत आवश्यक और उपयोगी है। ईश्वर रचयिता है। सब संसार के पदार्थों का स्वामी है और हर प्रकार का न्याय उसके अधीन है। रचित पदार्थ शरीर धारी आत्माओं को किस मात्रा में और किस प्रकार के मिलें यह ईश्वर की न्याय व्यवस्था के अधीन है। शपथ इस न्याय व्यवस्था की याद दिलाने के लिए है। जितने अपराध या पाप होते हैं उनका मौलिक रूप से २ प्रकार के मनोविज्ञान से सम्बन्ध है—छिपकर, बचकर। या तो अपराध करने वाला यह समझ लेता है कि उसका पाप या अपराध छिपा रहेगा या यदि प्रगट हो गया तो वह उसके परिणाम से किसी तरकीब से बच जायगा तो वह पाप करने का साहस कर सकता है। यदि यह धारणा निश्चित हो कि ईश्वर की न्याय व्यवस्था से न कुछ छिप सकता है और न कोई बच सकता है तो पाप के विचारों का ही पूर्ण रूप से निराकरण हो जायगा और यही अनुशासन और चरित्र निर्माण का असली रूप होगा।

आज कल की राजनीति धर्म निरपेक्ष है परन्तु इस शपथ की प्रथा से धर्म का प्रभाव राजनीति के हर अंग

और विभाग से पृथक् नहीं समझा जा सकता है। आवश्यकता इस बात की है कि शपथ केवल कागज पर न हो और न होठों तक ही हो अपितु वाणी द्वारा मन तक पहुच जाय तो यही एक शपथ की प्रथा ससार मे नैतिक उत्थान की अचूक औषधि हो जायगी।

शिक्षा और दीक्षा

शिक्षा मे परीक्षा के उत्तीर्ण होने पर दीक्षा का अवसर आता है। दीक्षा शिक्षा की सफलता का प्रमाण है। एक ओर दीक्षा शिक्षा की समाप्ति का द्योतक है दूसरी ओर दक्षिणा के जगत् से सम्बन्ध है। यह बात ध्यान में रखनी है कि यदि शिक्षा मे दोष रहा तो दीक्षा भी वास्तविक अर्थ मे दीक्षा न होगी और ऐसी दीक्षा का दक्षिणा से भी सीधा सम्बन्ध न होगा। दक्षिणा धन के रूप में मिल सकती है और मान के रूप मे भी। यह भी कह सकते हैं कि दक्षिणा सामान के रूप मे मिलेगी या मान के रूप मे परन्तु यदि ईमान सुरक्षित न रहा तो न सामान मिलेगा और न मान मिलेगा और फिर Novacancy की शिकायत भी ठीक न होगी। दक्षिणा के अभिलाषियो को शिक्षा और दीक्षा दोनो पर ध्यान रखना होगा। आज कल दीक्षान्त समारोहो की फस्ल है। अनेक विद्यालयो में दीक्षान्त समारोह हो रहे हैं और दीक्षित होने वाले दक्षिणा के लिए लालायित है। कभी कभी आशा पूरी नही होती। ऐसी परिस्थिति में शिक्षा से अरुचि और दीक्षा से भी अरुचि हो जाती है।

विश्वविद्यालय

प्रत्येक विद्यालय का प्रबन्ध की दृष्टि से किसी न किसी विश्वविद्यालय से सम्बन्ध है। विश्व शब्द पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है।' विश्व' सारे संसार को सामूहिक रूप से हमारे सम्मुख उपस्थित करता है। यदि देश विशेष, जाति विशेष, रग विशेष, लिग विशेष या सम्प्रदाय विशेष हमारे सामने होगे तो विश्व की भावना हमारे सम्मुख न होगी और जिस प्रकार की फूट या कलह आज कल फैली हुई है वह फैली रहेगी। विश्व की भावना लाना अत्यावश्यक है। जिस प्रकार ज्ञान की दृष्टि से ऋषि दयानन्द ने पहले नियम मे आदि मूल की भावना पर बल दिया था इसी प्रकार बाहर की व्यवस्था की दृष्टि से आर्य समाज के छठे नियम मे ससार के उपकार की भावना पर बल दिया। यदि ससार को नास्तिकता से बचाना है और बाहर के फैले हुए द्वेष की अग्नि को बुझाना है तो आर्य समाज के पहले और छठे नियम का प्रचार और विस्तार करना होगा।

अन्तिम निवेदन

हमें दीक्षा के महत्व को समझने के लिए वेद के एक मंत्र को अपने सामने रखना है जो इस प्रकार है :—

व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम् ।
दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते ॥
य० १६·३० ॥

विनय

प्यारे क्या तू सत्य को पाने के लिये व्याकुल हो गया है ? तो तू आ, इन चार सीढियो द्वारा तू अवश्य, सत्य, को पा जायगा। प्रारम्भ मे, यदि तुझे सचमुच सत्य से प्रेम है तो तुझे जहाँ कहीं जो कोई सच्चा नियम, सत्य नियम व्रत पता लगेगा तू उसे अवश्य पालन करने लग पड़ेगा। इस तरह व्रतो को जानने और यथाशक्ति पालन करने की तेरी प्रवृत्ति तुझे शीघ्र दीक्षा का पात्र बना देगी। दीक्षित हो जाने पर तू पहिली सीढ़ी चढ जावेगा। दीक्षित हो जाना मानों सत्य के साम्राज्य मे घुसने का प्रवेशपत्र (परवाना) पा लेना है और सत्य के दरबार मे पहुचने का अधिकारी बन जाना है। दीक्षित हो जाने की इस पहिली सीढी पर जब तू चढ जावेगा तो तू सत्य के वायुमण्डल मे रहने वाला हो जावेगा और तेरा सत्यप्रेमी साथियों का परिवार बन जावेगा। तब तेरे लिए अपने अन्य सत्पथिक भाइयो के अनुभव से लाभ उठाते हुए सत्य नियमो को जान लेना और उनका यथावत पालन करना बहुत सहज हो जायेगा। एव आगे-आगे सत्य के पालन मे अभ्यस्त होता हुआ तू तीसरी सीढी पर

भी तब पहुंच जावेगा जबकि तुझे यह स्वात्म-अनुभव हो जावेगा कि सत्य के पालन से तेरी वृद्धि (दक्षिणा) होती है, तेरी उन्नति होती है। तब तू स्वयमेव अनुभव करेगा कि सत्य के पालन से तू बलवान और उन्नत हो रहा है। कुछ आश्चर्य नहीं यदि उस समय बाहर का संसार भी तुझे प्रतिष्ठा देता हुआ और तेरे प्रति नाना विध दक्षिणायें लाता हुआ तेरी दक्षता, बलवत्ता और बढ़ती को स्वीकार करे। तुझे अपने आप तो अपनी वृद्धि अनुभूत होगी ही। यह अनुभव ही तुझमें सत्य के लिए श्रद्धा उत्पन्न कर देगा और तुझे श्रद्धा की तीसरी सीढ़ी पर पहुँचा देगा। तब तुझमे सत्य के लिये ऐसी अटल श्रद्धा हो जायेगी कि तू त्रिकाल में भी यह शक न करेगा कि कभी सत्य तेरी हानि भी कर सकता है। श्रद्धा पा जाने पर मनुष्य बड़ी तीव्र गति से आगे बढने लगता है अतः जब तू अपनी श्रद्धा में मग्न होकर सत्य के केवल सत्य के पा लेने के लिए व्याकुल हुआ-हुआ एकाग्र होकर अग्रसर हो रहा होगा तो उससे अगली उच्च सीढी पर पैर रखते ही तुझे 'सत्य' के दर्शन हो जायेंगे, सत्य का साक्षात्कार हो जावेगा, अपने प्यारे सत्य का साक्षात्कार हो जायेगा।

शब्दार्थ—

(व्रतेन) व्रत से, सत्य नियम के पालन से मनुष्य (दीक्षां) दीक्षा को प्रवेश का (आप्नोति) प्राप्त करता है। (दीक्षया) दीक्षा से (दक्षिणां) दक्षिणा को वृद्धि को, बढ़ती को (आप्नोति) प्राप्त करता है (दक्षिणा) दक्षिणा से (श्रद्धां) श्रद्धा को (आप्नोति) प्राप्त किया जाता है।

इस मन्त्र से यह विदित होता है कि दीक्षा से पहले व्रतो का पालन करना अनिवार्य है जब व्रत पालन करने से दीक्षा प्राप्त होती है तो ऐसी दीक्षा से दक्षिणा प्राप्त हो सकती है। जब दक्षिणा मिलने लगती है तो शिक्षा और दीक्षा में रूचि और श्रद्धा पैदा हो जाती है और श्रद्धा उत्पन्न हो जाने से सत्य की प्राप्ति में सुविधा हो जाती है। यदि सत्य की प्राप्ति लक्ष्य होगा तो शिक्षा की समाप्ति दीक्षा पर न होगी अपितु दीक्षा से यह सिद्ध होगा कि शेष जीवन भर भी सत्य की खोज में श्रद्धा पूर्वक लगे रहना है। विद्यार्थी जीवन कभी समाप्त नहीं होता न विद्या की प्राप्ति समाप्त होती है और न विद्यार्थी जीवन। सारा जीवन स्वाध्याय के लिए है। यदि स्वाध्याय न रहेगा तो मनुष्य को न अपने सम्बन्ध में अध्ययन करने का अवसर मिलेगा और न जगत् के विधाता के सम्बन्ध में विचार करने का अवसर मिलेगा। असली स्वाध्याय आत्मा और परमात्मा को जानने के लिए है। वेद स्वयं कहते है न तत्वेद किमृचा यदि ईश्वर को न माना तो वेद को पढकर भी क्या होगा।

● ● ●

'बहुत अधिक धूम्रपान से आंखें कमजोर हो जाती हैं। अत्यधिक धूम्रपान करने वालों को अपनी आंखों के आगे अंधेरा सा छाया दीखने लगता है। उन्हें लाल तथा हरे रंग की पहचान नहीं है। उन्हें लाल तथा हरे रग की पहचान नही रहती और उनकी दृष्टि मन्द पड़ जाती है।"

(विश्वविद्यालय नेत्र चिकित्सालय
डा० एच. एस. हैजस—क्रोन
वर्जीनिया मैडिकल मन्थली)

राष्ट्रपति की डायरी से—

स्वराज्य बनाम स्वतन्त्रता

[श्री बाल्मीकि चौधरी]

१८ फरवरी, १९५०

आज बाबा राघवदास और श्री लाला हरदेव सहाय मिलने आये। ये दोनों सात्विक पुरुष हैं, बाबा राघवदास उत्तर प्रदेश के गांधी माने जाते हैं। ये कर्मठ और त्यागी पुरुष हैं। ये देश के उन इने गिने पुरुषों में हैं जिसने जनता की सच्चाई और ईमानदारी के साथ निस्वार्थ सेवा की है। ये चरित्रवान पुरुष सादगी में जीवन व्यतीत करने वाले है। एक छोटी धोती और चादर ओढ़कर जिन्दगी काटते रहे हैं ये विनोबा जी के भूदान आन्दोलन के एक स्तम्भ है। गो सेवा का इन्होंने व्रत लिया है। लाला हरदेव सहाय जो हिसार के रहने वाले हैं गो-भक्त हैं, गाय के सम्बन्ध में शास्त्रीय छानबीन करने में लगे रहते हैं। गाय के सम्बन्ध मे इनका ज्ञान अपूर्व है। आप पशु-विज्ञान के प्रकाण्ड विद्वान हैं। सारी दुनिया की गाय सम्बन्धी जानकारी रखते हैं।

सन् १९४२ ई० की बात है। राजेन्द्र बाबू गोसेवा सम्मेलन में भाग लेने वर्धा जा रहे थे। लाला हरदेव सहाय भी उनके साथ ही गये थे। लाला हरदेव सहाय के पास विभिन्न देशों की सौ ऐसी पुस्तकें थी जिनमें गाय सम्बन्धी जानकारी की बातें ही भरी हुई थी। गाय के गुण लाभ उस पर किये गये खर्च का ब्योरा उनको याद रहता हैं। इनके जीवन का एक मात्र उद्देश्य यही हैं कि इस देश की गो जाति का सुधार हो और गौए किसी भी अवस्था में काटी न जायें। सब की रक्षा हो। गाय काटना जुर्म घोषित किया जाय। इसके लिए सरकार कानून बनायें और उस कानून को कठोरता के साथ अमल में लाने का प्रयत्न हो, यही कहने आये है। इसी उद्देश्य से इन्ही बातो को लेकर दोनों व्यक्ति मिलने आये थे। बडा लम्बा चौडा ब्योरा लेकर आये थे कि कहा कहां गाय कटती हैं कहाँ कहाँ दुधारु गाय तथा बछड़े कटते हैं कहाँ कितने पशुधन की बर्बादी हो रही हैं। इन सभी स्थानों पर सरकार जल्दी प्रतिबन्ध लगावे। गाधी जी गोवध के कितने बडे विरोधी थे इसके प्रमाण रूप में गाधी जी के इस विषय पर कई भाषण और लेख साथ ले आये थे। राजेन्द्र बाबू ने भी सरकार मे जाने से पहिले इन बातों पर जोर दिया था कि गोवध रुकना चाहिए और सभी तरह की गौओं को सरक्षण मिलना चाहिए। राष्ट्रपति ने कहा 'मैं आपके विचारों को अपने नोट के साथ प्रधान-मंत्री के पास भेज देता हूं। करना तो है उन्हीं लोगों को जब प्रधानमंत्री मिलेंगे तो कहूंगा भी।'

आज गाधी जी के नाम की बड़ी पूछ है उनकी बात को कौन पूछता है वह जो कहते थे उससे अधिक महत्व उसीको दिया जाता है कि वह किस किस व्यक्ति को चाहते थे। स्वराज्य का अर्थ उल्टा लग रहा है। यह गांधी जी के रास्ते भटकना हुआ। नेता लोग असमंजस मे हैं। अधिकतर वहीं लोग असमंजस में है जिन लोगों ने गांधी जी के साथ काम किया है और उनके साथ कार्य करने की वजह से ऊंचा से ऊंचा पद पाया है।

स्वराज्य अथवा स्वतन्त्रता का शाब्दिक अर्थ सुनिश्चित और सुव्यवस्थित राज्य प्रबन्ध अथवा स्वय अपने द्वारा बनाये गये संविधान के अनुसार चलना कहिए।

आज स्वतन्त्रता का भौतिक अर्थ लगाकर हम उसके अनुसार चल रहे है ; निरकुश मनमानी करने तथा अनुशासन हीनता तथा अराजकता को जन्म देने मे मदद पहुंचा रहे हैं। वह आचरण देश को भ्रष्टाचार की ओर ले जायेगा। अतः स्व का अर्थ शरीर मन और इन्द्रयो से सम्बन्धित न मानकर आत्मा को माने तो यह आत्मा की अधीनता ही परमात्मा की अधीनता होगी और आत्मा का शासन ही एक प्रकार से ईश्वरीय शासन विधान होगा जिसका पालन करना सच्ची नैतिकता है । हम स्वाधीनता का सही अर्थ लेकर चले तो सब ठीक चलेगा।

यहाँ गोवध रोकना धार्मिक पद्धति मे हस्तक्षेप मानते है और राजनीति को धर्म से अलग रखना चाहते हैं यह भारत भूमि के लिये सही नही है। अभी तक हमारी स्वाधीनता स्वतन्त्रता विदेशी राजनीति का जामा पहने हुए हैं इसलिए स्वतन्त्रता का आध्यात्मिक पहलू हमारी दृष्टि से ओझल रहा है। अगर नहीं तो हिन्दू कानून बिल इस रुप मे हमारे सामने उपस्थित नही होता। एक तरफ पशुधन को बचाने के लिए कोई बिल उपस्थित नहीं करते इसलिये कि हमारी जाति में विभेद होगा। पर एक ऐसा बिल उपस्थित करते हैं जिसको भारतीय समाज ज्यो का त्यों ग्रहण न कर पाया! उससे पति पत्नी के सम्बन्ध, पिता पुत्र के सम्बन्ध में दरारे पड गई। इस तरह की विकृत स्वतन्त्रता की लहर जन जन में दौड गई हैं।

स्वतन्त्रता नही हमें तो स्वाधीनता चाहिए। स्वतन्त्रता उच्छृंखलता की जननी है। जबकि स्वाधीनता आत्मसयम सिखलाती है और स्वार्थपूर्ण आजादी के मायाजाल को छिन्न भिन्न करती हैं।

इस स्वाधीनता मे अपने ही मन और इन्द्रियो का स्वरुप सर्वत्र दृष्टिगोचर होता है। यह सच्ची स्वाधीनता अथवा स्वतन्त्रता नही है। स्वधीनता प्रेमी तो सबको मिलाकर जीता है। सबको खिलाकर खाता है। स्वयं कष्ट झेलकर देशवासियों के लिये सुख सुविधाए जुटाता है। उसका जीवन जनहितार्थ होता है। वह सबके मगल में ही अपना मंगल मानता है। लोभ स्वार्थ उसे छू नही पाते। छल कपट उससे दूर रहते है और ईर्षा द्वेष उसके चित को उद्विग्न नही करते। सेवा और त्याग उसके चिर साथी बनते हैं सत्य और न्याय उसका पथ प्रदर्शन करते हैं, प्रेम और अहिंसा उसे बल और साहस प्रदान करते हैं। स्वाधीन देश के स्वतन्त्र वातावरण में शोषण उत्पीडन अन्याय और अत्याचार पनप नही सकता। स्वराज्य और स्वतन्त्रता के सचालक इन विचारो को प्रतिदिन सोते समय याद करे और इससे भिन्न अपने भाव को दूर करे। तभी गाधी जी का नाम लेना सार्थक होगा।

★ ★ ★

"यदि स्वामी दयानन्द हमें मार्ग न दिखाते तो अंग्रेजी शासन में उस समय सारा पजाब मुसलमान बन जाता और सारा बंगाल ईसाई हो जाता। स्वामी जी ने सारे विश्व को आर्य बनाने की प्रेरणा दी।

स्वामी दयानन्द ने यह सिद्ध कर दिया कि जगत् को सब संस्कृतियो मे सबसे अच्छी सस्कृति आर्यों की संस्कृति है। उन्होने देश के सामने एक आदर्श रखा।'

(श्रीयुत अनंतशयनम् शाहदरा में १९-२-६१ के दिए गए भाषण का अवतरण)

ऋषि दयानन्द के जीवन-चरित

[लेखक—श्री स्व० मामराजसिहजी खतौली, जि० मुजफ्फरनगर]

ऋषि दयानन्द के आज तक अनेक व्यक्तियो ने जीवन-चरित लिखे। कुछ ग्रन्थ ऐसे हैं जिनमे ऋषि के जीवन चरित के सम्बन्ध मे प्रसगात् विशेष उल्लेख किया गया है। मुझे ऋषि के चरित के सम्बन्ध में जितने भी ग्रन्थो का परिज्ञान है, उनकी एक तालिका नीचे उपस्थित करता हूँ। इससे आर्यसमाज के पुराने इतिहास की सुरक्षा मे अवश्य कुछ सहयोग मिलेगा। मेरे द्वारा निर्दिष्ट जीवन-चरितों के अतिरिक्त अन्य जीवन-चरितो का किन्ही महानुभावो को ज्ञान हो तो वे भी इस पत्रिका द्वारा सूचित करने की कृपा करे जिससे यह तालिका पूर्ण हो जाए।

सख्या	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	विशेष
१ (क)	कुछ दिनचर्या	ऋषिदयानन्द	आर्यभाषा	इसकी एक प्रति प० छगनलाल जी श्रीमाली, कामदार मसूदाराज (अजमेर) के पास थी।
(ख)	,,	,,	,,	इसकी एक प्रति मथुराप्रसाद मन्त्री आर्यसमाज अजमेर के पास थी।
(ग)	,,	,,	(अग्रेजी मे) अनूदित	इसे कर्नल आल्काट ने थियोसोफिस्ट बम्बई के नवम्बर दिसम्बर १८८० के अको मे छपवाया था।
(घ)	,,	,,	आर्यभाषा	पूना के २७/८/१८७८ के व्याख्यान मे कथित। यह उपदेश मजरी नामक पूना व्याख्यान सग्रह मे छपा है।
२	(जीवन चरितांश)	,,	,,	सत्यार्थ प्रकाश (सन् १८७५) की हस्तलिखित प्रति के अन्त मे। इसका कुछ अश ऋषि के पत्र और विज्ञापन मे छपा है। इसकी प्रतिलिपि मैंने १० १ ३३ के दिन मुरादाबाद मे की थी।
३	दयानन्द दिग्विजयाक	प० गोपालराव हरि फर्रुखाबाद	,,	सन् १८८१ मे आगरा के भार्गव प्रेस मे छपा था।

संख्या	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	विशेष
४ (क)	जीवन-चरित	श्री पं० लेखराम जी	उर्दू	इसे आर्य-प्रतिनिधि सभा पंजाब ने श्री मास्टर आत्माराम जी अमृतसरी से सम्पादित कराकर छपवाया था।
(ख)	"	"	"	श्री मास्टर लक्ष्मणजी द्वारा संशोधित तथा परिवर्धित संस्करण।
५	ऋषि जीवन-कथा	श्री मास्टर लक्ष्मण जी आर्य	आर्यभाषा	यह संक्षिप्त है।
६	आर्यधर्मेन्द्र-जीवन	श्री बा० रामविलास जी शारदा	"	इसका उपोद्घात श्री मा० आत्माराम जी अमृतसरी द्वारा लिखा हुआ है।
७	स्वरचित जीवन-चरित	ऋषि दयानन्द	"	श्री पं० भगवद्दत्त जी ने स० १ के क-घ तक की सामग्री के आधार पर इसे सम्पादित किया है।
८	जीवन-चरित	लाला लाजपतराय	उर्दू	
९	The Aryasamaj	"	अंग्रेजी	लन्दन मे सन् १९१४ में छपा।
१०	जीवन-चरित	सत्यव्रत शर्मा	आर्यभाषा	जामाता पं० भीमसेन इटावा।
११	"	मुंशी चिमनलाल	"	तिलहर शाहजहाँपुर।
१२	"	श्री देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय	"	संक्षिप्त। अनुवादक पं० घासीराम मेरठ। इसमे बम्बई में लिया गया ऋषि का असली चित्र छपा है।
१३	जीवन-चरित	" "	"	बृहद् दो भागों में। अनुवादक पं० घासीरामजी मेरठ। इसमे कई पत्रों की प्रतिकृति छपी है।
१४	श्रीमद्दयानन्दप्रकाश	स्वामी सत्यानन्दजी	आर्यभाषा	इसमें एक असली चित्र लगा है।
१५	दयानन्द-दिग्विजय	पं० अखिलानन्द शर्मा	संस्कृत	भाषानुवाद सहित।
१६	" "	पं० मेधाव्रत कविरत्न	"	" "

१. दयानन्द-दिग्विजय नाम शंकर-दिग्विजय आदि के अनुकरण पर हैं। ऋषि दयानन्द ऐसे नामों को शुभ नहीं समझते थे। सत्यार्थप्रकाश प्रथम संस्करण पृष्ठ ३९८ में लिखा है—'अर्थात् रामानुज-दिग्विजय, निम्बार्क-दिग्विजय, माध्वाचार्य-दिग्विजय, वल्लभ दिग्विजय, कबीर-दिग्विजय और नानक-दिग्विजय आदि अपनी-अपनी बड़ाई के वास्ते लोगों ने मिथ्या-मिथ्या जाल रच लिए हैं।" इत्यादि।

संख्या	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	विशेष
१७	जीवन-चरित	दयाराम तहसीलदार	आर्यभाषा	
१८	,, ,,	प्रो० इन्द्र विद्यावाचस्पति	,,	
१९	Life and Teachings of Swami Dayanand	बाबा छज्जूसिंह	अंग्रेजी	
२०	जीवन-चरित	मेहता अमीचन्द	उर्दू	
२१	,, ,,	मेहता राधाकृष्ण	,,	
२२	,, ,,	प्रो० किशोरीलालजी	आर्यभाषा	अलीगढ़ निवासी
२३	,, ,,	मास्टर दुर्गादास	,,	लाहौर निवासी।
२४	Luther of India	डा० गोकुलचन्द नारंग	अंग्रेजी	इसमें ऋषि का असली चित्र है।
२५	मुनिचरितामृत	दिलीपदत्त उपाध्याय	संस्कृत	
२६	जीवन-चरित	प्रो० ताराचन्द गाजरा	अंग्रेजी	
२७	Torch bearer	साधु टी. एल. वास्वानी	,,	
२८	From the Caves and jungles of India	मेडम ब्लेवेत्सकी	,,	
२९	Glimpses of Swami Dayanand	पं० चमूपति एम.ए.	,,	
३०	दिव्य दयानन्द	डा. पूर्णचन्द एडवोकेट	आर्यभाषा	
३१	आदर्श सुधारक दयानन्द	श्री देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय	बंगला	
३२	,, ,,	,, ,,	आर्यभाषा	अनुवादक पं० घासीराम एम.ए.।
३३	ऋषि दयानन्द जन्म स्थान निर्णय	आर्यसमाज बम्बई द्वारा		
३४	Dayanand Commemoration Volume	हरविलास शारदा	अंग्रेजी	इसमें असली चित्र है।
३५	महर्षि दयानन्द	प्रो० महेशप्रसाद आलिम फाजिल	आर्यभाषा	
३६	म.द. कब और कहां	प्रो० महेशप्रसाद आलिम फाजिल	आर्यभाषा	
३७	जीवन-चरित्र	पं० हरिश्चन्द्र विद्यालंकार	,,	
३८	,,	सार्वदेशिक सभा देहली द्वारा	,,	इसमें ऋषि और उनके भक्तों के चित्र लगे हैं।

संख्या	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	विशेष
३६	,, ,,	पं० केशोराम विष्णुराम पाण्ड्या	हस्तलिखित	ये ऋषिभक्त गुजराती थे। यह हस्तलिखित ग्रन्थ लखनऊ आर्यसमाज के पुस्तकालय में है। मैंने इसे १७-३-२७ को पढ़ा था। इसके एक श्लोक में ऋषि की जन्म-तिथि भाद्र शुक्ला ६ गुरुवार लिखी है।
४०	दयानन्द-स्मृति-ग्रन्थ अन्तर्गत	हरविलासजी शारदा	अंग्रेजी	
४१	संक्षिप्त ऋषिजीवन	योगी लक्ष्मणानन्दजी	आर्यभाषा	ध्यान-योग-प्रकाशान्तर्गत।
४२	ऋ. द. स. के स्थानान्तर में आगमन प्रतिगमन की तिथि और तारीख	युधिष्ठिर मीमांसक	,,	यह श्री प्रो० महेशप्रसाद मौलवी। आलिम फाजिल कृत सं० ३६ का परिवर्धित तथा संशोधित संस्करण है। इसमें तिथि के साथ तारीखें बढ़ा दी हैं।
४३	महर्षि दयानन्द का भ्रातृवंश और स्वसृवंश	,,	,,	

ऋषि दयानन्द के जीवन-चरित के सम्बन्ध में लिखे गये जितने ग्रन्थों का मुझे ज्ञान है, उनका मैंने अपनी बुद्धि के अनुसार निर्देश कर दिया है। इसमें जो भूल-चूक और कमी हो, उसे विज्ञ पाठक पूर्ण करने की कृपा करें।

● ● ●

नवीन शस्त्रों (अणुबम आदि) के भय से मुक्ति पाने का उपाय क्या है? विज्ञानवेत्ता और दार्शनिक को एक-दूसरे के निकट आना होगा। दार्शनिकों ने जहां भौतिक तत्वों का अस्तित्व स्वीकार किया वहां उनकी खोज का मुख्य विषय आत्मा और परमात्मा रहे। आज के युग के बड़े-बड़े विज्ञान-वेत्ता भी भौतिक तत्वों की खोज करते-करते ऐसी जगह पहुंच गये हैं जहां उनको भौतिक पदार्थों से भिन्न जगत् का अस्तित्व स्वीकार करना पड़ रहा है। अध्यात्म और भौतिकता का मेल सधे बिना मानव जाति का भविष्य सुरक्षित नहीं हो सकता। अध्यात्म नैतिक मूल्यों की शिक्षा देता है और विज्ञान की साधना ने उनको आज की दुनिया के लिए अनिवार्य बना दिया है। विज्ञान को मानव के कल्याण के लिए ही काम करना है। विज्ञान आवश्यक है पर उसे नैतिक परिधान धारण करना होगा। तभी वह मानव-जाति के लिए अभिशाप नहीं, वरदान बन सकेगा।

गुरुकुल कांगड़ी में अधिष्ठाताओं की नवीन व्यवस्था

(कर्नल सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार, उपकुलपति गुरुकुल कांगड़ी)

गुरुकुल कांगड़ी भारत की प्राचीन शिक्षा संस्था है जिस में एक विशेष विचार धारा को लेकर काम किया जा रहा है। यहाँ हर किसी प्रकार का व्यक्ति कार्य नहीं कर सकता। जिस व्यक्ति के हृदय में यह विचार प्रबल हो कि उसको नवयुवकों का चरित्र निर्माण करना है तो उसे यहाँ कार्य करने का अच्छा क्षेत्र है।

इस समय हम गुरुकुल में कुछ बातों की तरफ विशेष ध्यान देना चाहते हैं।

पहली बात यह है कि यहाँ के छोटे ब्रह्मचारियों की विशेष देख-रेख करने वाले ऐसे अधिष्ठाताओं का हम संग्रह करना चाहते हैं जो इस कार्य को आजीविका का साधन समझ कर न करें यह समझ कर करें कि उन्होंने बालकों के चरित्र का निर्माण करना है। सबसे बड़ी बात यह है कि वैसे तो हर व्यक्ति यह समझने लगता है कि उस में इस कार्य की योग्यता है, परन्तु हर व्यक्ति में ऐसी योग्यता नहीं होती। हमे अपने ध्येय में इसी कारण पूरी सफलता नहीं मिल रही क्योंकि हमारे पास इस प्रकार के कार्यकर्त्ताओं का अभाव है। अगर हम नवयुवकों का वास्तविक निर्माण करना चाहते हैं तो इस योग्यता के व्यक्तियों को आगे आकर अपनी सेवाएं गुरुकुल को अर्पित करनी चाहिये।

दूसरी बात यह है कि हम गुरुकुल में ऐसे शिक्षक रखना चाहते हैं जो ब्रह्मचारियों के साथ दिन-रात रहें। वे उनके जीवन का अंग बन जायें। ऐसे दो प्रकार के शिक्षकों की हमें आवश्यकता है। ऐसे शिक्षक जो छोटे ब्रह्मचारियों के साथ रहें और उनके साथ दिन-रात संस्कृत में संभाषण करें। इसके अतिरिक्त हमें ऐसे शिक्षक भी चाहिये जो छोटे ब्रह्मचारियों के साथ रह कर उनके साथ दिन-रात अंग्रेजी मे संभाषण करे।

हम अपने यहाँ शिक्षा की दिशा को एक नया मोड़ दे रहे हैं। गुरुकुल कांगड़ी के छोटे बच्चे संस्कृत भी मातृभाषा की तरह बोलें, अंग्रेजी भी मातृभाषा की तरह बोलें। दोनों भाषाओं में उनकी निर्बाध गति हो। ऐसी व्यवस्था हम लोग करना चाहते है। गुरुकुल में जब पूर्व तथा पश्चिम का समन्वय है, भारतीय विद्या तथा पाश्चात्य विद्या दोनो पढ़ाई जाती हैं तब इन दोनों भाषाओ पर शिक्षा प्रारम्भ करते समय ही हमारे बच्चो का पूर्ण अधिकार होना चाहिये।

गुरुकुल इस योजना को क्रियान्वित करना चाहता है। जो गुरुकुल प्रेमी इस योजना को सफल बनाने में हमारा हाथ बंटा सकते है वे अपनी सेवाएं गुरुकुल को दें तो गुरुकुल भी उनकी सेवा करने के लिये उद्यत है।

गुरुकुल के कार्यकर्त्ताओं का विचार है कि इस मार्ग पर चलकर हम ऐसे युवक तैयार कर सकते हैं जो चरित्र की दृष्टि से राष्ट्र के लिये वरदान सिद्ध होगे और विद्या की दृष्टि से भारत के गौरव को इस देश तथा परदेश मे बढ़ा सकेंगे। इस योजना को सफल बनाने के लिये उत्साही कार्यकर्त्ताओ के सहयोग की आवश्यकता है।

जो सज्जन हमारी इस योजना मे सहयोग देने के लिये उद्यत हों उन्हें हम गुरुकुल आने के लिये निमन्त्रित करते हैं। वे हमे सूचना देकर आवें और गुरुकुल मे निवास करके देखें। अपने विचारो से अवगत करायें जिससे हम और वे मिलकर इस निर्णय पर पहुंच सकें कि उनका सहयोग हमें और हमारा सहयोग उन्हे किस प्रकार मिल सकता है।

● ● ●

'महर्षि दयानन्द राष्ट्र के पितामह और महात्मा गाँधी राष्ट्रपिता हैं।'

(अनन्त शयनम्)

चतुर्वेद भाष्यकार पं० जयदेव शर्मा विद्यालंकार

(श्री गिरीशचन्द्र शिवहरे)

पंडित जयदेव शर्मा विद्यालंकार का जन्म १८८२ ई० में अम्बाला जिले के एक गांव में हुआ था। गुरुकुल कांगड़ी में शिक्षा प्राप्त करते हुए उन्होंने वेदों के अध्ययन पर विशेष बल दिया। विद्याध्ययन के पश्चात् आप बीकानेर (जयपुर), गुरुकुल कांगड़ी, गुरुकुल मुलतान और ज्ञान मंडल काशी में समय-समय पर कार्य करते रहे। अन्य कार्यों के साथ वेदों का अध्ययन और साहित्य सर्जन में उनकी विशेष रुचि रही। आपके जीवन का सबसे महत्वपूर्ण समय अजमेर में व्यतीत हुआ, जहां आपने एक तपस्वी साधक की भांति बैठकर चारों वेदों के भाष्यकार होने का अभूतपूर्व यश प्राप्त किया।

वेद भाष्य की सजीव प्रेरणा आपको वस्तुतः अपने गुरु श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी से प्राप्त हुई थी, जिन्हें पंडित जी ने मीमांसा का गूढ़ अध्ययन कर वेद भाष्य करने का गुरुतर वचन दिया था। सौभाग्य से आपका सम्पर्क आर्य साहित्य मंडल लि० अजमेर के संस्थापक श्री मथुराप्रसाद शिवहरे से हुआ, जिन्होंने चौदह खंडों में वेदों का भाष्य प्रकाशित करने और परिवार के व्यय वहन करने का उत्तरदायित्व लिया। श्री शिवहरे का सहयोग वास्तव में अत्यन्त सराहनीय है।

वेद भाष्य की महत्वपूर्ण साधना में पंडित जी को जितना श्रम तथा कठिनाईयों का सामना करना पड़ा, उसका विस्तृत वर्णन सम्भव नहीं। आपका कक्ष उन दिनों विभिन्न पुस्तकों से भरा रहता था। सायण का वेद भाष्य निरुक्त और निघन्टु, ग्रिफिथ तथा कोष आदि की अनेक अंग्रेजी पुस्तकों का गम्भीर अध्ययन कर पंडित जी ने अपने भाष्य को बहुत बड़ी सीमा तक प्रामाणिक, सुबोध तथा सरल बनाने का सफल प्रयत्न किया। इस सतत् साधना में आपको अपनी सरल तथा शान्तिप्रिय पत्नी से सेवा का जो सहयोग मिला वह भी उपेक्षा की वस्तु नहीं। परिवार तथा बाह्य जीवन की अनेक आर्थिक तथा प्रक्रियात्मक समस्याओं को सरल ढंग से सुलझाकर आपकी पत्नी ने सतत् साधना में किसी भी प्रकार का विघ्न न आने दिया। अनेक प्रकार की अध्ययन सम्बन्धी बाधाओं के होते हुए भी ऋषि दयानन्द का मार्ग प्रदर्शन पाकर वे अपने काम में रत रहे। एक के बाद एक वेद भाष्य की जिल्द निकलती गई और आर्य विद्वानों ने उसका सहर्ष स्वागत किया। प्रकाशन के कार्य में श्री शिवहरे जी ने अभिरुचि तथा तत्परता प्रदर्शित कर स्वयं की निष्ठा तथा स्नेह का प्रमाण दिया। परमेश्वर के अनुग्रह से चारों वेदों का सरल हिन्दी में भाष्य सुलभ हो सका जिससे लेखक को हार्दिक सन्तोष, आर्य जनता तथा विश्व के सुयोग्य व्यक्तियों को वेद अध्ययन का सरल व सुबोध अवसर मिल सका।

पंडित जी के शब्दों में वेद भाष्य का दृष्टिकोण था 'भाष्य करने के लिए स्वतन्त्र विचार हों, यज्ञादि किसी विचारधारा से बंधकर नहीं।' वेद भाष्य के अतिरिक्त वे ब्राह्मण ग्रन्थ, श्रौत सूत्र और गृह्यसूत्र तथा उपनिषद् आदि का भाष्य करने के लिए कृत संकल्प थे। किन्तु दुर्भाग्यवश उन्हें उपयुक्त अवसर न मिल सका। वेद भाष्य के अतिरिक्त उन्होंने पुराणमत पर्यालोचन, धनुर्वेद का

इतिहास, क्या वेद में इतिहास है ? तथा चरक का अनुवाद आदि अन्य अनेक ग्रन्थ लिखे। क्या वेद में इतिहास है ? पुस्तक लिखने की सजीव प्रेरणा आपको अपने परम मित्र तथा सहृदय सहयोगी श्री दीवान रामनाथ कश्यप से मिली थी। वेद भाष्य के प्रसंग में यह स्मरणीय है कि सामवेद भाष्य के प्रथम ग्राहक डा० राजेन्द्रप्रसाद थे। आर्य साहित्य मंडल लि० अजमेर तथा लेखक के लिये क्या यह गौरव की बात नहीं कि वेद भाष्य का 'सेट' श्री बुलगेनिन-खुशचेव आगमन पर उन्हें भेंट किया गया।

आर्य साहित्य मंडल अजमेर की सेवाओं से मुक्त होकर पं० जयदेव जी ने वनस्थली विद्यापीठ (जयपुर) में संस्कृत अध्यापक की हैसियत से कार्य आरम्भ किया। अध्यापन के साथ ही साथ वैदिक-साहित्य अध्ययन तथा सृजन से आप कभी विमुख नहीं हुये। वनस्थली विद्यापीठ में पंडित जी का सरल अध्यवसाय पूर्ण पवित्र जीवन सदैव गौरव तथा प्रेरणा का स्रोत रहा। १५ वर्ष की अवधि में विद्यापीठ के अध्यापकों तथा अन्य स्वजनोंने जो स्नेह निष्ठा तथा श्रद्धा से पंडित जी को सदा 'गुरु जी' का उच्च सम्मान तथा भ्रातृभाव प्रदान किया, उसकी वे मुक्त कंठ से सदा प्रशंसा तथा आभार प्रगट करते रहे। उन्होंने भी 'वनस्थली विद्यापीठ' को सदा परिवार के ही व्यापकरूप में देखा। लगभग ६ वर्ष पूर्व गुरुकुल कांगड़ी ने पंडित जी को 'विद्यामार्तण्ड' की उपाधि से विभूषित किया। आपने कई वर्ष तक आर्यमित्र व आर्यमार्तण्ड का जब वह आर्य साहित्य मंडल अजमेर द्वारा प्रकाशित किया जाता था सम्पादन बड़ी लगन व मेहनत से किया। आपकी हमेशा यह इच्छा रही कि आर्य जगत् का एक उच्च कोटि का दैनिक या साप्ताहिक पत्र निकाला जाय जिसमें वह निस्वार्थ सेवा दे सकें।

किन्तु अत्यन्त खेद का विषय है कि २१ जनवरी ६१ को हृदय की गति रुक जाने से यह मनस्वी विद्वान् अब हमारे मध्य में नहीं। दुर्भाग्यवश ऋषि दयानन्द की निर्वाण भूमि अजमेर में वेद मन्दिर स्थापित करने, अन्य अनेक पुस्तकें लिखने व अन्य अनेक महत्त्वाकांक्षाएं वे पूरी न कर सके। आपका स्वर्गवास ७१ वें वर्ष में आदर्श नगर अजमेर में हुआ। आप अपने परिवार में पत्नी, दो पुत्र तथा दो पुत्रियां छोड़ गये हैं।

● ● ●

मेरे जीवन का उद्देश्य मानव जाति की उन्नति और भलाई को आगे बढ़ाना है और सब मनुष्यों को सत्य का निर्णय करने में सहायता देना है ताकि वे सत्य को स्वीकार तथा असत्य को अस्वीकार कर सकें क्योंकि इसके अतिरिक्त मानव जाति के उत्थान का अन्य कोइ मार्ग नहीं है। (स्वामी दयानन्द)

महर्षि जीवन

शंका समाधान

(१)

रक्षा बन्धन

बदायूं मे रक्षा बन्धन के दिन बहुत से तरुण और वृद्ध राखी बाँधने के लिए स्वामी जी के निकट गए। महाराज ने मुस्कराकर कहा 'आप लोग अपनी देश-रीति तक भूल गए हो। पूर्व काल मे बूढ़े राखी बाँधे नहीं फिरते थे। उस समय इस पर्व के दिन सब विद्यार्थियों के हाथ में राजा की ओर से राखी बाँधी जाती थी। उससे यह सूचित किया जाता था कि इनकी रक्षा करना राजा-प्रजा दोनों का कर्त्तव्य है।

(२)

भूत प्रेत

बदायूं में एक वैद्य ने अपने एक साथी को स्वामी जी के सामने करके कहा 'महाराज' इसमें चिरकाल से भूतावेश है। 'स्वामी जी ने हँसकर कहा' आप वैद्य होकर भी ऐसे भ्रम-जाल में पड़े हैं। भूत तो बीते हुए समय का नाम है। यह कोई योनि विशेष नहीं है। आयुर्वेद मे ऐसे अनेक रोग वर्णन किए हैं जिनमें रोगी की उन्मत्त दशा हो जाती है।' स्वामी जी ने उसे दवा दी और वह ठीक हो गया।

(३)

जीव की उत्पत्ति नही है

बरेली में पुनर्जन्म पर व्याख्यान प्रारम्भ करते हुए स्वामी जी ने कहा 'जीव और जीव के स्वाभाविक गुण कर्म और स्वभाव अनादि है। न्यायादि परमेश्वर के गुण भी अनादि हैं। जो मनुष्य जीव के गुणों की उत्पत्ति मानता है उसे उनका नाश भी मानना पड़ेगा। कारण के बिना कार्य का होना असम्भव है, इस लिए उसे सिद्ध करना होगा कि सत्य का काम क्या है? जीव के शुभाशुभ कर्म प्रवाह से अनादि हैं। उनका यथावत फल देना ईश्वर के आधीन है। स्थूल और कारण शरीर के बिना जीव सुख-दुख का भोग नहीं कर सकता इस लिए उसका बार-बार देह धारण करना आवश्यक है। प्रत्येक शरीर में क्रियावान होने के कारण जीव नए-नए क्रियमाण सचित और प्रारब्ध कर्म उत्पन्न करता रहता है। दिन और तिथि के बार बार आने से भी प्रत्यक्ष सिद्ध है कि सृष्टि में फिर फिर आने का नियम विद्यमान है।

इस पर पादरी स्काट महाशय ने कहा 'पुनर्जन्म का सिद्धान्त है तो पुरातन परन्तु अब पढ़ी-लिखी जातियाँ इसे छोड़ती चली जाती हैं। यह विचार अब मिट रहा

है। मैं स्वामी जी से पूछता हूं कि क्या ईश्वरीय आत्मा के बिना अन्य आत्माएें भी अनादि हैं ? वे आत्माएें कभी जन्म के चक्र से भी पार होंगी ? क्या पुनर्जन्म दंड भोगने के लिए ही है ? परमेश्वर सदा सगुण ही रहता है अथवा कभी निर्गुण भी होता है ? पुनर्जन्म लेना उसी के नियमों पर निर्भर करता है अथवा किसी अन्य नियम पर ?

स्वामी जी ने उत्तर दिया जीव ईश्वर और प्रकृति ये तीन अनादि पदार्थ हैं। जीव पुनर्जन्म से कभी निवृत्त न होंगे। जन्म का होना सुख-दुख दोनों के लिए है। ईश्वर सदा ही सगुण और निर्गुण है। कोई जीव जैसा पुण्य-पाप करता है उसे वैसा ही अपने अटल न्याय से फल प्रदान करता है। पादरी महोदय ने कहा है कि "इस पुरानी शिक्षा को सुधरी हुई जातियां छोड़ती जाती है।' मैं पूछता हूं कि क्या नवीन शिक्षा सर्वांश में सत्य है ? क्या पुरानी शिक्षा मानने के योग्य नहीं है तो बाईबिल की शिक्षा भी तो आज की अपेक्षा पुरानी है तब तो यह भी आपको छोड़नी पड़ेगी।'

(६)

परमेश्वर देह धारण नहीं करता।

पादरी स्काट ने कहा—परमेश्वर देह धारण करता है या नहीं ? मनुष्य को चाहिए इस विषय पर सोच विचार कर बात-चीत करे। अहंकार से काम न ले। हम उसके ज्ञान और सामर्थ्य को कुछ भी नहीं जानते। यदि जानते भी हैं तो बहुत कम जानते हैं। क्या ईश्वर देह धारण कर सकता है ? क्या कभी ऐसा हुआ भी है ? मनुष्य के और परमात्मा के आत्मा में बहुत से गुणों में समानता है। उनके आदि गुण आपस में मिलते हैं। इस अवस्था में जब हम देह धारण करते है तो ईश्वर क्यों न देह धारण करेगा ?'

इस पर स्वामी जी ने कहा 'पादरी महाशय ने जब यह कह दिया कि हम ईश्वर के विषय में कुछ नहीं जानते और यदि जानते भी हैं तो अति स्वल्प तो फिर पादरी महाशय को कुछ कहने का अधिकार नहीं रहा। पादरी महोदय ने कहा कि ईश्वर देह धारण कर सकता है मैं उनसे पूछता हूँ कि उसे ऐसा करने की क्या आवश्यकता है ? दूसरे उसकी इच्छा का कोई नियम है या नहीं ? या तीसरे वह निराकार है या साकार ? चौथे वह सर्व व्यापी है या एक देशी ? जीव और ईश्वर के दयादि गुण क्या पूर्णता से मिलते हैं ? यदि गुणों से दोनों बराबर हैं तो दोनों परमेश्वर सिद्ध हुए। ईश्वर जब देह धारण करता है तो वह अखिल स्वरूप से देह में आता है अथवा अंश-अंश होकर ? यदि अंश का आना मानते हो तो परमात्मा नाशवान सिद्ध हो जायगा। यदि यह मानो कि परमात्मा अपने सकल स्वरूप से शरीर में प्रवेश करता है तो वह शरीर से छोटा सिद्ध हुआ। अल्प, महान का ईश्वर नहीं हो सकता। देह धारी हो जाने से ईश्वर और जीव दोनों समान हो जाते हैं ? दोनों में कुछ भी भिन्न भेद न रहने से उनमें से एक को ईश्वर मान लेना सर्वथा अयुक्त है।

यदि ईश्वर एक देशी है तो वह एक स्थान में रहता है अथवा सर्वत्र घूमता रहता है ? यदि उसे एक स्थान में स्थित माना जाय तो उसे सर्वत्र का ज्ञान नहीं हो सकता। उसका घूमते रहना मानना भी दोष युक्त है। फिर उसका अटक जाना और दूसरे पदार्थों से टकरा कर आघात प्रत्याघात का सहन करना भी मानना पड़ेगा।

परमात्मा सृष्टि की रचना निराकार स्वरूप से करता है अथवा साकार से ? निराकार स्वरूप से रचना मानना तो ठीक है परन्तु यदि साकार स्वरूप से सृष्टि की रचना मानते हैं तो यह युक्ति संगत नहीं है। साकार ईश्वर से सृष्टि का रचा जाना सर्वथा असम्भव है। जब त्रसरेणु ही साकार की पकड़ में नहीं आते तो वह साकार ईश्वर सृष्टि के कारण रूप परमाणुओं को कैसे वशीभूत कर सकेगा ?

(५)
ईश्वर पाप क्षमा नहीं करता

अगले दिन पादरी महाशय ने कहा "मेरी यह प्रतिज्ञा नहीं है कि ईश्वर दण्ड नहीं देता। वह दण्ड तो अवश्य देता है परन्तु देता है समयानुसार और उचित रीति से वह मनुष्य की भलाई के लिए पाप क्षमा भी कर देता है। जब वह पूर्ण है सगुण है, और चेतन है तो हमें समझना चाहिए कि वह हमें देखता है और हमारी चिन्ता भी करता है। ईश्वर की और हमारी समानता भी अवश्य है। बहुधा जीव और ईश्वर के गुण मिलते हैं। इससे हमे समझना चाहिये कि ईश्वर के साथ भी हमारा वैसा ही सम्बन्ध है जैसा हमारे सम्बन्धियों के साथ। वेद आदि सभी धार्मिक ग्रन्थ ईश्वर के साथ हमारा सम्बन्ध राजा-प्रजा और पिता-पुत्र का वर्णन करते हैं। उनके इस कथन में अवश्यमेव यह बात समाई हुई है कि परमात्मा भी राजा और माता-पिता के तुल्य ही बर्ताव करता है। यद्यपि राजा और माता-पिता दण्ड देते हैं परन्तु उनका इसमें यही आशय होता है कि ये लोग सुधर जायें। यदि वे समझें कि सुधार क्षमा से हो सकता है तो वे क्षमा भी कर देते हैं।

स्वामी जी ने पादरी महाशय के पक्ष का प्रतिवाद करते हुए कहा—'इनका यह कथन कि परमेश्वर क्षमा भी कर देते हैं और दण्ड भी अवश्य देता है परस्पर विरुद्ध है। क्या वह आधे कर्मों के लिए दण्ड देता और आधे कर्म क्षमा कर देता है अथवा कुछ न्यूनाधिक। जैसे हम में ज्ञान और न्याय आदि गुण हैं क्या वैसे ही ईश्वर में है?

मैं भी जानता हूँ कि ईश्वर के साथ हमारा राजा और पिता के समान सम्बन्ध है परन्तु वह अन्याय के लिए नहीं है। ईश्वर में अन्याय नहीं हैं इसलिए वेदादि शास्त्रों मे पाप का क्षमा करना नहीं कहा। ईश्वर पाप क्षमा कर देता है यह मानने से वह पाप का बढ़ाने वाला सिद्ध हो जाता है। क्षमा की आड़ में पापीजन पापकर्म करने में उत्साहित हो जाते हैं। परमात्मा सर्वज्ञ है इसी लिए उसके कर्मों मे भूल और भ्रान्ति नहीं होती। वह अपने स्वभाव से उल्टा कार्य भी नहीं करता। न्याय उसका स्वाभाविक गुण है। इससे उल्टा कर्म क्षमा कर देना-भला वह कब करने लगा? परमात्मा दयालु ठीक है परन्तु उसका न्याय और दया एक ही प्रयोजन को सिद्ध करते हैं। यदि एक डाकू को क्षमा कर दिया जाय तो यह कर्म दया में न गिना जायेगा। ईश्वर की दया का जो अर्थ पादरी महाशय ने समझा है वह यथार्थ नहीं।

● ● ●

आत्म हत्याओं के आँकड़े

उत्तर प्रदेश में आत्महत्याओं की संख्या बढ़ती जा रही है। अधिकारियों द्वारा संकलित आँकड़ों के अनुसार १९५९-६० में २३६५ व्यक्तियों ने आत्महत्या की जिनमें १०८० पुरुष और १२८५ महिलायें थीं। १९५८-५९ में आत्महत्याओं की संख्या १८०० से कुछ अधिक थी जिनमें महिलाओं की संख्या अधिक थी।

सर्वाधिक आत्म-हत्यायें बीमारी तथा कौटुम्बिक चिन्ताओं के कारण हुईं। असाध्य बीमारियों से ऊब कर ६३१ व्यक्तियों ने आत्म हत्या की। कौटुम्बिक चिन्ताओं विशेषकर सामाजिक कलंक वश ८६५ व्यक्तियों ने प्राण दिए जिनमें पुरुष केवल २८० किन्तु स्त्रियां ५८५ थीं। वासना की वेदि पर १०५ व्यक्तियों ने बलि दी।

महिला जगत

प्राचीन भारत और तलाक प्रथा

—श्री इन्द्र एम० ए०

हिन्दू धर्म में विवाह एक धार्मिक सम्बन्ध है। अत: प्राचीन काल से ही यह अटूट माना जाता रहा है। पत्नी पर विवाह का प्रभाव यह पड़ना है कि यह मातृ कुल को छोड़कर शरीर और आत्मा से पतिकुल की हो जाती है। उसका गोत्र भी पति का गोत्र हो जाता और शरीर और आत्मा दोनो के साथ पति के साथ बंध जाती है। (आपस्तम्ब २) पति के जीवन-काल में वह अपने पति में आत्म-सात किए होती है इसीलिए वह अर्द्धांगिनी कही जाती है और पति के क्रिया-कलाप में समान रूप से भागीदार होती है। इतना ही नहीं पति से पृथक् उसे न यज्ञ करने की अनुमति थी और न किसी धार्मिक अनुष्ठान के करने की। पति की मृत्यु के बाद विधवा के रूप में भी पत्नी पति के अर्द्धभाग के रूप में स्थिर रहती थी। अत: उसे पुनर्विवाह की छूट न थी। पति के जीवन-काल में भी किसी भी आधार पर विवाह-विच्छेद न हो पाता था। दोनों में से किसी के व्यभिचारी व दुराचारी और पतित होने पर भी हिन्दू विवाह भंग न हो पाता था।

हमें यह देखना है कि प्राचीन भारत में तलाक की प्रथा विहित थी या नहीं ?

ऋग्वेद और अथर्ववेद के प्रासंगिक मंत्रों के अध्ययन (ऋ०—मंडल १० मंत्र ८५, अथर्व—मंडल १४ मंत्र १) से यह स्पष्ट है कि वेदकालीन आर्यों का विवाह विषयक आदर्श बहुत ऊँचा था। वे लोग विवाह को सौदे की वस्तु न मानते थे। वे इसे अटूट बन्धन समझते थे। अत: विवाह का विच्छेद किसी भी अवस्था में न हो सकता था यह विधान किया गया था कि पति और पत्नी जीवन पर्यन्त एक साथ रहें और कभी एक दूसरे से अलग न होवें। संहिता साहित्य में एक भी ऐसा मंत्र नहीं है जिससे किसी भी आधार पर विवाह-बन्धन के टूटने का आभास मिलता हो। विपरीत इसके अनेक स्थलों पर ऐसे मंत्र मिलते हैं जिनमें स्पष्टतया कहा गया है कि विवाह का पवित्र बन्धन कभी नहीं टूट सकता। नीचे कुछ मन्त्र के अर्थ उद्धृत किए जाते हैं जिनमें विवाह की पवित्रता और अटूटता का प्रबल शब्दों में मंडन किया गया है :—

"हे पति पत्नी ! तुम एक दूसरे से वियुक्त न होवो। तुम पुत्रों और पौत्रों के साथ पूर्णायु को प्राप्त हो। तुम अपने घरों में आनन्दपूर्वक रहो।

(ऋग् मंडल १०, सूक्त ८५, मन्त्र ४२)

"मैं इसको पितृ कुल से अलग करता हूँ पति कुल से अलग नहीं करता हूँ अपितु भली प्रकार सम्बद्ध करता हूँ। हे सेचक इन्द्र ! जिस प्रकार यह सौभाग्यवती और सुपुत्रा हो वैसा अनुग्रह कीजिये।

(अथर्व-कांड १४ मन्त्र १८)

'सविता देवता के समान मैं तेरे हाथ को पकड़ता हूँ। राजा सोम तुझे सुन्दर प्रजावाली जात वेदा अग्नि

तुझे सौभाग्यवती और पति के साथ बुढ़ापे तक रहने वाली करें।"

(अथर्व-कांड १४, मन्त्र ४६)

इन तथा इसी प्रकार के अनेक वेद मन्त्रों से जिनमें स्त्री-पुरुषों को प्रेरणा की गई है कि वे विवाह के उपरान्त सदैव एक दूसरे के प्रति निष्ठावान बने रहें यह स्पष्ट है कि वैदिक काल के लोग विवाह-विच्छेद की बात को कल्पना में भी न लाते थे।

सूत्र साहित्य भी तलाक जैसी प्रथा से प्रायः अनभिज्ञ देख पड़ता है। आपस्तम्ब ने जिस काल में अपने सूत्रों की रचना की थी उस काल में तो निश्चय ही इस प्रथा का अस्तित्व न था। उन्होंने अपने एक सूत्र में स्पष्ट शब्दों में कहा है कि जिस दिन स्त्री पुरुष विवाह बन्धन में बंधते हैं उसी दिन से वे दोनों समस्त लौकिक और पारलौकिक कार्यों के संपादन में भी एक दूसरे के साथ ग्रथित हो जाते हैं और इसके उपरान्त विवाह विच्छेद की कल्पना भी नहीं की जा सकती।

(आपस्तम्ब—'जायापत्यो नाविभागो अस्ति')

विवाह बन्धन को बच्चों का खेल समझने वालों के सम्बन्ध में उन्होंने बड़ी कठोर बात कही है। वह कहते हैं कि 'यदि पति या पत्नी विवाह के व्रत को तोड़ेंगे तो निश्चय ही वे नीच गति को प्राप्त होंगे'। आपस्तम्ब ११-१०-२६। पत्नी का परित्याग करने वाले के लिए बड़े कठोर प्रायश्चित का विधान किया गया है। उसे गधे की खाल ओढ़कर ७ घरों से ६ महीने तक भीख माँगकर पेट भरना होगा और भीख माँगते हुए यह कहना होगा 'मुझ पत्नी का परित्याग करने वाले को भिक्षा दो।'

(आपस्तम्ब १, २, १८—१४)

यदि पत्नी अपने पति को छोड़ेगी तो उसे भी १२ रात्रियों पर्यन्त 'क्रिच्छ' उपवास रखना होगा।

(आपस्तम्ब १-२-२८-२०)

ब्राह्मण ग्रन्थों में एक कथा आती है। एक बार दो अश्विनीकुमार अपने मरीजों की खोज में घूम रहे थे। मार्ग में उन्हें च्यवन ऋषि की सुन्दर पत्नी सुकन्या मिली। उन्होंने पूछा कि 'तुमने कुरूप एवं वृद्ध पुरुष से विवाह क्यों कर लिया।' यह प्रश्न करके उन्होंने कहा 'तुम उसको छोड़कर हमारे साथ चलो।' सुकन्या ने तत्काल उन दोनों की माँग को ठुकराकर कहा "मेरे पिता ने जिसके साथ मेरा विवाह कर दिया है उसको मैं नहीं छोड़ सकती क्योंकि यह स्त्री का परम्परागत धर्म है।"

(शतपथ ४—१—५)

निस्सन्देह सूत्र काल पूर्ववर्ती वैदिक काल के सदृश विवाह-विच्छेद जैसी प्रथाओं से शून्य था। ये वे काल थे जिनमें पति और पत्नी के सम्बन्ध अत्यन्त शुद्ध और पवित्र थे।

वे कौन से कारण थे जिन्होंने विवाह विषयक उच्च एवं पवित्र भावनाओं को जन्म दिया था? और जिन्होंने प्राचीन भारत में तलाक को अकल्पित बात का रूप दिया हुआ था। हमारा विश्वास है कि उन तत्वों का जिनके कारण विवाह-प्रथा दूषित हुई और जो आधुनिक जगत् में दृष्टिगोचर हो रहे हैं सर्वथा अभाव था। सच्चाई यह है कि हमारे प्राचीन आदर्श उन आदर्शों से सर्वथा भिन्न और कुछ अवस्थाओं में उनसे नितान्त विरोधी थे जो आजकल पाश्चात्य समाज और पाश्चात्यता के रंग में रंगे हुए लोगों में समादृत हो रहे हैं।

आज सभ्य कहे जाने वाले देशों में विवाह का जो उद्देश्य माना जाता है हमारे देश में वह उद्देश्य सर्वथा भिन्न था। हमारे यहाँ विवाह के साथ एक धार्मिक आवश्यकता की पूर्ति जुड़ी हुई थी। अपने विकास के लिए पुरुष और स्त्री को जीवन संगी बनाना पड़ता था जिसके बिना धार्मिक अनुष्ठान अधूरे रहते थे। जब तक पुरुष स्त्री के साथ ग्रथित न हो जाता था तब तक उसकी आत्मा अविकसित रहती थी।

मनु के अनुसार स्त्री, मनुष्य स्वयं और सन्तान वे तीनों मिलकर पुरुष कहलाता है। (मनु० ६, ४५) इसके आगे मनु महाराज कहते हैं—"विवाह बन्धन में बंधे हुए स्त्री और पुरुष को सदा ऐसा यत्न करना चाहिए जिससे

वे कभी एक दूसरे से वियुक्त न हों और उनकी पवित्रता लांछित न हो। (मनु० ९, १०२) मनु महाराज पुनः कहते हैं—"भार्या और पति की मरण पर्यन्त आपस में निष्ठा बनी रहे। यही स्त्री पुरुषों का संक्षेप मे धर्म जानना चाहिए।" (मनु, ९, १०१)

आधुनिक जगत की विचार धारा के नितान्त विरुद्ध मनु महाराज का कथन है 'जो स्त्री अपने पति की अवज्ञा करे और उससे घृणा करे उसका भी सदैव के लिए परित्याग नहीं हो सकता (मनु ९, ७८) मनु जी यह कहकर कि 'विक्रय वा त्याग से स्त्री पति से नहीं छूट सकती ऐसा पूर्व से प्रजापति का रचा हुआ नित्य धर्म हम मानते हैं।" (अ० ९—४६) विवाह की अटूटता की घोषणा करते हैं।

इस प्रसंग में मनु और याज्ञवल्क्य में कोई विशेष भेद नहीं है। दोनों ही तलाक की भावना को पसन्द नहीं करते, परन्तु दोनों ही पृथक् कर देने की प्रथा को मान्य समझते हैं। याज्ञवल्क्य कहते हैं कि "यदि स्त्री सुरापान करती हो, रोगिनी हो, छल कपट करती हो, फिजूल खर्ची हो, दुर्व्यवहार करती हो और ईर्ष्यालु हो तो उसे अपने से पृथक् कर देना चाहिए। (याज्ञ १—७३) जो पत्नी निरन्तर लड़कियों को जन्म देती हो वह भी पृथक् की जा सकती है।" मिताक्षरा का टीकाकार उपर्युक्त संदर्भ की व्याख्या करता हुआ इस प्रथा का स्पष्टीकरण इस प्रकार करता है :—

'अधिवेदना (पृथक्करण) का अर्थ है दूसरी पत्नी को घर में ले आना। परन्तु पृथक् की हुई पत्नी के साथ पूर्ववत् सम्मान पूर्ण उदार व्यवहार होना चाहिए अन्यथा पुरुष महापाप का भागी और निष्ठा भंग का अपराधी होता है। सर्व श्रेष्ठ और महा भाग्यशाली घर वह होता है जिसमे पति और पत्नी शान्ति और प्रेम से रहते हैं।'

मनु महाराज कहते हैं कि 'विधि पूर्वक ग्रहण की हुई भी निन्दित कन्या का परित्याग कर देना चाहिए जो दुष्टा हो या रोगिणी हो और छल कपट से दी गई हो। (अ० ९-७२) जो दोष वाली कन्या का बिना दोष प्रकट किए विवाह करे उस कन्या के देने वाले दुष्ट के कन्यादान को निष्फल कर देवें अर्थात् उसका त्याग करदे। (अ० ९-७३)

अग्नि को साक्षी करके विवाह कर लेने के पश्चात् पत्नी का परित्याग कर देना और उसे दुःख एवं अपमान के बीहड़ वन में छोड़ देना घोर अन्याय है। अतः विवाह का उपभोग कर लेने पर तलाक अचिन्त्य हो जाता है।

पति के निधन के पश्चात् भी पत्नी पति की आत्मा के साथ ग्रथित हुई मानी जाती है अतः पत्नी के लिए यह आवश्यक है कि वह अपने वैधव्य जीवन को पवित्रता पूर्वक बिताए। विधवाओं को पुनर्विवाह की अनुमति न देना यद्यपि कठोर नियम था तथापि विवाह की मौलिक भावना का यही स्वाभाविक परिणाम हो सकता था। विवाह-बन्धन में दो आत्माओं के बंध जाने पर इस लोक में तथा परलोक में उनका पृथक्करण सम्भव न हो सकता था। विवाह की पवित्र ग्रन्थि नियति के द्वारा भी छिन्नभिन्न न हो सकती थी जो अधिक से अधिक यही कर सकती थी कि पति पत्नी को शरीरों से पृथक् कर दे परन्तु दोनों की आत्माओं को वह भी पृथक् करने में असमर्थ थी।

प्राचीन काल के समाज में विवाह सम्बन्ध को एक और बात ने भी अटूट बनाया था और वह थी व्यभिचार के पाप के प्रति अधिक घृणा। दुराचारिणी स्त्रियों को समाज कठोर दण्ड देता था। इसी प्रकार पत्नीव्रत को भंग करने वाला पति दण्डित होता था। कभी-कभी उसके दण्ड की कठोरता और वीभत्सता पत्नियों को दिए जाने वाले दण्ड से भी अधिक बढ़ जाती थी। आपस्तम्ब ने इस प्रसंग में कठोर व्यवस्था की थी।

स्मृतिकार गौतम ने भी इस सम्बन्ध में कठोर निर्देश दिया है। जो व्यक्ति अपने मित्र की पत्नी बहिन, शिष्य की पत्नी पुत्र बधू अथवा अन्य किसी के साथ दुराचार करे तो उसका अपराध गुरु पत्नी के साथ व्यभिचार

करने जैसा ही बड़ा होता है अतः राजा उसे कठोरतम दण्ड दे[१]। जो स्त्री पर पुरुष के साथ व्यभिचार की अपराधिनी हो उसको राजा किसी सार्वजनिक स्थान पर कुत्तों से मरवा डाले।

मनु ने भी इसी प्रकार की व्यवस्था की यद्यपि उनमें थोडा सुधार किया है। वह कहते हैं जो स्त्री प्रबल पिता बान्धव धनादि के अभिमान से पति को छोड़कर दूसरे से सम्बन्ध करे उसको राजा बहुत आदमियों के बीच में कुत्तों से नुचवावे।[२] व्यभिचारी पापी मनुष्य को जलते लोहे की चारपाई पर जला वे सब लोग उस पर लकडियां डाले उनमें पापी जलकर मर जाय।[३]

उपर्युक्त उद्धरण एक मात्र यह दिखाने के लिए अविकल रूप मे उद्धृत किए गए हैं कि प्राचीन भारत के आर्यजन व्यभिचार की बुराई के खन्डन में कितनी दूर तक जा सकते थे जिसको आधुनिक जगत् में अपराध भावना से शून्य बनकर उपेक्षा की जाती है इतना ही नही जिसे सामाजिक सुविधा के काल्पनिक वेश मे संवैधानिक रूप भी दिया जाता है। सत्य यह है कि उन दिनों नैतिकता की भावना आजकल की भावना से सर्वथा भिन्न थी। स्वाभावतः प्राचीन आदर्शों मे तलाक जैसी प्रथा के लिए स्थान न था। तलाक की भावना का समर्थन इस कल्पना मे निहित है और निहित हो सकता है कि समाज का ताना बाना नैतिकता के ढिल मिल विचारों और वैवाहिक पवित्रता के प्रति असम्मान की निर्लज्ज भावनाओं से नष्ट भ्रष्ट हो गया है।

आज के तथाकथित उन्नत राष्ट्र ऐसी समाज-व्यवस्था के विकास की शेखी मार सकते हैं जिसमें विविध अंग लचकीले हैं और जिनमें सुगमता से हेर फेर किया जा सकता है। पुरुष और स्त्री बिना किसी कठिनाई के विवाह विच्छेद जैसी सामाजिक सुविधा का आश्रय लेकर अपने मत भेदों का अन्त कर सकते हैं।

हमें स्पष्टतया यह स्वीकार करना चाहिए कि प्राचीन भारत के विधान-शास्त्री उस प्रथा के समर्थन में गौरव अनुभव न करते थे (और संभवतः अनुभव भी न कर सकते थे) जो सामाजिक एवं वैवाहिक पवित्रता विषयक उनके प्रिय आदर्शों पर कुठाराघात करती हो।

कम से कम धर्म शास्त्रों के युगों तक ऐसे पर्याप्त संकेत मिलते हैं जो हमारे इस विश्वास की पुष्टि करते हैं कि प्रारम्भिक आर्यों का समाज न केवल तलाक की प्रथा से मुक्त ही था अपितु उसे इस प्रथा का ज्ञान तक भी न था। महा काव्यों के कालों में भी इस दिशा मे कोई विशेष परिवर्तन हुआ नही दीख पड़ता। रामायण के काल में भी-विवाह सम्बन्ध की अटूटता यथापूर्व विद्यमान थी।

प्राचीन आर्य्य स्त्री जाति के प्रति कितने उच्च और महान् वे आदर्शों से अनुप्राणित थे उसकी एक झांकी रामायण के विविध अवतरणों में दीख पड़ती है। पवित्रता और स्थिरता के इस प्रकार के शान्त वातावरण में उन दिनो तलाक वा विवाह-विच्छेद की बात मन में क्योंकर उठ सकती थी?

महाभारत के काल में भी, जो पूर्ववर्ती युगों की अपेक्षा बदल चुका था ऐसा एक भी उदाहरण नहीं मिलता जिससे यह विश्वास हो सके कि उस काल में तलाक प्रथा प्रारम्भ हो गई थी। अवश्य ही यह माना जायगा कि उस काल में सदाचार की भावना दुर्बल हो गई थी और व्यभिचार की बुराई की उपेक्षा होने लगी थी। अनेक राज दरबारों और युद्ध यात्राओं के वर्णनों से यह सिद्ध हो जाता है कि समाज में वेश्या वृत्ति को भी स्थान लेने दिया जाने लगा था। दुर्योधन की सेना के व्यवस्थापकों में व्यापारी गुप्तचर और वेश्याएं भी रहती थीं (महाभारत उद्योग पर्व १६५) इसी प्रकार युधिष्ठिर की सेना में रथ हांकने वाले

१—गौतम स्मृति ८-१२
२— „ „ ८-१४
३—मनु ८-३७१
४— „ ८-३७२

दूकानदार, युद्ध सामग्री और कोश के अध्यक्ष, चिकित्सक शल्य चिकित्सक और वेश्याएँ भी साथ रहती थी। (उद्योग पर्व १४६) जब युद्ध छिड़ने से पूर्व महाराज कृष्ण संधि कराने के निमित्त धृतराष्ट्र से मिलने हस्तिनापुर गए थे तब धृतराष्ट्र ने आदेश दिया था कि रत्नाभूषणों से अलंकृत सहस्रों गणिकाएँ कृष्ण का स्वागत करने के लिए आगे-आगे पैदल चलें। (महाभारत उद्योग पर्व ४८) उन दिनों शराब खोरी की आदत न केवल वेश्याओं में ही अपितु उच्च घरानों की महिलाओं मे भी व्याप्त हुई देख पड़ती है। विलाप करते हुए गाधारी ने अभिमन्यु की पत्नी विराट दुहिता उत्तरा के सम्बन्ध, में कहा था कि—अपने पति के मुख की सुगन्ध को लजाते हुए सूंघने के पश्चात् मह माध्विका सुरा को पीकर बेसुध हो गई थी (महाभारत उद्योग पर्व ८५)

यदि हम उन तत्वो को ध्यान मे रखें जो परोक्ष रूप से समय की अग्रगामिनी गति के साथ क्रियाशील थे तो सदाचार के क्रमिक ह्रास का कारण सहज ही समझ मे आ जाता है। निश्चय ही समाज के पतन के लक्षण आधुनिक काल के आगमन की सूचना के हेतु थे। पुरानी कहावत है कि आने वाली घटनाओं की प्रतिच्छाया पहले से ही पड़ जाती है। इस विषय मे यह उक्ति ठीक ही सिद्ध हुई।

कौटिल्य के अर्थ शास्त्र मे ऐसे अनेक संकेत मिलते है जो हमारी इस मान्यता की स्पष्टतया संपुष्टि करते हैं कि ज्यों-ज्यों हम अपने वर्तमान समय के निकट आते त्यों-त्यों हमें सदाचार की अधिकाधिक गिरावट और वेश्यावृत्ति की बुराई अधिकाधिक व्यापक देख पड़ती है। चाणक्य ने न केवल इस बुराई की निन्दा ही नहीं की अपितु इसे कानूनी रूप भी दे डाला। उनके अर्थ शास्त्र में तो 'वेश्या विभाग' के निर्माण और उसके संचालन के विषय पर एक पृथक अध्याय ही लिखा गया है। (कौटिल्य अर्थ शास्त्र ११-२७)

"वेश्याओं का अध्यक्ष १००० पण वार्षिक पर एक गणिका और एक उपगणिका को राज सभा के लिए नियुक्त करेगा। ८ वर्ष की आयु से ही वेश्या राजा के सामने नाचना गाना प्रारंभ करेगी। जब कोई वेश्या राजाज्ञा से किसी व्यक्ति को आत्म-सात न करेगी तो उसे १००० कोड़े लगाए जायेंगे। प्रत्येक वेश्या अपनी दिन भरकी कमाई का दूना प्रति मास राज कोष में जमा करायगी। 'एक दूसरे स्थल पर सदाचार के सिद्धान्त का ऐसा ही अतिक्रमण दृष्टि गोचर होता है। जब कोई आदमी किसी स्त्री को शत्रु से बीहड़ बन से और बाढ़ से मुक्ति दिलाए वा उस स्त्री की जान बचाए जो जगल में भटक रही हो। व अकाल पीड़ित हो तो वह आदमी स्त्री की स्वीकृति से उसके साथ सहवास कर सकता है। कौटिल्य अर्थशास्त्र के ये अवतरण वास्तविक स्थिति के कहाँ तक द्योतक हैं यह निश्चय पूर्वक नहीं कहा जा सकता है परन्तु इतना तो निश्चय ही है कि जिन परिस्थितियो मे उपर्युक्त बातें कही गई है वे आदर्श नही कही जा सकती और काव्य युगों से पूर्व की परिस्थितियों से बहुत गई गुजरी थी। वस्तुतः वे परिस्थितियाँ अच्छी हो भी नहीं सकती थी क्योंकि उन्हें भावी युगो के अनुरुप बनाने वाले तत्व पूर्व से ही उनमें समाविष्ट हो रहे थे।

अतः जब हम चाणक्य के अर्थशास्त्र मे प्रथम बार तलाक-प्रथा का स्पष्ट उल्लेख देखते हैं तो हमे विशेष आश्चर्य नहीं होता। परन्तु महान् ग्रन्थकार को यह श्रेय मिलना चाहिए कि उसने इस प्रथा का समर्थन कतिपय प्रतिबन्धो के साथ ही किया है। इस प्रथा का समर्थन करने मे वह सावधान रहे हैं जिसका वर्णन उन्होंने आवश्यक बुराई मानकर ही किया है। अन्यथा विवाह-बन्धन की पवित्रता और उसकी अटूटता के विषय में उनके विचार वेदकालीन और उसके कुछ बाद के साहित्य जैसे ही उच्च हैं। उन्होंने अत्यन्त विशेष अवस्थाओं में ही इस प्रथा का समर्थन किया है। तीसरे अध्याय में वह लिखते हैं—"अपने पति से घृणा करने वाली स्त्री पति की इच्छा के विरुद्ध विवाह का विच्छेद नहीं कर सकती और न पति ही ऐसा कर सकता है। परन्तु पारस्परिक शत्रुता के आधार पर तलाक हो सकता

है। यदि किसी पुरुष को अपनी स्त्री से जान का खतरा हो और वह तलाक की इच्छा करे तो विवाह के समय स्त्री को जो कुछ दिया गया होगा वह सब उसको लौटाना होगा। परन्तु यदि अपने पति की ओर से किसी भय के कारण पत्नी विच्छेद चाहेगी तो अपनी सम्पत्ति पर उसका कोई स्वत्व न रहेगा। (अर्थशास्त्र ३—३) पुनः यदि पति दुष्ट प्रकृति का हो, चिरकाल के लिए परदेश गया हो, या राजविद्रोही हो गया हो, वा पत्नी को उससे अपनी जान का खतरा हो, जातिच्युत हो गया हो, वा नपुंसक हो गया हो तो पत्नी उसका परित्याग कर सकती है। (अर्थशास्त्र ३—२)

इसके आगे वह कहते है—"आठ प्रकार के विवाहों में से प्रथम चार (ब्राह्म, देव, आर्ष, प्राजापत्य) विवाहों में विवाह विच्छेद नहीं हो सकता। (अर्थशास्त्र ३—३)

इसके बाद का स्मृति साहित्य भी विवाह विच्छेद के पक्ष में नही देख पड़ता। दक्ष स्मृति में कहा गया है—जो पुरुष अपनी पतिता स्त्री का भी परित्याग कर देता है वह दूसरे जन्म मे स्त्री का जन्म लेता है। जो वेश्या बन कर दुःख भोगती है। (दक्षस्मृति ४—४५—४)

व्यास स्मृति की भी यही स्थिति है परन्तु यह भी कहती है कि यदि पत्नी बीमार रहती हो, पतिव्रता न हो वा दुश्चरित्रा हो तो दूसरा विवाह किया जा सकता है—(व्यास स्मृति २ ५१) बोधयान भी पति द्वारा पत्नी परित्याग की व्यवस्था करते हैं। उनका कथन है—"जिस स्त्री के दशवे वर्ष सन्तान न हो, बारहवें वर्ष में पुत्रियाँ उत्पन्न हों और पन्द्रहवें वर्ष मे जिसके सब बच्चे मर जायें और जो कलिहारी हो उसको तत्काल छोड़ देना चाहिए" (बोधपान २—६)

यह बात आश्चर्यजनक है कि विवाह की पवित्रता और विवाह बंधन की अखण्डता आज भी पूर्ण रूप में स्थिर है। हिन्दू समाज अब भी तलाक की भावना के वैसा ही प्रतिकूल है जैसा अबसे सहस्रों वर्ष पूर्व था। शताब्दियों की उथल-पुथल और आघात-प्रत्याघात से भी आदर्श की शोभा और आभा नष्ट नही हुई है। यह आदर्श चट्टान की तरह दृढ़ खड़ा है और भारत के लाखों-करोडो व्यक्तियो को प्रभावित कर रहा है। समाज के गठन में इसकी जड़े बहुत गहराई तक जा चुकी हैं और आधुनिकता युग युगान्तर तक उस गहराई तक न पहुंच सकेगी।

* * *

उत्थान भारत का होगा तभी

[परिवर्तक—श्री छगनलाल आर्य, अजमेर]

दुर्दम्य होगी जब आशा, आकांक्षा वेदार्थ संगीत गाए सभी।
धर्मार्थ होवेंगे त्यागी विरागी, उत्थान भारत का होगा तभी॥

हुआ भ्रष्ट धर्म भारत का ये, छिन्न विच्छिन्न और सूना पड़ा।
ओम् ध्वजा हाय जो गिर पडी, फिर से उठा ले उसे हम सभी॥
फहरेगी अम्बर में वह शान से जब, उत्थान भारत का होगा तभी।

स्वर्णादि के तोड़ बाहन सारे, उन्हें क्यों न कोई भले ही जला दे॥
हुई राख भारत के धर्म सम्पदा की, रही खाक बाकी बचा है नहीं।
जब राख हो दूर अंगार चमके, उत्थान भारत का होगा तभी॥

यदि चाहते हो निज देश रक्षा, निज संस्कृती वो सह धर्म भाषा।
कर्त्तव्य दीक्षा हम धर्म सीखें, आर्यत्व बधन में खुद को बंधावें॥
जब आर्य सारे बनें वेद-धर्मी, उत्थान भारत का होगा तभी।

आकाश में जब चढ़ेगा रवि, स्वयं नष्ट होगी निशा दानवी।
उठो आर्य जागो कटि बद्ध होकर, सन्देश घर घर सुनायें सभी।
बनें योद्धा धर्मार्थ संग्राम के जब, उत्थान भारत का होगा तभी॥

बाल जगत

परोक्ष को देखने वाला बालक

१८६४ ई० में नार्वे में जौनफ्रेटम नामक एक लड़के का जन्म हुआ। जब वह १४ वर्ष का था तब उसे छिपी हुई वस्तुओं का ज्ञान होना प्रारम्भ हुआ। गुम हुए व्यक्तियों का पता लगाने के विषय में अनेक कहानियाँ सुनाई जाती हैं। नार्वे और उससे बाहर अनेक व्यक्ति उसको प्रश्न भेजकर सहायता लिया करते थे। जब उसे बहुत कम जानकारी प्राप्त होती थी तब उसका मस्तिष्क बहुत ठीक और बढिया काम करता था। जब वह थक गया तो उसने अपनी इस प्रतिभा को आराम देने और जीवन का आनन्द लेने का निश्चय किया। जौहर्ड जैसे मनीषी ने हाथ का काम करके आजीविका प्राप्त करने का निश्चय किया और बढई का काम चुना। इसके बाद उसने अध्यापकी का व्यवसाय चुना।

उसके जीवन के अन्तिम वर्ष पुनः बचपन के काम मे व्यतीत हुए। उसके द्वारा दी हुई जानकारी इतनी विश्वस्त होती थी कि कोई भी उसकी इस प्रतिभा पर संदेह न करता था। वह तार द्वारा जानकारी प्राप्त करना पसन्द करता था और यह भी कि उसे घटना से सम्बद्ध बहुत कम जानकारी दी जाय। जब कोई आदमी गुम हो जाता था तो वह कुछ मिन्टों में ही उस क्षेत्र का नक्शा खींचकर सम्बद्ध व्यक्ति का अता पता बता देता था।

१९२२ के बड़े दिन पर वह लड़का बीमार पड़ गया। जब चिकित्सा के लिये डाक्टर बुलाया गया तो उसने इलाज करने से इन्कार कर दिया और कहा 'मैंने अपने जीवन का काम समाप्त कर लिया है अतः इलाज कराने से कोई लाभ न होगा।' कई वर्षों तक उसे यह भान होता रहा कि ३० वर्ष की आयु से पूर्व ही मेरी मृत्यु हो जायगी। उसे तपेदिक हो गई थी परन्तु इस बीमारी से वह अधिक दिनतक ग्रस्त न रहा और ३ मास के भीतर ही मर गया।

● ● ●

आर्य समाजों का विवरण

आर्य समाज महसी (चंपारन)

स्थापना—११—९—१९३२

सभासदों की संख्या—९

समाज मंदिर—अपना है जो लगभग ३०००, का है।

समाज के अन्तर्गत एक पुस्तकालय श्री दयानन्द आर्य पुस्तकालय के नाम से १९४८ से स्थापित है जिसके भीतर लगभग ३००) की पुस्तकें है।

श्रीयुत ललिता प्रसाद जी चौधरी मोतीहारी निवासी ने १। बीघा जमीन समाज के लिए दान की जिसकी रजिस्ट्री आर्य प्रतिनिधि सभा पटना के नाम से है। इसके पश्चात् १। कठा भूमि क्रय की गई।—

शुद्धि तथा नारी एवं बाल-रक्षा का कार्य बड़े पैमाने पर होता रहा है।

इस समय समाज के प्रधान श्री मा० अयोध्या प्रसाद जी चौधरी तथा मंत्री श्री यदुनन्दनसिंह जी आर्य हैं।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में

स्वर्ण जयन्ती महोत्सव तथा नवम आर्य महासम्मेलन

अज्ञान, अनैतिकता, भ्रष्टाचार और अराष्ट्रीय विचार धाराओं की समाप्ति का अभियान

लक्ष्य पूर्ति के लिए

पाँच लाख रुपये की अपील

राष्ट्र की सर्वांगीण उन्नति के लिये आज प्रत्येक देश वासी चिन्तित हैं। बढ़ती हुई सांप्रदायिकता, प्रान्तीयता अज्ञान, अंधविश्वास, जाति-भेद और सामाजिक कुरीतियां हमारे राष्ट्रीय निर्माण में भारी रुकावट अनुभव की जा रही हैं। भारतीय गौरव और परम्परा पर नास्तिकता एवं पाश्चात्य शिक्षा प्रणाली का दूषित विष प्रभाव निरन्तर प्रहार कर रहा है। पड़ोसी देश चीन व पाकिस्तान की आक्रमक गति विधि का यह संक्रमण काल, और उस पर भी युवक-शिक्षित वर्ग का विलासिता और भोग साधनों की ओर रुझान एक जटिल समस्या है।

ऐसी विषम परिस्थितियों में आर्य समाज ने सत्य, ज्ञान और मानवता की प्रभूत प्रतिष्ठा व राष्ट्र की ज्वलन्त समस्याओं का समाधानकर स्वर्णिम भविष्य निर्माण के लिए समस्त विनाशकारी तत्वों की समाप्ति का संकल्प धारण किया है।

आर्य समाज इस संकल्प पूर्ति हेतु सहयोग के लिये प्रत्येक राष्ट्र भक्त का कर्म क्षेत्र में आवाहन करता है। लक्ष्य पूर्ति के लिये आर्य समाज की योजना है कि—

१—प्रत्येक सम्भव प्रचार साधनों का उपयोग कर जन-जन में आस्तिकता, सत्य, ज्ञान, सदाचार और राष्ट्र प्रेम का मन्त्र प्रसारित कर (राम कृष्ण दयानन्द और गांधी के देश भारत को युरोप और पश्चिमी सभ्यता में ढालने का जो प्रवाह अत्यन्त वेग से बह रहा है, उसे रोकने के लिये प्रभावशाली पग उठाया जाय। साथ ही प्रान्तीयता भाषावाद और साम्प्रदायिकता के भयंकर विष की समूल समाप्ति के लिये गंभीर प्रयत्न किये जाएं।

२—दीन और पिछड़े वर्ग में धन के बल पर विदेशी पादरियों द्वारा किए जा रहे बलात् धर्म परिवर्तन व उन की अराष्ट्रीय गतिविधियों को रोकने के लिए तीव्र अभियान किया जाए।

३—उक्त उद्देश्यों की पूर्ति के लिए सस्ता-आकर्षक साहित्य प्रान्तीय भाषाओं में प्रकाशित किया जाए।

४—दक्षिण प्रदेश व विदेशों में वैदिक विचारधारा प्रसार के लिए विशेष यत्न किया जाए।

राष्ट्रवासियो, अगणित बलिदानों से प्राप्त स्वराज्य का सु-फल प्राप्त करने के महान् रचनात्मक उद्देश्य की पूर्ति के लिए आर्य समाज ने राष्ट्र निर्माण-यज्ञ का प्रारम्भ किया है। इसे मूर्त रूप देने के लिए देहली में १६ मई से २१ मई १९६१ तक सार्वदेशिक सभा की स्वर्ण जयन्ती महोत्सव एवं नवम आर्य महासम्मेलन आयोजित किया गया है।

साथ ही इन महान युग निर्माण के आधार रचनात्मक कार्यों की पूर्ति के लिए सार्वदेशिक सभा ने देश के प्रत्येक नागरिक से ५ लाख रुपए की राशि १५ मई १९६१ तक संग्रह कर देने की प्रार्थना की है।

हमें विश्वास है कि जिस आर्य समाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने १९ वीं शताब्दी में भारत की आत्मा को नवजीवन दिया, राष्ट्र की स्वतन्त्रता, नारी की समानता, दलित से प्रेम और बन्धुत्व का पाठ पढ़ाया। विनाश की विकराल आंधी के समक्ष जो सदा अडिग रहा वही आर्य समाज आज देश की विकट संकटापन्न घड़ियों में पुनः सहयोग के लिए राष्ट्र का आवाहन कर रहा है

हमारी प्रार्थना है कि इस पुकार को देश के नागरिक सुनें और आर्य समाज के स्वर में स्वर मिला, विनाशकारी

(शेष पृष्ठ ३५ पर)

श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती-भ्रमण तालिका

सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा ने आर्य समाजों को प्रेरणा की हुई है कि वे आर्य समाज मन्दिरों में शिला लेख लगवाएं जिन में यह अंकित हो कि महर्षि दयानन्द सरस्वती अमुक २ तिथि को उनके नगर वा ग्राम में पधारे। जहां आर्य समाज मन्दिर न हो वहाँ उपयुक्त स्थान पर निर्दिष्ट शिला लेख लगाया जाय। आर्य समाजों के मार्ग-प्रदर्शन के लिए सार्वदेशिक मे तत्सम्बन्धी तालिका क्रमशः प्रकाशित की जाती है।

क्रम सं०	नाम स्थान	आगमन	प्रस्थान
१	टकारा	१८२४ ई०	१८४६
२	कोट गगारा	जुलाई १८४६	सित० १८४६
		अगस्त	अक्टू०
३	सिद्धपुर	सित० १८४६	अक्टू० १८४६
		अक्टू०	नव०
४	अहमदाबाद	अक्टू० १८४६	अक्टू० १८४६
		नव० १८५०	नव० १८५१
५	बड़ौदा	१८४६	१८४७
६	चानोद कन्याली	१८४७	१८४७
७	व्यास आश्रम	१८४७	१८४८
८	सिनूर	१८४८	१८४८
९	चानोद	१८४९	१८५०
१०	आबू	१८५२	१८५४
११	हरिद्वार	१८५४-५५	१८५५
१२	ऋषिकेश	१८५५	१८५५
१३	टिहरी	१८५५	१८५५
१४	श्रीनगर	१८५५	१८५५
१५	केदारघाट	१८५५	१८५५
१६	रुद्र प्रयाग	१८५५	१८५५
१७	अगस्त्य मुनि	१८५५	१८५५
१८	शिवपुरी	"	"
१९	केदारघाट	"	"
२०	गुप्तकाशी	"	"
२१	त्रियुगी नारायण	"	"

यज्ञ और आर्य समाज के दस नियम

यज्ञमय भावना को जीवन का अंग बनाने के लिए और चरितार्थ करने के लिए ऋषि दयानन्द ने आर्य समाज की स्थापना एक विशाल यज्ञ के रूप में की है। आर्य समाज के दस नियमों मे पहले चार नियम देव पूजा से सम्बन्ध हैं। उनमें ईश्वर; ईश्वर; का स्वरूप और उसके पवित्र ज्ञान वेद का विवेचन है। पांच से लेकर नौवें नियम तक लौकिकरण के नियम हैं। इनमें संगतिकरण का लक्ष्य और उपाय दोनों वर्णित हैं। दसवां नियम दान का वाचक है।

—पूर्णचन्द्र एडवोकेट

मदगास्कर की प्रचार-यात्रा

[श्री पूज्य स्वामी ध्रुवानन्द जी सरस्वती]

पोर्टलुईस [मौरीशस] में सब कार्य सम्पन्न कर हम २९ जनवरी मदगास्कर आये। मदगास्कर एक टापू है। फ्रेंच सरकार के अधिकार में था; किन्तु गत वर्ष ही स्वतन्त्र हुआ है। इसकी लम्बाई १५८० किलोमीटर और चौड़ाई ५८० किलोमीटर है। क्षेत्रफल ६२७३२७ है। इस देश की कुल आबादी ५१ लाख है। यहाँ के आदिवासियो को मलगास और भाषा को मलगासी कहते हैं। राज्य की भाषा फ्रेंच है, किन्तु व्यवहार मे मलगासी भाषा बोली जाती है। मलगासी भाषा मे दूर को रुनुन और पानी को रानु कहते हैं।

तनानारीव

मदगास्कर की राजधानी तनानारीव है। एरोड्रम से तनानारीव शहर ३० मील दूर है। इस शहर की आबादी २। लाख है। शहर ऊँची-नीची पहाडियों पर बसा हुआ है। रात्रि मे दूर से देखने पर ऐसा मालूम पडता है मानो देहरादून से मसूरी को देखते हैं। मलागासी भाषा मे तनाना का अर्थ जगह या ग्राम और रीव का अर्थ हजार होता है अर्थात् हजार ग्राम। शहर बहुत सुन्दर है। यह समय यहां गर्मी का है किन्तु मसूरी के समान ठंडा है। करीब २५ गृह हिन्दुओ के हैं। मैं श्री मोतीलाल जी के गृह पर ठहरा था। यहाँ पर सब हिन्दू गुजराती है। मोतीलाल जी के गृह पर ही दो व्याख्यान हुए। प्रायः सब स्त्री और पुरुष आये थे।

तनानारीव से मजुंगा गया। यहां से मजुंगा ६०० किलोमीटर दूर हैं। बरसात में केवल प्लेन से जाना होता है। जाने-आने का प्लेन का किराया २१८ रुपया लगता है। मजुंगा की आबादी; ४६८२५ है। गुजराती हिन्दुओ के ११० गृह हैं और गुजराती मुसलमानों के २०० गृह हैं। समुद्र के किनारे पर बसा हुआ है इसलिए बन्दरगाह भी है। सवारी के लिए टेक्सी और मनुष्य से खींचने वाला रिक्शा मिलती हैं। शान्ति-भवन नामक एक स्थान है इसमे गुजराती पढ़ाई जाती है। यहां पर दो व्याख्यान हुए। हिन्दुओ के अतिरिक्त मुसलमान भी व्याख्यान सुनने के लिए आये थे।

यहाँ पर हिन्दू और मुसलमान सब के सब व्यापारी हैं केवल श्री मालदेव भाई ही गोपालक और कृषिकार हैं। इनके पास तीन सौ एकड भूमि और १४० गाय हैं। ६० हजार फ्रेंक सालाना भूमि का लगान देते हैं। अधिक भूमि तो गौओ के चरने के लिए रखी हैं, किन्तु कुछ भूमि में खेती भी करते हैं। एक लीटर दूध का मूल्य ५० फ्रेंक (एक रुपया) होता है। मैं श्री मोहनलाल जी के गृह पर ठहरा था। आपका सारा ही परिवार धर्मनिष्ठ आतिथ्य-प्रिय एवं श्रद्धालु है। इस समय यहाँ गर्मी बहुत है। यहाँ पर तीन भाषा [फ्रेंच, सुहेली और मलगासी] बोली जाती है। यहाँ तीन दिन रहकर तनानारीव लौट आया। मदगास्कर में २९ जनवरी से ५ फरवरी तक का ही मेरे पास परमिट था किन्तु तमाताव और डिगोस्वरेज के बन्धुओ के आग्रहवश १४ फरवरी तक परमिट की अवधि बढानी पड़ी।

तमाताव

तनानारीव से तमाताव ३०९ किलोमीटर दूर है। यहाँ से ट्रेन और प्लेन प्रतिदिन जाते हैं। ट्रेन १२ घंटे मे पहुँचती है और प्लेन सवा घण्टे में पहुचता है। ट्रेन का किराया २१०० फ्रेंक किन्तु प्लेन का ३६०० फ्रेंक है। मैं दृश्य देखने के कारण ट्रेन से गया था। दृश्य बहुत ही सुन्दर हैं। जब ट्रेन चलती है तब ऐसा प्रतीत होता है कि सिलीगोड़ी से दार्जिलिग ट्रेन जा रही है। प्रातःकाल ६-१५ पर यहाँ से चलकर ६॥ बजे सायकाल तमाताव पहुंचा। स्टेशन पर श्री पोपटलाल जी, श्री लीलाधर जी, श्री गोकुल जी आदि कई भाई मिले। श्री पोपटलाल जी के गृह पर ठहरा। आपकी आयु ८० वर्ष की है। बडे ही धर्मनिष्ठ श्रद्धालु सज्जन हैं। यहां पर हिन्दुओ की कोई संस्था नहीं है। अब बनाने का विचार किया है। यहाँ की आबादी ४४०८० है, किन्तु हिन्दुओं के ६ घर हैं और मुसलमानों के १०० घर हैं। पोपटलाल जी के गृह पर

ही दो व्याख्यान हुए। कुछ मुसलमान भी शामिल हुए। यह शहर समुद्र के किनारे पर है इसलिए बन्दरगाह भी है और बन्दरगाह बहुत बड़ा तथा सुन्दर है। इस समय गर्मी यहाँ अधिक है। यहाँ पर मेरे साथ एक विचित्र घटना हुई। वह यह है कि एक गोरा (फ्रेंच) व्यक्ति ने श्री लीलाधर जी से कहा कि स्वामी जी से मेरा परिचय कराओ। वे उसे मेरे पास लाये। दुभाषिये का काम लीलाधर जी ने किया। उसने प्रश्न किया कि मेरा हाथ देखकर मेरा भविष्य बताओ। मैंने हँसकर कहा कि मैं यह काम नहीं करता हूँ और न मेरा इसमे विश्वास ही है। मैंने उससे पूछा क्या कभी किसी को हाथ दिखाया था और उसने जो कुछ बताया सत्य निकला। उत्तर—नहीं, प्रश्न—जब सत्य नहीं निकला तो मुझे क्यों दिखाते हो। उत्तर—परीक्षा के लिए। प्रश्न—केवल परीक्षा के लिए दिखाते हो अथवा विश्वास भी है। उत्तर—अब विश्वास उठ गया है, केवल परीक्षा के लिए ही दिखाता हूँ। इसी प्रकार कुछ देर तक विनोद-वार्ता होती रही। तमाताव TOMA$INA लिखा जाता है। मलगासी भाषा मे तो द्र वह मामिन पवित्र' अर्थ होता है। अर्थात् वह स्थान पवित्र।

डिगोस्वरेज

तमातव से डिगोस्वरेज को पानी के जहाज से अथवा प्लेन से ही जाने का रास्ता है किन्तु पानी का जहाज १५ दिन मे मिलता है और २४ घण्टे का समय लगता है। मेरे पास समय न्यून था अतएव प्लेन से ही गया। तमाताव से डिगोस्वरेज १ हजार किलोमीटर दूर है। यहाँ की आबादी ३२०१ है किन्तु हिन्दुओ के १२ गृह ही हैं। आनन्द भवन नामक स्थान किराये पर लिया हुआ है। प्रति मास ६ सौ फ्रेंक किराया देते है किन्तु अब ३ लाख फ्रेंक में एक भूमि खरीद ली है, इस पर आनन्द भवन बनेगा। श्री जयन्तीलाल जी के गृह पर ठहरा और आनन्द भवन मे तीन व्याख्यान देकर प्लेन से तनानारीव लौट आया। डिगोस्वरेज मलगासी भाषा में Antsirano अन्झीरानू कहते हैं। इसका अर्थ है कि अ० वहाँ छि नहीं रानु अर्थात् वहाँ पानी नहीं है। यह नाम सार्थक है क्योंकि यहाँ पानी का बड़ा ही कष्ट है। दो घण्टा प्रातः और दो घण्टा शाम को पानी मिलता है। एक फ्रेंच नाई की दुकान पर मैं हजामत बनवाने इसलिए गया कि फ्रेंच नाई किस प्रकार हजामत बनाता है यह अनुभव करूँ। जब श्री जयन्तीलाल ने उससे कहा कि इनकी दाढ़ी बना दो तो उसने हँसकर कहा कि पानी नहीं रहा है। बिना अनुभव किये हुए ही मैं लौट आया। यहाँ का बन्दरगाह संसार में तीसरे नम्बर का है। डिगोस्वरेज के तीन ओर खाड़ी है। इसमे समुद्र का पानी है। समुद्र से जहाज को खाड़ी मे आने का एक ही रास्ता है। यहाँ पर फौज का पहरा रहता है। शहर सुन्दर है किन्तु गर्मी इस समय बहुत है। तमाताव और यहाँ टेक्सी तथा रिक्शा सवारी के लिए मिलते है।

अचिरावे

तनानारीव से अंचिरावे १७५ किलोमीटर दूर है। ट्रेन, प्लेन और मोटर से जाना होता है। मैं ट्रेन से गया और श्री हीरालाल जी के गृह पर ठहरा। यहाँ एक ही परिवार हिन्दू का है। मुसलमानो के १५ घर है। कुल आबादी १११६१ है। यह स्थान इस समय मसूरी जैसा ठंडा है। जाड़े मे यहा बर्फ पड़ती है। यह शहर बहुत ही सुन्दर है। यहाँ पर खारी एवं गर्म जल निकलता है। यह पानी कई रोग दूर करता है। एक जगह खारी पानी एवं ठंडा पानी निकलता है किन्तु इस पानी मे गैस है। पीने पर एकदम सोडावाटर जैसा मालूम पड़ता है, एक स्थान पर ऐसा पानी निकलता है कि उसका व्यापार होता है। दूर-दूर देशों को वह पानी भेजा जाता है। एक जगह गन्धक का गर्म जल निकलता है। यहाँ अनेक कमरे बने हुए हैं।

प्रत्येक कमरे मे लाइट, पाइप और एक इंगलिश बाथ के लिए टप रखा है। स्नान के लिए प्रति व्यक्ति से ५० फ्रेंक [१ रुपया] स्नान का लिया जाता है। इस जल से रोगियो का इलाज भी होता है। एक डाक्टर रहता है जो विधिवत रोगियों को गन्धक के गर्म जल से स्नान कराता है। इस स्थान को तविसमातेरमाल कहते

हैं। इस स्थान के पास ही एक होटल है। इस होटल की इमारत बहुत ही सुन्दर है। २४ घंटे के लिए एक कमरे का खर्च भोजन सहित ६०० फ्रैंक होता है।

यहां व्याख्यान तो नहीं हुआ किंतु श्री हीरालाल जी के गृह पर रात्रि में ८॥ से १०॥ बजे तक प्रश्नोत्तर के रूप में विचार विनिमय अनेक विषयों पर होता रहा। श्री अली भाई और श्री अली भाई कान जी ने भी विचार विनिमय में सपत्नीक भाग लिया था।

सारे मदगास्कर देश में मलगासी देवियां ८० प्रतिशत साड़ियाँ पहनती हैं और उससे सिर भी ढकती हैं। खुला हुआ सिर उनको पसन्द नहीं हैं। हाँ मुसलिम देवियाँ भी भारतीय प्रकार से साड़ियाँ पहनती हैं। सारे देश में हिन्दू और मुसलमान गुजराती हैं। घरों में और परस्पर मिलने पर गुजराती में बात करते हैं, व्यापार के समय मलगास और फ्रैंचों से मलगासी भाषा में बात करते हैं।

मदगास्कर देश में १६ दिन रहकर १४ फरवरी मंगलवार को नैरोबी जा रहा हूँ। लगभग १०-१२ दिन वहाँ रहकर बम्बई पहुंचूंगा।

● ● ●

(शेष पृष्ठ ३४ का)

तत्वों की समाप्ति का व्रत धारण करें। साथ ही प्रत्येक अवस्था में इन पंक्तियों को पढ़ने के साथ ही जो भी भेज सकें तुरन्त सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दयानन्द भवन देहली को भेजने की कृपा करें।

वस्तुतः राष्ट्र का भविष्य आप के सहयोग पर निर्भर है, दीजिए सहयोग, और अपना पूरा बल १५ मई १९६१ तक पांच लाख रुपए की राशि पूरा करने में लगा दीजिए

भूलिए नहीं—स्वर्णिम भविष्य आपको निमन्त्रण दे रहा है।

विनीत

पूर्णचन्द	रघुवीरसिंह शास्त्री
प्रधान	मंत्री

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द भवन रामलीला मैदान, नई दिल्ली।

देसराज चौधरी	लक्ष्मीदत्त दीक्षित
अध्यक्ष	संयोजक

स्वर्ण जयन्ती आर्य महासम्मेलन समिति।

● ● ●

जीवन उपयोगी पुस्तकें

मनोविज्ञान (स्वा० आत्मानन्द)	३/५०
संध्या अष्टांग योग ,,	०/७५
कन्या और ब्रह्मचर्य ,,	०/२०
स्वाध्याय संग्रह (स्वा० वेदानन्द)	२/००
स्वा० विरजानन्द जीवन ,,	१/५०
संस्कृतांकुर ,,	१/२५
हम संस्कृत क्यों पढ़ें ? ,,	०/५०
श्रुति सूक्ति शती ,,	०/३०
वैदिक धर्म परिचय श्री जगदेवसिंह सिद्धान्ती	०/६५
छात्रोपयोगी विचार माला	०/६५
संस्कृत वाङ्मय का परिचय	०/५०
नेत्र रक्षा (आचार्य भगवान देव)	०/२०
व्यायाम का महत्व ,,	०/२०
पापों की जड़ शराब ,,	०/१५
रामराज्य कैसे हो ? ,,	०/२०
बिच्छु विष चिकित्सा ,,	०/१०
ब्रह्मचर्य के साधन :—	
भाग १-२ प्रातः जागरण, चक्षु स्नान ,,	०/३०
,, ३—दंत रक्षा ,,	०/२०
,, ४—व्यायाम संदेश ,,	१/००
,, ५—स्नान, संध्या, यज्ञ ,,	०/४०
,, ७,८—सत्संग स्वाध्याय ,,	०/५०
,, ६—भोजन ,,	०/६५
गांधी और दयानन्द (धर्मदेव विद्यावाचस्पति)	२/००
विदेशों में एक साल (स्वा० स्वतंत्रानन्द	२/२५
दृष्टांत मंजरी (पं० जगत्कुमार)	२/००
ब्रह्मचर्य शतकम् (ब्र० मेधाव्रत)	०/६५
आ० स० की आवश्यकता (डा० सूर्यदेव)	०/२५
कृषि विज्ञान (प्रि० शिवसिंह)	०/७५
आर्य सिद्धान्त दीप (पं० मदनमोहन)	१/२५
हितैषी की गीता (लालचन्द हितैषी)	०/७५
दयानन्द और गोरक्षा (पं० लक्ष्मीदत्त दीक्षित)	०/१०
दयानन्द का कार्य (पं० देवव्रत धर्मेन्दु)	०/६०
दयानन्द दिव्य दर्शन (श्री देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय)	०/५०
श्रुति सुधा (पं० जगत्कुमार)	०/२०
विद्यार्थियों के हित की बातें (श्री ठाकुरदत्त)	०/१०
काश्मीर यात्रा (श्री जगन्नाथ)	०/५०

वैदिक साहित्य सदन २/३१२ रूप नगर
देहली—६

चरित्र-निर्माण सम्बन्धी साहित्य

चरित्र-निर्माण सम्बन्धी श्री बाबू पूर्णचन्द्र जी एडवोकेट सभा प्रधान द्वारा लिखित निम्न साहित्य यहाँ से हजारों की संख्या में मंगाकर आर्य समाजें और धनी मानी आर्य सज्जन चरित्र-निर्माण के कार्य में योग दें जो आज की सर्वप्रथम समस्या है :—

१. चरित्र-निर्माण	१=)॥
२. ईश्वर उपासना और चरित्र-निर्माण	=)॥
३. वैदिक विधान और चरित्र निर्माण	।)
४. दौलत की मार	।)
५. दयानन्द दीक्षा शताब्दी का सन्देश	।-)
६. मन मन्दिर	१)
७. कर्म व्यवस्था	४)

मिलने का पता

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द भवन, नई दिल्ली—१

हमारी प्रकाशित निम्न पुस्तकों पर विशेष रियायत

गत वर्ष २५ फरवरी १९६० को शिवरात्रि के दिन पूज्य श्री गोविन्दराम हासानन्द जी का स्वर्गवास हुआ था। उनकी ३५ वर्षों की वैदिक साहित्य की सेवा सर्व विदित ही है। उनकी पहली पुण्य तिथि (१३ फरवरी १९६१ से २८ फरवरी १९६१) के उपलक्ष में निम्न पुस्तकों पर १) से १९) तक पुस्तकें मंगाने पर =) रुपया, २०) से ५०) तक की पुस्तकें मंगाने पर ≡) रुपये की छूट दी जावेगी ५०) के आर्डर तक डाक, रेल खर्च ग्राहक के जिम्मे होगा। ५०) से अधिक के आर्डर पर रेल खर्च हम देंगे। आर्डर के साथ ५) अगाऊ आना आवश्यक है।

आनन्द स्वामी कृत पुस्तकें

तत्वज्ञान	३)
प्रभुदर्शन	२)५०
प्रभुभक्ति	१)५०
आनन्द गायत्री कथा	)७०
एक ही रास्ता	)८०
शंकर और दयानन्द	)५०
भगवत् कथा	)६२
भक्त और भगवान	१)
मानव जीवन गाथा	१)
उपनिषदों का सन्देश (नई पुस्तक)	१)२५
बृहदारण्यक कथामाला (ब्रह्ममुनि)	३)
उपनिषद् आर्य भाष्य (आर्यमुनि)	६)
सृष्टि का इतिहास (पं० लेखराम)	२)
गुरुदत्त लेखावलि (पं० गुरुदत्त)	२)

मास्टर आत्माराम अमृतसरी कृत

महर्षि दयानन्द से पूर्व का भारत	२)
बहिनों की बातें (सिद्धगोपाल)	१)२५
दर्शनानन्द ग्रन्थ संग्रह पूर्वार्ध	२)५०
,, ,, उत्तरार्ध	२)५०
वैदिक गृहस्थाश्रम (विश्वनाथ)	५)
ऋषि गाथा महा काव्य	८)
स्वाध्याय संग्रह (वेदानन्द)	२)
वेद परिचय (,,)	)३७
महर्षि दयानन्द (इन्द्र)	२)
आर्य समाज का इतिहास	१)३७
सचित्र योगासन	१)५०
दयानन्द चित्रावली	२)५०
आर्य योग प्रदीपिका	३)५०
स्त्रियों का स्वास्थ्य रोग	३)
विवाह और विवाहित जीवन	२)५०
प्रार्थना प्रदीप (नित्यानन्द)	)५०
आर्य समाज क्या है ?	)७५
घर गृहस्थी	१)५०
आर्य सिद्धान्तदीप	१)२५
गीत श्रद्धांजलि (भजन)	१)

महर्षि दयानन्द कृत पुस्तकें

दयानन्द ग्रन्थ संग्रह	४)५०
आत्म कथा	)४०
स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश	)६
वेदान्ति ध्वान्तनिवारण	)१६
वेद विरुद्ध मत खण्डन	)३७
शिक्षापत्रीध्वान्तनिवारण	)३७
आर्याभिविनय	)५०
ऋग्वेदभाष्य का प्रथम सूक्त	)२५
आर्योद्देश्यरत्न माला	)१०
भ्रान्ति निवारण	)३७
व्यवहार भानु	)२५
भ्रमोच्छेदन	)२५
गोकरुणा निधि	)६
गृहस्थाश्रम	)६२
काशी शास्त्रार्थ	)२०
सत्य धर्म विचार	)२०
आर्यसमाज के नियमोपनियम	)१२
ईशोपनिषद्	)२५
बाल शिक्षक	)३७
महिला पुष्पांजलि	)५०
सत्य हरिश्चन्द्र नाटक	१)
सत्यार्थप्रकाश शंकासमाधान	)२५
स्वामी दयानन्द और वेद	)५
विश्व विज्ञान परमात्म-बोध	)१९
मांस मदिरा निषेध	)१९
गायत्री व्याख्या	)२५
नास्तिकवाद	)५०

चित्र चित्र चित्र

महर्षि दयानन्द २०×३०	१)
स्वामी श्रद्धानन्द ,,	१
गुरुविरजानन्द ,,	१
महात्मा हंसराज ,,	१
पं० लेखराम ,,	[illegible]
मोटोज साइज ११×१४ प्रत्येक	[illegible]

ओ३म्, नमस्ते, स्वागतम्, गायत्री मंत्र

बालोपयोगी पुस्तकें

महर्षि दयानन्द	)५६
स्वामी श्रद्धानन्द	)३७
गुरुविरजानन्द	)५०
महात्मा हंसराज	)३७
स्वामी वेदानन्द	)२५
भगवान् कृष्ण	)३०
आदर्श सुधारक दयानन्द	)६२
गुरुधाम एकांकी	)३१
आर्य समाज के नियमों की व्याख्या	)
ब्रह्मचर्य जीवन	)
वैदिक धर्म शिक्षा	)२
आर्य सतसंग गुटका	)३१
वैदिक सत्संग	)२५

१९६० की नई पुस्तकें

उपनिषदों का सन्देश (आनन्दस्वामी)	१)२५
सन्ध्या विनय (प्रि० नित्यानन्द)	२)
पंच यज्ञ प्रकाशिका— (संध्या हवन शब्दार्थ सहित)	)६२

गोविन्दराम हासानन्द, ४४०८ नई सड़क, देहली।

वार्षिक मूल्य ६)

विदेश से वार्षिक १२ शिलिङ्ग वा ८)

सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०६०

विषय-सूची

सम्पादक, सभा मन्त्री—रघुवीरसिंह शास्त्री, सहायक सम्पादक—रघुनाथ प्रसाद पाठक